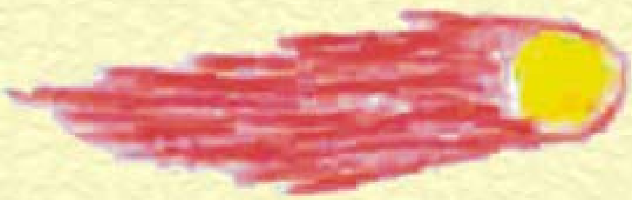
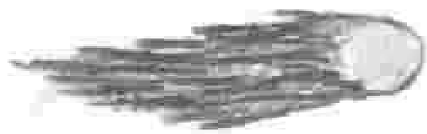
# कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक



गजेन्द्र ठाकुर

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

# कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक



गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur’s KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding-published by Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi -110008 Tel.: 25889656, 25889658 Fax: 011-25889657



ISBN:978-81-907729-7-6(Hardbound) (Combined)
Price: Rs. 100/- (INR)-for individual buyers
US $ 40 for libraries/ institutions(India & abroad).

**श्रुति प्रकाशन**

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shrutipublication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

*Sole Distributor :*
M/s Ajay Arts, 4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.Telephone: 011-23288341

# समर्पण

*पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे*
*तहियेे बुझने रही जे*
*त्याग नहि कएल होएत*
*रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।*

-पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकेँ समर्पित

# आमुख

गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डमे विभाजित *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एकहि संग कठिनसँ कठिन विषयपर सुचिन्तित विश्लेषण भेटत आ उपन्यासक जटिल कथा केर गुत्थी सेहो भेटत सुलझाएल आ संगहि प्रेमक कविता आ प्रकृतिक गीत सेहो। सात खण्ड एहि प्रकार छन्हि-

खण्ड-१ प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना
खण्ड-२ उपन्यास-(सहस्रबाढ़नि)
खण्ड-३ पद्य-संग्रह-(सहस्त्राब्दीक चौपड़पर)
खण्ड-४ कथा-गल्प संग्रह (गल्प गुच्छ)
खण्ड-५ नाटक-(संकर्षण)
खण्ड-६ महाकाव्य- (१. *त्वञ्चाहञ्च* आ २. *असञ्जाति मन* )
खण्ड-७ *बालमंडली* किशोर-जगत

सभसँ महत्वपूर्ण बात ई जे सभ विषयक पाठकक आ पाठिकाक लेल एतए किछु ने किछु भेटबे करत । पुछलियन्हि जे एहन संरचना किएक तँ जे किछु कहलन्हि ताहिसँ लागल जे ई हिन्दी केर *तार-सप्तक* आ तमिलक *कुरुक्षेत्रम्* केर बीच मे कतहु अपन जगह बनेबाक प्रयास कऽ रहल छथि । फराक एतबे जे हिन्दी आ तमिल मे कएक गोटे मिलि कए संकलित भेल छथि एकटा जिल्दमे, आ एतए कएक लेखकक द्वारा विभिन्न विधा केर रचना नहि रहि हिनके अपन रचना पोथीमे उपलब्ध कराओल गेल अछि ।

कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि, जेना कि

''ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल
प्रतीक बनि ठाढ़
घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि
ओसारापर राखल तुलसीक गाछ

प्रतीक सहृदयताक मात्र''
अथवा , निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ :

''सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो देखत नहि हमर ई चित्र अन्हार मे
तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर''

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा-कवितामे। एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि ।

कवि कोन *मन्दाकिनी* केर खोजमे छथि जे कहैत छथि-

''मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर...''

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि । आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि, व्यक्तित्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा *टेक्नोलोजी* सँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि, मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि ।

एहिमे सँ कतेको *टेक्स्ट* ओ रखने छथि इन्टरनेटमे मैथिलीक बढ़ैत पाठककेँ ध्यानमे राखि, जेना कि *विदेह-सदेह* अछि http://videha123.wordpress.com/ मे, आ देवनागरी आ तिरहुता दुन्नु लिपिमे । जे क्यो मिथिलाक्षरक प्रेमी छथि तनिका सब लेखेँ तँ ई विरल उपहारे रहत ।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि। ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि। ओना देखल जाए तँ *कुरुक्षेत्र* क कतेको महारथी छलाह = प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद व्यक्ति छलाह, क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ

क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि । सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि । सैह एहि *महा-पाठ क* (मेटाटेक्सट) खूबी कहब। नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

''देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत
मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल
गुनधुनी बला स्वप्न
बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक
अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान
दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त

कारिख चित्रित रातिक निन्न
टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य
...''

एहि महापाठकेँ एकटा *एक्सपेरीमेन्ट* केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक , आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। जेना पढ़ी , सामग्री एहिमे भरपूर अछि, भरिसक किछु अत्युच्च मानक लागत , आ किछु किनको तत्तेक नहि पसिन्न पड़तन्हि । मुदा एहि ग्रन्थ निचयकेँ पाठक अवश्य स्वागत करताह , आ नवीन लेखक वर्गकेँ एकटा नव दिशा सेहो भेटतन्हि।

मैसूर, ९ जून २००९

उदय नारायण सिंह ''नचिकेता''
*निदेशक,*
*भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर*

# अनुक्रम

खण्ड-१

# प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना

## खण्ड-१: **प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना**

१. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

२. मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे

३. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास ''चमेली रानी'' आ "माहुर"

४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

५. रचना लिखबासँ पहिने...............

६. कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

७. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका

८. मिथिलाक बाढ़ि

९. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)

१०. विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

११. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

१२. भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन

१३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

१४. मिथिलाक खोज

# फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

गजेन्द्र ठाकुर (गाम, मेंहथ, भाया-झंझारपुर, जिला-मधुबनी)
विशेष सहयोग श्री केशव महतो (बहादुरगंज, जिला किशनगंज, बिहार)

*एहि क्षेत्रकार्यक सूचक श्री केशव महतो सीत बसंतक फील्डवर्कमे विशेष सहयोगक कारण एहि प्रबन्धक सह-लेखक छथि। सीत बसंतक कथाक कैक टा विभिन्न रूप पाओल गेल आ ओहि सभक विवरण यथास्थान देल गेल अछि। समाज आ संस्कृतिकेँ बुझबामे लोक कथाक बड़ड महत्व अछि, मुदा बिना फील्ड-वर्क कएने लिखल लोककथा अपन उद्देश्य प्राप्तिमे असमर्थ रहैत अछि। श्री सुभाषचन्द्र यादवजीक हम सेहो आभारी छी जिनकर एहि विषयक आलेख (फील्डवर्क आ लोककथापर) एकटा सेमीनारमे सुनलाक बाद हम आर तन्मयतासँ एहि कार्यमे लागि गेलहुँ।*

*एहि क्षेत्रकार्यमे आधुनिक फील्डवर्क तकनीक केर उपयोग कएल गेल आ सहभागिता, प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली इत्यादिक आधारपर ई लोककथा निर्मित भेल अछि। लोककथा-कविताक कोनो स्वरूपमे कोनो परिवर्त्तन अवैज्ञानिक अछि आ तकर ध्यान एतए राखल गेल अछि ।*

**म**णीपुर नगरक राजा महेश्वर सिंह छलाह।

ओ बड़ड प्रतापी राजा छलाह। ओ बड़ड निकेनासँ राज्य चला रहल छलाह।

किछु दिनुका बाद ओहि राजाकेँ दू टा बेटा जन्म लेलक।

ओकर रानी सेहो बड़ड सुशील आ स्वाभिमानी छलीह।

एक बेरुका गप अछि।

रानी अपन महलमे रहैत छलीह आ बहुत दिनसँ ओहि महलमे दू टा पौरकी चिड़ै खोता बना कए रहैत छल। एक दिन ओ अपन खोतामे दू टा अंडा देलक। अंडासँ दू टा बच्चा बहार भेल। एक दिन अनचोक्केमे ओहि बच्चा सभक माए मरि गेल। तकर बाद पौरकी सभकेँ बड़ड कष्ट होमए लगलैक। ओकर बाप किछु दिनुका बाद एकटा बोनसँ एकटा पौरकीकेँ बियाह कए आनि लेलक। तकर बाद दू-चारि दिन कोनो तरहेँ बीतल। तकर बाद एक दिन पौरकीक कनियाँ ओहि दुनू बच्चाकेँ खेनाइ खुअएला काल मुँहमे काँट धऽ देलक। ओ दुनू बच्चा ओही काल मरि गेल। मरलाक बाद ओ खोतासँ दुनू बच्चाकेँ लोलसँ धकेल कऽ नीचाँ खसा देलक। ओहि समय रानी महलमे छलीह आ बच्चा सभकेँ खसबैत ओ देखलन्हि। ओही दिनसँ रानीकेँ शंका भऽ गेलन्हि आ सभ दिन हुनका चिन्ता घेरि लेलकन्हि।

राजाकेँ रानी कहलन्हि - हे राजा। देखू। अपना महलमे दू टा पौरकी रहैत रहए। ओ दू टा बच्चा देलक। बच्चाक माए मरि गेल। तकर बाद ओ दोसर बियाहि कए अनलक। दू चारि दिनुका बाद ओ दुनू बच्चाकेँ मारि देलक। से हे राजा, कतहु हमहूँ मरि जाइ तँ अहाँ दोसर बियाह कए लेब तखन हमरो दुनू बच्चाक ईएह हाल ने भऽ जाए।

राजा बाजल- यै रानी। एखन अहाँ जीवित छी, तखन एहि गपक अहाँ किएक चिन्ता कए रहल छी।

रानी बजलीह - नहि राजा। यदि हम मरि गेलहुँ तँ अहाँ बियाह तँ नहि कए लेब?

राजा उत्तर देलक- नहि । हम दोसर बियाह नहि करब।

ई कहि राजा अपन दरबज्जामे आपस चलि गेल।

ओही दिनसँ रानी दुखित रहए लगलीह आ अनचोक्के एक दिन मरि गेलीह।

आब एहि गपकेँ लए राजा बड़ड चिन्तामे पड़ि गेल। आब दुनू भाए सीत आ बसन्त सेहो दिक्कतमे पड़ि गेलाह।

राजाकेँ राजाक खबासिनी, मन्त्री, मुंशी आ मारते रास लोक सभ बुझाबए लागल।

ओ सभ राजासँ कहए लगलाह- राजा यदि अहाँ बियाह नहि करैत छी , तखन एहि दुनू बच्चाक की दशा होएत। ने एकरा सभक खेनाइक कोनो ठेकान रहत आ नहिये पढ़ाइक। ताहि द्वारे अहाँ एकटा बियाह करू।

एहि तरहेँ बुझओलापर राजा बाजल - ठीक अछि। जखन अहाँ सभक यैह विचार अछि तखन जाऊ, कोनो गरीबक लड़की भेटत तँ हम ओकरा संग बियाह कए लेब।

एहि तरहेँ राजाक सभटा गप बुझि-गुणि मुन्शी दीवान सभ क्यो लड़की ताकए लगलाह। एकटा लड़की राजाक नगरमे भेटल। ओ लड़की महागरीबक बेटी छलीह। राजा शुभलग्न बना कए ओहि लड़कीकेँ बियाह कए आनि लेलक। किछु दिन धरि ओ लड़की घरमे रहलीह। किछु दिनुका बाद ओकर ममता ओहि दुनू भाएपर कम होमए लागल। दुनू भाए स्कूलसँ पढ़ि कए घर आबथि आ अपन दरबज्जापर गेन्द लए खेलाइमे लागि जाथि। एक दिन अनचोक्केमे गेन्द आँगनमे जा कए खसि पड़ल।

ओहि समयमे ओकर सभक सतमाए आँगनमे छलीह। गेन्द खसलाक संग ओ गेन्दकेँ उठा कए अपन कोरामे राखि लेलन्हि।ओ दुनू भाए गेन्द तकैत आँगनमे अएलाह आ कहलन्हि जे माए गेन्द हमरा सभकेँ दए दिअ। हम दुनू भाए खेला रहल छी। माँ कहलखिन्ह जे हमरा लग गेन्द नहि अछि, अहाँ सभ चलि जाऊ। गेन्दकेँ दुनू भाए मायक कोरामे देखलन्हि। फेर कहलन्हि - माँ हमरा सभकेँ गेन्द दिअ। हम सभ खेलाएब। एहि तरहेँ दुनू भाए मँगैत-मँगैत माँक कोरासँ गेन्द लए लेलन्हि । गेन्द लऽ लेलाक बाद रानीक हृदयमे बड़ड तामस अएलन्हि। रानी

तामसे भेर भेल कोचपर आबि पड़ि रहलीह आ खेनाइ-पिनाइ त्यागि देलन्हि। खबासिनी सभ बुझा कए थाकि गेलीह जे रानी चलू, हमरा सभ खा ली। मुदा रानी कोनो उत्तर नहि देलन्हि। ओ कहलन्हि जे आब हम मरि जाएब। एतेक गप सुनि खबासिनी राजा लग जा कए कहलक जे रानी बड़ड दुखित छथि। आब बचबा योग्य नहि छथि। अहाँ जा कए देखू। राजा एतेक गप सुनि कए अपन महलमे गेलाह आ रानीसँ पुछलन्हि। राजा पुछलन्हि जे तोहर एहन हालत कोना भेलह जल्दी बताबह।

रानी कहलन्हि-अहाँ हमरासँ पुछैत छी तँ पहिने अहाँ हमरासँ सत करू तँ हम कहब। नहि तँ हम मरि जाएब। राजा किछु नहि सोचलन्हि। ओ रानीक संग सत कए लेलन्हि। सत केलाक बाद रानी कहलन्हि- हमर ई दशा अहाँक दुनू बेटा कएने अछि। हमर बिमारीक यैह एकटा उपाय अछि नहि तँ हम नहि बचि सकैत छी - अहाँ ओहि दुनूकेँ मारि ओकर करेज निकालि हमरा दिअ। तखन हम बचि सकैत छी। राजा एतेक गप सुनि कए बड़ड तमसा गेल। ओ दुनू बेटाकेँ बजा कए बड़ड मारि मारलक आ तकर बाद जल्लादक हाथसँ मरबएबा लेल पठा देलक। जल्लाद दुनू भाएकेँ मारैत-पिटैत बोनमे लए गेल। दुनू भाए बड़ड कानि रहल छलाह। जखन जल्लाद सभ ओकरा दुनू गोटेकेँ मारए लागल तँ ओ सभ कहलन्हि जे हमरा सभकेँ नहि मारू। हमरा सभकेँ छोड़ि देब तँ हम सभ घुरि कए नगर नहि जाएब। अहाँ सभ कोनो माल-जानवरकेँ मारि ओकर करेज जा कए दए दियौक। आ ई कहि दुनू भाए , संगमे जतेक पाइ छलन्हि सेहो जल्लाद सभकेँ दए देलन्हि। एक जल्लाद कहलक जे एकरा सभकेँ मारि दियौक। दोसर कहलक जे नहि मारू। ई सभ घुरि कए जएबो करत तँ हम सभ कहबैक जे हम सभ की करू। हम सभ तँ करेज आनि कए देने छलहुँ। मरलाक बाद जीबि गेल होएत।

जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

*कथा रूप १:* जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

दुनू भाए ओहि बोनमे भटकए लगलाह। रातुक मौसममे दुनू भाए एकटा गाछक नीचाँ सूति गेलाह। किछु कालक बाद दुनू भाए उठि गेलाह आ गाछक ऊपर एकटा साँपकेँ चढ़ैत देखलन्हि। ओहि गाछपर दू टा हंसक बच्चा रहैत छल। हंस चरबाक लेल गेल रहए। ओहि साँपकेँ देखि कए हंसक बच्चा बाजए लागल।

दुनू भाए सोचलक- देखू। ई साँप बच्चाकेँ खा जाएत। एतेक सोचलाक बाद तलवारसँ मारि कए साँपकेँ ओ सभ नीचाँ खसा देलक। बच्चा बजनाइ बन्न कए देलक। जखन भोर भेल तँ हंस-हंसिनी चरि कए आएल आ बच्चा लेल खेनाइ अनलक। बच्चाकेँ आहार खुआबए लागल तँ बच्चा आहार नहि खएलक आ कहलक जे माँ हमरा ई बताऊ जे एहि गाछपर हम पहिल देल बच्चा छी , आकि

अहाँ पहिनहियो एहि एहि गाछपर बच्चा देने छी । माए कहलकै जे हम पहिनहियो बच्चा देने छी मुदा आइ धरिमे मात्र अहाँ दुनु गोटेक मूँह देखि रहल छी।

*कथा रूप २:* बेशी लोकप्रिय आ पसरल क्षेत्रमे: जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

दुनू भाए ओहि बोनमे भटकए लागल, खूब बौआएल। रातुक समय दुनू भाए एकटा गाछक तरमे सूति गेल। भोरे , बोनसँ बहराइत दोसर देश जाए लागल। दुनू भाए भूख-पिआसक मारे व्याकुल भऽ गेल। जा कए एकटा गाछक नीचाँ बैसि कए सुस्ताए लागल। ओ सभ सोचए लागल जे आब कोन उपाय करू। ओही समय ओहि गाछपर दू टा मएनाक बच्चा रहए। ओहिमेसँ एकटा कहैत अछि जे हमर जे काँचहि मौस खा जाएत तकरा बड़ड शीघ्र राज्य भेटि जएतैक। आ दोसर कहलक जे हमरा जे आगिमे पका कए खाओत तँ किछु दिनुका बाद ओ राज पाबि जाएत। एतेक गप दुनू भाए सुनलक आ हाथमे एकटा लाठी लए ओकरा सभकेँ मारि कए नीचाँ खसा देलक आ लऽ कए बिदा भेल। किछु दूर आगाँ गेल तँ देखलक जे गाए-महीस चराबए बला चरबाहा सभ एकटा बएरक काँटक बोन - झाँखुरकेँ जरा रहल छलाह। ओ दुनू भाए सोचलक जे अही अगिनवानमे पका कए एकरा खाएब। ओहि आगिमे दुनू गोटे मेनाक बच्चाकेँ पका कए खएलक। काँटमे जे ओ सभ पका कए खएलक तँ ओकर सभक भाग्यमे सेहो काँट लागि गेलैक।

ओतएसँ दुनू भाए बिदा भेल। किछु दूर गेलाक बाद ओकरा सभकेँ आमक एकटा गाछी भेटलैक।

बसन्त चलैत-चलैत थाकि गेल रहए आ ओकरा आर चलल नहि भऽ पाबि रहल छलए।

सीत कहलक-भाइ, तूँ एतए बैस, हम ओहि गामसँ किछु माँगि कए अनैत छी आ तखन खा कए हमरा सभ आगाँ चलब। सीत मँगबा लेल गाममे चलि गेल। सीत जाहि गाममे (कथा रूप ३ गामक नाम हस्तिनापुर सेहो कतहु-कतहु कहल जाइत अछि) मँगबाक लेल गेल ओहि गाममे राजाक बेटीक स्वयम्बर रचाओल गेल छल। ओहि स्थान पर जन सम्मर्द छल। ओतए भीड़ देखि सीत अटकि गेल आ देखए लागल। सीत अपन भाएक सुरता बिसरि गेल । स्वयम्बरमे लड़की जयमाल लए सभामे घुरए लागलि आ माला सीतक गरदनिमे पहिरा देलक। ओहीठाम सीतक बियाह ओहि लड़कीक संग भए गेल।

(रूप ४) बियाहक पहिने ओतुक्का लोक सभ बाजए लागल जे ई राजाक बेटी होइतो एकटा भिखमंगाक गरदनिमे माला पहिरा देलक। आ ईहो जे ओ लड़की बताहि भऽ गेल अछि। ओकर गरदनिसँ माला निकालि कए ककरो दोसराक गरदनिमे माला पहिराऊ नहि तँ बियाह नहि होमए देब। ई गप सुनि लड़की बाजलि जे हमर भाग्यमे ईएह भिखमंगा लिखल अछि तँ हमरा राजा कतएसँ

भेटत? हम एकरे संग बियाह करब। ई गप सुनि सभ राजा अपन-अपन घर चलि गेलाह आ कहलन्हि जे एहि लड़कीकेँ एहि गामसँ निकालि दिअ आ कोनो दोसर ठाम पठा दिअ। राजा ओनाही कएलक। ओहि दुनू गोटेकेँ अपन गामसँ बाहर पठा देलक। ओ ओही नगरमे रहए लागल। किछु दिनुका बाद लोक सभ राजाकेँ कहए लागल जे अहाँ ओहि लड़काक संग लड़कीसँ छोड़ा दियौक आ कोनो दोसर लड़काक संग ओकर बियाह कराए दियौक।

सभक कहलापर राजा एकटा कुटनी बुढ़ियाकेँ जहर-माहुर संगमे दए पठेलक, जतए सीत आ राजाक बेटी रहैत छल। ओ बुढ़िया ओकरा सभक संगे रहए लागल। किछु दिन धरि ओ ओतहि रहल। दुनू गोटेकेँ कोनो गपक चिन्ता नहि भेलैक। एक दिन सीतकेँ अनचोक्केमे बड्ड पियास लगलैक। ओ अपन रानीसँ बाजल-हमरा पानि पिया दिअ। बुढ़िया फटाकसँ उठि कए गेल आ एक गिलास पानिमे जहर घोरि सीतकेँ देलक। सीतकेँ बड़ जोरसँ पियास लागल रहैक से ओ खटसँ पानि लऽ कए पीबि गेल। पानि पीबिते सीतकेँ किछुए कालक उपरान्त बड्ड निशा अएलैक। स्थिरे-स्थिरे निसाँ बढ़ैत गेल। निसाँमे सीत ओन्घरा गेल। बुढ़िया बाजल जे कोनो गप नहि। चिन्ता नहि करू। सभ ठीक भऽ जाएत। कनेक कालक बाद सीत मरि गेल। रानी खूब हाक्रोस कए कानए लागलि। ओहि ठाम कोनो गाम नहि छल। सीतकेँ धारक कात लऽ जा कए गारि देल गेल। बुढ़िया कहलक- देखू चिन्ता नहि करू। आब हम सभ असनान कए ली। असनान करए गेल तँ एकटा नाह किनारमे लागल छल। बुढ़िया बाजल जे चलू, ओहि नाहपर बैसि कए स्नान कए लेब। तखन दुनू गोटे ओही नाहपर बैसिकए नहाए लागल। तखन आस्ते-आस्ते नाह आगाँ जाए लागल। जखन नाह बीच धारमे गेल तँ (रूप ५: एतए रानीक नाम फुलवन्ती सेहो अबैत अछि) रानी बुझलक जे नाह बीच धारमे आबि गेल अछि। तखन ओकरा बुझबामे अएलैक जे ई बुढ़िया ओकरा ठकि कए लए जा रहल छै। ओ रानी अपन पतिक बियोगमे छलीह। ओ हृदयमे सोचलक जे ओकर पति मरि गेल छै तँ ओ जीवित रहि कए की करत। ई सोचि कए नाहसँ कूदि कऽ ओ धारमे फाँगि गेल। भँसैत-भँसैत ओ बड्ड दूर चलि गेल आ ओतए ओ कात लागि गेल।

आब बसन्तक खिस्सा:

बसन्त ओहि गाछीमे भाएक आस तकैत रहए। दिन साँझमे बदलए लागल। ओहि गाछीमे कुम्भकार लोकनि गाछीक पात खड़रि रहल रहथि। तखने बसन्त कनैत-कनैत ओहि कुम्भकार लग गेल। कुम्भकार पुछलक-अहाँ किएक कानि रहल छी। बसन्त सभ गप बतेलक। कुम्भकार कहलक-अहाँ चिन्ता नहि करू। अहाँ हमरा घरपर चलू। अहाँ हमरा घरपर रहब। बसन्त कुम्भकार लग चलि गेल आ रहए लागल। ओतए रहैत-रहैत एक बेर एकटा बनिजारा अपन जहाज

लए वाणिज्य करए लेल जा रहल छल आकि बीच धारमे ओकर जहाज ठाढ़ भए गेलैक।

जहाजक इन्जीनिअरसँ (रूप ६ एतए बनिजाराक नाम नैका बनिजारा सेहो कहैत सुनल गेल) बनिजारा पुछलक जे की जहाज एतएसँ आगाँ नहि जा रहल अछि। इन्जीनिअर कहलक-जहाज बलि माँगि रहल अछि। कोनो मनुक्खक बच्चाक बलि देलाक बाद जहाज आगाँ जाएत। एतेक गप ओ बनिजाराकेँ कहलक तँ बनिजारा तीन लाख रुपैया लए एकटा बच्चाक तलाशमे गेल। ताकैत-ताकैत ओ ओही गाममे गेल, जाहि गाममे बसन्त रहैत छल। बनिजारा अबाज लगबैत जा रहल छल जे, जे क्यो एकटा बच्चा देत ओकरा हम तीन लाख रुपैया देब। एहि प्रकारसँ ओ अबाज लगबैत जा रहल छल। क्यो गोटे नहि बाजल। जखन ओ कुम्भकारक दरबज्जाक सोझाँ गेल तँ कुम्भकार कहलक-हँ हम एकटा लड़का देब। हमरा पाइ चाही। बनिजारा ओहि कुम्भकारकेँ तीन लाख टाका देलक आ ओतएसँ ओ बसन्तकेँ लए अपन जहाज लग गेल।

बसन्त ओकरासँ पुछलक-बनिजारा। अहाँ हमरा कतए लए जा रहल छी।

बनिजारा बाजल-हम अहाँकेँ बलि चढ़एबा लेल लए जा रहल छी। किएक तँ हमर जहाज धारक बीचमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। ताहि द्वारे अहाँक बलि हम चढ़ाएब। एतेक गप सुनि कए बसन्त बाजल जे हे बनिजारा। हमरा ओतए गेलाक बाद, जहाज छूलाक बाद जे जहाज खुजि जाएत तँ अहाँ हमरा छोड़ि देब ने?

बनिजारा कहलक-हमर जहाज जे खुजि जाएत तँ हम अहाँकेँ छोड़ि देब।

बसन्त बीच धारमे जा कए हाथसँ जहाजकेँ छूबि कए बाजल। जहाज अहाँ जाऊ तँ हमर जान बाँचि जाएत।

एतेक कहबाक देरी रहए आकि जहाज ओतएसँ बिदा भऽ गेल।

इन्जीनिअर बनिजाराकेँ कहलक-एकरा बैसा लिअ जहाजमे। कतहु आन ठाम ठाढ़ भऽ जाएत तखन?

बसन्त बाजल-हमरा मारि देने रहितहुँ तँ फेर जहाज ठाढ़ भेलाक बाद हमरा कतएसँ अनितहुँ?

बनिजारा बाजल-छोड़ि दिअ एकरा।

बसन्त ओतएसँ धारक काते-काते बिदा भेल आ ओतए पहुँचि गेल, जतए सीतक स्त्री कानि रहल छलीह।

बसन्त पुछलक-अहाँ किएक कानि रहल छी ?

एतबा सुनितहि ओ कानब बन्द कए चुप भए गेलीह।

बसन्त कहलक-हमहूँ दुखक मारल छी। हम बिछुड़ि कए *दू* सँ *एक* भए गेल छी।

स्त्री पुछलक-अहाँक की नाम छी आ अहाँक भाएक की नाम छी?

बसन्त बाजल-हमर नाम बसन्त छी आ हमर भाएक नाम सीत छल।

ई बात सुनैत स्त्री फेरसँ कानए लागल आ कहलक जे अहाँक भाए स्वर्गवासी भए गेलाह। हुनके वियोगमे हम कानि रहल छी। ई गप सुनि कए (रूप:७ एतए नाम *दिल बसन्त* सेहो अबैत अछि) बसन्त कहलक जे आब हमरो जीवित नहि रहबाक अछि।

ई गप सुनितहि सीतक स्त्री मरि गेलि आ बसन्त ओही समय बोनमे जा कए एकटा पैघ गाछपर चढ़ि कए अपन जान देबाक लेल तैयार भऽ गेल। ओही समय एकटा आकाशवाणी ओकरा अबाज देलक-बसन्त तूँ अपन जान नहि गमा। तोहर भाए जीवित छौक। जो जतए तोहर भाएक सारा छौक ओहिपर अपन दहिन हाथक कंगुरिया आँगुर काटि कए ओहिपर छीटि दे। तोहर भाए जीवित भए जएतौक। एतेक गप सुनि कए बसन्त गाछसँ नीचाँ उतरि गेल आ जतए ओकर भाएक सारा छल ओहिपर ओ ओहिना कएलक। सीत राम-राम बजैत उठि गेल। दुनू भाइ गरा मिलल। ओहि ठामसँ दुनू भाए बिदा भेल। दिनसँ साँझ पड़ि गेल आ दुनू भाए एक ठाम गाछक नीचाँ अटकि जाइ गेलाह।

सीत कहलक-भाए बसन्त, एतहि रुकैत छी। भोर भऽ जाएत तखन फेर हम सभ बिदा होएब।

दुनू भाए ओहि गाछक नीचाँ रात्रि व्यतीत करए लगलाह।

खिस्सा रूप ८: रात्रिक बारह बाजल तँ बोनसँ एकटा साँप बहार भेल आ गाछपर चढ़ए लागल। ओही गाछपर हंसक खोता रहए। ओहि हंसक खोतामे दू टा हंसक बच्चा रहए। साँपकेँ देखि कए दुनू बच्चा अबाज देमए लागल। ई अबाज दुनू भाए सुनलक आ साँपकेँ गाछपर चढ़ैत देखलक आ सोचलक जे ई साँप बच्चा सभकेँ खा जाएत से एकरा जे मारि दी तँ बच्चा सभक जान बचि जाएत। ओ सभ साँपकेँ मारि देलक।

तावत हंस दहमे चरए लेल गेल रहए। हंस ओहि खोतामे कतेक बेर बच्चा देने रहए मुदा एकोटा बच्चा उठा नहि सकल रहए। भोरे सकाले हंस दहसँ चरि कए आएल। बच्चा सभकेँ जीवित देखि बड़ड प्रसन्न भेल। बच्चाकेँ अहार देमए लागल। बच्चा मुँह घुमा लेलक आ पुछलक-माँ अहाँ एहि गाछपर कतेक बच्चा पाड़लहुँ आकि हमही पहिल बच्चा छी।

माँ बाजलि-नहि एहि गाछपर कएक बेर हम बच्चा देलहुँ मुदा मुँह अहीं दुनूक हम आइ देखलहुँ।

बच्चा बाजल जे हमरो मुँह अहाँ नहि देखि सकितहुँ, जे ई मुसाफिर नहि रहितए। नीचाँ देखू की पड़ल अछि।

हंस देखलक जे नीचाँ मे एकटा साँप पड़ल छै आ दू टा मुसाफिर फिरि रहल अछि।

बच्चा बाजल-ओहि साँपकेँ यैह दुनू मुसाफिर मारलक अछि। पहिने जा कए ओही मुसाफिरकेँ खएबा लेल दियौक। ओ खाओत तँ हम खाएब।

हंस नीचाँ उतरि कए आएल आ कहलक- मुसाफिर, जखन अहाँ नहि खाएब तँ ई दुनू बच्चा सेहो नहि खाएत।

ई दुनू भाए कहलक-माँ, खेनाइसँ प्रेम पैघ अछि। माँ हमहूँ सभ, परिस्थितिक मारल छी। हमर सभक के सहायता करत ?

हंस बाजल-हमर सहायता अहाँ कएलहुँ से अहाँक सहायता हम करब। लिअ एकटा बच्चा हम अहाँ सभकेँ दैत छी। ई अहाँक सहायता करत। सियान भेलापर ई अहाँ दुनू भाएकेँ अपन पाँखिपर बैसा कए उड़ि सकैत अछि। जतए मोन होएत, ओतए जा सकैत छी। ई वरदान हम दैत छी जे अहाँ दुनू भाए सफल रहब। दुनू भाए प्रणाम कए ओतएसँ बिदा भेलाह। ओ सभ जतए कतहु बिलमैत रहथि, ओतए हंस अपन दुनू पाँखि पसारि छाह कए दैत छल। एहि प्रकारेँ किछु दिन बीतल। हंसक बच्चा पैघ भऽ गेल। ओ आब दुनू भाएकेँ चढ़ा कए लऽ जाए योग्य भऽ गेल।

हंस बाजल-भाए। आब तोँ दुनू भाए हमर ऊपर बैसि जाह। अहाँ जतए कतहु कहब हम अहाँ सभकेँ लए चलब।

दुनू भाए ओतएसँ हंसपर सवार भए आगू बिदा भेलाह आ जा कए कंचनपुर शहर पहुँचलाह। नगरक बाहर एकटा बरक गाछ छल। ओही गाछक लग ओ सभ डेरा खसेलक आ रहए लागल, आ शहरमे जा कए काज करए लागल। साँझ भेला उत्तर, ओही गाछक लग खेनाइ खा कए ओ सभ सूति जाथि। हंस भरि राति दुनू भाएक देख-रेख करैत छल। किछु दिनुका बाद ओहि कंचनपुर शहरक राजाक कंचना नाम्ना बेटीसँ सीत प्रेम करए लागल।

ओहि लड़कीक प्रत्येक दिन फूलसँ ओजन कएल जाइत छल। प्रेम कएलाक बाद लड़कीक ओजन बहुत बढ़ए लागल। राजाकेँ खबर भेल जे लड़कीक ओजन किएक बढ़ए लागल अछि ? राजा अपन महलक चारू कात सिपाहीक पहरा दिआ देलक। ताहूपर सीत हंसपर सवार भए महलमे चलि जाइत छलाह। सम्पूर्ण शहरमे हिलकोर उठि गेल जे के ई लोक अछि, जे हमर राजाक महलमे चोरिसँ चलि जाइत अछि। एक दिन संजोगसँ सीत गेल आ कोचपर बैसि दुनू गोटे हँसी मजाक करए लागल आ अहीमे दुनू गोटेकेँ निन्न लागि गेलैक। हंस बेचारा घुरि कए आपस अपन डेरापर आबि गेल आ भोरमे दुनू गोटेकेँ एक्के संग महलमे पकड़ि लेल गेलैक।

राजा सभटा गप पुछलक। सीत सभटा गप बतेलक।

लड़की कहलक जे हमर भाग्यमे यैह अछि आ यैह रहत।

राजा सोचि कए कहलक-अहाँ अपन भाएकेँ लए आऊ आ हंसकेँ सेहो।

बसन्त आ हंसकेँ सीत लए अनलक। हंसकेँ देखि कए राजा बड़ड प्रसन्न भेल।

राजा कहलक-हमर मन्त्रीकेँ एकटा बेटी छै। दुनू भाएक एकहि बेर बियाह कए देल जाएत।

बड़ड धूम-धामसँ दुनू भाएक बियाह भेल।

सीतकेँ कंचनपुरक राज भेटल, कारण राजाक तँ एकेटा बेटी रहए। ताहि द्वारे सीत किछु दिन बितलाक बाद कहलक जे आब हम अपन शहर जाएब।

राजा खुशीक संग ओहि चारू गोटे बेटी-जमाएकेँ बिदा कएलक। सीत-बसन्त दुनू भाए अपन देश बिदा भेल। किछु दिनुका बाद ओ सभ अपन नगर पहुँचल तँ ओतुक्का हालत बड़ड गम्भीर देखलक। अपन राजक एक कोनमे ओ सभ अपन घर बनेलक आ रहए लागल। सीतक माए आ पिता दुनू गोटे आन्हर भए गेल रहथि। सभ दिसनसँ विपत्ति आएल छलन्हि। एक दिन हुनका पता लगलन्हि जे हुनकर राज्यक एक कोनमे कोनो दोसर राजा घर बना कए रहि रहल अछि। चलू ओकरासँ भेँट कए आबी।

ओ सभ जखन अएलाह तँ दरबज्जापर सीत-बसन्त दुनू गोटे चीन्हि गेलथि जे यैह हमर माए-बाप छथि। दुनू भाए अपन-अपन स्त्रीकेँ इशारा कएलन्हि। एहि दुनू गोटेकेँ भीतर लए जइयन्हु आ नीक जेकाँ असनान करबाऊ, नीक कपड़ा पहिराऊ आ खूब आ नीक खेनाइ खुआऊ आ तकर बाद एतए आनू आ मंचपर बैसाऊ।

तकर बाद सीत आ बसन्त दुनू भाए माँ-पिताक आगाँ ठाढ़ भए कहलन्हि-ई तँ बताऊ जे अहाँकेँ कैकटा बेटा अछि।

राजा महेश्वर सिंह कहलन्हि-हमरा दू टा बेटा रहए मुदा आब एकोटा नहि अछि। हमर भाग्यक दोख अछि। नहि जानि ओ सभ जीवित अछि आकि मरि गेल? हम तँ  मरबा देने रहियैक।

सीत-बसन्त बाजल-नहि। अहाँक दुनू बेटा जीवित अछि। एतेक कहैत ओकरा सभक आँखि नोरा गेलैक।

- पिताजी वैह सीत-बसन्त हम सभ छी।

ओही समय राजाक आँखि खुजि गेलैक आ दुनूकेँ अँकवारमे भरि पकड़िकेँ ओ कानए लागल आ अपन गल्ती स्वीकार कएलक। धन्य लाला, अहाँक अउरदा बढ़ए। अमर रहू।

# मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे

*एहि प्रबन्धमे मायानन्दजीक स्त्रीधन, पुरोहित, मंत्र-पुत्र आ प्रथमं शैलपुत्री च- एहि चारि पोथीक जे कथा-विधान आ साहित्यिक विवेचन छल तकरा यथा संभव नञि छुअल गेल आ मात्र इतिहास-बोधक सन्दर्भमे विवेचना अछि।*

*प्रबंधमे मायानान्द जीक १.प्रथमं शैल पुत्री च २.मंत्रपुत्र ३.पुरोहित आ ४. स्त्री-धन एहि चारि ऐतिहासिक उपन्यास सभक आधार पर लेखक द्वारा लगभग दू दशकमे पूर्ण कएल गेल इतिहास यात्राक समीक्षा कएल गेल अछि। एहिमे प्रयुक्त पुस्तकमे, मंत्रपुत्र मैथिलीमे अछि आ शेष तीनू उपन्यास हिन्दीमे, तथापि यात्रा पूर्णताक दृष्ट्वा आ श्रृंखलाक तारतम्य आ समीक्षाक पूर्णताक हेतु चारू किताबक प्रयोग अनिवार्य छल।*

**का**लक्रमक दृष्टिसँ *प्रथमं शैल पुत्री च* प्रथम अछि । एहिमे १५०० ई.पू.सँ पहिलुका इतिहासक आधार लेल गेल अछि। मंत्रपुत्रमे १५०० ई.पू. सँ १२०० ई.पू. धरिक इतिहास उपन्यासक आधार अछि। ई सभ आधार भारत युद्धक पहिलुका अछि। पुरोहितमे १२०० ई.पू.सँ १००० ई.पू. धरिक इतिहास अछि- एकरा ब्राह्मण साहित्यक युगक इतिहास कहि सकैत छी। स्त्रीधनक आधार अछि सूत्र-स्मृतिकालीन मिथिला।

मुदा रचना भेल मैथिली मंत्रपुत्रक पहिने -नवंबर १९८६ मे। प्रथमं शैल पुत्री च एकर दू सालक बाद रचित भेल आ ताहिमे मायानन्द जी चारू किताबक रचनाक रूपरेखा देलन्हि मुदा ई हिन्दीक संदर्भमे छल। एकर बाद सभटा किताब हिन्दी मे आएल। हिन्दी मंत्रपुत्र आएल जाहि कारणसँ तेसर पुस्तक पुरोहित किछु देरीसँ १९९९ मे प्रकाशित भेल। स्त्रीधन जे एहि श्रृंखलाक अंतिम पुस्तक अछि, २००७ ई. मे प्रकाशित भेल।

“प्रथमं शैल पुत्री च” केर प्रस्तावनाक नाम कवच छल।मंत्रपुत्रक प्रस्तावनाक नाम ऋचालोक छल आ ई पुस्तकक अंतमे राखल गेल, किएक तँ ई लेखकक प्रथम ऐतिहासिक रचना छल, प्रस्तावनाकेँ अंतमे राखि कय रहस्य आ रोमांचकेँ बनाओल राखल गेल । पुरोहितक प्रस्तावनाक नाम विनियोग छल आ एकरासँ पहिने दूर्वाक्षत मंत्र राखल गेल जे भारतक आ विश्वक प्रथम देशभक्ति गीत अछि। मिथिलामे एकरा आशीर्वादक मंत्रक रूपमे प्रयोग कएल जाइत अछि जकर पक्ष-विपक्षमे विस्तृत चरचा बादमे होएत।

स्त्रीधनक प्रस्तावनाक नाम लेखक पृष्ठभूमि रखने छथि जे उपन्यासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करबाक कारण सर्वथा समीचीन अछि।

*मायानन्दक इतिहास-बोधक समीक्षा हम श्रुति, परम्परा, तर्क आ भाषा-विज्ञानक आधार पर कएने छी। पाश्चात्य विद्वान सभक उच्छिष्ट भोज सँ निर्मित भारतीय इतिहास-लेखन सँ बचि कए इतिहासक समीक्षा भेल अछि आ मध्य एशिया आ यूरोपक कनियो प्रभाव समीक्षा पर नहि पड़ए से प्रयास कएल गेल अछि।*

**१. प्रथमं शैल पुत्री च-** कवच रूपी प्रस्तावनाक बाद ई पुस्तक १. अग्ना, २.अग्न-शैला, ३. शैला- कराली, ४. कराली- महेष, ५. महेष- पारवती, ६. गणेष, ७. हरकिसन, ८. किसन, ९. हरप्पा : मोअन गाँव, १०. गणेष का श्रीगणेश, ११. किश्न, १२. महाजन, १३. मंडल, १४. किश्न मंडल, १५. मंडल : मंडली, १६. पतन: पुरंदर आ १७. उपसंहार : पलायन खंडमे विभक्त अछि।

१. अग्ना- २००० ई. पू. सँ आरम्भ होइत अछि ई उपन्यास। खोहमे रहएबला मनुष्यक विवरण शुरू होइत अछि। बा एकटा दलक सर्वाधिक बलिष्ठ मनुष्य अछि। पूर्वज बा सेहो बलिष्ठ छल। एतेक रास बच्चा सभक बा। एकटा छोट आ एकटा पैघ पाथरक आविष्कार कएने छलाह पूर्वज बा। अम् दलाग्राकँ कहल जाइत छल। बा भयंकर गंधवला पशुक नाम सेहो छल। हाथक महत्व बढ़ल आ बढ़ल वृक्षसँ दूरी। सर्पकँ मारि कए खाएल नहि जाइत अछि, से गप पूर्वजसँ ज्ञात छल। प्राचीन देव वृक्ष, दोसर नाग देव आ तेसर नदी देव छलाह। अम्बासँ बा संतान उत्पन्न करैत आएल छलाह। नव कुठार आ नव काताक आविष्कार भेल। अः आः अग अग्ग केर देखि कए वन्य पशुकँ भागैत देखि एकर जानकारी भेल। मानुषी हुनकर संख्या वृद्धि करैत छलि। प्रथम मानुषीक नाम पड़ल अग्ना। ओकर मानुष-मित्र छलाह अग्ग। अग्ना दलाग्रा बनि गेलीह आ हुनकर नेतृत्वमे दल उत्तर दिशि बढ़ल। फेर लेखक लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- ''ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्ठाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे'' आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १,९७,२९,४९,०३२ वर्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। ई दुनू दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखलापर हास्यास्पद लगैत अछि।

अग्ना-शैलासँ शुरू होइत अछि दोसर भाग। १०००० ई.पू.। भाषाक आरंभक प्रारंभ मायानन्द मिश्र एहिमे प्रकट कएने छथि। एहिमे बड़ड नीक जेकाँ, संकेत भाषासँ ध्वनिक संबंध परिलक्षित कएल गेल अछि। चलंत सँ स्थिर जीवनक शुरुआत सेहो देखायल गेल अछि। तकर बाद शैला कराली अध्यायक

प्रारंभ होइत अछि, ७५०० वर्ष पूर्वसँ। गौ पालनक चर्चा होइत अछि, गायक संख्यामे पर्याप्त वृद्धि भेल छल। सभ रहथि चरबाह, चर्म धारी। आ कटिमे पाथरक हथियार। भेड़, बकरी आ सुग्गर छल, किछु आन पोसिया जंतु जात सेहो रहए। घासक रस्सी, त्रिशूल आ नागदेवक चर्चा होइत अछि। बाक नाम आब भऽ जाइत अछि, ओजा। दलाग्राक नाम पड़ैत अछि शैला कराली। पशुक संख्या बढ़ल तँ पशुक चोरि सेहो शुरू भऽ गेल।पीपरक गाछक नीचाँ बैठकीक प्रारम्भ भेल। करालीक नाम अंबा पड़ल।

कराली-महेष अध्यायमे ५००० ई.पू. मे कृषिक प्रारम्भ देखाओल गेल अछि। महेष बीया बागु कए रहल छथि। जवकेँ पका कऽ खयबाक चर्चा होइत अछि। आब धारक नाम सेहो राखल जाए लागल। महेष कुल द्वारा पोस केर माँस खेनाइ तँ एकदम निषिद्ध भऽ गेल।ओजा लिंग स्थानमे बैसल रहैत छलाह।

तकर बाद महेष-पारवती अध्याय शुरु होइत अछि ४ सँ ५ हजार वर्ष पूर्व। धानक फसिलक प्रारंभ भेल। पारवती जहिया अएलीह तहिया ओतुक्का प्रथाक अनुसार लाल माटि माथमे लगा देल गेल। पुत्रक नाम गणेष पड़ल। एहिसँ पहिने संतानक परिचय नहि देल जाइत छल।

गणेष- ई अध्याय ४००० वर्ष पूर्वसँ शुरू होइत अछि। स्त्री-पुरुष संबंध आ पितृ कुलक आरंभक चर्चा शुरू भेल। नून अनबाक आ खेबाक प्रारंभ भेल। नून अनबासँ कुलक नाम नोनी पड़ल। जव आ गहूमक खेतीक प्रारंभ आ दूध दुहबाक आरंभ देखाओल गेल अछि। हाथीक पालनक प्रारंभ आ अदला-बदलीसँ विनिमयक प्रारंभ सेहो शुरू भेल। शिश्न देव पर जल आ पात चढ़ेबाक प्रारंभ सेहो भेल। यवकेँ कूटब आ बुकनी करबाक प्रारंभ भेल। गहूमकेँ चूरब आ पानिमे भिजा कए आगिमे पकाएब प्रारंभ भेल। पक्षिपालन करएबला एकटा भिन्न दल छल। मृतक-संस्कार आ मृत्यु पर कनबाक प्रारंभ सेहो भेल। लिपिक प्रारंभ सेहो भेल।

हर- एहि अध्यायक प्रारंभ ३५०० ई.पू. देखायल गेल अछि। नूनक व्यापार आ सुगढ़ नावक निर्माण प्रारंभ भेल। पइलीक कल्पना नपबाक हेतु भेल। हर आ बड़दक सम्मिलन प्रारंभ भेल। इनार खुनबाक प्रारंभ आ जनक लंबवत केर अतिरिक्त चौड़ाइमे बसबाक प्रारंभ सेहो भेल। घर बनएबाक प्रारंभ सेहो भेल।कारी, गोर आ ताम्रवर्णी कायाक बेरा-बेरी आगमन होइत रहल।

हरकिसन अध्यायक प्रारम्भ ३४०० वर्ष पूर्व होइत अछि। कृषि विकासक संग स्थायी निवासक प्रवृत्ति बढ़य लागल। तकरा बाद परिवारक रूप स्पष्ट होमय लागल। कृषि-विकाससँ वाणिज्य विस्तारक आवश्यकता बढ़ल। ऊनक वस्त्र, चक्की, भीतक घर आ इनारक घेराबा बनए लागल।

किसन अध्यायक प्रारम्भ ३३०० ई.पूर्व भेल। श्रम-बेचबाक प्रारम्भ भेल। पटौनीक प्रारम्भक संग कृषि-विकास गति पकड़लक। भूगोलक जानकारी भेलासँ वाणिज्य बढ़ल। अलंकारक प्रवृत्ति बढ़ल।

हड़प्पा: मोहनगाँव अध्याय ३२०० वर्ष पूर्व देखाओल गेल अछि।श्रम-बेचबाक हेतु काठक टोलक उदाहरण अबैत अछि। अलंकार प्रवृत्ति बढ़ल। गोलीक मालाक संग कुम्हारक चाक सेहो सम्मुख आयल। समाजमे वर्ग विभाजनक प्रारम्भ भेल।

गणेषक श्रीगणेष अध्याय ३१०० ई. पूर्व प्रारम्भ भेल। दक्षिणांचल लोकक आगमनक बाद हड़प्पा हुनका लोकनि द्वारा बनेबाक चर्च लेखक करैत छथि। मोहनजोदड़ो, लोथल आ चान्हूदोड़ोक विकास व्यापारिक केन्द्रक रूपमे भेल। लिपि, कटही गाड़ी आ मूर्त्तिकलाक आविष्कार भेल आ वस्तु विनिमयक हेतु हाट लागए लागल। मेसोपोटामियाक जलप्लावन आ सुमेरी आ असुरक आगमनक चर्चा लेखक करैत छथि।

किश्न अध्यायक प्रारम्भ ३००० ई.पू. सँ भेल। विदेश व्यापारक आरम्भ भेल। तामक आविष्कार भेल। कृषि दासत्वक सेहो प्रारम्भ भेल। बाढ़िसँ सुरक्षाक हेतु ऊँच डीह बनाओल जाए लागल।

महाजन अध्याय २८०० ई. पू. प्रारम्भ होइत अछि। नगरक प्रारम्भ वाणिज्यक हेतु भेल। नहरि पटौनीक हेतु बनाओल जाए लागल। डंडी तराजूक आविष्कार आवश्यकता स्वरूप भेल। प्रकाश-व्यवस्थाक ब्योँत लागल।

मंडल अध्यायमे चर्च २६०० ई.पू.क छै। संस्था निर्माण, विवाह व्यवस्था आ दूरगर यात्राक हेतु पाल बला नावक निर्माण प्रारम्भ भेल।

किश्न मंडल अध्याय २४०० ई.पू. केर कालखण्डसँ आरम्भ कएल गेल अछि। एहिमे वर्षाक अभावक चरचा अछि। आर्यक पूर्व दिशामे बढ़बाक चर्चासँ लोकमे भयक सेहो चर्चा अछि।

मंडल:मंडली अध्याय २२०० ई.पू.सँ प्रारम्भ भेल। आर्यक आगमनक आ वर्षाक अभाव दुनूकेँ देखैत लोथल वैकल्पिक रूपसँ विकसित होमए लागल।

पतन:पुरंदर: एहि अध्यायक कालखण्ड २००० ई.पू.सँ प्रारम्भ भेल अछि। आर्यक राजा द्वारा पुरकेँ तोड़ि महान केंद्र हड़प्पाकेँ ध्वस्त करबाक चर्चासँ मायानन्द जी अपन पहिल किताब 'प्रथमं शैल पुत्री च' केर समापन करैत छथि। आर्य हड़प्पाकेँ हरियूपियासँ संबोधित कएल, आर्य बाहरसँ अएलाह प्रभृत्ति किछु सिद्धांतक आधार पर रचित ई उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास होएबाक दावा करैत अछि। आ एहिमे २०,००० ई.पू.सँ १८०० ई.पू. धरिक इतिहासोपाख्यानक चर्चा अछि। मुदा मौलिक ऐतिहासिक विचारधारा आ नवीन शोधक आधार पर एकर बहुतो बात समीचीन बुझना नहि जाइत अछि।

अग्नासँ शुरू भेल ई कथानक बड़ड आशा दिअओने छल। लेखक पहिल अध्यायमे लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- ''ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे'' आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १,९७,२९,४९,०३२ वर्ष पृथ्वीक आयु

अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। ई अनुमानित अछि जे यूरेनियमक १.६७ भाग १०,००,००,००० वर्षमे सीसामे बदलि जाइत अछि। विभिन्न प्रकारक पाथर आ चट्टानमे सीसाक मात्रा भिन्न रहैत अछि। एहि प्रकारसँ गणना कएला पर ई ज्ञात होइछ जे रेडियोएक्टिव पदार्थ १,५०,००,००,००० वर्ष पहिने विद्यमान छल। एहि प्रकारेँ कोनो शैलक आयु २,००,००,००,००० वर्षसँ अधिक नहि भऽ सकैछ। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। एहि तरहक पाश्चात्य शोधकेँ लेखक पहिल अध्यायमे तँ नकारि देलन्हि मुदा अंत धरि जाइत-जाइत ओ - आर्य लोकनि हड़प्पाकेँ हरियूपिया कहैत छथि - एहि प्रकारक पाश्चात्य दुराग्रहक प्रभावमे आबि गेलाह। पश्चिमी विद्वानक उच्छिष्ट भोजसँ बचि श्रुति परम्पराक परीक्षा तर्कसँ नहि कए सकलाह। एहि प्रकारे 'प्रथमं शैल पुत्री च' निम्न आधार पर अपन इतिहासोपाख्यान साहित्यिक रूपसँ नहि बना पओलक :-

पुरातात्विक, भाषावैज्ञानिक आ साहित्यिक साक्ष्य एहि पक्षमे अछि जे आर्य भारतक मूल निवासी छलाह। आर्य भाषा परिवारक नामकरण मैक्समूलर द्वारा कएल गेल छल। द्रविड़ परिवारक नामकरण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल द्वारा कएल गेल छल।आर्यक आक्रमणक सिद्धांत आएल ग्रिफिथक ऋग्वेदक अनुवादमे देल गेल फूटनोटसँ। पहिने तँ ई नामकरण विदेशी विद्वान द्वारा कएल गेल छल ताहि द्वारे ओकर अपन उद्देश्य होएतैक।

सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, गिल्गमेश कथा काव्य, प्राणवंतक देश गिल्गमेशक खोज, सृष्टिकथा आ देवतंत्रक विकास एहि सभटा समाजशास्त्रीय विकासक विश्लेषण आर्य लोकनिक भारतक मूल निवासी होएबाक साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि।

ऋग्वेदमे मातृसत्तात्मक व्यवस्थाक स्मृतिक रूपमे बहुवचन स्त्रीलिंगक प्रयोगक बहुलता अछि।

सघोष आ महाप्राण ऋग्वेदिक आ भारतीय भाषाक ध्वनिक प्रतिरूप, नहि तँ ईरानी आ नहिये यूरोपीय भाषा सभमे भेटैत अछि। सरस्वती आ सिन्धु धारक बीचक सभ्यता छल आर्यक सभ्यता। सरस्वती धारक तटवर्ती भरत, पुरु आ अन्य गण सभ मिलि कए ऋगवेदक रचना कएलन्हि। सरस्वतीमे जल-प्रलयक बाद ई सभ्यता सारस्वत प्रदेश सँ हटि कए कुरु-पांचाल आ ब्रह्मर्षि प्रदेश-मध्यदेश-पहुँचि गेल। इतिहासमे भरत लोकनिक महत्व समाप्त भऽ गेल। एहि जल प्रलयक बाद आर्यजन लोकनिक वंशज मोहनजोदड़ो आ हड़प्पा नगरक निर्माण कएने होएताह सेहो सम्भव। हड़प्पा सभ्यताक ८०० मे सँ ५३० सँ ऊपर स्थान एहि लुप्त सरस्वती धारक तट पर अवस्थित छल। सिन्धुक धार पर एहि स्थल सभक बड़ड कम निर्भरता छल आ जखन सरस्वतीमे पानिक प्रवाह घटल तँ एहि सभ केन्द्रक ह्रास प्रारम्भ भऽ गेल।

पहिने सरस्वतीमे जल-प्रलयसँ आर्यक पलायन भेल (ऋगवेद आ यजुर्वेदक रचनाक बाद) आ फेर सरस्वतीमे पानिक कमी भेलासँ दोसर बेर आर्यक पैघ पलायन भेल (अथर्ववेदक रचनाक पहिने)। अरा-युक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहि तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहिये यूरोपमे। भारतीय देवनाम, शिल्प, कथा, अश्वविद्या, संगीत, भाषिक तत्व आ चिंतनक संग ई उद्घाटित होमए लागल पश्चिम एशिया, मिश्र आ यूनानमे। दोसर सहस्राब्दी ई.पूर्व अरायुक्त रथ, भारतीय देवनाम, भारतक धार, ऋगवेदिक तत्वचिंतन, अश्वविद्या, शिल्प-तकनीकी आ पुरातन् कथा भारतसँ पच्छिम एशिया, क्रीट-यूनान दिशि जाए लागल। कालक्रमसँ मिश्र, सुमेर-बेबीलोन, आदि सभ्यता आ मित्तनी आ हित्ती सभ्यतासँ बहुत पहिनहि ऋगवेदक अधिकांश मंडलक रचना भऽ गेल छल।

मायानन्दजीक एहि सीरीजक दोसर रचना मंत्रपुत्र अछि। एहिमे ऋगवैदिक आधार पर जीवन-दर्शनकेँ राखल गेल अछि।

ऋगवेद १० मंडलमे (आ आठ अष्टकमे सेहो) विभक्त अछि। मायानन्द मिश्रजी मंडलक आधार पर मंत्रपुत्रक विभाजन सेहो १० मण्डलमे कएने छथि। एहि पुस्तकक भूमिकाक नाम अछि ऋचालोक आ ई पुस्तकक अंतमे १०म मण्डलक बाद देल गेल अछि।

प्रथम मण्डलमे काक्षसेनी पुत्री ऋजिश्वाक चर्च अछि संगहि ऋतुर्वित पुत्री शाश्वतीक सेहो। जन सभा आ जन-समिति द्वारा राजाकेँ च्युत करबाक/ निर्वासन देबाक आ दोसर राजाक निर्वाचन करबाक चर्चा सेहो अछि। नेत्रक नील रंग रहबाक बदला श्यामल भऽ जएबाक चर्चा आ एकर कारण खास तरहक विवाहक होयबाक चर्चा सेहो भेल अछि।वितस्ता तटसँ कृष्ण सभक निरन्तर उपद्रवक चर्चा सेहो अछि। सुवास्तु तटसँ रक्त मिश्रणक प्रक्रियाक वर्णन अछि। गोमेधकेँ वर्जित कएल जाय, ई विचार विमर्श कएल जाए लागल। दासक चर्चा सेहो अछि। हरियूपिया पतन आ ओकर विभिन्न नगर सभक उजड़ि जएबाक चर्चा अछि आ पश्चात्, बल्बूथ द्वारा अनार्य सभक ध्वस्त वाणिज्य व्यवस्थाकेँ संगठित करबाक चर्चा अछि।

द्वितीय मण्डलमे राजाकें समिति द्वारा एहि गपक लेल पदच्युत कएल जएबाक चर्चा अछि, कि धेनुक चोरिक बादो गव्य-युद्ध ओ नहि कएलन्हि। अभिषेकक सङ्ग राजा सेहो प्रायः निश्चित होमए लगलाह आ कौलिक परम्परा चलि गेल। पहिने समितिक निर्णयक बादे क्यो समर्थन-याचनामे जाइत छलाह, राजदण्ड सम्हारैत छलाह। धेनुक हरण कएने छल अनास दस्यु सभ। सुवास्तु, क्रुमु, वितस्ता आ अक्खनीक तट पर श्रुति अभ्यास आ युद्ध-कार्य संगहि चलैत छल, एके संग ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य कर्म करैत छथि। मुदा सरस्वतीक तट पर बात किछु दोसरे भऽ गेल, ऋषिग्राम फराक होमय लागल। सभटा अनास दस्यु दास बनि गेल आ दासीसँ आर्यगणक संतान उत्पन्न होमए लगलन्हि। दासीपुत्र लोकनिकेँ तँ

गाममे घर बनेबाक अनुमति छलन्हि मुदा अनास दस्युकेँ ओ अनुमति नहि छलन्हि। एहि गपक चर्चा अछि, जे आर्य चर्म वस्त्र पहिरैत छलाह आ अनास दस्यु लोकनिक संपर्कसँ सूतक वस्त्र आ लवणक प्रयोग सिखलन्हि। एहि दुनू चीजक आपूर्त्ति एखनो अनास लोकनिक हाथमे छलन्हि। अनार्य लोकनिक संपर्कसँ अपन शब्द कोश बिसरबाक आ तकर संकलनक आवश्यकताक पूर्त्तिक हेतु निघण्टुक संकलनक चर्चा सेहो अछि। गंधर्व विवाहक सेहो चर्चा अछि।

तृतीय मण्डल

अग्निष्टोम यज्ञक चर्चा अछि। छागर आ महीसक बलि केर चर्च अछि।

माँस-भात महर्षि लोकनिकेँ प्रिय लगलन्हि, तकर चर्चा अछि मुदा भातक बदला गहूमक सोहारीक प्रचलन एखनो बेशी होएबाक चर्चा अछि।

चतुर्थ मण्डल

राजाक अभिषेक यज्ञक चर्चा आ ओहिमे अरिष्टनेमिक ब्रह्मा बनबाक चर्चा अछि। ग्रामणी, रथकार, कम्मरि, सूत, सेनानी सेहो यज्ञमे सम्मिलित छलाह।

"अति प्राचीन कालमे सृष्टि जलमय छल"! एकर चर्चा मायानन्द मिश्रजी नहि जानि ऋगवेदिक युगमे कोना कए देलन्हि।

पञ्चम मण्डल

अश्वारोहण प्रतियोगिताक चर्चा अछि। अनास दास-रंजक नाट्यवृत्तिक चर्चा सेहो अछि। राजा द्वारा एकर अभिषेक कार्यक्रममे स्वीकृति आ एकर भेल विरोधक सेहो चर्चा अछि। दासकेँ स्वतंत्र कृषि अधिकार आ एकरा हेतु विदथक अनुमति राजा द्वारा लेल जाए आकि नहि तकर चर्चा अछि।

षष्ठ मण्डल

महावैराजी यज्ञक चर्चा अछि। समस्त दस्यु-ग्रामक दास बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि आ ओ सभ पशुपालन आ पणि कार्य कऽ सकैत छथि। नग्नजितक प्रसंग लए मंत्र गायन केनिहार ब्राह्मण, गविष्ठि युद्ध कएनिहार क्षत्रिय आ एकर अतिरिक्त जे कृषि विकासमे बेशी ध्यान दैत छलाह से विश- सामान्य जन छलाह मुदा एहिमे मायानन्द जी वैश्य शब्द सेहो जोड़ि देने छथि।

सप्तम मण्डल

बर्बर उजरा आर्यक आक्रमणक चर्चा आब जा कए भेल अछि। प्रायः विदेशी विशेषज्ञक एक भागक संग मायानन्द जी सेहो पैशाची आक्रमणकेँ बादमे जा कए बूझि सकलाह आ एकरा सेहो आर्यक दोसर भाग बना देलन्हि। आर्य हरियूपियाकेँ डाहि कए नष्ट कए देने छलाह एकर फेर चर्च आबि गेल अछि। मोहनजोदड़ो

आतंकसँ उजड़ि गेल फेर भूकम्पो आयल ताहूसँ नगर ध्वस्त भेल। आब मायानन्दजी ओझराएल बुझाइत छथि। वर्षा कम होएबाक सेहो चर्चा अछि।

अष्टम् मण्डल

ऋषिग्रामक चर्चा अछि। कुलमे दास आ दासी होएबाक संकेत अछि। वृषभ पालनक सेहो संकेत अछि। मंत्र-पुत्रक ग्रामांचल चलि जएबाक आ विशः-वैश्य बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि। मुदा आगाँ मायानन्दजी ओझराइत जाइत छथि। कश्यप सागर तटसँ प्रस्थान-पूर्व द्यौस आ त्वराष्ट्री केर गौण देव भऽ जएबाक चर्चा अछि। ब्राह्मण आ क्षत्रियक विभाजन नहि होएबाक चर्च अछि आ क्यो कोनो कर्म करबाक हेतु स्वतंत्र छल। देवासुर संग्राम आ हेलमन्द तटक युद्ध आ पशुपालनक चर्चा अछि। पश्चात ब्रह्मण आ क्षत्रियक कर्मक फराक होएब प्रारम्भ भए गेल। पश्चात् मंत्र-द्रष्टा ऋषि द्वारा मंत्रमे देवक आ अपन नाम राखब प्रारम्भ भेल- एकर चर्चा अछि।श्रुति अभ्यासक प्रारम्भ होएबाक चर्चा अछि कारण मंत्रक संख्या बढ़ि गेल छल।

नवम् मण्डल

वस्तु विनमयक हेतु हाट व्यवस्थाक प्रारम्भ भेल। हाटमे मृत्तिका प्रभागमे दास-शिल्पी पात्रक उपस्थिति आ वस्त्र प्रभागक चर्चा अछि। मृत्तिका, हस्ति-दन्त, ताम्र सीपी आदिक बनल वस्तुजातक चर्चा अछि। शिशु-रंजनक वस्तुजात - जेना हस्ति, वृषभ आदिक मूर्त्तिक, लवणक, अन्नक, काष्ठक आ कम्बलक बिक्रीक चर्चा अछि।

दशम् मण्डल

श्वेत-जनक आगमनक -बर्बर श्वेत आर्य- सूचना नागजनकेँ भेटबाक चर्चा अछि। नाग जन द्वारा अपन दलपतिकेँ राजा कहल जाएब, नागक पूर्व-कालमे ससरि कए यमुना तट दिशि आएब आ ओतुक्का लोककेँ ठेल कए पाछाँ कए देबाक सेहो चर्चा अछि।कृष्ण जनक काष्ठ दुर्ग आ नागक संग हुनका लोकनिकेँ सेहो अनास कहल गेल अछि। मुदा ओ लोकनि दीर्घकाय छलाह आ नागजन कनेक छोट। एहि मण्डलमे दासक संग शूद्रक आ गंगा तटक सेहो चर्चा आबि गेल अछि। आर्य, दास आ शूद्रक बीचमे सहयोगक संकेत अछि।

अंतमे ऋचालोक नामसँ भूमिका लिखल गेल अछि। देवासुर संग्रामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलन्हि, हित्ती मित्तानी चलल आ आर्य पूर्व दिशा दिशि बढ़ल- एहि सभ तथ्यक आधार पर लिखल ई मंत्रपुत्र ऐतिहासिकताक सभटा मानदण्ड नहि अपना सकल।

मायानन्द मिश्रजी साहित्यकारक दृष्टिकोण रखितथि आ पाश्चात्य इतिहासकारक एक भाग द्वारा पसारल गॉसिपसँ बचितथि तँ आर्य आक्रमणक

सिद्धांतकेँ नकारि सकितथि। सरस्वतीक धार ऋगवेदक सभ मंडलमे अपन विशाल आ आह्लादकारी स्वरूपक संग विद्यमान अछि। सिन्धु आकि सरस्वती नदी घाटीक सभ्यता तखन खतम आकि ह्रासक स्थितिमे आएल जखन सरस्वती सुखा गेलीह। अथर्ववेदमे सेहो सरस्वती जलमय छथि। ऋगवेदमे जल-प्रलयक कोनो चर्च नहि अछि आ अथर्ववेदमे ताहि दिशि संकेत अछि। भरतवासी जखन पश्चिम दिशि गेलाह, तखन अपना संग जल-प्रलयक खिस्सा अपना संग लेने गेलाह। जल-प्रलयक बाद भरतवासी सारस्वत प्रदेशसँ पूब दिशि कुरु-पांचालक ब्रह्मर्षि प्रदेश दिशि आबि गेलाह।

सरस्वती रहितथि तँ बात किछु आर होइत मुदा सुखायल सरस्वती एकटा विभाजन रेखा बनि गेलीह, आर्य-आक्रमणकारी सिद्धांतवादी लोकनिकेँ ओहि सुखायल सरस्वतीकेँ लँघनाइ असंभव भऽ गेल।

सिन्धु लिपिक विवेचन सेहो बिना ब्राह्मीक सहायताक संभव नहि भऽ सकल अछि।

ग्रिफिथक ऋगवेदक अनुवादक पादटिप्पणीमे पहिल बेर ई आशंका व्यक्त कएल गेल जे आर्य आक्रमणकारी पश्चिमोत्तरसँ आबि कए मूल निवासीक दुर्ग तोड़लन्हि। दुर्गमे रहनिहार बेशी सभ्य रहथि। १९४७ मे ह्वीलर ई सिद्धांत लऽ कए अएलाह जे विभाजित पाकिस्तान सभ्यताक केन्द्र छल आ आर्य आक्रमणकारी विदेशी छलाह। एकटा भारतीय विद्वान रामप्रसाद चंद ताहिसँ पहिने ई कहि देने रहथि जे एहि नगर सभक निवासी ऋगवेदक पणि छलाह। मुदा मार्शल १९३१ ई मे ई नव गप कहने छलाह जे आर्यक भारतमे प्रवेश २००० ई.पूर्व भेल छल आ तावत हड़प्पा आ मोहनजोदड़ोक विनाश भऽ चुकल छल। १९३४ मे गॉर्डन चाइल्ड कहलनि जे आर्य संभवतः आक्रमणकारी भऽ सकैत छथि। १९३८ मे मकॉय मोहनजोदाड़ोक आक्रमणकेँ नकारलन्हि, किछु अस्थिपञ्जड़क आधार पर एकरा सिद्ध कएनाइ संभव नहि। डेल्स १९६४ मे एकटा निबन्ध लिखलन्हि 'द मिथिकल मसेकर ऑफ मोहंजोदाड़ो' आ आक्रमणक दंतकथाक उपहास कएलन्हि। तकर बाद ह्वीलर १९६६ मे किछु पाछाँ हटलाह मुदा मकॉयक कबायलीक बदलामे सभटा आक्रमणक जिम्मेदारी बाहरी आर्यगणक माथ पर पटकि देलन्हि। आब ओ कहए लगलाह जे आर्य आक्रमणकेँ सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि मुदा ज्योँ ई संभव नहि अछि तँ असंभव सेहो नहि अछि। स्टुआर्ट पिगॉट १९६२ धरि ह्वीलरक संग ई दुराग्रह करैत रहलाह। पिगॉट आर्यकेँ मितन्नीसँ आएल कहलन्हि। नॉर्मन ब्राउनकेँ सेहो पंजाब प्रदेशक शेष भारतक संग सांस्कृतिक संबंधक संबंधमे शंका रहलन्हि। संस्कृत आ द्रविड़ भाषाक अमेरिकी विशेषज्ञ एमेनो लिखलन्हि जे सिन्धु घाटी कखनो शेष भारतसँ तेना भऽ कए सांस्कृतिक रूपसँ जुड़ल नहि छल। जे आर्य ओतए अएलाह सेहो ईरानी सभ्यतासँ बेशी लग छलाह।

मुदा पॉर्जिटर १९२२ मे साहित्यिक परम्परासँ सिद्ध कएलन्हि जे भारत पर आर्यक आक्रमणक कोनो प्रमाण नहि अछि। ओ सिद्ध कएलन्हि जे भारतसँ आर्य

पश्चिम दिशि गेलाह आ तकर साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध अछि। लैंगडन सेहो कहलन्हि जे आर्य भारतक प्राचीनतम निवासी छलाह आ आर्यभाषा आ लिपिक प्रयोग करैत छलाह। ब्रिजेट आ रेमण्ड ऑलचिन आ कौलीन रेनफ्रीव आदि विद्वान प्राचीन भारतक इतिहासक प्रति पूर्वाग्रहक विश्लेषण कएने छथि।

मितन्नी शासक मित्र, वरुण, इन्द्र आ नासत्यक उपासक छलाह। हित्ती राज्यमे सेहो वैदिक देवता लोकनिक पूजा होइत छल।आलब्राइट आ लैंबडिन सेहो दू हजार साल पहिने दक्षिण-पश्चिम एशियामे इंडो आर्य भाषा बाजल जाइत छल आ संख्यासूचक शब्द सेहो भारतीय छल, एहि तथ्यकेँ मानलन्हि।

ई लोकनि भारतीय छलाह आ ऋगवेदक रचनाक बाद भारतसँ बाहर गेल छलाह। बहुवचन स्त्रीलिंग रूप, ऋगवेदक देवगणक विशिष्ट रूप अन्यत्र उपलब्ध नहि अछि। इंडो योरोपियन देवतंत्रमे भारतीय देवीगणक विरलता पूर्ववर्त्ती भारतीय मातृसत्तात्मक व्वस्थाक बादक योरोपीय परवर्त्ती पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक परिचायक अछि।

आब आऊ सुमेरक जल प्रलयपर जेकि ३१०० ई.पू. मे मानल जाइत अछि। भारतीय कलि संवत ३१०२ ई.पू. मानल जाइत अछि। अतः एहि तिथिसँ पूर्व ऋगवेदक पूर्ण रचना भऽ गेल छल।

देवासुर संग्रामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलन्हि आदि गप पोथीक समाप्ति पर ऋचालोकमे मायानन्द जी लिखैत छथि। किछु पाश्चात्य विद्वान सेहो ऋगवेदक दार्शनिक महत्वकेँ कम करबाक लेल ई गप कहैत छथि जे यूनानमे देवतंत्र पूर्ण रूपसँ पल्लवित छल मुदा ऋगवेदिक समाज घुमंतु छल आ देवतंत्र ताहि द्वारे विकसित नहि छल। ओ लोकनि ई सेहो कहैत छथि जे ऋगवेदक रचना अश्व पर घुमंतु जीवन यापित केनहार पश्चिमी आक्रमणकारी कएने छथि। ऋगवेदिक कवि लोकनि आरंभिक सामूहिक संपत्ति आ रक्त संबंध आधारित गणसमाज दुनूसँ परिचित छलाह मुदा स्वयं ओहिसँ बाहर आबि गेल छलाह आ व्यक्तिगत आ कुटुम्बक संपत्तिक आधार बला व्यवस्था शुरू कए देने छलाह। संपत्ति पुरुष केंद्रित आ परिवार पितृसत्तात्मक छल। मुदा मातृसत्तात्मक व्यवस्थाकेँ ओ बिसरल नहि छलाह कारण ओ आपः मातरः कहि बहुवचनमे जलदेवीक उपासना आ स्मरण करैत छथि, संगहि मरुतगण सदिखन गणक रूपमे स्मरण आ उपासना करैत छथि।

आब जा कए एंगेल्स कहैत छथि जे यूनानमे मातृसत्तासँ पितृसत्ता प्राचीन कालक सभसँ पैघ क्रान्ति छल। ई क्रान्ति ऋगवेदिक कालमे घटित भए गेल छल। श्रमक वैशिष्टीकरणसँ उत्पादनमे गोत्रक भूमिका घटि जाइत अछि आ कुटुम्बक बढ़ि जाइत अछि। गण, गोत्र, कुल आ कुटुम्बक क्रमशः विकास सामूहिक भूसंपत्तिक संगठनसँ होइत अछि। ऋगवेदमे कुम्भकार, कमार (काष्ठकार), लोहार आ धातु शिल्पक चर्च अछि। प्राचीन ईरानमे असुरक प्रतिरूप अहुरक प्रयोग भेल। ओ लोकनि एकर उपासक छलाह मुदा असुर-उपासक

भारतीय जनक प्रभाव ईरान धरि सीमित छल, आगाँ एकर प्रसार नहि भेल। भारतमे असुर दुष्ट छथि मुदा ईरानमे देव दुष्ट छथि। असुरक गरिमा सम्पूर्ण ऋगवेदमे अछि। कोनो मण्डल एहन नहि अछि जाहिमे कोनो एक वा आन देवताकेँ असुर नहि कहल गेल होअए। मुदा एहनो असुर छथि जे देवक विरोधमे छथि आ इन्द्रसँ एहन अदेवाः असुराः केर नाशक हेतु आह्वाण कएल गेल अछि।इन्द्रक समान अग्नि सेहो असुरक नाश करैत छथि आ इन्द्र आ बृहस्पति दुनू गोटे स्वयं असुर छथि। असुर देवताक उपाधि छल। ऋगवेदमे देव आ असुरक सदृश असुर एकटा भिन्न वर्ग छल असुर श्वास लैत छलाह मुदा देव नहि। देवसँ असुर बेशी प्राचीन छथि ताहि द्वारे असुर वरुण देव आ मनुष्य दुहूक राजा छथि।

पैशाची त्वग् त्वचा भारतमे कहियो तेहन आह्लादसँ नहि देखल गेल । ओहिनो आर्य आक्रमण पोषक सिद्धान्तकार जे ई तथ्य उदाहरणार्थ देखथि जे दक्षिण भारतीय ब्राह्मण, कश्मीरी ब्राह्मण आ नेपालक ब्राह्मण मे त्वचा नहि वरण रूप सेहो भिन्न अछि, ई सिद्ध करैत अछि जे ई सभ स्थानीय जन छथि आ जाति-व्यवस्थामे ताहिरूपेँ सम्मिलित भेल छथि । कारण पाँच-सए आ हजार बरखमे मानवशास्त्रीय आ वैज्ञानिक रूपेँ ओतेक रूप-रंगक अन्तर सम्भव नहि। जे यूरोपवासी दक्षिण अमेरिका-अफ्रीकामे छथि तिनको, आ जे नीग्रो-रेड इन्डियन अमेरिका-अफ्रीका-यूरोपमे छथि तिनको रूप रंगमे कोनो परिवर्तन पाँच सए बरखमे नहि आएल छन्हि। ई लाख बरखक आवाससँ सम्भव होइत अछि जे गरम प्रदेशक निवासी कारी आ ठंढ प्रदेशक गोर होइत छथि ।

पुरोहित

पुरोहित हिन्दीमे अछि आ श्रृँखलाक तेसर पोथी थीक। दूर्वाक्षत जकरा मायानन्दजी सुविधारूपेँ आशीर्वचन सेहो कहि गेल छथि सँ एकर प्रारम्भ भेल अछि।

पुरोहित केर आरम्भ दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्रसँ होइत अछि। शुक्ल यजुर्वेदक अध्याय २२ केर मंत्र २२ "ॐ आब्रह्मन..." सँ "नः कल्प्ताम्" धरि अछि। मिथिलामे एहि मंत्रक संग अन्तमे "ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।*ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव"*। एकर सेहो मंत्रोच्चार होइत अछि आ एहि चारि पादसँ ई मंत्र आशीर्वचनक रूप लए लैत अछि।

यजुर्वेदीय २२/२२ मंत्र सौसँ भारतमे देशभक्ति गीतक रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि।

*दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)*

*आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। लिंभोक्त्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥*

*आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शुरेऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योवां जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यों वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम्॥२२॥*

**मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।**

**ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।**

*हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बड़द भार वहन करएमे सक्षम होथि आ घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होअए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ मित्रक उदय होए॥*

*मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।*

*एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़कार अछि।*

*अन्वय-*

*ब्रह्मन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म*

*राष्ट्रे - देशमे*

*ब्रह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त*

*आ जायतां- उत्पन्न होए*

*राजन्यः-राजा*

*शुरेऽ बिना डर बला*

*इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण*

*ऽतिव्याधी-शत्रुकेँ तारण दय बला*

*महारथो-पैघ रथ बला वीर*

*दोग्ध्रीं-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)*

*धेनुर्वोढानड्वानाशुः धेनु-गौ वा वाणी वोढानड्वा- पैघ बड़द नाशुः-आशुः-त्वरित*

*सप्तिः-घोड़ा*

*पुरन्धिर्योवा- पुरन्धि- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योवा-स्त्री*

*जिष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला*

*रथेष्ठाः-रथ पर स्थिर*

*सभेयो-उत्तम सभामे*

*युवास्य-युवा जेहन*

*यजमानस्य-राजाक राज्यमे*

*वीरो-शत्रुकेँ पराजित करएबला*

*निकामे-निकामे-निश्चययुक्त कार्यमे*

*नः-हमर सभक*

*पर्जन्यों-मेघ*

*वर्षतु-वर्षा होए*

*फलवत्यो-उत्तम फल बला*

*ओषधयः-औषधिः*

*पच्यन्तां- पाकए*

*योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा*

*नः!-हमरा सभक हेतु*

*कल्पताम्-समर्थ होए*

*ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/ संरक्षित करी।*

तकर बाद लेखकीय प्रस्तावना जकरा पुरोहितमे विनियोगक नाम देल गेल अछि, केर प्रारम्भ होइत अछि। पुरोहित शतपथ ब्राह्मणकालीन समाज पर आधारित अछि।

विनियोगमे पूर्व आ उत्तर वैदिक युग, महाभारत काल इत्यादिक काल निर्धारण पर चरचा कएल गेल अछि। संन्यास आ मोक्ष धारणाक प्रवेश, सूत्र साहित्य, आरण्यक आ उपनिषद आ ब्राह्मण ग्रंथक रचनाक सेहो चरचा अछि।कर्मणा केर बदलामे जन्मना सिद्धांतक प्रारम्भ आ शूद्र शब्दक उद्भव, नगरक, आहत मुद्राक, उद्योगक सुदृढ़ीकरणक आ लोहाक प्रयोगक सेहो चरचा भेल अछि। फेर मायानन्द जी ई लिखि जाइत छथि जे दाशरज्ञ युद्ध ई.पू. १८०० मे भेल- भरत आ कुशिक-कस्साइटक सम्मिलित समूह सरस्वती तटसँ व्यास नदी पार करैत इलावृत पर्वत प्रदेश होइत ; आ ओ लोकनि कोशल मिथिलाक राजतंत्रक, कुरु-पांचालक संस्कृतिक विकसित होएबासँ पूर्वहि, स्थापना कएने छलाह।

पुरोहित तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि। प्रथम सर्ग दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि। अथर्वणपल्लीक पशुशालामे साँझ होइत देरी उठैत धुँआक चरचा अछि। मेधा आ कुशबिन्दुसँ कथा आगू बढ़ैत अछि। ऋषि गालबक आश्रममे ऋगवेदकेँ कंठाग्र कराएल जएबाक आ बादमे जा कए कृषि संबंधी शिक्षा देल जएबाक वर्णन अछि।

दोसर सर्गमे राजा प्रवाहण जैबालिक मूर्ख पुत्र द्वारा ब्राह्मणक अपमानक, प्रथम श्रोत्रिय आ दोसर पुरोहित ब्राह्मणक वर्णन अछि।

तेसर सर्गमे आचार्य चाक्रायणक अपमानक कारण पुरोहित वर्ग द्वारा पौरहित्य कर्म नहि करबाक निर्णयसँ प्रजाजनक दैनिक अग्निहोत्र कार्य आ बिना लग्नक कृषि आ वाणिज्य कार्यमे होअए बला भाङठक वर्णन अछि।

चतुर्थ सर्गमे व्यास कथा आ भारत युद्धक चर्चा अबैत अछि आ एतए मायानन्द जी पाश्चात्य दृष्टिकोणक अनुसरण करैत छथि। जय काव्यकँ भारत युद्धकथाक रूप दए देल गेल- ई वक्तव्य अनायासहि दए रहल छथि मायानन्द मिश्र।

पाँचम सर्गमे वैश्य द्वारा उपनयन संस्कार छोड़बाक चरचा अछि मुदा क्षत्रिय पुत्र आ पुत्री दुनूक उपनयन करैत छलाह। वैश्य कन्या शिक्षासँ दूर जा रहल छलीह आ ब्राह्मण कन्या गुरुकुलक अतिरिक्त पितासँ शिक्षा लए रहल छलीह। ब्राह्मणकँ पौरहित्यसँ कम समय भेटैत छलन्हि।

छठम सर्गमे ब्राह्मण पुरोहित द्वारा अथर्व वेदकँ नहि मानबाक चरचा अछि।

सातम सर्गमे अथर्वनपल्लीमे अथर्ववेदीय संस्कारक शिक्षा आ प्रथम श्रेणीक ब्राह्मण द्वारा ओतए नहि जएबाक चरचा अछि।

आठम सर्गमे इद्रोत्सवमे रथदौड़, अश्वारोहण, मल्लयुद्ध, असिचालन, लक्ष्यभेद आ विलक्षण अनुकृतिक चरचा अछि आ व्यासपल्लीक लोक द्वारा अनुकृति करबाक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे व्रात्य करुष भारत युद्धक कथा कहि रहल छलाह। भारत युद्धक बहुत पूर्व भरत, त्रित्सु, किवी आ सृंजय मिश्रित जनक आर्यवर्तमे शूद्र नामसँ सुमेरियाक जियसूद्रक स्मृतिमे अपनाकँ गौरव देबाक हेतु सूद्र कहबाक वर्णन अछि।

नवम सर्गमे तन्तुवाय द्वारा स्त्री निमित्त वस्त्रमे तटीयता देल जएबाक कारण भेल अन्तरक चरचा अछि, पहिने ई अन्तर नहि छल। अथर्वण आ याज्ञिक ब्राह्मणमे भेदक चरचा अछि।

दशम् सर्गमे शिश्नदेवक पूजा अनार्य द्वारा होएबाक आ अथर्वण पुरोहित द्वारा एकर अनभिज्ञताक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे अक्षर लिपिक प्रयोग आ आचार्य गालबक श्रुति आश्रममे अंक लिपिक अतिरिक्त किछु अन्य देखब वर्जित होएबाक गप कहल गेल अछि।

एगारहम सर्गमे गालब आश्रममे दण्डनीति पर चरचा निषिद्ध होएबाक बादो दक्षिण पांचालक सभासदक आग्रह पर एतद संबंधी चरचा होएबाक गप अछि। राजा शिलाजित द्वारा राजपद प्रधान पुरोहितकँ देबाक चरचा अछि।

बारहम सर्गमे भारत युद्धक बाद नियोग प्रथाक अमान्य भऽ बन्द भऽ जएबाक बात अछि। शिश्नदेवक शिवदेवसँ एकाकारक चरचा सेहो अछि।

तेरहम सर्गमे क्रैव्यराजक अभिषेक उत्सवक चरचा अछि। दूर्वाक्षत मंत्रमे

"ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव" आ दीर्घायुर्भव केर मेल शुक्ल यजुर्वेदक २२/२२ मंत्रसँ कए दूबि अक्षत लए, विशेष लए ताल गति यति मे गएबाक वर्णन अछि। एकर अनुवाद सेहो मायानन्द जी देने छथि, जे ग्रिफिथक अनुवादसँ प्रेरित अछि:-

समस्त विश्वमे ब्राह्मण विद्याक तेजक वर्चस्व स्थापित करए बला, सर्वत्र, वाण चलएबामे निपुण, निरोगि, महारथी, शूर, यजमान राज्य सभक जन्म होए, सर्वत्र अधिकाधिक दूध दएबाली धेनु होए, शक्तिशाली वृषभ होए, तेजस्वी अश्व होए, रूपवती सध्वी युवती होथि, विजयकामी वीरपुत्र होथि, जखन हम कामना करी पर्जन्य वर्षा देथि, वनस्पतिक विकास होए, औषधि फलवती आ सभ प्राणी योगक्षेमसँ प्रसन्न रहथि।राजन शतंजीवी होथि।

क्रैव्यराजक अभिषेकक लेल ई मंत्र हाथमे अक्षत, अरबा, ब्रीहि आ दूर्वादल लए आ मंत्र समाप्ति पश्चात राजा पर एकरा छीटबाक आ फेर दहीक मटकूरीसँ दही लए महाराजक भाल पर एहिसँ तिलक लगएबाक वर्णन अछि। एहि प्रकरणमे मायानन्द जी लिखैत छथि जे एहि मंत्रक, जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत मंत्र कहल जाइत अछि, रचना याज्ञवल्क्य द्वारा वाजसनेयी संहिताक लेल कएल गेल। एहि मंत्रक उपयोग मिथिलामे उपनयनक अवसर पर बटुकक लेल आ विवाहक अवसर पर वर-वधुककेँ आशीर्वचनक रूपमे प्रयुक्त होअए लागल।

पुरोहितक अन्त होइत अछि उपसंहारसँ। एतय वर्णित अछि, जे काशीक रस्ताक अनार्य ग्रामक आर्यीकरण भेल आ व्रात्यष्टोम यज्ञ भेल। शिश्नदेवाः पर चरचा अछि, शुनःशेप आख्याण आ भारत कथाक कहबाक परम्पराक प्रारम्भ आ मगध द्वारा आर्य धर्मक प्रति वितृष्णाक चर्च सेहो अछि।

मायानन्दजी महाभारतक समस्याक समाधानमे सेहो पाश्चात्य विचारक लोकनिक अनुसरण करैत बुझना जाइत छथि। प्रोफेसर वेबर पहिल बेर एहि सिद्धांतकेँ लए कए आएल छलाह। ओ अपन विचार व्यक्त कएने छलाह जे ८८०० पद्यक जय संहिता छल आ पहिने युद्ध पर्व (१८ पर्व मे चारि पर्व भीष्म, द्रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) मात्र छल। ओकर आधार ओ बनेने छलाह एकटा श्लोककेँ-

अष्टौश्लोक सहस्त्राणि..... अहं वेद्मि शुको वेत्ति सञ्जयो वेत्ति वा न वा

संजय, व्यास आ शुक तीनू गोटे ८८००-८८०० प्रत्येक कए भारतक श्लोक मात्र स्मरण कए सकल छलाह। माने भारत एतेक विशाल छल जे प्रत्येक गोटे सम्पूर्ण स्मरण नहि कए सकल छलाह आ ताहि दृष्टिसँ भारत कहियो २६४०० श्लोकसँ कम नहि छल, जकरा व्यास लिखने छलाह। जय संहिता भारत आ महाभारत दुनूकेँ कहल जाइत छै। युद्ध पर्व (१८ पर्व मे चारि पर्व भीष्म, द्रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) तेना ने परस्पर दोसर पर्व सभसँ जुड़ल अछि जे बिना पछिला पर्व पढ़ने अगिलाक कोनो भाँज नहि लगैत छै। इलियडक युद्ध १० साल धरि चलल छल मुदा इलियड मात्र ट्रॉयक घेरा धरि सीमित छल। मुदा महाभारत

बहुत पहिने सँ १८ दिनुका युद्धक कारणसँ शुरु होइत अछि। भीष्म पर्व छठम पर्व अछि, द्रोण पर्व सातम, कर्ण पर्व आठम आ शल्य पर्व नवम। तकरा बाद ९ टा पर्व आर अछि।

किएक तँ कैक बैसारीमे महाभारत केर पाठ सुनाओल जाइत छल ताहि द्वारे ई स्वाभाविक अछि जे पुरान पाठ सभ जे भए चुकल छल केर फेरसँ पुनःस्मरण बेर-बेर कएल जाइत छल। ताहिसँ ई अर्थ निकालब जे ई क्षेपक अछि, अनर्गल होएत। तहिना गीता सेहो पाश्चात्य विद्वान लोकनिक लेल क्षेपक अछि कारण ओ लोकनि भारतीय संस्कृति, साहित्य आ कलाक अनुभव विदेशी मानसिकतासँ करबाक कारण गलती करैत छथि। विदेशी विद्वान ई मानबामे कष्ट अनुभव करैत छथि जे महाभारत ओतेक पुरान भेलाक बादो ओतेक वृहत् अछि आ इलियड ओकर सोझाँ किछु नहि अछि। से एक गोट पद्यक वेबर द्वारा कएल गेल मिथ्या व्याख्याक आधार पर जय संहिता केर संकल्पना आएल। मात्र भारत आ महाभारत केर रूपमे एहि महाकाव्यक विकासकेँ बिना कोनो कारणसँ जय संहिता, भारत आ महाभारत रूपी तीन चरणमे प्रस्तुत कएल गेल। महाभारत केर सभसँ छोट रूपमे सेहो २४६०० सँ कम श्लोक नहि छल आ जय संहिता भारत आ महाभारतकेँ सम्मिलित रूपसँ कहल जाइत छल।

स्त्रीधन

ई ग्रन्थ मायानन्द बाबूक इतिहास बोधक अन्तिम कड़ी अछि। प्रागैतिहासिक ‘‘प्रथम शैलपुत्री च’’, ऋगवेदिक कालीन ‘‘मंत्रपुत्र’’, उत्तरवैदिककालीन ‘‘पुरोहित’’ केर बाद ई पुस्तक सूत्र-स्मृतिकालीन अछि, ई ग्रंथ हिन्दीमे अछि। आ ई सूत्र-स्मृतिकालीन उपन्यास मिथिला पर आधारित अछि। ई पोथी प्रारम्भ होइत अछि मायानन्दजीक प्रस्तावनासँ जकर नाम एहि खण्डमे ‘‘पृष्ठभूमि’’ अछि। एतए मायानन्दजी रामायण-महाभारत केर काल गणनाक बाद इतिहासकार लोकनिक एकमात्र साक्ष्य शतपथ ब्राह्मणक चर्च करैत छथि।

मिथिलाक प्राचीनतम नाम विदेह छल, जकर प्रथम वर्णन शतपथ ब्राह्मणमे आएल अछि। सार्थ-गमनक प्रक्रियाक विस्तृत वर्णन एहि ग्रन्थमे अछि, से मायानन्द जी कहैत छथि।

ई ग्रन्थ प्रथम आ द्वितीय दू अध्यायमे अछि आ अन्तमे उपसंहार अछि। प्रथम अध्यायमे प्रथमसँ नवम नौ टा सत्र अछि। द्वितीय अध्यायमे प्रथमसँ अष्टम ई आठ टा सर्ग अछि।

प्रथम अध्याय

प्रथम सत्र

एहिमे सृंजय द्वारा कएल जा रहल धर्म-पश्चात्ताप स्वरूप भिक्षाटनक, पत्नी-त्यागी होएबाक कारण छह मास धरि निरन्तर एकटा महाव्रत केर पालन करबाक चरचा अछि।

"द्वितीय वर" केर सेहो चरचा अछि।

द्वितीय सत्र

राजा बहुलाश्व जनकक ज्येष्ठ पुत्र कराल जनककेँ राजवंशक कौलिक परम्पराक अनुसार सिंहासन भेटलन्हि, तकर वर्णन अछि।

तृतीय सत्र

एतए पुरान आ नवक संघर्ष देखबामे अबैत अछि। वारुणी एक ठाम कहैत छथि जे जखन पूज्य तात हुनकर विधिवत उपनयन करबओलन्हि, ब्रह्मचर्य आश्रममे विधिवत प्राचीन कालक अनुसार श्रुतिक शिक्षा देलन्हि, तँ आब हमहूँ भद्रा कन्या बनि अपन वरपात्रक निर्वाचन स्वयं कए विवाह करए चाहैत छी।

चतुर्थ सत्र

एतए कराल जनकक विरुद्ध विद्रोहक सुगबुगाहटिक चरचा अछि। कृति जनक आ बहुलाश्व जनकक कालमे भेल न्यायपूर्ण आ प्रजाहितकारी कल्याणकारी कार्यक चरचा भेल अछि तँ संगहि सीरध्वज जनकक समयसँ भेल मिथिलाक राज्य-विस्तारक चरचा सेहो अछि। बहुलाश्व मरैत काल अपन पुत्र करालकेँ आचार्य वरेण्य अग्रामात्यखण्ड केर उपेक्षा-अवहेलना नहि करबाक लेल कहने छलखिन्ह मुदा कालान्तरमे वैह कराल जनक अग्रामात्यक उपेक्षा-अवहेलना करए लगलाह। आचार्य वरेण्य-खण्ड मिथिलासँ पलायन कए गेलाह।

पंचम सत्र

प्रणिपात, आशीर्वचन आ कुशल-क्षेमक औपचारिकताक वर्णन अछि आ स्त्रीधनक चरचा सेहो गप-शपक क्रममे आएल अछि। ईहो वर्णन आएल अछि जे वैशाली किछु दिन कौशलक अधीन छल आ भारत-युद्धमे ओ मिथिलाक अधीन छल। वन्य भूमिकेँ कृषि-योग्य बनेबाक उपरान्त पाँच बसन्त धरि कर-मुक्त करबाक परम्पराकेँ राजा कराल जनक द्वारा तोड़ि देबाक चरचा अछि।

षष्ठ सत्र

पांचाल-जन द्वारा अंधक वृष्णिक नायक वासुदेव कृष्णकेँ जय-काव्यक नायक

मानल जएबाक चरचा अछि। जय-काव्य आ भारत-काव्यक पश्चिमक उच्छिष्ट भोज मायानन्दजीक मोनसँ नहि हटलन्हि आ जय-काव्यमे मुनि वैशम्पायन व्यास द्वारा बहुत रास श्लोक जोड़ि वृहतकाय भारत काव्य बनाओल जएबाक मिथ्या तथ्यक फेरसँ चरचा अछि। जयकाव्यक लेखक कृष्ण द्वैपायन व्यासकँ बताओल गेल अछि। आ एकर बेर-बेर चरचा कएल गेल अछि जेना कोनो विशेष तथ्य होअए।

फेर देवत्वक विकासपर सेहो चरचा अछि। सरस्वती धारक अकस्मात् सूखि जएबाक सेहो चरचा अछि।

सरस्वतीक मूर्तिपूजनक प्रारम्भक आ मातृदेवीक सेहो चरचा भेल अछि।

सप्तम् सत्र

सरस्वतीकँ मातृदेवी बनाकए काल्पनिक सरस्वती प्रतिमा-पूजनक चरचा अछि। मिथिलामे पतिक नाम नहि लेबाक परम्पराक सेहो चरचा भेल अछि।

अष्टम् सत्र

राजाक अत्याचार चरम पर पहुँचि गेल अछि। अपूर्वा द्वारा विवशतापूर्वक गार्हस्थ्य त्याग आ स्त्रीधन सेहो छोड़बाक चरचा भेल अछि।

नवम् सत्र

सएसँ बेशी ग्राम-प्रमुख द्वारा सम्मेलन-उपवेशनक चरचा अछि।

पाँच वसन्त धरि कर-मुक्ति आ ताहिसँ वन्यजन आ शूद्र जनक सम्भावित पलायनक चरचा अछि। सीरध्वज जनकक पश्चात् धेनु-हरण राज्याभिषेकक बाद मात्र एकटा परम्परा रहि गेल, तकर चरचा अछि। मुदा कराल द्वारा अपन सगोत्रीय शोणभद्रक धेनु नहि घुमेबाक चरचा अछि। कराल द्वारा बीचमे प्रधान पुरहितकँ हटेबाक चरचा अछि। चिकित्साशास्त्रक नवोदित चिकित्सक बटुक कृतार्थकँ राजकुमारीक चिकित्साक लेल बजाओल जाइत अछि, संगमे राजकुमारीक सखी आचार्य कृतक पुत्री वारुणीकँ सेहो बजाओल जाइत अछि। ओ अपन अनुज बटुकक संग जाइत छथि आ कराल बलात् अपन कक्ष बन्द कए हुनकासँ गांधर्व-विवाह कए लैत छथि। प्रजा विद्रोह आ राजाक घोड़ा पर चढ़ि कए पलायनक संग प्रथम अध्यायक नवम आ अन्तिम सत्र खतम भए जाइत अछि।

द्वितीय अध्याय

प्रथम सर्ग

सित धारक चरचा अछि। वारुणिकँ वरुण सार्थवाह सभक संग अंग जनपद चलबाक लेल कहैत छन्हि। आ संगे वरुण ईहो कहैत छथि जे अंग जनपदक आर्यीकरणक कार्य अखनो अपूर्ण अछि।

द्वितीय सर्ग

सार्थक संग धनुर्धर लोकनि चलैत छलाह, अपन श्वानक संग। सार्थक संग सामान्य जन सेहो जाइत छलाह।वरुण आ वारुणी हिनका सभक संग अंग दिशि बिदा भेलाह, एहि जनपदक राजधानी चम्पा कहल गेल अछि आ एकरा गंगाक उत्तरमे स्थित कहल गेल अछि।

तृतीय सर्ग

अंग क्षेत्रमे धानसँ सोझे अरबा नहि बनाओल जएबाक चरचा अछि, ओतए उसीन-सुखा कए ढेकीसँ बनाओल अरबाकेँ चाउर कहल जएबाक आ ब्रीहिकेँ धान कहबाक वर्णन भेल अछि। पूर्वकालक श्रेष्ठी द्विज वैश्य आ अद्विज नवीन वैश्यक चरचा भेल अछि।

चतुर्थ सर्ग

आर्यीकरणक बेर-बेर चरचा पाश्चात्य विद्वानक मायानन्दजी पर प्रभाव देखबैत अछि। आर्य आ द्रविड़ शब्द दुनू , पाश्चात्य लोकनि भारतमे अपन निहित स्वार्थक लेल अनने छलाह। कोशल आ विदेहक प्रसारक, देवत्वक विकासक सम्पूर्ण इतिहास एतए देल गेल अछि। मिथिलाक दही-चूड़ाक सेहो चर्च आएल अछि।

पञ्चम सर्ग

दिनमे एकभुक्त आ रातिमे दुग्धपान मिथिला आ पांचाल दुनू ठाम छल। तथाकथित आर्य आ स्थानीय लोकनिक बीच छोट-मोट जीवनशैलीक अन्तर- आ मायानन्दजी आर्यीकरण कहैत छथि ओकरा पाटब !

षष्ठ सर्ग

अंगक गृह आर्यग्राम जेकाँ सटि कए नञि वरन् हटि-हटि कए होएबाक वर्णन अछि। हुनका सभ द्वारा छोट-छोट वस्त्र आ पशु चर्म पहिरबाक सेहो वर्णन अछि। वन्यजनक बीचमे नरबलि देबाक परम्पराक संकेत आ निष्कासित वन्यजनसँ भाषाक आदान-प्रदान सेहो मायानन्दजी पाश्चात्य प्रभावसँ ग्रहण कए लेने छथि।

विक्रय-थान खोलबाक जाहिसँ भविष्यमे नगरक विकास संभव होएत, तकर चर्च अछि।

सप्तम सर्ग

उसना चाउरक अधिक सुपाच्य होएबाक आ ताहि द्वारे ओकर पथ्य देबाक गप कएल गेल अछि।लौह-सीताक लेल लौहकार, हरक लेल काष्ठकार, बर्तन-पात्रक लेल कुम्भकार इत्यादि शिल्पीक आवश्यकता आ ताहि लेल आवास-भूमि आ भोजनक सुविधा देबाक गप आएल अछि।

अष्टम सर्ग

कृषि उत्पादनक पश्चात् लोक अन्नक बदला सामग्री बदलेन कए सकैत छथि, वृषभ-गाड़ीसँ सामग्रीक संचरण, एक मास धरि चलएबला यज्ञक व्यवस्था भूदेवगण द्वारा कएल जएबाक प्रसंग सेहो आएल अछि। भाषा-शिक्षण क्रममे ब्राह्मणगामक अपभ्रंश बाभनगाम आ वनग्रामक वनगाम भए गेल। भाषा सिखा कए घुरैत काल वारुणीपर तीरसँ आक्रमण भेल आ फेर वारुणिक मृत्यु भए गेल।

उपसंहार

दोसर वसन्त अबैत मिथिलामे गणतंत्रक स्वरूपक स्थापना स्थिर भए गेल। वैशाली आ मिथिलाक बीच परस्पर सम्वाद एक गणतांत्रिक सूत्रमे जुड़बाक लेल होमए लागल। सितग्राम स्थित राजधानीमे पूर्वमे मिथिलाक सीमा-विस्तारक चरचा भेल। राजधानी सितग्राम आ पूर्वी मिथिलाक जितग्रामक बीच एकटा महावन छल। एकरा ब्राह्मणग्राम आ त्रिग्राम द्वारा मिलिकए जड़ाकए हटाओल गेल।

भाषा विज्ञान प्रसंग - ऋगवैदिक ऋचामे प्राकृतक किछु विशेष शब्द, ध्वनि, प्रत्यय आ वाक्य रचना भेटैत अछि। पाणिनी संस्कृतकेँ मानक भाषा आ प्रादेशिक तत्वसँ मुक्त भाषाक रूप देने छलाह। कर्णाटकमे पानिकेँ नीरू आ उत्तर भारतमे जल कहल जाइत अछि। पानिक ई दुनू रूप संस्कृतमे भेटत। प्राकृतिक तत्वसँ मुक्त भाषा बनेबाक लेल पाणिनी कोनो क्षेत्रक अवहेलना नहि कएने छलाह वरण सभ क्षेत्रक शब्दकोष लए उच्चारणक भेदकेँ खतम कएने छलाह। बहुत रास प्राकृत शब्द संस्कृतमे ध्वन्यात्मक संशोधन कए लेल गेल आ ताहिसँ बादमे ई धारणा भेल जे प्राकृतक शब्द सभ तद्भव छल। संस्कृतमे तद्भव ताहि कारणसँ नहि देखबामे अबैत अछि। तहिना अपभ्रंश आ प्राकृत भाषा सौँसे देशमे घुमए बलाक भाषा छल।

भारतमे देवतंत्रक विकास पानि संबंधी धारणासँ जुड़ल अछि। यावत विश्व अव्यक्त अछि तँ अन्धकारमय अछि, अकास अछि, व्यक्त भेलापर ओ जल बनि जाइत अछि। अकास आ जल दुनू भारतीय चिन्तनमे तत्व अछि। मूर्तिपूजनक जे चित्र मायानन्दजी चित्रित करैत छथि ओ सरलीकरण अछि। भाषा-प्रसारक जे विधि ओ स्त्रीधनमे देखबैत छथि सेहो अति सरलीकरण अछि।

श्रवण द्वारा परम्पराक निर्वहण साहित्यमे देखल गेल छल आ से महाभारतमे किछु ठाम बेर-बेर देखबामे अबैत अछि , से ताहि कारण कतेको पर्वकेँ क्षेपक कहल जाएब सम्भव नहि। वेदक प्रतिशाख्यकेँ ओना देखलापर ई ज्ञात होएत जे लिखबाक परम्पराक अछैत ई सम्भव नहि छल मुदा महाभारत अबैत-अबैत कट्टरता बढ़ल। महाभारतमे वर्णन अछि:

वेदविक्रयिणश्चैव वेदानांचैवदूषकः।
वेदानांलेखकश्चैव तेवै निरयगामिनः॥

(वेदक विक्रेता, गलत-व्याख्या कएनिहार आ लेखक, सभ नरकक पथपर गेनिहार छथि।)

कराल प्रसंग : कराल जनकक कुकृत्यक वर्णन अर्थशास्त्रमे एना आएल अछि:

(१.६ विनयाधिकारिकेप्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायःइन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्याग) :
तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपिराजा सद्यो विनश्यति- यथा
दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मणकन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रोविननाश करालश्च वैदे हः,... ।

भिक्षु प्रभामतीक जयमंगल भाष्य एहिमे जोड़ैत अछि जे कराल योगेश्वर तीर्थमे भीड़ दिशि देखैत काल एकटा सुन्दर ब्राह्मण-स्त्रीकेँ देखलक आ ओकरा अपन राज्य जबर्दस्ती लए गेल। ओ ब्राह्मण ओकर राजधानी गेल आ कानि खीजि कए कहलक जे ई धरती किएक नहि फटैत अछि जतए एहन कुकर्मी राजा रहैत अछि। धरती फाटल आ ओहिमे कराल परिवार समेत धसि कए मरि गेल।

एकटा ब्राह्मण स्त्रीक अपहरण करालक पतनक कारण छल ई चरचा अश्वघोषक बुद्धचरितमे सेहो आएल अछि जेना कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे आएल अछि। मुदा दीपवंश कराल जनकक बाद ओकर पुत्र आ पौत्रक राजा होएबाक वर्णन करैत अछि। ब्राह्मण ग्रंथ सभ विदेहकेँ राजशाही आ बौद्ध ग्रन्थ सभ गणतंत्र (राजा समिति द्वारा चुनल) कहैत अछि आ मत विभिन्नताक से कारण।

एहि प्रकारें मायानन्द मिश्रजीक ऐतिहासिक यात्रा बहुत रास एहन तथ्य अनलक जे कोनो तरहेँ तर्कसँ पुष्ट नहि भए सकल।

# केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ "माहुर"

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल । एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहैँ आकर्षक रूपैँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- "...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ "कन्यादान"क पश्चात् "द्विरागमन" लिखए पड़लनि तहिना "चमेलीरानी"क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि"। ई दुनू खण्ड कैक तरहैँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जाएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- "..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?" ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि, जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक "चमेली रानी" आ "माहुर" ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक "चमेली रानी"क समर्पण - "ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैँचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि"- केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड "माहुर"क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि, तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे, जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह, क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होअए।

उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव, एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता भेनाइ कोनो टोना-टापरसँ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि।

एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो । कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्हि।

''चमेली रानी'' उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। - कीर्तिमुखक पाँच टा बेटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे ''पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ''। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह ''चिनगारी''क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि।

तकर बाद चमेली रानीक वर्णन अबैत अछि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह।

ई चरित्र २००८ ई.क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास ''द ह्वाइट टाइगर''क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेखक एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के.जी.बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड ''माहुर'' धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि। उपन्यासक चारिम भाग

गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइ मोन पड़ैत छथि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छै। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत अछि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि, जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड ‘‘माहुर’’क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक तेहन संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त नक्सली आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड़ड पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ.एस.आइ. आ के.जी.बी.क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक ‘‘डॉन क्विक्जोट’’, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ

उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

# नचिकेताक नाटक
# नो एण्ट्री: मा प्रविश

*नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल:* ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्दमे मृत भेल सैनिक आ चोरि करए काल मारल गेल चोर, उच्चक्का आ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से, पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर, चोर आ उचक्का दुनू गोटेकेँ, कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दए अबैत छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैत अछि, हुनकासँ अंगा छोड़बाक लेल कहैत अछि। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैत अछि तखन उचक्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे आबि जाइत अछि आ पॉकेटमारपर मारि-मारि कए उठैत अछि। मुदा जखन चोर कहैत छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल, ओकर जकाँ माँजल चोर नहि, आ उचक्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नञि सकल, तखन उचक्का महराज चोरक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैत अछि आ उचक्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमरा कहलक। संगे ईहो कहैत अछि जे चोरि तँ ई तेहन करए जनैत अछि, जे गिरहथक बेटा आ कुकुर सभ चोरि करैत काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलकए आ हमर खिधांश करैत अछि, बड़का चोर भेला हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नहि कए पबैत छथि जे ओ चोर थिकाह। ताहिपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबैत छन्हि। तखन ओ चोर महराज एहि गपपर दुख प्रकट करैत छथि जे नहि तँ ओहि राति एहि पॉकेटमारकेँ चोरिपर लए जएतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छलाह, गुम्म भेल सभटा सुनैत छथि आ दुख प्रकट करैत छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब, तँ स्वर्ग केहन होएत से नहि जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी एहि विषयपर पढ़ैत छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना *नो एण्ट्री: मा*

*प्रविश* मे सेहो, ई एहि स्थलपर प्रारम्भ होइत अछि जे एहि नाटककेँ संगीतक बना दैत अछि। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लैत छथि आ बटुआ साफ कए दैत छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भए जाइत अछि मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैत छथि, ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओहि पार, ई बटुआ आ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नहि अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजैत छथि, जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नहि चलबाक विषयमे टीप दैत छथि, जे हँ ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसरक पत्नी बनब। आब एहि गपपर घमर्थन शुरू भए जाइत अछि। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दैत छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेतीह। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दए बहसमे शामिल भऽ गेल छथि, ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की इत्यादि कहैत छथि। मुदा पॉकेटमार कहैत अछि जे भीतरमे सुख नहि दुखो भए सकैत अछि। एहिपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भए जाइत छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्र पर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। एहि बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आ दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि, जे ई अद्भुत नीलामी अछि, जे करबा रहल अछि से पॉकेटमार आ ओहिमे शामिल अछि चोर आ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भए जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करैत छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि, सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आ अकास-पताल कहैत छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहैत छथि जे सभ गोटे सत्य कहैत छी आ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नहि बजलहुँ। फेर बजैत-बजैत ओ कहए लगैत छथि, क्यो चोरि काल मारल गेलाह (चोर ई सुनि भागए लगैत छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लए अनैत छन्हि!) तँ क्यो एक्सीडेन्टसँ, आ एहि तरहेँ सभटा गनबए लगैत छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्युक एतए आयल छथि से हुनकहु लोकनिकेँ नहि बुझल छन्हि ! बीमा बाबू कहैत छथि जे ओ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि ! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतए छथि ! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि ! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइत छन्हि, कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहैत छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइत छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहतीह आ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतएसँ गेनाइ तँ संभव नहि मुदा ई भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ी माय-बाप (!) केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतहि बजबा लेल जाए। मुदा अपना लेल माए-बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग करा दैत छथि आ कन्यादान करैत छथि बजारी।

*दोसर कल्लोल:* दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि एहि आभाससँ, जे क्यो नेता मरलाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भए आबि चुकल छथि आ नेताजीक अएबाक सभ क्यो प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दए नेताजीक विलम्बसँ अएबाक (मृत्युक बादो !) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि मुदा भिखमंगनी आ रद्दीबला बुझि जाइत छथि, ताहि पर बहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ अपनाकेँ चोर कहलापर आपत्ति अछि आ भिखमंगनीकेँ ओ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओ सरिसवपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्यो नहि किनैत अछि आ तखन चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नव बात कोनो नहि अछि, सभ अछि पुरनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आ लोकक चोर, उचक्का आ पॉकेटमार होएबाक कारण समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा वामपंथी अबैत छथि आ ओ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उचक्का आ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन तर्क लए पुनः प्रस्तुत होइत अछि आ नेताजीक राखल ‘‘चोर-पुराण’’ नामक आधारपर बजारी जी गीत शुरू कए दैत छथि।

*तेसर कल्लोल:* आब नेताजी आ वामपंथीमे गठबंधन आ वामपंथी द्वारा सरकारक बाहरसँ देल समर्थनपर चरचा शुरू भए जाइत अछि। नेताजी फेर गीतमय होइत छथि आकि तखने स्टंट-सीन करैत एकटा मुइल अभिनेता विवेक कुमारक अएलासँ आकर्षण ओम्हर चलि जाइत अछि। टटका-ब्रेकिंग न्यूज देबाक मजबूरीपर नेताजी व्यंग्य करैत छथि। वामपंथी दू बेर दू गोट गप- नव गप कहि जाइत छथि, एक जे बिन अभिनेता बनने क्यो नेता नहि बनि सकैत अछि आ दोसर जे चोर नेता नहि बनि सकैछ (ई चोर कहैत अछि) मुदा नेता सभ तँ चोरि करबामे ककरोसँ पाछाँ नहि छथि। तखने एकटा उच्च वंशीय महिला अबैत छथि आ हुनकर प्रश्नोत्तरक बाद एकटा सामान्य क्यूक संग एकटा वी.आइ.पी.क्यू बनि जाइत अछि। अभिनेता, नेता आ वामपंथी सभ वी.आइ.पी.क्यूमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि ! ई पुछलापर जे पंक्ति किएक बनल अछि (?) ताहिपर चोर-पॉकेटमार कहैत छथि जे हुनका लोकनिकेँ पंक्ति बनएबाक (आ तोड़बाक सेहो) अभ्यास छन्हि।

*चतुर्थ कल्लोल:* यमराज सभक खाता-खेसरा देखि लैत छथि आ चित्रगुप्त ई रहस्योद्घाटन करैत छथि जे एक युग छल जखन सोझाँक दरबज्जा खुजितो छल आ बन्न सेहो होइत छल। नंदी भृंगी पहिनहि सूचित कए देलन्हि जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नहि, मात्र बुझबाक दोष छल। दरबज्जाक ओहि पार की अछि ताहि विषयमे सभ क्यो अपना-अपना हिसाबसँ उत्तर दैत छथि। चित्रगुप्त कहैत छथि जे सभक वर्णनक सभ वस्तु छै ओहिपार। नंदी-भृंगी सूचित करैत छथि जे

एहि गेटमे प्रवेश निषेध छै, नो एण्ट्री केर बोर्ड लागल छै। आहि रे ब्बा! आब की होअए ! नेताजीकेँ पठाओल जाइत छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जाइत छन्हि। बदरी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, केर खिंचाई शुरू होइत छन्हि असली केर बदला सर्टिफिकेट बला कम कए लिखाओल उमरिपर। पचपन बरिख आयु आ शश योग कहैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओ आ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइत छथि आ दू टा अनुचर सेहो जाए चाहैत अछि। मुदा नेताजीक अनुचर सभक अपराध बड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए, कराहीमे भुजबाक लेल बाहर लए जाइत छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कें लए जाइत छथि आ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक बाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आ बजारीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका बाहर लए गेल जाइत अछि। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजैत छथि तँ अभिनेता जी रोकि दैत छथि, जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़िए देल जाए। वामपंथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर वामपंथी प्रतिवाद करैत छथि। हुनको पठा देल जाइत छनि। वामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करबाक अवसर देल जाइत छन्हि। मुदा वामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि, मुदा एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अविश्वास करथु? मुदा यमराज कहैत छथि जे- भऽ सकैत अछि, जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न होअए, जतए पैसैत जाएब ओतए लिखल अछि नो एण्ट्री। आब यमराज प्रश्न पुछैत छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति ? वामपंथी कहैत छथि जे दुनू, मुदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छै मुदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइश कतए ? मुदा वामपंथी राजनीति एकर (समानताक, सुधार केर) प्रयास करैत अछि। ताहिपर हुनका संग चोर-उचक्का आ पॉकेटमारकेँ पठाओल जाइत अछि, ई अवसर दैत जे हिनका सभकेँ बदलू। चोर कनेक जाएमे इतस्तः करैत अछि आ ई जिज्ञासा करैत अछि जे हम सभ तँ जाइए रहल छी मुदा एहिसँ आगाँ ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहैत छथि- नो एण्ट्री। भृंगी तखने अबैत छथि, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहैत छथि - मा प्रविश। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि, जे एतुक्का निअम बदलल जएबाक आ कतेक गोटेकेँ पृथ्वीपर घुरए देल जएबाक चरचा सर्वत्र भए रहल अछि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह लग ठाढ़ छथि क्यो भुजए लेल कहाँ भेटल छन्हि (मात्र दू टा अनुचर छोड़ि)। आब क्यो नहि आबए बला बचल अछि, से सभ कहैत छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ी आ यमराज अपन मुकुट उतारि लैत छथि आ स्वाभाविक मनुक्ख रूपमे आबि जाइत छथि! मुदा चित्रगुप्तक मेकप बला नमहर दाढ़ी देखि भिखमंगनी जे ओतए छलीह, हँसि

दैत छथि। भृंगी उद्घाटन करैत छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि ! कोन अभिनय ! तकर विवरण मुहब्बत आ गुदगुदीपर खतम होइत अछि, तँ भिखमंगनी कहैत छथि जे नहि एहि तरहक अभिनय तँ ओतए (देखा कए) भऽ रहल अछि। ओत्तऽ रमणी मोहन आ उच्चवंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ बजिते नहि छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहैत छथि जे ओ तखने बजतीह जखन एहि दरबज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटतन्हि, बुझतीह जे अपसरा बनबामे यमराज मदति दए सकैत छथि, ई रमणीक हृदय थिक एतहु नो एण्ट्री ! यमराज खखसैत छथि, तँ चित्रगुप्त बुझि जाइत छथि जे यमराज ''पंचशर''सँ ग्रसित भए गेल छथि ! चित्रगुप्तक कहला उत्तर सभ क्यो एक कात लए जाओल जाइत छथि मात्र यमराज आ निभा मंचपर रहि जाइत छथि। यमराज निभाक सोझाँ- सुनू ने निभा... कहि रुकि जाइत छथि। सभक उत्साहित कएलापर यमराज बड़का चाभी हुनका दैत छथि, मुदा निभा चाभी भेटलापर रमणी मोहनक संग तेना आगाँ बढ़ैत छथि जेना ककरो अनका चिन्हिते नहि होथि ! ओ चाभी रमणी मोहनकेँ दए दैत छथि मुदा ओ ताला नहि खोलि पबैत छथि। फेर निभा अपने प्रयास करए लेल आगाँ बढ़ैत छथि मुदा चित्रगुप्त कहैत छथि जे ई मोनक दरबज्जा थिक, ओना नहि खुजत। महिला ठकए लेल चाभी देबाक (!) गप कहैत छथि। सभ क्यो हँसी करैत छनि जे मोन कतए छोड़ि अएलहुँ ? ताहिपर एकबेर पुनः रमणी मोहन आ निभा मोन संजोगि कए ताला खोलबाक असफल प्रयास करैत छथि। नंदी-भृंगी-भिखमंगनी गीत गाबए लगैत छथि जकर तात्पर्य ईएह जे मोनक ताला अछि लागल, मुदा ओतए अछि नो एण्ट्री। मुदा ऋतु वसन्तमे प्रेम होइछ अनन्त आ करेज कहैत अछि मैना-मैना । तँ एतहि नो एण्ट्री दरबज्जापर धरना देल जाए।

*विवेचन:* भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक ''नाट्यशास्त्र'' आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक ''काव्यशास्त्र''।

भरत नाट्यकेँ ''कृतानुसार'' ''भावानुकार'' कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक

कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होअए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि, से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आ निभा सेहो हुनका आ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आ समय-परिस्थितिपर रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि ! मात्र यमराज आ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जाएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिक मूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जाएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन, जे बलात्कारक बादक भेल पिटानक बाद मृत भेल छथि, सँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। मुदा दुनू भद्रपुरुष, बजारी आ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू। सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचित गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन पूर्णतया सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द - मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट बहराइत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे ओ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होअए। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे- जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता

देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल- जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबारक गपशप आ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबा लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक ‘‘नायकक नाम जीवन, एक छल राजा’’, श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि, सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आ वामपंथी सेहो कहैत छथि जे चोर नेता नहि बनि सकैत छथि, मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आ चित्रगुप्त धरि मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जाएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि।

*एहि तरहेँ नो एण्ट्री:* मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

# रचना लिखबासँ पहिने...............

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य । छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि- अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए । मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आजुक नव कविताक संग हाइकू/ क्षणिका/ हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह *स्वर* आ *कचटतप* व्यञ्जन विधान अछि, जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व "इ" एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि ? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवाड्‌र्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवाड्‌र्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम कें ओना *आइम* फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि ।

वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकँ ओहिना *एक* गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकँ। संगहि अ सँ ह कें सेहो एक गानल जाइत

अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नहि होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+१=१७

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतए छन्दकँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकँ अलग कए सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ऋ,ए.ऐ,ओ,औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओहि युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि)।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नहि अछि। २. उदातात्तर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ।नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदातात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जाहिमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, एहिमे। ६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जाहिमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि।तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि।आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपैँ एक प्रकृतिगण कहैत छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कय क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण क' उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे

एहि लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव, प्रस्तोतर द्वारा, उद्‌गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१.आँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. आँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. आँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. आँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. आँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट आँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाओल जाइत छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान एहि विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ एहि सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अग्निमींळे पुरोहिंत यघ्यस्यंदेवम्त्विजंम।होतांरंरत्न धातमम्।

२. पद पाठ- एहिमे प्रत्येक पदकेँ पृथक कए पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतय एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कए पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- एहिमे ज्योँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम एहि रूपमे होएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-एहि मे ऊपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप होयत- कख,खक,कखग,गखक,कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकँ खिंचनाई/अधिक मात्राक बड़ाबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ।५. विराम- शब्दकँ तोड़ि कय पदक मध्यमे ‘यति’। ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा ‘हाउ’ ‘राइ’ जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा ‘हावु’, ‘रायि’ जोड़ैत छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नहि अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत रहए। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नहि होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् कँ वरेणियम् स्वः कँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकँ अलग कए लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ
ओ= अ + उ
ऐ= अ/आ + ए
औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नहि पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।

ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

वैदिक ऋषि स्वयंकँ आ देवताकँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य एहि कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतए आध्यात्म चेतना,

अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि।

आब ज्योतिरीश्वर/ विद्यापति/ चतुर चतुरभुज/ बद्रीनाथ झा शब्दावलीसँ अहाँक परिचय करबा रहल छी, जाहिसँ अहाँक लेखन-कौशलमे वृद्धि होएत।

१. कविशेखर ज्योतिरीश्वर शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| गोण्ठि | - | मलाह |
| कबार | - | तरकारी बेचनिहार |
| पटनिआ | - | मलाह |
| लबाल | - | लबरा |
| लौजिह | - | ललचाइत जीह बला |
| पेटकट | - | जकर पेट काटल छै/ अनकर पेट कटैत अछि। |
| नाकट | - | नककट्टा |
| बएर | - | बदरीफल |
| बाबुर | - | बबूर |
| खुसा | - | शुष्क |
| चुसा | - | चोष्य |
| फरुही | - | मुरही/ लाबा |
| करहर | - | कुमुदक कन्द |
| मलैचा | - | मेरचाइ |
| सारुक | - | भैँटा (श्वेत कुमुदक) कन्द |
| बोबलि | - | घेचुलि खाद्य कन्द |
| बाँसी | - | वंशी |
| हुलुक | - | हुडुक्का (वाद्य यंत्र) |
| जोहारि | - | प्रणाम |
| तोरह | - | तौलह |
| बराबह | - | फुटा कए राखह |
| खुटी | - | महिला द्वारा कानक ऊर्ध्वभागमे पहिरए जायबला खुट्टी |
| सिङ्कली | - | सिकड़ी |
| चुलि | - | चूडी |
| त्रिका | - | माँग टीका |
| खञ्जरीट | - | खंजन पक्षी |
| साँकर | - | चीनी, लालछड़ी |
| बिरनी | - | वेणी, जुट्टी |
| कम्बु | - | शंख |

| | | |
|---|---|---|
| पञ्ज | - | पद्म |
| राउत | - | सैनिक पदाधिकारी |
| राजशिष्ट | - | राजाक दरबारी |
| पुरपति | - | नगरक मुख्य |
| साधि | - | सेठ |
| गन्धवणिक | - | कस्तूरी आदि सुगन्धी बेचनिहार |
| बेलवार | - | सीमारक्षक |
| राजपुत्र | - | एकटा पदाधिकारी |
| द्वारिक | - | राजदरबारमे प्रवेशक अनुज्ञा देनिहार |
| पनिहार | - | द्वारपाल |
| अगहरा | - | अग्रहार पाबि काज कएनिहार |
| रौतपति/ राजपुत्रपति | - | रौत सभक प्रधान |
| सन्धिविग्रहिक | - | विदेशमंत्री |
| महामहत्तक | - | प्रतिरक्षामंत्री |
| प्रतिबलकरणाध्यक्ष | - | शत्रुसेनाक जासूसीक विभाग |
| स्थानान्तरिक | - | राजाक पर्यटनक व्यवस्था केनिहार अधिकारी |
| नैबन्धिक | - | दस्तावेज लिखनिहार |
| वार्तिक | - | गुप्तवार्ता संग्राहक, वार्तिक आ महावार्तिक पञ्जीमे उच्च पदवी |
| आक्षपटलिक | - | द्युतगृहक अधिकारी |
| खड्गग्राह | - | हाथमे खड्ग लेने राजाक रक्षक- खर्गा |
| प्रमत्त्वार | - | बताहेकेँ रोकएबला अधिकारी |
| बिश्वास | - | राजाक अंतरंग सहायक |
| अग्रजाणिक | - | राजाक प्रयाणमे आगा-आगा चलनिहार सुरक्षा-दल |
| गूढ़ पुरुष | - | गुप्तचर |
| प्रणिधि | - | गुप्तचर |
| वार्तिक | - | गुप्तचर |
| सूपकार | - | भनसीया |
| सूपकारपति | - | भनसिया-प्रधान |
| सम्बाहक | - | भनसियाक परिचारक |
| बलिष्ठ | - | शारीरिक बलबला अंगरक्षक, बैठा |
| श्रोत्रिय | - | वैदिक |
| आध्यायिक | - | अध्येता |
| मौहूर्तिक | - | ज्योतिषी |
| आम्नायिक | - | वैदिक वा तान्त्रिक, युद्धविषयक परामर्शदाता |
| चूड़ामणि | - | भविष्यकथनशास्त्र |

| | | |
|---|---|---|
| पँचरुखी काँच | - | प्रिज्म |
| महथ | - | उच्च कोटिक सैनिक पद, महथा/ मेहता/ महतो |
| मुदहथ | - | जिनका हाथमे राजाक मोहर रहैत छल |
| महसाहनि | - | आपूर्ति अधिकारी |
| महसुआर | - | प्रधान भनसिआ |
| महल | - | महर, समृद्ध गोपाल, जेना नन्द महर |
| सेजवार | - | सय्यापाल |
| पनहरि | - | ताम्बूलवाह |
| राजवल्लभ | - | दरबारी |
| भण्डारी | - | भाण्डागारिक |
| कलबार | - | वणिक |
| चोरगाहा | - | चाँवर होकनिहार |
| सुखासन | - | आरामकुर्सी |
| चौपाड़ि | - | बहरघर, दलान, पाठशाला |
| अँचरा | - | गमछा |
| समरहर | - | अंगमर्दन |
| विदान | - | व्यायाम-३६ प्रकारक |
| तमारु | - | तामाक लोटा |
| पनिगह | - | पानि फेकबाक पात्र |
| तमकुण्ड | - | तामाक गँहीर अढ़िया |
| अप्यायक | - | तृप्तिकारक |
| फेना | - | बरकाओल चीनीक मधुर |
| जेञोनार | - | भोज |
| स्वर्गदुर्लभ | - | पान |
| दण्डिया | - | डंटाक उपरका पासि |
| भृङ्गार | - | स्वर्णकलस |
| आरहल | - | आरम्भ कयल |
| किटाएल | - | क्रुद्ध |
| नियोगी | - | एक प्रकारक फकीर |
| बुसक | - | भूसाक |
| धुनि | - | घूड़ |
| संकोच | - | छोट होयब |
| अपगत | - | अलक्षित |
| सम्भार | - | प्रसार |
| कौशिक | - | उल्लू |
| गोमायु | - | सियार |

| | | |
|---|---|---|
| नओबति | - | प्रहरी-दल |
| चतुःसम | - | द्रव- भीतरका धरातल नीपबाक |
| माठ | - | खाजा-माठ |
| उनच | - | उलोँच, चद्दरि (ओछेबाक) |
| दर्दुर | - | बेङ |
| झिकरुआ | - | झीङुर, सनकिरबा |
| निविल | - | निविड़ घन |
| काकोल | - | कार-कौआ |
| कोल | - | सूगर |
| शिवा | - | गिदरनी |
| फेत्कार | - | भूकब |
| सार्थवाह | - | व्यापारी यात्रादल-हरवल्लभा |
| प्रसारी | - | संचारशून्य मेघ |
| अखलु | - | प्रतीत होइत अछि |
| अखउलि | - | पूर्वमे कहल |
| वारिभक्त | - | पानिमे राखल बासी भात |
| सौहित्य | - | तृप्तता |
| उपचय | - | वृद्धि |
| पाण्डुरता | - | श्वेत भेनाइ जेना शरदमे मेघ कारीसँ उज्जर भऽ जाइत अछि |
| प्रसन्नता | - | स्वच्छता |
| सफरी | - | पोठी माछ |
| तरङ्ग | - | चञ्चलता |
| शालि | - | दाना भरल झुकल धान |
| मरुआ | - | तुलसी जतिक पुष्पवृक्ष |
| विशेषकच्छेद | - | कपार गलपर कस्तूरीसँ चित्र बनायब |
| दर्शनविधि | - | दाँत आ ठोर रँगब |
| वसनविधि | - | वस्त्र रँगब |
| वर्णिकाविधि | - | चित्रलेखन |
| शेखरयोजन | - | खोपा बान्हब |
| पत्रभङ्गि | - | शरीरमे कस्तूरी लेपन |
| गन्धयुक्ति | - | अतर-फुलेल बनायब |
| पानककरनी | - | शरबत बनायब |
| पट्टिकावान | - | पटिआ बीनब |
| तर्कुकर्म | - | सीकी-शिल्प |
| आकरज्ञान | - | भूतत्त्वविज्ञान |

| | | |
|---|---|---|
| अक्षरमुष्टिका | - | आँगुरक संकेतसँ अक्षर-भावक निर्देश |
| दोहदकरण | - | कृत्रिम उपचारसँ वृक्षकेँ दुर्भिक्षमे पुष्पित करब। |
| छलितयोग | - | एकप्रकारक योग |
| रसवाद | - | रसायनविज्ञान |
| दुकूल | - | घोघट-ओढ़नीक लेल प्रयुक्त वस्त्र |
| क्षौम | - | तीसीक सोनसँ बनल वस्त्र |
| कौशेय | - | कीटकोशसँ बनल तसर वस्त्र |
| कमरूबाल | - | कामरूप बला |
| बङ्गाल | - | वङ्गबला |
| गुञ्जर | - | गुर्जर |
| कठिबाल | - | काठियाबाड़बला |
| बरहथी | - | बारह हाथक |
| बैङ्गना | - | भट्टासन रंगबला |
| पञ्चहर | - | पाँच खण्डक महल |
| पञ्चसम | - | पञ्च सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण |
| प्रदीपकलस | - | अहिबातक पातिल, कलसमे राखल मङ्गलदीप जे बसातसँ मिझाय नहि |
| षेमा | - | राजा आ सेनाक अस्थायी शिविर |
| वारिगह | - | हथिसार वा घोड़सार |
| एकचोइ/ दोचोइ | - | एक वा दू मुख्य स्तंभ बला तम्बू |
| मण्डबा | - | मड़बा |
| कपलघड़ | - | कपड़ाक घर |
| बरागन | - | बेरागन, सोम-रवि आदि |
| चेष्टसार | - | द्यूतशाला |
| सहिआर | - | अम्पायर |
| खेलबार | - | द्यूतशालाक मालिक |
| दण्डसाह | - | दण्डसाक्षी |
| कात | - | काँति, हारि-जीत लेल राखल द्रव्य |
| उपनय | - | समीप आनब |
| भुजङ्ग | - | समदिया, चुगला |
| घल | - | झुण्ड |
| अगिरानि | - | अग्रगामी रक्षक दल |
| सेनगाह | - | सेनानायक |
| रजाएस | - | राजादेश |
| घोल | - | घोड़ा |
| पाएन | - | पएर रखबाक वलय |

| | | |
|---|---|---|
| पलानि | - | जीन लगाए घोड़ाकेँ कसब |
| थलबार | - | घोड़सारमे रहि अश्वक पालन कएनिहार |
| पाग | - | मुरेठा |
| सरमोजा | - | माथमे पहिरबाक मोजा |
| गान्ती | - | गाँती |
| बाग | - | चाबुक |
| साङ्कल | - | कड़ी |
| डाम्भ | - | काँच नारिकेर |
| फरेन्द | - | फाँक |
| कोन्ते | - | बरछी |
| लउली | - | लाठी |
| जाठी | - | फड़ाठी |
| कोन्तिआ | - | बरछीबाला |
| धमसा | - | नगाड़ा |
| महुअरि | - | फूँकि कए बजयबाक एक वाद्य |
| अनायत | - | ववश, बहीर |
| षतबार | - | पहरादार |
| बाइति | - | वाद्यध्वनि |
| टाप | - | घोड़ाक खुरपात |
| मुहरव | - | मुखध्वनि |
| पलानि | - | कसि कय |
| करुअक | - | कयलक |
| सर्वांवसर | - | आम दरबार |
| वेकल्हेण्टे | - | डाँड़ |
| पाट | - | रेशमी |
| धलि | - | धड़िया, कप्पा |
| पाझि | - | पक्षी |
| टोपर | - | टोप सन झपना |
| सइचान | - | बाज पक्षी |
| पितशाल | - | पीरा साँखु |
| सरल | - | धूप सरड़ |
| सिम्बलि | - | सीमर |
| सिंसप | - | सीसी |
| सहोल | - | साहोड़ |
| पाउलि | - | पाँड़रि |
| बंझि | - | बाँझि |

| | | |
|---|---|---|
| गिरिछ | - | रिछ |
| गुआ | - | सुपारी |
| नरङ्ग | - | सन्तोला |
| नमेरु | - | रुद्राक्ष |
| बउर | - | बकुल, भालसरि |
| छोलङ्ग | - | छोहारा |
| जुड़ | - | शीतल |
| एला | - | अड़ाँची |
| सुखमेला | - | छोटकी अड़ाँची |
| मधुकर | - | शतावरी |
| कम्पूर कदली | - | कर्पूरकदली |
| कपिञ्जल | - | तितीर |
| धारागृह | - | फुहारासँ युक्त स्नानगृह |
| स्थेय | - | भगनिहार नहि |
| परम्परीण | - | वंशपरम्परासँ चल अबैत |
| पुरुष | - | रक्षक, सिपाही |
| कार | - | कारी |
| काबर | - | चितकाबर |
| चलक | - | चरक, श्वेतवर्ण |
| गोल | - | गौर |
| कइल | - | कपिल |
| पाण्डर | - | पाण्डुर |
| शीकरविक्षेप | - | फुहारा छोड़ब |
| गण्डूष | - | कुड़रा |
| नाकजलबुद्बुद | - | नाकसँ जलमे हवा छोड़ि बुदबुद बनायब |
| पिण्ड | - | पीड़ी |
| पारी | - | बेढ़ |
| साटि | - | खुट्टा |
| चुत | - | आम |
| परस्रवण | - | सोता |
| पहाल | - | गिरि |
| डोङ्गल | - | डोंगर |
| चुली | - | चोटी |
| कोइआर | - | कोविदार |
| सैम्ब | - | सीमर |
| सीसमु | - | सीसो |

| | | |
|---|---|---|
| साङ्कु | - | साँखु |
| समि | - | शनि, सैनि |
| सहोल | - | साहोड़ |
| पद्मोकठ | - | पद्मकाठ |
| सभर | - | साँभर, अष्टापद मृग |
| कुटुम्बिनी | - | खीरी |
| कठहरिआ | - | कठखोदी |
| पेच | - | उल्लू |
| स्रुच | - | काठक लाड़नि, दाबि |
| पञ्चामृत | - | दही, दूध, घृत, मधु, शर्करा |
| पञ्चकषाय | - | शरीरमे लगयबाक पाँच सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण |
| चषाल | - | यूपक माथ परक थुमहा |
| उदूखल | - | उक्खरि |
| चमस | - | बाटी |
| संभृति | - | सामग्री |
| सप्तधान्य | - | जओ, गहुम, तिल, काउन, साम, चीन, नीवार |
| आषाढ़दण्ड | - | पलाशदण्ड |
| तरुत्वच | - | वल्कल |
| वृक्षी | - | मुनिक बैसबाक आसन |
| दारुपात्र | - | कठौत |
| करण्डक | - | छिट्टा, पथिआ |
| बहआरि | - | बहुरिआ, पुतोहु |
| बिदान | - | दाओ, मुद्रा |
| उभरि | - | उछलि कए ऊपर आबि, कुश्तीक दाओ |
| अवधा | - | अधोमुख, कुश्तीक दाओ |
| विद्यावन्ति | - | नर्तकी |
| सोताक ककना | - | मङ्गल सूत्र |
| सिङ्कली | - | सिंकड़ी |
| शाख | - | शंखाचूड़ी |
| खुन्ती | - | खुट्टी- कानक उपरका भागमे पहिरल जाइछ |
| चूलि | - | चूड़ी |
| तृका | - | माँगटीका |
| दशजुधि | - | दसौन्ही- राजाकँ कालक सूचना देनिहार, सम्प्रति भाट |
| समहथ | - | समहस्त, बाजा सभपर एकबेर हाथ दए संगीत निकालब |

| | | |
|---|---|---|
| मण्डल | - | हाथ-पएरक चक्राकार संचार कए एक मुद्रासँ दोसर मुद्रामे पहुँचबाक क्रिया |
| अङ्गहार | - | अङ्गसभकेँ विलासपूर्वक उचित स्थानमे पहुँचाएब |
| भाल | - | भूजाबलाक चूल्हि |
| ओबारी | - | पातिल |
| शिवा | - | गिदड़नी |
| भीम | - | भयानक |
| उल्कामुख | - | एक जातिक गीदड़ जकड़ा मुहसँ धधरा बहराइत छै |
| जन्ताक | - | जाँतक |
| चुञ्ची | - | स्तन |
| पसार | - | दोकान |
| पेचा | - | उल्लू पक्षी |
| षीषील | - | खिखीड़ |
| नेउर | - | बीजी |
| अपर्यन्त | - | असीम |
| पाट | - | पट्टवस्त्र |
| कापल | - | कपड़ा |
| सकलात | - | गलैचा |
| दुसुखासन | - | सुखद शय्या |
| लचसूचिका | - | नओ सुइयापर बिनायल बिछाओन |
| परिकर-नायक | - | दलपति |
| वर्हि | - | कुश |
| समिध | - | जारनि |
| दृषद | - | पाथर |
| लाज | - | लाबा |
| इष्टाङ्गना | - | भावी पत्नी |
| सुरती | - | सूरतसँ आयल, सम्प्रति सुरती तमाकू |
| जातीफल | - | जायफल |
| सूक्ष्मेला | - | छोटकी अड़ाँची |
| गुलत्वक | - | दालिचीनी |
| पत्रक | - | तेजपात |
| पिर्प्पली | - | पीपरि |
| कटुकी ओ दुलाह | - | दुलार काँट, वनौषधि |
| मूल्य परिछेद | - | मूल्य पटाएब |
| निष्क्रय | - | विनिमय |

| | | |
|---|---|---|
| कर्षक्रय | - | सोनाक मुद्रा कीनब |
| अङ्कपरिस्थिति | - | लेखा-जोखा |
| हरण-भरण | - | माल लेब-देब |
| व्यवच्छेद | - | फरिछोट |
| नष्टकाक | - | कार कौआ |
| सलभ | - | फतिंगा |
| ग्रहिल | - | लगारी |
| सद्विचक्षण | - | नीक विद्वान् |
| वपा | - | भीड़-स्तूपाकार भूमि |
| खोल | - | खाधि |
| हस्तकाण्ड | - | लग्गा |
| गुणकाण्ड | - | नपबाक लग्गा |
| वत्सदन्त | - | बाछाक दाँत सन |
| भल्ल नख | - | भालुक नखक सदृश |
| तृपर्व | - | तीन पोर बला |
| सप्तपर्व | - | सात पोरबला |
| आलीढ़ | - | दहिना ठेहुनकँ उठाय ओ बामा ठेहुनकँ नीचाँ रोपि ठाढ़ भेल |
| प्रत्यालीढ़ | - | आलीढ़क विपरीत |
| समपाद | - | दुनू ठेहुन एक सरल रेखापर रोपि ठाढ़ भेल |
| बिशाख | - | दुनू टाँग चिआरि ठाढ़ भेल |
| स्थानक | - | ठाढ़ होएबाक ढ़ंग |
| असन | - | भाला |
| गोकर्ण | - | छोट भाला |
| मुकुल | - | कलिकाकार तीर |
| डाण्ड | - | पतबार, पानि उपछबाक कठौत |
| चाड, चडक | - | नाओ सभक बेड़ा |
| जुज्झार | - | लड़ाकू, युद्ध-पदाति |
| गणक | - | गणितज्ञ |
| ताराविद् | - | तारा देखि दिशाक ज्ञान करओनिहार |
| गुणवृक्ष | - | मस्तूल |
| सेकपात्र | - | नाओसँ पानि उपछबाक कठौत |
| वोहित | - | जहाजक बेड़ा |
| बिआरी | - | रात्रिभोजन |
| चोरगाहि | - | चामरिग्राहिणी |
| पटा | - | छोट पीढ़ी |

| | | |
|---|---|---|
| बधा | - | खुट्टी लगला उत्तर खराऊँ मुदा डोरी लगला उत्तर बधा |
| तमारु | - | ताम्रपत्र |
| बटइ | - | बटेर |
| तेरिआ | - | तीन खुट्टाक- दू बिआनक महीस |
| लेबारी | - | नार-पुआर |
| अधतेरह | - | तेरहसँ आध कम अर्थात् साढ़े बारह |
| अँचओलनि | - | हाथ-मुँह धोलनि |
| देवरूपा | - | एक प्रकारक चानी |

२. विद्यापति शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| मृगमद | = | कस्तूरी |
| वासर | = | दिन |
| रैन | = | राति |
| लिधुर | = | रक्त |
| पुर नटी | = | नागर नटी |
| अवतरु | = | अवतरित होऊ |
| कनक भूधर | = | सुमेरु पर्वत |
| चन्द्रिका चय | = | चन्द्रिकाक समूह |
| निपातिनि | = | नाश करएबाली |
| भक्त भयापनोदन | = | भक्तक भए दूर करएबाली |
| दुरित हारिणि | = | विपत्तिक भार हरण करएबाली |
| दुर्गमारि | = | भयङ्कर शत्रु |
| विमर्द | = | विनष्ट |
| गाहिनी | = | विचरण करएबाली |
| सायक | = | वाण |
| सुकर | = | सुन्दर |
| पिसित | = | काँच मौस |
| पारणा | = | तृप्ति |
| रभसे | = | आनन्दित करएबाली |
| कृशानु | = | अग्नि |
| चुम्ब्यमान | = | चुम्बन करैत अछि |
| परिच्युति | = | नष्ट करैत अछि |
| आड़ | = | लाल |
| भागि | = | वक्र |
| गोए | = | नुका कए |

| | | |
|---|---|---|
| सुधाए | = | अमृत |
| कुशेशय | = | शतपत्र कमल |
| अधबोली | = | असंपूर्ण वाक्य |
| खनेखन | = | क्षणे-क्षण |
| उचिक | = | चकित भावेँ |
| आरति | = | पीड़ा |
| अनानि | = | अज्ञानी |
| दन्द | = | झगड़ा |
| हेरैत | = | देखैत |
| मनसिज | = | कामदेव |
| गौरव | = | गुरुता |
| खीन | = | क्षीण |
| अओके | = | दोसराक |
| लहु | = | लघु |
| परगास | = | प्रकाश |
| सुरत विहार | = | काम-क्रीड़ा |
| नवरङ्ग | = | संतोला |
| सन्तापलि | = | कष्ट देनाइ |
| बाङ्क | = | वक्र |
| पसाह | = | प्रसाधन |
| भीति | = | भयसँ |
| तिष | = | तीक्ष्ण |
| सिझल | = | सिद्ध भेल |
| कोरि | = | बैर फल |
| ससन | = | वायु |
| धनि | = | नायिका |
| अम्बर | = | वस्त्र |
| रेह | = | रेखा |
| रङ्ग | = | आनन्द |
| अलका | = | लेप |
| मसि | = | सियाही |
| समरा | = | श्यामल |
| कचोरा | = | कटोरा |
| पहू | = | प्रभू |
| ससधर | = | चन्द्रमा |
| मनोभव | = | कामदेव |

| | | |
|---|---|---|
| सउदामिनी | = | विद्युत |
| करिनि | = | हस्तिनी |
| वयन | = | मुख |
| परिमल | = | सुगन्धि |
| तनरुचि | = | शरीरक गोराइ |
| अरुझायल | = | ओझरा गेल |
| बिलास-कानन | = | प्रमद-वन |
| निविल | = | घनगर |
| विहि | = | विधि |
| निञ | = | निज |
| विद्रुम दले | = | मौसरीक पातमे |
| तिहुअन | = | त्रिभुवन |
| मल्ल | = | पहलमान |
| हाटक | = | सोना |
| थम्भ | = | स्तम्भ |
| चिकुर-निकर | = | केशपाश |
| विचरित | = | निअम विरुद्ध |
| कवरी | = | केशपाश |
| चामरि | = | चँवर गाय |
| सम्भसि | = | सम्भाषण |
| न जासि | = | नहि कएल जा सकैछ |
| हुतासे | = | अग्नि |
| मो | = | हम |
| पीहलि | = | झाँपि देलक |
| पीहित | = | आच्छादित |
| कुहुकि | = | मायाविनी |
| जुड़ायब | = | शीतल करब |
| दहइ | = | जड़ायब |
| अवनत | = | नीचाँ झुकल |
| बारल | = | निवारण कएल |
| धाओल | = | दौगि पड़ल |
| पसाहिम | = | प्रसाधन |
| फुलग | = | रोमांच |
| बलाअ | = | वलय |
| पेखलि | = | देखल |
| बेढ़लि | = | लेपटल |

| | | |
|---|---|---|
| थीर | = | स्थिर |
| पुछसि | = | पुछैत छह |
| परस | = | स्पर्श |
| झुरए | = | व्याकुल होइत अछि |
| अम्बुद | = | मेघ |
| धन्दा | = | संदेह |
| पुतलि | = | मूर्ति |
| इन्दु | = | चन्द्रमा |
| महि | = | पृथ्वी |
| माझ | = | मध्य |
| खिन | = | क्षीण |
| मधु | = | पुष्प रस |
| उपेखि | = | उपेक्षा करके |
| तरुअर | = | तरुवर |
| लेख | = | उल्लेख |
| परिहरि | = | छोड़कर |
| तोरिए | = | तोहर |
| पाछिलि | = | पाछाँक |
| सनि | = | सदृश |
| अछलिहुँ | = | हम छलहुँ |
| छाजत | = | शोभित होएत |
| घोसिनी | = | ग्वालिन |
| बथु | = | वस्तु |
| अरतल | = | अनुरक्त |
| रव | = | हल्ला |
| राहि | = | राधा |
| तापिनि | = | ज्वाला |
| बयने | = | वाणी |
| धरनि | = | पृथ्वी |
| इथि | = | एकर |
| जोतिअ | = | ज्योतिष |
| मुरछइ | = | मूर्च्छा |
| आइति | = | अधीनता |
| महते | = | महावतसँ |
| नव | = | झुकैत अछि |
| एहो | = | ई |

| | | |
|---|---|---|
| बटमारी | = | रस्तामे लुटनाइ |
| तुलाएल | = | बढ़ाओल |
| पसार | = | दोकान |
| पढ़ओंक | = | बोहनी |
| कुंगयाँ | = | गमार (कुगामक) |
| आजि | = | लगा देब |
| आग | = | अङ्ग |
| गोए | = | नुका कए |
| इन्दुमुखी | = | चन्द्रमुखी |
| तहु | = | ताहि परसँ |
| परिहरिहह | = | त्यागि देब |
| सारी | = | सारिका |
| सेचान | = | बाज |
| भामि-भामि | = | भ्रमण कए |
| विरडा | = | विडाल |
| सुरते | = | काम-क्रीड़ा |
| काहिअ अवधारि | = | विश्वासपूर्वक कहैत अछि |
| अन्तर नारी | = | नारीक हृदय |
| रोखए | = | रोष |
| गंजए | = | गंजन |
| रंजए | = | प्रसन्न |
| साह | = | ओ |
| तरासे | = | भए |
| परुष | = | कठिन |
| सोस | = | शुष्क |
| चेतन | = | समर्थ |
| आथि | = | अछि |
| सारी | = | संग |
| दूषलि | = | दुःख |
| निमाल | = | निर्माल्य |
| अंसुक | = | वस्त्र |
| वाँलभु | = | वल्लभ |
| नठल | = | नष्ट |
| परबोध | = | प्रबोध |
| पांगुर | = | पैरक आंगुर |
| खिति | = | क्षिति |

| | | |
|---|---|---|
| गीभ | = | ग्रीवा |
| अनुसए | = | पश्चाताप |
| अनुरञ्जब | = | हम सम्हारि सकब |
| विरमाने | = | विराम-स्थल |
| एहो पय | = | ताहिपर सेहो |
| जार | = | जराकए |
| नखत | = | नक्षत्र |
| जुगुतिहि | = | तर्कसँ |
| दोहाए | = | शपथ |
| रङ्ग | = | अनुराग |
| गरुअ | = | गुरुतर |
| पिसुन | = | चुगलखोर |
| अरुझओहल | = | ओझरायल |
| कओनकँ | = | ककर ऊपर |
| बारि | = | बचा कए |
| फुलधालि | = | फूल धारण कए |
| कैतवे | = | छलसँ |
| अह | = | दिन |
| सपजत | = | सपरज |
| वथु | = | वस्तु |
| मोन्ति | = | मोती |
| धम्मिल | = | केशपाश |
| धोएल | = | स्थापित कएल |
| अङ्गिरि | = | अंगीकार करब |
| पुनिमाँ | = | पूर्णिमा |
| विभिनावए | = | अलग कए सकैत अछि |
| आनन | = | मुख |
| तिमिशरि | = | अंधकारक बैरी |
| चालक | = | प्रेरक |
| बम | = | उगलि रहल |
| भीभ | = | भआवोन |
| ओल | = | अन्त |
| कवल | = | ग्रास |
| सरूप | = | सत्य |
| निसिअर | = | निशाचर |
| भुअङ्गम | = | भुजङ्गम |

| | | |
|---|---|---|
| उजोर | = | प्रकाश |
| झाप | = | डुमनाइ |
| मेंदुर | = | घन |
| मुदिर | = | मेघ |
| पाउस | = | पावस |
| निसा | = | निशा |
| निबिल | = | निविड़ |
| निचोल | = | साड़ी |
| जामिक | = | प्रहरी |
| थैरेज | = | स्थैर्य |
| थोइआ | = | स्थापयित्वा |
| रञनि | = | रात्रि |
| सिरहि | = | शोभामे |
| असिलाइ | = | म्लान भऽ गेलाइ |
| वालँभू | = | स्वामी |
| मुसए | = | चोरि करबाक लेल |
| छैलरि | = | छलियाक |
| अरथित | = | याचनासँ |
| जड़ाइअ | = | ठण्डा करू |
| विरत रस | = | जकर स्वाद खतम भए गेल |
| अचेतन | = | मूर्ख |
| कके | = | किएक |
| लाघव | = | अनादर |
| चिटि-गुड़े | = | गुड़-चुट्टी |
| चुपड़लि | = | ब्याज |
| लओले लोथे | = | बहन्ना करलो उपरान्त |
| झाल | = | शुष्क |
| दरनि | = | दरारि |
| असेखि | = | अशेष |
| असहति | = | असहनशील |
| तन्न | = | तन्त्र |
| भाझहि | = | मध्य |
| खीनी | = | क्षीण |
| झपावह | = | ढ़कैत होए |
| परिरम्भि | = | आलिङ्गन कए |
| फुजलि | = | खुजि गेल |

| | | |
|---|---|---|
| घोषसि | = | घोषणा |
| नखर | = | नख |

पाँच पाँच गुन दस गुन चौगुन आठ दुगुन = ५*५*१०*४*८*२=१६०००

| | | |
|---|---|---|
| नखर | = | नख |
| छाँद | = | शोभा |
| हिया | = | हृदय |
| सदय | = | सहाय |
| कानुक | = | कृष्णाक |
| निरसाओल | = | नीरस कएल |
| सखिता | = | साक्षित कएल |
| करवाल | = | तलवार |
| काँढ़ | = | निकलैत अछि |
| कार | = | कारी |
| उजागरि | = | उज्जर |
| परिपन्तिहि | = | प्रतिपक्षीकेँ |
| पयगन्ड | = | प्रौढ़ |
| मधुमखिका | = | मधुमक्षिका |
| उधारल | = | उद्धार कएल |
| लागर | = | युक्त |
| पुरहर | = | विवाह अवसर पर मांगलिक कलश |
| मन्दाकिनी | = | गङ्गाजल |
| केसु | = | किंशुक |
| विथुरलहु | = | पसारि देल |
| भिति | = | दीवारि |
| पौञनाल | = | कमलनाल |
| रात | = | लाल |
| ऐपन | = | अरिपन |
| हथोदक | = | हस्तोदक |
| विधु | = | रस्ताक थकावटि |
| कनए-केआ | = | चम्पा+केरा = कनक+कदली |
| जैतुक | = | दहेज |
| डिठि | = | दृष्टि |
| तुलइलिहुँ | = | शीघ्रतासँ |
| अनुबन्ध | = | लगओनाइ |
| बोल छड़ | = | मिथ्यावादी |
| मज्जि | = | मज्जन कए |

| | | |
|---|---|---|
| विथरओ | = | पसरि जाय |
| पाड़रि | = | गुलाब = पाटली |
| भोपति | = | हमरा लेल |
| वाउलि | = | बताहि |
| विधुन्तुद | = | राहु |
| सेरी | = | शरणार्थी |
| परभृतक | = | कोकिल |
| मतेँ | = | मन्त्र |
| कि रहसि बोरि | = | की हास्यमे बाजि रहल छी |
| बालहि तोरि | = | अहाँक प्रेमिकाकेँ |
| भर बादर | = | मेघसँ भरल |
| झम्पि | = | रहि-रहि जोरसँ |
| सघने खर | = | तीव्र आ घन खर |
| डाहुकि | = | जोरसँ |
| थेघा | = | टेक कए |
| पख | = | पक्ष |
| पिआञे | = | प्रियतम |
| पङ्का | = | लेप |
| तथुहु | = | ओहिमे सेहो |
| दर | = | अपूर्व |
| अपद | = | बिना कारणक |
| साती | = | तीव्र वेदना |
| अवथाञे | = | अवस्था |
| पसाइल | = | पसारल |
| रासे | = | रोष |
| बालभु | = | वल्लभ |
| अएत | = | अधीन |
| सपूने | = | सम्पूर्ण |
| दिगन्तर | = | दूर देशमे |
| अरुझाए | = | ओझरल |
| आधिन | = | अधीन |
| पललि | = | भेल |
| खेञोब | = | क्षमा |
| जल आजुरि | = | जलाञ्जलि |
| सुसेरा | = | सुन्दर आश्रय |
| गोए | = | नुका कए |

| | | |
|---|---|---|
| सम्भ्रम | = | अतर्कित |
| कराडहार | = | कड्डआर (तकड़ा पकड़ि यमुना पार करब) |
| लहु-लहु आखरे | = | लघु-लघु अक्षर |
| तामरस | = | कमल |
| घनसार | = | कर्पूर |
| वेपथु | = | कम्प |
| मसृण | = | चिक्कन |
| सुदति | = | सुन्दर दाँतबाली |
| सुति | = | श्रुति |
| जति | = | जतेक |
| घमिअ | = | फूँकल जाइत अछि |
| आनइति | = | परवशता |
| दीब | = | शपथ |
| बड़इ | = | बहुत |
| देव देयासिनि | = | झाड़-फूँक करए बाली स्त्री |
| जटिला | = | कर्कशा |
| फुकरि | = | चिकरि |
| बहुरि | = | पुत्रवधू |
| अङ्का | = | चिन्ह |
| बेसर | = | नाकक आभूषण |
| यन्त्रिया | = | वीणा बजाबए बला |
| यन्त्र | = | वीणा |
| फोटा | = | ठीका |
| समत | = | सम्मत |
| मौलि | = | मस्तकमे |
| मुसरैं | = | मूसल |
| जेमाओव | = | भोजन |
| नवइते | = | उतरैत |
| पडिचाँ | = | पटिआ |
| माड़व | = | मड़बा |
| उगारल | = | घेरिकए पकड़ब |
| आँजल | = | अंजन |
| डाढ़ल | = | दग्ध कएल |
| गौह | = | खोह/ गुफा |
| बिलुविअ | = | बाँटल जाए |
| मउल | = | मुकुट |

| | | |
|---|---|---|
| डाढ़ति | = | जरि जायत |
| श्मश्रु | = | दाढ़ी (मुँह बला, खाए बला नहि) |
| अधँगँ | = | अर्धाङ्ग |
| गरुअ | = | अधिक |
| अभरन | = | पहिरबाक वस्त्र |
| बड़ाव | = | प्रशंसा |
| तौँ | = | तथापि |
| निसाकर | = | चन्द्रमा |
| सरिस | = | सदृश |
| तांतल | = | उत्तप्त |
| सैकत | = | बालू |
| हब | = | होएत |
| निधुवन | = | संभोग |
| आरा | = | आन |
| कहाओसि | = | कहबैत छथि |
| राजमराल | = | राजहंस |
| सारङ्ग | = | हाथी |
| सारङ्गवदन | = | गणेश |

३. रसमय कवि चतुर चतुरभुज शब्दावली

रसमय कवि चतुर चतुरभुज- विद्यापति कालीन कवि। मात्र १७ टा पद्य उपलब्ध, मुदा ई १७ टा पद हिनकर कीर्तिकेँ अक्षय रखबाक लेल पर्याप्त अछि।

| | | |
|---|---|---|
| विहि | - | विधाता |
| सञानि | - | युवती |
| तनु | - | वयश, देह |
| आँतर | - | अन्तर, भीतर |
| गोए | - | नुकाएब |
| वेकत | - | व्यक्त |
| गेहा | - | ठाम |
| परि | - | प्रकारे |
| विरहानल | - | विरहक आगि |
| काँती | - | कान्ति |
| धमित | - | धिपाओल |
| निरूपए | - | निरीक्षण |
| परिहर | - | उपेक्षा |
| अचिरहिँ | - | अल्पकालहि |

| | | |
|---|---|---|
| वामे | - | प्रतिकूल |
| निअ | - | निज, अपन |
| मलयज | - | चानन |
| सयानि | - | विरह विदग्धा नायिका |
| धनि | - | धन्या-नायिका |
| हेरसि | - | नेहारैत |
| हरषि | - | हर्षित भए |
| परिहरि | - | मेटाय |
| नखत | - | तरेगण |
| मधुरि-दल | - | उभय-ओष्ठ |
| मनसिज | - | कामदेव |
| अवनत | - | नीचाँ झुकनाइ |
| हुतासन | - | ज्वाला |

४. बद्रीनाथ झा शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| मिलिन | - | मधुमक्खी, भौरा |
| रसाल | - | आमक गाछ, कुसियार |
| अतन्द्र | - | सावधान, जागरूक |
| खद्योत | - | भगजोगनी |
| दुर्वार | - | कठिन |
| यति | - | प्रतिबंध, जतेक बेर |
| अचलसेतु | - | अदृष्टलेख |
| विपिन | - | जंगल |
| तरणि | - | नाओ |
| अवाम | - | दहिन |
| गरुड़केतु | - | विष्णु |
| बौड़ि | - | उन्मत्त |
| तुषार | - | शीतल |
| ब्रह्मर्षिसुत | - | कश्यप |
| वारुणी | - | पश्चिम दिशा |
| कश्यप | - | मुनि ओ मद्यप |
| प्रतीची | - | पश्चिम दिशा |
| कुलाय | - | खोंता |
| साँझ | - | समाधि वा समुच्चय |
| जीव-अभिदान | - | नाम |
| कमान | - | धनुष |

| | | |
|---|---|---|
| विधु | - | चन्द्रमा |
| हय | - | कनेक |
| नमि | - | नमस्कार |
| नीराजन | - | प्रातःकालक आरती |
| मानर | - | मृदङ |
| काहल | - | वाद्यविशेष |
| चतुविध | - | आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य |
| उडुगण | - | तरेगण |
| दैवज्ञ | - | ज्योतिषी |
| पाटल | - | लाल |
| पाटल | - | व्याप्त भेल |
| अविद्या | - | अज्ञान |
| अधित्यका | - | पर्वतक ऊपरक देश |
| कुशण्डिका | - | वेदिसम्मार्जनादि |
| मेधा | - | धारणावती बुद्धि |
| सम्भार | - | सामग्री |
| कज्जल | - | कारी (काजर) |
| भूयसी | - | एक प्रकारक दक्षिणा |
| दीठि | - | दृष्टि |
| नृपदार | - | रानी |
| परिचार | - | परिचर्या |
| फुलहरा | - | कोढ़िलाक झाड़ |
| राजीव | - | कमल |
| मुदवारि | - | आनन्दक नोर |
| तृष | - | तृष्णा |
| पाञ्चजन्य | - | शङ्क |
| जगत्ताताक | - | विष्णु |
| प्रत्यभिवादन | - | प्रतिप्रणाम |
| जूटिका | - | शिखा |
| गोए | - | नुकाए |
| गुरु-सन्तोख | - | दक्षिणाद्रव्य |
| अवसित | - | पूर्ण |
| श्रुतिवेध | - | कर्णवेध |
| प्रभाक | - | प्रतिभा |
| गुरु-शुद्धि | - | बृहस्पतिक शुद्धि |
| औड़ि | - | आग्रहविशेष |

| | | |
|---|---|---|
| शिविका | - | पालकी |
| पूर्वाङ्ग-कृत्य | - | मातृकापूजादि |
| अदम्भ | - | निश्छल |
| वैजयन्त | - | इन्द्रक कोठा |
| कौशेय वसन | - | पाटक वस्त्र |
| भक्ष्य चतुर्विध | - | भक्ष्य-भात आदि भोज्य लाबा आदि, लेह्य चटनी आदि, चोस्य आमा आदि |
| नीवार | - | ओइरी |
| अनुताप | - | पश्चाताप |
| बद्धकर | - | कृपण |
| विमति | - | विरक्ति |
| वैमत्य | - | मतभेद |
| प्रसाद | - | प्रसन्नता |
| अनुरोध | - | रोच |
| आर्य | - | श्रेष्ठ |
| जाचल | - | परीक्षित |
| सुभगप्रक्रिय | - | सुयश, सुव्यवहार |
| अचलेश | - | भूपति |
| बिहान | - | प्रभात |
| पट्टपटसार | - | उत्तम पाटक वस्त्र |
| विभूतिवत | - | ऐश्वर्य |
| एकतान | - | एकाग्र |
| वनी | - | वानप्रस्थ |
| और्ध्वदैहिक | - | परलोकोपकारक श्राद्ध |
| भोज-ओज | - | कृपणता |
| चञ्चरीक | - | भ्रमर |
| सोहल | - | शोभित भेल |
| छान | - | कलङ्क |
| अदक्षिण | - | प्रतिकूल |
| इन्दीवर | - | नील कमल |
| कीर | - | सूगा |
| अकानल | - | सुनल |
| पोषक-द्वेषक | - | पोसनिहार (कौआक) द्वेषी |
| श्मश्रु | - | दाढ़ी-मोछ |
| शैवाल-लतिका | - | सेमारक लत्ती |
| कुण्डलित | - | लपेटल |

| | | |
|---|---|---|
| कर्णिकार | - | कनैल |
| ग्रीवा | - | गरदनि |
| इन्द्रायुध | - | वज्र |
| तमाल-साल | - | साँखु |
| शम्पा | - | विद्युल्लता |
| सहकार | - | आम |
| वकुलमुकुल | - | भालसरीक कली |
| पखान | - | पाथर |
| दमनक | - | दोनाफूल |
| अंसयुगल | - | दुहूस्कन्ध |
| अश्मसार | - | लोह |
| मणिबन्ध | - | पहुँचा |
| अबलासव | - | विरोध |
| दुहिण | - | ब्रह्मा |
| जम्भरिपु | - | इन्द्र |
| ऊरु | - | जाँघ |
| आरत | - | विरोध |
| नीरज | - | जलमे अनुत्पन्न, धुलि रहित, विरोध |
| इलातनय | - | पुरुरवा |
| सुरवैद्ययुगल | - | दुहू अश्विनीकुमार |
| क्षितिहरिहम | - | पृथ्वीन्द्र |
| परपुष्ट | - | कोयल, कोकिल, पसान्तरमे परिपुष्टा वैश्या |
| मधुप | - | भ्रमर, मद्यप |
| आतङ्करङ्क | - | निर्भय |
| काव्यक | - | शुकक |
| मधुभरि | - | बसन्तपर्यन्त |
| सुरभिमग | - | कामधेनुक मार्ग |
| अनीति | - | अतिवृष्ट्यादिरहित |
| शिक्षालोक | - | प्रकाश |
| तारस्रव | - | उच्चध्वनि |
| जनपद | - | अपन देश |
| साभिनिवेश | - | आग्रहपूर्वक |
| धारणा-ध्याण | - | अष्टाङ्गयोगक छठम ओ सातम अङ्ग |
| प्रकृति | - | स्वभाव, प्रजा |
| पीयूष-यूष | - | अमृतसार |
| मार्तण्ड | - | सूर्य |

| | | |
|---|---|---|
| सत्वक | - | सत्वगुण |
| सौम्य | - | बुधग्रह |
| वाक्पति | - | बृहस्पति |
| रवि-कल्प | - | सूर्य-सदृश |
| याचना-परायण | - | याचक |
| अभियोगी | - | अभियोग कएनिहार |
| कैरवामोद | - | कुमुदक सौरभ, शत्रुक आनन्द |
| अनुदार | - | स्त्रीसँ अनुगत |
| पुत्रेष्टिक | - | पुत्रोत्पादक यज्ञ |
| एकावली | - | मोतीक माला |
| मत्सरिता | - | अन्यशुभद्वेष |
| लालनसुहिता | - | लालने तृप्त वा अनुकूल |
| परिणाह | - | वृद्धि |
| प्रमत्त | - | असावधान वा उन्मत्त |
| बालवशामे | - | नवीन हथिनी |
| आविल | - | पङ्किल |
| अर्धचन्द्र | - | चन्द्रक ओ गड़हत्था |
| शिखिकलाप | - | मयूरक पिच्छ, विषम |
| बलाहक | - | मेघ |
| सरणी | - | आकाश |
| जड़भाव | - | शैत्य वा जलत्व |
| मेचक | - | नील |
| द्विरद | - | हाथी |
| धम्मिल्ल | - | केशपाश |
| विलक्ष | - | लज्जित |
| पथिक-चक्र | - | चक्रबाक ओ समुदाय |
| काली | - | कारीरङ्ग |
| तारा | - | आँखिक पुतड़ी |
| काली | - | प्रथमा महाविद्या |
| तारा | - | द्वितीया |
| चतुश्रुति | - | श्रुतिवेद, पढ़निहार ब्रह्मा |
| श्रुति | - | कान, सुनब |
| विश्रुति | - | सिद्धि |
| छीजक | - | नष्ट होएबाक |
| कलकण्ठी | - | कोकिला |
| तप्त-तपनीय | - | सोना, स्वर्ण |

| | | |
|---|---|---|
| चिवुक | - | दाढ़ी |
| परिस्फुर | - | चञ्चल |
| लेखा | - | गणना |
| जूझल | - | लड़ल |
| महायति | - | अतिविस्तीर्ण |
| आहित | - | स्थापित |
| स्तूप | - | माटिक ढेरी |
| लिकुचक | - | बड़हड़क |
| श्रीफल-मद | - | विल्वफलक गर्व |
| गर्त | - | खत्ता |
| कुलाल | - | कुम्हार |
| नाभिभव | - | ब्रह्मा |
| शारदा | - | अदृश्या सरस्वती नदी (अलखरूप शारदा) |
| त्रिदिवस सारिणी | - | गङ्गा |
| वली | - | उदररेखा (तीनिवली) |
| बली | - | बलवान |
| पाटच्चर | - | चोर |
| केहरि | - | सिंह |
| नितम्बक | - | पर्वतक मध्य भागक |
| विधिओजक | - | प्रतापक |
| कृष-नीच | - | नीचाँ दिसिसँ क्रमहि पातर (जङ्घा-क्रम-कृष-नीच) |
| वेत्र-दण्ड | - | सोनाक अधिकार दण्ड |
| हंसक | - | नुपूर |
| दश-शशधर | - | नखरूप-दशचन्द्रक |
| लाजें बीतल | - | संकुचित भेल |
| अनृत-दूषण-कृपाणी | - | मिथ्यादोषक छुरी जेकाँ नाशक |
| कथाऽवशेष | - | अवशिष्ट वक्तव्य |
| हर्ष-नृत्त | - | गात्रविक्षेप |
| सभीक | - | भीत |
| सागर-परिपन्थी | - | सागरक प्रतिस्पर्धा कएनिहार |
| सम्पुटित | - | सङ्कुचित |
| विगेय | - | निन्दनीय |
| विजीहीर्षा | - | विहारक इच्छा |
| दलतर | - | पातक नीचाँ |
| अतिसुकवि-ऊह | - | सुकवि तर्कक अगोचर |
| कुवलय-रम्भा-समान | - | पृथ्वी-मण्डलक रम्भा सदृश |

| | | |
|---|---|---|
| देवाङ्गनीय | - | देवाङ्गना-सम्बन्धी |
| रास | - | मण्डलाकार नृत्य |
| श्यामा | - | प्रियङ्गु |
| व्यामोहक | - | सम्मोहक |
| काल | - | यमराज |
| सारङ्ग | - | हरिण |
| कृतयुग | - | सत्ययुग |
| रण-एकतान | - | युद्धमे सर्वदा विजय पओनिहार |
| नृपति-पताकिनीक- | | राजसेनाक |
| विकटप्रतीक | - | दारुणाकार |
| पुण्डरीक | - | बाघ |
| दिनेन्दु-दीन | - | दिनक चन्द्र सदृश मलिन |
| सर्वसहाक | - | पृथ्वीक |
| लीन | - | प्रलयमे प्राप्त |
| विलीन | - | विलाएल |
| गोए | - | राखि |
| तदनुसार | - | पाछाँ |
| विदग्धताक | - | रसिकताक |
| गरुअ | - | पैघ |
| भूरमाक | - | भूतल लक्ष्मीक |
| शर्म | - | सुख |
| दलितपांशु | - | निष्पाप वा निर्दोष |
| भवितव्यवश्य | - | भाग्याधीन |
| अननुरूप | - | प्रतिकूल |
| प्रणिधानलीन | - | ध्यानमग्न |
| द्विजदत्त | - | सिद्धब्राह्मणसँ देल |
| दत्त-प्रदत्त | - | दत्तत्रेयसँ देल |
| उदेष | - | अन्वेषण |
| स्वरति | - | स्वविषयक प्रेम |
| धैर्य-कदर्य | - | अधीर |
| चरमदशाक | - | मृत्युक |
| अवगाह | - | आलोड़न |
| ओज | - | तेज |
| यशस्य | - | यशोजनक |
| अलेश | - | निश्छल |
| विजिगीषा | - | विजयक इच्छा |

| | | |
|---|---|---|
| पुटपाक | - | दुइ सरबाक सम्पुटमे वस्तुकँ मूनि पक |
| हयग्रीव | - | राक्षस जेकरा विष्णु मारल |
| अनन्त | - | अन्त-रहित |
| व्यपाय | - | परिपूर्ण |
| भङ्ग | - | पराजय |
| सङ्गर | - | युद्ध |
| तनु | - | कोमल |
| आश्रित-दुर्ग | - | दुर्गोपासक |
| दुर्ग | - | दैत्यसँ सेवित दुर्गम |
| सर्वसहा | - | पृथ्वी, तितिक्षा, सभ सहनिहारि पृथ्वी |
| मनु | - | मन्त्र |
| शिव | - | कल्याणकारक |
| कूर्च | - | ह्रीँ |
| शिखिजाया | - | स्वाहा |
| आखर | - | ह्रीँ गौरि! रुद्रदयिते! योगेश्वरी। हूँ फट स्वाहा |
| अन्वर्थाख्य | - | यथार्थनामा |
| सिद्धि | - | सिद्धिकेँ प्राप्त, सम्पन्न |
| ब्राह्मण | - | भोज-पञ्चाङ्ग पुरश्चरण (तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज नृसोम) |
| वैन्य | - | राजा पृथु |
| फलक | - | ढाल |
| शिशुमार | - | सोँस |
| धन-शाद | - | पाँक |
| क्षेपणी | - | करुआर |
| पटमण्डप | - | तम्बू |
| यादस्स्वन | - | जलजन्तुक शब्द |
| पूत | - | पवित्र |
| द्विरदकाँ | - | हाथीकेँ |
| दानजल | - | मदजल |
| मन-अवसाद | - | दुःख |
| भव्य | - | शुभ, सुन्दर |
| आयुधराजि | - | चञ्चला, विद्युत |
| चैत्य | - | प्रसिद्ध गृह |
| दुर्ग | - | किला |
| सुचतुष्पश | - | चौबट्टी |
| अहम्पूविका | - | हम पहिने, तँ हम पहिने, एहि स्पर्धासँ दौगब |

| | | |
|---|---|---|
| पवि | - | वज्र |
| अर्थ | - | प्रयोजन |
| प्रभूत | - | बहुत |
| लाघव | - | शीघ्रता |
| दनुज-तनुज | - | शरीरमे उत्पन्न |
| अर्भ | - | नेना |
| सुरसरणी | - | आकाश |
| शारिका | - | मएना |
| मेकल | - | नर्मदा नदीक उत्पादक पर्वत |
| परिपाटी | - | परम्परा |
| उत्कोच | - | घूस |
| वितान | - | विस्तार |
| प्रकोष्ठ | - | पहुँचा |
| अङ्गुरीय | - | अङ्गुठी |
| केतन | - | ध्वजा |
| निर्मम | - | ममताहीन |
| उदिखर | - | उदित |
| दीधिति | - | चन्द्रकिरण |
| दक्षिण | - | अनेकमे समानानुरागी ओ दहिन |
| मत्सरी | - | द्वेषी |
| विनिपातोन्मुख | - | अवनति दिस प्रवृत्त |
| मधु-सञ्ज्ञँ | - | नामसँ |
| नृपदारक | - | राजकन्या |
| प्रमोद-निबन्धन | - | कारण |
| वन्दी | - | कैदी |
| पुरुषार्थ चतुष्टय | - | धर्म, धन, काम ओ मोक्ष |
| दीधिति-माली | - | सूर्य |
| नरनाथ | - | परिकर |
| औरस-सुत | - | अपनासँ धर्मपत्नीमे उत्पन्न पुत्र |
| चक्रधर | - | नारायण |
| ईषत्कर | - | सुकर |
| कुलिशायुधसँ | - | इन्द्रसँ |
| प्रमा-सालित | - | यथार्थज्ञानसँ स्फीत |
| उक्ति-प्रगल्भ | - | बजबामे प्रौढ़ |
| शमन | - | यमराज |
| विधेय | - | कर्तव्य |

| | | |
|---|---|---|
| दुर्विपाक | - | अधलाह फल |
| सङ्कल्प-कल्पना | - | मानस कर्मक रचना |
| स्तम्भित | - | जड़ीभूत |
| सकल-करण-परिवारक- | | इन्द्रिय वर्गक |
| भव-झरिणी | - | संसार नदी |
| शशिकान्त | - | चन्द्रकान्त मणि |
| रजनिकर | - | रुचिएँ- कान्तिएँ |
| निष्कपट | - | रुचिएँ-प्रीतिएँ |
| द्रुत | - | शीघ्र |
| विद्रुत | - | पघिलल |
| मानसिक | - | व्यतिक्रमहुक-मानस-व्यभिचारहुक |
| उन्मिषित | - | बढ़ल |
| प्रकृतिस्थ | - | चैतन्य-युक्त |
| कालासुर | - | कालकेतु राक्षस |
| अमान | - | अपरिमित |
| अमानव | - | अलौकिक |
| कुरङ्गित | - | हरिण जेकाँ कुदैत |
| विक्रम | - | विलक्षण वा विगत छै क्रम जाहिमे |
| पञ्चानन | - | सिंह |
| आरभटी | - | आडम्बरपूर्ण चेष्टा |
| दुरभिसन्धि | - | दुराशय |
| कान्दिशीक | - | भयसँ पढ़ैनिहार |
| अनाथ | - | विधवा |
| धृष्ट | - | प्रौढ़ |
| निकृष्ट | - | नीच, छोट |
| उपरोधन | - | धैरव |
| अनारम्भ | - | आरम्भ नहि करब |
| भानुमान | - | सूर्य |
| कृकलाश | - | गिरगिट |
| सन्नाह | - | युद्धक उद्योग |
| मधु-मधुरिमाई | - | द्राक्षासदृश-मधुर सम मधुर, दाखसन |
| सर्वज्ञम्मन्य | - | अपनाकेँ सर्वज्ञ माननिहार |
| वीरमानी | - | अपनाकेँ वीर माननिहार |
| नृशंस | - | क्रूर (वातक) |
| अपलापपरा | - | लाथ करबामे तत्पर |
| प्राथमिक | - | पहिले बेरुक |

| | | |
|---|---|---|
| प्रकार | - | दिवारक |
| अज | - | बत्तू |
| कुरङ्ग | - | हरिण |
| गवय | - | गो सदृश नीलगाय |
| शार्दूल | - | बाघ |
| साम्हर | - | हरिणसन जन्तु |
| भूतनाथ | - | महादेव |
| प्रमथराजि | - | गणसमूह |
| शृङ्गी | - | शृङ्गवाला |
| जटी | - | जटाधारी |
| वारणरद | - | हाथीकसन दाँतबाला |
| पुच्छी | - | नाङ्गरि |
| कृत्तिपटी | - | बाघक चाम पहिरनिहार |
| चत्वर | - | चट्टान |
| भीरुभीमा | - | भीरुक भयङ्कर |
| पटल | - | पटि गेल |
| जन्य | - | युद्ध |
| राजन्य | - | क्षत्रिय |
| भिन्दिपाल | - | ढेलमासु सन गुल्ली फेंकबाक अस्त्र |
| तोमर | - | मन्थन दण्डसन अस्त्र |
| कृपाण | - | तरुआरि |
| परशु | - | फरुसा |
| असि धेनु | - | खाँड़, छूड़ा |
| भुशुण्डी | - | अग्निप्रधान अस्त्र |
| परिध | - | हथौड़ी |
| दनुजभुवन | - | पाताल |
| जलद-छाया | - | मेघक छाहरि, तत्सदृश अस्थिर |
| मृत्युशक्ति-उत्क्रान्तिदा | - | मृत्युकँ 'उत्क्रान्तिदा' नामक शक्ति छन्हि जाहिसँ जीवोत्क्रमण करैत छथि |
| वृन्दारक-वृन्दक | - | देवसमूहक |
| निजचमू | - | सेना |
| पताल | - | अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल |
| सन्देश | - | संवाद (समाद) |
| त्रिदिवहुँ | - | स्वर्गहुँ |
| प्रत्यूष | - | प्रातः काल |

| | | |
|---|---|---|
| दानव-भोगिनी | - | राजाक सामान्य स्त्री |
| अभ्यास | - | योगाभ्यास |
| क्लेश | - | अविद्या-स्मिता-राग-द्वेष ओ अभिनिवेश |
| जनि | - | जन्म |
| भोगभू | - | भोगस्थान वा भूमि |
| भुजगभुवन | - | पाताल |
| नाक | - | स्वर्ग |
| सहस्त्रार | - | शिर स्थित सहस्त्रदल- कमलाकार चक्र |
| निर्मन्तु | - | निरपराध (निर्दोष) |
| फेरि | - | घुमाए |
| फेरि | - | पुनि |
| अन्तराय | - | विघ्न |
| याचकपटलीकल्प | - | याचकसमूहजेकाँ |
| रहस्योद्भेदसँ | - | गुप्तप्रीतिक प्रकाशसँ |
| लोकपति | - | नरेश |
| मध्यमलोक | - | मर्त्यभुवन |
| अधोभुवन | - | पाताल |
| नररिक्त | - | मनुष्यसँ रहित |
| तूर्ण | - | शीघ्र |
| उद्देश | - | उच्चारण |
| उपेन्द्र | - | वामन भगवान् |
| कन्याक | - | शुक्रक पुत्री देवयानीक |
| अर्थना | - | याचना |
| सपरिकर | - | परिवार परिजन सहित |
| पुरुषसूक्त | - | ‘‘ओँ सहस्त्रशीर्षा’’ इत्यादि सोड़ह ऋचा |
| दुइ | - | नारायण ओ तुर्वसु (निज दुइ बापक परिचय) |
| प्रतिग्रह | - | दान लेब |
| लाजहोम | - | लज्जाक हवन |
| लाजहोममे | - | लावासँ हवनमे |
| प्रणयकोपक | - | मानक |
| अपसारण-गति | - | हटएबाक उपाय |
| परमाणु | - | सूर्यक प्रभामे दृश्य रेणुक छठम भाग |
| द्वयणुक | - | दू परमाणु |
| पूगीफल | - | सुपारी |
| व्यङ्ग्यवचन | - | व्यङ्ग्यार्थ-बोधक वचन |
| दिवसचतुष्टय | - | चारि |

| | | |
|---|---|---|
| गानचातुरी-विवरण | - | प्रकाशन |
| कान-सुधारस-वितरण- | | दान |
| चारिमशुचि | - | चारुतासँ भूषित |
| पाँकल | - | पाँकमे लागल |
| निमीलित | - | सङ्कुचित |
| कीलित | - | बद्ध (पीड़ित) |
| मदन-रुजा | - | रोग |
| निर्वांप | - | शान्ति करब |
| समाजित | - | पूजित |
| उद्भेद | - | विकास |
| चलदल | - | पीपड़ |
| मन्मथ-घर्षण | - | प्रगल्भता |
| कल्पकल्प | - | कल्पसदृश |
| आशा | - | दिशा |
| विदग्ध | - | विकल, रसिक |
| सुरतवितान | - | क्रीड़ा-कलाप |
| वितानल | - | विस्तीर्ण कएल |
| संभोग | - | शृंगारक पूर्वाङ्ग वा केलि |
| विप्रलम्भ | - | शृङ्गारक उत्तराङ्ग वा विरह |
| अवसित | - | समाप्त |
| विधुर | - | विरहित (दीपक-विधु-विधुर) |
| अनवम | - | निर्दोष |
| विरस | - | निःस्पृह (विमुख) |
| पञ्चयज्ञ | - | ब्रह्मयज्ञ (वेद अध्ययन-अध्यापन), पितृयज्ञ (पितरक तर्पण ओ नित्यश्राद्ध), देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (वैश्वदेववलि), नृपज्ञ (अतिथि-सत्कार) |
| पर्व | - | पाबनि |
| आन्तरिक | - | अन्तःकरण |
| मञ्जूषा | - | पेटी |
| भूमिनेता | - | पृथ्वीपति |
| जरती | - | बृद्धा |
| वैजयन्त | - | इन्द्राणीसँ भूषित इन्द्रप्रासादक |
| पति-परिचार | - | स्वामीक सेवा |
| मन्त्र | - | विचार |
| कान्त | - | प्रिय |
| श्लाधापरायण | - | प्रशंसामे तत्पर |

| | | |
|---|---|---|
| धव | - | धावा |
| मधुपा | - | मद्यपायिनी |
| भूरि | - | बहुत |
| सर्वसहासमेत | - | सभ (दुःखकेँ) सहनिहारि पृथ्वी सहित |
| कासर | - | महिसा |
| हिण्डोर | - | मचकी |
| शैलूष-कुहना | - | नटक माया |

संगमे हरिमोहन झा, यात्री, धूमकेतु, साकेतानन्द, रामभद्र, धीरेन्द्र, कापड़ि, मलंगिया, नचिकेता, कुलानन्द मिश्र, राजकमल, राजमोहन झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, रमानन्द झा ‘‘रमण’’, मोहन भारद्वाज, रमानाथ झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, लिली रे, इलारानी सिंह, रामलोचन ठाकुरकेँ पढ़ी, आ दीनबन्धु झाक धातुरूप आ रमानाथ झाक मिथिलाभाषा प्रकाश, आ भारत आ नेपालक कक्षा नौ-दस केर पोथी सेहो घोंटि जाइ आ तखन जे अहाँ मिथिलाक्षर सेहो नीक जेकाँ पढ़ी आ लिखि सकी तँ अपनाकेँ मैथिली साहित्य परम्परासँ जोड़ि सकब आ मेडिओक्रिटी सँ बाहर आबि सकब। मैथिली पत्र-पत्रिका सभ सेहो पढ़ी आ अनुवाद साहित्य सेहो। संगहि विदेह-मिथिला-तीरभुक्ति-तिरहुतक इतिहास आ महान पुरुष आ महिला लोकनिक कृति आ चरित्रक अध्ययन सेहो आवश्यक। एतेक सबक पूर्ण भेलाक बाद जे साहित्य अहाँक लेखनीसँ निकलत तकर स्वाद फराक रहत ।

# कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

**माँ**छ वंशीसँ सेहो मारल जाइत अछि।

छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि।

भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि। अन्ता जाल छोट होइत अछि आ कछारमे रातिमे लगाओल जाइत अछि।

कोठी जाल पैघ होइत अछि आ एहिमे बाँसक प्रयोग होइत अछि।

बिसारी जाल- दिनमे माँछ हरकि जएतैक से रातिमे खुट्टी लगा कऽ रातिमे माँछ मारल जाइत छै।

चट्टी जाल- प्लास्टिकक, पैघ-छोट दुनू, दिनमे प्रयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे। ५-१० मिनटमे उठाओल जाइत छै।

सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक मिश्रणक करेन्ट जाल, सूतक बड़का हाटा जाल होइत छै।

पैराशूटसँ छोटकी माँछ उड़ि जएतैक।

पैघ मछली बड़का वंशीसँ, बड़का चट्टी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अछि।

पैघ छोट दुनू माँछ बाँसक जंघासँ मारल जाइत छै। एकरा ४ हाथ खड़ा नारियल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइत छै।

बाँसक करचीक छीपसँ सेहो माँछ मारल जाइत छै।

पटुआक सण्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कए सेहो माँछ मारल जाइत छै।

हाटा जाल किलोमीटर धरि पैघ होइत अछि आ सूताक बनैत अछि।

चाँच कहड़ा बाँसक होइत अछि।धार/ बदहाल घेरकँ मारल जाइत अछि। पानिकँ फुला कए डगरी लगाओल जाइत छै, चाँच फहड़ासँ घेरल जाइत अछि।

माँछक प्रकार

डाँरा मछली (डेरका मछली), मूँहा मछली, पोठी, लत्ता (पिआ माँछ), गड़इ, पलवा, टेंगड़ा, सिंघी, माँगुड़, चपड़ा, पैना, रेवा, गड़ही, उरन्था, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोर्रा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, चित्तल, भोइ, कत्ती, भौकुड़ी, सिलोन, रेहू, मिरका, बिलासकप, सिल्वरकप, चाइना माँगुर, कबइ, चाइना कबइ।

दरबा- छोट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद

गड़ई- कारी

चोपड़ा- चाकर, कारी, मलिन

पलबा- दुनू दिस काँट, पीठपर सेहो काँट, रंग- पीयर-उज्जर, मोंछ सेहो होइत छै।

टेंगड़ा- पैघ माँछ, एकरो तीन टा काँट, मुँहपर मोँछ।

सिंघी- पातर, दू टा काँट दुनू दिस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी

मँगुरी- मोट आ महग सेहो।एकरो दू टा काँट, लाल आ हल्का कारी

पैना- सफेद रंगक, पीठपर काँट

रेवा- सफेद, पौआ-आधा किलोक

डढ़ी- पीठपर काँटा, सफेद

उरन्था- पीठपर काँट, नीचाँ गामे झुकल, सफेद

भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद- खड़ा(पीयर), ऊपरमे काँटा, नाभिक लग काँट (सभ माँछमे)

बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काँट, पखना दुनू दिस (सभ माँछमे)

बामी- लम्बा, बिलमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जकाँ लम्बा, पीठपर काँट, नाभिपर दू टा काँट

बघार- छोट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीयर), काँट- पीठपर एकटा, बगलमे दू टा, पुच्छी-चाकर, मुँह चापट, चकड़ाई- बेसी।

चेलबा- उज्जर, काँट नहि होइत छै। चलैक लेल दुनू दिस पखना, माँछमे तेजगर।

कौअल- सफेद, मुँह नमगर।

गोर्रा- मौँछ, दाढ़ी, काँटा, आगाँमे टेढ़

साउल- लाल आ पीयर, नमगर, २-३-५ किलोक

भौरा-(गजाल), साउल, चितफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक, गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी

कलबौस- रंग हल्का कारी

अंदाजी माँछ

चित्तल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर

सिलोन- पालतू,३-४ किलोक,पोखरिमे पोसल जाइत अछि।

रोहु-पीयर, हल्का उज्जर, पीठपर काँट

मिरका- हल्का लाल सफेद

सिल्वरकप- पालतू

चैना माँगुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काँट

चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहाँ-तहाँ काँट

कबई- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काँट

चेंगा माँछ- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबई जकाँ ।

आब किछु दोसर जलजीव:-

सौंस- पानिमे माँछ खाइत अछि, आदमीकेँ नोकसान नहि, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)

घड़ियाल- कुर्सेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ,दाँत- आँगुर जेकाँ, रंग लाल, पुछरी नमगर, ३ हाथ

बोँछ- आदमीक रंग रूप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िकेँ डुमा दैत छै

आ कृषि शब्दावली:--

जोड़ा बैल/ हर

ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइत छै।

लगना

पालो- कन्हापर

पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बड़दकेँ एने- उने (एम्हर-ओम्हर) नञि होमए दैत छै।

कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइत छै। समैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बाँसक) मे डोरी बान्हल जाइत छै।

ईशक नीचाँमे पेटार ईशकेँ खुजए नहि दैत छै, ऊँच-नीच करए दैत छै।

हलमे पुट्ठी, नीचाँमे दू-फीटक अगल फल्ली पुट्ठीमे सेट कएल जाइत छै, माटि उखाड़ैत छै।

परहत (लगना)- हरवाह एहिपर हाथ धरैत अछि। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुट्ठी पकड़ैबला लगनामे ठोकल जाइत छै (मुठिया)।

नाधा- पालो-ईशमे बान्हिकेँ जोड़ल जाइत छै, डोरी होइत छै ४-५ फीटक।

दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बान्हि कऽ बड़दमे बान्हि कऽ हरवाहा चौकी दैत अछि।

चौकी- (बाँस/ लकड़ीक) ६-७ फीटक - एहिपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैत अछि। हरवाहाक हाथमे एक टा झूर/ ज्वोली/ लाठी बड़द हाँकए लेल रहैत अछि।

गेहूँक जोताई ३ इन्च गहरा कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अछि।

मक्इ लेल ४-५ इन्च गहराइ करए पड़ैत अछि।

बीया- एक एकड़ (१०० डिस्मिल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मक्इक बीया।

खाद- एकड़मे २० कि. डी.ए.पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूरिया, ५ किलो जिंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अछि।

मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माटि चढ़ाओल जाइत अछि। २ कतार २ फीट चौड़ाइसँ। एकड़मे २ क्विंटल खाद देल जाइत अछि। १०० किलो डी.ए.पी., ५० किलो यूरिया, २० किलो साल्फिक, १२० किलो पोटाश, १० किलो जिंक। पानि पटवन समयमे खाद दऽ कऽ माटि चढ़बैत छियैक, फेर पानि पटबैत छियैक। पानि पटेलाक बाद यूरिया एक एकड़मे एक क्विंटल देल जाइत अछि।

आब तर-तरकारीक प्रकार :-

सिंघिया करैला- बड़ा- हाइ ब्रेक/ प्लेन
छोटकी करैला- हजरिया/ जुल्मी
सफेद करैला- पटनिआ (नजली- मध्यम खुटक)

तारबूज-

नामधारी-स्वादिष्ट- भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ चितफुटरा (हरियर-उज्जर)
माइको- हल्का कारी
पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी
राजधानी- कारी रंगमे
महाराजा- पैघ छोट कारी रंगमे
सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक
नाथ- हल्का चितफुटरा (उज्जर/ हरियर)
गंगासागर- कुम्हर जेकाँ उज्जर साफ
सोरैय्या- चितफुटरा

खीरा

जुल्मी- छोट
हाइब्रीड
माइको- नमगर/ हरियर/ पीअर
महाराजा- खीरा
खेतीबारी- हरियर रंगक, नमगर कम, पाछाँमे मोट बेशी आगाँ कम।

# मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका

हैकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य विधा अछि, आ जापानमे एकरा काव्य-विधाक रूप देलन्हि कवि मात्सुओ बासो १६४४-१६९४। एकर रचनाक लेल परम अनुभूति आवश्यक अछि। बाशो कहने छथि, जे जे क्यो जीवनमे ३ सँ ५ टा हैकूक रचना कएलन्हि से छथि हैकू कवि आ जे दस टा हैकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि। भारतमे पहिल बेर १९१९ ई. मे कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दू टा हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएले रहथि।

हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आपूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व 'इ' एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि? मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि? तँ ई की अछि- आइम गोइङ टूवाड्‌र्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवाड्‌र्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम कैँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/ वाका प्रार्थना ५ ७ ५ ७ ७ स्वरूपमे होइत छल जे बादमे ५ ७ ५ आ ७ ७ दू लेखक द्वारा लिखल जाए लागल आ नव स्वरूप प्राप्त कएलक आ एकरा रेन्गा कहल गेल। रेन्गाक दरबारी स्वरूपक गांभीर्य ओढ़ने छल आ बिन गांभीर्य बला स्वरूप वणिकवर्गक लेल छल। बाशो वणिक वर्ग बला रेन्गा रचलन्हि। रेन्गाक आरम्भ होक्कुसँ होइत छल आ हैकाइ एकर कोनो आन पंक्तिकैँ कहल जा सकैत छल। मसाओका सिकी रेन्गाक अन्तक घोषणा कएलन्हि १९म शताब्दीक प्रारम्भमे जा कए आ होक्कु आ हैकाइ

केर बदलामे हैकू पद्यक समन्वित रूप देलन्हि। मुदा बाशो प्रथमतः एकर स्वतंत्र स्वरूपक निर्धारण कए गेल छलाह।

*हैकू निअम १.*

हैकू १७ अक्षरमे लिखू ।ई तीन पंक्तिमे लिखल जाइत अछि- ५ ७ आ ५ केर क्रममे। अक्षर गणना वार्णिक छन्दमे जेना कएल जाइत अछि तहिना करू।

वार्णिक छन्दक वर्णन क्रममे- संयुक्ताक्षरकेँ एक गानू आ हलन्तक/ बिकारीक/ इकार आकार आदिक गणना नहि करू।

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य।छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल-एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक छन्द अछि।

वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। एहिमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि।द्विमानक कोनो अक्षर नहि होइछ।मुख्यतः तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-० २. संयुक्त अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू :-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+१=१७ मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू ; पश्चात्=२ मात्रा ; आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२ मात्रा ; आब चारिम उदाहरण देखू स्क्रिप्ट=२ मात्रा

*हैकू निअम २.*

व्यंग्य हैकू पद्यक विषय नहि अछि, एकर विषय अछि ऋतु। जापानमे व्यंग्य आ मानव दुर्बलताक लेल प्रयुक्त विधाकेँ "सेर्न्यू" कहल जाइत अछि आ एहिमे किरेजी वा किगो केर व्याकरण विराम नहि होइत अछि।

*हैकू निअम ३.*

प्रथम ५ वा दोसर ७ ध्वनिक बाद हैकू पद्यमे जापानमे किरेजी- व्याकरण विराम- देल जाइत अछि।

*हैकू निअम ४.*

जापानीमे लिंगक वचन भिन्नता नहि छै। से मैथिलीमे सेहो वचनक समानता राखी, सैह उचित होएत।

*हैकू निअम ५.*

जापानीमे एकहि पंक्तिमे ५ ७ ५ ध्वनि देल जाइत अछि। मुदा मैथिलीमे तीन ध्वनिखण्डक लेल ५ ७ ५ केर तीन पंक्तिक प्रयोग करू। मुदा पद्य पाठमे किरेजी विरामक ,जकरा लेल अर्द्धविरामक चेन्ह प्रयोग करू, एकर अतिरिक्त एकहि श्वासमे पाठ उचित होएत।

*हैकू निअम ६.*

हैबुन एकटा यात्रा वृत्तांत अछि जाहिमे संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ हैकू पद्य रहैत अछि। बाशो जापानक बौद्ध भिक्षु आ हैकू कवि छलाह आ वैह हैबूनक प्रणेता छथि। जापानक यात्राक वर्णन ओ हैबून द्वारा कएने छथि। पाँचटा अनुच्छेद आ एतबहि हैकू केर ऊपरका सीमा राखी, तखने हैबूनक आत्मा रक्षित रहि सकैत अछि, नीचाँक सीमा ,१ अनुच्छेद १ हैकू केर, तँ रहबे करत। हैकू गद्य अनुच्छेदक अन्तमे ओकर चरमक रूपमे रहैत अछि।

हमर एकटा हैबून

सोझाँ झंझारपुरक रेलवे-सड़क पुल। १९८७ सन्। झझा देलक कमला-बलानक पानिक धार, बाढ़िक दृश्य। फेर अबैत छी छहर लग। हमरा सोझाँमे एकठामसँ पानि उगडुम होइत झझाइत बाहर अछि अबैत। फेर ओतएसँ पानिक धार काटए लगैत अछि माटि। बढ़ए लगैत अछि पानिक प्रवाह, अबैत अछि बाढ़ि। घुरि गाम दिशि अबैत छी। हेलीकॉप्टरसँ खसैत अछि सामग्री। जतए आएल जलक प्रवाह ओतए सामग्रीक खसेबा लए सुखाएल उबेर भूमिखण्ड अछि बड़ थोड़। ओतए अछि जन- सम्मर्द। हेलीकॉप्टर देखि भए जाइत अछि घोल। अपघातक अछि डर । हेलीकॉप्टर नहि खसबैत अछि ओतए खाद्यान्न। बढ़ि जाइत अछि आगाँ। खसबैत अछि सामग्री जतए बिनु पानि पड़ैत छल दुर्भिक्ष, बाढ़िसँ भेल अछि जतए पटौनी। कारण एतए नहि अछि अपघातक डर। आँखिसँ हम ई देखल। १९८७ ई.।

पएरे पार

केने कमला धार,

आइ विशाल

श्रीमति ज्योति झा चौधरीक इंग्लिश हैकू हमर मैथिली अनुवाद सहित।

(१) Illusion of eye
Colourful appearance of
Rainbow in the sky
आँखिक भ्रम,
आभास वर्णमय
पनिसोखा द्यौ

(२) Rainbow declares
Beginning of bright days and
End of rainy ones
पनिसोखाक,
शुभ्र दिन आबह
खिचाहनि जा

(३) Filled with smoky fog
The wood seems to be burning
Thou' it is winter
धुँआ कुहेस
जेना जड़ैत काठ,
अछि ई जाड़

(४) The words sound so sweet
imitated by parrots
Like baby babbles
गुञ्ज मधुर
सुग्गाक अभिनय,
तोतराइत स्वर

(५) The sky is bright
The wind has cleared the clouds
Some still needs force
अकाश श्वेत
वायु टारैत मेघ,
कनेक बल

# मिथिलाक बाढ़ि

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक।

कौशिकी महारानीक २००८ ई.क प्रकोप ओहि दुष्प्रचारकेँ खतम कए पाओत आकि नहि से नहि जानि !

पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि। ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। किएक?

सामयिक घटनाक्रम- कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल ? छहरक बीचमे जे रेत जमा भए जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। एहि साल ई कार्य समयसँ किएक नहि शुरू भेल? फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्हमे २ मीटर दरारि आबि गेल। १९८७ ई.क बाढ़ि हम आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ह लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भए गेल एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलहुँ जे कोना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८ अगस्त २००८ धरि

भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भए चुकल छल। आ ई कारण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल छल। भीमनगर बैरेज आब कोशीक एकटा सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल रहए।

*राष्ट्रीय आपदा:* जाहि राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओहि राज्यक दौड़ा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जाहिपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि वा नहि। बिहारक राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छलाह, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौड़ा कए एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलन्हि। कारण ई लेवल-३ केर आपदा अछि आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे - नहि तँ वित्तक लिहाजसँ आ नहिए राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ- पार पाएब संभव नहि अछि। आब राष्ट्रीय आकस्मिक आपदा कोषसँ सहायता देल जा रहल अछि, किसानक ऋण-माफी सेहो सम्भव अछि।

*उपाय की होअए ?* कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैछ, से सभ ओकरा बिसरिए जेकाँ गेलाह। मुदा आब की होअए ? दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल ? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि ? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब ? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधन। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबाक हेतु कैकटा बान्ह बनाबए पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नहि बनि सकत।

कमला धार

नहरिसँ लाभ हानि- एक तँ कच्ची नहरि आ ताहूपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त होएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक।

कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतए धरतीक ढ़लान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की होएत आकि की होइत अछि ? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल एहि नहर रूपी बान्हसँ पटौनी होअए वा नहि एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपेण डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नञि चलि जाए, से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि !

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भए गेल। कमला धार जे बलानमे पिपराघाट लग १९५४ मे- मिलि गेलीह, हिमालयसँ बहि कए कोनो पैघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए !

*कोशी:* कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशीमे, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिल्लाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर- भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ

भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो।

कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फाएदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।

कोसी लेल किछु नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि !

*विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन :* हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ , एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

*दिल्ली अछि दूर एखनो ! :* प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि।

मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत, निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।

१. स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। दिल्लीवासी सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई.सँ एहि तरहक कार्यान्वयन कराबथि तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।

२. भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए, कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड, रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आ बनबाक चाही।

३. बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।

४. कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५. बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तरपर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।

उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

# विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी
(१८७८-१९५२)

पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर, थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य।

वंशावली- जीवन चौधरी (जन्म स्थान-पंचोभ-दरिभङ्गा), १८०१ ई.मे रुद्रपुर आगमन।

-दुइ पुत्र--श्री रंगी चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म) आ श्री कंत चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म)

-कंत चौधरीकेँ तीन पुत्र-श्री चुम्मन चौधरी, श्री बुधन चौधरी आ श्री रूदन चौधरी

-चुम्मन चौधरीकेँ दुइ पुत्र श्री गोनी चौधरी आ श्री पं कवि रामजी चौधरी.

श्री जीवन चौधरी- जे कविक वृद्ध-पितामह छलाह, तनिकर दोखतरी रुद्रपुरमे रहन्हि जाहि कारणसँ ओ १८०१ ई.मे पंचोभ छोड़ि रुद्रपुर बसि गेलाह।

कविजीक पितामह पैघ गवैय्या रहथिन्ह। हुनकर गायनक मुख्य क्षेत्र युगल सरकार सीतारामक भक्ति गीत होइत छल, तकर प्रभाव कविजी पर खूब पड़ल। ओ अप्पन पौत्रक नाम रामजी एहि कारणसँ रखलन्हि। स्व.कविजी अपन नामक अनुरूप तुलसीकृत श्रीरामचरित मानस कंठस्थ कए गेल छलाह। ओ प्रत्येक प्रश्नक उत्तर रामायणक चौपाइसँ करैत छलाह। हुनकर जीवनक सभसँ दुःखद घटना छन्हि जे ओ तीन विवाह कएल मुदा कोनो पत्नी चारि सालसँ बेशी नहि जीबि सकलखिन्ह।अंतिम विवाह ओ ५३ वर्षक अवस्थामे कएल, जे एक पुत्र, जनिकर नाम दुर्गानाथ चौधरी (दुखिया चौधरी) छन्हि, केर जन्म देलाक १५ दिनक भीतरे स्वर्गवासी भए गेलीह।

कविजी अप्पन जीवनकालमे दरिभङ्गा राजक अंतर्गत जेठ रैय्यतक पद पर कार्यरत छलाह आ तेसर पत्नीक मृत्युक उपरांत ओ ईहो पद त्यागि कए भगवद भक्तिमे लागि गेलाह। हिनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ अप्रकाशित पाण्डुलिपिमे मैथिलीक संगे ब्रजबुलीक कविता सेहो अछि।

हिनकर एहि कविता सभमे हिनका पितामहक देल राग बोधक संगहि मिथिलाक महेशवाणी,चैतक ठुमरी आ भजन प्रभाती (पराती) सेहो भेटैछ।

जेना शंकरदेव असामीक बदला मैथिलीमे रचना रचलन्हि तहिना कवि रामजी चौधरी मैथिलीक अतिरिक्त ब्रजबुलीमे सेहो रचना रचलन्हि। कवि रामजीक सभ पद्यमे रागक वर्णन अछि, ओहिना जेना विद्यापतिक नेपालसँ प्राप्त पदावलीमे अछि। ई प्रभाव हुनकर बाबा जे गबैय्या छलाह, सँ प्रेरित बुझना जाइत अछि। मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक छथि, मुदा शिवालय सभ गाममे भेटि जाएत, से रामजी चौधरी महेशवानी लिखलन्हि आ चैत मासक हेतु ठुमरी आ भोरक भजन (पराती/ प्रभाती) सेहो। जाहि राग सभक वर्णन हुनकर कृतिमे अबैत अछि, से अछि:

१. राग रेखता २ लावणी ३. राग झपताला ४.राग ध्रुपद ५. राग संगीत ६. राग देश ७. राग गौरी ८.तिरहुत ९. भजन विनय १०. भजन भैरवी ११.भजन गजल १२. होली १३.राग श्याम कल्याण १४.कविता १५. डम्फक होली १६.राग कागू काफी १७. राग विहाग १८.गजलक ठुमरी १९. राग पावस चौमासा २०. भजन प्रभाती २१.महेशवाणी आ २२. भजन कीर्त्तन।

प्रस्तुत अछि हुनकर रचना। एतए हुनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ एकटा पाण्डुलिपि जे कविजी द्वारा श्री हरेकांत चौधरीसँ ( आब स्वर्गीय) लिखबाओल गेल आ श्री श्रीमोहन चौधरीजीक माध्यमसँ प्राप्त भेल केर आधारपर सभटा मैथिली पद्य देल जा रहल अछि।

विविध भजनावली

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१. ॥ विनय ॥

जय गणेश शंकर सुत सुन्दर अति कृपालु दीनन जन
पालक लम्बोदर अति रूप गजानन, युअ यश कहि न सकत सहसानन।
हमछी अति गमार कछु जानन निज पद कमल देहु उर ध्यानन॥
रामजी अरज सुनहु कछु कानन। वर्णत चहत राम गुण आनन॥

२. ॥ राग ध्रुपद ॥

सेवो मन शंकर अति कृपाल सेवक दुःख भंजन हौ दयाल,
जटा शोभित गंग धार तन छाय भस्म उर मुंड माल
उपवित भुजंगम दृग विशाल बिजया नित पीबत फिरत मतवाल।
कर त्रिशूल बघ छाल बिराजित दास आस राखन के सुर ररु
कैलाश वास गिरजा लिअ संग बहुवजत ताल शोभए शशिभाल॥
काशीपति तेरो यश अपार सुनि आय धाय तेरो द्वार
रामजी अति दीन कर नेहाल जिमि वेगि मिलए अवधेश लाल॥

३. राग संगीत

नाचत स्वयंग ये॥

कुंज बन चहुं ओर सुन्दर सघन बृक्ष बनाय मण्डित लकत सुमन लजाय सुर तरु जगमगात मयंक॥१॥

कठताल डम्फ मंजीर बाजत गोपी गण चहुं दिसि छाजत कुहिकि कलरव मोर नाचत राधा लेत मृदंग॥२॥

बेनु आदि स्वराग बाजत षट त्रिंशरागिन राग गावत गण सब सुनत धावत यमुना बढ़त तरंग॥३॥

तिहुं लोक आनन्द होत सुनि-सुनि पवनजल सब फिरत पुनि-पुनि रामजी गृह कार्य झाँकत कौतुक रंग॥४॥

४. तिरहुत

वारि वयस पहु तेजल सजनी गे कि कहु तनिक विवेक,
कबहु नैन नहि देखल सजनीगे अवधि बितल दुई एक।
भावैन भवन शयन सुख सजनीगे ज्यौं मिलत भरि अंक।
एहेन जीवन लय कि करव सजनीगे आनो कहत कलंक।
भूषण वसन भरि सम सजनी प्राण रहत अब से शेष।
निर्दय भय पहु वैसल सजनीगे रामजी सहत कत शोक॥

५. तिरहुत

निठुर श्याम नहि बहुरल सजनीगे कैलनि बचन प्रमाण।
कओन विधि दिवस मनायव सजनीगे हित नहि दोसर आन॥
नयन वरिस तन भीजल सजनीगे दिन दिन मदन मलान।
शिर सिन्दूर भावै सजनीगे भूषण भावे न कान॥
केहेन बिधाता निर्दय भेल सजनीगे आनक दुख नहि जान।
रामजीके आश नहि पुरत सजनी मदन कयल निदान॥

६. भजन भैरवी

आब मन हरि चरनन अनुराग।
त्यागि हृदयके विविध वासना दम्भ कपट सब त्याग॥
सुत बनिता परिजन पुरवासी अन्त न आबे काज।
जे पद ध्यान करत सुर नर मुनि तुहुं निशा आब जाग॥
भज रघुपति कृपाल पति तारों पतित हजार
बिनु हरि भजन बृथा जातदिन सपना सम संसार
रामजी सन्त भरोस छारि अब सीता पति लौ लाग॥

७. ॥ राग विहाग ॥

को होत दोसर आन रम बिनु॥ जे प्रभु जाय तारि अहिल्या जे बनि रहत परवान॥ जल बिच जाइ गजेन्द्र उबारो सुनत बात एक कान॥ दौपति चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान॥ रामजी सीता-पति भज निशदिन जौ सुख चाहत नादान॥

८. चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल।।
भवनो न भावे मदन सताबे नैन नीन्द नहि लागल॥
निसिवासर कोइल कित कुहुकत बाग बाग फूल फूलल॥
रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौंन कन्त भरि मिललरामा॥
चित घबरायेल चैत पिया नहि आयल॥

९. चैतके ठुमरी

आबि गेल चैत बैरनमा हो रामा विधि भेल वामा॥
लाले-लाले चून्दरी लगाय पलंगपर पियवा न अयल सपनमा॥
जौवन जोर आर भैल दिन दिन विष सन लागत भवनमा॥
रामजी जीवन वृथा एहि तनमे प्रभु कोन देखलो नयनमा॥

१०. चैतके ठुमरी

आबि गेल सियाक खोजनमा हो रामा पवन सुअनमा॥
वरजि वरजि हारे सब निसिचर लड़त कौ न सयनमा॥
उपवन नास रिसाय लंकपति मेघवासे कहत बयेनमा॥
मारसि जनि सुत बान्हिके लाऊ रामजी बुझत कारनमा हो रामा॥

११. महेशवाणी

सुनु सुनु चण्डेश्वर नाथ कृपा दृष्ट से एक वेर ताकहु हम छी परम अनाथ॥
देव दनुज भूपति कत सेबल कियो न दुखके साथ,
बड़े निरास आश धय रोपल अहाँक चरणमे माथ॥
भटकि-भटकि सबके रुचि बूझल सब स्वारथके साथ
जे छथि मित्र अपेक्षित परिजन सभै रखै छथि क्वाथ॥
नहि किछ वेदपुराण जनए छी नहि पूजाके भाव
निसि दिन चिन्ता उदरके फूसि फटकके बात।।
अहाँ दयालु दीनेपर सब दिन जनैत अछि संसार
रामजीके सकल मनोरथ पूर वहु भोला नाथ॥

१२. महेशवानी

बम भोला छथि अनमोल कतेक दुखी हम
जाइत देखल करैत अति अनघोल॥
ककरहु देविक दैहिक दुख छनि
ककरहु भौति कलेस
कियो अबै छथि आश अन्न टकाके लेल॥
कतेक बिकल छथि पुत्र दार ले कतेक अनेक कलेस
कतेक अहाँके भजन करै ये परमारथके लेल॥
परसि मणि अहाँ झारी वैसल सवके दुख हरि लेल॥
रामजी किछु कहि न सकैछी अपराधी के लेल॥

१३. महेशवानी

एहन बड़के खोजि आनलन्हि पारवतीके लेल॥
जिनका घर नहि धन परिजन नहि जाति पातिक झेल,
डमरु बजावथि गिरिपर निसि दिन भूत प्रेतसँ खेल॥
अन्नक खेती किछु नहि राखथि भांग धुथुर अलेल,
भूषण गत्र-गत्रमे लटकट बिषधर देखि उर मेल॥
परम बताहक लक्षण सभ छनि अंग भस्म लेपि लेल,
हाथी घोड़ा त्यागि पालकी वोढ़ बड़द चढ़ि लेल॥
कहथि रामजीभाग ऊदय अब लेल,
त्रिभुवन पति गौरी पति हेता साजू पूरहर लभे॥

१४. महेशवाणी

हमरो जीवन व्यर्थ बीति गेल।
कहियो बिल्बपत्र नहि तोड़ल, फूल रोपि नहि भेल।
अक्षत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजि नहि भेल॥
कतेक वासना मनमे करि-करि दिवस रैन बिति गेल।
कवहुँ ध्यान शान्त चित्त भए बम-बम कहियो न भेल॥
सुत बनितादि विषय बस कवहुँ, मन बिश्राम न भेल।
चिन्ता करति करति दिन बीतल, अब जर्जर तन भेल॥
कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल।
शिब बिनु दोसरके हरत दुसह दुःख निश्चय मन करिलेल॥

१५. महेशवानी

शिवकें सुनै छियन्हि दयाल
दुखियाक कहिया सुनता सवाल।

जय गंग चन्द्र भाल, कंठ मुण्डमाल, भंग ले बेहाल॥
वाम भाग पार्वती बसहा सवार, अंग-अंगमे विषधर लटकल हजार,
भूतनात प्रणत पाल दिगम्बर धार,
भस्म अंग संग बेताल डमरु बघ छाला॥
रामजी दीननपर कखन करब खयाल
शिव बिना हमर के करत प्रतिपाल॥

१६. महेशवाणी

शिव काटू ने जञ्ञाल।
कतेक कहब हम अपन हवाल॥
निसि दिन चैन नहि भूख भेल काल
चिन्ता करति भूलि गेल अहाँक खयाल।
बन्धु वर्ग कुटुम्ब संग धेलाह अनेक भल
केओ न सहाय भेला दुर्दिन प्रवल।
रामजीके आशा एक जँ निगाहनै करब रहब बेकल॥

१७. महेशवाणी

शिव कहूने बुझाय॥
ककरा कहब हम अपन दुख जाय।।
केओ ने भेटैत छथि अहाँक समुदाय
जे सुनि हेताह तुरत सहाय॥
हित मित बनिता सुत स्वास्थ्य से भाए।
निर्धन देखि भुख लए छपि घुमाए॥
बम्भोला वैद्यनाथ दीनन अपनाय झाड़ीमे बैसि
हीरालालको लुटाय॥
रामजी आशा लगाय कृपा दृष्टि हेरू
नाथ लिय अपनाय॥
इति
सिद्धिरस्तु। शुभञ्चास्तुस्त्र

१८. भजन विनय

प्रभू बिनू कोन करत दुखः त्राणः॥

कतेक दुःखीके तारल जगमे भव सागर बिनू जल जान, कतेक चूकि हमरासे भऽ गेल सोर ने सिनई छी कानः॥ अहाँ के त बैनि परल अछि पतित उधारन नाम ।नामक टेक राखू प्रभू अबहूँ हम छी अधम महानः॥ ज्यौँ नञ कृपा करब

एहि जन पर कोना खबरि लेत आन। रामजी पतितके नाहिँ सहारा दोसर के अछि आनः॥

१९. भजन लक्ष्मी नारायण जीक विनय

लक्ष्मी नारायण अहाँ हमरा ओर नञ तकइ छी यौ।
दीनदयाल नाम अहाँके सभ कहए अछि यौ।
हमर दुःख देखि बिकट अहाँ डरए छी यौ।
ब्याध गणिका गिध अजामिल गजके उबारल यौ।
कौल किरात भिलनी अधमकेँ उबारल यौ।
कतेक पतितके तारल अहाँ मानि के सकत यौ।
रुद्रपुरके भोलानाथ अहाँ के धाम गेलायो।
ज्यों न हमरा पर कृपा करब हम कि करब यौ।
रामजी अनाथ एक दास राखु यौ।

२०. भजन विनय भगवती

जय जय जनक नन्दिनी अम्बे, त्रिभुवन के तू ही अवलम्बेः।
तुही पालन कारनी जगतके, शेष गणेश सुरन केः।
तेरो महिमा कहि न सकत कोउ, सकुचत सारभ सुरपति कोः।
परमदुखी एहि जगमे, के नञ जनए अछि त्रिभुवनमेः॥
केवल आशा अहाँक चरणके, राखू दास अधम केः॥
कियो नहि राखि सकल शरणोंमे, देख दुखी दिनन केः॥
ज्योँ नहि कृपा करब जगजननी, बास जान निज मनमे।
तौँ मेरो दुख कौन हटावत, दोसर छाड़ि अहाँकेः॥
कबहुँ अवसर पाबि विपति मेरो कहियो अवधपति को,
रामजी क नहि आन सहारा छाड़ि चरण अहाँकेः॥

२१. भजन विनय

प्रभु बिनु कौन करत दुःख त्राणः। ।
कतेक दुखीके तारल जगमे
भवसागर बिनु जल जानः॥
कतेक चूकि हमरासे भऽ गेल,
स्वर नञ सुनए छी कानः। ।
अहाँके तौँ बानि पड़ल अछि,पतित उधारण नामः।
नामक टेक राखु अब प्रभुजी हम छी अधम जोना।
कृपा करब एहि जन पर कोन खबरि लेत आन।
रामजी पतितके नाहि सहारा दोसर के अछि आनः॥

२२. विहाग

भोला हेरू पलक एक बेरः॥
कतेक दुखीके तारल जगमे कतए गेलहुँ मेरो बेरः॥
भूतनाथ गौरीवरशंकर विपत्ति हरू एहि बेरः॥
जोना कृपा करब शिवशंकर कष्ट मिटत के औरः॥
बड़े दयालु जानि हम एलहुँ अहाँक शरण सुनि सोरः॥
रामजीके नहि आन सहारा दोसर केयो नहि औरः॥

२३. भजन महेशवाणी

भोला कखन करब दुःख त्रान?
त्रिविध ताप मोहि आय सतावे लेन चहन मेरो प्राण॥
निशिवासर मोहि युअ समवीने पलभर नहि विश्रामः॥
बहुत उपाय करिके हम हारल दिन-दिन दुःख बलबान,
ज्यौँ नहि कृपा करब शिवशंकर कष्ट के मेटत आन॥
रामजीके सरण राखू प्रभु, अधम शिरोमणि जान॥भोला.॥

२४. विनय विहाग

राम बिनु कौन हरत दुःख आन
कौशलपति कृपालु कोमल चित
जाहि धरत मुनि ध्यान॥
पतित अनेक तारल एहि जगमे,
जग-गणिका परधान।।
केवट,गृद्ध अजामिल तारो,
धोखहुषे लियो नाम,
नहि दयालु तुअ सम काउ दोसर,
कियो एक धनवान।।
रामजी अशरण आय पुकारो, भव ले करू मेरो त्राण॥रामबिनु॥

२५. भजन विनय

लक्ष्मीनारायण हमर दुःख कखन हरब औ॥
पतित उधारण नाम अहाँके सभ कए अछि औ,
हमरा बेर परम कठोर कियाक होइ छी औ।।
त्रिविध ताप सतत निशि दिन तनबै अछि औ॥
अहाँ बिना दोसर के त्राण करत औ॥
देव दनुज मनुज हम कतेक सेवल औ,
कियो ने सहाय भेला विपति काल औ॥

कतेक कहब अहाँके ज्योँ ने कृपा कर औ,
रामजीके चाड़ि अहाँक के शरण राखन औ॥

२६. भजन विनय

एक बेर ताकू औ भगवान,
अहाँक बिना दोसर दुःख केहु ना आन॥
निशि दिन कखनौ कल न पड़ै अछि,
कियो ने तकैये आन
केवल आशा अहाँक चरणके आय करू मेरे त्राण॥
कतेक अधमके तारल अहाँ गनि ने सकत कियो आन,
हमर वान किछु नाहि सुनए छी,
बहिर भेल कते कान॥
प्रबल प्रताप अहाँक अछि जगमे
के नहि जनए अछि आन,
गणिका गिद्ध अजामिल गजके
जलसे बचावल प्राण॥
ज्योँ नहि कृपा करब रघुनन्दन,
विपति परल निदान,
रामजीके अब नाहि सहारा,
दोसर के नहि आन॥

२७. महेशवानी

सुनू सुनू औ दयाल,
अहाँ सन दोसर के छथि कृपाल॥
जे अहाँ के शरण अबए अछि
सबके कयल निहाल,
हमर दुःख कखन हरब अहाँ,
कहूने झारी लाल॥
जटा बीच गंगा छथि शोभित चन्द्र विराजथि भाल,
झारीमे निवास करए छी दुखियो पर अति खयाल॥
रामजीके शरणमे राखू,
सुनू सुनू औ महाकाल,
विपति हराऊ हमरो शिवजी करू आय प्रतिपाल॥

२८. महेशवानी

काटू दुःख जंजाल,

कृपा करू चण्डेश्वर दानी काटू दुःख जंजाल॥
ज्यों नहि दया करब शिवशंकर,
ककरा कहब हम आन,
दिन-दिन विकल कतेक दुःख काटब
ज्यों ने करब अहाँ खयाल॥
जटा बीच गंगा छथि शोभित,
चन्द्र उदय अछि भाल,
मृगछाला डामरु बजबैछी,
भाँग पीबि तिनकाल॥
लय त्रिशूलकाटू दुःख काटू,
दुःख हमरो वेगि करू निहाल,
रामजी के आशा केवल अहाँके,
विपति हरू करि खयाल॥

२९. महेशवानी

शिव करू ने प्रतिपाल,
अहाँ सन के अछि दोसर दयाल॥
भस्म अंग शीश गंग तीलक चन्द्र भाल,
भाँग पीब खुशी रही,
रही दुखिया पर खयाल।
बसहा पर घुमल फिरी,
भूत गण साथ,
डमरू बजाबी तीन
नयन अछि विशाल॥
झाड़ीमे निवास करी,
लुटबथि हीरा लाल,
रामजी के बेर शिव भेलाह कंगाल॥

३०. महेशवानी

शिवजी केहेन कैलौँ दीन हमर केहेन॥
निशिदिन चैन नहि
चिन्ता रहे भिन्न,
ताहू पर त्रिविध ताप
कर चाहे खिन्न॥
पुत्र दारा कहल किछु ने सुनै अछि काअ
ताहू पर परिजन लै अछि हमर प्राण॥

अति दयाल जानि अहाँक शरण अयलहुँ कानि,
रामजी के दुःख हरू अशरण जन जानि॥

३१. महेशवानी

विधि बड़ दुःख देल,
गौरी दाइ के एहेन वर कियाक लिखि देल॥
जिनका जाति नहि कुल नहि परिजन,
गिरिपर बसथि अकेल,
डमरू बजाबथि नाचथि अपन कि भूत प्रेत से खेल॥
भस्म अंग शिर शोभित गंगा,
चन्द्र उदय छनि भाल
वस्त्र एकोटा नहि छनि तन पर
ऊपरमे छनि बघछाल,
विषधर कतेक अंगमे लटकल,
कंठ शोभे मुंडमाल,
रामजी कियाक झखैछी मैना
गौरी सुख करती निहाल॥

३२. विहाग

वृन्दावन देखि लिअ चहुओर॥
काली दह वंशीवट देखू,
कुंज गली सभ ठौर,
सेवा कुंजमे ठाकुर दर्शन,
नाचि लिअ एक बेर॥
जमुना तटमे घाट मनोहर,
पथिक रहे कत ठौर,
कदम गाछके झुकल देखू,
चीर धरे बहु ठौर॥
रामजी वैकुण्ठ वृन्दावन
घूमि देखु सभ ठौर,
रासमण्ड ल' के शोभा देखू,
रहू दिवस किछु और।।

३३. विहाग

मथुरा देखि लिअ सन ठौर॥
पत्थल के जे घाट बनल अछि,

बहुत दूर तक शोर,
जमुना जीके तीरमे,
सन्न रहथि कते ठौर॥
अस्ट धातुके खम्भा देखू,
बिजली बरे सभ ठौर,
सहर बीचमे सुन्दर देखू,
बालु भेटत बहु ढ़ेर॥
दुनू बगलमे नाला शोभे,
पत्थल के है जोर
कंशराजके कीला देखू
देवकी वो वसुदेव॥
चाणूर मुष्टिक योद्धा देखू
कुबजा के घर और,
राधा कृष्णके मन्दिर देखू,
दाउ मन्दिर शोर॥
छोड़ विभाग
रामजी मधुबन, घूमि लिअ आब,
कृष्ण बसथि जेहि ठौर॥
गोकुल नन्द यशोदा देखू
कृष्ण झुलाउ एक बेर॥

३४. महेशवानी

भोला केहेन भेलौँ कठोर,
एक बेर ताकू हमरहुँ ओर॥
भस्म अंग शिर गंग विराजे,
चन्द्रभाल छवि जोर।।
वाहन बसहा रुद्रमाल गर,
भूत-प्रेतसँ खेल॥
त्रिभुवन पति गौरी-पति मेरो ज्योँ ने हेरब एक बेर,
तौँ मेरो दुःख कओन हरखत
सहि न सकत जीव मोर॥
बड़े दयालु जानि हम अयलहुँ,
अहाँक शरण सूनि शोर,
राम-जी अश्रण आय पुकारो,
दिजए दरस एक बेर॥

३५. भजन विनय

सुनू-सुनू औ भगवान,
अहाँक बिना जाइ अछि
आब अधम मोरा प्राण॥
कतेक शुरके मनाबल निशिदिन
कियो न सुनलनि कान,
अति दयालु सूनि अहाँक शरण अयलहुँ जानि॥
बन्धु वर्ग कुटुम्ब सभ छथि बहुत धनवान,
हमर दुःख देखि-देखि हुनकौ होइ छनि हानि। ।
रामजी निरास एक अहाँक आशा जानि,
कृपा करी हेरु नाथ,
अशरण जन जानि॥

३६. महेशवाणी

देखु देखु ऐ मैना,
गौरी दाइक वर आयल छथि,
परिछब हम कोना।
अंगमे भसम छनि,भाल चन्द्रमा
विषधर सभ अंगमे,
हम निकट जायब कोना॥
बाघ छाल ऊपर शोभनि, मुण्डमाल गहना,
भूत प्रेत संग अयलनि, बरियाती कोना॥
कर त्रिशूल डामरु बघछाला नीन नयना
हाथी घोड़ा छड़ि पालकी वाहन बड़द बौना॥
कहथि रामजी सुनु ऐ मनाइन,
इहो छथि परम प्रवीणा,
तीन लोकके मालिक थीका,
करु जमाय अपना॥

३७. महेशवानी

एहेन वर करब हम गौरी दाइके कोना॥
सगर देह साँप छनि, बाघ छाल ओढ़ना,
भस्म छनि देहमे, विकट लगनि कोना॥
जटामे गंगाजी हुहुआइ छथि जेना,
कण्ठमे मुण्डमाल शोभए छनि कोना॥

माथे पर चन्द्रमा विराजथि तिलक जेकाँ,
हाथि घोड़ा छाड़ि पालकी, बड़द चढ़ल बौना॥
भनथि रामजी सुनु ऐ मैना, गौरी दाइ बड़े भागे,
पौलनि कैलाशपति ऐना॥

३८. भजन विहाग

राम बिनु विपति हरे को मोर॥
अति दयालु कोशल पै प्रभुजी,
जानत सभ निचोर,
मो सम अधम कुटिल कायर खल,
भेटत नहि क्यो ओर॥
ता नञ शरण आइ हरिके हेरू पलक एक बेर,
गणिका गिद्ध अजामिल तारो
पतित अनेको ढेर॥
दुःख सागरमे हम पड़ल छी,
ज्यों न करब प्रभु खोज,
नौं मेरो दुःख कौन हारावन,
छड़ि अहाँ के और॥
विपति निदान पड़ल अछि निशि दिन नाहि सहायक और,
रामजी अशरण शरण राखु प्रभु,
कृपा दृष्टि अब हेरि॥

३९. भजन विहाग

विपति मोरा काटू औ भगवान॥
एक एक रिपु से भासित जन,
तुम राखो रघुवीर,
हमरो अनेक शत्रु लतबै अछि,
आय करू मेरो त्राण॥
जल बिच जाय गजेन्द्र बचायो,
गरुड़ छड़ि मैदान,
दौपति चीर बढ़ाय सभामे,
ढेर कयल असमान॥
केवट वानर मित्र बनाओल,
गिद्ध देल निज धाम,
विभीषणके शरणमे राखल
राज कल्प भरि दान॥

आरो अधम अनेक अहाँ तारल
सवरी ब्याध निधान,
रामजी शरण आयल छथि,
दुखी परम निदान॥

४०. महेशवानी

हम त' झाड़ीखण्डी झाड़ीखण्डी हरदम कहबनि औ॥
कर-त्रिशूल शिर गंग विराजे,
भसम अंग सोहाई,
डामरु-धारी डामरुधारी हरदम कहबनि औ॥
चन्द्रभाल धारी हम कहबनि,
विषधरधारी विषधरधारी हरदम कहबनि औ॥
बड़े दयालु दिगम्बर कहबनि,गौरी-शंकर कहबनि औ,
रामजीकेँ विपत्ति हटाउ,
अशरणधारी कहबनि औ॥

४१. चैत नारदी जनानी

बितल चैत ऋतुराज चित भेल चञ्चल हो,
मदल कपल निदान सुमन सर मारल हो॥
फूलल बेलि गुलाब रसाल कत मोजरल हो,
भंमर गुंज चहुओर चैन कोना पायब हो॥
युग सम बीतल रैन भवन नहि भावे ओ,
सुनि-सुनि कलरव सोर नोर कत झहरत हो॥
रामजी तेजब अब प्राण अवधि कत बीतल हो,
मधुपुर गेल भगवान, पलटि नहि आयल हो॥

४२. भजन लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण हमरा ओर नहि तकय छी ओः॥
दीन दयाल नाम अहाँक सब कहैये यौ
हमर दुखः देखि विकट अहूँ हरै छी योः॥
ब्याध गणिका गृध अजामिल गजके उबाड़ल यो
कोल किरात भीलनि अधमके ऊबारल यो
कतेक पैतके तारल अहाँ गनि के सकत यो
रुद्रपुरके भोलानाथ अहाँ धाम गेलायोः॥
ज्योँ नञ हमरा पर कृपा करब हम की करब यौ
रामजी अनाथ एक दास राखू योः॥

४३. महेशवानी

शिव हे हेरु पलक एक बेर
हम छी पड़ल दुखसागरमे
खेबि उतारु एहि बेर॥
ज्यौँ नञ कृपा करब शिवशंकर
हम ने जियब यहि और॥
तिविध ताप मोहि आय सतायो
लेन चहत जीव मोर॥
रामजीकेँ नहि और सहारा, अशरण शरणमे तोर॥

४४. समदाउन

गौनाके दिन हमर लगचाएल
सखि हे मिलि लिअ सकल समाजः॥
बहुरिनि हम फेर आयब एहि जग
दूरदेश सासुरके राजः॥
निसे दिन भूलि रहलौँ सखिके संग
नहि कएल अपन किछु काजः।
अवचित चित्त चंचल भेल बुझि
मोरा कोना करब हम काजः।
कहि संग जाए संदेश संबल किछु
दूर देश अछि बाटः॥
ऋण पैंच एको नहि भेटत
मारञमे कुश काँटः॥
हमरा पर अब कृपा करब सभ
क्षमब शेष अपराध
रामजी की पछताए करब अब
हम दूर देश कोना जाएबः॥

४५. महेशवाणी

कतेक कठिन तप कएलहुँ गौरी
एहि वर ले कोना॥
साँप सभ अंगमे सह सह करनि कोना,
बाघ छाल ऊपरमे देखल,
मुण्डमाल गहना॥
संगमे जे बाघ छनि,बड़द चढ़ना,
भूत प्रेत संगमे नाचए छनि कोना॥

गंगाजी जटामे हुहुआइ छथि कोना,
चन्द्रमा कपार पर शोभए छथि कोना।
भनथि रामजी सुनुए मैना,
शुभ शुभ के गौरी विवाह हठ छोड़ू अपना॥

# विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

**भो**जपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

ताहि आधारपर ई संकल्पित नाटिका प्रस्तुत अछि।

विद्यापतिक पिआ देसाँतर

*दृश्य १*

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि । मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।

सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौँधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।

हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड़ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार।

कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर विचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।

विद्यापति कवि ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

विद्यापति कविक प्रवेश होइत छन्हि। कोतवालक लग शुभ्र-धोतीधारी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माथ पिटैत छथि। गीतक अन्तिम चारि पाँती विद्यापति कवि गबैत छथि।

*दृश्य २*

जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, सांकेतिक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिकेँ जएबाक आ क्रेता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुरू करैत छथि आ सभ पाँतिक बाद विद्यापति मंचपर अबैत छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अन्तिम पाँती विद्यापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अर्थ बँचैत छथि।

मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।
एहि गाछक छाह बड़ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।
हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम।
हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।
हे पथिक! एतय विश्राम करू।
जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम।
जे किछु कीनब, किछुओ महग नहि। सभ किछु एतए भेटत।
सासु नहि घर, पर परिजन ननन्द सहजे भोरि।
घरमे सासु नहि छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।
एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि।
एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भए जाएब तँ आब हमर सक्क नहि अछि।
भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस।
विद्यापति कहैत छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूरा करैत छी।

*दृश्य ३*

एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास।
परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नहि करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही।
एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।
हे सखी ! प्रियतमक लेल एतबी कथा बुझू।
भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि।
हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नहि बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान।

चरण पखारू, आसन दियौक आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु।
ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।
हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू।

*दृश्य ४*

जुवती आ ननदि नगर आबि ठौर धेने छथि। एकटा पथिक आबि आश्रय मँगैत छथि तँ जुवती गबैत छथि आ ननदि सभ पाँतीक बाद अर्थ कहैत छथि। बीचमे चारि पाँती बिना अर्थक नेपथ्यसँ अबैत अछि। फेर जुवती आगाँ गबैत छथि आ ननदि अर्थ बजैत छथि। अन्तमे अन्तिम दू पाँती विद्यापति आबि गबैत छथि। दृश्यक अन्तमे ननदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिन पथिककेँ दबारि रहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल रहए, मुदा आइ पथिककेँ आश्रय किएक नहि देलियैक।

कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम।
हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नहि छथि। ताहि द्वारे राति बिताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि।
अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।
यदि क्यो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।
हे पथिक क्षमा करू आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि।
बीचमे प्रान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।
चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह।
सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।
बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद।
भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कए निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति।

विद्यापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैत अछि।

*दृश्य ५*

अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।

घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।
कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।
बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।
सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।
ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।
पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।
लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।
हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब।

*दृश्य ६*

एहि दृश्यमे सेहो, नहि तँ ननदि छथि, नहिये सासु आ नहिये विद्यापति। एकटा अतिथि अबैत छथि आकि तखने मेघ लाधि दैत अछि आ जुवती गबैत छथि।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा।
अपन घरमे बैसल छलहुँ, घरमे क्यो दोसर नहि छल,
तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।
तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।
की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।
घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।
दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमए लागल।
कओने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने।
हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि।

*दृश्य ७*

मंचक एक दिससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश निकलैत छन्हि आ मंचपर अन्हार होइत अछि। फेर इजोत भेलापर ननदिक वर हुनका सासुर लए जाइत छन्हि। पथिक रस्तापर छथि दर्शकगणक मध्य आ दर्शकगणकेँ इशारा करैत जुवती गीत गबैत छथि आ विद्यापति सभ पाँतिक बाद अर्थ कहैत छथि। अन्तिम दू पाँतिमे विद्यापति गीत आ अर्थ दुनू बजैत छथि- विद्यापति अन्तिम दू पाँति आ ओकर अर्थ कैक बेर दोहराबैत छथि।

नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पदावली-

सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली।
सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेलीह
तैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई।
क्यो नहि सम्भाषणक लेल पर्यन्त,
एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।
एतुका एहन बेबहार, ककरो क्यो पुछारी नहि करैत अछि।

मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।
हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब।
पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।
पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत।
भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।
विद्यापति गबैत छथि, विरहनि घूमि-घूमि कए पथिककेँ कहि रहल छथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती दिस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छथि। की वैह छथि पिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

पिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

# बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

सुभाषचन्द्र यादवजीक ''बनैत बिगड़ैत'' कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करितहि अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थें ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कए चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ एहि संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नहि आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नहि करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।

*किछु भाषायी मानकीकरण प्रसंग-* जेना ऐछ, अछि, अ इ छ । जाहि कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओहि समय एहिपर ध्यान देबाक आवश्यकता रहए। जेना ''जाइत रही'' केँ ''जाति रही'' लिखी आ फेर जाति (जा इ त) लेल प्रोनन्सिएशनक निअम बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखको *कनियाँ-पुतरा* मे एकर प्रयोग कए दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा एहिसँ ई आवश्यकता तँ सिद्ध होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्थिर कएल जाए आ ''छै'' लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ ''छैक'' लिखबाक अछि तँ ''अन्तक 'क' साइलेन्ट अछि'' से प्रोनन्सिएशनक निअम बनए। मुदा से जल्दी बनए आ सर्वग्राह्य होअए तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोककेँ ''य'' लिखल जाए वा ''ए'' एहिपर भरि जिनगी लड़बाक समय नहि छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, आ नहि तँ प्रोनन्सिएशनक निअम बनाऊ। ''नहि'' लेल ''नञि'' लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अन्तिका), नइं (एन.बी.टी.) आ नँइ (साकेतानन्द - कालरात्रिश्च दारुणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नहि होअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ।(वैज्ञानिक आ मानक मैथिली वर्णमालाक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइवक (http://www.videha.co.in/) विदेह ऑडियो लिंकपर डाउनलोड/श्रवण लेल उपलब्ध अछि।)

''बनैत बिगड़ैत'' पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ट लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लए जएबामे सक्षम अछि।

*कथाक यात्रा-* वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि ''सोप ओपेरा'' जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सत्तरि एपीसोडक उपन्यासमे उन्हत्तरि एपीसोड धरि तँ आशा बनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिए बदलल तँ पुरनका सभटा एपीसोड हिट आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एकर अनुमति नहि दैत अछि। ई एक एपीसोड बला रचना छी आ नीक तँ खूबे नीक आ नहि तँ खरापे-खराप।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना एहि तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे ''देवी को बलि'' सूर्यकान्त ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि प्रथाक विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ करैत सर्वदा कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नहि।

*वाद: साहित्य:* उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे

दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक ''डिसकसन'' वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

*आधुनिक कथा अछि की? ई केहन होएबाक चाही? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि होएबाक चाही? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाए ?*

कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।

जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि।

जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि।

मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक ''मसनवी'' फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि।

आजुक कथा एहि सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय (!) समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। आ जे से नहि अछि तँ ई ओकर उद्देश्यमे सम्मिलित होएबाक चाही। आ तखने कथाक विश्लेषण आ समालोचना पाठकीय विवशता बनि सकत।

कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ एहि मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कए ई सिद्ध कएलन्हि जे

विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नहि लगा सकैत छी।

मनोविश्लेषण आ द्वन्दात्मक पद्धति जेकाँ फुकियामा आ देरीदाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भए समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

*सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रह बनैत बिगड़ैत:*

स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि सुभाषजी। कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ एहि स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटब स्वाभाविके। कएक दशक पूर्व लिखल हिनक कथा ''काठक बनल लोक'' क बदरिया साइते संयोग हंसैत रहए। एहु कथा संग्रहक सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कए कोनो पात्र फेरसँ कानए लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि। किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हरिवंश सन पात्र सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण अपकार कए जाइत छथि। आब ''बनैत बिगड़ैत'' कथा संग्रहक कथा सभपर गहिंकी नजरि दौगाबी।

*कनियाँ-पुतरा-* एहि कथामे रस्तामे एकटा बचिया लेखकक पएर छानि फेर ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त अछि, जेना माएक ठेहुनपर माथ रखने होअए। नेबो सन कोनो कड़गर चीज लेखकसँ टकरेलन्हि। ई लड़कीक छाती छिऐ। लड़की निर्विकार रहए जेना बाप-दादा वा भाए बहिन सऽ सटल हो। लेखक सोचैत छथि, ई सीता बनत की द्रौपदी। राबन आ दुर्जोधनक आशंका लेखककेँ घेर लैत छन्हि।

कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद वैह सड़कक चौबटिया अछि आ वैह रेड-लाइटपर गाड़ी चलबैत-रोकैत काल बालक-बालिका सभ देखबामे अबैत छथि। मुदा आब दृष्टिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। कारक शीसा पोछि पाइ मँगनिहार बालक-बालिकाकेँ पाइ-देने वा बिन देने, मुदा बिनु सोचने आगाँ बढ़ि जाएबला दृष्टिक परिवर्तन। कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद की हुनकर दृष्टिमे कोनो परिवर्तन नहि होएतन्हि? बालक तँ पैघ भए चोरि करत वा कोनो ड्रग कार्टेलक सभसँ निचुलका सीढ़ी बनत मुदा बालिका ? ओ सीता बनत आकि द्रौपदी आकि आम्रपाली। जे सामाजिक संस्था, ह्यूमन राइट्स ऑरगेनाइजेशन कोनो प्रेमीक बिजलीक खाम्हपर चढ़ि प्राण देबाक धमकीपर नीचाँ जाल पसारि कऽ टी.वी.कैमरापर अपन आ अपन संस्थाक नाम प्रचारित करैत छथि ओ एहि कथाकेँ पढ़लाक बाद ओहि पुरातन दृष्टिसँ काज कए सकताह? ओ सरकार जे कोनो हॉस्पीटलक नाम बदलि कए जयप्रकाश नारायणक नामपर करैत अछि वा हार्डिंग पार्कक नाम वीर कुँअर सिंहक नामपर कए अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत अछि ओ समस्याक जड़ि धरि पहुँचि नव पार्क आ नव हॉस्पीटल बना कए जयप्रकाश नारायण आ वीर

कुँअर सिंहक नामपर करत  आकि दोसरक कएल काजमे ‘‘मेड बाइ मी’’ केर स्टाम्प लगाओत? ई संस्था सभ आइ धरि मेहनतिसँ बचैत अएबाक आ सरल उपाय तकबाक प्रवृत्तिपर रोक नहि लगाओत?

*असुरक्षित*- ट्रेनसँ उतरलाक बाद घरक २० मिनटक रस्ताक राति जतेक असुरक्षित भऽ गेल अछि तकर सचित्र वर्णन ई कथा करैत अछि। पहिने तँ एहन नहि रहैक- ई अछि लोकक मानसिक अवस्था। मुदा एहि तरहक समस्या दिस ककरो ध्यान कहाँ छै। पैघ-पैघ समस्या, उदारीकरण आन कतेक विषयपर मीडिआक ध्यान छै। चौक-चौराहाक एहि तरहक समस्यापर नव दृष्टि अबैत अछि, एहिमे स्टेशनसँ घरक बीचक दूरी रातिक अन्हारमे पहाड़ सन भऽ जाइत अछि। प्रदेशक तत्कालीन कानून-व्यवस्थापर ई एक तरहक टिप्पणी अछि।

*एकाकी*- एहि कथामे कुसेसर हॉस्पीटलमे छथि। हॉस्पीटलक सचित्र विवरण भेल अछि। ओतए एकटा स्त्री पतिक मृत्युक बाद कनैत-कनैत प्रायः सुति गेलि आ फेर निन्न टुटलापर कानए लागलि। एना होइत अछि। कथाकार मानव जीवनक एकटा सत्यता दिस इशारा दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यवस्थापर टिप्पणी तेना भऽ कए नहि वरण जीवन्तता देखा कए करैत छथि।

*ओ लड़की*- एहि कथामे हॉस्टलक लड़का-लड़कीक जीवनक बीच नवीन नामक युवक एकटा लड़कीक हाथमे ऐंठ खाली कप, जे ओहि लड़कीक आ ओकर प्रेमीक अछि, देखैत अछि। लड़की नवीनकेँ पुछैत छै जे ओ केम्हर जा रहल अछि। नवीनकेँ होइत छै जे ओ ओकरा अपनासँ दब बुझि कप फेंकबाक लेल पुछलक। नवीन ओकरा मना कऽ दैत अछि। विचार सभ ओकर मोनमे घुरमैत रहैत छै। ई कथा एकटा छोट घटनापर आधारित अछि...जे ओ हमरा दब बूझि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक? आ ओ दृढ़तासँ *नहि* कहि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। एकाकी जेकाँ ई कथा सेहो मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपर आधारित अछि।

*एकटा प्रेम कथा*- पहिने जकरा घरमे फोन रहैत छल तकरा घरमे दोसराक फोन अबैत रहैत छल, जे एकरा तँ ओकरा बजा दिअ। लेखकक घरमे फोन छलन्हि आ ओ एकटा प्रेमीक प्रेमिकाक फोन अएलापर, ओकर प्रेमीकेँ बजबैत रहैत छथि। प्रेमी मोबाइल कीनि लैत अछि से फोन आएब बन्द भऽ जाइत अछि। मुदा प्रेमी द्वारा नम्बर बदलि लेलापर प्रेमिकाक फोन फेरसँ लेखकक घरपर अबैत अछि। प्रेमिका, प्रेमीक ममियौत बहिनक सखी रितु छथि आ लेखक ओकर सहायताक लेल चिन्तित भऽ जाइत छथि। एहि कथामे प्रेमी-प्रेमिका, मोबाइल आ फोन ई सभ नव युगक संग नव कथामे सेहो स्वाभाविक रूपेँ अबैत अछि।

टाइटल कथा अछि *बनैत-बिगड़ैत*। तीन टा नामित पात्र । माला, ओकर पति सत्तो आ पोती मुनियाँ । गाम-घरक जे सास-पुतोहुक गप छै, सेहन्ता रहि गेल जे कहियो नहेलाक बाद खाइ लेल पुछितए, एहन सन। मुदा सैह बेटा-पुतोहु जखन बाहर चलि जाइत छथि तँ वैह सासु कार कौआक टाहिपर चिन्तित होमए

लगैत छथि। माइग्रेशनक बादक गामक यथार्थकेँ चित्रित करैत अछि ई कथा। सत्तोक संग कौआ सेहो एक दिन बिला जाएत आ मुनियाँ कौआ आ दादा दुनूकेँ तकैत रहत।प्रवासीक कथा, बेटा-पुतोहुक आ पोतीक कथा, सासु-पुतोहुक झगड़ा आ प्रेम !

*अपन-अपन दुःख* कथामे पत्नी, अपन अवहेलनाक स्थितिमे, धीया-पुताकेँ सरापैत छथि। रातिमे धीया-पुताक खेनाइ, खा लेबा उत्तर भनसाघरक ताला बन्द रहबाक स्थितिमे पत्नीक भूखल रहब आ परिणामस्वरूप पतिक फोंफक स्वरसँ कुपित होएब स्वाभाविक। सभक अपन संसार छै। लोक बुझैए जे ओकरे संसारक सुख आ दुःख मात्र सम्पूर्ण छै मुदा से नहि अछि। सभक अपन सुख-दुःख छै, अपन आशा आ आकांक्षा छै। कथाकार ओहन सत्यकेँ उद्घाटित करैत छथि, जे हुनकर अनुभवक अंतर्गत अबैत छन्हि। आत्मानुभूति परिवेश स्वतंत्र कोना भए सकत आ से सुभाष चन्द्र यादवजीक सभ कथामे सोझाँ अबैत अछि।

*आतंक* कथामे कथाकारकेँ पुरान संगी हरिवंशसँ कार्यालयमे भेँट होइत छन्हि। लेखकक दाखिल-खारिज बला काज एहि लऽ कऽ नहि भेलन्हि जे हरिवंशक स्थानान्तरणक पश्चात् ने क्यो हुनकासँ घूस लेलक आ ताहि द्वारे काजो नहि केलक। हरिवंशक बगेबानी घूसक अनेर पाइक कारण छल से दोसर किएक अपन पाइ छोड़त ? लेखक आतंकित छथि। कार्यालयक परिवेश, भ्रष्टाचार आ एक गोटेक स्थानांतरणसँ बदलैत सामाजिक सम्बन्ध ई सभ एतए व्यक्त भेल अछि। आइ काल्हि हम आकि अहाँ ब्लॉकमे वा सचिवालयमे कोनो काज लेल जाइत छी, तँ यैह ने सुनए पड़ैत अछि, जे पाइ जे माँगत से दए देबैक आ तखन कोनो दिक्कत होअए तँ कहब ! आ पाइक बदला ककरो नाम वा पैरवी लए गेलहुँ तँ कर्मचारी ने पाइये लेत आ नहिये अहाँक काज होएत।

*एकटा अन्त* कथामे ससुरक मृत्युपर लेखकक साढ़ू केश कटेने छथि आ लेखक नहि, एहिपर कैक तरहक गप होइत अछि। साढ़ू केश कटा कऽ निश्चिन्त छथि। ई जे सांस्कृतिक सिम्बोलिज्म आएल अछि, जे पकड़ा गेल से चोर आ खराप काज केनिहार, जे नहि पकड़ाएल से आदर्शवादी। पूरा-पूरी तँ नहि, मुदा अहू कथामे एहने आस्था जन्म लैत अछि आ टूटि जाइत अछि। हरियाणामे बापो मरलापर लोक केश नहि कटबैत अछि, तँ की ओकर दुःखमे कोनो कमी रहैत छै तँ ? पंजाबक महिला एक बरखक बाद ने सिनूर लगबैत छथि आ ने चूड़ी पहिरैत छथि मुदा पहिल बरख कान्ह धरि चूड़ी भरल रहैत छन्हि, तँ की बियाहक पहिल बरखक बाद हुनकर पति-प्रेममे कोनो घटंती आबि जाइत छन्हि ?

*कबाछु* कथा मे चम्पीबलाक लेखक लग आएब, जाँघपर हाथ राखब। अभिजात्य संस्कारक लोक लग बैसल रहबाक कारणसँ लेखक द्वारा ओकर हाथ हटाएब । चम्पीबला द्वारा ई गप बाजब जे छुअल देहकेँ छूलामे कोन संकोच। जेना चम्पीवला लेखककेँ बुझाइय रहन्हि जे हुनका युवती बुझि रहल छलन्हि। लेखककेँ लगैत छन्हि जे ओ स्त्री छथि आ चम्पीबला ओकर पुरान यार। ठाम-

कुठाम आ समय-कुसमयक महीन समझ चम्पीवलाकेँ नहि छइ, नहि तँ लेखक ओतेक गरमीयोमे चम्पी करा लैतए। चम्पीवलाक दीनतापर अफसोच भेलन्हि मुदा ओकर शी-इ-इ केँ मोन पाड़ैत वितृष्णा सेहो। फ्रायडक मनोविश्लेषणक बड्ड आलोचना भेल जे ओ सेक्सकेँ केन्द्रमे राखि गप करैत छथि। मुदा अनुभवसँ ई गप सोझाँ अबैत अछि जे सेक्ससँ जतेक दूरी बनाएब, जतेक एकरा वार्तालाप-कथा-साहित्यसँ दूर राखब, ओकर आक्रमण ततेक तीव्र होएत।

*कारबार* मे लेखकक भेँट मिस्टर वर्मा, सिन्हा आ दू टा आर गोटेसँ होइत अछि। बार मे सिन्हा दोस्ती आ बिजनेसकेँ फराक कहैत दू टा खिस्सा सुनबैत अछि। सभ चीजक मोल अछि, एहिपर एकटा दोस्तक वाइफ लेल टी.वी. किनबाक बाद फ्रिजक डिमान्ड अएबाक गप बीचेमे खतम भऽ जाइत अछि। दोसर खिस्सामे एकटा स्त्री पतिक जान बचबए लेल डॉक्टरक फीस देबाक लेल पूर्व प्रेमी लग जाइत अछि। पूर्व प्रेमी पाइ देबाक बदलामे ओकरा संगे राति बितबए लेल कहैत छै। सिन्हा एहि कथामे ककरो गलती नहि मानैत छथि, डॉक्टर बिना पाइ लेने किएक इलाज करत, पूर्व प्रेमी मँगनीमे पाइ किएक देत आ ओ स्त्री जे पूर्व प्रेमी संग राति नहि बिताओत, तँ ओकर पति मरि जएतैक।

आब बारसँ लेखक निकलैत छथि तँ दरबानक सलाम मारलापर अह्रूमे पैसाक टनक सुनाइ पड़ए लगैत छन्हि। प्राचीन मूल्य, दोस्ती-यारी आ आदर्शक टूटबाक स्थिति एकटा एकाकीपनक अनुभव करबैत अछि।

*कुश्ती* मे सेहो फ्रायड सोझाँ अबैत छथि, कथाक प्रारम्भ लुंगीपरक सुखाएल कड़गर भेल दागसँ शुरू होइत अछि। मुदा तुरत्ते स्पष्ट होइत अछि, जे ओ से दाग नहि अछि, वरन घावक दाग अछि। फेर हाटक कुश्तीमे गामक समस्याक निपटारा, हेल्थ सेन्टरक बन्द रहब, ओतए ईंटाक चोरिक चरचा अबैत अछि। छोट भाइ कोनो इलाजक क्रममे एलोपैथीसँ हटि कए होम्योपैथीपर विश्वास करए लगैत छथि, एहि गपक चरचा आएल अछि। लोक सभक घावक समाचार पुछबा लऽ अएनाइ आ लेखक द्वारा सभकेँ विस्तृत विवरण कहि सुनओनाइ मुदा उमरिमे कम वयसक कैक गोटेकेँ टारि देनाइ, ई सभ क्रम एकटा वातावरणक निर्माण करैत अछि।

*कैनरी आइलैण्डक लारेल* कथामे सुभाष आ उपिया कथाक चरित्र छथि। एतए एकटा बिम्ब अछि- जेना निर्णय कोसीक धसना जकाँ। ममियौत भाइक चिट्ठी, कटारि देने नाहपर जएबाक, गेरुआ पानिक धारमे आएब, नाहक छीटपर उतारब, छीटक बादो बहुत दूर धरि जाँघ भरि पानिक रहब। धीपल बालुपर साइकिलकेँ ठेलैत देखि क्यो कहैत छन्हि- ''साइकिल ससुरारिमे देलक-ए? कने बड़द जकाँ टिटकार दियौक''। दीदी-पीसा अहिठाम एहि गपक चरचा सुनलन्हि, जे कोटक खातिर हुनकर बेटीक विवाह दू दिन रुकि गेल छलन्हि आ ईहो जे बेसी पढ़ने लोक बताह भऽ जाइत अछि।सुभाष चाहियो कऽ दू सए टाका नहि

माँगि पबैत छथि, दीदीक व्यवहार अस्पष्ट छन्हि, सुभाष आश्वस्त नहि छथि आ घुरि जाइत छथि।

*तृष्णा* कथामे लेखककेँ अखिलन भेटैत छन्हि। श्रीलतासँ ओ अपन भेँटक विवरण कहि सुनबैत अछि। पाँचम दिन घुरलाक बाद ट्रेनमे ओ नहि भेटलीह। आब अखिलन की करत, विशाखापत्तनम आ विजयवाड़ाक बीचक रस्तामे चक्कर काटत आकि स्मृतिक संग दिन काटत।

छोट-छोट भावनात्मक घटनाक विश्लेषण अछि कथा ''कैनरी आइलैण्डक लारेल'' आ ''तृष्णा''।

*दाना* कथामे मोहन इन्टरव्यू लेल गेल अछि, ओतए सहृदय चपरासी सूचित करैत छै जे बाहरीकेँ नहि लैत छै, पी.एच.डी. रहितए तँ कोनो बात रहितए। मोहनकेँ सभ चीज बीमार आ उदास लगैत रहए। फुद्दी आ मैना पावरोटीक टुकड़ीपर ची-ची करैत झपटैत रहए।प्रतियोगी परीक्षाक साक्षात्कारमे बाहरी आ लोकल केर जे संकल्पना आएल अछि तकर सम्वेदनात्मक वर्णन भेल अछि।

*दृष्टि* कथामे पढ़ाइ खतम भेलाक बाद नोकरीक खोज, गाममे लोकसभक तीक्ष्ण कटाक्ष। फेर दक्षिण भारतीय पत्रकारक प्रेरणासँ कनियाँक विरोधक बावजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागब। ई सभ गप एकटा सामान्य कथ्य रहलाक बादो ठाम-ठाम सामाजिक सत्य उद्घाटित करैत अछि। एतए गामक लोकक कुटीचाली अछि, जे काजक अभावमे खाली समय बेशी रहलाक कारण अबैत अछि। संगमे आइ-काल्हिक स्त्रीक शहरी जीवन जीबाक आकांक्षा सेहो प्रदर्शित करैत अछि।

*नदी* कथामे कथ्य कथाक संगे चलैत अछि आ खतम भए जाइत अछि। गगनदेवक घरपर बिहारी आएल छै। शहरमे ओकरा एक साल रहबाक छै। गगनदेवकेँ ओकरा संग मकान खोजबाक क्रममे एकटा लड़कीसँ भेँट होइत छै। ओकरा छोड़ि आगाँ बढ़ल तँ ई बुझलाक बादो जे आब ओकरासँ फेर भेँट नहि हेतइ ओ उल्लास आ प्रेमक अनुभूतिसँ भरि गेल।

*परलय* बाढिक कथा थिक, कोसीक कथा कहल गेल अछि एतए। बौकी बुनछेकक इन्तजारीमे अछि। मुदा धारमे पानि बढ़ि रहल छै। कोशीक बाढ़ि बढ़ल आबि रहल छै आ एम्हर माएक रद्द-दस्तसँ हाल-बेहाल छै। माल-जाल भूखसँ डिकरैत रहै। रामचरनक घरमे अन्नपानि बेशी छै से ओ सभकेँ नाहक इन्तजाम लेल कहैत छै। बौकूक घरसँ कटनियाँ दूर रहै। मृत्यु आ विनाश बौकूकेँ कठोर बना देलकैक, मोह तोड़ि देलकैक। मुदा बरखा रुकि गेलैक। बौकू चीज सभकेँ चिन्हबाक आ स्मरण करबाक प्रयत्न करए लागल।

*बात* कथामे सेहो कथाकार अपन कथानककेँ बाट चलिते ताकि लैत छथि आ शिल्पसँ ओकरा आगाँ बढ़बैत छथि। नेबो दोकानपर नेबोवला आ एकटा लोकक बीचमे बहस सुनैत लेखक बीचमे कूदि पड़ैत छथि। नेबोवलासँ एक गोटे

अपन छत्ता माँगि रहल अछि जे ओ नीचाँ रखने रहए।दुखक गप, लेखकक अनुसार, बेशी दिन धरि लोककेँ मोन रहैत छै।

*रंभा* कथामे पुरुष-स्त्रीक बीचक बदलैत सम्बन्धक तीव्र गतिसँ वर्णन भेल अछि। पुरुष यावत स्त्रीसँ दूर रहैत अछि तँ सभ ओकरा मेनका आ रम्भा देखाइ पड़ैत छै। मुदा जे सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि तँ बादमे लेखक केँ लगैत छन्हि जे ओ बेटीये छी।रस्तामे एक स्त्री अबैत अछि। लेखक सोचैत छथि जे ई के छी, रम्भा, मेनका आकि...। ओकरा संग बेटा छै, ओतेक सुन्नर नहि, कारण एकर वर सुन्दर नहि होएतैक। ओ गपशपमे कखनो लेखककेँ ससुर जकाँ, कखनो अपनाकेँ हुनकर बेटी तुल्य कहैत अछि। पहिने लेखककेँ खराप लगलन्हि। मुदा बादमे लेखककेँ नीक लगलन्हि। मुदा अन्तमे ओकर पएर छूबए लेल झुकब मुदा बिन छूने सोझ भऽ जाएब नहि बुझिमे अएलन्हि।

*हमर गाम* कथामे लेखकक गामक रस्ता, कटनियाँ सँ मेनाही गामक लोकक छिड़िआएब आ बान्हक बीचमे अहुरिया काटैत लोकक वर्णन अछि। कोसिकन्हाक लोक- जानवरक समान, जानवरक हालतमे। कटनियाँमे लेखकक घर कटि गेलन्हि से ओ नथुनियाँ एहिठाम टिकैत छथि। मछबाहि आ चिड़ै बझाबऽ लेल नथुनी जोगार करैत अछि। जमीनक झगड़ा छन्हि, एक हिस्सेदारक जमीन धारमे डूमल छै से ओ लेखकक गहूमवला खेत हड़पए चाहैत अछि। शन आ स्त्रीक (!) पाछू लोक बेहाल अछि।

स्त्रीक पाछू बिन कारण लेखक पड़ि गेल छथि जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रमे कथा कहैत-कहैत शूद्र आ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि।

यावत सभ कमलक घूर लग कपक अभावमे बेरा-बेरी चाह पिबैत छथि, फसिल कटि कऽ सिबननक एतए चलि जाइ-ए। झौआ, कास, पटेरक जंगल जखन रहए, चिड़ै बड्ड आबए, आब कम अबैत अछि। खढ़िया, हरिन, माछ, काछु, डोका सभ खतम भऽ रहल छै- जीवनक साधन दुर्लभ भऽ गेल अछि। साँझमे जमीनक पंचैती होइत अछि।सत्तोक बकड़ी मरि गेलैक, पुतोहु एकर कारण सासुक सरापब कहैत अछि। सासु एकर कारण बलि गछलोपर पाठी सभकेँ बेचब कहैत छथि। सत्तोक बेटीक जौबनक उभारकेँ लेखक पुरुष सम्पर्कक साक्षी कहैत छथि आ सकारण फेरसँ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, कारण ई धारणा लोकमे छै। सत्तोक बेटी एखन सासुर नहि बसैत छै। सुकन रामक एहिठाम खाइत काल लेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकरासँ उबरबाक लेल ओ बजलाह- आइ तोरा जाति बना लेलिअह। कोसी सभ भेदभावकेँ पाटि देलक, डोम, चमार, मुसहर, दुसाध, तेली, यादव सभ एके कलसँ पानि भरैत अछि। एके पटियापर बैसैत अछि।

*ककरा लेल कथा लिखी? वा कही? कथाक वाद:* जिनका विषयमे लिखब से तँ पढ़ताह नहि। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जाएत ? गीताक सप्पत खा कए

झूठ बजनिहारक संख्या कम नहि। तँ की एहन कसौटीपर रचित कथाक महत्व कम भए जाएत ?

सभ प्रबुद्ध नहि होएताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओहि दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध होएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जे ओ नहि, तँ ओकर ओहि परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ जा ई रहत ताधरि एहि तरहक कथा रचित कएल जाइत रहत।

आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत ? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जाहिसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन होअए। आकि एहि परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि ? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। एहिमे संयोजन आवश्यक। विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नहि अछि जे रोशनाइसँ कागतपर जेना-तेना उतारि देलियैक। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि।

तँ कथा आदर्शवादी होअए, प्रकृतिवादी होअए वा यथार्थवादी होअए। आकि एहिमे सँ मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमएबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी होअए ? आ नहि तँ कथा प्रयोजनमूलक होअए। एहिमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि। अपनाकेँ अभिव्यक्त कएनाइ मानवीय स्वभाव अछि। मुदा ओ सामाजिक निअममे सीमित भऽ जाइत अछि। परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ जाइत अछि।

तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कए गढ़ल जाएत। आ व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि आओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करए पड़तन्हि।

स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन । कथा तखन संप्रेषित होएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत।

जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नहि छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने मुक्तिक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह।

कथा क्रमबद्ध होअए आ सुग्राह्य होअए तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नहि व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कए देलक।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे सुभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत

अछि से सुभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)। हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक ''अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम'' सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत ? लघु, अति-लघु कथा, कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत?

जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नहि पहुँचि सकब। ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण- मेडिओकर स्टार- अछि। ओहि मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नगर-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या ? हमर कथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि।

होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त ! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नहि होइत अछि।

आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल । मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। एहि बेरुका (२००८) कोसीक बाढ़िमे अनलकान्तजी गाममे फाँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहए मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए.सी.टिकट बुक भए गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही?

डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन केँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

एहि परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा गाथापर सेहो एकटा गहिंकी नजरि दौगाबी।

रामदेव झा जलधर झाक ''विलक्षण दाम्पत्य'' (मैथिल हित साधन, जयपुर, १९०६ ई.) केँ मैथिलीक आधुनिक कथाक प्रारम्भ मानलन्हि । पुलकित मिश्रक ''मोहिनी मोहन'' (१९०७-०८), जनसीदनक ''ताराक वैधव्य'' (मिथिला मिहिर, १९१७ ई.), श्रीकृष्ण ठाकुरक चन्द्रप्रभा, तुलापति सिंहक मदनराज चरित, काली कुमार दासक अदलाक बदला आ कामिनीक जीवन, श्यामानन्द झाक अकिञ्चन,

श्री बल्लभ झाक विलासिता, हरिनन्दन ठाकुर ''सरोज''क ईश्वरीय रक्षा, शारदानन्द ठाकुर ''विनय''क तारा आ श्याम सुन्दर झा ''मधुप''क प्रतिज्ञा-पत्र, वैद्यनाथ मिश्र ''विद्यासिन्धु''क गप्प-सप्पक खरिहान आ प्रबोध नारायण सिंहक बीछल फूल आएल। हरिमोहन झाक कथा आ यात्रीक उपन्यासिका, राजकमल चौधरी, ललित, रामदेव झा, बलराम, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, राजमोहन झा, साकेतानन्द, विभूति आनन्द, सुन्दर झा ''शास्त्री'', धीरेन्द्र, राजेन्द्र किशोर, रेवती रमण लाल, राजेन्द्र विमल, रामभद्र, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, प्रदीप बिहारी, रमेश, मानेश्वर मनुज, श्याम दरिहरे, कुमार पवन, अनमोल झा, मिथिलेश कुमार झा, हरिश्चन्द्र झा, उपाध्याय भूषण, रामभरोस कापड़ि ''भ्रमर'', भुवनेश्वर पाथेय, बदरी नारायण बर्मा, अयोध्यानाथ चौधरी, रा.ना.सुधाकर, जीतेन्द्र जीत, सुरेन्द्र लाभ, जयनारायण झा ''जिज्ञासु'', श्याम सुन्दर ''शशि'', रमेश रञ्जन, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, परमेश्वर कापड़ि, तारानन्द वियोगी, नागेन्द्र कुमर, अमरनाथ, देवशंकर नवीन, अनलकान्त, श्रीधरम, नीता झा, विभा रानी, उषाकिरण खान, सुस्मिता पाठक, शेफालिका वर्मा, ज्योत्सना चन्द्रम, लालपरी देवी एहि यात्राकेँ आगाँ बढ़ेलन्हि।

मैथिलीमे नीक कथा नहि, नीक नाटक नहि? मैथिलीमे व्याकरण नहि? पनिसोह आ पनिगर एहि तरहक विश्लेषण कतए अछि मैथिली व्याकरण मे, वैह अनल, पावक सभ अछि ! मुदा दीनबन्धु झाक धातु रूप पोथीमे जे १०२५ टा एहि तरहक खाँटी रूप अछि, रमानथ झाक मिथिलाभाषाप्रकाशमे जे खाँटी मैथिली व्याकरण अछि, ई दुनू रिसोर्स बुक लए मानकीकरण आ व्याकरणक निर्माण सर्वथा संभव अछि। मुदा भऽ रहल अछि ई जे पानीपतक पहिल युद्धक विश्लेषणमे ई लिखी जे पानीपत आ बाबरक बीचमे युद्ध भेल। रामभद्रकेँ धीरेन्द्र सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथाकारक रूपमे वर्णित कएने छथि, मुदा एखन धरि हुनकर कएक टा कथाक विश्लेषण कएल गेल अछि ? नचिकेताक नाटक आ मैथिलीक सेक्सपिअर महेन्द्र मलंगियाक काजक आ रामभद्र आ सुभाष चन्द्र यादवक कथा यात्राक सन्दर्भमे ई गप कहब आवश्यक छल।

जाहि समय मैथिलीक समस्या घर-घरसँ मैथिलीक निष्कासन अछि, जखन हिन्दीमे एक हाथ अजमेलाक बाद नाम नहि भेला उत्तर लोक मैथिलीक कथा-कविता लिखि आ सम्पादक-आलोचक भए, अपन महत्वाकांक्षाक भारसँ मैथिली कथा-कविताक वातावरणकेँ भरिया रहल छथि, मार्क्सवाद, फेमिनिज्म आ धर्मनिरपेक्षता घोसिया-घोसिया कए कथा-कवितामे भरल जा रहल अछि, तखन स्तरक निर्धारण सएह कऽ रहल अछि, स्तरहीनताक बेढ़ वाद बनल अछि। जे गरीब आ निम्न जातीयक शोषण आ ओकरा हतोत्साहित करबामे लागल छथि से मार्क्सवादक शरणमे, जे महिलाकेँ अपमानित केलन्हि से फेमिनिज्म आ मिथिला राज्य आ संघक शरणमे आ जे साम्प्रदायिक छथि ओ धर्मनिरपेक्षताक शरणमे जाइत छथि। ओना साम्प्रदायिक लोक फेमिनिस्ट, महिला विरोधी मार्क्सिस्ट आ एहि तरहक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छथि। क्यो राजकमलक

बड़ाइमे लागल अछि, तँ क्यो यात्रीक आ धूमकेतुक तँ क्यो सुमनजीक, आ हुनका लोकनिक तँ की पक्ष राखत तकर आरिमे अपनाकेँ आगाँ राखि रहल अछि। यात्रीक पारोकेँ आ राजकमल आ धूमकेतुक कथाकेँ आइयो स्वीकार नहि कएल गेल अछि- एहि तरहक अनर्गल प्रलाप ! क्यो तथाकथित विवादास्पद कथाक सम्पादन कए स्वयं विवाद उत्पन्न कए अपनाकेँ आगाँ राखि रहल छथि। मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनक बीच सीमित प्रतियोगिता जाहि कवि-कथाकारकेँ विचलित कए रहल छन्हि आ हिन्दी छोड़ि मैथिलीमे अएबाक बाद जाहि गतिसँ ओ ई सभ करतब कए रहल छथि, तिनका मैथिलीक मुख्य समस्यापर ध्यान कहिया जएतन्हि से नहि जानि ? लोक ईहो बुझैत छथि जे हिन्दीक बाद जे मैथिलीमे लिखब , तँ स्वीकृति त्वरित गतिएँ भेटत ? जे मैथिलीक रचनाकारेँकेँ एहि तरहक भ्रम छन्हि आ आत्मविश्वासक अभाव छन्हि, अपन मातृभाषाक संप्रेषणीयतापर अविश्वास (!), तखन एहि भाषाक भविष्य हिनका लोकनिक कान्हपर दए कोन छद्म हम सभ संजोगि रहल छी ? सेमीनारमे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त एहन जुझारू कथाकार, सम्पादक आ समालोचक सभकेँ अपन पुत्र-पुत्री-पत्नीक संग मैथिलीमे नहि वरन् हिन्दी मे (अंग्रेजी प्रायः सामर्थ्यसँ बाहर छन्हि तेँ) गप करैत देखि हतप्रभ रहि जाइत छी। मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल होएत? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोट-गोट रचना पढ़ि कए हम कहि सकैत छी। ताहि स्थिति मे- ई विवाद रहए एहि कवितामे आ एहि कथामे- एहि तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दए अपन लेखनी चमकाएब ? आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार फलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिलना-आब तँ कथाकार आ कविक जोड़ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भक्तिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल। मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा एहि सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि, घरमे मैथिलीकेँ निष्कासित कए सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतए पाठक आ कोन विवाद ! जे समस्या हम देखि रहल छी जे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ जातिक लोक एहि भाषासँ प्रेम करथि ताहि लेल कथा आ कविता कतए आगाँ अछि ? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कैरियरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि। आ ओ घर-घरमे पहुँचए ताहि लेल कोन प्रयास भए रहल अछि ? सए-दू सए कॉपी पोथी छपबा कए , तकर समीक्षा करबा कए, सए-दू सए कॉपी छपएबला पत्रिकामे छपबा कए , तकर फोटोस्टेट कॉपी फोल्डर बना कऽ घरमे राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कएल गेल तिकड़मक वातावरणमे हमर आस गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर जाए स्थिर भए गेल अछि।

जे अपन घर-परिवार नहि सम्हारि सकलाह से ढेरी-ढाकी भाषायी पुरस्कार लए बैसल छथि, मिथिला राज्य बनएबामे लागल छथि , पता नहि राज्य कोना सम्हारि सकताह आ ओकर विधान सभामे कोन भाषामे बजताह, जखन हुनका ओतए पुरस्कृत कएल जएतन्हि।

जे घरमे मैथिली नहि बजैत छथि से लेखक आ कवि बनल छथि (हिन्दी-मैथिलीमे समान अधिकारसँ) हिन्दीमे सोचि लिखैत छथि आ तखन अनुवाद कए मौलिक मैथिली लिखैत छथि ! मैथिली कथा-कविता करैत छथि!!

मराठी, उर्दू, तमिल, कन्नड़सँ मैथिली अनुवाद पुरस्कार निर्लज्जतासँ लैत छथि , वणक्कम केर अर्थ पुछबन्हि से नहि अबैत छन्हि, अलिफ-बे-से केर ज्ञान नहि, मराठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्य नहि छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ एहि द्वारे बचि जाइत छन्हि कारण अपने छपबा कए समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नहि। पाठक नहि रहएमे हुनका लोकनिकेँ फाएदा छन्हि। आ एहि पुरस्कार सभमे जूरी आ एडवाइजरी बोर्ड अपनाकेँ आगाँ करबामे जखन स्वयं आगाँ अबैत छथि तखन एहि सीमित प्रतियोगी लोकनिक आत्मविश्वास कतेक दुर्बल छन्हि , सएह सोझाँ अबैत अछि । सारंग कुमार छथि, तँ बलरामक चरचा फेरसँ कथाकारक रूपमे शुरू भेल अछि । आ जिनकर सन्तान साहित्यमे नहि अएलाह हुनकर चरचा फेर कोना होएत, हुनकर पक्ष के आगाँ राखत ? जीबैत धरि ने सभ अपन पक्ष स्वयं आगाँ राखि रहल छथि ? मुदा मुइलाक बाद ? मैथिली साहित्यक एहि सत्यकेँ देखार करबाक आवश्यकता अछि । आँखि मुनि कए सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये रहल छथि।

क्यो चित्रगुप्त सभा खोलि मणिपद्मकेँ बेचि रहल छथि तँ क्यो मैथिल (ब्राह्मण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-मणिपद्म आ सुमनजीक आरिमे अपन धंधा चमका रहल छथि आ मणिपद्म आ सुमनजीकेँ अपमानित कए रहल छथि। कथा-कविता संग्रह सभक सम्पादकक चेला चपाटी मैथिलीक सर्वकालीन कथाकार-कविक संकलनमे स्थान पाबि जाइत छथि , भने हुनकर कोनो पहिले संग्रह आएल होइन्हि वा कथा-कविताक संख्या हास्यास्पद रूपसँ कम होइन्हि। पत्रिका सभक सेहो वएह स्थिति अछि। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक ई पत्रिका सभ स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकेँ मारि रहल अछि। ड्राइंग रूममे बिना फील्डवर्कक लिखल लोककथा जाहि भाषामे लिखल जाइत होअए, ओतए एहि तरहक हास्यास्पद कटाउझ स्वाभाविक अछि। आब तँ अन्तर्जालपर सेहो मैथिलीक किछु जालवृत्तपर जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि।

मार्क्सिस्ट आ फेमिनिस्ट बनि तकरो व्यापार शुरू करब आ अपन स्तरक न्यूनताक एहि तरहेँ पूर्ति करब, सीमित प्रतियोगिता मध्य अल्प प्रतिभायुक्त साहित्यकारक ई हथियार बनि गेल अछि। जे मार्क्सक आदर करत से ई किएक कहत जे हम मार्क्सवादी आलोचक आकि लेखक छी ? हँ जे मार्क्सक धंधा

करत तकर विषयमे की कही, धंधा तँ सुमन, राजकमल, यात्री, मणिपद्म, धूमकेतु......सभक शुरू भेल अछि। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वैह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नहि भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यैह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा एहि वास्तविकताक संग आगाँक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेवी कथाकार आ पाठक जे धूरा-गरदामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य रचथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित रखबा मात्रमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार होएबे टा करत।

मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नहि। सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे ''विदेह'' ई-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भए हजारक-हजार पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट एहि कथा सभकेँ भेटलैक जाहिमे बेशी पाठक गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ रहथि, से हम हुनकर सभक उपनाम देखि अन्दाज लगाओल। मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ तँ पाठक बनि रहिये नहि सकैत छथि, शीघ्र यात्रीक बादक एकमात्र जन उपन्यासकार आ कुलानन्द मिश्रक बादक एकमात्र सही अर्थमे कविक उपाधि लेल लालायित भए जाइत छथि। अपनाकेँ घोड़ा आ बाघ आ दोसरकेँ गधा आ बकरी कहबा काल ओ मूल दिशा आ समस्यासँ अपनाकेँ फराक करैत छथि। अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कए आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आएल अछि। एहि एकमात्र शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध ''विदेह'' ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। एतए साल भरिमे सएसँ बेशी लेखक जुड़लाह तँ पाठकक संख्या लाख टपि गेल। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर एहि गपपर देल जोरकेँ किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ई भाषा जे मरि जाएत तखन ओकर ड्राइंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-मिथिला राज्य आन्दोलकर्ता आ समालोचकक की होएतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ एहि रूपमे हमरा आर आकर्षित करैत अछि। आ एतए ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भए प्रिंट फॉर्ममे आबि रहल अछि, कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ लए। आ ई घटना सभ दिन आ सभ पक्षमे मैथिलीकेँ सबल करत से आशा अछि।

# भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन

**गू**गल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतए लेखन, संदेश आ टिप्पणीक लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतए जालोद्वहन मँगनीमे देल जा रहल अछि। ई सभ जालवृत्त निर्माण स्थल उपभोक्ता केन्द्रित अछि आ एतए सरल लेखन-पद्धतिक व्यवस्था सेहो कएल गेल अछि । मुदा जे अहाँ संविहित पृच्छन भाषा (एस.क्यू.एल.) आधारित जालस्थलक निर्माण आ प्रबन्धन करए चाहैत छी तँ ओहि लेल ई निबन्ध अहाँक लेल उपयोगी रहत। पहिने मिथिलाक्षर आ देवनागरीक यूनीकोडमे लिखल जएबाक प्रक्रम दए रहल छी आ से अन्तर्जालपर पढ़ल जा सकबा योग्य कोना होएत तकरो चरचा होएत। तकर बाद जालस्थल निर्माण पद्धतिपर विस्तृत चरचा होएत।

देवनागरी लिपिकेँ रोमन टाइपराइटरपर कोन टाइप करी-

पहिने www.bhashaindia.com पर जा कए हिन्दी IME V.५ अवारोपित (डाउनलोड) करू । एहि विधि (प्रोग्राम) केँ अपना संगणक (कंप्युटर) पर प्रतिष्ठापित (इंस्टॉल) करू । फेर नियन्त्रण पटल (कंट्रोल पैनल) मे क्षेत्रीय आ भाषा (रेजनल आ लंग्वेज) पर जा कए लंग्वेज प्लावक (टैब) केँ दबाऊ । देखू जे कॉम्प्लेक्स स्क्रिप्ट/ राइट टू लेफ्ट लैंगुएज पर सही केर निशान लागल छै आकि नहि । नहि छै तँ करू आ संगणक ( कंप्युटर) ताहि लेल जे जे कहैत अछि से करू । एकरा बाद लंग्वेज प्लावक (टैबकेँ) आ डिटेल्स केँ दबाऊ । फेर ओतए ऐड क्लिक करू आ ओतए लंग्वेज मे हिन्दी आ कीबोर्ड मे HINDI INDIC IME १ [V.५.१] सेलेक्ट कए अप्लाइ दबाऊ । कंप्युटरकेँ रीस्टार्ट करू । आब वर्ड डोक्युमेंट खोलू । वाम Alt+Shift केँ सम्मिलित दबेला उत्तर H कुँजीपटल (कीबोर्ड) आओत नहि तँ नीचाँ लंग्वेजकेँ क्लिक करू आ हिन्दी चुनि लिअ । कुँजीपटलमे हिन्दी transliteration आ आन तरहक विकल्प जेना रेमिंगटन/ इन्सक्रिप्ट कुँजीपटल आदि सेहो उपलब्ध अछि । चुनि कए टाइप शुरू करू ।

आब transliteration कुँजीपटलपर राम टाइप करबा लए raama टाइप करए पड़त । क् (हलन्त सहित) टाइप करबाक हेतु k दबाऊ आ माउसक

लेफ्ट बटन क्लिक करू अन्यथा स्पेस पिञ्चक आकि एंटर पिञ्चक दबेला पर हलंत उड़ि जाएत ।

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल । हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ २७.१०.२००८ कें मैथिली भाषामे विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छै । एतए संगणक शब्द सभक स्थानीयकरणमे बहुत रास अंग्रेजी शब्दक अनुवाद हम कएने रही आ ताहिसँ एहि कार्यमे रुचि बढ़ल आ मदति सेहो भेटल ।

देवनागरीमे टाइप करबाक हेतु एकटा आर तन्त्रांश साधन (सॉफ्टवेअर टूल) उपलब्ध अछि जे http://www.baraha.com/BarahaIME.htm लिंक पर उपलब्ध अछि । एकर विशेषता अछि एकर संस्कृत कुञ्जी फलक, जे आन कोनो तन्त्रांशमे उपलब्ध नहि अछि । एहिमे उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आ किछु आन संस्कृत अक्षर उपलब्ध अछि मुदा एतहु स्वास्तिक, ग्वाङ, अञ्ची इत्यादि उपलब्ध नहि अछि । *स॑, स॒, स᳚, सऽ* कें स लिखलाक बाद सिफ्ट ३,२,४ आ ७ दबेलासँ लिखि सकैत छी ।

तिरहुता लिपि लिखबाक हेतु एहि लिंक पर जाऊ।

http://www.tirhutalipi.4t.com/

मुदा एकरा हेतु एहि लिंक पर जे प्रीति फॉन्ट छै तकरा सेहो अवारोपित कए प्रतिकृति करू आ दुनू कें ध्रुववृत्त चालक (हार्डडिस्क ड्राइव) C/windows/fonts मे लेपन करू । एहिमे जे फॉन्ट अछि से Ascii मे अछि । क्रुतदेव, शुशा ई सभ फॉण्ट सेहो एहि तरहक अछि, पहिने उपयोगी छल मुदा आब सर्च इंजिनमे यूनिकोड-यू.टी.एफ.८ केर सर्च होइत छै आ Ascii मे लिखल देवनागरीक सर्च नहि भए पबैत अछि । विन्डोजमे मंगल वर्णमुख (फॉन्ट) अबैत छै से यूनीकोडमे छै आ एहिमे लिखल देवनागरी सर्च भए जाइत अछि । मिथिलाक्षरक यूनीकोड रूपक आवेदन (अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल) लंबित अछि जाहिमे बर्कले विश्वविद्यालयक प्रोफेसर डेबोराह एन्डरसन, Project Leader, Script Encoding Initiative, Dept. of Linguistics, UC Berkeley क आग्रहपर हमहुँ योगदान देने रही ।

आब किछु बात यूनीकोड आ जालस्थल (वेबसाइट) केर संबंधमे ।

कोनो फाइलकेँ पढ़बाक हेतु कंप्युटरमे आवश्यक फॉंट होएब जरूरी अछि, नहि तँ सभसँ सरल उपाय अछि, शब्द-संसाधकमे बनल लेख (वर्ड डोक्युमेंट) कें पी.डी.एफ. फाइलमे परिवर्त्तित करब । एहिमे नफा नुकसान दुनू अछि । नफा जे बिना कोनो फांटक झंझटिक पी.डी.एफ.फाइल जाइ काँटा/ वर्णमुख/ लिपिमे लिखल गेल अछि, ताहिमे पढ़ल जा सकैत अछि । एकर नुकसान जे जखने फाइलमे जा कए सेव एज टेक्स्ट करब तँ अंग्रेजी तँ सेव भए जाएत मुदा

देवनागरी तेहन सेव होएत जे पढ़ि नहि सकी । दोसर यूनीकोडक मंगलमे टाइप कएल लेखकेँ एडोब अक्रोबेटसँ पी.डी.एफ.मे परिवर्त्तित करबामे दिक्कत होअए- एहि फाइलमे कखनो काल घ हलन्त आ ज कखनो काल चतुर्भुज रूपमे नञि पढ़बा योग्य अबैत अछि- तँ संपूर्ण फाइलकेँ खोलि कए सभटा चयन करू, *यूनीवर्सल यूनीकोड एम.एस.* फांट ड्रॉप डाउन मेनूसँ सेलेक्ट करू, फेर प्रिंटमे जा कए प्रिंटर (मुद्रक) एडोब एक्रोबेट सेलेक्ट करू । आब ई फाइल परिवर्त्तित भए जाएत पी. डी. एफ.मे ।

माइक्रोसॉफ्ट वर्डसँ pdf मे परिवर्त्तनक सोझ तरीका अछि- कर्सरसँ फाइल, प्रिंटमे जाऊ, आ फेर प्रिंटरमे एक्रोबेट डिस्टीलर सेलेक्ट कए प्रिंट कमांड दए दिअ । मुदा एहिमे कखनो काल pdf डॉक्युमेंट नहि बनैत छै । तखन प्रिंटर एक्रोबेट डिस्टीलर सेलेक्ट कए प्रोपर्टीज मे जाऊ । ओतए अडोब pdf सेटिंग सेलेक्ट करू । ओतए ऑपशन डू नॉट सेंड फॉन्ट्स टू डिस्टिलर मे टिक लगाएल होएत । ओकरा अनचेक करू । आ से कए बाहर आऊ आ प्रिंट कमांड दिअ । आब pdf डॉक्युमेन्ट बनि जाएत । पी.डी.एफ. स्प्लिटर आ मर्जर सॉफ्टवेयर ( जेना फ्रीवेयर सॉफ्टवेयर पी.डी.एफ. हेल्पर/ सैम) केर मदतिसँ आसानीसँ पी.डी.एफ. फाइल जोड़ि आ तोड़ि सकैत छी।

आब वेबसाइट बनेबाक पूर्व किछु मुख्य बातकेँ देखि लिअ । पाँच तरहक अन्तरजाल गवेषक (इंटरनेट ब्राउजर) अछि, शेष सभटा एकरा सभकेँ आधार बना कए रचित अछि । तखन सभसँ पहिने ई सभटा अपना कंप्युटरमे प्रतिष्ठापित (इंस्टॉल) करू-

१. ओपेरा, २. मोजिल्ला, ३. माइक्रोसॉफ्टक इंटरनेट एक्सप्लोरर (ई तँ होएबे करत), ४. गूगल क्रोम आ ५. एपलक (अखन धरि ई मेकिनटोसक लेल छल आब विन्डो लेल सेहो अछि) सफारी । आब जखन जाल पृष्ठ (वेब पेज) उपारोपित (अपलोड) करब वा पहिनहुँ तँ एहि सभपर खोलि कए अवश्य देखि लिअ ।

देवनागरी लिखबामे बराह आइ.एम.ई. केर योगदान विशिष्ट अछि । एहिमे संस्कृतक उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित केर संगे बिकारी, देवनागरी अंक आ किछु संगीतक स्वरलिपि लिखबाक सुविधा अछि । मंद्र सप्तक, तीव्र आ कोमल स्वरक नोटेशन एहिमे अछि । ऋ,ॠ आ ऌ,ॡ आ ऍ, ऐ अ, ~ हलन्तक बाद जोड़क सुविधा एहिमे छै । अनुदात्त क॒ उदात्त क॑ आ स्वरित क॑ सेहो उपलब्ध अछि । ई विस्टामे सेहो कार्य करैत अछि । आ यूनीकोड फान्टमे रहबाक कारण इंटरनेट पर पठनीय अछि ।

अ सँ ह धरि वर्णमाला अछि । क्ष, त्र ,ज्ञ ओना तँ संयुक्त अक्षर अछि मुदा बच्चेसँ हमरा सभ अ सँ ज्ञ तक वर्णमालाक रूपमे पढ़ने छी । श्र सेहो क्ष, त्र, ज्ञ जेकाँ संयुक्त अक्षर अछि । ज्ञ केर उच्चारण ताहि द्वारे हमरा सभ ग आ

य केर मिश्रण द्वारा करैत छी, से धरि गलत अछि । ई अछि ज आ ञ केर संयुक्त । ऋ केर उच्चारण हमर सभ करैत छी, री । लृ केर उच्चारण करैत छी, ल, र आ ई केर संयुक्त । मुदा ऋ आ लृ स्वयं स्वर अछि, संयुक्ताक्षर नहि । विदेहक आर्काइवमे शुद्ध उच्चारणक आवश्यकताकेँ देखि कए अ सँ ज्ञ तक सभ वर्णक उच्चारण देल गेल अछि । भारतीय अंकक अंतर्राष्ट्रीय रूपक प्रयोगक देवनागरीमे चलन भऽ गेल अछि । भारतीय संविधानक अनुच्छेद ३४३(१) कहैत अछि जे संघक राजकीय प्रयोजनक हेतु प्रयुक्त होमए बला अंकक रूप, भारतीय अंकक अंतर्राष्ट्रीय रूप होएत। मुदा राष्ट्रपति अंकक देवनागरी रूपकेँ सेहो प्राधिकृत कऽ सकैत छथि ।

http://www.bhashaindia.com पर tbil converter सॉफ्टवेयर डाउनलोड करू । मंगल फॉन्टमे आन फॉन्टसँ परिवर्त्तन करबाक अछि तँ डॉक्युमेन्ट .doc चयन करू इनपुट भाषामे हिन्दी आ ascii फॉन्टमे सम्बन्धित फॉन्ट चयन करू । आउटपुटमे भाषा हिन्दी आ फॉन्ट Unicode mangal चयन करू । आब ब्राउज कऽ कए फाइल सेलेक्ट करू । अहाँक कम्प्युटर मे ऑफिस २००७ अछि आ वर्ड डॉक्युमेन्ट .docx एक्सटेंशन अछि, तखन एक्सटेंशनकेँ रिनेम करू .doc । आब ब्राउजमे डॉक्युमेन्ट आबि जाएत । अहाँक कम्प्युटर मे ऑफिस २००७ नहि अछि तखन रिनेम केलासँ कोनो फाएदा नहि । आब कंवर्ट क्लिक करू । नूतन फाइल Unicode Mangal फॉन्टमे बनि जाएत । अहाँक शब्द संसाधक सञ्चिका (वर्ड डॉक्युमेन्ट फाइल) मे यूनीकोड आ ascii वर्णमुख (फॉन्ट) मिलल अछि, तखन अंदाजीसँ ascii वा बेशी प्रयुक्त होएबला ascii केर चयन करू । कंवर्ट क्लिक करू कन्वर्ट भऽ जाएत यूनीकोड मंगल वर्णमुखमे।

जालस्थल निर्माण

पहिने कोनो ऑनलाइन प्रतिष्ठित संस्थासँ प्रदेश नाम (डोमेन नेम) कीनू । उदाहरणस्वरूप रिडिफ डॉट कॉम पर जाऊ आ रिडिफ होस्टिंगपर क्लिक करू । ओतए बुक यूअर डोमेन पर जा कए इच्छित नाम टिक कए देखू जे ओ उपलब्ध अछि आकि नहि । अहाँ अपन जालस्थलक हेतु उपयुक्त डोमेन नेम क्रेडिट कार्डसँ ऑनलाइन कीनि सकैत छी । ई सस्ता छै, दस डॉलर प्रतिवर्ष एकर अधिकतम मूल्य छै । तकरा बाद जालोद्वहन सेवा (वेब होस्टिंग सर्विस) केर लिंकपर जाऊ । ५ वा दस साल लेल १०० एम.बी. स्थानक संग जालोद्वहन सेवा लिअ आ एकरा संग माय एस.क्यू.एल. सेवा मुफ्त छै मुदा ओहिमे लाइनेक्सपर काज करए पड़त जे कनेक कठिनाह/ तकनीकी भए सकैत अछि, से माइक्रोसॉफ्ट एस.क्यू.एल. सेवा किछु आर पाइ लगा कए अहाँ कीनि सकैत छी । आब अहाँ लग २० एम. बी. केर एस.क्यू.एल. दत्तनिधि (डाटाबेस) आ ८० एम.बी.केर साइट लेल जगह बाँचत (माने पूरा १०० एम.बी.) आ से पर्याप्त

अछि। आर स्पेसक जोगार मँगनीमे भए जाएत, तकर चरचा आगाँ होएत। माइक्रोसॉफ्ट एस.क्यू.एल. सेवा लेबाक उपरान्त अहाँ अपन माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल सञ्चिका ओतए चढ़ा सकैत छी आ तकर उपयोग अपन जालस्थलपर एकटा मध्यस्थ (इन्टरफेस) बना कए अहाँ कए सकैत छी ।

आब जालस्थल (वेबसाइट) बनेबाक विधिपर विचार करी।

माइक्रोसॉफ्ट फ्रन्टपेज ऑफिस एक्स.पी. क संग अबैत अछि । ऑफिस २००३ मे सेहो ई अलग सँ उपलब्ध अछि ।

फ्रन्टपेजमे बनल-बनाओल वेबसाइट विजार्ड चलाऊ । मोटा-मोटी पाँच पृष्ठक जाल-स्थल बनि जाएत। एहिमे वाम कात राइट क्लिक कए पृष्ठक संख्या बढ़ा सकैत छी । ऊपरमे स्थित थीमसँ अपन इच्छा मोताबिक बनल-बनाओल डिजाइन सेहो लए सकैत छी । साइटक कोनो पृष्ठकेँ अहाँ फोटो एलीमेन्ट द्वारा फोटो गैलरीमे परिवर्तित कए सकैत छी आ ३-४-५-६ स्तम्भमे फोटो सभ सजा सकैत छी । ओहि पृष्ठपर डबल क्लिक कए अपन संगणकसँ फोटोकेँ आनू आ यूनीकोड टाइपराइटर द्वारा वर्णन टंकित करू । पृष्ठ सुरक्षित करबा काल चित्रक गुणवत्ता जे.पी.जी. फोटोमे १ सँ १०० धरि चुनबाक विकल्प छै । जतेक पैघ फाइल चुनब ततेक बेशी जगह छेकत । वाम कात आ नीचाँमे लिंक लेल चिल्ड्रेन सेटिंग विकल्प चयन कएला उत्तर जालस्थलक सभ पृष्ठक सूचना ओतए आबि जाएत । बेशी पृष्ठ भेला उत्तर कोनो पृष्ठक भीतर पृष्ठ सभक श्रृंखला दए सकैत छी । आब अहाँक संगणकमे अहाँक जालस्थल माय डोक्युमेन्ट्स/ माय वेबमे सुरक्षित अछि ।

अपन वेबसाइटक वास्तविक स्वरूप प्रीव्यू विकल्प द्वारा ऊपर वर्णित ५ प्रकारक गवेषकमे देखू । किछु आवश्यक परिवर्तन फ्रन्टपेजपर कएला उत्तर एहि साइटकेँ अपन सर्वरपर उपारोपित कए दियौक। एहि लेल फाइलजिला डॉट कॉम पर जाऊ जे मुफ्त तंत्रांश उपलब्ध करबैत अछि । एतए क्लाइन्ट आ सर्वर मे सँ क्लाइन्ट विकल्प चुनू आ तंत्रांश अपन कम्प्यूटरमे प्रतिष्ठापित करू । एकरा बाद यूजर नेम आ पासवर्ड दिअ आ एफ.टी.पी. डॉट डोमेन नेम पर पूर्ण जालस्थल वितरक (सर्वर) केर मूल फोल्डरमे उपारोपित कए दिअ। अहाँक जालस्थल अन्तर्जालपर नियत जालस्थल पतापर देखाइ पड़ए लागत।

अपन दत्तसंग्रह कोनो तन्त्रांश जेना ई.एम.एस. एस.क्यू.एल.मैनेजर केर माध्यमसँ अपन वितरकपर चढ़ाऊ आ एहि लेल अपन सेवा प्रदातासँ दूरभाषपर गप कए किछु विशेष जानकारी लिअ। सभटा सामग्री चढ़ि गेलाक बाद, अपन जालस्थलक पृष्ठपर बनाओल मध्यस्थ पृष्ठपर एच.टी.एम.एल.कोडमे यूजर नेम आ पासवर्ड देनाइ नहि बिसरू।

कोनो पृष्ठपर संगीत अनबाक लेल कम्प्यूटरसँ ओहि पृष्ठपर संगीतक सञ्चिका आयात करू, मुदा आइ काल्हि मात्र ओपेरा आ इन्टरनेट एक्सप्लोररपर (फ्रन्टपेजसँ बनल जालस्थलमे) संगीत बजैत अछि।

*आब किछु गप पृष्ठ शैली (स्टाइल शीट) पर।*

अहाँ सम्पूर्ण जालस्थलक डिजाइन जे एक्के रंगक राखए चाही तँ एहि लेल सभ पृष्ठमे एकर विधिलेख *.css डिजाइन बनाकए* दए दियौक आ एकटा फोल्डरमे डिजाइन राखि दियौक। एहिमे पृष्ठभूमिमे बाजए बला संगीत सेहो रहि सकैत अछि । एहिसँ ई फाएदा अछि जे सभ पृष्ठ खुजबा काल फेरसँ तागति नहि लगबए पड़त मात्र एक बेर डिजाइन आ संगीत खुजबामे जे समय लागत सएह टा। दोसर पृष्ठपर जे लिखित अंश वा फोटो आदि रहत ताहिमे जतेक देरी लागत सएह अतिरिक्त समय मात्र लागत। माने अहाँक जालस्थल हल्लुक भए जाएत आ जल्दीसँ खुजत।

आब आर.एस.एस.फीडक विषयमे जानकारी ली।

जालस्थल तँ बनि गेल आब एकर प्रचार प्रसार सेहो होएबाक चाही। आर.एस.एस. फीड अछि रिअल सिम्पल सिन्डिकेशन फीड केर संक्षिप्त रूप। एकटा वा कैक टा .xml फाइल बना कए अहाँ अपन वितरकपर चढ़ा दियौक। तकर बाद ई एक तरहेँ जालस्थलक नक्शा बना दैत अछि आ जखने एहिमे कोनो परिवर्तन अबैत छै तँ फीड-रीडर/ एग्रीगेटरकेँ जालस्थलपर नव सामग्री अएबाक सूचना भेटि जाइत छै। एहिमेमे मुख्य घटनाक/ लेखादिक सारांश रहैत छै जे लिंकसँ जुड़ल रहैत अछि। ओहि लिंककेँ क्लिक केला उत्तर अहाँ विस्तृत जानकारी प्राप्त कए सकैत छी। .xml युक्त पृष्ठकेँ जालवृत्त (ब्लॉग) पर ऐड गाडजेट/ फीड/ मे पता रूपमे लिखि कए ५ सँ २० धरि नूतन सामग्रीक (क्रमशः गूगल आ वर्डप्रेस ब्लॉगमे) अद्यतन जानकारी लेल जालवृत्त (ब्लॉग) पर राखल जा सकैत अछि। एकर आर उपयोग छै जेना फीडबर्नर केर माध्यमसँ ई-पत्र द्वारा सदस्यकेँ सूचना देब, हेडलाइन एनीमेटर जालस्थल/ जालवृत्तपर लगाएब/ ई-पत्र द्वारा इच्छित सामग्रीक लिंक संगीकेँ पठाएब आ गवेषक वा फीड/ न्यूज रीडरक माध्यमसँ पढ़ब।

तकर बाद अपन जालस्थकेँ गूगल, याहूसर्च, लाइव सर्च आ आस्क डॉट कॉमपर *सबमिट युअर साइट* केर अन्तर्गत दए दियौक जाहिसँ ई सभ अन्वेषण यन्त्र अहाँक साइटकेँ ताकि सकए। .xml फाइलबला विश्वव्यापी अन्तर्जाल पता/ संकेत तकबामे एहि यन्त्र सभकेँ आर सुविधा होएतैक, से अहाँक साइटक मुफत प्रचार होएत। .xml फाइल .htm केर स्थान लेत से नहि छै, मुदा एहिसँ फीड एग्रीगेटर/ अन्वेषण यन्त्र सभकेँ जालस्थलपर नव सामग्री तकबामे सुविधा होइत छै। जखन अहाँक जालस्थलमे परिवर्तन आबए तँ अपन मूल .xml फाइलकेँ परिवर्तित कए वितरकपर चढ़ाऊ, शेष कार्य फीड एग्रीगेटर/ अन्वेषण यन्त्र स्वयं कए लेत। अहाँक अन्तर्जाल गवेषक सेहो साइटमे फीड रहला उत्तर विकल्प चुनलाक बाद जालस्थलक पृष्ठकेँ रिफ्रेश कए लैत अछि, कारण कखनो काल कऽ टेम्परोरी फाइल संगणकमे रहने पुरनके सामग्री इन्टरनेटपर देखाओल जाइत रहैत अछि। मुदा एहि लेल सभ पृष्ठमे एकटा कूट-संकेत देमए पड़त।

आब किछु चरचा ४०४ एरर पृष्ठक। अहाँक जालस्थपर कोनो फोटो/ लिंक जे पहिने छल मुदा आब नहि अछि केँ टाइप कएला उत्तर ४०४ एरर संकेत अन्तर्जाल गवेषक दैत अछि। अपन सेवा प्रदातासँ कन्फ्युगरेशन सम्बन्धी जानकारी लऽ कए अपन जालस्थलक स्टाइल सीटक हिसाबसँ एरर पृष्ठ बनाऊ, जतए किछु व्यक्तिगत संदेश जेना- अहाँ द्वारा ताकल सामग्री आब उपलब्ध नहि अछि- केर संग जालस्थलक दोसर लिंक सभ राखू। मुदा एकर ध्यान राखू जे एहि पृष्ठपर एहन कूटसंकेत रहए जाहिसँ अन्वेषण यन्त्र ओकरा सर्च नहि करए।

अपन जालस्थलपर girgit.chitthajagat.in वा google translate गाडजेट राखि सकैत छी जाहिसँ मैथिलीक सामग्री दोसर लिपि/भाषा सभमे एक क्लिकमे परिवर्तित भए जाए।

साइटक प्रचार अपन ब्लॉग/ ग्रुप बना कए आ ऑनलाइन कमेन्ट सबमिशन लेल सेवा प्रदातासँ डॉट नेट सुविधा लिअ-जाहिसँ वितरक अहाँक ई-पत्र संकेतपर पाठकक कमेन्ट प्रेषित कए सकए। आ एहिसँ फीड एग्रीगेटरमे अपन फीड पंजीकृत कराए पाठकक संख्या बढ़ाओल जा सकैत अछि। कमेन्ट सबमिशन टाइपपैड डॉट कॉम (पेड ब्लॉगर सेवा प्रदाता) सँ सेहो प्राप्त कएल जा सकैत अछि, ई ब्लॉग लेल तँ पाइ लैत अछि मुदा प्रोफाइल बनबए लेल नहि आ ओहि संगे ब्लॉग आ साइट लेल कमेंट फॉर्मक कोड आ सुविधा दुनू उपलब्ध करबैत अछि, एहिमे अहाँ जालस्थलपर कमेंटक एक पृष्ठपर संख्या, कमेंटपर परस्पर वार्तालाप, आ कमेंट मॉडेरेशन विकल्प चुनि सकैत छी।

अपन जालस्थलक आर्काइव लेल गूगल साइट आ वर्डप्रेस १० आ ३ जी.बी. क्रमशः स्थान मुफ्त दैत अछि। फाइल ओतए अपलोड करू मुदा अपन साइटपर ओकर लिंक दए दियौक। एहिसँ अहाँ अपन बजट ठीक कए सकैत छी।

ब्लॉगक यू.आर.एल. यदि नीक नहि लागए तँ मोनमाफिक यू.आर.एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर उपलब्ध अछि, मुदा ब्लॉगक सुविधाक अतिरिक्त कोनो आर सुविधा एहिसँ नहि भेटत। मुदा जे अहाँक बजट बहुत कम अछि तँ एकर उपयोग करू।

अहाँ लग जे पूर्ण साइट अछि तँ ओकर एकटा पृष्ठ पर एफ.टी.पी. अपलोडसँ डिसकसन फोरम आदि अपन साइटक ऊपर राखि सकैत छी आ ब्लॉगकेँ अपन साइटमे सम्मिलित कए सकैत छी। ब्लॉगरक भीतर प्रकाशनक अन्तर्गत यू.आर.एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर आ एफ.टी.पी. अपलोड ई दुनू सुविधा उपलब्ध छै।

आब चरचा फेव आइकनक। अपन लोगो ब्राउजरक पताक संग देबाक लेल .ico प्रारूपमे लोगोक चित्र बनाऊ आ अपलोड करू, संगमे स्टाइलसीटपर एकर विवरण दए दियौक। ब्लॉगरक भीतर प्रकाशनक अन्तर्गत यू.आर.एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर गूगलसं लेब, तँ ओहिमे फेव आइकॉन गूगल बला देखाइ पड़त,

मुदा वर्डप्रेसमे अपन फेव आइकॉन ब्लॉग आ कस्टमाइज्ड डोमेननेम-ब्लॉग दुनू पर दए सकैत छी।

अपन ई-पत्रमे सिगनेचर, माय स्पेस, फेसबुक, ओरकुट, ट्विटर,यू ट्यूब, पिकासा, याहूग्रुप आ गूगलग्रुप केर माध्यमसँ, आर.एस.एस.फीड आ हेडलाइन एनीमेटर जे ई-पत्र सिगनेचरमे सेहो राखल जा सकैत अछि केर माध्यमसँ सेहो एकर प्रचार कए सकैत छी।

गूगल एनेलेटिक्स आ वेबमास्टर टूलक सेहो उपयोग करू। एनेलेटिक्सक ट्रैकर कोड सभ पृष्ठपर दिअ जाहिसँ प्रतिदिन कतएसँ के आ कोना अहाँक जालस्थलपर अएलाह, तकर जानकारी भेटि सकत आ वेबमास्टर टूलसँ जालस्थल वेरीफाइ करू आ .xml फाइल सबमिट करू।

यदि कोनो पृष्ठपर कोनो फोटो/ लिंककेँ दोसर टैब/ गवेषकमे खोलए चाही तँ टारगेट फ्रेम/ न्यू विन्डो-ब्लैंक चुनू।

पी.डी.एफ.सँ सेव एज टेक्स्ट केलापर देवनागरी रूप यूनीकोडमे आ कखनो काल आनोमे नहि सेव होइत छै। यूनीनागरीमे पी.डी.एफ.सँ कॉपी कए पेस्ट केलासँ देवनागरी रूप आबि जाइत छै, आस्की कन्वर्टरक सहायतासँ पी.डी.एफसँ यूनीकोडमे सेहो बदलैत छै, मुदा प्रारूपण खतम भए जाइत छै।

फन्ट कन्वर्टरमे SIL कन्वर्टर एहन टूल अछि जाहिमे प्रारूपण खतम नहि होइत अछि आ ई अछियो फ्री तन्त्रांश।

सी-डैक पुणेक अओजार आ फान्ट सेहो छै मुदा ओहिसँ विशेष लाभ परिलक्षित नहि भए रहल अछि, उनटे बहुत रास दिक्कत जेना ''द् ध'' आ ''ग् र'' क्रमशः द्ध आ ग्र केर बदलामे देखबामे आओत।

विदेह ई-पत्रिका http://www.videha.co.in/ पर ऑनलाइन यूनीकोड टाइपराइटर उपलब्ध अछि। विशेष दिक्कत भेलापर/ वा एकर ऑफलाइन रूप हमरासँ ggajendra@videha.com पर ई-मेल कए मँगबा सकैत छी/ दोसर जानकारी पूछि सकैत छी।

# लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

**लो**रिक गाथामे नहि तँ कोनो इतिहास प्रसिद्ध राजाक नाम आ नहिये लोरिकक जन्म आकि विवाहक तिथिक चरचा अछि। भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित अछि। लोरिकक जन्म-स्थान गौरा गाम अछि आ कार्य-कर्म क्षेत्र पंजाबसँ नेपाल आ बंगाल धरि अछि। सासुर अगोरी गाम अछि जे सोन धारक कातमे बताओल गेल अछि।

लोरिकक विवाह- पहिल विवाह अगोरी गामक मंजरीसँ दोसर बियाह चनमासँ जकरासँ चनरैता नाम्ना पुत्र। तेसर बियाह हरदीगढ़क जादूगरनी जमुनी बनियाइनसँ जाहिसँ बोसारख नाम्ना पुत्र।

वीर लोरिकक भाए सँवरू सेहो वीर। ओ कोल राजा देवसिया द्वारा मारल गेलाह। बादमे लोरिक सेहो युद्ध करैत घायल भऽ जाइत छथि आ बोहा बथानपर लोरिकक बेटा भोरिक देवसियाकेँ पराजित करैत अछि। लोरिक बूढ़ भेलापर अग्नि समाधि लैत छथि।

लोरिकक कथा- साबौरक जन्म आ लोरिक अवतार, सँवरूक विवाह, माँजैरक जन्म, लोरिक-माँजैर विवाह आ राजा मौलागत आ निरमलियासँ युद्ध, सँवरू आ सतियाक विवाह, झिमली-लोरिक युद्ध, चनैनिया-शिवहर विवाह आ लोरिक-बेंठा चमारक युद्ध। एहि गाथामे लोरिक-चनमा प्रेम आ हरदीगढ़ प्रस्थान आ राजा रणपाल आ महिपतसँ लोरिकक युद्ध। लोरिक आ चनमाक हरदीगढ़मे निवास, लोरिक गजभिमला युद्ध, नेऊरपुरक चढ़ाइ आ लोरिक-हरेबा-बरेबा युद्ध, संवरू आ कोल युद्धमे सँवरूक मृत्यु, लोरिकक बोहा बथान आगमन, पीपरीगढ़क चढ़ाई आ लोरिक आ देवसिया युद्ध, लोरिकक देहत्याग आ भोरिकक नेतृत्व। पिपरीक पहिल लड़ाइ सँवरूक संग, पिपरीक दोसर लड़ाइ लोरिकक संग भेल। फेर लोरिकक काशीवास आ मृत्यु होइत छन्हि।

*लोरिक मनुआर गाथाक धार्मिक सामाजिक आ राजनीतिक पक्ष :*

लोरिक अज्ञात नाम गोत्रसँ उत्पन्न। यादव जाति अपन पूज्य लोरिकक सम्मान छाँक पूजासँ करैत छथि आ लोकदेव, लोकनायक रूपेँ सम्मान दैत छथि।

लोरिकायनक मैथिली स्वरूप पुरातत्ववेता अलेक्जेन्डर कनिंघमक संकलनमे अछि। क्वार्टरली जर्नल ऑफ द मीथिक सोसाइटी (भाग-५, पृ.१२२ सँ १३५) मे भागलपुरक लोरिकायनक चरचा। आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट खण्ड १६ (१८८३

ई.) पृ.२७-२८ मे कनिँघमक यात्रा वृत्तान्तमे लोरिक आ सेउहर वा सरिकका नाम्ना दू टा पड़ोसी राजाकेँ गौरा गामक निवासी कहल गेल अछि।

भागलपुर गजेटियर (पृ.४८-५०) मे जॉन हन्टर लोरिक विषयक रिपोर्ट देने छथि।

लोरिक गाथा लोरिकायन, लोरिकी आ लोरिक मनिआर नामसँ प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे एकर प्रशस्ति लोरिक मनिआर नामसँ अछि।

लोरिकक नैतक (बेटाक बेटा) नाम इन्दल रहए। मैथिलीक लोरिक मनिआरमे लोरिकक विवाह प्रसंग आ लोरिकक कनियाँ तकबासँ लऽ राजा सहदेवसँ युद्ध केर विस्तृत चरचा अछि।

महुअरि खण्डमे गजभीमलक अखाड़ा जएबाक लेल घोड़ा चुनब आ गजभीमलकेँ पटकि-पटकि कऽ मारबाक वर्णन।

लोरिक द्वारा हरबा-बरबाक वध।

एहि गाथाक प्रारम्भमे सुमिरन आ बन्हन होइत अछि।

सुमिरन- इनती करै छी दुरुगा मिनती तोहार।

बन्हन- आ-दुरुगा गइ पुरुब खण्ड हे गइ

फेर:

१. विवाह खण्ड, २. महुअरि खण्ड, ३. युद्ध खण्ड

मणिपद्मजीक विवरण- १. जन्म खण्ड, २. सती माँजरि खण्ड, ३. चनैन खण्ड, ४. रणखण्ड, ५. सावर खण्ड, ६. बाजिल खण्ड, ७. सझौती खण्ड आ ८. नेपालसँ प्राप्त भैरवी खण्ड।

-गौरा गामक बुढ़कूवा राउत- तारक गाछक झठहा बनबैत रहथि। ५-७ सय पहलमानकेँ पीठपर लादि चौदह कोस टहलि आबथि। मुदा घर-घरारी किछुओ नहि छलन्हि। दू टा पुत्र लोरिक मनिआर आ साओद सरदार छलन्हि।

-अगौरीक मुखिया सेवाचन राउतक अस्सी गजक धोती आ बावन गजक मुरेठा- तेतलिया घोड़ा छलन्हि। पुत्री छलखिन्ह माँजरि जे सात सय संगी संगे सुपती-मौनी खेलाइत रहथि। ओकर बियाह लेल सेवाचन बुढ़कूबाक ओतय लोरिकसँ अखड़हापर भिरल- छप्पन मोन माटिसँ तरहत्थी मलनिहार सेवाचनकेँ लोरिक टालि-गुल्ली जेकाँ ऊपर फेकि देलक आ गेन जेकाँ लोकि कए काँख तर दबा लेलक।

बियाह दिन राजा उगरा पमार द्वारा बूढ़कूबाकेँ पकड़बाक प्रयास, मुदा बूढ़कूबा भकुला पहलमानक गरदनि काटि लेलक। विवाह सम्पन्न भेल। राजा उगरा पमार सनिका-मनिकाकेँ बजेलक- लोरिक सनिका-मनिकाक मूड़ी काटि लेलक। गौरा घुमैत काल हरदीक राजा सहदेवक आक्रमण, लोरिक सहदेवकेँ हरा कए ओकर

पुत्री चनाइकेँ महीचनक आँगन लऽ जाए विवाह कएल। तखन राजा महुअरि महीचनकेँ कारामे दऽ देलक मुदा फेर लोरिकसँ डरा कए छोड़ि देलक। मुदा सिलहट अखड़हाक सरदार गजभीमलकेँ पठाओल। मुदा लोरिक ओकर मूड़ी काटि लेलक आ फेर राजासँ मित्रता भेल। दुनू मिलि राजा हरबा-बरबासँ युद्ध कएलक। हरबा-बरबा भागल मुदा धुथरा पहलमानकेँ पठाओल- लोरिक ओकर दहिना आँखि निकालि ओकर जीह काटि लेलक। हरबा-बरबाक पुनः आक्रमण आ पलायन मुदा फेर भागिन कुमर अनार- लोरिक मूड़ी काटि हरबा-बरबाक रानी पद्मा लग ओकर मूड़ी फेकलक। फेर हरबा-बरबाक आक्रमण-डिहुलीक रणक्षेत्रमे हावीगढ़क राजा हरबा-बरबाक मूडी काटि राजप्रसादक अन्तःपुरमे फेकलक। लोरिक छत्तीस टा युद्ध कएलन्हि। लोरिक कृषिक विकासमे सजग छलाह। कारण -दोसराक भूमिक अधिग्रहण कए बहुसंख्यक चिड़ँइ, जानवर आ कीट-पतंग उजड़ि गेल आ ओ सभ इन्द्र लग गेल- ई वर्णन अछि।

-समाजक सीढ़ीक आइ-काल्हिक नीचाँक वर्ग आ नारी समाजक शक्तिक विस्तार, आध्यात्मिक आ लौकिक अर्थ दुनू तरहेँ।

- सामाजिक सीढ़ीक विभिन्न स्तरक जातिक अन्तर्विरोध, आइ-काल्हिक तथाकथित निम्न जातिक दुराचारी पात्रक विनाश लोरिक द्वारा। लोरिकक भगवतीपर भक्ति छल ओकर विजयक कारण।

मुदा लोरिकक शत्रुमे तथाकथित सामाजिक सीढ़ीपर ऊँच स्थान प्राप्त मोचनि आ गजभीमल छल तँ मित्रमे सेहो राजल सन सामाजिक सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँ जातिक।

हरबा राजाक चपेटसँ दुहबी-सुहबी ब्राह्मणी आ गांगे क्षत्रीक मुक्ति।

उघरा पँवार, हरबा-बरबा, सोनिका, मनिका, बंठा, कोल्हमकड़ा, करना सभ जातीय सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँक पात्र राजा छथि। मातृदेवीक उपासना, इन्द्रक पत्नीक दुर्गाक भेष बदलि आएब आ लोरिक द्वारा हुनका पत्नी बूझि छूबाक उपरान्त पीड़ा। लोरिक माँजरिक मिलन काशी-प्रयाण।

-गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से यादव जातिक अतिरिक्त आनो श्रोता। सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध, श्रवणीय, कथाक अनायास अलंकरण, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्दबद्ध, नाट्य-संधि आ संध्यांगक योजना आ वस्तु निर्देशक अभाव। वस्तु संगठन सुगठित नहि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन, ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा, जातीय अस्मिताक प्रतीक। कथा-गायक आशु कवि होइत छथि-एकटा अस्थिपञ्जर अवश्य रहैत अछि मुदा ताहिपर अपन हिसाबसँ ओ गबैत छथि। शब्दशः ओ कण्ठस्थ नहि करैत छथि। प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि। घण्टासँ ऊपर

गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि गायनमे। निरक्षर मुदा कोनो साक्षरसँ बेशी ज्ञान भण्डार। लोरिक मनुआरमे श्रोताक संख्या, तन्मयता आ एकाग्रचित्तताक प्रभाव कथा-गायकक कथा वाचनपर पड़ैत अछि कारण ई श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि। एहि अर्थेँ सल्हेसक कथावाचकसँ हिनकापर बेशी बाह्य प्रभाव पड़ैत छन्हि। सल्हेस गाथा श्रोताक समक्ष नहि वरन आराध्य देवक समक्ष वाचन कएल जाइत अछि।

गाथाक मूल कथा ओना तँ मोटा-मोटी समान रहैत अछि, मुदा प्रस्तुतिकरण, विशिष्ट समाज, क्रियाकलाप आ सामाजिक मर्यादाक कारण विशिष्ट।

युद्ध,द्यूत,प्रेम आ विवाह-सांस्कृतिक तत्व सभ महाकाव्यमे, द्यूत मानसिक युद्ध-द्यूतमे मनुक्खकेँ बाजी लगाएब, महाभारतमे आ लोरिकायनमे।

दुर्गा देवी द्वारा युद्धमे नायकक सहायता, चनैनक शिवधरकेँ छोड़ि लोरिक संग उढ़रि जाएब, दुसाध जातिक महपतियासँ लोरिकक जुआ खेलाएब आ लोरिक द्वारा चनैनकेँ जुआमे हारब-चनैन द्वारा प्रतिवाद-गहना गुरिया दाँवपर, चनैनक अश्लील हाव-भावसँ महपतियाक ध्यान बँटब आ लोरिकक जीतब। लोरिक द्वारा ओकर मूड़ी काटब। पति द्वारा अनुचित कएल जएबाक उपरान्तो पत्नी द्वारा बुझाएब।

*लोरिकक अवतारवाद आ रहस्य*

क्रोध-प्रेम दुनूमे गारि उन्मुक्त सांस्कृतिक काव्य चरित्र। प्रकृतिकेँ नुकाओल नहि गेल। नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

शिव-शक्तिक पूजा, महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जे लोरिक मनुआर गायकक उदार आ सहिष्णु चरित्रकेँ देखबैत अछि। प्रस्तुति क्षमता आ ज्ञान क्षेत्र हिनका अनक्षर कहबासँ हमरा रोकैत अछि।

धार्मिक विश्वास, नायकक चरित्र आ सामाजिक आचार। जीवन-संस्कृति दृढ़तापूर्वक, महाकाव्यक अधिकांश लक्षण जेना रस, छंद, गुण, अलंकार, सर्गक ध्यान, व्यवहृत धार्मिक मूल्य, संस्कृतिक सम्पूर्णता, सृजन-क्षमता(गायकक)।

लोकगाथा-नाचक फील्डवर्क-कथ्यमे बदलनाइ (जेना गारि), अपन संस्कृतिक नैतिक मानदण्डक आधारपर परिवर्तन अक्षम्य, अपनाकेँ ओहि समाजमे रखितहु उद्देश्यपर ध्यान, वाक्य शब्द रचनामे कोनो परिवर्तन नहि होएबाक चाही। तिरिया, गामक रक्षा आ अनाचारीक विनाश-पशुपाल आ कृषिकक समर्थन।

लोरिकक मित्र बंठा चमार, वारू पहरेदार (पासवान), राजल धोबी, लोरिकक भाइ साँवर।

सलहेसक कथा तराइ क्षेत्रक। वन्य जीव आ वनक बेशी वर्णन, वन्यजीव द्वारा सलहेसक सहायता, आखेट आ बलि। सल्हेसक पूजा स्थलपर माटिक घोड़ा राखल जाइत अछि मुदा लोरिकायनमे नहि।

लोरिक मनुआरमे अलौकिक आ रहस्यमय घटना बेशी, वन्य जीवक (बोनमे)संख्या नहि केर बराबर, लोरिकक पात्र अवतारी मुदा विधिवत पूजा नहि।

बाजिल कौआ अधजरुआ गोइठासँ कौल्हमकड़ाक गढ़कँ जरबैत अछि।

-उधरा-पँवारक हाथी-कज्जल गिरि

-लोरिकक कटरा घोड़ा

-सेनापति बरबाक घोड़ा बरछेबा

-बाजिल कौआ

मुदा लोरिक मनुआर महराइ मे ई सभ वन्य नहि वरल पोसुआ अछि।

लोरिकक असली हरदीगढ़ आ प्रसिद्ध कर्मक्षेत्र सहरसा जिलाक हरदीस्थान अछि कारण सुपौलक पूब स्थित हरदीक संग दुर्गास्थान शब्द सम्मिलित अछि। एहि हरदीक संग महीचन्द्र साहू, राजा महबैर, नेऊरपुर (नौहट्टा), गंजेरीपुर (गौरीपुर), खेरदहा (खैरा धार), रहुआ-चन्द्रायन-मैना-गाम, बैराघाट, तिलाबे धार, बैरा गाछी आ महबैरिया गामक चरचा अछि। लोरिक गाथा स्थल बैराघाटसँ प्राप्त पजेबा आ हरदी हाइस्कूलसँ सटल पश्चिम खुदाइमे प्राप्त पजेबामे पाओल समानता एकर व्याख्या करैत अछि।

सुपौल रेलवे स्टेशनपर रेलवे विभागक एकटा बोर्ड लागल अछि- एतएसँ पाँच किलोमीटर पूर्व हरदी दुर्गास्थानमे भगवती दुर्गा आ वीरपुरुष लोरिकक ऐतिहासिक स्थल दर्शनीय अछि।

नौहट्टा लग महर्षि आ ओतए पालीभाषाक शिलालेख- पालवंशीय- हरिद्रागढ़ चौदह कोसमे विस्तृत। तेरहम शताब्दीक 'वर्णरत्नाकर'मे लोरिकक चरचा अछि। वर्णरत्नाकर- द्वितीय कल्लोलमे *लोरिक नाचो*- ई वर्णन । पहिने ई नाच छल आइ-काल्हि गाथा अछि।

नेऊरी दरभंगाक बिरौल प्रखण्डक १३ कि.मी.पूर्व गाम अछि जतए एकटा गढ़ अछि जे राजा लोरिकसँ सम्बन्धित कहल जाइत अछि ।

# मिथिलाक खोज

*ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एहिमे एहि सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेलाह ।—गजेन्द्र ठाकुर*

१. गौरी-शंकर स्थान- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेखक कारणसँ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। ई स्थल एकमात्र पुरातन स्थल अछि जे पूर्ण रूपसँ गामक उत्साही कार्यकर्त्ता लोकनिक सहयोगसँ पूर्ण रूपसँ विकसित अछि। शिवरात्रिमे एहि स्थलक चुहचुही देखबा योग्य रहैत अछि। बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

२. भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतए अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

३. हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्त्ति एतए अछि।

४. पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्त्तिक चारू हाथ भग्न भए गेल अछि।

५. मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

६. अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्त्ति एतए राखल अछि।

७. कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी गामक लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

८. झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

९. पजेबागढ़ वनही टोल- एतए एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नहि अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गाम लग अछि।

१०. मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि।बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि।

११. भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जाहिसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

१२. अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतए बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

१३. बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

१४. असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

१५. जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर नगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

१६. नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि।

१७. लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतए अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

१८. देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिशि खधाइ अछि।

१९. कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जेकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

२०. नौलागढ़- बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२१. मंगलगढ़-बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतए ई गढ़ अछि।

२२. अलौलीगढ़-खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२३. कीचकगढ़-पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

२४. बेनूगढ़-टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२५. वरिजनगढ़-बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२६. गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करिणी अछि।

२७. हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतएसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलएबा काल सीता भेटलि छलीह। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

२८. फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल, जतए सीता फूल लोढ़ैत छलीह।

२९. जनकपुर-बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कए देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

३०. धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। एहिसँ पूब वाणगंगा धार बहैत अछि जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्घाटित भेल छल।

३१. सुग्गा-जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला आएल छलाह- एहि ठाम हुनकर ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल।

३२. सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

३३. कपिलेश्वर-कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

३४. कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतए चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतए उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ अनायासहि नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अएत ।

३५. सिमरदह-थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

३६. सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

३७. मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

३८. कुन्दग्राम:हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाध-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग, गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम, जतए जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतए बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतए नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

३९. चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरड़ी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि।

४०. बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि। ताहि युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतए अछि।

४१. शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

४२. उग्रनाथ-मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पिएलखिन्ह। विद्यापतिक हठ कएला पर एहि स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

४३. उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छलाह। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

४४. उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

४५. भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

४६. चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थान पर ई मन्दिर अछि।

४७. परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

४८. बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि। एतए विद्यापतिक स्मारक सेहो अछि।

४९. मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एहि ठाम भेल छलन्हि।

५०. विक्रमशिला-भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८

व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़ए बला लेल सेहो स्थान एतए निर्मित अछि

५१. मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ–

१. गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २. दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३. रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४. भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६. चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७. सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८. योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल) ९. कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०. राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११. छिनमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२. बनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३. सिधेश्वरी देवी (सरिसव, मधुबनी), १४. देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५. कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा) १६. उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७. कात्यानी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८. पुरन देवी (पूर्णियाँ), १९. काली स्थान (दरभंगा), २०. जैमंगलास्थान (मुंगेर)।

५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी २. कल्याणेश्वर- शिवलिंग ३. गिरिजा-स्थान- शक्ति ४. मटिहानी- विष्णु मन्दिर ५. जालेश्वर- शिवलिंग ६. मनाई- माण्डव ऋषि ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर ८. कंचन वन- कोनो मन्दिर नञि मात्र मनोरम दृश्य ९. पर्वत- पाँच टा पर्वत १०. धनुषा- शिवधनुषक टुकड़ी ११. सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड १२. हरुषाहा- विमलागंगा १३. करुणा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोरम दृश्य १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर १५. जनकपुर।“मिथिलायदयश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी” - मिथिला जतए शत्रुकँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण ।

५३. चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

५४. धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जेकाँ पैघ पाया अछि जाहिमे जे किछु फेकबैक तँ बड़ी काल धरि गोँ-गोँ अबाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेश विकसित भए गेल अछि।

५५. नेऊरी: दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३.किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

५६. दरभंगा कैथोलिक चर्च: १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भए गेल। एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइत अछि।

५७. *सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च* मुजफ्फरपुरमे अछि।

५८. *भिखा सलामी मजार*: गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि।

५९. *दरभंगा टावर मस्जिद* इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

६०. *मकदूम बाबाक मजार*: ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि।

६१. चम्पानगर: भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतए महावीर तीनटा बस्सावास कएने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतए अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकँ समर्पित अछि।

६२. बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र 'एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि।

बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर शिलालेख- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख, एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे कारी पाथरमे कीलित अछि जे निम्न प्रकारसँ अछि:-

बसैटी (अररिया) बिहार, शिव मन्दिरक मिथिलाक्षर शिलालेखक देवनागरी रूपान्तरण।

वंशे सभा समाने सुरगन बिदिते भू सूरस्यावतिर्ना।
राजाभूतकृष्णदेवोनृपति समरसिंहा मिधस्यात्मजातः॥
यस्मिन् राज्याभिषेकं फलयितु मिवतद्भक्तितुष्टोमहेशः।
कैलाशाद् भूगतेद्योप्यधिन सतितरा वैद्यनाथेन नाम्नाः॥
तस्य तनुजः सुकृतिनृपवरौ विश्वनाथ राजा भूत।
विरनारायण राजस्तस्याप्यासीद् सुतस्य॥
नरनारायण राजो नरपति कुल मौलि भूषणम् पुनः।
अर्थिनकल्पद्रूमदूव सुरगन वंसावतंसोत्भूत॥२॥
तस्मादि वैरिकुल सूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तनयो वभूक।
संमोदिता दश दिशो निज कीर्ति चन्द्र ज्योतिस्नेहाभिरार्थ निवहः सुरिवतश्चयेण॥३।।
यद्दानवारि परिवर्द्धित वारि राशि सक्तान्त कीर्ति विमलेन्दु मरिचिकाभिः।
प्रोद्योतिता दशदिशः सतनुज इन्द्रनारायणोस्य कुलभूषण राजराजः॥४॥
तेनच सत्कुल जाता तनया मनबोध शझणिः कृतिनः।
परिणीता बन्धु यन्नैस्त्रिलोचननाद्रि पुत्रीव॥५॥
यस्या प्रतापतरणावुदितेऽपिचिते

चिन्तारजविन्द वनमालभते विकासम
सौहृदय हृदय मकरन्द च उद्येन
तत्रैव यद् गुणगणा मधुपन्ति योगात्॥६॥
यज्ञेवर्देव गणो द्विजाति निवहः सस्तायनत्यादरैः।
दर्दानैपूर्णः मनोरथोऽर्थपरन सन्तितिनिः सज्जना॥७॥
गर्ज्जद वैरि मदान्धवारण चपश्चञ्चःपेतापांकुरौ।
र्वस्याः सर्वदृशेकृतागुण चमेर्मस्याश्च भूमीतने॥८॥
श्री श्री इन्दुमति सतीमतिमती देवी महाराज्ञिका
जाता मैथिल माण्डराऽमिछकुलात् मोधोसरी जानयाः।
दानै कल्पलता मधः कृतवती श्री विष्णु सेवा परा
पातिव्रत्य परायणाच सततं गंगेर सम्पारणी॥९॥
शाकेन्दु नवचन्द्र शैलधरणी संलक्षित फाल्गुने
मासि श्रेष्ठतरे सिताहनि शितेपक्षे द्वितीयायां तिथौ।
भूदेवैर्वर वैदिकेर्म्मठमयं निर्भारय सच्चिनिमिः
तत्रे सेन्दुमति सुरस्य विधित्र प्राण प्रतिष्ठाव्यधात्॥१०॥
सोदरपुर सम्भव राजानुकम्पापजिवनिकृतिनः।
श्री शुभनायस्य कृतिर्मिदं विज्ञेक्षं सत्रन्ततताम्॥११॥

(ऊपरका स्थान सभक चित्र http://www.videha.co.in/favorite.htm एहि लिंकपर उपलब्ध अछि।)

खण्ड-२

उपन्यास

# *सहस्त्रबाढ़नि*

# खण्ड-२ : उपन्यास

## *सहस्रबाढ़नि*

''एक दिन कलितकेँ देखलहुँ जे ठेहुनियाँ मारने आगू जा रहल छथि । आँगनसँ बाहर भेला पर जतए आँकर-पाथर देखलन्हि ततए ठेहुन उठा कऽ, मात्र हाथ आ पएरपर आगू बढए लगलाह'', पत्नीकेँ मोन पड़लन्हि।

''एक दिन हम देखलहुँ जे ओ देबालकेँ पकड़ि कऽ खिड़की पर ठाढ़ हेबाक प्रयासमे छथि । हमरो की फूरल जे चलू आइ छोड़ि दैत छियन्हि। स्वयम प्रयास करताह । दू बेर प्रयासमे ऊपर जाइत-जाइत देवालकेँ पकड़ने-पकड़ने कोच पर खसि गेलाह । हाथ पहुँचबे नहि करन्हि । फेर तेसर बेर जेना फाँगि गेलाह आ हाथ खिड़की पर पहुँचि गेलन्हि आ एकदम्मे ठाढ़ भऽ गेलाह'', झिंगुर बाबूकेँ एकाएकी मोन पड़लन्हि।

''एक दिन हम एक-दू बाजि कऽ हिसाब कऽ रहल छलहुँ । हम बजलहुँ एक तँ ई बजलाह, हूँ । फेर हम बजलहुँ दू तँ ई बजलाह, ऊ । तखन हमरा लागल जे ई तँ हमर नकल उतारि रहल छथि''।

''एक दिन खेत परसँ अएलहुँ आ नहा-सोना भोजन कऽ खखसि रहल छलहुँ। अहाहाऽ केलहुँ तँ लागल जेना कलित सेहो अहाहाऽ केलथि । घुरि कऽ देखलहुँ तँ ओ बैसि कऽ गेंदसँ खेला रहल छलाह । दोसर बेर खखसलहुँ तँ पुनः ई खखसलाह । हम कहलहुँ जे आर किछु नहि, ई हमर नकल कऽ रहल छथि । दलान पर सभ क्यो हँसऽ लागल । फेर तँ जे आबए कहए- कलित ऊहुहूँ, तँ जवाबमे ईहो ऊहूहूँ कहथि, एकटा दोसरे तरीकासँ।''।

जाहि बालककेँ झिंगुरबाबू पहिल-पहिल अन्यमनस्क पड़ल आ मात्र सपनामे हँसैत देखलखिन्ह से तकर बाद ठेहुनिया मारैत, फेर चलैत आब शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कऽ रहल छन्हि । हुनका अखनो मोन पड़ि रहल छलन्हि जे कोना ठेहुनिया दैत काल नेनाक हाथ आगू नहि बढैक आ ओ बेंग जकाँ पाछूसँ सोझे आगू फाँगि जाइत छल । पूरा बेंग जकाँ- अनायासहि ओ हँसि उठलाह ।

पत्नी पूछि देलखिन्ह ''कोन बात पर मुस्की देलहुँ ?'', तँ पहिने तँ ओ ना-नुकुर केलन्हि, फेर सभटा मोनमे सोचल-घुरमल गप कहि देलखिन्ह आ सुनि लेलन्हि । आब तकरा बाद गपसँ गप निकलऽ लागल।

सन् १८८५ ई.। झिंगुर ठाकुरक घरमे एकटा बालकक जन्म भेल रहए ।

ई वर्ष कांग्रेस पार्टीक स्थापनाक कारण बादक समयमे एकटा महत्त्वपूर्ण घटनाक रूपमे वर्णित होमएबला छल । अंग्रेजी राज अपनाकेँ पूर्णरूपसँ स्थापित कऽ चुकल रहए । राजा-रजवाड़ासभ अपनाकेँ अंग्रेजक मित्र बुझवामे गौरवक अनुभव करैत छलाह । शैक्षिक जगतमे कांग्रेस शीघ्रहि उपद्रवी तत्वक रूपमे प्रचारित भए गेल रहए । संस्कृतक रटन्त विद्याक स्वरूप खतम होअएबला छल । सरकारी पद बिना आङ्ल सिखने भेटब असंभव छल । सरकारी पदक तात्पर्य राजा-रजवाड़ाक वसूली कार्यसँ संबंधित आ ओतबहि धरि सीमित छल ।

तखन बालककेँ संस्कृत शिक्षाक मोहसँ दूर राखल गेल । परिवारमे अंग्रेजीक प्रवेश प्रायः नहियेक बराबर छल आ ताहि कारणसँ परिवार एक पीढ़ी पाछू चलि गेल रहए । मुदा झिंगुर बाबू अपन पुत्रक लेल एकटा कलकतियाबाबू मास्टरकेँ राखि शिक्षाक व्यवस्था कएलन्हि । तदुपरांत दरिभङ्गामे एकटा दोसर बंगालीबाबू बालककेँ अंग्रेजीक शिक्षा देलखिन्ह । बालक कलित शनैः शनैः अपन चातुर्यसँ मंत्रमुग्ध करबाक कलामे पारंगत भऽ गेलाह।

''हम जे सुनेलहुँ तखन हिनकर वयस होएतन्हि, छह आकि सात मास''।

''हम जे सुनेलहुँ तखन उमरि कतेक हेतन्हि, बड़ बेसी तँ नौ आकि दस मासक''।

पत्नी सासु-ससुर वा बाहरी सदस्य नहि रहला पर सोझे -'गप सुनलहुँ' आकि ई करू वा ओ करू बजैत छलीह । मुदा सासु-ससुरक सोझाँ बजैत रहथि-सुनैत छथिन्ह, फलना कहैत छलैक । आ फेर झिंगुर बाबू की कम छलाह. ओहो ओहिना गीताक दर्शन- काजक लेल काजक अनुकरणमे उत्तर देथि । मुदा एकांतमे फेर सभ ठीक ।

पुनः मुस्कुरा उठलाह झिंगुर बाबू, ई प्रण मोने-मोन लेलथि जे कलितकेँ एहि जंजालसँ मुक्त करेतथि, ओहो तँ बूझथु जे पिता कोनो पुरान-धुरान लोक नहि छथिन ।

पत्नी पुनः पुछलथिन्ह जे आब कोन बात पर मुस्की छूटल । मुदा एहि बेर झिंगुर बाबू कन्नी काटि गेलाह । मुस्की दैत दलान दिस बहरा गेलाह, ओतए किछु गोटे अखड़ाहाक रख-रखाबक बात कऽ रहल छलाह । भोरहा कातक अखड़ाहाक गपे किछु आर छल । भोरे-भोर सभ तुरियाक बच्चा सभ, जवान -सभ पहुँचि जाइत छल । एकदम गद्दा सन अखड़ाहा, माटि कऽ कोरि आ चूड़ि कऽ बनाएल । बालक कलितकेँ छोड़ि सभ बच्चा ओतए पहुँचैत छल । झिंगुर बाबूकेँ एहि गपपर कचोट होइन्हि तँ आन लोक सभ कहथिन्ह, जे से की कहैत छी । अहाँ हुनका कोनो उद्देश्यक प्राप्ति लेल अपनासँ दूर रखने छी तँ एहिमे कचोट कथीक । एकौरसँ ठाकुर परिवारक मात्र एक घर मेंहथ आएल आ आब ओहिसँ पाँचटा परिवार भऽ गेल अछि । डकही माँछक हिस्सामे एकटा टोलक बराबरी ठकुरपट्टीकेँ भेटि गेल छैक। कलितक तुरियाक बच्चाकेँ लऽ कऽ आठटा परिवार अछि ठकुरपट्टीमे । अखनेसँ बच्चा सभकेँ मान्यता दऽ देल गेल छैक ।

तखने एकौरसँ एकटा समादी अएलाह आ भोजपत्रपर तिरहुतामे लिखल संदेश देलखिन्ह । झिंगुर बाबू अँगनासँ लोटा आ एक डोल पानि हुनका देलखिन्ह आ पत्र पढ़ए लगलाह । प्रायः कोनो उपनयनक हकार छलन्हि ।

'परतापुरक सभागाछी देखि कऽ जाएब, ई आदेशपूर्ण आग्रह झिंगुर बाबू समादीकेँ देलखिन्ह । एकटा पूर्वजसँ मूल-गोत्रक माध्यमसँ जुड़ल दियादक प्रति अनायासहि एकत्वक प्रेरणा भेलन्हि । फेर आँगनमे पत्र पढ़ब प्रारंभ कएलन्हि।

॥श्रीः॥

स्वस्ति हरिवदराध्यश्रीमस्तु झिंगुर ठाकुर पितृचरण कमलेषु इतः श्री गुलाबस्य कोटिशः प्रणामाः संतु । शतं कुशलम् । आगाँ समाचार जे हमर सुपुत्र श्री गड़ेस आ चन्द्रमोहनक उपनयन संस्कारक समाचार सुनबैत हर्षित छी । अहाँक प्रपितामह आ हमर प्रपितामह संगहि पढ़लन्हि । अपन गोत्रीयक समाचार लैत-दैत रहबाक निर्देश हमर पितामह देने गेल छलाह । हर्षक वा शोकक कोनो घटनाक सूचना हमरा गामसँ अहाँक गाम आ अहाँक गामसँ हमरा गाम नहि अएने आ विशेष कऽ अशोचक विचार नहि कएने भविष्यमे अनिष्टक डर अछि । संप्रति अपने पाँचो ठाकुर गुरुजनक तुल्य पाँच पांडवक समान समारोहमे आबि कृतार्थ करी । अहींकेँ अपन ज्येष्ठ पुत्रक आचार्य बनेबाक विचार कएने छी । परतापुरक सभागाछीक पंचकोशीमे अपने सभ गेल छी, तेँ बहुत रास लोक गप-शपक लेल लालायित सेहो छथि । अगला महिनाक प्रथम सोमकेँ ज्योँ आबि जाइ तँ सभ कार्य निरन्तर चलैत रहत । बुधसँ प्रायः प्रारम्भिक कार्य सभ शुरु भऽ जाएत। इति शुभम् ।

बलान धारक कातमे परतापुरक चतरल-चतरल गाछ सभ आ तकर नीचाँ सभागाछी । बलानक धार खूब गहींर आ पूर्ण शांत । ई तँ बादमे हिमालयसँ कोनो पैघ गाछ बलानमे खसल आ पिपराघाट लग सोझ रहलाक बदला टेढ़ भऽ धारकेँ रोकि देलक आ एकटा नव धार कमलाक उत्पत्ति भेल । बलान झंझारपुर दिस आ कमला- मेंहथ, गढ़िया आ नरुआर दिस । बलान गहींर आ शांत, रेतक कतहु पता नहि; मुदा कमला फेनिल, विनाशकारी । बाढ़िक संग रेत कमला आनए लगलीह । ग्रीष्म ऋतुमे बलान अपन पूर्व रूप धेने रहैत छथि, बिना नाहक पार केनाइ कठिन । किंतु एहि मासमे कमलामहारानीकेँ पएरे लोक पार करैत छथि । सभागाछीक सभटा चतरल गाछ बाढ़िक प्रकोपमे सुखा गेल । चारू दिस रेत । आ सभागाछी उपटि गेल । चलि गेल सभटा वैभव सौराठ । झिंगुर बाबूक कालमे परतोपुरक ध्रुवसँ पंचकोशी नापल जाइत छल ।

कलित दरिभङ्गासँ परसू आबि जएताह, तखन हुनका लऽ कऽ एकौर जाएब । बेचारे बहुत दिन तपस्या कएलन्हि । एहि बेर मामा गाम, दीदी गाम सभ ठाम घुमा देबन्हि । सभकेँ मोन लागल छैक।

पिता-पुत्र एकौर पहुँचलाह । ई गाम कोनो तरहेँ आन जकाँ नहि लगलन्हि । जेना जमघट लगला पर शास्त्रार्थक परम्परा रहल अछि, तहिना विद्वतमण्डलीमे विभिन्न विषय पर चर्चा हुअए लागल । चर्चामे अंग्रेजी शासन आ भारतवासीक सैन्य अभियान सेहो रहल । मँगरूबाबू लाल कोट पहिरि कए कतेक लड़ाइ लड़ल छलाह । १८६७-६८ क अबीसीनिया युद्धमे सर चार्ल्स नेपियरक संग कोनाकेँ अभियानमे ओ गेल छलाह, तकर वर्णन विस्तृत रूपमे देबए लगलाह मँगरूबाबू । द्वितीय अफगान-युद्धमे कोना समयक अभावमे सेनाकेँ लालक बदला

मलिछह वर्दी लगबए पड़लैक तकर वर्णन सेहो देलन्हि । यैह वर्दी बादमे खाकी रंगक रूपमे प्रसिद्ध भऽ गेल । एनफील्ड रायफलक खिस्सा जे १८५७ क स्वतंत्रता संग्राममे परिणत भेल, केर बदलामे बेश नमगर स्नाइडर रायफल जे १८८७ मे देल गेल । मँगरू बाबू कांग्रेसक चर्चा सेहो केलन्हि ।ओम्हर झिंगुर बाबू भोज-भातक फेहरिस्ट आ एस्टीमेट बनबए लगलाह । कलित सेहो अपन तुरियाक विद्यार्थी सभक संग मगन भऽ गेलाह । ओहि भीड़मे राजे गामक फन्नू बाबू सेहो आएल छलाह । एकौरमे हुनकर बहिन-बहिनोइ रहैत छलखिन्ह । ताहि द्वारे एतए एनाइ-गेनाइ ओ किछु बेशी करैत छलाह । कलितकँ एहिसँ पहिने ओ नहि देखने रहथि । एकाएक उत्सुकता भेलन्हि आ कलितक विषयमे पूछपाछ केलन्हि । ई जानि जे कलित झिंगुरबाबूक सुपुत्र छथि, क्षणहिमे झिंगुरबाबू लग घुसकि कऽ चलि अएलाह । वार्त्तालापक क्रममे झिंगुर बाबू सँ ईहो पता लगलन्हि जे जमीन्दारीक पर्मानेन्ट सेटलमेन्टक बाद दरिभङ्गा राजकँ वसूलीक लेल परगनाक आधारपर मिथिला क्षेत्रसँ कर वसूलीक अधिकार प्राप्त भेल आ पढ़ाइक बाद कलित कटिहारमे कर वसूलीक कार्यक हेतु जएताह । एम्हर अंग्रेजीक शिक्षा कलित पूर्ण कऽ लेने छलाह । पता लागल जे फन्नू बाबू अपन बचियाक हेतु योग्य वरक ताकिमे छथि । तखन विचार भेल जे परतापुरक सभागाछीमे अगिला महिनामे फन्नू बाबू आबथि आ झिंगुर बाबूकें आतिथ्यक अवसर भेटन्हि । मुदा बीचहिमे दियाद सभ झिंगुर बाबूकँ तेना ने घेरलकन्हि जे कलितक विवाह फन्नू बाबूक बचियासँ ठीक करैत आ भराममे सिद्धांत करेनहि ओ गाम पहुँचलाह । डरो होइन्हि जे कनियाँ ने कतहु रपटा दऽ देथि । मुदा विवाहक बात सुनितहि कनियाँ खुशीसँ बताहि जकाँ भऽ गेलीह । पछिला चारि दिनसँ जतेक गुनधुनी लागल रहन्हि सभटा खतम भऽ गेलन्हि।

पाँव-पैदल किंवा कटही गाड़ी यैह छल यातायातक साधन । महफा सेहो सबारी छल सेहो बेश नक्काशीवला आ भरिगर । वर महफा पर आ बरियातीमे जे युवा रहथि से पएरे । आ जे कनेक उमरिगर रहथि से कटही गाड़ीपर विदा भेलाह । दरबज्जापर स्वागत भेलन्हि । सुगन्धि, फूल, जलपान । ई सभ बरियातीमे किछु गोटेकँ अनसोहाँत लगलन्हि । बरियाती लोकनिक गप्प सरक्का चलैत रहल । शास्त्रार्थ आ चुटुक्का । अँगनामे परिछनि आ विधि-व्यवहार तँ दलान पर गप्पक फूहारि । बीच-बीचमे क्यो आबि कऽ किछु ताकथि-बाजथि आ फेर कतहु जाथि । गहना कतए छैक । घोघट के देथिन्ह । घोघटाही नूआ नहि भेटि रहल अछि । एहिसँ विवाहक क्रम आ प्रगतिक विषयमे बरियाती लोकनिकँ सेहो पता चलैत रहैत छलन्हि। एवम् प्रकारे आँगन आ दरबज्जा दुनू ठाम विवाहक कार्यक्रम भोरक पाँच बजे धरि चलैत रहल । वर आ कनियाँक हाथमे ब्रह्मचारी डोरी बान्हि देल गेल, जे चारि दिन धरि रहत । तकर बाद विवाह पूर्ण भेल ।

विदाइक दिन तका कए झिंगुर बाबू पठेलखिन्ह आ कलित अपन गाम आबि गेलाह । आब हुनकर कटिहार जएबाक तैयारी कएल गेलन्हि । अश्रुपूरित नेत्रसँ माए आ ग्रामीणसँ विदा लेलाक बाद कलित अपन रोजगार पर गेलाह।

कोशीक विभीषिकासँ त्रस्त क्षेत्र होइत कटिहार पहुँचि कऽ कलित अपन काजमे शीघ्रहि पारंगत भऽ गेलाह । काजक अधिकता भेलापर अपन पितियौत भाए आ भातिजकेँ सेहो बजा लेलन्हि। एहि क्षेत्रक लोकक बीचमे थोड़बेक दिनमे अपन प्रतिष्ठा बढ़ा लेलथि कलित । एतए जमीन्दारीक परमानेंट सेटलमेन्टक विषयमे पुरान अनुभव बड़ खराप छल । वसूली पदाधिकारीक भ्रष्ट तरीका सभकेँ कलित बदलि देलखिन्ह । मुदा कालक लग किछु आरे लिखल रहए । कलितक द्विरागमनक पहिनहि हुनकर माए गुजरि गेलखिन्ह । बड्ड रास सौख-मनोरथ लेने चलि गेलीह माए । कखनो कलितकेँ कहैत छलखिन्ह जे तोरा कनियाँसँ खूब झगड़ा करबौक तखन देखबौक जे तूँ हमर पक्ष लैत छँह आकि कनियाँक। आब झिंगुर बाबू सेहो अन्यमनस्क रहए लगलाह । कलित कहबो केलखिन्ह जे सँगहि चलू, मुदा भरि जन्म जतए रहलाह ओहि ठामकेँ छोड़थु कोना ?

तेसर साल कलितक द्विरागमन भेलन्हि आ तकरा बादे झिंगुर बाबू निश्चिंत भऽ सकलाह । जाइत-जाइत कलितकेँ कहैत गेलखिन्ह जे तोँ तँ बेशीकाल गामसँ बाहरे रहलह । हमरा सबहक सेवा तँ ई बुचिया केलक । अपन बहिनक भार आब तोहीँ उठाबह । हम सोचने छलहुँ जे एकर विवाह दान करबाइए कऽ निश्चिंत हएब । मुदा तोहर माए हमरा तोड़ि देलन्हि । आब तूँ अपना जोगर भइए गेल छह । पाँच बरखक बेटा रहैत छैक तखनो लोक केँ लोक कहैत छैक जे अहाँ केँ कोन बातक चिंता अछि, पाँच बरखक बेटा अछि । तूँ तँ आब पढ़ि लिखि कऽ अपन जीवन यापन करैत छह । फेर पुतोहुकेँ बुचियाक हाथ पकड़ा कऽ एहि लोकसँ छुट्टी लेलन्हि झिँगुर बाबू । कलित हुनका एतेक हरबड़ीमे कहियो नहि देखने छलखिन्ह । स्थिर, शांतचित्त आ फलक चिंता केनिहार किसान सेहो अपन जीवन-संगीक संग छुटलाक बाद अधीर भऽ गेल छल ।

कलितकेँ कटिहार घुरलाक बादो एकेटा चिन्ता लागल रहैत छलन्हि । से छल बुचियाक विवाहक । पिताक रहैत ओ कोनो परेशानीसँ चिन्तित नहि होइत छलाह । मुदा हुनका गेलाक बाद आब लोकोकेँ देखेबाक छलन्हि जे क्यो ई नहि

कहए जे बापक गेलाक बाद बहिन पर ध्यान नहि देलन्हि कलित । पिताक बरखी धरि विवाहक प्रश्न उठेबो कोना करितथि । मुदा समय बितबामे कतेक देरी लगैत छैक । पूरा गामक भोज कऽ कलित बुचियाक विवाहक लेल वर ताकएमे लागि गेलाह । परतापुरक सभागाछीमे गेलाह मुदा कोनो वर पसिन्न नहि पड़लन्हि जे बुचियाक हेतु सुयोग्य होअए । पन्द्रह दिनक छुट्टी बेकार गेलन्हि । पुनः कटिहार पहुँचि गेलाह । कार्यक क्रममे गिद्धौर, बाढ़ इत्यादि गंगाक दक्षिण दिसक परिवार सभसँ सेहो परिचय भेलन्हि । ओहिसँ हुनका बाढ़ नगरक लगक गामक एकटा लड़काक विषयमे पता चललन्हि जे गिद्धौर स्टेटमे कार्य कऽ रहल छलाह । चोट्टहि ओ लड़कासँ भेँट करबाक लेल गिद्धौर पहुँचि गेलाह । बालक अत्यंत दिव्य छलाह । पता लऽ बाढ़ पहुँचि कऽ बालकक पितासँ गप केलन्हि । पंचकोशीक कथा कतबा दिनक बाद बाढ़ नगरक लगक एहि क्षेत्रमे आएल छल से एहि कथाकेँ काटब कठिन रहए । सभटा गपशप कऽ पुनः भराममे सिद्धांत करेने मेंहथ पहुँचलाह । बूढ़- पुरान जे क्यो सुनलन्हि से आश्चर्यचकित रहि गेलाह । बढ़ए पूत पिताक धरमे- झिंगुर बाबू जेना कलितक सिद्धांत करेनहि पहुँचल छलाह तहिना कलित केलन्हि, वाह... । कथा ओनातँ दूरगर भेलन्हि, मुदा कलित स्वयम् नेनेसँ दूरदेशक बासी छलाह, ताहि द्वारे हुनका सभ चीजक अनुभव छलन्हि, यैह सोचि सभ संतोष कएलक । पूरा टोल विवाहक तैयारीमे लागि गेल । बुचियाकेँ कोनो दिक्कत नहि होएतैक । सर्वगुण संपन्न अछि बुचिया । गीत-नाद लिअ आकि सराय-कटोरा, दसो हजार महादेव सुगढ़ पातर-पातर छनहिमे बना दैत अछि । जाहि घरमे जाएत तकरा चमका देत ।

विवाह विधि-विधानसँ संपन्न भऽ गेल । वरपक्ष संगहि द्विरागमनक प्रस्ताव राखलन्हि, मुदा कलित तैयार नहि भेलाह, तखन बुचियाक हाथक छाप लऽ कऽ वरपक्षकेँ जाए पड़लन्हि ।

कलितक पत्नी छलीह पूर्ण शुद्धा । बुचियासँ बहिनापा छलन्हि । बुचियो भौजी-भौजी कहैत नहि थकैत छलीह । तेसर साल द्विरागमनक दिन भेलैक । बुचियाक संग जे खबासनी गेल छलीह से आबि कऽ गंगा आ गंगा पारक दृश्यक वर्णन करए लगलीह तँ भाउजक आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलन्हि । कलितसँ कतेक बेर पुछलथिन्ह जे ई बाढ़ छैक कतए । समयक संग सभ किछु सामान्य भऽ जाइत अछि । बुचिया जखन एक-दू बेर अएलथि-गेलथि तखन भाउज आरो निश्चिन्त भऽ गेलीह । एवम् क्रमे कलित पुनः एकाकी भऽ गेलाह । फेर आएल भूकम्प । सन् चौंतीसक भूकम्पमे महादेव पोखरिपर पत्नी आ दुहु पुत्री आ एकटा पुत्रक संग बिताओल रातिक बाद परिवार सहित किछु दिनुका लेल कटिहार गेलाह । कारण छल महिना भरि चलल छोट-छोट भूकंपक तरंग । मुदा पत्नीकेँ घरक पीड़ा सतबए लगलन्हि । घर तँ भूकम्पमे ढहि गेल छलन्हि, से कलित भूमिक ओहि टुकड़ाकेँ छोड़ि गामक फुलवारीक कातमे नव घरक निर्माण

केलन्हि । अपन पुरान डीह अपन दियादकेँ दऽ एहि नबका डीहपर घरहट कएलन्हि । तकरा बाद एकटा पुत्र एवम् एकटा पुत्रीक प्राप्ति आओर भेलन्हि । पुनः एकटा पारिवारिक चक्रक प्रारंभ भऽ गेल ।

अपन बचिया सभ सेहो आब विवाह योग्य लागए लगलन्हि । अपन बच्चा तँ सदिखन बच्चे लगैत छैक मुदा तँ की । पहिल बचियाक विवाह कछबी आ दोसरक खररख करेलखिन्ह । कछबीक परिवार सेहो राज-दरबारक कर्मचारी छलाह । घोड़ा, महफा, चास-बास.....। मुदा बच्चा होएबाक क्रममे कलितक प्रथम पुत्रीक देहांत भऽ गेलन्हि मुदा ओकर ननकिरबी बचि गेल आ ओ मातृके मे रहए लागल । मुदा ओहो पाँचे वर्षक होएत आकि एक दिन पेटमे दर्दक शिकाइत भेलैक आ ओहो भगवानक घर माएक सेवामे चलि गेल । कलित जीवन आ मृत्युक एहि संग्रामकेँ देखैत रहलाह । कहियो गाममे हैजाक प्रकोप पड़ए लागल छल तँ कहियो प्लेग आ की की ? एक गोटाकेँ लोक जरा कऽ आबए तँ दोसर गोटाक मृत्युक समाचार भेटए । मुदा कलितक परिवार अक्षुण्ण रहलन्हि।

कलितक कटिहारमे पदोन्नत्ति आ प्रतिष्ठा बढ़ैत रहलन्हि । भातिज सभ पूर्व रूपेण ओतए रहैत छलन्हि । दुहू पुत्र केजरीवाल हाई स्कूल, झंझारपुरमे पढ़ए लागल छलथिन्ह । कालक मंथर गतिमे कखनो काल गति आबि जाइत अछि । अपन तेसर पुत्रीक विवाह तमुरिया लग आमारूपी गाममे करबा कए कलित जेना निश्चिंत भऽ गेलाह । अपन पैघ पुत्रक विवाह करेलन्हि आ छोट पुत्रक अकादमिक प्रतिभाक प्रति निश्चिन्त भेलाह । मुदा छोट पुत्रक अंधविश्वासी होएबामे सेहो हुनका कोनो संदेह नहि छलन्हि । आ एकर कारण छल जे एक दिन हल्ला उठलैक, जे घनगर चन्ना-गाछीमे, जतए दिनोमे अन्हार रहैत छैक, कोनो गाछक नीचाँ चाटी उठैत छैक । तखन हुनकर ई पुत्र चाटी उठाबए ओतए पहुँचि गेल छलन्हि । से जखन आठम वर्गमे विज्ञान वा कला चुनबाक बेर अएलैक, तखन पुत्रक विज्ञान विषय लेबाक निर्णयमे हाँ मे हाँ मिला देलखिन्ह कलित बाबू । कतेक गोटे कहलखिन्ह जे सत्यनारायण बाबू आ के-के साइंस लऽ फैल कऽ गेलाह, बादमे पुनः आट्‌र्स विषय लेबए पड़लन्हि । मुदा नन्द नहि मानलथि । साइंसोमे गणित लेलन्हि । कलित सोचलथि जे विज्ञान विषय पढ़ि अदृश्यक प्रति स्नेहमे नन्दक रुचि कम हेतन्हि । पता नहि किएक एकर बाद कलित निश्चिंत जकाँ भऽ गेलाह । कटिहारसँ एक बेर गाम आएले रहथि । भोरमे नित्यक्रियासँ निवृत्त भऽ कलित हाथ मटियाबए लेल चिकनी माटिक ढ़ेर दिशि बढ़ि रहल छलाह आकि पता नहि की भेलन्हि, हाथक लोटा दूर फेका गेलन्हि । ओ नीचाँ खसि पड़लाह । कनियाँ दौगल अएलीह । मुदा जीवनक खेल एक बेर भेटैछ आ एक्के बेर चलियो जाइछ । नन्द पिताक मृत्युक साक्षी छलाह । मृत्युक ई प्रकार हुनका लेल सर्वथा नवीन आ सर्वथा रहस्यमयी छल । अदृश्यक शक्ति विज्ञानक सर्वोच्चताकेँ नन्दक जीवनमे दबाबए लागल।

वृत्तक गोलाकार आकृति केंद्रक परिधिमे घुमैत एकटा चक्र पूरा केलक । अदृश्य केंद्रक फाँसमे फँसल । नन्द अपन यशोदा माएक छत्रछायामे बढ़ए लगलाह, उमरियोमे आ पढ़ाइयोमे । अपन शिक्षक लोकनिक प्रिय पात्र भऽ गेलाह नन्द । हुनकर प्रैक्टिकलक कॉपीक साफ-सुथरा रूपक चर्चा सर्वत्र शिकक्षहु वर्गमे होमए लागल । फूल-सन अक्षर हुनकर शारीरिक सौन्दर्यसँ मेल खाइत छल ।

एहि बीच एकटा आर घटना घटित भेल । यशोदा माएक दुहु पुत्र भगवत्ती घरक सोझाँमे नीचाँमे सुतल छलाह । भोरमे माए देखलन्हि जे गहुमन साँप चारि टुकड़ा भेल पड़ल अछि आ बिज्जी बच्चा सभक माथ लग ठाढ़ पहरा दऽ रहल अछि । प्रायः बिज्जीक मारि पड़लैक गहुमनकेँ आ दुहु पुत्र सुरक्षित रहलन्हि यशोदा माएक । नन्द एहि घटनाक स्मृतिक संग आगू बढ़ए लगलाह । बीचमे बँटवारा भेल । घरारी सभ, निकहा खेत सभ सभटा दू-दू टुकड़ा होमए लागल । बाहरी लोक सभ कहैत छल जे दुनू भाएक संग अन्याय भऽ रहल अछि । स्कॉलरशिप प्राप्त कऽ नन्द आर.के.कॉलेज मधुबनीमे अंतर-स्नातक विज्ञानक गणित शाखामे नामांकन लेलन्हि। शुरूमे गणित बुझबामे दिक्कत भेलन्हि तँ रटए लगलाह । गणितकेँ रटबाक बुद्धि ई सोचिकेँ लगेलथि जे बादमे लोक ई नहि कहए, जे की सोचि कऽ विज्ञानक चयन कएलक । मुदा किछु दिनका बाद रटैत क्रममे बुझबामे सेहो आबए लगलन्हि। गामक फुटबॉल मैदानक स्मृतिए शेष रहलन्हि, खेलेबाक अवसरे नहि भेटन्हि । गणितक शिक्षक तीन सए प्रश्नक सेट परीक्षाक पहिने दैत छलखिन्ह आ कहैत छलखिन्ह जे, जे क्यो साठि प्रतिशत प्रश्नक सही-सही उत्तर बना लेताह ओ प्रथम श्रेणीमे निश्चित रूपसँ उत्तीर्ण होएताह । नन्द सत्तरि प्रतिशत प्रश्नक उत्तर तैयार कऽ शिक्षककेँ देखा देलखिन्ह । आशानुरूप बादमे परीक्षाक परिणाम अएलापर प्रथम श्रेणी भेटलन्हि । १९५९ मे इंजीनियरिंगमे नामांकनक हेतु आवेदन दऽ देलखिन्ह । अंकक आधार पर सर्वोच्च अंक अएला उत्तर मुजफ्फरपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजीमे नामांकन लऽ लेलथि । ओहि समय मात्र सिविल इंजीनियरिंग शाखाक पढ़ाई ओहि संस्थानमे होइत छलैक, से ओहि शाखामे नामांकन लऽ धोती-कुर्त्ता पहिरि कऽ ओतए पहुँचि गेलाह । प्रोफेसर दीक्षित साहेब वर्कशॉपक मशीन देखा कहलखिन्ह जे एहिमे धोती फँसि जाएत । से फुलपैंट आ शर्ट पहिरि कऽ आऊ । दू टा फुलपैन्ट आ शर्ट कीनए पड़लन्हि नन्दकेँ । कपड़ा कीनि सिएबितथि तँ ढ़ेर दिन लागि जएतन्हि से रेडीमेड कीनए पड़लन्हि । मुदा गाम जाथि तँ गामसँ दूर बिदेसरे स्थानमे फुलपैन्ट-शर्ट बदलि कऽ धोती कुर्त्ता पहिरि लैत छलाह । कहियो गाम फुलपैंट पहिरि कऽ नहि गेल छलाह । सन् १९५९ सँ १९६३ धरि इंजीनियरिंगक पढ़ाइ चललन्हि आ तखन बिहार सरकारमे इंजीनियरिंग असिसटेंन्ट आ एक सालक बाद १९६४ सँ सहायक अभियन्ताक रूपमे बहाली भेलन्हि ।

इंजीनियरिंग पढ़ाइ विशेष खर्च बला छल से एहि शर्त्तनामाक संग विवाह भेलन्हि जे पढ़ाइक खर्चा ससुर उठेथिन्ह । मुदा गर्मी तातिलमे एक मास आ दुर्गापूजामे पंद्रह दिनक छुट्टी कॉलेजमे रहैत छलैक से एतेक दिनुका पाइ ससुर काटि लैत छलथिन्ह आ सालमे बारह मासक बदला मात्र साढ़े दस महिनाक खर्चा दैत रहथिन्ह । बादमे ज्योँ सासुरक लोक कहियो ई उपराग दैत छलन्हि जे हमही सभ इंजीनियरिंग करबेलहुँ अछि तँ नन्द सेहो हँसि कऽ उपर्युक्त बातक खुलासा कऽ दैत छलखिन्ह । वृत्तक परिधि जेना पैघ भेल जा रहल छल । कालक परिधि पहिने पूर्ण चक्र पूरा कएलक आ आब परिधिक विस्तार शुरु भऽ गेल । दुःख-सुख आ उत्थान-पतनक खिस्सा ।

स्वतंत्रता दिवसक दिनक उमंग, झंडा लऽ कऽ स्कूलक बच्चाक संग १५ अगस्त १९४७ केँ घुमैत छलाह । कांग्रेसक भक्ति संगमे रहलन्हि । मुदा १९६२ क चीनी आक्रमणक बाद भारतीय सेनाक पाछू हटबाक दुःस्वप्न । वायुसेनाक उपयोग नहि करबाक भारतक आश्चर्यजनक निर्णयक बादक मनःस्थिति छल पलायनक आ हारिक । ऑल इंडिया रेडियोक घोषणा जे हमर सेना गर्वसँ पाछू हटि रहल अछि - सुनि नन्दक हृदय रुकि सन जाइन्हि । से जखन १९६५ क युद्धक बेर इंजीनियरक भर्त्ती सेनामे कैप्टनक रूपमे शुरु भेल तखन नन्द आ साहा साहेब आवेदन दऽ देलखिन्ह । साहा साहेबक कनियाँ तँ कानए लगलीह आ साहा साहेबकेँ रुकि जाए पड़लन्हि । नन्दक पत्नी एको बेर प्रतिरोध नहि कएलन्हि । मुदा ओजनमे बेशी भेलासँ छँटा गेलाह नन्द । मसोसि कऽ रहि गेलाह । तकर बाद जे शरीर घटेबाक सूर चढ़लन्हि, से बढ़िते गेलन्हि । एकेटा सपना छलन्हि - गाममे कोठाक घर । से सभटा सर्वे सभक नक्शा ऊपर कऽ घरक कुर्सी देलन्हि जे सड़कमे घरक कोनो भाग नहि जाए । मकानक डिजाइनक मात्र आधे भाग पूरा भऽ सकलन्हि । जतए-जतए ट्रांसफर होइन्हि एकटा नव अनुभव भेटन्हि । ओहि समय कनियाँकेँ तृतीय पुरुषक रूपमे संबोधित करबाक प्रचलन छलैक, मुदा नन्द द्वितीय पुरुषमे संबोधन शुरु केलन्हि । एकर आलोचना होएबाक बदला गाममे आनो लोक सभ ई संबोधन अपना घरमे शुरु करैत जाइत गेलाह । स्थानान्तरणक क्रममे डेहरी-ऑन-सोनमे विकास कार्यमे ग्रामीण आदिवासीक पूर्ण सहयोग भेटलन्हि । कहियो पाइ देखि कऽ अंतरात्मा नहि डिगलन्हि । जी-जानसँ जीप उठा कऽ अपन कार्यकेँ पूर्ण करथि । कखनो जीप तेज होइन्हि तँ मोन पड़न्हि जे कोनो बच्चा ने पिचा जाए । मुदा कहियो कोनो दुर्घटना नहि भेलन्हि । गामक सभ जातिक लोककेँ कतहु ने कतहु मस्टरे रॉल पर नोकरी देलन्हि । स्थानीय लोककेँ सेहो नोकरी करबाक हेतु प्रोत्साहित करैत छलाह । स्थानीय गरीब आदिवासी नन्दकेँ देवता बुझैत छलाह । एतहि दमाक पहिल बेर अटैक भेलन्हि नन्द पर । स्थानीय वैद्य दिन-राति एक कऽ जंगलसँ बीट आनि कऽ देलकन्हि । दमाक इलाज एलोपैथीमे नहि अछि मुदा एहि बूटीक एकमात्र खोराकी सँ अगिला कतेक साल धरि नन्द दमासँ दूर रहलाह । सँगी

सभ भोलेनाथ नाम राखि देलथिन्ह । कतेक कमाइ-धमाइक तरीका सभ सिखेबाक प्रयास सेहो केलखिन्ह । मुदा ग्रामीण जनक लाचारीकेँ ततेक लगसँ देखने छलाह नन्द जे एहि सभ गप दिस ध्यानो नहि जाइत छलन्हि । ताहुमे गरीबीक बादो जे आपकता स्थानीय जनसँ भेटैत छलन्हि, तकरा बाद ? एहि बीच एक पुत्रीक प्राप्ति सेहो भेलन्हि । दोसर बेर पुत्रक प्राप्ति भेलन्हि । पुत्री मामा गाममे जन्म लेलथिन्ह आ पुत्र अपन गाममे । बच्चा सभक स्थितप्रज्ञ भाव, फेर हँसब फेर ठेहुनिया...... बच्चाक बढ़बाक प्रक्रियाक दर्शन ओहिना अछि जेना विश्वक निर्माण ओ ओकर चेतनाक विकास । हुनकर एकटा भातिजक देहांत नेनेमे भऽ गेल रहन्हि आ तकर बाद एहि दुनू बच्चाक प्रति स्थितप्रज्ञताक भाव, सुखमे सुखी नहि आ दु:खमे दुखी नहि क अवतरण भेल नन्दमे । नन्द दिल्ली कोनो ट्रेनिंगमे गेल छलाह । एक राति सपना देखलन्हि जे हुनकर भातिज *नवीन* गाममे फूसक घरक ओसारा पर बैसल छथि । ओ नेना जकरासँ नन्दकेँ बड्ड आपकता छलन्हि, उठि कए खेलाइ लेल जाइत अछि । कनेक कालक बाद पेटमे दर्दक शिकाइत करैत अछि । सभ क्यो जमा भऽ जाइत छथि । बूढ़-पुरान अपन-अपन नुस्खा देबए लगैत छथि । मुदा कनिए कालक बाद बच्चाक मृत्यु भऽ जाइत अछि । नन्दक आँखि खुजि गेलन्हि । हुनका अपन बड़की बहिनक बचिया मोन पड़लन्हि । एहने घटना छल ओहो । बचियाकेँ क्यो बूढ़ी पेट पर हाथ दऽ देने छल आ ओ कनेक कालक बाद संयोगवश पेट दर्दसँ काल कवलित भऽ गेल छलीह । नन्दकेँ अदृश्य, भूत-प्रेत, राकश आ डाइन जोगिन एहि सभपर असीम विश्वास छलन्हि । ई सभ सोचिते ओ जोर-जोरसँ कानए लगलाह । संगी सभ हड़बड़ा कऽ उठैत जाइत गेलाह । जखन सभ समाचार ज्ञात होइत गेलन्हि तँ किछु गोटे कहलखिन्ह जे भातिजक अउरदा बढ़ि गेल । नन्दक मुँह लटकल देखि कऽ क्यो-क्यो हुनक अभियंताक वैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ मोन पाड़ए कहलखिन्ह । मुदा नन्दकेँ बोल-भरोस क्यो नहि दऽ सकलाह । नन्द ट्रेनिंग छोड़ि कऽ सपनेक गपपर गाम बिदा भऽ गेलाह । तेसर दिन गाम पहुँचलाह तँ भैयाकेँ केश कटेने देखि कऽ सशंकित भऽ गेलाह । गामक सीमांतेसँ जे क्यो भेटन्हि से कनेक दु:खी स्वरमे गप करन्हि । आँगन पहुँचलाह तँ माय जोर-जोरसँ कानए लगलीह । सपनाक सभटा गप सत्य बुझेलन्हि, अक्षरशः सत्य । भातिज हुनका केश कटाबए लेल सही समय पर बजा लेलखिन्ह । नवीनक फोटोक पाछाँमे अंग्रेजीमे ओकर जन्मक आ मृत्युक तिथिक संग ओकर तोतरायल बोलीमे काका-कका कहबाक बात फाउंटेन पेनक सियाहीसँ नन्द लिखलन्हि । कोठाक घर बनबाक पहिनहि ओ चल गेलाह, गेलाक बादो मुदा स्वप्नमे काकाकेँ नहकेशक दिन बजा कए ।

पुत्रीक जन्मक बाद कोठाक घरो बननाए शुरु भऽ गेलन्हि । पुत्री जखन पैघ भेलन्हि तँ मोन पाड़बाक क्रममे कहैत छलीह जे घरक कुर्सी पड़बाक लेल जे

खधाइ खुनल गेल छल से बड़ड गँहीर छल । मुदा पिता मोन पाड़थिन्ह जे काका अहाँकेँ हाथसँ पकड़ि कऽ खधाइमे पात सभ साफ करबाक लेल नीचाँ कऽ दैत छलाह, तखन खधाइ बहुत गँहीर कोना भेल । पुत्री बा केर कोरामे एकर समाधानक हेतु पहुँचि जाइत छलीह जे खधाइ तँ बहुत गँहीर बुझाइत छल, तखन ईहो बात सही जे काका हाथेसँ खधाइमे उतारि दैत छलाह । नन्दक माए बच्चा सभक बा भऽ गेलीह । नन्दक पुत्रकेँ बा नन्दक नन्द कहैत छलीह । कखनो गोपाल तँ कखनो राजकुमार कहैत छलीह, ओकर हँसी, आँठिया कारी घनगर केश । बा क कोठाक घर बनि गेलन्हि तँ पेटक दर्द शुरु भेलन्हि । मुदा नन्द एहि बेर अपन घरक पेटक दर्दक दू टा मृत्युकेँ अदृश्यक निर्देशपर होइत देखलाक उत्तर माएकेँ इलाजक हेतु कैक ठाम, एलोपैथिक डाक्टरक लग पैघ-पैघ नगरमे, लऽ गेलाह । डायगनोस भेलन्हि कैंसर नामक दु:खदायी रोग । एहि बीमारीक इलाज रोगोसँ बेशी दुःखदायी छल । रेडियमसँ ट्यूमरकेँ जरेनाइ । बा टूटि गेलीह । पटनेमे मृत्यु भऽ गेलन्हि । ओतहि दाह संस्कार गंगा-तट पर भेलन्हि कारण ओतए मान्यता छल जे गंगा तटपर गाएक बोली जतेक दूर धरि सुनाइ पड़ैत अछि ततेक दूर मगहक क्षेत्र नहि मानल जाइत अछि । तदंतर श्राद्ध कर्म गाममे भेल । बा चलि गेलीह, नन्दक द्वितीय पुत्रक जन्मक पहिनहि । मुदा बा क चरचा घरमे होइते रहल । बा केर फोटो बा केर नाति सभक प्रेरणा श्रोत बनल रहल । जे सपेताक गाछ बा केर श्राद्धमे उसरगल गेल छल तकर आम हुनकर नाति-नातिन नहि खाइत छलन्हि । जे आम खसैत छल से बाबाक सारा पर राखि देल जाइत छल । गोदान आ वैतरणी पार करेबाक विधिमे जे गाएकेँ दागल गेलैक तकरा देखि बा केर दुहु पुत्र प्रण लेलन्हि जे आब ई काज भविष्यमे कहियो नहि कएल जाएत । अपन धैर्यसँ मृत्युसँ पहिने बा अपन परिवारकेँ पुनः अपन पूर्व प्रतिष्ठा आ सरस्वतीक भक्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबामे सक्षम भेलीह ।

मृत्युसँ पहिने बुचिया सेहो बाढ़सँ अपन भौजीकेँ भेंट करए लेल पटना अएलीह । दुनू ननदि आ भौजी पुरान-पुरान गपशपमे अपना- अपनाकेँ बिसरबैत गेलीह । भौजी भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बा आ ननदि भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बुढ़िया दीदी । बुढिया दीदीक खिस्सा बच्चा सभक मध्य बड़ड लोकप्रिय भऽ गेल छल । बृहत्कथाक खिस्सा सन नमगर-कैक रातिमे खतम होअएबला । खिस्सा सुनबाक क्रममे एक बच्चा सुति जाइत छल, फेर ओहिसँ पैघ बच्चा सुतैत रहए आ सभसँ पाछाँ सभसँ पैघ बच्चा सुतैत छल । अगिला राति मारि शुरु, सभसँ पैघ बच्चा कहन्हि जे जतए सँ खतम केलहुँ ततए सँ शुरु करू । ई सभ पहिने सुति गेलथि तँ ई सभ अपन बुझथु । मुदा बुढ़ियो दीदी कम नहि छलीह । अपन खिस्सा कनेक आओर आगूसँ शुरू करैत छलीह । जखन सभसँ पैघ बच्चा कहए जे एकर पहिनेक खिस्सा हम कहाँ सुनलहुँ, तँ बुढ़िया दीदी

कहथिन्ह जे हम बताहि जकाँ खिस्सा कहिते रहि गेलहुँ आ अहूँ सुति गेल छलहुँ । तखन हम खिस्सा कहब बन्द कए देलहुँ । तखन निर्णय भेल जे जतएसँ सभसँ छोट बच्चा चाहैत अछि, ततहिसँ खिस्सा शुरु कएल जाए ।

बड़का कोला बला खेतमे नन्द बोरिंग गरबेलन्हि जाहिसँ पानिक लेल ललाएल ई बाध सिंचित भऽ जाए । मुदा कतेको दिनुका जोन मजदूर- मिस्त्री-कारीगर सभक परिश्रमक बाद ई पता लागल जे नीचाँमे पानिक अभाव रहए । लेएर नहि भेटबाक कारणसँ पाइप खेतेमे लागल रहल आ सुखाएल बिन पानिक ओतहि गाड़ल रहल । बच्चा सभक लेल ई खेत बोरिंग बला खेतक नामसँ प्रसिद्ध भेल । बादमे ओहि गाममे सरकारी बोरिंग गाममे लगबाक घोषना भेल । मुदा नन्दक भैयाकेँ पता लगलन्हि जे ई बोरिंग ओहि पानि विहीन बाधमे नहि गड़ाएत वरन् ओहि बाधमे गड़ाएत जाहिमे बारहोमास पानि लागल रहैत अछि । ओ किछु गोटेकेँ लऽ कऽ पटना पहुँचि मुख्यमंत्रीकेँ आवेदन देलन्हि । तखन जा कऽ ओहि सुखाएल बाधक जीर्णोद्धार भेल । सात हाथक उज्जर अंग्रेज इंजीनियर कोन-कोन मशीन लऽ कऽ आएल आ दुइये दिनमे बोरिंग गारि कऽ चलि गेल । मुदा बादमे क्यो कहलन्हि जे ओ अमेरिकन छल आ कारण सेहो देलन्हि जे सभटा उज्जर लोक अंग्रेज होअए से जरूरी नहि । फेर कमला बलानक दुनु कात छहरक निर्माण भेल । किछु दिन धरि ठीक रहल मुदा किछु दिनुका बाद स्थिति ई भेल जे दुनु छहरक बीचमे बालु भरैत गेल आ जतेक छहरकेँ ऊँच करू ततेक कम । झंझारपुर पुलक नीचाँ धरि बालु भरि गेल । कनियो पानि आबए तँ पानि खतराक चेन्हसँ पार भऽ जाइत रहए आ फाटकसँ बाहा बाटे पानि पोखरि-खेतकेँ डुमा दैत छल । जे खेत बहुत ऊँच आ दू पाइ मोलक छल से नीक भऽ गेल आ निकहा खेतमे खेती बन्द भऽ गेल । दुनू छहरक बीचक बलुआही जमीनमे तीन-तीन बेर रोपनी करए पड़ैत छल । लोककेँ आब परोर आ अल्हुआक खेती एहि बलुआही जमीनमे शुरू करए पड़ल । डकही पोखरिक चारू कातक बढ़मोतरमे छिटुआ धानक खेती करए पड़ल कारण रोपनी उपजक हिसाबसँ महग भऽ गेल । पूर्णाहा बाध पानिसँ भरल रहैत छल । कोठिया-मेहथक बीचमे एकटा भोरहा छल-गँहीर पट्टी- प्रायः कोशीक कोनो पुरनका छिटकल धार । मुदा अखुनका कोशीक भौगोलिक दूरीक कारण एहि पर संदेह कएनिहारक संख्या सेहो बेश । एहि भोरहा कातमे मेहथक आ कोठियाक बीच भेल पुरान संघर्षक खिस्सा... .पछिमा-भुमिहार टोलक एकटा आन्हर बूढ़क करतब । बूढ़केँ सभ बान्हि कऽ रखलकन्हि जे ओ मारि करए नहि पहुँचि जाथि । मुदा केबाड़ी तोड़ि आ बड़का बाँसमे फरसा-भाला लगा कऽ ओ पहुँचि गेलाह लड़बाक लेल । सवा मोन चूड़ी कोठियामे फूटल ओहि मारिमे । आ मारि कोन गप पर..सूगरक सीराक लेल ।... ...एकटा आर कथा - बूढ़ा काकाक झठहाक कथा, सभटा बानर सभ डरक लेल कलम-गाछी छोड़ि पड़ा गेल छल । आइ

काल्हिक छौरा सभकेँ देखियौक, झठहा कियो मारि कऽ देखाबय जे जोमक फुनगीकेँ छूबि लए । सभटा अखराहा लोक सभ जोति लेलक, तखन शरीर कोना बनैत जएतन्हि ।

नन्दक डेरा पर बुढ़िया दीदी एक बेर बाढ़सँ अपन बेटाकेँ लऽ कऽ अएलीह, बेटाक नोकरीक लेल । बाढ़क लाइ केर स्वाद बच्चा सभ बुढ़िया दीदीक पटना आकि गाम अएले पर चिखैत जाइत छल । जमीन्दारी प्रथाक समाप्तिक बाद नौकरीक चलती भऽ गेल छल आ दिक्कत सेहो । ताहिमे सरकारी नोकरीक । जयराम नौआ तखन ने कहैत छथि जे नन्द सभ जातिकेँ सरकारी नोकरी देलखिन्ह मुदा नौआ-ठाकुर टा बचि गेल । से नन्द नहि तँ हुनकर बेटेसँ अपन बेटाक लेल नोकरी माँगताह । सभकेँ नोकरी भेटलैक मुदा बुढ़िया दीदीक बेटाकेँ नोकरी नहि भेटलन्हि । किछु समय-साल सेहो बदलल, नहि तँ पहिने तँ लोक नोकरी करैयो नहि चाहैत छल । पुबाइ टोलक गुलाब झा कहैत छलाह जे नोकरीक माने भेल नहि करी आ करी तँ की पाबी-वेतन माने बिना तन आ तनखा माने तनकेँ खा । बुढ़िया दीदीक आनल बाढ़क लाइ आ कतेक राति धरि चलए बला खिस्सा । गाम घरमे कखनो काल शुरु भऽ गेल आन आन प्रकारांतरक खिस्सा, इनार, पोखरि,करीन,बाहा,खत्ता,गाछी-पोखरिक बीच आ एहि सभक लेल होबएबला छोट-मोट झगरा-झाँटी आकि रमण-चमनक मध्य नन्दक नन्द सभ बढ़ए लगलाह । नन्द अपन बच्चा सभकेँ गामसँ दूर नहि कएलन्हि। गर्मी तातिल, होली आ दुर्गापूजा, तीन बेर कमसँ कम साल भरिमे समस्त परिवार जएबेटा करैत छल । बच्चा सभ आम खएबाक हेतु दीदीक गाम जाइत छल । पएरे-पएर दूर-दूर धरि, कहियो कमलाक रेतक बीच तँ कहियो आमक गाछीक मध्य चलैत चलबाक अनुभवे किछु भिन्न छल । आमक मासमे आमक कलममे रात्रिक माछ-भातक बनभोज, खुरचनसँ आमक खोइचा हटएबाक अनुभव, ती-ती, 'जकरे नाम लाल छड़ी' आ सतघरिया खेलेबाक अनुभव, संठीमे आगि लगा कए धुँआ निकालबाक अनुभव आकि काँच आममे चून लगाकए खएबाक उपरांत ओकर मीठ भऽ जएबाक अनुभव, ई सभ अनुभव आइ काल्हिक बच्चाकेँ कोना भेटतैक यावत ओकरा सभकेँ गाम एनाइ जेनाइ नहि कराएब । नन्द तँ एकबेर अपन जमायकेँ कहनहियो रहथि जे आगाँक सात जन्म शहर दिशि घुरि कय नहि आएब । सन् १९७५ क पटनाक बाढ़िक समय नन्द गंगाक उत्तर गंगा पुल परियोजनामे आबि गेल छलाह। नन्द दुइ पुत्र आ एक पुत्रीक संग अपन परिवार चला रहल छलाह । तीनू बच्चा स्कूलमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत जाइत छलाह । तखन ककरा बुझल छलैक जे ई बरख नन्द आ हुनकर बच्चा सभक जीवनक एकटा विभाजन रेखा बनत आ जीवनक धारकेँ बदलि देत।

आरुणिक वृत्तांतक सारांश यैह अछि जे हुनक जन्मक समय हुनकर पिताकेँ क्यो कहि देलकन्हि जे बचिया भेल अछि । दू-तीन दिन धरि हुनका दिमागमे छलन्हि जे बेटिये भेल अछि । छठिहारिक एक दिन पहिने हुनका पता चललन्हि जे बेटा भेल छन्हि । एहि अनिश्चितताक उपरांत यैह सिद्ध भेल जे यावत सत्यक जे रूप बूझल अछि सैह तावत धरि सत्य रहत । सत्यक विभिन्न रूप, जे असत्य तँ नहि अछि, तकरे प्रतिकीर्तिक रूपमे आरुणिक व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव भेलैक। जन्मेसँ एहि आभाषित सत्यक विभिन्न रूपक साक्षी रहलाह आरुणि । आरुणिक जन्मक पहिनहि बा केर देहांत भऽ गेलन्हि। बादो मे जखन-जखन बा केर चर्चा अबैत छल, आरुणि ध्यानसँ सुनैत छलाह आ अपन जिज्ञासा बढबैत छलाह। एवम क्रमे बा हुनकर जीवनक अंग भऽ गेलीह । बा हुनकर जन्मक पहिनहि सँ शरीररूपे नहि छलीह, मुदा हुनकर अवस्थिति एहि घरमे सदिखन छलन्हि । आरुणिक कथा आ नन्दक कथाक बीचक तारतम्य पहिने तँ नहि बुझि पड़ि रहल छल । मुदा प्रकृतिक संगहि आरुणि सेहो अपन प्रतिभा देखाबए लगलाह । मनुष्यक प्रवृत्तिये होइछ समानता आ तुलना करबाक, साम्य आ वैषम्यक समालोचना आ विवेचनमे कतेक गोटे अपन जिनगी बिता दैत छथि । आरुणि आ नन्दक बीच सेहो अनायासहि साम्य देखल जा सकैत अछि । दुहु गोटेक ऊपरी प्रतिभा आ तथाकथित वैचारिक मतभेदक रहितहु जे मूल व्यक्तित्वक साम्य होइत छैक, से दुनू गोटेमे वर्त्तमान अछि । एहन सन बुझना जाइत छल । मध्य वर्गक बच्चाक लालन-पालन आ पोषण जाहि आशा ओ आकांक्षासँ होइत अछि, तकर अपवाद आरुणि नहि छलाह । जेना सभ माता-पिता अपन नेनाक छोटो छोट बातमे प्रतिभाक छाप देखैत छथि तहिना आरुणिक माता-पिता विशेष कए पिता नन्द, आरुणिक व्यक्तित्वमे विशेष प्रतिभा देखए लगलाह । आरुणि केँ खूब स्वप्नसभ अबैत छलन्हि । तहिना दाँत सेहो सूतलमे कटकटाइत छलन्हि । सपनामे नीक आ अधलाह दुनू प्रकारक तत्व रहैत छलन्हि मुदा डराओन तत्व विशेष रहैत छलन्हि । बहुत दिन धरि आरुणि एहि प्रयासमे रहथि जे कोना कए सपना आकि दुःस्वप्न अएनाइ बन्द भए जाएत । बीच रातिमे ओ घामे-पसीने भए जाइत रहथि आ जखन निन्न खुजनि तऽ देखथि जे माता-पिता पंखा होँकि रहल छथिन्ह । सभसँ पहिने ककर जन्म भेल आ तकर पहिने ककर, आ सभकेँ भगवान बनओलन्हि तँ भगवानकेँ के बनोलकन्हि । ई सभ सोचि-सोचि कए आरुणि चिंतित भए जाइत छलाह। रातिमे स्वप्नमे हुनका होइत छलन्हि जे इनाररूपी प्रकृतिमे ओ गामक छातपर घूमि रहल छथि । फेर ओ छतक कातमे जाए लगैत छथि । फेर जेना पोखरिक कछेर अछि, तहिना छतक काते कात बिन इच्छेक जाइत रहैत छथि, फेर चाहैत छथि, जे कातसँ हटि कए बीच छतपर आबि जाइ । किंतु इनार रूपी प्रकृतिक गुरुत्वमे ओ खिचाइत चलि जाइत छथि । आ खसि जाइत छथि । अनायासहि निन्न खुजैत छन्हि तँ खुशी आ दुःख दुनू प्रकारक भावना मोनमे अबैत छन्हि । खुशी एहि बातक जे स्वप्ने

छल ई, यथार्थ नहि । दुःख एहि बातक जे फेर ने कतहु एहि प्रकारक दुःस्वप्न फेर आबए । पितासँ पूछथि जे अहाँ सेहो एहन सपना सुनैत छी, नहि नहि देखैत छी तँ ओ कहथि जे नहि आब नहि। हँ जखन ओ बच्चा रहथि तँ सपना देखथि, बड़का झोटाबला सहस्त्रबाढ़निक । आगि बोकरैत तमसाएल, जेना पृथ्वीकेँ गीरि लेत । सपना तँ सपने छी जे अहाँ सोचब से रातिमे आएत। नहि जानि के बूढ़-पुरान सहस्त्रबाढ़निक खिस्सा हमरा सुना देलन्हि। की सभ कहि देलन्हि जे सहस्त्रबाढ़निक आगमन अनिष्टक संकेत अछि जे ई जाहि बरख आएल ताहि बरखसँ कैक साल धरि बीमारी अकाल पड़िते रहल। यैह सभ हमर सपनामे अबैत छल। मुदा से बच्चामे आब तँ निन्न कम अबैत अछि तँ सपना कतएसँ आएत। आ आरुणि सोचथि जे कतेक नीक होइत जे हुनको निन्न कम्म अबितन्हि। एहि बीच आरुणि कखन निन्न अबैत अछि आ कखन स्वप्न एहि सभ पर जेना शोध करए लगलाह। फेर अगिला दिन मोन पाड़थि, जे नौ बजे धरि जागल छलहुँ, दसो बजे यावत जागले छलहुँ, तखन कखन सुतलहुँ । फेर किछुए दिनमे ओ अपना मोनके बहटारि लेलन्हि, जे ज्योँ हुनका ई मोन पड़ि जाइन्हि जे निन्न कखन आएल तखन तँ ओ जागले रहि जएताह । हुनकर नाम कतेक बेर बदलल गेल । पुरातन ग्रंथ सभक अध्ययन नंद एहि हेतु कएलन्हि । फेर हुनक पढ़ाइ-लिखाइक कार्य शुरु भेलन्हि। श्री गणेशजीक अंकुश छह ढ़ंगसँ लिखनाइ सिखाओल गेलन्हि आरुणिकेँ आ एहि आकृतिक संग गौरीशंकरक अभ्यर्थना-सिद्धिरस्तु।

> साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी
> उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।
> सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादांतस्य धूर्जटेः
> जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला ॥

पशुपतिः पतिः कहि आरुणि खूब हँसथि । एहिसँ हुनकर तोतरेनाइ सेहो समाप्त भए गेलन्हि । एक सँ सए धरिक पाठमे आरुणिकेँ पशुपतिःपतिः बला तारतम्य मोन पड़ैत छलन्हि । दस सँ उन्नैस आ फेर बीस सँ उनतीस । नन्दक छोट पुत्र आरुणि शुरुअहिसँ नन्दक आशा आ आकांक्षाक प्रतीक बनए लागल छलाह । एकर किछु कारण सेहो छलैक । एकसँ सए धरि लिखब नन्द हुनका सिखा रहल छलाह । नन्द हुनका एकसँ दस धरि लिखनाइ आ बजनाइ सिखेलखिन्ह आ एगारहसँ आगाँ सेहो सिखाबए लागलखिन्ह । पुनः ई सोचि कए जे बालक पर एतेक बोझ लदनाइ ठीक नहि अछि ओ रुकि गेलाह । परंतु बालककेँ एगारहसँ बीस, फेर एक्कैससँ तीस जएबा धरि एहि बातक पता भऽ गेलन्हि जे ई तँ एक सँ दस तकक पुनरावृत्ति मात्र छैक । ओ एकर औचित्यक अपन पितासँ चर्चा केलन्हि तँ पिता हुनका एकसँ सए धरि लिखबाक चुनौती दऽ देलखिन्ह । बालक से लिखि कए जखन देखा देलखिन्ह तकरा बाद प्रत्येक

शब्दकेँ कोन नाम देल जाए तकर समस्या आएल । नन्द एगारह, एक्कैस, उन्नासी आ नबासीक विशेष रूपसँ चर्चा केलन्हि । माँ जखन आधा घंटाक प्रगतिक समीक्षाक हेतु अएलीह तखन हुनका पता लगलन्हि जे पाठ्यक्रम तँ पिता-पुत्रक बीच पूर्ण भऽ चुकल अछि । पिता गदगद भए गेलाह आ माँ एहि घटनाक चर्चा बहुत कम गोटेसँ केलन्हि जे कतहु ककरो नजरि नहि लागि जाए । एहने-एहन ढेर रास उदाहरण पिताक हृदयमे पुत्रक कोनो गलती नहि केनिहारक छवि अंकित करबामे सक्षम भऽ गेल।

आरिणिकेँ अप्पन पुरना बात सभकेँ मोन रखबाक धुनि जेकाँ छलन्हि । कोन ईस्वी मे की भेल, कोन ईस्वी सँ की-की भेल से कोना यादि होएत । हम बच्चामे की सभ कएलहुँ अप्पन पिता-माता आकि आनो बूढ़-पुरान सभक जीवनक घटनाक्रमक सभ गप बुझबाक लालसा हुनकामे छलन्हि। कखनोकालकेँ हुनका एहि गपक छगुंता होइत रहन्हि जे बिना हुनकर देखनो, एहि विश्वमे सभ गोटे सभ काज कोना कए रहल अछि । माने ई जे जखन आरुणि सुतल छथि तखनो विश्व चलि कोना रहल अछि । हुनका बच्चाक दुइ-चारिटा घटना मात्र मोन रहन्हि । जेना कि सिनेमा हॉलमे बॉबी सिनेमाक स्मरण, स्टुडियोमे माता-पिताक संग मुंडनक पहिने केशबला फोटो खिचेबाक स्मृति । फेर कोनो गप पर माँ द्वारा ध्यान नहि देलाक उपरांत भरि घरक चाभीक झाबाकेँ सोँझाक डबरामे फेंकि देबाक स्मृति । गाममे कोनो काज-उद्यमक भीड़क दृश्य । फेर आरुणि एहि सभपर सोचलाक बाद यैह निष्कर्ष निकाललन्हि जे १९७६ ई.सँ हुनका सभ किछु मोन छन्हि, कारण तखन ओ ५-६ बरखक होएताह आ एहि वर्षसँ माँ हुनका अखबार पढ़बाक हिस्सक धरा देने छलखिन्ह । बहुत दिनुका बाद एक दिन नन्दकेँ आरुणिक डायरी हाथ लागि गेलन्हि जाहिमे आरुणि अपन स्मृतिक घटनाक्रमक इतिहासकार जेकाँ वर्णन देने रहथि।

हम, आरुणि, सन् १९७६ ई.केँ अपन जीवनक विभाजन रेखा मानैत छी । कारण एहिसँ पहिने हमरा अपन जीवनक घटनाक्रम किछु टूटल कड़ीक रूपमे बिना तारतम्यक बुझना जाइत अछि । कखनोकेँ हमरा ईहो होइत अछि जे एहि मे सँ किछु पूर्व जन्मक कोनो घटनाक्रम तँ नहि अछि ? सन् १९७६ ई.। हम गंगाब्रिज प्रोजेक्टक गंगाक उतरबारी कातमे हाजीपुरमे बनाएल कॉलोनीमे अपन माता-पिता आ पैघ भाए-बहिनक संग रहि रहल छी । पिताजी व्यवसायसँ सरकारी अभियंता छथि मुदा होम्योपैथिक चिकित्सामे सेहो एम.डी.(गोल्ड मेडेलिस्ट) छथि आ हुनकर ई एक तरह सँ हॉबी छन्हि । भरि कॉलोनीक लोक चंदा एकत्र कए होम्योपैथिक दबाइ कानपुरसँ मँगबैत छथि । बाबूजीक संग एकाध गोटे कानपुर

जा कए दवाइ सभ लेने अबैत छथि । हमरा सभक सरकारी क्वार्टरक ड्रॉइंग रूममे एकटा अलमीरा, दू टा कुर्सी आ एकटा टेबुल चिकित्सकीय कार्यक हेतु समर्पित अछि । हमर एकटा छोटका टेबुल सेहो एहि रूममे रहैत अछि, जाहिमे तीस पाइक आर्यावर्त्त अखबार हम अप्पन माँकेँ पढ़ि कए सुनबैत छियन्हि । जतए धरि हमरा मोन अछि, एहि कॉलोनीक दूटा भाग छल । चारू दिशि चहरदिवारी छल, एहि कॉलोनीक बीचमे सेहो एकटा दिबारि छल जे एहि कॉलोनीकेँ 'रहएबला' आ 'गोदामबला' एहि दू हीसमे बँटैत छल । गोदामबला इलाकामे मारि रास लोहाक छड़, जोखय बला मशीन आ ट्रक सभक संग एकटा कदम्बक गाछक स्मृति हमरा अछि । जोखय बला एकटा मशीन ततेक पैघ छल जाहि पर हम जखन ठाढ़ होइत छलहुँ तँ ओकर काँटा हिलबो धरि नहि करैत छल । हमरा बताओल गेल छल जे एहि पर भरिगर चीज सभ मात्र जोखल जा सकैत अछि । पन्द्रह-सत्रह किलोक पाँच सात बर्षक बच्चाक भार एकरा हेतु नौंसिक समान अछि । एहि गङ्गा-ब्रिज कॉलोनीक रहएबला क्षेत्रमे एकटा पैघ आ एकटा छोट मैदान छल । दुनूक बीच एकटा पैघ पानिक टंकी आ पम्प हाउस छल । पम्प हाउसमे पानि जाहि बाटे अबैत छलैक से बेस मोटगर पाइप छलैक आ हमरा अखनो मोन अछि जे ओ ओहिना खुजल रहैत छलैक । हम ओहिमे आँखि दए कऽ तकनहियो रही मुदा दोसर बेर डरसँ पाछू हँटि गेलहुँ, जे कतहु खसि पड़लहुँ तखन की होएत । ओ पाइप एकटा बोरासँ झाँपल रहैत छल । पैघ क्रीडांगणक उतरबारी कातमे एकटा कोटाबला दोकान रहैक । ओहिसँ पछबारी कातमे एकटा हनुमानजीक मूर्त्ति आ मंदिर बनि रहल छल जे बहुत पहिनहि बनि गेल रहैत मुदा कारीगर हनुमानजीक नाक ठीकसँ नहि लगा पाबि रहल छल । हनुमानजीक नाक चाहे तँ सामग्रीक समुचित मत्राक अनुपात नहि रहलाक कारण वा ककरो बदमाशीक कारण टूटि जाइत रहए किंतु किछु दिनुका बाद हनुमानजीक मूर्त्ति बनि कए तैयार भऽ गेल रहए । मंगल दिनकेँ आरती होमए लागल छल, पूरा कॉलोनी जेना भक्ति-भावसँ भरि उठल रहए । किछु दिनुका बाद सभक उत्साहमे कनेक कमी आबए लागल, जेना आन संस्थाक संग होइत अछि, प्रारम्भिक उत्साह क्रमशः कम होइत गेल आ मंदिरक संग जुटल सभटा सामाजिक कार्यक्रमक योजना योजने रहि गेल । हम कॉलोनीसँ दूर एकटा स्कूलमे पढ़बाक हेतु जाए लागल छलहुँ । हमर पैघ भाइ आ बहिन सेहो ओहि स्कूलमे पढ़ैत रहथि । एक दिनका गप्प अछि जे स्कूलमे हमरा कोनो दोसर बच्चाक संग झगड़ा भए गेल । दुनु गोटेक संग स्लेट रहए । हम आ ओ दोसर बच्चा एकरा हथियारक रूपमे प्रयोग करए लागलहुँ । हम सोचए लगलहुँ जे ज्योँ स्लेटकेँ दोसर बच्चाक माथ पर मारबैक तँ शोनित निकलए लगतैक । ताहि द्वारे हम स्लेटकेँ रक्षात्मक रूपेँ प्रयोग केलहुँ । मुदा ओ दोसर बच्चा मचंड छल... ....खच्च....हमर माथसँ शोनितक धार निकलए लागल । टीचर सभ हमरा प्रिंसपलक रूममे लए गेलथि । रुइयामे सेवलोन वा डिटॉल नहि किछु दोसरे

छल, ओकर रंग आ सुगंध हमरा अखन धरि मोन अछि, फर्स्ट-एडक बाद साँझ होएबाक आ छुट्टीक बेर नहि ताकल गेल । स्कूलक रिक्शा जाहि पर ''सावधान बच्चे'' लिखल छल केर बाट नहि जोहि एकटा दोसर रिक्शामे हमरा दीदीक (बहिनक) संग घर पठा देल गेल । हम दीदीकेँ पुछलियैक, जे ''सावधान बच्चे'' केर अर्थ की भेल । हमरा लगैत छल जे एकर अर्थ छल जे सभटा बच्चा जे ओहि रिक्शामे बैसल अछि, से सभ सावधान अछि, आ एहि बातसँ ओ दोसर छौड़ा असहमति देखा रहल छल आ ताहि गप्प पर झगड़ा बजरि गेल छल । दीदीक उत्तर रहए जे ई लिखबाक उद्देश्य चेतावनी छैक, जे कोनो दोसर गाड़ी पाछू सँ ठोकर नहि मारि दैक आ सम्हरि कए चलए ।

''मुदा किएक''- हम संतुष्ट नहि होइत पुछलियन्हि । एहने प्रश्न आ उत्तरक संग हम बढ़ए लागल छलहुँ । आ बढ़ैत- बढ़ैत कहियो काल खिसियेला पर माँ कहथि, जे सोचैत रही जे कहिया पैघ होएत आ पैघ भेल तँ नाकमे दम कए देने अछि।

कॉलोनीक बाहरक क्रिश्चियन संतक नाम पर बनल स्कूलमे हम सभ भाइ-बहिन जाइत रही । स्लेटसँ कपार फोड़बएलाक बाद बाबूजी कॉलोनीमे ऑफिसर सभक मीटिंग करबओलन्हि । फैसला भेल जे खेलाक मैदान आ उत्तरबरिया सीमंतक देबालसँ सटल कोटाक दोकान (सार्वजनिक वितरण प्रणालीक दोकानकेँ कोटाक दोकान कहल जाइत छल) अपन आवश्यकतासँ बेशी पैघ घरमे छल । ओहि कोटाबलाक लाइसेंस सेहो कोनो कारणसँ समाप्त भए गेल छलैक, से ओहि एसबेस्टस बला ३-४ कोठलीक घरकेँ प्राथमिक विद्यालय बनएबाक निर्णय लेल गेल आ दू-चारिटा शिक्षकक बहाली कए, दू चारिटा लोकक कमेटी बनाए स्कूल शुरु कए देल गेल । पड़ोसक गंडक कॉलोनीकेँ सेहो छह महीना बाद नोत देल गेल जे अहूँ अप्पन कॉलोनीक बच्चा सभकेँ एतए पढ़ा सकैत छी । उत्तरबरिया देबाल पर बाहर दिशिसँ स्कूलक नाम लिखल गेल जे किछु दिनक बाद मलिछौंह होइत गेल । मुदा स्कूलक प्रतिष्ठा बढ़ैत गेल । क्यो गोटे ज्योँ अप्पन बच्चाक नाम लिखाबए अबैत छलाह तँ हुनकर बच्चाकेँ एक किंवा कखनो कालकेँ दुइ वर्ग नीचाँ नामांकन लेल जएबाक गप्प शिक्षकगण करैत छलाह । अप्पन स्कूलक स्तर कनेक ऊँच होएबाक गप्प करैत छलाह । बेशी जिद्द केला पर हमरा बजा कए टेस्ट लैत छलाह आ जाहि प्रश्नक उत्तर तेसर वर्गक नामांकनक अभिलाषी नहि दए पाओल छलाह से प्रश्न हमरा सँ पुछैत छलाह आ हम्मर सही उत्तर पर ओ कुटिल मुस्कान दैत नामांकनक हेतु आएल बालकक अभिभावक दिशि मुँह करैत छलाह । मोटा-मोटी बुझु जे ओहि स्कूलक हम सभसँ उज्जवल विद्यार्थी छलहुँ-जकर सोझाँमे, ओहि गामसँ आएल विद्यार्थीक अएलाक पहिने, क्यो ठाढ़ नहि भए सकल छल । पढ़ाइक प्रति एकटा विशिष्ट लगाव छल हमरामे, जे बादमे क्रमशः उदासीनतामे बदलए लागल । से एक बेर जखन बोखारसँ बड़बड़ाइत

छलहुँ तहिया परीक्षाक दिन रहैक । बड़बड़ा रहल छलहुँ जे परीक्षा ने छूटि जाए । घरपर प्रश्न आ कॉपी आएल आ तखन अप्पन परीक्षा दऽ सकलहुँ हम । स्कूल छल छोट-छीन मुदा ओकर सभ गतिविधिमे कॉलोनीक निवासीगण सोत्साह भाग लैत छलाह । क्रीडाक्रिया होअए आकि सांस्कृतिक । क्रीड़ामे दू विद्यार्थी एक-एक पएर डोरीसँ बान्हि कए तीन टाँग बनाए दौगैत छलाह । दौगि कए मैदानक दोसर छोड़पर राखल ब्लैक बोर्डपर लिखल हिसाबकेँ बनाए दौगि कए आपस अएबाक खेलमे शारीरिक आ मानसिक दुहुक परीक्षा होइत छल जाहिमे हम अग्रणी अबैत छलहुँ । हमरा दू गोट घटना आर मोन पड़ि रहल अछि । पहिल घटना एक गोट बच्चाक गामसँ आएब । ओ हमरा हेतु किछु दिन पढ़ाईमे चुनौतीक रूपमे रहल कारण ओकर गाम बला किताबमे किछु नवीन जानकारी रहैक मुदा तकर कोटा पूरा भेलाक बाद हम ओकर चुनौतीकेँ खतम कए देलहुँ । दोसर घटना छल एक गोट बच्चाक एक्सीडेंट जकर बाद हम सभ खेलाइ कालमे टाइम निकालि ओकरा खिड़कीसँ देखि अबैत रहियैक । बादमे कहियो काल ओकर रूम मे जा कए ओकर डायरी सेहो देखि अबैत रही । ओकर किछु अंश हमरा मोन अछि से एना अछि ।

''अप्पन सभक गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाव रहए लागल । किछु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल ह्मर एक्सीडेंट, जकर कारण हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पड़ल जेना डेढ दिन जेकाँ बीति गेल । किछु एहि बातक दिस सेहो हमर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोना कए होएत । किछु तँ भोरमे उठि कए समय बचेबाक विचार आएल मुदा आँखिक निन्न ताहि मे बाधक बनि गेल । तखन सामजिक संबंधकेँ सीमित करबाक विचार आएल । एहिमे हमरा बिन प्रयासक सफलता भेटि गेल छल । एकर कारण छल हमर नहि खतम प्रतीत होमएबला बीमारी । एहिमे विभिन्न डॉक्टरक ओपिनियन, किछु गलत ऑपरेशन आ एकर सम्मिलित इम्प्रेसन ई जे आब हमरा अपाहिजक जीवन जीबए पड़त । आनक बात तँ छोड़ू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल छल । लगैत छल जे डॉक्टर सभ फूसियाहिँक आश्वासन दए रहल अछि । एहि क्रममे फोन सँ लऽ कए हाल समाचार पुछनहारक संख्या सेहो घटि गेल छल । से जखन अचानके बैशाखी आ फेर छड़ीपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेकेँ फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंध बनाबएमे असुविधा होमए लगलन्हि । जे हमरासँ दूर नहि गेल रहथि तनिकासँ तँ हम जबर्दस्तीयो संबंध रखलहुँ मुदा दोसर दिशि गेल लोकसँ हमर व्यवहार निरपेक्ष रहैत छल से पुनःसंबंध बनेबासँ लोक हतोत्साहित रहए लगलाह । दुर्दिनमे जे हमरापर हँसथि तनिकर प्रति ई व्यवहार सहानभूतिप्रदहि मानल जाएत । एहिसँ समयधरि खूब बचए लागल। शुरुमे तँ लागल जेना ऑफिसमे क्यो चिन्हत आकि नहि । मुदा जखन हम ऑफिस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेकाँ स्वागत भेल होअए ।

मुदा एहिमे ई बात संगी-साथी सभ नुका लेलक जे हमर छड़ीसँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल छलन्हि । सभ मात्र हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहैत छलाह । जखन हम छड़ी छोड़ि कए चलए लगलहुँ आ जीन्स शर्ट-पैंट पहिरि कए अएलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहाँ पुरनका रूपमे घुरि रहल छी । एहि बातकेँ हम घरपर आबि कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए कालक फोटोकेँ पत्नीक मदति सँ हैण्डीकैम द्वारा वीयोडीग्राफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन्न रहि गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नँगड़ा कए दौगबा सन लागल छल । पहिने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रत्ती पता धरि नहि चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बड़ड कम अछि, पहिने तँ आर बेसी छल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत छलाह, तनिका कतेक खराब लगैत होएतन्हि । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक प्रोत्साहन आ हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन प्रारम्भिक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकड़लाक बाद सार्वजनिक जीवनमे अलग-थलग पड़ि जएबाक संदेह, आशा, अपेक्षा किंवा अहसास-फीलिंगक बाद जे एहि तरहक अनुभव भेल से हमर व्यक्तित्वक भिन्न विकासकेँ आर दृढ़ता प्रदान केलक''।

ओ तँ छल हमरे संगी मुदा कल्पना कऽ रहल छल जेना कोनो पैघ वियाहल व्यक्ति होअए आ काल्पनिक रूपसँ ठीक भेलाक बादक वर्णन अपन डायरीमे कएने छल । मजदूरक टोल आ साँझमे ठेलागाड़ी पर हुनका लोकनि द्वारा अपन कपड़ा सुखाएब, एहि सभकेँ देखि कऽ हम विचलित भऽ जाइत छलहुँ । ई देखलाक बादो जे हुनका लोकनिक मुँहपर हँसी छन्हि, बिन घर रहलो उत्तर । छोट-छोट बच्चा सभकेँ भीख मँगैत देखब, हम सभ जखन खेलाइत रही तँ ओकरा सभक हमरा सभक दिशि कातर दृष्टिए देखब । लोक सभक दुत्कार, कहियो हमरो पर ई विपत्ति आबि जाए तखन ? फेर दोसर क्यो हुनका लोकनिक दिशि तकबो नहि करन्हि, तँ की हमही टा आन बच्चासँ भिन्न छी आ ई सभ सोचनी लागल रहैत छल । हम ई सोचैत रही जे जखन हम कोनो स्थान पर नहि रहैत छी तखनो तँ सभ कार्य गतिसँ चलैत अछि । किताबमे हम पढ़ने रही जे किछु जीव जंतु मात्र दू डाइमेंसनमे देखैत अछि । हमरा सभ तीन डाइमेंसनमे जिबैत छी, तँ ई जे भूकंपक आ आन-आन विपत्ति सभ अबैत अछि से कोनो चारि डाइमेंसनमे कार्य करए बलातँ नहि कऽ रहल अछि जे कल्पनातीत अछि ।

पाँच पाइमे लालछड़ी बलाकेँ देखा कऽ बाबूजी कहैत रहथि जे देखू ईहो लोकनि अपन परिवारक गुजर पाँच-पाँच पाइक ई लालछड़ी बेचि कए कऽ रहल छथि । पाइक महत्व आ ओकर आवश्यकता जतेक बढ़ाऊ ततेक बढ़त । अपन-अपन वातावरणक आ जीवनक बादक जीवनक - एहि सभक संग जीनाइ,

रातिमे बड़बड़ेनाइ ई सभ गोट कार्यक संग पढ़ाइ आ पिताक नौकरीक परेशानी सभ चलैत रहल । हमरा मोन पड़ैत अछि जे एक दिन भोरे-भोर एक गोट ठीकेदारक सूटकेशपर हमर बाबूजी जोरसँ लात मारने छलाह । सूटकेश जा कऽ दूर खसल आ ओहिमे राखल रुपैय्या सौँसे छिड़िया गेल । हमर एक गोट पितियौत भाइ छलाह जे सभटा पाइकेँ उठा सूटकेशमे राखि वापस ठीकेदारकेँ दऽ वापस कए देलखिन्ह आ ईहो कहलखिन्ह जे जल्दीसँ भागि जाऊ नहि तँ पुलिसकेँ पकड़बा देताह । माँ हमरा भीतरका कोठली लऽ गेलीह । हम बच्चा छलहुँ मुदा हमरा बुझबामे आबि गेल छल जे ई पाइ हमरा बाबूजीकेँ गंगा-ब्रिजक ठीकेदारक दिशिसँ अपन इंजीनियरिंग छोड़ि कऽ बिना कोनो भाङठक कार्य होमए देबा लऽ देल जएबाक प्रयास छल । बाबूजी बहुत काल धरि बड़बड़ाइत रहलाह । कखनो दालिमे नून कम रहला उत्तर आकि आन कोनो कारणसँ बर्त्तनकेँ फेंकबाक स्वरसँ देह सिहरि जाइत छल । फेर किछु क्षणक चुप्पीक बाद सभ बच्चाकेँ बजाओल जाइत छल आ दुलार मलार होइत छल । हम वर्गमे प्रथम अबैत छलहुँ आ परिणाम निकलबाक दिन एकटा कॉलोनीक सिन्हा चाची सभ बेर लट्ठा खोआबैत रहथि । प्रायः गुर आ आटासँ बनल एहि लट्ठाक स्वाद हम बिसरि नहि सकल छी । ओहि चाचीक एकटा अर्द्ध-पागल दिअर छलन्हि जे सितार बजबैत रहैत छल । एक बेर गंगामे स्टीमरसँ हमरा सभ ओहि पार जाए रहल छलहुँ तँ ओ ओहि स्टीमर परसँ अपन भाएकेँ फेंकबा लेल ओ उद्यत भऽ गेल छल । ओहि चाचीकेँ एकटा बेटी रहन्हि रजनी । पता नहि कोन बिमारी भेलैक, बेचारी एलोपैथिक दवाइक फेरमे ओछाओन धऽ लेलक । हम सभ कताक बेर हुनका देखबा लेल जाइत रही । हमरा दोसराक अहिठाम जाएमे धाख होइत रहए मुदा ओतए ककरो संगे पहुँचि जाइत रही । हुनका सभ क्यो दीदी कहैत रहियन्हि । हमरा सभसँ बड़ड पैघ रहथि । मुदा किछु दिनक बाद हुनकर मृत्यु भऽ गेलन्हि । मृत्युसँ हमर मानसिक द्वंद, एहि घटनाक बाद आब आर लग बुझाए लागल । हुनकर मृत्युक बादो ओ चाची अपन बेटा सभकेँ अगिला दिन स्कूलक हेतु तैयार कए पठेलन्हि जे कॉलोनीक एकगोट दोसर दबंग चाचीकेँ पसिन्न नहि पड़लन्हि आ एकर चर्चा बहुत दिन धरि कॉलोनीमे होइत रहल । चाचीक भाइ मुजफ्फरपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजीमे व्याख्याता रहथि। एहि कॉलेजसँ हमर बाबूजी सेहो इंजीनियरिंग पास कएने रहथि । ओ हाजीपुरमे गंगा-ब्रिज कॉलोनी स्थित हमर सभक घर पर आएल रहथि आ अपन बहनोइकेँ बड़ड फझ्झति कएने रहथिन्ह । पटना जा कए नीक इलाज करेबामे असफल रहबाक कारण पाइकेँ बतेने रहथिन्ह । हमरा मोनमे ई विचार आएल रहए जे पटनामे पैघ डॉक्टर रहैत अछि जे मृत्युकेँ जीति सकैत अछि । मुदा एक दिन हमरा सभक संग रहएबला गामक पितियौत भाए जखन परमाणु युद्धक चर्चा कए रहल छलाह आ ईहो जे ओहि समयमे पृथ्वी पर एतेक परमाणु अस्त्र-शस्त्र विद्यमान रहए जाहिसँ पृथ्वीकेँ

कताक बेर नष्ट कएल जा सकैत अछि, तखन हमर ईहो रक्षा कवच टूटि गेल छल ।

हमर पुरान जीवनक ई एकटा नीक अनुभव छल। बादमे दुर्घटना तँ हँसी-खेल भऽ गेल । नहि तँ एकरासँ कोनो दुःख होइत छल नहिये कोनो लक्ष्यक प्रति तेना भऽ कए पड़ैत छलहुँ । खेल सेहो वैह नीक लागए जाहिमे टीम नहि वरन व्यक्तिगत स्पर्धा रहैत छल कारण टीममे दोसराक प्रदर्शन हारिक स्थितिमे बहन्ना बनि जाइत अछि । एकर कारण सेहो छल, किएक तँ एहिमे टीमक प्रदर्शन पर व्यक्तिगत प्रदर्शन निर्भर नहि करैत छल आ जे बड़ाइ आकि बुराइ भेटैत छल से व्यक्तियेकँ भेटैत छल । अहाँ ई नहि कहि सकैत छी जे ओकरा कारण हम हारलहुँ, हम तँ नीक प्रदर्शन कएने रही । स्कूल आ पढ़ाइक अतिरिक्त ओना क्रीड़ाक स्थान न्यूने छल । लक्ष्यक प्रति जे निरपेक्षता बादमे हमरामे आएल छल से ओहि समयमे नहि छल । ओहि समयमे तँ जगतकँ जितबाक धुनि छल । द्वितीय स्थानक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल । द्वितीय स्थानक माने छल अनुत्तीर्ण भेनाइ । खेलोमे, पढ़ाइयोमे, मारि-पीटमे सेहो । गाम आन-जान खूब होइत रहए । गाम जाइत रही तँ महादेव पोखरि परका स्कूलमे काका शिक्षककँ कहि अबैत छलाह आ हम छुट्टीयो मे स्कूल जाइत रही । कबड्डी, सतघरिया, लाल-छड़ी ई सभ खेलक नामो तँ शहरक बच्चाकँ बूझल नहि होएतैक । अस्तु ओतुक्का पढ़ाइक सभ प्रणाली अलग छल । प्रतिदिन करची कलमसँ लिखना लिखएमे देह सिहरि जाइत छल आ रोजनामचा सेहो एहि प्रकारे लिखैत रही-भोरे-सकाले उठलहुँ नित्य कार्यक उपरांत जलखइ कऽ पढबाक लेल बैसलहुँ, फेर स्कूल गेलहुँ, ओतए सँ एलहुँ, पुनः खेनाइ खेलहुँ । फेर स्कूल गेलहुँ, फेर गाम पर एलहुँ आ फेर जलखै कएलहुँ । फेर खेलाइ लेल गेलहुँ । फेर आबि कऽ लालटेनक शीशाकँ साफ केलहुँ, फेर पढ़लहुँ आ फेर भगवानक नाम लऽ सूति गेलहुँ । रवि दिनक छुट्टीक बदला सोम दिन दू दिनक रोजनामचा लिखि कए लऽ जाए पड़ैत छल । ओतए १५ अगस्तक उत्साह सेहो दोसरे तरहक छल । साँझ-आ भोरमे १५ अगस्त- स्वतंत्रता दिवस, भारत माताक जय केर संग सभ महापुरुष लोकनिक जय करैत जाइत छलहुँ । मुदा मास्टर साहेबक ई गप नहि बुझना गेल छल जे मारि-पीट नहि करैत जइहऽ । मुदा जखन भोरमे जयक नाद गामक सीमान पर सँ जाए काल सुनलहुँ तखन पता चलल जे ई गप मास्टर साहब किएक कहने छलाह । महिनाथपुरक स्कूलक बच्चा सभ जखने ओम्हरसँ अबैत रहए आकि तखने मारि बजरि गेल । कोनहुना झोप-ताप कएल गेल । फेर गामपर जे अएलहुँ तखन पुरनका बैचक विद्यार्थी सभ अपन खिस्सा शुरू कएलक जे कोना पोखरिमे पैसा-पैसाकँ केराक थम पानिमे दऽ कए स्वतंत्रता दिवस दिन मारने रहए गेल छलथिन्ह अनगौआँ कँ । फेर ओहो सभ दोसर साल बदला लेबाक ताकिमे छल मुदा ताहू बेर... । दोसर

साल फेर वैह मीटिंग, दुनू गामक स्कूलक मध्य मुदा एहि बेर दोसर गाम बला टीम रस्ता बदलि लेलक ।

मारि बझब गाममे एकटा पर्व जेकाँ छल । दुर्गास्थानमे चॉकलेटक बुइयामक फूटब आ कोनो कटघरा किंवा टाटक खुट्टा उखाड़ि कए मारि-पीट शुरू करब । आ बादक जे गप्प होइत छल से मनोरंजक । एक बेर एकटा अधवयसू एक गोट नव-नौतारकेँ दू-चारि चमेटा मारि देलन्हि । बादक घटनाक हेतु हम कान पथने रही तँ हमर पितियौत ओहि गौआँकेँ पुछलखिन्ह जे वैह बात रहए ने । सभ क्यो एकमत रहथि जे वैह बात रहए । एहि बेर हम हारि कऽ पुछलियन्हि जे वैह कोन बात अछि जे सभकेँ बूझल अछि मुदा हमरा नहि बूझल अछि । ओ कहलन्हि जे एहि युवापर अपन बचियाक घटकैतीक हेतु ओ अधवयसू गेल रहथि मुदा कथा नहि सुतरलन्हि । ओहि युवकक विवाह दोसर ठाम भए गेलन्हि, से तकरे कैन लऽ कए कोनो फुसियाहीक लाथ लऽ आइ ओकरा कुटलन्हि अछि । हम पुछलियन्हि जे ज्योँ विवाह भऽ जाइत तँ ससुर जमाएक संबंध रहैत । तखन एहि फुसियाही गप पर मारि बजरैत ? सभ कहथि जे अहाँ तँ तेसरे गप पर चलि गेलहुँ । रातिमे नाटक देखैत अकासमे डंडी-तराजू देखब, खाली डंडी छैक तँ तराजू कियैक कहैत छियैक? फेर ओहि नाटकोमे अनगौँआ सँ मारि बझेबाक हमर संगीक एकटा चालि । भेल ई जे नाटक देखए काल ओ एकटा अनगौँआकेँ खौँझा रहल छलाह । मारि अंट-शंट बकैत छलाह । आ ओ किछु बाजए तँ कहैत छलाह जे अखने नरेण भैयाकेँ बजाएब । ताहिपर ओ कहलन्हि जे जाऊ अहाँक नरेण भैयाक डर हमरा नहि अछि । आब आगू सुनू । हमर मित्र अनायासहि जोरसँ कानए लगलाह, दहो-बहो नोर खसए लगलन्हि । भोकारि पाड़ैत नरेण लग पहुँचलाह जे एकटा अनगौँआ मारलक अछि आ कहैत अछि जे के नरेण ओकर हमरा कोनो डर नहि अछि, आरो अण्ट-शण्ट । आब नरेण भैया पहुँचलाह जे बता तँ ओ के छी ? जखने टॉर्च ओहि व्यक्तिपर देलन्हि, बजलाह, भजार यौ । अहाँ छी । जरूर अही छौड़ाक गल्ती छी । अनका विषयमे कहैत तँ पतिया जइतहुँ । मुदा अहाँक विषयमे । आ ईहो नहि कहलक ई छौड़ा जे अहाँ तमसेलियैक वरन् ई जे मारलन्हि अछि । आ नेप की चुआ रहल छल जेना कतेक मारि पड़ल होअए । हमरा सँ नरेण पुछलन्हि जे भाए किछु एकरा कहबो कएलन्हि तँ हम कहलियन्हि जे नहि । एहि पर हमर मित्रक नोर जतएसँ आएल छलन्हि, ततहि चलि गेलन्हि । फज्झति मूड़ी झुका कए सुनलन्हि आ नरेण भाइक गेला पर सभकेँ कहलन्हि, जे ई नरेण काकाक संगी छथिन्ह, क्यो हिनका किछु कहबहुन्ह तँ बेजाए भऽ जाइत जएतहु । आ आस्तेसँ कहलथि जे बचि गेल आइ ई ।

गामक प्राइमरी स्कूलमे सभ कलाक परीक्षा होइत छल । संगीत, चित्र, नाटक । गाममे हारमोनियम, ढ़ोलक बजेनहार खूब रहथि । पहिने दुर्गा पूजाटामे नाटक होइत छल मुदा पछाति जा कऽ कृष्णाष्टमी, काली पूजा इत्यादिमे सेहो

नाटक खेलेनाइ शुरू भऽ गेल । हरखा रामलीला पार्टी सेहो एक महिना खेला कऽ गेल छल । अहूमे दू चारि दिनपर रामलीलाक बीचमे नाटक होइत छल । खेल शुरू भेल रामलीला पार्टीक बिना बजेनहि । मुदा दू चारि दिन धरि माला क्यो ने क्यो उठबैत गेलाह । रामलीला पार्टीक सभ कलाकारक एक दिनक खेनाइक खरचाकेँ माला उठेनाइ कहल जाइत छल । दू-चारि दिन तँ माइक पर क्यो न क्यो जोशमे जा कऽ हम माला उठाएब तँ हम उठाएब कहैत गेलाह मुदा दू चारि दिनुका बाद रामलीला पार्टीक आर्द्र अनुरोधकेँ देखैत गौँआ सभ टोलक अनुसार माला उठेबाक एकटा क्रम बना देलखिन्ह । ओहि समयमे अभिनय देखनाइ एकटा चमत्कार सन बुझाइत छल आ हम अपन कैरियर बादमे अभिनेताक रूपमे बनेबाक मोने-मोन इच्छा रखैत छलहुँ । ओहि समय एक शनि स्कूलमे नाटक खेलेबाक प्लान शिक्षकगणक स्वीकृतिसँ बनल । नाटकक किताब कतएसँ आएत ताहि द्वारे हम एकटा नाटक दानवीर दधीची लिखलहुँ । स्कूलक कलाकार सभकेँ एकत्र कएलहुँ । आब कलाकार सभक नाम तँ सुनू । पोटहा, लुल्हा, नैँगड़ा, पोटसुड़का, लेलहा, ढ़हीबला, कनहा, अन्हरा, तोतराहा, बौका, बहिरा ई सभ हमर बाल कलाकार रहथि । कारण जे अपनाकेँ शुभ्र-शाभ्र बुझथि से किएक नाटक खेलेताह । दहीकेँ तोतराकेँ कहियो क्यो ढ़ही बाजल तँ ओकर नाम ढ़हीबला भऽ गेलैक। सर्दीमे कहियो पोटा चुबैत रहि गेलैक तँ पोटहा भऽ गेल आ दोसर एहन भेल तँ दुनूमे अन्तर कोना करी । से ओ जे पोटा खसैत काल सुरकितो अछि से तकर नाम भऽ गेल पोटसुरका । आगाँ आऊ । ककरो अन्हरिया रातिमे ठेस लागि गेलैक तँ कोन अतत्तः भेलैक ? हँ ओकर नाम अन्हरा भऽ गेलैक । बच्चामे देरीसँ बजनाइ शुरू कएने छलहुँ तँ अहाँ भऽ गेलहुँ बौका । सोझगर छी तँ लेलहा । गपकेँ अनठबैत छी तँ भेलहुँ बहिरा । नव घड़ी पहिरलाक बाद (घड़ी पाबनि दिन वनस्पतिक घड़ी) हाथ कनेक सोझ राखि लेलहुँ तँ भेलहुँ लुल्हा । तोतराइत तँ सभ अछि मुदा कबियाठी टोलक छी तँ लोक नाम राखि देलक तोतराहा । कनेक डेढ़ भऽ ताकि देलहुँ आकि पिपनीकेँ उनटा कऽ ककरो डरेलहुँ तँ भेलहुँ कनहा । ठेस लगलाक बाद कनेक झखा कऽ चललहुँ तँ भेलहुँ नेंगड़ा । आ ज्योँ कनेक पाइ बलाक बेटा छी आकि माए कनेक दबंग छथि तँ कनाह रहलो उत्तर क्यो कनहा कहि कऽ देखओ !

अस्तु एहि बाल कलाकार सभक संग शनि दिन होएत हमर नाटक दानवीर दधीची।

आ नियत तिथिकेँ शुरू भेल दानवीर दधीची नाटक । स्कूल खुजबासँ किछु काल पहिनहि हम सभ पहुँचि गेलहुँ स्कूल । बरण्डाक एक कोनमे गाम परसँ आनल चद्दरिक पर्दा बनल । रस्सी ठीकसँ नहि लागि सकल से ईएह निर्णय भेल जे चद्दरिकेँ ऊपर उठा-खसा कए काज निकालल जाएत । तकरा बाद कलाकार सभ अपन-अपन ड्रेस पहिरए लगलाह । ड्रेस की छल मात्र पाउडर लगा कए आ गमछा-धोती पहिरि कए, सभ सभ तरहक ड्रेस पहिरि लेलक । जाहि

मास्टरसाहेबक ड्यूटी लागल छल नाटकक संचालनक हेतु, हुनका कोनो आवश्यक कार्य मोन पड़ि गेलन्हि से ओ ओहि दिन छुट्टी मारि देलन्हि । गामक पैघ तुरियाकेँ तावत बुझबामे आबि गेलैक जे प्राइमरी स्कूलक छौड़ा सभ नाटक कऽ रहल अछि । से तुरत्तेमे दस टा पैघ बच्चा सभ जूटि गेल आ पिहकारी देनाइ शुरू कऽ देलक । हम सभ कलाकारकेँ कहलियन्हि जे ई सभ उत्तेजित कऽ कए हमर सभक नाटककेँ दूरि करत । मुदा छोटे भाइ भीड़ि गेलाह ।कहए लगलाह जे हे बौआ सभ, हम नाटकक ड्रेसमे छी तँ ई नहि बुझू जे मारि नहि करब। एखने ड्रेस फेकि-फाइक कऽ हम सभ कर्म कऽ दइ जाएब अहाँ सभक। मुदा पिहकी पाड़नहारक संख्यामे घटती नहि भेल । आ छोटे भाइ बाजि उठलाह जे छोड़ू आइ एहि नाटककेँ । हिनका सभक बदमस्ती हम एखने ठीक करैत छी। आ खुट्टा उखाड़ि कऽ दौगलाह । तावत थाम्ह-थोम्ह करए बलाक जुमान भऽ गेलैक आ तकरा संगहि नाटक दानवीर दधीची जे हमर लिखल छल आ जकर मंचनक निर्देशन हम करए बला छलहुँ, बीचहिमे खतम भऽ गेल । किछु दिन धरि छोटे भाइसँ मूहा-फुल्ली रहल । ओ आबथि आ कहथि जे की करू, तामस उठि गेल छल । ओहो सभ अतत्तह कऽ देने छल । फेर किछु दिनुका बाद सभटा सामान्य भऽ गेल । रामलीलाक आ नाटकक भूत सेहो एहि घटनाक बाद हमरा परसँ उतरि गेल ।

गणित आ विज्ञानक अतिरिक्त कोनो आन विषयकेँ नहि तँ हम एक बेरसँ दोसर बेर पढ़ैत छलहुँ आ नहिये एहि हेतु मास्टर साहेबे कहैत छलाह । कोनो विद्यार्थीकेँ मास्टर साहेब इतिहास आ नागरिक शास्त्रक किताबकेँ एकसँ दोसर-तेसर बेर पढ़ैत देखि जाइत छलाह तखन तँ ओहि विद्यार्थीक नामे ओहि विषयसँ पड़ि जाइत छल । आब ओ गणितो पढ़त तँ ओकरा सुनए पड़तैक जे बाबू ई इतिहास नहि छियैक जे कंठस्थ कए रहल छी । सैया-निनानबे अनठानबे-सन्तानबे-छियानबे-पनचानबे कहैत-कहैत आ बोराक आसनीकेँ बरखाक समयमे छत्ता बनओने पाँच-चारि-तीन-दू-एक-एक-एक करैत भागैत विद्यार्थी सभ । कहियो छुट्टीक दिन ज्योँ कबड्डी खेलाइ काल मास्टर साहेब साइकिल पर चढ़ल देखा पड़थि तँ कबड्डी-कबड्डी, मास्टर साहेब प्रणाम, कबड्डी-कबड्डी कहैत भागैत रहथि विद्यार्थी । आ एहने एकटा घटनामे हम मास्टर साहेबकेँ ठाढ़ भऽ कए साँस तोड़ि कए प्रणाम कएने रहियन्हि आ एहि क्रममे विपक्षी पार्टी द्वारा लोकि लेल गेल छलहुँ तँ एहि पर कोइलख बला मास्टर साहेब प्रसन्न भेल रहथि आ तकर चर्चा स्कूलमे सभक समक्ष कएने रहथि । बुझु जे गामक प्रवास, बादक समयमे एकटा पैघ संबल सिद्ध भेल छल । खड़ाम पहिरि कए गतिसँ दौगैत रही फेर बर्षामे आरि पर पिच्छड़ पर खड़ाम पहिरि कए दौगैत रही । पिच्छड़ पर खड़ाम नहि पिछड़ैत छल । बादमे हवाइ चप्पलक आगमन भेलाक बाद कतेक गोटे खसि-खसि कए डाँरपर गरम पानिक भाप लैत छलाह । अगिलही, किरासन

तेलक लाइन, रोशनाइक गोटी, लबनचूस, रबड़क बॉल, ओधिक गेंद, पसीधक रसक विषसँ पोखरिमे माछ मरलाक बाद भेल दू टोलक बीचमे बाझल मारि, बाढ़िक दृश्य देखबाक लेल जुटल भीड़, छोट-छोट गप पर होइत पंचैती, आमक मासमे आमक जाबीसँ बहराइत गछपक्कू आमक छटा, ई सभ टा अलोपित तँ नहि भऽ जाएत ।

''काका यौ, हम नहि लगेलिअन्हि कबकबाउछ''। ई गप कहैत हमर आँखिमे नोर आबि गेल छल । बनाइकेँ किछु गोटे छौड़ा सभ दलान पर सुतलमे कबकबाउछ लगा देने छलन्हि । कलम दिशिसँ खेला-कुदा कए सभ आबि रहल छल । महारक कातमे कबकबाउछक पात तोड़लक आ एकर पातकेँ चमड़ा पर रगड़लासँ होअएबला परिणामपर चर्चा होमए लागल । क्यो अपन चमड़ा पर लगेबाक हेतु तैयार नहि छल से दलान पर बनाइकेँ सुतल देखि हुनके देह पर पात रगड़ि देलकन्हि । पाछाँसँ हम अबैत छलहुँ आ सभ छौड़ा तँ निपत्ता भए गेल, बनाइक नजरि हमरा पर पड़लन्हि । से ओ काकाकेँ कहि देलखिन्ह । काका हमर कोनो गप नहि सुनलन्हि आ दस बेर कान पकड़ि कए उट्ठा-बैसी करबाक सजा भेटल । संगहि साँझमे संगी सभक संग खेलेबाक बदला काका आ हुनक भजार सभक संग खेत पथारक दिशि घूमबाक निर्णय भेल जाहिसँ हमर बदमस्ती कम होअए । बाढ़िक समय छल, नाओपर बाढिक दृश्य आ सिल्लीक शिकार । बादमे तँ एकर शिकारपर सरकार प्रतिबंध लगा देलक । मुदा मोन हमर टाँगल रहल गाम परक कल्पित खेल सभक दिस, जे हमर सभक संगी सभ खेलाइत होएताह । ई छल पहिल दिन । दोसर दिन बेरू पहर धरि हम एहि प्रत्याशामे छलहुँ, जे आइ फेरसँ काकाक संग जाए पड़त । ओना संगी सभकेँ हम ई भास नहि होमए देलियैक जे हम एको रत्ती चिन्तित छी आ ओ सभ नाओ आ सिल्लीक खिस्सा तन्मयतासँ सुनैत रहलाह । मुदा हमर मुखाकृति देखि कए काका पुछलन्हि, जे आइ हमरा सभक संग जएबाक मोन नहि अछि ? तँ हम नञि नहि कहि सकलियन्हि । मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारैत कहलियन्हि जे मोन तँ गामे पर लगैत अछि । तखन काकाकेँ दया लागि गेलन्हि आ एहि प्रतिबन्धक संग जे हम आब गामपर बदमस्ती नहि करब हमरा गाम पर रहबाक छूटि भेटि गेल ।

गाममे डेढ़ साल धरि रहलहुँ आ जखन बाबूजीक ट्रांसफर पटना भऽ गेलन्हि, तखन बड़का भैयाक संगे पहलेजाघाट आ महेन्द्रूघाट दऽ कए पटना आबि गेलहुँ। ओतए स्कूल सभमे प्रवेश परीक्षा होइत छल आ बाबूजी भाएकेँ छठासँ सतमाक हेतु आ हमरा पचमासँ छठा आ सतमा दुनू वर्गक हेतु प्रवेश परीक्षामे बैसओलन्हि। आ तकर बाद हमरा ई बुझबामे आएल जे किएक हमरा बाबूजी पचमेमे छठाक विज्ञान आ गणित पढ़ि लेबाक हेतु कहने छलाह । प्रवेश परीक्षामे ईएह दुनू विषय पूछल जाइत छल । अस्तु हमर छठा आ सतमा दुनू वर्गक लेल आ भाएकेँ सतमाक लेल चयन जिला स्कूलमे भए गेल । फेर शहरक सरकारीयो स्कूलमे

ड्रेस छलैक, से आश्चर्य । से दुनू गोटे बाबूजीक संग दोकान गेलहुँ आ ड्रेस सियाओल गेल, दू-दू टा हाफ पैंट आ एक-एकटा अंगा । स्कूलक पहिलुके दिन मारि होइत-होइत बचल । एकटा छौड़ा हमरा देहाती कहलक तँ से तँ हमरा कोनो खराप नहि लागल । ओहि उमरिमे देहाती शब्द हमरा नीके लगैत छल, मुदा आइ सोचैत छी तँ लगैत अछि जे ओ ई शब्द व्यंग्यात्मक रूपेँ कहने छल। फेर जखन ओ देखलक जे ई तँ नहि खौँझाएल तखन बंगाली-बंगाली कहनाइ शुरू कएलक । हम दुनू भाइ पातर दुबर आ शुभ्र-शाभ्र चिक्कन-चुनमुन लगैत छलहुँ, ताहि द्वारे ओ हमरा सभकेँ बंगाली बुझि रहल छल। हम ई व्यंग्य नहि सहि सकलहुँ आ ओकरा दिशि मारि-मारि कए छुटलहुँ । भाए बीच-बचाओ कएलक । आब ओ छौड़ा कानय-खीजय लागल आ पैघ वर्गक कोनो बदमाश विद्यार्थीकेँ बजाबए लेल गेल । फेर घुरि कए जे आयल तँ ओकर कानब-खीजब बन्न भए गेल छलैक, हमरा कहलक जे हमर भाग्य नीक अछि जे जकरा ओ बजाबए गेल छल से आइ स्कूल नहि आएल अछि । दू तीन दिन धरि हम ई गुन-धुन करैत रहलहुँ जे ओ ओहि बदमाशकेँ बजा कए नहि आनि लिअए । ओहिना किछु दिनुका बाद ओकरा फेर कोनो दोसर छौड़ासँ झगड़ा भेलैक आ ओहि दिन ओ हीरो छौड़ा स्कूल आएल छल । हमरे सोझाँमे ओ हमर कक्षामे आएल आ दोसर विद्यार्थीकेँ एक फैट पेटमे मारलकैक । क्यो बचबए लेल तँ नहि गेलैक मुदा बादमे जखन एकटा क्लासमे शिक्षक नहि अएलाह आ विद्यार्थी सभ खाली गप-शप कए रहल छल तखन एहि बातक निर्णय भेल जे आब ओहि विद्यार्थीसँ क्यो गप नहि करत आ क्लास टीचरसँ एहि गपक शिकाइत कएल जाएत जाहिसँ ओ ओहि बदमाश विद्यार्थीक क्लास टीचरकेँ एहि घटनाक विषयमे बताबथि । आब ओ पिनकाह विद्यार्थी शुक-पाक करए लागल । फेर ओ ओहि विद्यार्थीक लग गेल, ओकरा कान भरि आएल जे सभ ओकरा विरुद्धमे चालि चलि रहल अछि । ओ बदमाश आबि कए सभकेँ उठबाक लेल कहलक मुदा क्यो नहि उठल । तकन ओ हमरा कहलक जे उठू । हम उठि गेलहुँ आ तखन ओहिना एक-एक कऽ कए तीन चारि गोटेकेँ उठेलक आ फेर सभकेँ उठबाक लेल कहलक । सभ उठि गेल । तखन सभकेँ धमकी देमए लागल । मुदा एहि बेर हमर सभक क्लास मोनीटर किछु हिम्मतसँ काज लेलक आ ओकरा ओहि छौड़ाक विषयमे कहए लागल । हमरा देखा कए कहलक जे एकरा देखैत छी? कनियो बदमाश लगैत अछि, एकरो अहाँक नाम लऽ कए दबाड़ि रहल छल । ओ छौड़ा तँ हुण्ड छल से ओकर पारा चढ़ि गेलैक आ हमर वर्गक पिनकाहा छौड़ाकेँ चेतौनी देलकैक जे आइ दिनसँ कनैत-खिजैत ओकरा लग नहि आओत आ ओकर नाम लऽ कए ककरोसँ झगड़ा नहि करत । एहिना स्कूल चलि रहल छल आकि एक दिन एकटा छौड़ा वर्गमे पिहकी मारि देलकैक । ओ छौड़ा बीचहिमे बम्बई भागि गेल छल बाल कलाकार बनबाक लेल । घुरि कए आएल तँ वर्ग शिक्षक पुछलन्हि जे किएक घुरि अएलहुँ । तँ ओ हुनका कहलकन्हि जे सभ ओतए

कहलक जे एतए तँ सभ बी.ए., एम.ए. अछि, अहाँ कमसँ कम मैट्रिको कए लिअह । आब पिहकीक बाद वर्ग शिक्षक पढ़ाइ छोड़ि कए ओकर अन्वेषणमे लागि गेल । पिहकी कोन दिशिसँ आएल । बहुमतक आधार पर एक कातकेँ छाँटि देल गेल । आब आगूसँ आएल आकि पाछूसँ । ताहि आधार पर सेहो एकटा बेंच निर्धारण भए गेल । ओहि बेंच पर छह गोटे छलाह । आब ई निर्धारण होमए लागल जे बाम कातसँ आयल आकि दहिनसँ । फेर छहमे सँ दू गोटेक निर्धारण बहुमतक आधार पर कएल गेल । ओहिमेसँ एकटा हमरा लोकनिक बम्बइया हीरो छलाह, जनिकर बम्बइक खिस्सा टिफिनसँ लऽ कए लेजर क्लास धरि चलैत रहैत छल । मुदा एहि दुनू गोटेमे १:१ केर टाइ भए गेल कारण क्यो मानए हेतु तैयार नहि जे पिहकी के मारलक" ।

एकर बाद डायरी खाली छल । नन्द बेटाकेँ बजा कए डायरी दए देलन्हि आ मात्र ई कहलन्हि जे पढ़ाई पर ध्यान दिअ । एहि बात पर लज्जित होएबाक कोनो बात नहि छल मुदा आरुणिकेँ हुनकर भाए बहिन एहि गपक लेल बहुत दिन धरि किचकिचाबैत रहलखिन्ह । अस्तु एक दिन ओ डायरीकेँ फाड़ि देलन्हि आ ई आत्मकथात्मक उपन्यास पूर्ण होएबासँ पहिनहि खतम भए गेल ।

नन्दक अव्यव्स्थाक विरुद्ध शुरू कएल गेल संघर्ष किछु दिनका विराम लेने छल । गाममे बच्चा सभ डेढ़ साल रहल छलन्हि, दरमाहा बहुत दिन धरि बन्द छलन्हि । गाममे पैघ भाए एकटा भावी राजनीतिज्ञकेँ कहि कए नन्दक पदस्थापन क्षेत्रीय काजसँ हटा कए ऑफिसमे चित्र परियोजना आकि डिजाइनमे करबाए देने छलखिन्ह । संगे ईहो कहने छलखिन्ह जे अपन ऑफिस जाऊ आऊ आ बच्चा सभ पर ध्यान दिअ । सभसँ मिलि जुलि कए रहू । नन्द पटना आबि कए भाएक सभ गप पर ध्यान देने छलाह । पटनामे बेटीक कॉलेजमे नामांकन करबाए महाविद्यालयक पार्श्वमे किरायापर घर ताकलन्हि । दुनू बेटाक नामांकनक हेतु प्रवेश परीक्षा केर फॉर्म सभ भरबाए सभकेँ पटना बजा लेलन्हि । भातिजकेँ कहलखिन्ह जे सभकेँ लए कए आबि जाऊ आ पहलेजाघाटमे बच्चा बाबू बला नहि वरन बिहार सरकारक स्टीमर पकड़बाक आदेश देलखिन्ह । कारण एकटा निजी स्टीमर बच्चा बाबूक सेहो चलैत छल मुदा ओ बेशी पसेन्जर लए कऽ चलैत छल, संगहि सरकारी स्टीमर अपन समयसँ चलैत छल, ओहिमे पैसेंजर रहए वा नहि । सरकारी स्टीमरमे यात्रीक संख्या सीमित छल ताहि हेतु टिकट केर नियमित हिसाब छल आ सभ यात्रीक बीमा होइत छल, ई बात निजी स्टीमरमे नहि छल। भातिजक संग पत्नी आ पुत्र-पुत्री सभ आबि गेलखिन्ह । गंगा ब्रिज कॉलोनीमे नन्द एकाकी रहैत छलाह । परिवारक लोककेँ सेहो आसपड़ोससँ बेशी मेल-जोल करबाक अनुमति नहि देने छलाह । मुदा पटनामे सभटा उनटि गेल छल । पड़ोसमे एकटा रिटायर्ड फौजी छलाह, एकटा बिहार सरकारक पुलिस छलाह आ

एकटा बिहार सचिवालयक कर्मचारी । नन्द दुनू बेटाकेँ लए अगिला दिन तीनू गोटेक घर गेलाह आ सभसँ नमस्कार-पाती करबओलखिन्ह । बेटा-बेटी सभ स्कूल जाए लागल छलन्हि । नन्द पाँच किलोमीटर ऑफिस पएरे जाथि आ घुरती काल घरक काज-उद्यम सेहो करैत आबथि । जेना बृहस्पतिकेँ हाट लगैत छल तँ ओतएसँ हरियर तरकारी, चाउर दालि इत्यादि आनब, ई सभ । हाट रविक छुट्टीक दिन सेहो लगैत छल आ ओहू दिन अपने जा कए सभटा घरक काज करैत छलाह । बच्चा सभक काज मात्र पढ़बा धरि सीमित छल । दूध पैकेट बला अबैत छलन्हि कारण उठाना दुहबा कए अनबामे बच्चा सभक पढ़ाइमे भाँगठ पड़ैत । बड़का बेटा जे गंगा ब्रिज कॉलोनीमे कहियो ककरो फूल उखाड़ि लैत छल आ कहियो ककरो खिड़की पर गिट्टी फेंकि दैत छल, डेढ़ सालक ग्राम प्रवासक बाद शान्त भए गेल छलन्हि । नन्दकेँ मोन छन्हि जे कॉलोनीमे एक बेर बेटाकेँ लए पड़ोसीक ओहिठाम गेल छलाह आ पड़ोसीक पत्नीसँ बेटा क्षमा याचना कएने छलखिन्ह । कारण कार्यालयसँ अएला उत्तर ज्ञात भेल छलन्हि जे बेटा हुनका पर गिट्टी फेँकने छलखिन्ह, जखन ओ बेचारी खिड़की लग ठाढ़ि बाहर दिशि किछु देखि रहल छलीह । आ छोट बेटा एक बेर कोनो पैघ बच्चाकेँ पाथर फेंकि कए मारने छलखिन्ह, जखन ओ बच्चा साइकिल पर चढ़ल छल । भेल ई छल जे ओ पैघ बच्चा कॉलोनीक एक चक्कर काटि कए साइकिल लौटेबाक अपन वचनक पालन नहि कएने छल आ घुरलाक बाद -दोसर चक्कर लगा कए अबैत छी- ई बजैत-बजैत साइकिल लए आगू बढ़ि रहल छल । छोटका बेटा क्षमा याचना करबासँ सेहो मना कए देने छलखिन्ह कारण ओ सोचैत छलाह जे हुनकर कोनो गलती नहि छलन्हि । बेश तखन एहि बेर बच्चा सभकेँ जखन नन्द पड़ोसी सभसँ भेँट करबाबए लेल गेल छलाह तावत धरि बड़का बेटा तँ पूर्णतया अपन चञ्चल स्वभावक विपरीत स्वभावक भए गेल छलाह मुदा छोट बेटा अपन स्वभावपर दुराग्रह करैत स्थिर छलाह । नन्दक दुनू बेटा वर्गमे प्रथम अबैत छलन्हि । किछु दिन धरि सभटा ठीक-ठाक चलैत रहल । पुरनका सभटा चिन्ता-फिकिर लगैत छल जेना खतम भए गेल होअए । गामक एक दू गोटे सेहो पटनामे रहैत छलाह । महिनामे एकटा रवि निश्चित छल, जाहि दिन सभ गोटे कतहु घुमए लेल जाइत छलाह । एक रवि कोनो गाँआक अहिठाम तँ कोनो आन बेर चिड़ियाखानाक यात्रा । एक बेर चिड़ियाखाना गेल रहथि सभ गोटे तँ आरुणि नन्दकेँ पुछलखिन्ह-

“हमरा सभ आएल छी चिड़ियाखाना, बाहरमे बोर्ड लागल अछि बोटेनिकल गार्डेनक आ गेटक ऊपरमे लिखल अछि बायोलोजिकल गार्डेन”।

“पहिने सोनपुरमेला सभमे अस्थायी चिड़ै सभक प्रदर्शन होइत छल आ लोकक जीह पर ओकरा लेल चिड़ियाखाना शब्द आबि गेल । मुदा एतए तँ कताक बीघामे वृक्ष सभ लागल अछि, प्रत्येक वृक्ष पर ओकर नाम आ वनस्पतिशास्त्रीय विवरण सेहो लिखल अछि आ ताहि द्वारे एकर नाम अंग्रेजीमे

वनस्पति उद्यानक लेल बोटेनिकल गार्डन पड़ि गेल । मुदा बादमे अनुभव कएल गेल जे जन्तु आ वनस्पतिक रूपमे दू तरहक जीवविज्ञान अछि । एहि उद्यानमे वनस्पति, चिड़ै आ बाघ-सिंह इत्यादि सेहो प्रदर्शित अछि । ताहि द्वारे एकर नाम बायोलोजिकल गार्डन वा जैविक उद्यान दए देल गेल । पुरनका बोर्ड जतए-ततए रहिये गेल''।

एक बेर सभ गोटे गेल रहथि एकटा गाँआक अहिठाम । ओतए चर्चा चलए लागल जे गंगा पुल केर उद्घाटन दू तीन सालसँ एहि साल होएत- अगिला साल होएत एहि तरहक चरचा अछि । नन्दसँ ओ लोकनि पुछलखिन्ह-

''अहाँक बुझने कहिया धरि एहि पुलक उद्घाटन भए जएतैक । मुख्यमन्त्री तँ कहने छथि जे एहि साल एकर उद्घाटन भए जएतैक''।

''कहियो नहि होएतैक । दू-तीन सालसँ तँ सुनि रहल छियैक। यावत एकटा पाया बनैत छैक तँ ओहिमे ततेक ने बालु देने रहैत छैक जे किछु दिनमे दरारि पड़ि जाइत छैक । फेर राता-राती ओकरा तोड़ि कए फेरसँ नव पाया बनेनाइ शुरू करैत जाइत अछि''।

गंगा पुलक चरचा सुनि नन्दक सोझाँ पाया परसँ गंगाजीमे खसैत जोन-मजदूर सभक चित्र नाचि जाइत छलन्हि । नन्दक विवाद ठिकेदार आ संगी अभियन्ता सभसँ काजक संबंधमे होइत रहैत छलन्हि । एकटा पायाक कार्यक संबंधमे नन्द अपन विरोध प्रकट कएने छलाह, किछु दिनुका बाद ओ पाया फाटि गेल, एकटा पैघ दरारि पड़ि गेल छल बीचो-बीच । राता-राती ठिकेदार-अभियन्ता लोकनि ओकरा तोड़बेलन्हि । राति भरिमे कतहुसँ ओतेक विशाल पाया कोना टूटि सकैत छल, कैक दिन लगैत? से अगिला दिन दरारिक स्थान पर तिरपाल बिछाओल गेल, जे ककरो नजरि नहि पड़ि जाइ । एहि घटनाक चरचा बहुत दिन धरि होइत रहल । नन्दक आदर अपन नीचाँक कर्मचारीक बीच एहि घटनासँ बढ़ि गेल छलन्हि मुदा आब ठिकेदार आ अभियन्ता लोकनिक बीच नन्द रावण बनि गेल छलाह । सभ टा काज ठीक-ठाक चलि रहल छल । नन्दक बच्चा सभ गणित आ विज्ञानक अंकगणितीय प्रश्न सभ जनबरीसँ मार्च धरि बना लैत छलन्हि । मुदा घरक सभ काज किएक तँ नन्द स्वयं कए लैत छलाह, नन्दक बच्चा सभ स्कूल गेनाइ आ घर अएनाइक अतिरिक्त बाहरी दुनियासँ अनभिज्ञ छलाह । कतओ घुमए जाथि तँ नन्दक संगे, एक तरहेँ बुझू जे नन्दक बच्चा सभक व्यक्तित्व एकटा अलगे रीतिसँ निर्मित भए रहल छलन्हि । नन्द सामान्य जीवन व्यतीत कए रहल छलाह मुदा गंगा पुलक कोनो चरचा हुनकर अन्तरमनमे हुलिमालि शुरू कए दैत छलन्हि । आ ताहि द्वारे शनैः-शनैः गाँआ-घरुआक आ दोस्त-महीम लग जएबाक क्रम कम होमए लागल । फेर नञि तँ कोनो दोस्त-महीम, नञि तँ कोनो दोस्तक घर अएनाइ-गेनाइ ।

ओहि समयमे मीडिअम वेभक एकटा जापानी ट्रांजिस्टर नन्दक घरमे छलन्हि, वैह मनोरंजनक एकमात्र साधन छल । हुनकर बच्चा सभ एकरा रेडियो कहैत

जाइ छलाह, आ नन्द बुझबैत छलखिन्ह जे रेडियो बड़ड पैघ होइत अछि, ट्रांजिस्टर आकारमे छोट होइत अछि । नन्द जखन नोकरी शुरू कएने रहथि तँ बुश कम्पनीक एकटा रेडियो गाम लए गेल छलाह । सौँसे टोलबैय्याक भीड़ जुमि गेल छल रेडियो सुनबाक लेल । मुदा ई जापानी मीडिअम वेभ रेडियो मझोला आकारक बैटरीसँ चलैत छल आ खूब बैटरी खाइत छल, माने ई ट्रांजिस्टर । बैटरी प्रायशः महिनाक दस तिथि धरि चलैत छल । बैटरी एक महिनामे एक बेर अबैत छल, महिनबारी किरानाक वस्तुजातक संग । से नन्दक बच्चा लोकनिक मनोरंजनक ओ साधन महिनामे बीस दिन काज नहि करैत छल । आ ताहि द्वारे बच्चा सभ पलंगक दुनू कात दू टा गोल पोस्ट बनबैत छलाह। ई गोल पोस्ट प्लास्टिकक एक-दोसरामे जुड़य बला खेल सामग्रीसँ बनैत छल, ई खेल सामग्री पता नहि कतेक दिनसँ घरमे पड़ल छल, प्रायः गंगा ब्रिज कॉलोनीमे कोनो संगी देने छलखिन्ह । नन्दक दुनू बेटा दुनू दिशि ककबाक स्टिकसँ खेलाइत छलाह। ए बी सी डी क कचकाराक खेल-सामग्री बॉल बनैत छल । खेलक निअम सेहो भिन्न छल। मात्र एक शॉटमे एक गोल पोस्टसँ दोसर गोल पोस्टमे गोल करए पड़ैत छल । एहि तरहक कैकटा नूतन क्रीड़ाक जनक छलाह नन्दक दुनू पुत्र। एहि तरहेँ समय बितैत गेल । बाहर एनाइ-गेनाइ किछु कम भैये गेल छल । तकर बाद दूटा घटना भेल । एक तँ छल गङ्गा पुलक उद्घाटन । आ दोसर छमाही परीक्षामे नन्दक दुनू बेटा पहिल बेर प्रथम स्थान प्राप्त नञि कए सकल छलाह । एकर बाद नन्द असहज होमए लगलाह । ओना एहि दुनू घटनामे कोनो आपसी सम्बन्ध नहि छल मुदा नन्दक अन्तर्मनक जे हुलिमालि छलन्हि से बढ़ए लगलन्हि । आब ओ किएक तँ सरकारी तन्त्रसँ न्याय नञि पाबि सकल छलाह आ पुत्र लोकनि सेहो पढ़ाइमे पिछड़ि गेल छलन्हि, से अदृश्य शक्तिक प्रति हुनक आसक्ति फेरसँ बढ़ए लगलन्हि । सभ परिणामक कारण होइत छैक आ कारणक निदान जखन दृश्य तन्त्र द्वारा नञि होइत अछि, तखन अदृश्यक प्रति लोकक आकर्षण बढ़ि जाइत अछि । आ नन्द तँ अदृश्यक प्रति पहिनहिसँ, बाल्यकालेसँ आकर्षित छलाह ।

''नन्द छथि''?

एक गोट अधवयसू, मुँहक दाँत पान निरन्तर खएलासँ कारी रंगक भेल, पातर दुबर पिण्डश्याम रंगक, नन्दक घरक ग्रील खटखटा कए पुछलन्हि ।

''नहि । ऑफिससँ नहि आएल छथि मुदा आबैये बला छथि । भीतर आउ, बैसू''- नन्दक बालक कहलखिन्ह ।

''हम आबि रहल छी कनेक कालक बाद''।

किछु कालक बाद नन्द सुरसुरायल अपन धुनमे, जेना ओ अबैत छलाह, बिना वाम-दहिन देखने, घर पहुँचलाह । पाछाँ लागल ओहो महाशय घर पहुँचलाह। नन्द हुनका देखि बाजि उठलाह-

''शोभा बाबू। कतेक दिनुका बाद''।

''चिन्हि गेलहुँ''- शोभा बाबू बजलाह ।

आ एकर उत्तरमे नन्द बैसि गेलाह आ हुनकर आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलन्हि ।

''एह बताह, अखनो धरि बतहपनी गेल नञि अछि''। शोभाबाबूक अन्तर्मन एहि तरहक आदर पाबि गदगद भए रहल छल।

शोभाबाबू छलाह कछबी गामक । नन्दक सभसँ पैघ बहिनक दिअर । बहिन बेचारी तँ मरिए गेल छलीह, भगिनी मामागाममे - नन्दक गाम मेहथमे- पेट दुखएलासँ अकस्माते काल-कवलित भए गेल छलीह । नन्दक बहिनौउ बढ़िया चास-बास बला घोड़ापर चढ़ि लगान वसूली लए निकलैत छलाह । मुदा भगिनीक मुइलाक बाद बहिनौउसँ सम्बन्ध कम होइत गेल छलन्हि । कोनो जानि बुझि कए नहि वरन् अनायासहि । आ आइ पचीस सालक बाद शोभाबाबूसँ पटनामे भेँट भेल छलन्हि ।

''ओझाजी कोना छथि। हमरासभ बहुत कहलिअन्हि जे दोसर विवाह कए लिअ मुदा नहि मानलन्हि''।

''आब ओ पुरान चास-बास खतम भए गेल । जमीन्दारी खतम आ चास-बास सेहो । मुदा खरचा वैह पुरनके । से खेत बेचि-बेचि कतेक दिन काज चलितए। सभ बाहर दिस भागए लागल । मुदा हम कहलिअन्हि जे अहाँ हमरा सभसँ बहुत पैघ छी, बहुत सुख देखने छी, से अहाँ बाहर जाए कोनो छोट काज करब से हमरा सभकेँ नीक नहि लागत''।

शोभा बाबू कंठमे पानक पात आबि जएबाक बहन्ना कए चुप भए गेलाह, मुदा सत्य ई छल जे हुनकर आँखि आ कंठ दुनू भावातिरेकमे अवरुद्ध भए गेल छलन्हि। किछु काल चुप रहि फेर आगाँ बाजए लगलाह-

''से कहि बिना हुनकर औपचारिक अनुमति लेने घरसँ चूड़ा-गूड़ लए निकलि गेलहुँ । रने-बने सिमरिया स्नान कए नाओसँ गंगापार कएलहुँ आ सोहमे पटना पहुँचि गेलहुँ । पहिने एकटा चाहक दोकानपर किछु दिन काज कएलहुँ । ओहि दिनमे पटनामे अपन सभ दिसका लोक ओतेक मात्रामे नहि रहथि । अवस्थो कम छल । फेर कैक साल ओतए रहलहुँ, बादमे पता चलल जे एहि बीच गाममे तरह-तरहक गप उड़ल । जे मरा गेल आकि साधु बनि गेल शोभा । फेर जखन अपन चाहक दोकान खोललहुँ तखन जा कए गाम एकटा पोस्टकार्ड पठेलियैक । आब तँ बीस सालसँ बी.एन.कॉलेजिएट स्कूल लग चाहक दोकान चला रहल छी । ओतहि पानक स्टॉल सेहो लगा देने छियैक''।

''सभटा दाँत टूटि गेल शोभा बाबू''।

''चाहक दोकानमे रहैत-रहैत चाह पीबाक हिस्सक भए गेल । मुदा ताहिसँ कोनो दिक्कत नहि भेल । मुदा जखन पानक दोकान आबि गेल तखन गरम चाह पिबियैक आ ताहिपरसँ ठंढ़ा पान दाँत तरमे धए दियैक से ताहिसँ गरम-सर्द भेलासँ सभटा दाँत टूटि गेल''।

एहि गपपर नन्द आ शोभा बाबू दुनू गोटे हँसि पड़लाह ।

फेर गप-शप चलए लागल । शोभाक भौजी तँ मरि गेल छलीह मुदा ज्योँ भतीजी जिबैत रहितथि तँ मेंहथ कछबीक बीच संबंध जीवित रहैत, मुदा बिपति जे आएल तँ सभटा एके बेर । नन्दकँ मोन पड़लन्हि जे भगिनी खेलाइत छलीह पड़ोसमे आ आबि कए नन्दक माएकँ कहलन्हि, जे फलना-अँगनाक फलना गोटे पेटपर हाथ राखि देलकन्हि आ तखने तेहन पेट-दर्द शुरू भेलन्हि जे कतबो ससारल गेलन्हि तैओ नहि ठीक भेलन्हि आ नन्दक आँखिक सोझाँमे बचियाक रहस्यमय मृत्यु भए गेलैक ।

शोभाबाबू कहलन्हि- ''ओ बचियो टा जे जीबति रहितए तँ सम्बन्ध जुड़ल रहितए''।

मुदा नन्द जेना कतहु दोसर ठाम चलि गेल छलाह । अपन ओहि विषयपर जे हुनका प्रितगर छलन्हि, बच्चेसँ । ई जे पारिवारिक जंजाल, हाटसँ तरकारी आनब, बच्चाक परीक्षाक परिणामक चिन्ता करब, ई सभ अपन अग्रजक कहलासँ कुमोनसँ कए रहल रहथि ।

गंगा ब्रिजक उद्घाटन भए गेल आ दुनू पुत्र वर्गमे प्रथम नहि केलकन्हि । फेर पुत्री सेहो विज्ञान लेने छलीह, अन्तर स्नातकमे, ताहूमे जीवविज्ञान । मुदा शनैः-शनैः छमाही आएल, वार्षिक परीक्षा आएल मुदा सभकँ अंक तँ नीक आबन्हि, मुदा प्रथम स्थान नहि प्राप्त होइत छलन्हि । गंगा-ब्रिज आ परीक्षाक अंकमे तँ कोनो परस्पर संबंध नहि छल । मुदा नन्दक विश्वास माता-पिताक कर्मसँ पुत्र-पुत्रीक आगाँ बढ़बापर छल । गंगा-पुल निर्माणमे जे भ्रष्टाचार छल ओकर विरुद्ध अभियानमे हुनकर विफलता आ अग्रजक कहलापर पारिवारिक उत्तरादायित्व पूरा करबाक प्रयास एकर कारण छल । एहि बीच एक बेर बच्चा सभक काका आ नन्दक अग्रज पटना डेरापर अएलाह। नन्द गोर लागि कए कहलन्हि-

''गंगा पुल देने आएल छी आकि स्टीमरसँ''।

''आएल तँ छी स्टीमरसँ, बुझले नहि छलए जे गंगा पुलक उद्घाटन भए गेल छैक । से घुरब तँ पुलक रस्ते जाएब । सुनैत छियैक जे नबका-नबका डीलक्स कोच सभ ढेरक-ढेर खुजल छैक''।

''नहि कोनो जरूरी नहि अछि पुलसँ जएबाक । बड़ड गड़बरी भेल छैक एकर निर्माणमे । कहियो धसि जएतैक''।

अग्रजकँ किछु बुझि नहि पड़लन्हि जे की भेल अछि नन्दकँ ।

''मोन ठीक रहैत छह ने । दमा बेशी तंग तँ नहि कए रहल छह''- दुनू भाँए दमाक रोगी छलाह।

''नञि से सभ ठीक अछि । मुदा अहाँक कहलासँ सभटा पुरान गप बिसरबाक चेष्टा कएलहुँ । ओहि पुल निर्माणमे जे सभ भेल, मजदूर सभक पायापर सँ घुरछाही खा कए खसब देखैत रहलहुँ, सैकड़ामे मजदूरसभ मरि गेल। आ भ्रष्टाचारसँ अपन घर भरलन्हि अभियन्ता लोकनि । आब जखन पुलक उद्घाटन भेल तखन मात्र ३० टा मजदूरक नाम शिलापर लिखि कए टाँगि देलन्हि आ सभ अभियन्ताकेँ पुरस्कारक घोषणा भए गेल । कहिया ई पुल टूटि कए खसि पड़त तकर कोनो ठेकान नहि । हम संघर्ष शुरू कएलहुँ तँ दरमाहा बन्द करा दइ गेल । सभ स्थानांतरणक बाद दरमाहा बन्द भए जाइत अछि आ परिवारकेँ गाममे छोड़ए पड़ैत अछि । अहाँक कहलासँ संघर्षकेँ छोड़ि एहि स्थानांतरणमे अएलहुँ । बिसरए चाहलहुँ सभटा । खसैत लहास, कनैत हुनकर सभक परिवार । सपनामे अबैत रहल ई सभ सहस्त्रबाढ़निक रूप बनि कए । हमरे सन कोनो शापित आत्मा अछि ओ सहस्त्रबाढ़नि जे अपन संघर्ष अधखिज्जू छोड़ि मरि गेल होएत आ आब ब्रह्माण्डमे घुरिआ रहल अछि । आब देखू तीनू बच्चाक परीक्षा परिणाम, सभदिन प्रथम करैत अबैत रहथि, आब की भए गेलन्हि। हम जे संघर्ष बीचेमे छोड़लहुँ तकर छी ई परिणाम''। नन्द हबोढ़कार भए कानए लगलाह ।

''धुर बताह । जे भ्रष्टाचार कएलन्हि से ने जानताह । जे मजदूर लोकनिक अधिकार मारलन्हि तिनका ने फल भेटतन्हि । अहाँ तँ अपना भरिसक संघर्ष करबे कएलहुँ । आ अपन पारिवारिक जीवन के नञि चलबैत अछि । दोसराक गलतीक द्वारे अपन बच्चासभकेँ बिलटऽ देबैक । एहिमे एकर सभक कोन कसूर छैक?''

फेर दुनू भाएँक गाम-घरक गप-शप शुरू भेलन्हि । नन्द बजैत-बजैत कतहु बीचमे गुम भए जाइत छलाह । अग्रजकेँ बुझल छलन्हि जे ई बिहारि आब नहि थम्हत । बोल-भरोस दैत रहलाह मुदा बच्चेसँ देखने छथि नन्दक जिदपना, नहि जानि आब की करत । भाबहुसँ सोझाँ-सोँझी गप नहि होइत छलन्हि । मुदा अपरोक्ष सम्बोधन कए कहलन्हि-

''कनियाँ आब अहींपर अछि । बच्चा सभपर ध्यान राखब''।

नन्द अग्रजकेँ संग लऽ जा कए महेन्द्रूघाटमे स्टीमरपर छोड़ि अएलाह, कारण हुनका डर छलन्हि जे कतहु ई बीचेमे बससँ पुलक रस्ते नहि बिदा भए जाथि आ पुल तँ आइ नहि तँ काल्हि धसबे करत ।

तकर बाद ज्योतिष कुण्डली इत्यादिक खोज-बीन प्रारम्भ केलन्हि नन्द । भिन्न-भिन्न तरहक पाथर सभ, रत्न सभ बच्चा सभक हाथमे देलन्हि आ अपन आँगुरमे पहिरए लगलाह । एक बेर हनुमान चलीसा कीनि कए अनलन्हि तँ जतेक गोटे घरमे छल सभक लेल एक-एकटा आनि लेलन्हि । पाँच-दस टा फाजिले

घरमे रहैत छल, लोक सभक लेल । जे बाहरसँ आबथि हुनका एक-एक टा हनुमान चलीसा पकड़ा देल जाइत छलन्हि । एहि धोखा-धोखीमे एक दिन नन्दकेँ एकटा ठक तान्त्रिकसँ भेँट भए गेलन्हि । नन्दक मनोविज्ञानकेँ ओ तेनाकेँ पकड़लक जे नन्द हुनका भगवानक दूत बुझए लगलाह । ओ तांत्रिक अपना लग सभ वस्तुक समाधान रखने छल, भ्रष्टाचारीकेँ दण्ड दिआ सकबाक, बच्चा सभक रिजल्ट नीक करेबाक, सभकेँ स्वस्थ रखबाक आ आर आर तरहक समस्या सभक । ई सभटा समस्याक समाधानक आधार छल तंत्र विज्ञान, जकर विश्वसनीयतापर कोनो प्रकारक अविश्वास नन्दकेँ कहियो नहि छलन्हि । ओ तान्त्रिक नन्दसँ गुप्त पूजा-पाठ लेल पाइ-कौड़ीक माँग करए लागल । ओ तान्त्रिक कहियो कहन्हि जे माता सपना देलन्हि अछि जे आब दुष्टक नाश होएत। आबए दिऔक आसिन, शारदीय नवरात्रमे सम्पूर्ण सिद्धि भए जाएत । फेर मारि रास पूजा पाठक विधि, शवासन-योग आदि बता देलकन्हि नन्दकेँ आ नन्द ओहि सभ विधिक अनुसरण ओहिना करए लगलाह जेना एकटा विद्यार्थी अपन गुरुक पाठक अभ्यास निअमक अनुरूप करैत अछि । आसिन भरि सभ काज छोड़ि नन्द एहि सभमे लागल रहलाह मुदा आसिन आएल आ चलिओ गेल मुदा नञि किछु हेबाक छल आ ने किछु भेल । आसिनमे कहल गेल जे आब भ्रष्ट अभियन्ता सभकेँ सजा भेटबे करतैक, आबए दिऔक बरखा । एहिना साल बीति गेल मुदा सजा दिअएबाक जे समय सीमा छल से आगाँ बढ़ैत रहल । पंडितजीकेँ किछु आर्थिक समस्या सेहो अएलन्हि आ नन्दकेँ तकर भार वहन करए पड़लन्हि । घर-द्वारपर पंडितजीक बच्चा सभ सेहो तांत्रिक विद्या शुरू कए देलक। पलंगक नीचाँ भगवती- ई शब्द पंडितजी वा तांत्रिकजीक बच्चा बाजथि आ नन्द पलंगक नीचाँ भगवतीकेँ ताकए लागथि । फेर पंडितजी विवाह-दानक प्रस्ताव अपन पुत्र-पुत्रीक राखए लगलाह, नन्दक इंजीनियर भातिजसँ अपन पुत्रीक आ अपन पुत्रसँ नन्दक पुत्रीक । आब नन्दक मोन उचटि गेलन्हि, यावत अपना धरि गप सीमित छलन्हि तावत धरि स्वीकार छलन्हि मुदा बाल-बच्चाक अहित हुनका कहियो स्वीकार नहि भेलन्हि । एम्हर गामक एक-दू गोट नन्दक भातिज आ नन्दक भैया सेहो तांत्रिककेँ घरपर जाए रबाड़ि देलखिन्ह, से ओहो अन्तमे स्वीकार कए लेलक जे ओकरा कोनो तंत्र-मंत्र नहि अबैत छैक आ नहिये ओ एहि विधिसँ ककरो सजा दिआ सकैत अछि । नन्दसँ लेल पाइ ओ घुरा देत ओ ई गप सेहो कहलक, मुदा कहियो पाइ घुरा नहि सकल । नन्दक लेल ई एकटा पैघ आघात छलन्हि। भक्षी गामक ओहि तांत्रिकक घरक बगलसँ जाथि मुदा नहि तँ वैह टोकैत छलन्हि आ नहिये नन्द ओकरा टोकैत छलखिन्ह । एम्हर नन्दक पुत्रीक विवाह भए गेलन्हि आ नन्द जेना सभ दिससँ आसरा छोड़ि बिना लक्ष्यक जिनगीक पथपर आगाँ बढ़ए लगलाह ।

पएरे ऑफिस गेनाइ-एनाइ, साँझमे सोचैत रहनाइ । किछु ग्रंथ सभक जे पठन होइत छलन्हि सेहो बन्न भए गेल छलन्हि । बच्चा सभक संग बैसि कए जे पढ़ैत छलाह सेहो आब कहाँ भऽ पबैत छलन्हि । फगुआ आ दुर्गापूजामे गाम जेबाक जे क्रम छलन्हि सेहो आब टूटि रहल छलन्हि । पूरा परिवार आब मात्र दुर्गापूजामे गाम जाइत रहथि । मुदा नन्द फगुआमे असगरे गाम जेनाइ नञि बिसरैत छलाह । एहिना गाम जाइ आबएमे नन्द गाममे एकटा दूरक पीसाक एहिठाम जाए आबए लगलाह । पीसा कालीक भक्त रहथि । हुनकर गाम नन्दक गामक बगलमे छलन्हि । बेचारे नीक लोक । नन्द हुनका लग जाथि आ प्रवचन सुनथि । फेर हुनकासँ दीक्षा सेहो लेलन्हि । काली-सहस्त्रणामक पाठक अतिरिक्त आर किछु नञि, नन्द भरि दिन ओही पाठमे लागल रहथि । नन्दक मोनमे डाइन-जोगिन सभक विचार अबैत रहैत छलन्हि । आस-पड़ोसक लोककेँ शंकाक दृष्टिएँ देखैत रहैत छलाह । बच्चा-सभक संग परीक्षा दिआबय जाइत छलाह, शंकित मोने जे हुनकर कोनो शत्रु हुनकर बच्चा सभकेँ हानि नञि पहुँचाबए । मुदा पीसाजीसँ दीक्षा लेलाक बाद हुनकामे विरक्तिजनित आत्मविश्वास आएल छलन्हि । फेर सभटा काज मन्थर गतिसँ होमए लागल । बच्चा सभक पढ़ाइ-लिखाइ, ओकर सभक नोकरी-चाकरी । वैह मध्यम वर्गक जोड़ल पाइ, वैह मध्यमवर्गीय आकांक्षा । बिआह-दानक झमेला । घरक आ बाहरक छोट-मोट वाद-विवाद । बच्चा सभक विश्वसँ प्रतियोगिता करबाक साहस देखि नन्द जेना आर आश्वस्त भऽ गेल छलाह । कारण घरसँ बाहर कहियो हुनकर बच्चा सभ निकलैत नहि रहए । घर अएलाक बाद दोस-महीम सभ सेहो नहि । बाहरक दुनियाँसँ तैयो प्रतियोगिता कए रहल छल । प्रतियोगिता परीक्षाक लिखित परीक्षामे उत्तीर्ण भऽ जाइत छलाह मुदा साक्षात्कारमे भाषा आ प्रान्तक गप आबि जाइत छलन्हि । नन्द बच्चा सभक कहियो ओहि तरहक वातावरणमे पालन नञि कएने छलाह से बच्चो सभ आश्चर्यचकित भऽ जाइत छलाह जे ई कोन नव परिवेश अछि । मुदा फेर नन्दक दुनू पुत्र नोकरीमे लागि गेलाह । आरुणिसँ नन्दकेँ जतेक पैघ पदक आशा छलन्हि से तँ ओ नञि पाबि सकल रहथि मुदा भारत सरकारक बी ग्रुपक नोकरी भेटि गेल छलन्हि हुनका । जमाय सेहो अभियन्ता छलखिन्ह ओ सेहो सरकारी सेवामे लागि गेलाह । दोसर बेटा सेहो बैंकमे अधिकारी बनि गेलन्हि । सिनेमा हॉलमे १० बरखसँ सिनेमा नहि देखने रहथि नन्दक बच्चा सभ । पटनाक पूजाक मेला, पटनदेवी, गोलघर किछु नहि देखने छलाह नन्दक बच्चा सभ । एहि विषयपर पहिने तँ लोक हँसी करन्हि मुदा बादमे सभकेँ लागए जे ईएह तँ नन्दक परिवारक विशिष्टता तँ नहि बनि गेल अछि ? नन्दक घरमे टेलीविजन सेहो नहि छलन्हि ई सेहो लोक सभक लेल आश्चर्यक विषय छल । नन्द आ हुनकर सम्पूर्ण परिवार भारतीय टेलीविजनपर प्रसारित भेल रामायण धारावाहिकक एकोटा एपीसोड नहि देखने छलाह । कारण नन्दक घरमे टेलीविजन छलन्हि नहि आ क्यो गोटे दोसराक घर ओहुना नहि जाइत रहथि,

टी.वी. देखए लेल जएबाक तँ प्रश्ने नहि छलए । नोकरी पकड़लाक बाद आरुणि घरमे एकटा टेलीविजन अनलन्हि । ओतए महाभारतक प्रचार देखि नन्द एक दिन पत्नीकेँ कहलखिन्ह-

''अपन टी.वी.मे महाभारत किएक नहि दैत अछि ?''

''अपना टी.वी.मे खाली डी.डी.१ अछि । ऊपरमे एक गोटे रहैत छथि से कहैत रहथि जे हुनका घरमे बेटा एकटा ३०० टाकामे मशीन अनलन्हि-ए । ओकरा टी.वी.मे लगा देलासँ डी.डी.मेट्रो अबैत छैक । ओहीमे महाभारत अबैत छैक । बेटा तीन हजारमे टी.वी.कीनि देलन्हि । आब तीन सए टाका अहाँ लगा कए ओ मशीन अगिला मासक दरमाहासँ आनि लेब''।

''जिनकर टी.वी.छन्हि सैह तकर मशीनो अनताह''।

आरुणिकेँ एहि गपक जखन पता लागलन्हि तँ हुनका हँसी लागि गेलन्हि । अगिले दिन ओहि मशीनकेँ लगबेलन्हि । अगिला रवि पिताजी जखन महाभारत देखलन्हि तँ सभ गोटे बड़ड प्रसन्न भेलाह । ओही मासमे आरुणि आर्म्स आकि हथियारक ट्रेनिंग लेल पटनासँ बाहर गेलाह । एहि एक मासक ट्रेनिंगक बीचमे दुर्गा पूजा पड़ैत रहए । पिताजी पहिल बेर दुर्गापूजामे गाम नहि गेल रहथि। आरुणि सेहो बीचमे शुक्र-शनि-रविक दुर्गापूजाक छुट्टी देखि पटना आबि गेलाह । रवि दिन रहए । महाभारत चलि रहल रहए । आरुणिक एकेटा संगी रहन्हि । ओकरा संगे आरुणि बिन खेने-पीने कोनो काजसँ बाहर गेल छलाह । संगीक संगे घरपर अएलाह। माँ दुनू गोटे लेल खेनाइ अनलखिन्ह ।

''बाबूजी खा लेलथि''।

''हँ तऽ । तीन बजैत अछि । महाभारत देखलाक बाद खा कए सूतल छथि । अहाँ सभ खाऊ, तावत हम हुनका चाह बना कऽ दैत छियन्हि, तखने निन्न टुटतन्हि''।

आरुणि दू-तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह । हुनकर संगी कारण पुछलखिन्ह-

''की भेल''?

''पता नञि। घबराहटि भऽ रहल अछि''।

''काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने । ताहि द्वारे''।

''पता नञि''।

तावत भीतरसँ अबाज आएल । सभ क्यो दौगलाह।

''की भेल माँ''।

''देखू ने । चाह आनि कऽ देलियन्हि-हँ, मुदा आँखि खोलि कऽ देखिये नञि रहल छथि । आन दिन तँ चाहक नाम सुनिते देरी उठि कए बैसि जाइत छलाह''।

नन्दक शरीर अकड़ि गेल छलन्हि । कन्ना-रोहट सुनि ऊपरमे रहनिहार एकटा डॉक्टर आला लऽ आएल छलाह आ नन्दक मृत्युक घोषणा कए देने रहथि। आरुणि अवाक गुम्म भेल ठाढ़ भऽ गेल रहथि । हुनकर संगी नञि जानि

कोन बाटे अपन संगी सभकेँ बजा कऽ लऽ अनने छलाह । सभक ड्यूटी लगा देलन्हि । ककरो गेटपर तँ ककरो ड्रॉइंग रूममे । लोकक भीड़ लागए लागल छल । हुनकर संगी सभ समान बिछाओनमे समेटि बिछौना मोड़ि आरुणि लग अएलाह ।

"क्रिया-कर्मक तैयारी करए पड़त आरुणि । बाँसघाट धरि लऽ जएबाक व्यवस्था करए पड़त । हम जाइ छी गाड़ीक व्यवस्था करए"।

"बाबूजीकेँ गामसँ बड़ड लगाव रहन्हि। कहैत रहथि जे अगिला सात जन्म धरि नगर घुमि कए नहि आएब । ओना बा केर दाह संस्कार बाबूजी पटनेमे कएने रहथि । मुदा ओहि समयमे पटनाक ई गंगा-ब्रिज नहि रहए । आब तँ गाड़ीसँ हिनका लऽ गेल जा सकैत अछि, तखन दाह-संस्कार भोरमे गामेमे भऽ जाएत"।

"हम व्यवस्था करैत छी"।

आरुणिक ओ संगी हनुमाने छल । कनी कालमे गाड़ी आबि गेल । रस्तामे पुलिस लाश देखि रोकत से समस्या आएल।

"अहाँ लग वर्दी बला परिचय-पत्र तँ हएत ने"।

"हँ, अछि"।

"ओना दिक्कत अएबाक तँ नहि चाही मुदा ज्यों रस्तामे पुलिस टोकए तँ देखा देबए"।

घर खाली भऽ गेल । ताला लागि गेल । दुनू भाए आ माए मृत पिताक संग शुक्लपक्षक ओहि रातिमे पटना नगरसँ निकलि गेलाह । गंगा-ब्रिजपर गाड़ी ठाढ़ भेल । मृत व्यक्तिक एकटा सूची टाँगल छल, जोन-मजदूरक । ई सभ पुल बनेबामे खसि कऽ मरि गेल छलाह । आरुणि गाड़ीसँ उतरि सूची देखैत छथि ।

उराँव, झा आ आर मारते रास मजदूर। एकटा "झा" उपाधिक मजदूर, बेशी आदिवासी उपाधिक! बहुत रास मूइल छलाह, कताक सैकड़ामे मुदा राता-राति पुलिसक मदतिसँ अभियन्ता-ठिकेदारसभ लहास भसिया दैत छलाह। ३० गोटेक नाम मुदा छल एतए ।

"पायाक ऊपरसँ घुरिया-घुरिया कऽ खसैत मजदूर, कतेक ठाम हम सूचना देने रही, कोनो सुनबाहि नञि भेल । ओकरा सभकेँ न्याय नञि दिआ सकलहुँ तँ लगैत अछि जे दोषी हमहू छी"। नन्दक डायरीक ई अंश एक बेर आरुणि पढ़ने छलाह । ओ सोचलन्हि जे चलू घुरि कऽ आएब तखन बाबूजीक डायरी ताकब, कतए छन्हि।

फेर गाड़ी आगाँ बढ़ल । गंगा ब्रिज पाछाँ छुटि गेल । आगाँ गंगा-ब्रिज कॉलोनी आएल । आरुणिक बालकथाक साक्षी । स्कूल, घर आ खेलेबाक मैदान। सटले गंगा ब्रिजक गोडॉन । कताक बेर चोरिक समान ट्रकसँ एतएसँ निकलैत छल, एकाध बेर धरायल छल । बड़का धराएल ट्रक, कतेक चक्का

बला, लोक गुमटीलग मेला जेना देखए पहुँचैत छलए । बच्चा-सभ ट्रकक चक्का गनैत छलाह, १४ चक्का बला अछि वा १६ चक्का बला।

जीवनक प्रतियोगितामे सभटा जेना बिसरि गेल छलाह आरुणि । भ्रष्टाचार, जोन-बोनिहारक मृत्यु, पिताक संघर्ष सभटा सोझाँ आबि रहल अछि मुदा आब।

"फेरसँ सोझाँ आएल ई सभटा, पिताक स्मृति बनि कऽ मुदा पिताक हारि बनि कए तँ नञि । ई नाम आरुणि किएक हमरा लेल चुनने छलाह बाबूजी"।

"की बजलहुँ बेटा"- माँ पुछलखिन्ह।

"नहि । ई कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल"।

"नहि देखू ई पपियाहा कॉलोनीकेँ"।

गंगा-ब्रिजक चरचा घरमे टैबू बनि गेल रहए । आरुणिकेँ बुझल छन्हि ई । मुदा एकटा आर प्रारम्भ तँ नञि भऽ जाएत । आरुणिक प्रश्नसँ माँ भीतरसँ घबरा गेल छलीह ।

आब जे चुप्पी पसरल से गामेमे जा कए खतम भेल । रस्तामे एकटा प्रकाश खण्ड टूटि कए खसल सहस्त्रबाढ़नि नहि ओकर न्यून रूप, छाड़नि ।

अग्रज मृत भाएक मुँह पकड़ि कानए लगलाह ।

"एहन भैयारी ककर हेतए । धुर बताह, पैघ भायकेँ क्यो छोड़ि कऽ पहिने चलि जाइत अछि । कहियो नहि कनेने छलह तँ आइ किए कनबा रहल छह"। सौँसे टोल जुटि आएल छल । समाचार सुनलाक बाद ककरो घरमे खेनाइ नहि बनल छलैक । पता नञि के ककरा टेलीफोन कऽ देने रहैक जे समाचार एतए पहुँचि गेल रहए ।

"कलममे बाबूक सारा लग दाह हेतन्हि", अग्रजक एहि इच्छाक बाद लहास ओतए गेल । कान्हपर उठा कए सभ पहुँचलाह कलम-गाछी ।

"देखियौ, केना मूँहपर हँसी छैक, एको रत्ती मूइल लगैत अछि"- नन्दक अग्रज बजलाह।

आरुणिक पैघ भाए जखने अपन आगि लेल हाथ पिताक दिस बढ़ेलन्हि आकि ओ विचलित सन भऽ गेलाह । काका भरोस देलखिन्ह । आगिमे मिलैत गेल ओ मृत शरीर, पुनः घुरि अएबाक कोनो सम्भावनाकेँ खतम करैत ।

सभटा विध-व्यवहार, लगैत रहए जेना ककरो मृत्युक नहि वरन् कोनो पाबनिक इन्तजाम-बात भऽ रहल अछि, धूम-धामसँ । महापात्र आकि कंटाहा ब्राह्मणक निर्देशानुसार होइत श्राद्धकर्म आ साँझक पाठ गरुड़-पुराणक अविश्वसनीय विवरणक । सभ सम्पन्न भऽ गेल ।

परम शांति आ कि घोर कोलाहल । अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत रहबाक घटनाक्रम हुनका मोन पड़ि जाइत छन्हि ।

आरुणि ठाकुर किछु अस्वस्थ रहथि आ कलकत्तामे वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अस्वस्थ स्थितिमे अध्यावसनमे लीन । अशांतिक क्षण हुनका रहि-रहि कए अनायासहि मोन पड़ि रहल छन्हि । जखन ओ अपन समस्या सभ अपन हित-संबंधी सभकेँ सुना कए अपन मोनक भार कम करैत रहथि । शनैः-शनैः समस्या सभ बढ़ैते चल गेल एतेक धरि जे आब दोसरकेँ सुनेलापरांत मोन आर उचटि जाइत छलन्हि । ताहि द्वारे आब ओ अपने धरि सीमित रहए लगलाह । हित संबंधी सभ बुझय लगलाह जे आरुणि समस्यासँ रहित भए गेल छथि । बच्चेसँ सपनामे भयावह चीज सभ देखाइ पड़ैत छलन्हि आरुणिकेँ । अखन धरि हुनका मोन छन्हि कोना आध-आध पहर रातिमे ओ घामे-पसीने भऽ जाइत रहथि आ हुनकर माता-पिता चिंतित भऽ बीयनि होकैत रहैत छलखिन्ह । पिताक-पिता आ तकर जन्मदाता के? भगवान ज्योँ सभक पूर्वज तखन हुनकर पूर्वजके ? लोकसभ एहि प्रश्न सभकेँ हँसीमे उड़ा दैत छलाह, किन्तु बादमे जखन आरुणि दर्शनशास्त्र पढ़लन्हि तखन हुनका पता चललन्हि जे एकर उत्तरक हेतु कतेक ऋषि-मुनि सेहो अपन जीवन समर्पित कए चुकल छथि, मुदा ई प्रश्न एखनो अनुत्तरिते अछि । अस्वस्थताक स्थितिमे फेरसँ ई सभ अनुत्तरित प्रश्न हुनका समक्ष स्वप्न बनि आबि गेल छन्हि । कखनोकेँ निन्दमे हुनका लगन्हि जे ओ घरक छत पर छथि आ नहि चाहितो शनैः-शनैः छतक बिन घेरल भाग दिशि गेल जा रहल छथि । गुरुत्वक कोनो शक्ति हुनका खीचि रहल छन्हि सहस्त्रबाढ़नि सन बड़का झोँटाबलाक देहक गुरुत्व शक्ति । तावत धरि जावत ओ नीचाँ नहि खसि पड़ैत छथि । की ई छल कोनो प्रारब्धक दिशानिर्देश आकि कोनो भविष्यक दुर्घटनासँ बचबाक संदेश ? किछु दिन धरि तँ आरुणि सुतबाक सही समयक पता लगबैत रहलाह परंतु शनैः-शनैः हुनका ई पता लागि गेलन्हि जे स्वप्न आ निन्न एहि जीवनक दूटा एहन रहस्य अछि जे नियम विरुद्ध अछि आ अनुत्तरित अछि । आ आरुणि पैघ भेलथि, फेर हुनकर पढ़ाइ शुरु कएल गेल- अगस्त्यक स्तोत्र- सरस्वति नमस्तुभ्यम वरदे कामरूपिणी, विद्यारम्भम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतुमे सदा । श्रीगणेषजीक अंकुशक संग गौरिशंकरक अभ्यर्थना सिद्धिरस्तु । साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वसिनी, उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः,सिद्धिःसाध्ये सतामस्तु प्रसदांतस्य धूर्जटेः, जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला । एहि श्लोककेँ बजैत काल प्रायः आरुणि पशुपतिःपतिःक सामवेदीय तारतम्यक बाद अनायासहि हा हा कऽ कए जोरसँ हँसए लगैत छलाह आ बीचहि मे रुकि जाइत छलाह । पिता सोचलन्हि जे कम वयसमे पढ़ाइ शुरु केलासँ आरुणिक कुर्सी पर बैसि कऽ माथपर हाथ राखि कऽ बैसबाक आदति तँ खतम होएतन्हि । माएक एकटा गप्प हुनका पसिन्न नहि छलन्हि। ओ बिच्चमे गप्प करैत-करैत आरुणिक बातकेँ अनठिया दैत छलथिन्ह। एकबेर माएक कोनो संगी आएल छलीह। आरुणिक कोनो बातपर माए ध्यान नहि दऽ रहल छलीह। आरुणिक हाथमे भरि घरक

चाभीक झाबा छलन्हि तँ ओ कहलखिन्ह जे ज्यों हुनकर बात नहि सुनल जएतन्हि तँ ओ झाबाकेँ सोझाँक डबरामे फेकि देताह। माए सोचलन्हि जे हाँ-हाँ केलापर झाबा फेकियेटा देताह तैँ आर अनठिया देलखिन्ह। परिणाम दुनु तरहेँ एके हेबाक छल। चाभी बहुत खोज केलो पर नहि भेटल। एखनो घरक सभ अलमीरा आदिक चाभी डुप्लीकेट अछि। एतेक दिनक बाद ई सभ सोचि आरुणिक मुँहपर अनायासहि मुस्की आबि गेलन्हि।सिद्धांतवादी पिताकेँ नोकरीमे किछु ने किछु दिक्कत होइते रहैत छलन्हि ताहि द्वारे ओ आरुणिकेँ जल्दी सँ जल्दी पैघ देखए चाहैत छलाह। तेसर सँ सोझे पाँचम वर्गमे फनबा देल गेलन्हि।फेर भेल ई जे होलीक छुट्टीमे निअमानुसार सभ गोटे गाम गेल छलाह। होली आ दुर्गापूजामे सभ बेर गाम जएबाक नियम जेकाँ छलैक। पिताजी सभकेँ छोड़ि कए वापिस भए गेलाह। फेर दरमाहा बन्द भऽ गेल छलन्हि प्रायः यैह चिट्ठी गाम आएल छल जे आब सभकेँ गामहि मे रहए पड़तन्हि। माए तँ कानए लगलीह मुदा आरुणि खूब प्रसन्न भेलाह। मुदा सरकारी स्कूलमे ओहि समय वर्गक आगाँमे नवीन- ई लगा कए एक वर्ग कममे लिखबाक गलत परम्परा नवीन शिक्षा नीतिक आलोकमे लेल गेल छलैक कारण नवीन नीतिमे आर किछुओ नवीन नहि छल। पिताजीकेँ जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओ तमसायलो छलाह आ एकर प्रतिकार स्वरूप पाँचम क्लासक बाद जखन ओ सभ शहर वापस अएलाह तँ आरुणिकेँ फेर एक वर्ग तरपा कए सोझे छठम वर्गक बदलामे सातम वर्गमे नाम लिखवा देलन्हि। छठम वर्गक विज्ञान आ गणितक पढ़ाइ पाँचमे वर्गमे कए लेबाक पिताक निर्देशक उद्देश्यक जानकारी आरुणिकेँ तखन जा कए भेलन्हि जखन प्रवेश-परीक्षामे यैह दुनु विषय पूछल गेल आ आरुणि छट्ठा आ सतमा दुनु वर्गक प्रवेश परीक्षामे बैसलाह आ सफल भेलाह। बहुत दिन बाद धरि जखन क्यो आनो संदर्भमे छठम वर्गक चर्चा करैत छल तँ आरुणिकेँ किछु अनभिज्ञताक बोध होइत छलन्हि।गामक प्रवासमे एकबेर आरुणि पिताकेँ चिट्ठी लिखने छलाह कारण हुनकर जुत्ता शहरेमे छूटि गेल छलन्हि। जुत्तातँ आबिये गेलन्हि संगहि चिट्ठीमे आरुणिक लिखल तीन टा शाब्दिक गलतीक विवरण सेहो आएल आ ईहो मोन पाड़ल गेल जे एकबेर दौगि कए गणितक प्रश्न हल करबाक प्रतियोगितामे तीनक बदला हरबड़ीमे दुइयेटा प्रश्नकेँ हल कऽ कए आरुणि कोना अपन कॉपी जमा कए देने छलाह। हुनकर स्वभावमे क्रोधक प्रवेश कखन भेलन्हि से तँ हुनको नहि बुझबामे अएलन्हि मुदा पिताजी हुनका ‘‘क्रोधक समान कोनो दोसर रिपु नहि’’ एहि संस्कृत श्लोकक दस बेर पाठ करबाक निर्देश देने छलखिन्ह- से धरि मोन छन्हि। एकटा घटना सेहो भेल छल जाहिमे स्कूलमे एकटा बच्चा झगड़ाक मध्य सिलेटसँ हुनकर माथ फोड़ि देने छलन्हि। आरुणि सेहो सिलेट उठेलथि मुदा ई सोचि जे ओकर माथ फूटि जएतैक हाथ रोकि लेने छलाह। एकर परिणामस्वरूप हुनकर पिता दू गोट काज केलन्हि। एक तँ हुनकर सिलेटकेँ बदलि कए लोहाक बदला लकड़ीक कोरबला सिलेट देलखिन्ह जकर कोनो ने कोनो भागक लकड़ी खुजि जाइत छलैक आ दोसर जे कॉलोनीमे

समकक्ष अधिकारीक बैठक बजा कए कॉलोनी-अहिमे स्कूल खोलि देल गेल जतए आरुणि पढ़ए लगलाह। बादमे क्यो पंडित जखन वाल्मीकि रामायणक सुन्दरकाण्डक पाठ तँ क्यो ज्योतिष कँगुरिया आँगुरमे मोती आ कि मूनस्टोन पहिरबाक सलाह क्रोध कम करबाक लेल देबए लगैत छलाह तँ ओ संस्कृत श्लोक हुनका मोन पड़ि जाइत छलन्हि। बाल संस्कारक अंतर्गत सहायता माँगबामे आ समझौता करबामे अखनो हुनका असहजता अनुभव होइत छन्हि। मुदा हारि आ जीत दुनुकेँ बराबर बूझि युद्ध करबाक विश्वास हुनकामे नहि रहलन्हि। आ विजय हुनकर लक्ष्य बनैत गेलन्हि शनैः-शनैः। जकर ओ जी-जानसँ मदति कएलन्हि सेहो समयपर हुनकर संग देलकन्हि। समय-समय पर कएल गेल समझौता सभ हुनकर संघर्षकेँ कम केलकन्हि। जतेकसँ दोस्तियारी छलन्हि तकरे निभेनाइ मुश्किल भए रहल छलन्हि। फेर तँ नव शहरमे नव संगीक हेतु स्थान नहि बचल। महत्वाकांक्षाक अंत नहि आ जीवन जीबाक कला सभक अद्वितीय अछि। आरुणि ई नाम आब कखनो-कखनो घरमे सुनाइ पड़ैत छल। कलकत्ता शहर प्रतिभाक पूजा करैत अछि। मुदा व्यवसायी होएबामे एकटा बाधा छल - अंग्रेजीक संग बाङलाक ज्ञान जे ओ बाट चलैत सीखि गेलाह। व्यस्त जीवनमे बीमारीक स्थिति-अहिमे हुनका आराम भेटैत छलन्हि। बीमारियेमे सोचबाक आदति मोन पड़ैत छलन्हि। आ ई फ्लैट किनलाक बाद माएकेँ सेहो बजा लेलखिन्ह। ओना हुनका बुझल छलन्हि जे माए एहि सभसँ प्रभावित नहि होएतीह। कारण ओ अधिकारी पत्नी छलीह आ पुत्रकेँ सेहो ओहि रूपमे देखबाक कामना छलन्हि। ई नव शहर हुनक पुत्रक व्यक्तित्वमे सैद्धांतिकताक स्थानपर प्रायोगिकताक प्रतिशतता बढ़ा देने छलन्हि। आब समयाभावक कारण स्वास्थ्य खराब भेलेपरांत सोचबोक समय पुत्रकेँ भेटैत छलन्हि।व्यवसायमे सफलता प्राप्तिक पूर्व आरुणि एकटा कागजक प्रिंटिंग प्रेसमे काज केनाइ शुरु केलन्हि। अपन मित्रवत प्रिंटिंग प्रेस मालिकसँ दरमाहाक बदला पर्सेंटेज पर काज करबाक आग्रह केलन्हि। ऑर्डर आनि बाइंडिंग आ प्रिंटिंग करबाबथि आ आस्ते-आस्ते अपन एकटा प्रिंटिंग प्रेस लगओलथि। किछु गोटे हिनका अहिठामसँ छपाइ करबा कए ग्राहककेँ बेचथि। हुनका जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओ एकटा चलाकी केलथि जे सभ बंडलमे अपन प्रेसक कैलेंडर धऽ देलखिन्ह। जखन अंतिम उपभोक्ताकेँ पता चललैक जे ओ सभ अनावश्यके दलालक माध्यमसँ समान कीनि रहल छलाह तँ ओ सभ सोझे आरुणि प्रिंटिंग प्रेसकेँ ऑर्डर देबए लागल। आरुणिकेँ घरमे अपन नाम कखनहुँ काले सुनि पड़न्हि। किताबक ऊपर छपल हुनकर नाम तँ कोनो कंपनीक छलैक- आ ओ ओकरासँ निकटता अनुभव नहि कऽ पाबि सकैत छलाह। संसारक कुचालि हुनकर पिताक संघर्षक अंत केने छलन्हि मुदा आरुणि व्यावसायिक युद्ध मस्तिष्कसँ लड़ैत आ जितैत गेलाह।माएक अएलाक बाद आरुणि ई नाम बीसो बेर दिन भरिमे सुनाइ पड़ए लागल। ओकर संगी लोकनि उपरोक्त व्यावसायिक सफलताक घटना सभकेँ जखन आरुणिक माएकेँ सुनबैत रहैत

छलाह, ई सोचि जे ओ अपन मित्रक बड़ाइ कऽ रहल छलाह तँ आरुणि असहजताक अनुभव करए लगैत छलाह आ गप्पकेँ दोसर दिशि मोड़ि दैत छलाह। हुनकर माए तँ जेना हुनक विवाहक हेतु आएल छलीह। माय जखन जिद्द ठानलन्हि तँ हुनका आश्चर्य भेलन्हि कारण घरमे जिद्दक एकाधिकार तँ हुनकेटा छलन्हि। मुदा माए बूझि गेल छलीह जे हुनकर बेटा प्रैक्टिकल भए गेल छन्हि आ जिद्द केनाइ बिसरि गेल छन्हि। आरुणि सोचलन्हि जे छोटमे बड़ड जिद्द पूरा करबओने छथि तँ आब हिनकर जिद्द पूरा करबाक समय आएल अछि। विवाह फेर बच्चा। माए अपन नातिमे पतिक रूप देखलन्हि। पतिक मृत्युक पहिनहि बेटा प्रैक्टिकल बनि गेल छलन्हि। मुदा आब ई नहि होएत। जे काज बेटा नहि कए सकल से आब नैत करत। नातिक नाममे बेटा आ पति दुहुक नामक समावेश केलन्हि- आरुणि नन्द। फेर पढ़ाइ शुरु- सिद्धरस्तु-श्री गणेशजीक अंकुश आ वैह उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः। हुनकर बेटाकेँ पति पढ़ेलखिन्ह ओ तँ घर सम्हारैत छलीह। आब पुतोहु घर सम्हारलन्हि, बेटाकेँ तँ फुरसतिये नहि। आब बा पढेतीह नातिकेँ।

उतपत्स्येत हिमम कोऽपि समानधर्मा कालोह्यम निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

पृथ्वी विशाल अछि आ काल निस्सीम,अनंत, एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहि तँ काल्हि क्यो ने क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनाएत। आरुणि अपनाकेँ अपन माएसँ दूर अनुभव केलन्हि, किछु अस्वस्थ सेहो छथि आ वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अध्यावसनमे लीन अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत छथि। प्रतियोगिता परीक्षा सभक उमरि बाकी छलन्हिये से दू चारिटा परीक्षामे बैसि गेलाह आ केन्द्र सरकारक ई ग्रुप बी वर्दीबला अधिकारी बनि गेलाह। माँकेँ कनेक संतोख भेलन्हि जे क्लास वन नहि मुदा सरकारी नोकरी तँ केलक, ई बिजनेस-तिजनेस तँ छोड़लक।

''चलह कनेक खा लैह, एना केने काज नहि चलतह''। आरुणिक छोटका मामा प्रेमपूर्वक दबाड़ि कए कहलन्हि। क्रिया-कर्म खतम भऽ गेल छल आब घुरबाक बेर आबि गेल छल, नोकरीक संग पिताक मार्गपर घुरबाक सेहो।

१९९५ क नवम्बरक मास।

केश कटायल मुँहेँ गामसँ दरिभङ्गा आ ओतएसँ पटनाक बस पर चढ़लाह आरुणि। किछु किताब बेचिनहार अएलाह, तुक मिलेने सभ किताबक विशेषता कहि सुनओलन्हि।खिस्सा-पिहानी, उपचार, फूलन-देवी सँ लए मनोहर पोथी धरि

सभ यात्रीगणकेँ एक-एक टा पड़सैत गेलाह।ओहिमे सँ किछु मोल-मोलाइ कएलाक उत्तर बिकएबो कएलन्हि आ सभटा वापस लए जाइत गेलाह। बससँ उतरैत काल कंडक्टरसँ वाद-विवाद सेहो भेलन्हि। फेर नेबोक रस निकालबाक यंत्रक आविष्कारक चढ़लाह, रस निकालि देखओलन्हि, खलासीसँ वाद-विवादक उपरांत ओहो उतरि गेलाह।फेर ककबा बला, पेन बला आ पेचकश बला सभ चढ़ि कए उतरैत गेलाह। पुछलाक उपरांत पता लागलन्हि जे गाड़ी साढ़े दस बजे खुजत, ई गप्प बस बला झुट्ठे बाजल छल। पछुलका बसक सवारीकेँ सीट नहि भेटल छलन्हि, से बेशी अबेरो नहि होएत आ सीटो भेटि जाएत, एहि तर्कक संग मार्केटिंगक उपकरणक रूपमे ई शस्त्र छोड़ल गेल छल। गाड़ी खुजबाक समय छल ११ बजे मुदा ११ बाजि कए पाँच मिनट धरि बहस होइत रहल जे घड़ीमे ११ बाजल अछि आकि नहि। पाछाँ एगारह बाजि कए दस मिनट पर जखन बादमे जाएबला बसक कंडक्टर, अशोक मिश्रा आ शाहीक बसक बीचक भिड़ंतक बात कए झगड़ा बजारि देलक -जे एको सेकेंड ज्योँ लेट होएत तँ जे बुझ्रु से भए जाएत- तखन ड्राइवर अकस्माते हॉर्न बजाबए लागल। आरुणिक बगलक सीट पर बैसलि एकटा बूढ़ि बेटाकेँ जोरसँ बजाबए लगलीह, पाँच मिनट गरदम गोल होइत रहल। सभ यात्री चढ़ि गेलाह आ दू-चारिटा यात्री जे अखने रिक्शासँ उतरल छलाह, जोर-जोरसँ बाजए लगलाह। पछुलका बस बला हुनकर मोटा-चोटा उठा कए अपना बसमे लऽ जाए चाहैत छलन्हि मुदा ओ लोकनि पढ़ल लिखल छलाह आ अगुलके बससँ जाए चाहैत छलाह। ओ लोकनि दू-चारिटा चौधरी-कुँअरक नाम-गाम गनओलन्हि, तखन ओहि बस बलाकेँ बुझओलैक जे ई सभ फसादी लोक सभ अछि- से कहलक जे टू बाइ टूक बदला ओहि टू बाइ थ्री धक्कागाड़ीमे ठाढ़े जएबाके ज्योँ इच्छा अछि तँ हम की करू- किरायो ओ एको पाइ कम नहि लेत। से दू-चारि गोट बेशी यात्री लेबाक मनसूबा पूरा भेलाक बाद ड्राइवर गाड़ी हाँकि देलक। ओहि रिक्शा-सभ परसँ एक गोट अधवयसू व्यक्ति चढ़ल छलाह ।संयोग ई भेल जे आरुणिक दोसर बगलमे बैसल व्यक्ति गुनधुन करैत छलाह जे फलनाँ बड़ा बूड़ि अछि, एखन धरि नहि आएल। गाड़ी खुजलाक बाद अगिला चौक पर असकसा कए ओ उतरि गेलाह आ तकर बाद ओहि टू बाइ थ्री ग़ाड़ीक तीन सीट बला हीसमे आरुणिक बगलमे ओहि सज्जनकेँ जगह भेटि गेलन्हि।

आरुणिक मोन स्थिर छलन्हि आ बेशी बजबाक इच्छा नहि छलन्हि। मुदा बगलगीर पहिने अप्पन भाग्यकेँ धन्यवाद देलन्हि जकर प्रतापे हुनका सीट भेटलन्हि। पटनामे आवश्यक कार्य छलन्हि तँ लेट जाएबला बससँ गेला उत्तर काजमे भाङठ पड़ितन्हि। फेर अप्पन परिचय असिस्टेंट डायरेक्टरक रूपमे देलाक उपरांत ई सूचना देलन्हि जे दरिभङ्गाक संग पटनोमे हुनकर मकान छन्हि। दुनू घर अप्पन पुरुषार्थसँ बनएबाक गप्पक संग, दुनू घरक दुमहला आ मारबल आ ग्रेनाइटसँ युक्त होएबाक बातो कहलन्हि। बजबैका लोक केँ सुनिनिहार लोक

बड़ड पसिन्न पड़ैत अछि से ओ आरुणिकेँ पसिन्न करए लगलाह। आ तँ पुछलन्हि-

''पटनामे अपनेक मकान कोन महल्लामे अछि''।

आरुणि कहलखिन्ह- ''अप्पन मकान नहि अछि,किराया पर छी''।

किछु कालक शांतिक पश्चात ओ सज्जन पनबट्टीसँ पान बहार कए आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

''पान खाइत छी''।

''नहि''।

एहि उत्तरक पश्चात अप्पन विशेषज्ञता देखबैत ओ कहलन्हि, जे-

''हम तँ अहाँक दाँते देखि कए बुझि गेल छलहुँ''।

पान खेलाक बाद अप्पन बेटी सभक सासुरक चर्चा कएलन्हि। बेटाक आइ.ए.एस. केर तैयारी करबाक गप्प कएलन्हि आ कोनो ग्रुपक चर्चा सेहो कएलन्हि जे विद्यार्थी लोकनिक बीच एहि तैयारीक हेतु तैयार भेल छल आ ओहि ग्रुपमे प्रवेश मात्र प्रतिभावान लोकनिक हेतु सीमित छल। फेर आखिरीमे ईहो कहलन्हि जे ओहि प्रतिभावान ग्रुपक सदस्यता हुनकर पुत्रकेँ सेहो प्राप्त छन्हि।

आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत गाड़ी एकटा लाइन होटल पर ठाढ़ भेल। किछु यात्री एकर विरोध कएलन्हि। एक गोटे कहलन्हि जे ई ड्राइवर-कंडक्टर खेनाइ खएबाक द्वारे एहि घटिया लाइन होटलमे गाड़ी रोकैत अछि। एकर सभक खेनाइ एतए मुफ्तिया छैक आ संगहि सूचना भेटल जे मुफ्तिया की रहतैक ओकर सभक बिल यात्रीगणसँ परोक्ष रूपमे लेल जाइत छैक आ बुझु जे एकर सभक बिल यात्री सभ भरैत छथि। हुनकर ईहो अपील छलन्हि जे क्यो गोटे नहि उतरए आ हारि कऽ बसकेँ स्टार्ट करए पड़तैक। किछु कालक उपरांत एकाएकी सभ गोटे उतरैत गेलाह आ ओ सज्जन सेहो खिसियाएल उतरि फराक भऽ ठाढ़ भए मिथिलांचलक दुर्दशाक कारणक व्याख्यामे हुनकर गप्प नहि मानबाक मनोवृत्तिकेँ सेहो दोषी करारि देलथिन्ह। गाड़ी फेर खुजल आ किछु दूर आगू जा कए धक्काक संग ठाढ़ भए गेल। कंडक्टर कहलक जे सभ उतरैत जाऊ। गाड़ी पंक्चर भए गेल। लाइन होटल पर गाड़ी नहि रोकबाक अपील केनिहार सज्जनक मत छलन्हि जे लाइन होटलपर जे गाड़ी ठाढ़ भेल, तखनेसँ जतरा खराब भए गेल अछि। आब आगू देखू की-की होइत अछि। नीचाँ उतरलाक बाद चारि-चारि, पाँच-पाँच गोटेक गोला बनि गेल। ई जगह प्रायः वैशालीक आसपास छल। एक गोटे खेतक विस्तारक दिशि ध्यान देलन्हि। घर सभक ऐल-फैल होएबाक सेहो चर्चा भेल। संगहि हुनकर सभक गाम दिशि घर पर घर आ चार पर चार चढ़ल रहैत अछि आ से झगड़ाक कारण अछि, अहू पर चर्चा भेल।

आरुणिक बगलमे जे अधवयसू व्यक्ति रहथि से किछु औंघायल सन छलाह किएक तँ एहि व्यवधानसँ हुनका जे कनी-मनी भक्क लागल छलन्हि से टूटि गेल छलन्हि। हुनकर बकार लाइन होटल पर आकि नीचाँ ठाढ़ भेलापर मन्द भऽ गेल

छलन्हि, से आरुणि अनुभव कएलन्हि। फेर बस चलि पड़ल आ ओ सज्जन पुनः शुरू भए गेलाह। हाजीपुर शहर अएलापर तँ हुनक स्मृति आर तीक्ष्ण भऽ गेलन्हि।

किछु काल बस चलल तँ एकटा कॉलोनीक दिशि इशारा कए ओ कहलन्हि-

"ई छी गंगा ब्रिज कॉलोनी, की छल आ आब की भऽ गेल अछि। एक भागमे रहबाक हेतु क्वॉर्टर आ दोसर भागमे गिट्टी-छड़-सीमेंट सभ भरल रहैत छल। आब तँ कॉलोनीक मेंटेनेंसो नहि भए रहल अछि"।

आरुणि चौँकि गेलाह। कहलन्हि-

"एतय एकटा स्कूलो तँ छल"।

ओ सोझाँ इशारा दैत देखेलन्हि-

"देखू, ओतए नामो लिखल अछि। बरखा बुन्नीमे नाम अदहा-छिदहा मेटा गेल अछि"- फेर ओ चौँकि कए पुछलन्हि-

"अहाँकेँ कोना बुझल अछि"।

-हम एहि स्कूलमे पढ़ने छी।

-मुदा एहि कॉलोनीमे तँ गंगा पुल निर्माणक अभियंता लोकनि मात्र रहैत छलाह आ स्कूलमे हुनके बच्चा सभकेँ पढ़बाक हेतु एहि स्कूलक निर्माण भेल छल।

-हम सभ अही कॉलोनीमे रहैत छलहुँ।

-अहाँक पिताक नाम की छी।

-श्री नन्द ठाकुर।

पिताक मृत्यु पंद्रह दिन पहिनहि भेल रहन्हि से स्वर्गीय कहबाक हिस्सक नहि पड़ल छलन्हि।

-अहाँ ठाकुरजीक पुत्र छी।

ई कहि आरुणि दिशि ओ अपनत्वसँ बेशी ममत्वक दृष्टि देलन्हि।

"अहाँक नाम की छी"। आरुणि पुछलखिन्ह।

"आइ.ए.आजम" - ओ उत्तर देलन्हि।

तखन आरुणि हुनकर सभटा बच्चाक नाम गना देलखिन्ह। हुनकर एकटा बेटा नेहाल आजम आरुणिक क्लासमे पढ़ैत छल। आब हुनकर स्वर बदलि गेलन्हि।

-कॉलोनीमे दू गोटे खूब पूजा करैत छलाह। एकटा पाण्डे जी आ दोसर अहाँक पिताजी। पाण्डेजी तँ पूजाक संग पाइयो कमाइत छलाह। मुदा अहाँक पिताजी छलाह पूर्ण ईमानदार आ दयालु। चंदा कए होम्योपैथिक दवाइ कानपुरसँ अनैत छलाह, आ मुफ्त इलाज कॉलोनी बलाकेँ दैत छलाह। हमर बेटीक माथमे बड़का गूर भए गेल छलैक। कोनो एलोपैथिक बलासँ ठीक नहि भेल छलैक। अहींक पिताजी ओकरा ठीक केने छलखिन्ह। इंजीनियर रहितहुँ होम्योपैथीक डिग्री हुनका रहन्हि।

ड्राइंग रूममे होम्योपैथीक छोट-पैघ, सादा-रंगीन शीशी सभ आरुणिक आँखिक सोझाँ आबि गेल।

-आइ काल्हि कतए पोस्टेड छथि। बहुत दिनसँ सम्पर्के टूटि गेल। एतुक्का बाद कतहु संगे पोस्टिंग सेहो नहि रहल। बुझू भेँट भेना पन्द्रह सालसँ ऊपर भए गेल अछि।

-पन्द्रह दिन पहिने हुनकर मृत्यु भए गेलन्हि।

आरुणिक कटायल केश दिशि देखि ओ कहलन्हि-

-हमरे सँ गल्ती भेल। केश कटेने देखियो कऽ नहि पुछलहुँ। तँ अहाँ भरि रस्ता गुम्म छलहुँ।

फेर कहए लगलाह-

-मजदूरक प्रति बड़ड चिंता रहैत छलन्हि।

तावत बस गंगा पुल पर आबि गेल छल। आगाँ फाटक पर बसकेँ टिकट कटेबाक हेतु ठाढ़ कऽ देल गेलैक। क्यो गोटे संवादो देलक जे आगू वन-वे जेकाँ अछि। एक कातमे रिपेयरिंग चलि रहल अछि। आरुणिक आगाँ दृश्य घूमि गेलन्हि। एहि पुलक निर्माणकालक पाया सभक। कॉलोनीक टूटल देबालक पजेबा सभ। ओ देबाल सभ साल टूटैत छल। पिताजी कहैत छलखिन्ह जे इंजीनियर आ ठेकेदार सभ मिलल अछि। फेर मोन पड़लन्हि सूटकेस भरल रुपैय्या। आरुणिक पिताजी एक लात मारने छलाह आ सूटकेस दूर फेका गेल रहए। एक गोट पितयौत भाए रहैत छलखिन्ह घरमे, से सभटा रुपैय्या ओहि सूटकेसमे राखि ओहि ठिकेदारकेँ देलन्हि। माँ सभकेँ भितरिया कोठली दिशि लऽ गेलीह। एक बेर नन्द पुलक पाया सभक लग आरुणिकेँ स्टीमरसँ लऽ गेल छलखिन्ह आ कहने रहथिन्ह-

-देखू। एहि पायाक निर्माणमे कतेक गोट मजदूर ऊपरसँ घिरनी जेकाँ नाचि कऽ गंगामे खसि पड़ल। सएसँ ऊपर। कतेक हमरा आँखिक सोझाँ। ओहिमेसँ मात्र किछुए परिवारकेँ कंपेनशेसन देल गेलैक। आन सभक ने लिस्टमे नाम छैक, ने क्यो पता लगेलकैक। तैयो सभ अभियंता लोकनि ठिकेदारसँ मिलल अछि।

भक्क टूटलन्हि आरुणिक। बससँ उतरि ओहि पुलक निर्माणमे शहीद मजदूरक लिस्ट फेर देखलन्हि। बहुत कम लोकक नाम छल-प्रायः बिन कंपेंनसेशन बलाक नाम नहि रहैक। बस शुरू होएबाक सूरसार कएलक तँ आरुणि आ आजम साहब बस पर धड़फड़ा कऽ चढ़लाह।

ओ पुनः बाजए लगलाह।

-पटनामे अहाँ कहलहुँ जे किरायाक मकानमे रहए जाइत छी।

-हँ। पिताक क्रियाकर्मक हेतु गाम गेल छलहुँ, पिताक मृत्युक उपरांत माँ केर मोन ओहि घरमे नहि लगतन्हि, ताहि हेतु ओ गामेमे रहि गेल छथि। आब पटना पहुँचि कऽ दोसर डेरा ताकब। ओना हम तँ कलकत्तामे नोकरी करैत छी।

-बुझू। तीस बरख पी.डबल्यु.डी. मे ईमानदारीसँ कार्य कएलाक उत्तर एकटा घरो नहि बना सकलाह। लोक की-की नहि कए गेल। हमहुँ १९८१ क बाद अहींक पिताजीक लाइन पर चलए लगलहुँ। दू टा घरो जे बनेने छी से नामे-मात्रक दू-महला। अधखिज्जू, ऊपरमे एक-एकटा कोठली अछि। अहाँक पिताकेँ की देलकन्हि सरकार ? आ की भेटलन्हि। रिटायरमेण्टक पहिनहि मृत्यु। ने कोनो सम्मान। पुलक उद्घाटन पर दू-दू हजार सभ अभियंताकेँ सरकार देलक। ओ तँ अल्ला-भगवानक रूप छलाह। सम्मानक लालसाक हेतु काज नहि कएलन्हि। सभ वर्क्स डिवीजनमे जएबाक हेतु पैरवी करए आ ई नन-वर्क्समे जएबाक हेतु पैरवी करथि।

फेर ओ आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

-अहाँ की करैत छी।

-पिता,माए आ भाए पटनामे रहैत छलाह, हम कलकत्तामे इंटेलीजेन्स विभागमे छी, कहियो वरदी रहैत अछि कहियो मनाही रहैत अछि।

-दरभंगोमे आ पटनो मे आउ। मायोकेँ अनियन्हु। हमर पत्नीकेँ बड्ड नीक लगतन्हि। नेहाल तँ पटनेमे अछि।

फेर अपन पटना आ दरभंगा दुनू ठामक पता अपन स्नेहिल हाथसँ पकड़बैत पटनाक हार्डिंग पार्क बस स्टैण्ड पर उतरलाह।

बाहरसँ पटना अएलापर होर्डिंगकेँ देखि आरुणि प्रसन्न भए जाइत छलाह। मुदा पिताक छायाक दूर भेलाक बाद आब एहि नगरसँ लगाव नहि प्रतियोगिता करए पड़तन्हि हुनका। ई कोन संयोगपर संयोग भऽ रहल छल। आजम साहेब आइये कोना भेटि गेलाह। पन्द्रह सालसँ किएक क्यो नहि भेटल रहथि आ अकस्मात् नियति की चाहए छन्हि हुनकासँ।

रिक्शा पकड़ि घरक लेल निकललाह। फेर सोचनी लागि गेलन्हि।

एक बेर बाबूजीकेँ कटहरक कोआ खेलाक बाद पेट फूलि गेलन्हि, दू बजे रातिमे। ईहो नहि फुराइत छलन्हि, जे बगलमे श्रवनजीक बाबूकेँ बजा लियन्हि जे कोनो डॉक्टरकेँ बजा देताह। फुरायल तँ छलन्हि मुदा कहियो गप नहि छलन्हि तँ आइ काज पड़ला पर कहितथिन्ह से हियाऊ नहि भेलन्हि। माए केबाड़ पीटि कए पड़ोसीकेँ उठेलन्हि, कनैत खिजैत रहलीह। पड़ोसी डॉक्टरकेँ बजओलक, तखन जा कए बाबूजीक जान बाँचलन्हि। माय श्राप सेहो दैत रहलखिन्ह आ ईहो कहैत रहलखिन्ह जे पाँच वर्षक बेटा रहैत छैक तँ सभ भरोस दैत छैक जे कनैत किएक छी, अहाँकेँ तँ पाँच वर्षक बेटा अछि। आ ई सभ .....जाह, अपने भोगबह हम तँ दुनियासँ चलि जाएब। बहिन कॉलेजमे पढ़ैत छलखिन्ह। कॉलेजक रस्ता पएरे जाए पड़ैत छलन्हि। आ कॉलेजसँ आगाँ स्कूल छलन्हि आरुणि दुनू भाँएक। बहिन कहलखिन्ह जे अहूँ सभ हमर संगे चलू। एक दिन दुनू भाँय संग गेबो कएल रहथि। मुदा गप बिनु केने दुनू भाँय आगू-आगू झटकैत चल गेलाह।

मोनमे ईहो भय छलन्हि जे छौड़ा सभ चीन्हि नहि जाए जे हमरा सभक ई बहिन छथि। आब ई सोचैत छथि जे चिन्हिये जाइत तँ की होइत। अपन व्यक्तित्त्वक विकासमे कमी छलन्हि ई ? बादमे पैघ भेलाह तँ माँ-बापकेँ उकटैत छथि जे घरघुस्सू आ मुँहचुरूक संज्ञा जे देलहुँ अहाँ सभ, कहियो ई सोचलहुँ, जे कोनो पड़ोसीसँ गप्प नहि करबाक, संगी-साथी नहि बनएबाक, घूमब-फिरब नहि करबाक उपदेशक पाछू -जे अहाँ सभ उपदेश देलहुँ- ओकर पाछाँ इच्छा समाजक बुराइसँ दूर करबाक छल, परंतु यैह तँ बनेलक मुँहचुरू आ घरघुस्सू सभकेँ।रातिमे माए-बापक झगड़ाक सीन सपनामे देखैत छलाह आ डरा कए उठि जाइत छलाह। पैघ भाए बहिनसँ अरुणिकेँ खूब झगड़ा होइत छलन्हि मुदा एक बेर माए-बापक झगड़ाक बाद, खूब कानल छलाह, खूब बाजल छलाह। ओहि घटनाक पहिने किछु दिनसँ भाए-बहिनसँ झगड़ाक बाद टोका-टोकी बन्द छलन्हि। सभ बेर वैह लोकनि आगाँ भऽ टोकैत छलाह। मुदा एहि बेर आरुणि कानैत-कानैत बहिनकेँ टोकलन्हि आ फेर कहियो बहिनसँ झगड़ा नहि भेलन्हि। भाए पिठिया छलन्हि, संगे पढ़ैत छलखिन्ह, ताहि हेतु ओकरासँ तँ झगड़ा होइते रहलन्हि, मुदा कम-सम।एहि सभ गपक हेतु माँ पिताजीकेँ दोषी कहथि। माँ सभसँ- पड़ोसी-संबंधी, जान-पहचानसँ गप करबासँ कहियो नहि रोकलन्हि आ कहथिन्ह जे सभटा दोष पिताक छलन्हि।एक बेर ग्लोब किनबाक जिद्द कएलन्हि आरुणि। कएक बेर समय देल गेलन्हि जे आइ अएत- काल्हि अएत। आरुणि पढ़ब छोड़ि देलन्हि। आ तखन जा कए ग्लोब अएलन्हि। बहिन अखनो कहैत छथिन्ह जे ग्लोब अनबाक जिद्दक पूरा भेलाक बाद अरुणिक पढ़ाइक लय टूटि गेलन्हि। वर्गमे स्थान प्रथमसँ नीचाँ आबि गेलन्हि आ पिताजी एकर कारण तंत्र-मंत्रमे ताकए लगलाह। एकटा तांत्रिकसँ भेँट भऽ गेलन्हि।कतेक दिन सभ गाममे रहैत जाइत गेलाह। गंगा ब्रिज कॉलोनीमे एकटा एकाउन्टेंट बाबू छलाह। ओ बाबूजीकेँ कहलखिन्ह जे अहाँ तँ घूस नहि लैत छी मुदा अहाँक पत्नी अहाँक नाम पर घूस लैत छथि। तकर बाद सभ गाम पहुँचा देल गेलाह। सभ ट्रांसफरक बाद बिहार सरकारक नौकरीमे दरमाहा बंद भऽ जाइत छैक। आ ताहि द्वारे सभ ट्रांसफरक बाद नन्द सभकेँ गाम पठा दैत छलाह। एहि क्रममे एक बेर सभ गाममे छलाह। नन्दक चिट्ठी माँक नामसँ गाम आएल छलन्हि। आरुणि पढ़ने रहथि। नन्द आरुणिक माएकेँ लिखने छलाह जे ज्योँ अहाँ घूसक पाइ लेने छी तँ लौटा दियौक। हम विजीलेंसकेँ लिखने छी, छापा पड़त, तखन पाइ निकलत तँ बड़ड बदनामी होएत।

एहि सभ परिस्थितिमे स्कूलमे आरुणि घरक परिस्थितिकेँ बिसरि जएबाक प्रयास करए लगलाह। झुट्ठेकेँ हँसए लगलाह। ई आदति पकड़ि लेलन्हि। घरक बड़ाइ करए लगलाह। लोक सभ नन्दक ईमानदारीक तँ चर्चा करिते रहए। आरुणि घरक कलहक विषय घरक बाहर अनबासँ परहेज करए लगलाह, लोक बुझत तँ हँसत। आ बुझू जे ईमानदारीक ग्लैमरकेँ जिबैत जाइत गेलाह। सोचबाक आ गुनधुनीक आदति एहन पड़लन्हि जे सुतैत सपनामे आ जगैत

लिखबा-पढ़बा काल धरि ई सहस्त्रबाढ़नि जेकाँ पाछाँ नहि छोड़लकन्हि। दसमामे छमाही परीक्षा किछु दिन पहिने देने रहथि। कॉमर्सक परीक्षामे एकटा प्रश्न बनेलन्हि। मुदा ओ गलत बनि गेलन्हि, फेर दोसर आ तेसर बेर प्रयास केलन्हि। सभटा प्रश्नक उत्तर अबैत छलन्हि मुदा पहिले प्रश्नक उत्तर पूरा नहि भऽ रहल छलन्हि। कॉपीकेँ अंगाक नीचाँमे नुका लेलन्हि। आ पानि पीबाक बहन्ने जे बहरेलाह तँ घर पहुँचि गेलाह। पढ़ैत-पढ़ैत सोचए लगैत छलाह। एक्के पन्ना उनटेने घंटा बीति जाइत छलन्हि। चिड़ियाखाना गेल रहथि एक बेर। किछु गोटे हुनकर सभक सर-संबंधी लोकनि ओतए हुनका सभकेँ भेटि गेलखिन्ह। बड़ड हाइ-फाइ सभ। ओना तँ कहलखिन्ह किछु नहि मुदा हुनकर सभक बगेबानी देखि कए आरुणिमे हीन भावना अएलन्हि। चुप्पे भीड़मे निकलि घरक लेल पहुँचि गेलाह। जेबीमे पाइ नहि रहन्हि से पएरे निकलि गेलाह। ओतए चिड़ियाखानामे सभ डराइत रहल जे कतए हरा गेल। सभ घर पहुँचल तँ सभकेँ फुसियेँ कहलन्हि जे सत्ते भोथला गेल रहथि। सत्त बात ककरो नहि बतेलन्हि।सभ लोक जे भेटथिन्ह यैह कहथिन्ह जे अहाँ फलनाक बेटा छी। बेचारे भगवाने छथि। ऑफिसमे पिताक दरमाहाक लेल पे-स्लिप बनबाबए पड़ैत रहन्हि। एक बेर आरुणि पे-स्लिप बनबए गेल छलाह। किरानी बाबू बाजल- हिनकर पिताक पे-स्लिप बिना पाइ लेने बना दियन्हु। पिताजीसँ नहि तँ सहकर्मी खुश छलन्हि नहिये ठीकेदार सभ। सहकर्मी एहि लऽ कए जे नहि स्वयं कमाइत अछि, नहिये दोसराकेँ कमाय दैत अछि। पैघभायक गिनती बच्चामे बदमाशमे होइत छलन्हि। एक बेर ट्रांसफरक बाद जखन सभ गाम गेलाह, तँ पैघ भाय जे सभक फुलवाड़ीसँ नीक-नीक गाछ उखाड़ि कय अपना घरक आगाँ लगा लैत छलाह, से आब एकहि सालमे दब्बू, सभसँ पाछू बैसनिहार विद्यार्थीक गिनतीमे आबि गेलाह। ओहि बेर ट्रांसफरक बादक गाममे निवास किछु बेशी नमगर भऽ गेल छलन्हि। फेर मुख्यमंत्री पदक दावेदार एकटा नेताजी जखन गाममे वोट मँगबाक लेल अएलाह तखन काका हुनकासँ भेँट कएलन्हि आ कहलखिन्ह जे हमर भाएकेँ वर्क्ससँ नन-वर्क्स मे ट्रांसफर कए दियौक, बच्चा सभ पोसा जएतैक।नेताजी कहलन्हि जे ज्योँ हम जीति गेलहुँ तँ ई काज तँ हम जरूर करब। वर्क्समे जएबाक पैरवी तँ बहुत आएल मुदा नन-वर्क्समे जएबाक हेतु ई पहिले पैरवी छी।संयोग एहन भेल जे ओ नेताजी जीति गेलाह आ मुख्यमंत्री सेहो बनि गेलाह। ओ शपथ ग्रहण केलाक बाद ई काज धरि केलन्हि जे पिताजीक ट्रांसफर कए देलखिन्ह। आ नन्दक परिवार पुनः शहर आबि गेल रहन्हि । गाममे रहथि तँ एक गोटे जे आरुणिक भाएक संगी छलाह, ककरो अनका प्रसंगमे कहने छलाह।हुनकर अनुसार- संगीक माएक स्वभाव तीव्र छलन्हि आ ओ खेनाइ खाइते काल झगड़ा करए लगैत छलीह। मुदा ओहि दिन ककरो अनका ओ आर तीव्र स्वभावक देखने छलाह।खराब आर्थिक स्थितिक उपरांत होअएबला कलहक परिणाम आरुणि देखि रहल छलाह। दू टा घटना हुनका विचलित कए दैत छलन्हि। एकटा तँ इनकम टैक्स कटौतीक मास- मार्च मास।

ई घटना तँ सभ साले होइत छल, मुदा कटौती बढ़ैत-बढ़ैत एक साल आबि कए पूरा मार्च मासक दरमाहा काटि लेलक। माँ कहैत छलखिन्ह जे आब भोजन कोना चलए जयतौह। आब भीख माँगए जइहँ गऽ सभ गोटे। मुदा नन्द एकटा गामक भातिजकँ पोस्टकार्ड पठेलन्हि आ ओ आठ सय टाका आनि कय दऽ गेलखिन्ह तखन जा कए असुरक्षाक भावना खत्म भेल छल। भीख मँगैत अखनो आरुणि ज्याँ ककरो देखैत छथि तँ मोन कलपय लगैत छन्हि। दोसर घटना छल जखन हुनकर घरक आँगा एकटा एक्सीडेंट भेल छल आ ओकरा बाद हुनकर भाइ खेनाइ छोड़ि देने छलाह आ कानि-कानि कए आँखि लाल कए लेने छलाह। नन्द जखन बुझबए लगलाह तँ ओ जवाब देलन्हि-

-अहाँकँ ज्याँ किछु भऽ जाएत तखन हमरा सभक की होएत।

पिताजी इंश्योरेंस बेनीफिट, जी.पी.एफ., ग्रेच्युटी आदिक हिसाब लगाय पुत्रकँ बुझेलन्हि जे ९९००० रुपय्या तँ तुरत भेटत आ फेर महिने-महिने पेंशनो भेटत। लगभग एक घंटा तक बाबूजी पैघ पुत्रकँ बुझबैत रहलाह। एक बेर आरुणिक ओहिठाम एक गोट पीसा आयल छलाह। आइयो घरमे क्यो अबैत छथि तँ सभ सुरक्षित अनुभव करैत छथि। नन्द पीसाक सार भेलखिन्ह से एहि ओहदासँ हँसी सेहो चलि रहल छल।ओ कहलन्हि जे नन्दे जेकाँ ईमानदार एकटा बी.डी.ओ. साहेब झंझारपुरमे छलाह। पिताजी हुनकर मलाह छलखिन्ह, कष्ट काटि अफसर भेलाह। मुदा नन्दक जैंका हुनको घरमे खाटे टा छलन्हि। पीसा हुनका कहलखिन्ह जे कथी ले अफसर भेलहुँ, गाममे रहितहुँ आ मचान पर बैसि माछ भात खएतहुँ। माछक कारबारमे फायदा होइत।

आरुणिक बहिनक विवाहक बाद घरमे कखनो काल बहिनोइ अबैत छलखिन्ह। जमायक अबिते देरी आरुणिक माँक झगड़ा पिताजी सँ शुरू भऽ जाइत छलन्हि, किएकतँ घरमे इंतजाम तँ किछुओ रहिते नहि छल। ट्रांसफरक बाद पिताजीक अभियान घूसखोरकँ सजा देबय पर चलल। आ जखन सरकारी तंत्र परसँ विश्वास खतम भए गेलन्हि तखन ओहि तांत्रिकक फेरमे पड़ि गेलाह। घरमे माता-पिताक बीच कलह बढ़ि गेल। एक दिन पिताजीसँ आरुणिक बहसा-बहसी भए गेलन्हि आ तीनू भाय बहिन गरा लागि कऽ कानय लगलाह। तकरा बादसँ अरुणिक भाय-बहिन सभसँ झगड़ा होयब समाप्त भऽ गेलन्हि।

आरुणि अनेर गुनधुन करैत घरपर पहुँचलथि।

दू-तीन धरि दोसर किरायाक मकान ताकए लेल निकलल करथि आ साँझमे वैह गुनधुनी।

एक बेर घर आबि रहल छलाह स्कूलसँ।

घर अबैत काल मोन कोना दनि कऽ रहल छलन्हि। स्कूलसँ घर आबि रहल छलाह। रस्तामे सभ क्यो एक दोसरा सँ किछु असंभव घटित होएबाक गप कऽ रहल छलाह। आरुणि दुनू भाए सातम कक्षामे पढ़ैत रहथि, संगहि-संग। मुदा आइ पैघ भाएक पेटमे दर्द छलन्हि से ओ टिफीनक बाद छुट्टी लऽ घर चलि गेल छलाह। स्कूलमे सभकँ हँसैत देखैत रहथि, तँ अपन घरक स्थिति मोन पड़ि जाइत छलन्हि। ईर्ष्या सेहो होइत छलन्हि आन बच्चाक भाग्य पर। फेर मोनमे ईहो होइत छलन्हि जे हुनके सभ जेकाँ परिस्थिति होएतैक एकरो सभक। मुदा झुट्ठे प्रसन्नताक नाटक करैत जाइत अछि। घरमे माए-बापक कलहक बीच डरायल सन रहैत रहथि। लगैत रहैत छलन्हि जे ई सभ परिस्थिति कहियो खत्म नहि होएतैक। नहि तँ दोसरसँ गप्प कए सकैत छथि, नहियें ककरो अपन मोनक गप्पे कहि सकैत छथि। बेर-बखत कहियो अपन सहायताक हेतु सेहो सोर नहि कऽ सकैत छथि। माय ठीके घरघुसका, मुँहदुब्बर आदि विशेषणसँ विभूषित करैत छलखिन्ह। साँझमे घुमनाइ आकि दुर्गापूजाक मेला गेनाइ ई सभ बात हुनका सभक जीवनसँ दूर छलन्हि। एक बेर भूकम्प जेकाँ आयल छल, सभ क्यो ग्रील तोड़ि कय बहरायल, मुदा आरुणि खाट पर पड़ले रहि गेलाह। किछु तँ अकर्मण्यतावश आ किछु ई सोचि कय, जे की होयत घर टूटि देह पर खसत तँ, समस्यासँ मुक्तियो तँ भेटत। ओहि दिन स्कूलसँ घुरैत काल घरक लगमे पहुँचलाह तँ भीड़ देखि मोन हदसि गेलन्हि जे बाबूजीकँ तँ किछु नहि भऽ गेलन्हि। घरमे पहुँचलाह तँ माँ-बहिनसँ पूछय लगलाह, जे की भेल? सभ बोल भरोस देबए लगलथिन्ह तँ आरो तामस उठए लागलन्हि।जोरसँ कानि कय बाजय लगलाह-

-बाबूजी मरि गेलाह की? कतए छन्हि हुनकर मृत शरीर।

ताहि पर बहिन कहलखिन्ह-

-नहि, हुनका किछु नहि भेलन्हि। अहाँक संगी जे मकान मालिकक बेटा अछि से ओ ओकर छोट भाए, ओकर पिता आ रिक्शाबला, चारू गोटे रिक्शापर जाइत छलाह। बेचारा रिक्शा बला विवाह कऽ कए कनियाँकँ अननहिये छल। एकटा विशाल ट्रक रिक्शाकँ धक्का मारि देलकैक। ठामहि मरि जाए गेलाह।

आरुणिक कानब खतम भए गेलन्हि। ई जे आफत आएल छलैक से आइ ककरो अनका घरमे । ओना ओ जे मृत भेल छल प्रतिदिन प्रातः आरुणिक संग डेढ़ सालसँ स्कूल जा रहल छल । सभ दिन प्रातः सीढ़ीपर ओ कॉलबेल बजबैत छलाह आ ओ सीढ़ीसँ उतरैत छल आ संगे सभ स्कूल जाइत छलाह। मोन पड़लन्हि जे काल्हि सेहो सभ दिन जेकाँ ओ कॉलबेल बजेने छलाह तँ ओकर बहिन जे चश्मा लगबैत छलि आ झनकाहि छलीह, से ऊपरसँ तमसाकँ कहलकन्हि जे कतेक जोरसँ आ देरी धरि कॉलबेल बजबैत छी, आ सेहो जे बेर-बेर किएक बजबैत छी, आबि रहल अछि। काल्हि तँ ओ आएल मुदा आरुणि

तखनहि कहि देलखिन्ह जे काल्हिसँ हम कॉलबेल नहि बजायब, अहाँकेँ हमरा संगे जयबाक होअए तँ नीचाँ उतरि कऽ आऊ आ संग चलू। ओ नहि आएल तँ आरुणि किएक कॉलबेल बजबितथि। डेढ़ सालमे पहिल बेर भेल छल जे आरुणि कॉलबेल नहि बजेने छलाह आ ओ डेढ़ सालमे पहिल बेर स्कूल नागा कएने छल। आब आरुणिक मोनमे होमए लगलन्हि जे कतहु ओ बाजि तँ नहि देने होएत जे आरुणि काल्हिसँ कॉलबेल नहि बजओताह। मुदा किंसाइत ओकर कोनो आनो कार्यक्रम होएतैक। किएक तँ छोट भाए आ पिताक संग रिक्शासँ कतहु जा रहल छल। अस्तु आरुणि चिंतित छलाह मुदा दुःखी नहि। मोनक गप कियो बुझए नहि तँ मुँह लटकेने ठाढ़ रहथि। ओ तँ मात्र सोचने रहथि जे काल्हिसँ एकरा संगे स्कूल नहि जएताह, जाएत ई असगरे। मुदा ओ तँ असगरे नहि जाएत से सत्य कए देखा देलक। अरुणिक माएक आँखिमे नोर छलन्हि मुदा अरुणिक भीतर प्रसन्नता, किएक तँ हुनकर पिताजीक मृत्यु जे टरि गेल छलन्हि।

दोसर किरायाक घर तकलाक बाद दुनू भाँए सभटा समान नवका घरमे राखि माँकेँ गामसँ आनि लेलन्हि।

आरुणि अपन नोकरी पर चलि गेलाह।

''नहि एहन कोनो बात नहि अछि'', ई तँ हमर सभक कार्यक अंतर्गत करइए पड़ैत छैक''।

''मुदा अहाँकेँ ई नहि बुझि पड़ैत अछि जे एहि बेर किछु बेशी क्रूर भऽ गेलहुँ अहाँ सभ?''

''क्रूरताक तँ कोनो बात नहि अछि। हमरा सभ तँ कोनो विशेष सूचनाक आधार पर कार्य करैत छी''।

''मानि लिअ जे हमरा ककरोसँ दुश्मनी अछि आ ओहि आधार पर विभागकेँ ओ अपन व्यक्तिगत स्वार्थ आ झगड़ाक हेतु प्रयोग कए सकैत अछि''।

''अहाँकेँ ककरोपर शंका अछि?''

''नहि हम तँ उदाहरण दए रहल छलहुँ''।

''नहि हमरा सभ कोनो सूचनाक आधार पर सोझे बिदा नहि होइत छी। पहिने ओकर गंवेषणा करैत छी आ तकरे बाद एतेक ठाम सर्च करबाक अनुमति भेटैत अछि''।

''मुदा आब अहाँ ई कहियो देब जे अहाँक कोनो गलती नहि अछि तँ की हमर इज्जत लौटि कए आएत''।

"एना तँ हमरा सभकेँ हाथ-पर हाथ दए बैसि जाए पड़त। मुदा अहूँक गप ठीक अछि। अहाँक प्रति ज्योँ द्वेषवश क्यो कार्य कएने होएत तँ ओकरा पर कार्यवाही कएल जाएत।"

"की कार्यवाही होएत। हमरा पर तँ कार्यवाही भऽ गेल। हमर सभटा बायर टूटि जाएत। हम सभ एतेक पुरान छी, तीन पुस्तसँ एहि कार्यमे लागल छी। करबो करब तँ क्लेंडेस्टाइन रिमूवल करब ? सभ बायरपर तँ रेड भऽ गेल, किछु कतहु नहि भेटल से के पतियायत ?"

ओकर बातो ठीक छलैक। ई प्लाइवुडक व्यापारी एक नंबरक काजक हेतु जानल जाइत छल मुदा आरुणिकेँ जे सूचना प्राप्त भेल छलन्हि से ओकर विपरीत छल। मुदा ई रेड तँ खाली गेल। फैक्टरी, घर, डीलर सभ ठामसँ टीम खाली हाथ आएल। मुदा आब ऑफिसरकेँ की जवाब देताह। नामी कंपनी छल, अधिकारीगण डरा कऽ रेडक अनुमति आरुणिक व्यक्तिगत प्रतिष्ठाकेँ देखैत देने छलाह। हेडक्वार्टरसँ फोनपर फोन आरुणिकेँ आबि रहल छलन्हि, भोर तँ रेडमे भइये गेल छल, दस बजे ऑफिसमे रिपोर्ट देबाक हेतु कहल गेल छलन्हि। फैक्टरीक मालिक सेहो एम्हर-ओम्हरक बात लऽ कऽ दस बात सुना देलकन्हि। स्वर्णप्लाइ नाम्ना ई कंपनीक दिल्ली धरि पहुँचि छलैक। अकच्छ भऽ कऽ आरुणि भोरमे डेरा पहुँचि मोबाइल ऑफ कऽ कए ९ बजेक अलार्म लगा कऽ सुतबाक प्रयास करए लगलाह। काल्हि भोरेसँ रेड चलि रहल छल, ई कोना भेल, कोनो क्लेंडेस्टाइन रिमूवलक कच्चा पर्ची किएक नहि भेटल। केस लीक तँ नहि भऽ गेल। मुदा केसक विषयमे आरुणिकक अतिरिक्त डायरेक्टर विजीलेंसकेँ मात्र बुझल छलन्हि। ई सभ बिछौन पर सोचिते रहथि, तावत निन्द तँ नहि लगलन्हि मुदा ९ बजेक अलार्म बाजि उठल।

ऑफिसमे सभ क्यो जेना हिनके बाट ताकि रहल छलाह। कतेक गोटे ईहो सुना देलकन्हि, जे एहि केसक इंटेलिजेंस हुनको सभक लग छलन्हि मुदा एहि तरहक केसमे क्लेंडेसटाइन रिमूवलकेँ सिद्ध केनाइ मुश्किल होइत छैक, ताहि हेतु ओ लोकनि एहिमे हाथ नहि देलन्हि। कानाफूसी होमए लागल जे बड़ड हीरो बनैत छलाह आब ट्रांसफर ऑर्डर लऽ कए निकलताह डायरेक्टरक ऑफिससँ।

आरुणि डायरेक्टरक ऑफिसमे गेलाह आ सोझे किछु दिनक समय माँगि लेलन्हि। की प्लान छन्हि, एहि विषयमे गप-शप घुमा देलथि। एहि बेर कोनो प्रकारक कोनो भ्रम नहि राखए चाहैत छलाह।

आब आरुणि स्वर्ण प्लाइक फैक्टरीसँ आ ओकर डीलरसँ हटि कऽ कार्य करए लगलाह। सभटा दस्तावेजकेँ घोखि गेलाह। किछु जानकारी कागज पर सेहो लिखए लगलाह। फेर अपन प्लानक हिसाबसँ कलकत्तासँ पटना आ ओतएसँ अररियाक हेतु बिदा भऽ गेलाह।

पान तँ खाइत नहि रहथि आ चाह सेहो घरे टा मे पिबैत रहथि। मुदा लोकसँ किछु जनबाक हो तँ बिना चाह आ पानक दोकान गेने कोना काज चलत। से ओ चाह पान शुरू कएलन्हि। बाबुल दादाक गुलकन्द बला पान नीको बड़ड लागन्हि। तकरा बाद बाबुल दादा अररियाक लग पासक सभटा प्लाइवुडक फैक्टरीक लिस्ट दऽ देलकन्हि। मुदा फैक्ट्री सभक पहुँचबाक रोड सभक भगवाने मालिक रहथि। धूल-धक्करमे कहुना जा कए एकटा फैक्टरीक पता चललन्हि जे स्वर्णप्लाइकेँ सप्लाइ दैत छल, ओतुक्का दरबान आरुणिकेँ कहलकन्हि जे मालिक दोसर फैक्टरीमे बैसैत छथि, से दू टा फैक्ट्रीक पता चलि गेलन्हि आरुणिकेँ।

आरुणि थाकल-हारल ओहि फैक्टरीमे पहुँचलाह। एक गोट मारवाड़ी सज्जन बैसल रहथि।

"कतएसँ आएल छी"।

"आएल तँ पटनासँ छी मुदा घुरब कोना से नहि बुझि पड़ैत अछि"।

"हँ, एक गोट नेताक जेलसँ बाहर गोली मारि कए हत्या कऽ देल गेल अछि। नेताजी रहथि तँ जेलमे मुदा घुमए फिरए पूर्णियाँ जेलसँ बाहर बिना निअमक निकलल रहथि। जेलर की करताह। पिछला मास एक गोट कैदीकेँ पुरनका जेलर घुमए हेतु नहि देने छलथिन्ह तँ भट्टा बजारमे गोली मारि देलकन्हि। एहि बेर जे घुमए देलखिन्ह तँ सरकार सस्पेन्ड कऽ देलकन्हि नवका जेलरकेँ। ताहि हत्याक बाद बन्दक आह्वान अछि। हमरा संगे रहू। एतए हमहू अपन गेस्ट हाउसमे रहैत छी। परिवार सिलीगुड़ीमे रहैत अछि। विवाह नहि भेल अछि। भोरमे हमरा कलकत्ता जएबाक अछि। पहिने सिलिगुड़ी अपन गाड़ीसँ जाएब तँ रूट बदलि कऽ पूर्णियाँ बस स्टैण्डमे अहाँकेँ छोड़ैत जाएब"।

युवा बजक्कर रहथि से आरुणिकेँ नीक लगलन्हि। रातिमे गेस्ट हाउसमे बहुत गप्प भेलन्हि। नेताक रंगदारीक, चन्दा बला सभ जबर्दस्ती रसीद काटि जाइत छलन्हि।

"एनामे तँ बिना क्लेनडेस्टाइन कएने घाटा भऽ जाएत, हँ मजबूरी छैक। आ तकर दोषी तँ ई नेता सभ छथि। व्यापारी की करओ"।

आब मारवाड़ी युवा जकर नाम नवल छल कनेक कनछिया कऽ आरुणि दिशि देखलक। आरुणिकेँ भेलन्हि जे ओकरा कोनो शंका तँ नहि भेलैक।

"नहि क्लेंडेस्टाइन नहि करबाक तँ सिद्धांत अछि हमरा सभक। हँ किछु एडजेस्टमेंट करए पड़ैत अछि"।

आरुणिकेँ मोन पडलन्हि जे कोना स्वर्ण प्लाइक मालिको बजैत-बजैत बाजि देने छल जे करबो करब तँ क्लेनडेस्टाइन रिमूवल करब।

तखन करैत की जाइत अछि ई सभ। ओना अररियाक ई फैक्टरी स्वर्ण प्लाइक हेतु जॉब वर्क करैत छल, आ ताहि हेतु सरकारी ड्यूटीक सभ भार

स्वर्ण प्लाइ पर रहैक। ई क्लेनडेस्टाइन करियो कऽ की करत। टैक्स तँ दोसराकेँ देबाक छैक।

तखने एकटा फोन अएलैक। रिंग नमगर रहैक से आरुणिकेँ बुझबामे भांगठ नहि भेलन्हि जे ई बाहरक एस.टी.डी.कॉल अछि। ओहि कॉलक बाद एकाएक ओ युवा आरुणि दिशि ताकि कए चुप्पी लगा गेल।

भनसिया जकरा नवलजी *झा* कहि संबोधित कऽ रहल छलाह, खेनाइ बनि जेबाक सूचना देलकन्हि। आरुणि आ नवलक बीच मात्र औपचारिक गप भेल। फेर दुनू गोटे सूति गेलाह। भोरमे अपन वचनक अनुसार ओ युवा आरुणिकेँ पूर्णियाँ बस स्टैण्ड छोड़ि देलकन्हि। उतरबासँ पहिने आरुणि नवलसँ पुछलन्हि।

"कलकत्तामे स्वर्ण प्लाइक ऑफिस छैक। ओतहि जा रहल छी की ?"

ओ युवा हँसल।

"अहाँ विजिलेंससँ छी। हमरा काल्हि जे एस.टी.डी. आएल छल से स्वर्ण-प्लाइक कलकत्ता ऑफिससँ आएल छल। अहाँक विभागेक क्यो गोटे हुनका सभकेँ अहाँक अररिया यात्राक विषयमे सूचना देलखिन्ह। देखू हम कहने छी जे हम मात्र एडजेस्टमेंट करैत छी। आ ताहिसँ हमरा कोन फाएदा होइत अछि? टैक्स तँ हमरा लगैत नहि अछि। हँ, ताहिसँ हमरा काज भेटैत अछि। आ बाहरी छोट-मोट खर्चा, विभागक, पुलिसक, नेताक निकलि जाइत अछि। तखन बेश"।

ई कहि ओ सज्जन आरुणिकेँ हतप्रभ करैत चलि गेलाह।

आब कलकत्ता पहुँचि कए आरुणि जखन ऑफिस पहुँचलाह तँ सभकेँ बुझल रहैक जे आरुणि ताहि फैक्ट्रीक विजिट सरकारी खर्चा पर कएलन्हि अछि जकरा पर सरकार टैक्सक माफी देने छैक।

डायरेक्टरसँ भेँट कएलाक बाद आरुणि पहुँचि गेलाह पटना आ फेरसँ कलकत्ता। पुलिस थानामे घुमैत रहलाह आ पता करैत रहलाह जे स्वर्ण-प्लाइ आकि ओकर कोनो कर्मचारीक विरुद्ध कोनो केस छैक तँ नहि। मुदा ओतए तँ स्वर्ण प्लाइ बड़ड नीक छवि शुरुएसँ बनेने छल। आब आरुणि सोचमे पड़ि गेलाह। इनपुट-आउटपुट केर अनुपातसँ ई कंपनी करोड़ो रुपयाक टैक्सक चोरि कए रहल अछि। मुदा प्रमाण कोनो नहि।

आरुणि थाना सभमे अपन पता आ फोन नंबर छोड़ि देलन्हि जे ज्योँ कोनो केस एहि कंपनी किंवा एकर कर्मचारीक संबंधमे होअए तँ तकर सूचना हुनका देल जाइन्ह।अपन डायरेक्टरसँ कहलखिन्ह जे क्लोजर रिपोर्ट अखन नहि देब। देखैत छी किछु जानकारी कतहुसँ भेटैत अछि आकि नहि।

छह मासक बाद।

भोरमे रिंग भेल।

"हम कलकत्ता, साल्ट लेक थानासँ बाजि रहल छी। एक गोटे एकटा कमप्लेन लिखेने छथि जे स्वर्ण-प्लाइ ऑफिससँ पेमेन्ट लऽ कऽ घुरैत काल

हुनकर सूटकेस ऑटो बला छीनि लेलकन्हि जाहिमे किछु कैश आ चेक छलन्हि''।

''कतेक कैस आ कतेक चेक''।

''१.७९ लाख कैस आ १.८३ लाखक चेक, प्रायः कैसक कोनो इनस्योरेंस रहन्हि, ताहि द्वारे एफ.आइ.आर. करओलन्हि अछि। चेकक तँ पेमेंट स्टॉप भऽ जाएत''।

आरुणि टीमक संग ओहि गोटेक घर पर छापा मारलन्हि जकर पाइ आ कैस ऑटो बला छीनि लेने छल।

छापाक बीचमे आरुणिकेँ एकटा डायरी भेटलन्हि। तकरा बाद पटना फोन कऽ अररियाक फैक्टरीसँ नवीनतम रिमूवलक रिटर्न मँगा लेलथि। फेर ओ सज्जन जिनका घरपर छापा पड़ल छल, केँ ऑफिस अनलन्हि। रस्तामे पता चलल जे ओ सज्जन नवलक बहनोइ छलाह आ अररियाक फैक्टरीक एकाउन्टेन्ट होएबाक संगहि स्वर्ण-प्लाइमे लाइजन अधिकारी सेहो छलाह।

आब सभ तथ्य सोँझा छल। जे डायरी भेटल छल ताहिमे कैस आ चेकक कॉलम बनल छल। तिथि सहित विवरण छल। चेकक भुगतानक कॉलम अररिया फैक्टरीक क्लियरेंससँ मिलि गेल छल आ ईहो सिद्ध भऽ गेल जे सभ ट्रांजेक्सनमे लगभग अदहाक पेमेंट स्वर्ण-प्लाइ द्वारा कैसमे देल जाइत छल। आ तकर विवरण नहि तँ स्वर्ण-प्लाइक खातामे रहैत छल आ नहिये अररियाक फैक्टरीमे। स्वर्णप्लाइ टैक्स सेहो मात्र चेक (पकिया) द्वारा गेल अदहा रिमूवलक पेमेंट पर दैत छल। आरुणि ई रिपोर्ट डायरेक्टर केँ दऽ देलन्हि।

एकाउन्टेन्टक अपराध बेलेबल छलैक। कोर्ट ओकरा बेलपर छोड़ि देलकैक।

''नवलक समाचार कहू। बड्ड नीक लोक अछि। मुदा किछु बतेलक नहि''।

''ओकर काल्हि अररियासँ सिल्लीगुड़ी जाइत काल सड़क दुर्घटनामे मृत्यु भऽ गेलैक किंवा करा देल गेलैक। जमाय बाबूक संग एतएसँ सोझे हमरा सभ ओतहि जाएब''। एक गोट उत्तेजित स्वर बला व्यक्ति जे एकाउन्टेन्ट बाबूकेँ लेबाक हेतु आएल छल बाजि उठल ।

''मुदा ई बूझि लिअ जे अहाँक ई सफलता हमर बुरबकीसँ भेटल अछि। ज्योँ हम कैसक इनस्योरेंस क्लेमक लालचमे नहि पड़ितहुँ तँ ई सभ नहि होइत''- जमाय बाबू बाजि उठलाह।

डायरेक्टर स्वर्णप्लाइक विरुद्ध कार्यवाहीक लेल ऑर्डर देलन्हि। स्वर्ण प्लाइक विरुद्ध करोड़ोक रुपैयाक टैक्स घोटालाक शो-कॉज नोटिस सेहो पठा देल गेल। आरुणि चिंतामग्न छलाह।

“ठीके तँ कहलक नवल। एडजेस्टमेंटे तँ कऽ रहल छल। चोरि तँ क्यो आन कऽ रहल छल। ओ तँ मात्र माध्यम छल। हमहू तँ कतहु नहि बनि गेल छी माध्यम, नवलक मृत्युक ?”

आरुणिक व्यवसायिक सफलताक बाद नोकरी मध्य सेहो सफलताक शुरुआत भऽ गेल। माध्यम बनथि वा नहि मुदा पिता जेकाँ हारताह नहि। मोन पड़ैत रहन्हि हुनका सभटा गप बीच-बीचमे ।

“कहलहुँ सुनैत छियैक। बेटी पैघ भऽ रहल अछि। बेटा सभक लेल किछु नहि कएलहुँ। अपन घरो नहि बनल। रिटायर भेलाक बाद कतए रहब ?”

“बेटीक चिन्ता नहि करू। बेटा बला अपने चलि कए अएत। हमरा सभकेँ जतेक सुविधा भेटल छल, ताहिसँ बेशी सुविधा हिनका सभकेँ भेटि रहल छन्हि। तखन पढ़थु वा नहि से ई सभ जानथि। रिटायरमेन्टक बाद गाम जा कए रहब। सात जन्म शहर दिशि घुमि कए नहि आएब”।

“क्यो सर-कुटुम अबैत छथि तँ हुनका सत्कार करबा लेल घरमे इंतजामो नहि रहैत अछि”।

“इंतजाम करबाक की जरूरति अछि। एक पैली बेशी लगा दियौक अदहनमे”।

आरुणि माए-बापक एहि तरहक वार्त्तालाप सुनि पैघ भेलथि। एक बेर हॉस्पीटलमे पिताजीकेँ देखए लेल एक गोट कुटुम्ब आएल रहथि। हुनकर गप सेहो किछु एहने बुझा पड़लन्हि।

“की कऽ लेलहुँ शरीरकेँ। ई बच्चा सभकेँ देखि कए मोहो नहि भेल। कतए पढ़ैत जाइत ई सभ। आ कोनो टा सुविधा, नहिये कोनो टा चिन्ते छल अहाँकेँ। अपनो आ एकरो सभक जिनगी बर्बाद कएलहुँ।”

तखने व्यवधान भेल। पत्नी कहलखिन्ह जे एकटा फोन होल्ड अछि-

“आरुणि। एकटा पैघ राजनीति चलि रहल अछि ऑफिसमे। अहाँक विरुद्ध षड़यंत्र चलि रहल अछि। अहाँकेँ चेतेनाइ हमर काज छल। मुदा अहाँ तँ कोनो तरहक प्रतिक्रिया दैते नहि छी”- फोन पर हुनकर वैह एकमात्र संगी रामभक्त-हनुमानक अबाज सुनि रहल छलाह आरुणि।

“आरुणि। की भऽ गेल। बाबूजी जेकाँ डराएल रहब। किछु दिनुका बाद हारि मानि ऋषि भऽ जाएब। आकि दुष्टक संहार करब। एहि दुनूमे की चुनब अहाँ”।

“चिन्ता नहि करू”- हँसैत बजलाह आरुणि फोन पर आ फोन राखि देलन्हि।

ऑफिसक एकटा लॉबी आरुणिक पाछाँ पड़ि गेल छल। ट्रांसफर-पोस्टिंग केर बाद आरुणिक ऊपर दवाब आबि गेल छल। किछु गोटे हुनकर विरुद्ध बिना-कोनो आधारक किछु कम्प्लेन कए देने छलन्हि। एकटा ऑफिसर शशांक केर हाथ छलैक एहिमे। ओकर खास-खास आदमीक पोस्टिंग मोन-मुताबिक नहि भेल रहए आ ओ प्रोमोशनमे आरुणिकेँ पाछाँ करए चाहैत छल। एहि बीचमे आरुणिक फोन किछु दिन डेड छलन्हि। तकरा बाद हुनकर फोनसँ अबुधाबी आ दुबइ फोन कएल गेल छल। मुदा ओहि समयमे सरकारी फोनमे आइ.एस.डी. केर सुविधाक हेतु टेलीफोन विभागकेँ सूचित करए पड़ैत छल। हुनकर ऑफिसक एकटा प्रशासनिक अधिकारी टेलीफोन विभागकेँ चिट्ठी लिखि कए ई सुविधा आरुणिक जानकारीक बिना करबाए देने छल। विजीलेंसक जाँचमे ओ बयान देने छल जे आरुणि एहि ऑफिसक मुख्य छथि आ हुनकर मौखिक आदेशोक पालन करए पड़ैत छन्हि हुनका। से आइ.एस.डी. केर सुविधाक लेल टेलीफोन विभागकेँ ओ आरुणिक मौखिक आदेश पर चिट्ठी लिखने छलाह। माफिया ओकरा तोड़ि लेने छल आ ओहिमे ओ प्रशासनिक अधिकारी अपनाकेँ सेहो फँसा लेने छल।

सोम दिन फैक्स आएल आ आरुणिक ट्रांसफर भऽ गेल।

“रिप्रेजेंट करू एहि आदेशक विरुद्ध”- वैह चिरपरिचित स्वर, मणीन्द्रक।

“अहूँ कोन झमेलामे पड़ल छी। सभ ठीक भऽ जाएत”- बजलाह आरुणि फोन पर।

शशांकक घरपर पार्टी भेल।

“मिस्टर आरुणि रिप्रेसेन्ट तक नहि कएलन्हि। रिलीव भऽ कए चलि गेलाह। बुझू सरेन्डर कए देलन्हि अपनाकेँ ”।

“प्रोमोशन बुझू जे दस साल धरि रुकल रहतन्हि। सीनियरिटी मारल जएतन्हि। बदनामी भेलन्हि से अलग। सुनैत छी जे फोनपर दुबइक स्मगलर सभसँ गप करैत छलाह”।

ओम्हर आरुणिकेँ अपन बाबूजीक ट्रांसफर, ईमानदारीक लेल कएल संघर्ष, संघर्षक विफलता आ तकर बाद हुनकर तंत्र-विद्या आ पूजा-पाठक दिशि अपनाकेँ

ओझराएब आ घर-द्वार, ऑफिस आ सांसारिकतासँ विरक्ति मोन पड़ि गेलन्हि। एहि सभ घटनाक्रमक बाद हुनकर मुँहपर एकटा चिन्ताक रेखा आएल छलन्हि। मुदा से बेशी दिन धरि नहि रहलन्हि आरुणिक मोन पर। हारिकेँ जीतमे कतोक बेर बदलने छलाह ओ। नोकरीयोमे आ ओहिसँ पहिने व्यवसायमे सेहो।

''की यौ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि। हमर ट्रांसफर भऽ गेल तँ अहाँ सभ तँ बिसरिये गेलहुँ''।

''हम की, सभ क्यो बिसरि गेल अहाँकेँ एतए''।

''अहाँ की बुझलहुँ। जे हम सेहो बिसरि गेल छी। अहाँकेँ मोन अछि। हम जखन इंटरक बाद बाबूजीक इच्छाक विरुद्ध विज्ञान छोड़ि कए कला विषय लेने छलहुँ। विज्ञानक सभटा किताब ११ बजे रातिमे पोखरिमे फेंकि देने छलियैक। कोनोटा अवशेषो नहि छोड़ने छलहुँ ओहि विषयक अपन घरमे। आ जखन कला विषयमे प्रथम श्रेणी आएल छल तखन गेल छलहुँ गाम। तकरा पहिने कतेक बरियाती छोड़ने छलहुँ, कतेक जन्म-मृत्यु। मुदा गाम नहि गेल छलहुँ''।

''एह भाई। अहाँकेँ तँ सभटा मोन अछि। हमरा तँ भेल जे अहूँ काका जेकाँ भऽ गेलहुँ। ई सभ क्षमाक योग्य नहि अछि। कनेक देखा दियौक। आब हमरा विश्वास भऽ गेल जे किछु होएत''।

''फेर वैह गप। जखन अहाँ नहि बदललहुँ तखन हम कोना बदलब। छोड़ने छलहुँ किछु दिन अपनाकेँ। आब सुनू। जे कहैत छी से टा करू। बेशी बाजब जुनि। जाहि समयक कॉल हमर टेलीफोनसँ बाहरी देश कएल गेल छल ओहि समयमे तँ हमर टेलीफोन खराब छल, ई तँ अहाँकेँ बुझले अछि। घरसँ टेलीफोन विभागकेँ कम्प्लेन सेहो लिखबाओल गेल छल। मुदा से टेलीफोने पर लिखबाओल गेल छल। कोनो लिखित पत्र आ ओकर प्राप्ति रशीद तँ अछि नहि। मुदा ई पता करू जे एहि तरहक कम्प्लेनक कोनो रेकार्ड टेलीफोन विभागक लग रहैत छैक आकि नहि''।

किछु दिनुका बाद मणीन्द्रक फोन आएल जे फोन विभाग एक महीनाक बाद कम्प्लेन नंबर फेरसँ शुरुसँ देब शुरू कए दैत छैक। से ई काज नहि भेल।

''बेश तखन ई पता करू जे हमर नंबरसँ ककरा-ककरा कोन-कोन नंबर पर विदेश फोन कएल गेल छल। आ ओहि विदेशीक फोन कोन-कोन नंबर पर आएल अछि''।

''हँ। एहि गपक तँ हमरा सुरते नहि रहल''।

आब मणीन्द्र जे टेलीफोन नंबरक सूची अनलन्हि, से सभटा टेलीफोन बूथ सभक छल। मुदा कोनो टा कॉल आरुणिक नंबर पर नहि आएल छल।

विजीलेंसक सुनबाहीमे ई सभ वर्णन जखन आरुणि कएलन्हि तखन शशांक हतप्रभ रहि गेल। ई तँ नीक भेल जे शशांकक आदमी सभ बूथ बलासँ संपर्क रखने छल, नहि तँ ओहो सभ फँसैत आ संगहि शशांकोक नाम अबैत एहि सभमे। अस्तु आरुणि जाँचसँ बाहर निकलि गेलाह।

“भाइ। हम मणीन्द्र। ओकरा सभकेँ तँ किछु नहि भेलैक।“

“हमर ट्रांसफर दिल्ली भेल अछि। देखैत छी। अहाँ निश्चिंत रहू”।

“हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेलहुँ जहिया अहाँ पुरनका गप सभ सुनेलहुँ। काकाक अपमानक बदला अहाँकेँ लेबाक अछि। मात्र व्यक्ति सभ बदलल अछि। चरित्र सभ वैह अछि”।

दिल्लीमे आरुणि विजीलेंस विभागक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखामे पदस्थापित भेलाह। एहि विभागकेँ शंटिंग पोस्टिंग मानल जाइत छल। विजीलेंसक एनक्वायरीसँ बाहर निकललाक बादो आरुणि एहि पोस्टिंगके चुनलन्हि से एहिसँ तँ ईएह सिद्ध होइत अछि जे आरुणि थाकि गेलाह। पाँच साल कोनमे बैसल रहताह। शशांकक ग्रुप प्रफुल्ल छल।

एम्हर आरुणि अपन विज्ञानक छोड़ल पाठ फेरसँ शुरू कएलन्हि। भरि दिन कम्प्युटर आ ओकर तकनीकी विशेषज्ञ सभसँ भिड़ल रहथि। ओहो लोकनि बहुत दिनक बाद एहन अधिकारी देखने छलाह जे भिड़ल अछि, काजसँ। दोसर लोकनि तँ कोहुना टर्म पूर्ण कए भागैत छथि।

ओना देखल जाए तँ ई विभाग बड़ड संवेदनशील छल। आब आरुणिक अपन विभागक सभ कर्मचारीसँ बेश निकटता भऽ गेल छलन्हि। सभक आवेदन समयसँ आगू बढ़ैत छल। सभटा ऑफिसक इक्विपमेंट नव आबए लागल। पहिलुका ऑफिसर सभ तँ समय काटि भागए केर फेरमे रहैत छल आ ऑफिसक आवश्यक आवश्यकता सेहो पूर्ण नहि करैत जाइ छल।

ऑफिसमे एकटा इक्विपमेन्ट आएल छल, करप्शन रोकए लेल। एहिमे स्मगलर सभक फोन टेप करबाक सुविधा छल।

किछु दिन समय व्यतीत होइत रहल।

“मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि”।

“हम तँ आब निश्चिन्त छी भाइ”।

“हँ समय आबि गेल अछि। एकटा काज करू, स्मग्लरक संग शशांकक संबंधक संबंधमे एकटा न्यूज निकलबा दियौक अखबारमे। आगाँ सभ चीज तैयार अछि”।

ओम्हर अखबारमे खबरि निकलल आ मंत्रीक जन संपर्क पदाधिकारी जकर काज विभागक खबरिकेँ अखबारसँ काटि कए मंत्री धरि पहुँचायब छल ओहि क्लिपिंगकेँ मंत्रीजी लग पहुँचाए देलन्हि। समय समीचीन छल कारण विभागीय मंत्रीजीपर ढेर आरोप ओहि समय आएल छलन्हि, संसदक सत्र चलि रहल छल से ओ कोनो तरहक रिस्क नहि लेलन्हि। इंक्वायरीक ऑर्डर दए देलन्हि।

विजिलेंस विभागमे केश आएल। ओकर आंतरिक बैठकी होइत छल जाहिमे सूचना-प्रौद्योगिकी विभागकेँ सेहो बजाओल जाइत छल। सभ केशमे मोटा-मोटी प्रौद्योगिकी विभाग अनाधिकार प्रमाण पत्र दए दैत छल। आ केश इंक्वायरीक बाद समाप्त भऽ जाइत छल।

मीटिंगक तिथि तय भेल। मीटिंगमे आरुणि विजिलेंस कमेटीक सदस्यक रूपमे शामिल भेलाह।

"शशांक पर कोनो तरहक कोनो आरोप सिद्ध नहि होइत छन्हि। आरुणि अहाँक विभागकेँ टेलीफोन टैपिंगक उपकरण उपलब्ध करबाओल गेल छल। मुदा अपन ऑफिसमे तँ फैक्स मशीनो ६ मास किनाकए राखल रहलाक बाद लगाओल जाइत अछि, तखन ई मशीन एखनो राखले होएत आकि किछु कंवर्शेशन रेकार्डो भेल अछि"।

"श्रीमान। ई मशीन एहि मासक पहिल तिथिकेँ आएल आ ओहि तिथिसँ एकर उपयोग शुरू भऽ गेल। एहि केशमे जाहि स्मगलरक नाम आएल अछि ओकर नाम ओहि सूचीमे अछि जकर कॉल रेकॉर्ड करबाक आदेश हमरा भेटल छल। शशांकक कंवर्शेशन एहि व्यक्तिसँ नहि केर बराबर अछि। आध-आध मिनटक दू टा कंवर्शेशन। दोसर कंवर्शेशन नौ बजे रातिक छी आ एहि कंवर्शेशनक बाद ओहि स्मगलरक फोन अपन कर्मचारीकेँ जाइत छैक आ ताहूमे मात्र आध मिनट ओ लगबैत अछि"।

"ई कोन तारीखक अछि"।

"पाँच तारीखक"।

"छह तारीखक भोरमे एहि स्मगलरक ओहिठाम रेड भेल छल आ किछु नहि भेटल छल। ई सभ फोनक डिटेल दिअ आरुणि"।

"पहिल कॉलमे शशांक कहैत छथि जे साढ़े आठ बजे घर पर आबि कए भेंट करू। बड्ड जरूरी गप अछि। ओ नौ बजे दोसर कंवर्शेशनमे तमसाइत कहैत छथि जे नौ बाजि गेल आ अहाँ एखन धरि नहि अएलहुँ। एहिमे उत्तर सेहो भेटैत अछि जे ओ स्मगलर शशांकक गेट पर ठाढ़ अछि"।

"तेसर फोनमे की वार्त्तालाप अछि"।

"तेसर फोन ओ स्मगलर अपन ऑफिस स्टाफकेँ साढ़े नौ बजे करैत अछि। ओ कर्मचारीकेँ आदेश दैत अछि जे तुरत ऑफिस आऊ, हमहुँ पहुँचैत छी। बस एकर अतिरिक्त किछु नहि। कोनो एवीडेंस नहि भेटि सकल एहि केसमे। कहू तँ हम नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट दए दिअ"।

"आरुणि। की कहैत छी अहाँ। अहाँक विभाग तँ आइ धरि कोनो काज नहि कएने छल मुदा आइ तँ सभटा कड़ी जोड़ि देलहुँ अहाँ। शशांक फोन कएलक जे भेंट करू। दोसर फोन पर ओ व्यक्ति ओकर गेट पर ठाढ़ छल। तेसर फोनमे ओकर कर्मचारी ऑफिस ओतेक रातिमे की करए जाइत अछि। रेडक खबरि शशांक लीक कएलन्हि। ओ कर्मचारी सभटा कागज हटा देलक आ

हमर विभागक ऑफिसर भोरमे छुच्छ हाथ घुरि कए आबि गेलाह। आब एकटा फोन आर करू। शशांकक नंबर टेप तँ नहि भऽ सकल छल मुदा प्रक्रियाक अनुसार ओकर आवाजक सैंपल मैच करबाक चाही। ओ फोन उठायत तँ गलत नंबर कहि काटि दियौक''।

''सैह होएत''।

तखने ई प्रक्रिया कएल गेल।

''ई तँ ओपन आ शट केस अछि''- विजीलेंस कमेटीक अध्यक्ष महानिदेशककँ बतओलन्हि। महानिदेशक शशांककँ बजबओलन्हि आ ओकरा दू टा विकल्प देलन्हि।

''शशांक, एहि सभ घटनाक बाद अहाँ लग दू टा विकल्प अछि। विभागसँ कंपलसरी सेवा निवृत्ति लेबए पडत अहाँकेँ। नहि तँ इंक्वायरी आगाँ बढ़त''।

शशांक कंपलसरी सेवानिवृत्ति लए लेलन्हि। विभाग छोड़ि कए चलि गेलाह।

''भाइ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि''।

''भजार। हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेल छलहुँ जाहि दिन हमरा बुझबामे आओल जे अहाँकेँ बच्चाबला सभटा गप मोन अछि। काका आ अहाँमे कोनो अंतर नहि। मार्ग मात्र दू तरहक रहल। एहि विजयक मार्ग पर अहाँ चली ताहि हेतु कतेक कहैत छलहुँ अहाँकेँ, से मोन अछि ने। मुदा ओहि दिन जखन हमरा अहाँ बच्चाक गप सभ कहए लगलहुँ तहिये निश्चिन्त भऽ गेल छलहुँ हम''।

आरुणिक पढ़ाइक ग्राफ पिताक मोनक संग बनैत-बिगड़ैत रहैत छलन्हि। मुदा घुरि कए पुनः लक्ष्य प्राप्त करैत छलाह। नोकरीमे रहितहु ई घटना एक बेर फेर भेल छल।

आ फेर एकटा सरकारी यात्राक बाद आरुणिक भेल एक्सीडेन्ट । १५ दिन धरि वेंटीलेटर पर फेर एक साल धरि बैशाखी पर रहलाक बाद पुनः अपन पैर पर ठाढ़ भऽ गेलाह आरुणि । ओ बच्चा जे डायरी लिखैत छल कतए होएत । ओ काल्पनिक कथाकार सभटा सत्ते लिखने छल, आरुणिक भविष्यक वक्तव्य कऽ रहल छल ओ । आरुणिक डायरीमे सेहो यैह अंकित भेल-

''अप्पन माने हमर -आरुणिक- विषयमे गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाब रहय लागल । किछु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल ह्मर एक्सीडेंट, जकर कारणवस हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पड़ल जेना डेढ़ दिन जेकाँ बीति गेल । किछु एहि बातक दिस सेहो हमर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोना कए होएत । तखन सामजिक संबंधकँ सीमित करबाक विचार आएल । एहिमे हमरा बिन प्रयासक सफलता भेटि गेल छल । एकर कारण छल हमर नहि खतम

प्रतीत होमएबला बीमारी । एहिमे विभिन्न डॉक्टरक ओपिनियन, किछु गलत ऑपरेशन आ एकर सम्मिलित इम्प्रेसन ई, जे आब हमरा अपाहिजक जीवन जीबए पड़त । आनक बात तँ छोड़ू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल छल । लगैत छल जे डॉक्टर सभ फूसियाहिँक आश्वासन दए रहल अछि । एहि क्रममे फोनसँ लऽ कए हाल समाचार पुछनिहार धरिक संख्या सेहो घटि गेल छल । से जखन अनचोक्के बैशाखी, फेर छड़ीपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेकँ फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंध बनाबएमे असुविधा होमए लगलन्हि। जे हमरासँ दूर नहि गेल रहथि तनिकासँ तँ हम जबर्दस्तीयो संबंध रखलहुँ मुदा दोसर दिशि गेल लोकसँ हमर व्यवहार निरपेक्ष रहैत छल, से पुनःसंबंध बनेबासँ लोक हतोत्साहित रहए लगलाह । दुर्दिनमे जे हमरापर हँसथि तनिकर प्रति ई व्यवहार सहानभूतिप्रदहि मानल जाएत । एहिसँ समयधरि खूब बचए लागल। शुरुमे तँ लागल जेना ऑफिसमे क्यो चिन्हत आकि नहि । मुदा जखन हम ऑफिस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेकाँ स्वागत भेल होअए । मुदा एहिमे ई बात संगी-साथी सभ नुका लेलक जे हमर छड़ी सँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल छलन्हि । सभ मात्र हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहैत छलाह । जखन हम छड़ी छोड़ि कए चलए लगलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहाँ पुरनका रूपमे घुरि रहल छी । एहि बातकेँ हम घरपर आबि कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए केर फोटोकेँ पत्नीक मदति सँ हैण्डीकैम द्वारा वीयोडीग्राफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन्न रहि गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नँगड़ा कए दौगब सन लागल छल । पहिने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रत्ती पता धरि नहि चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बड़ड कम अछि, पहिने तँ आर बेसी छल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत छलाह, तनिका कतेक खराब लगैत होएतन्हि । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक प्रोत्साहन आ हमर हिम्मतिक प्रशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन प्रारम्भिक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकड़लाक बाद सार्वजनिक जीवनमे अलग-थलग पड़ि जएबाक संदेह, आशा, अपेक्षा किंवा अनुभवक बाद जे एहि तरहक अनुभव भेल से हमर व्यक्तित्वक भिन्न विकासकेँ आर दृढ़ता प्रदान केलक''।

कैकटा ऑपेरेशन भेलन्हि आ अनेस्थिशियासँ बाहर अबैत काल आरुणिकेँ लागन्हि जे ओ झोँटा बला सहस्त्रबाढ़नि झमारि कए एहि विश्वमे फेंकि दैत छन्हि हुनका ।मृत्यु पर विजय कएलन्हि आरुणि। मुदा डेढ़ बरख बाद जखन ऑफिस अएलाह तखन लोककेँ विश्वासे नहि भेलैक। मुख पर वैह चिरपरिचित हँसी। लोक सभ तँ ईहो कहैत छल जे ई एक्सीडेंट भेल नहि छल वरन् करबाओल गेल छल। कारण नवलक एक्सीडेंट जेकाँ छल ई एक्सीडेंट।

खण्ड-३

कविता-संग्रह

# सहस्त्राब्दीक चौपड़पर

## खण्ड-३ : **कविता-संग्रह**

### सहस्राब्दीक चौपड़पर

१. शामिल बाजाक दुन्दभी वादक
२. मोनक रंगक अदृश्य देबाल
३. मन्दाकिनी जे आकाश मध्य देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
४. पक्काक जाठि
५. निन्नक जीवन विचित्र
६. बंशी पाथि पकड़बाक प्रयास
७. अगिलही
८. अभिनव भातखण्डे
९. शिल्पी
१०. मोनक तटपर
११. सूर्य-चन्द्र गबाह
१२. वस्सावस
१३. स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्यक प्रति
१४. पुरान भेल गप
१५. यौ शतानन्द पुरहित
१६. निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्
१७. *हमर बारह टा हैकू*
१८. पुरहित
१९. इच्छा-मृत्यु
२०. वार्ड नं २९ बेड नं. ३२ सँ
२१. ट्रेन छल लेट
२२. सूर्य-नमस्कारक बहन्ने
२३. सन सत्तासीक बाढ़िक बहन्ने
२४. महाबलीपुरम समुद्र तटपर
२५. स्मृति-भय
२६. गाय
२७. श्राद्ध ने मरा जाय
२८. जाति
२९. पुत्रप्राप्ति
३०. गुड-वेरी गुड
३१. हर आ बड़द
३२. गंगा ब्रिज
३३. मुँह चोकटल नाम हँसमुख भाइ
३४. सपना
३५. चित्रपतङ्ग
३६. बिसरलहुँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप
३७. शलातुर गाम
३८. काल्हि
३९. मोन पाड़ैत
४०. पथक पथ
४१. मिथिलाक ध्वज गीत
४२. बड़का सड़क छह लेन बला
४३. पता नहि घुरि कए जाएब आकि

## शामिल बाजाक दुन्दभी वादक

देखैत दुन्दभीक तान
बिच्चहि शामिल बाजाक

सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो देखत नहि हमर चित्र एहि अन्हारमे
तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर

सागरक हिलकोरमे जाइत नाहक खेबाह
हिलकोर सुनबाक नहि अवकाश

देखैत अछि स्वरक आरोह अवरोह
हहाइत लहरिक नहि ओर-छोर

आकाशक असीमताक मुदा नहि कोनो अन्त
सागर तँ एक दोसरासँ मिलि करैत अछि
असीमताक मात्र छद्म
घुमैत गोल पृथ्वीपर
चक्रपर घुमैत अनन्तक छद्म

मुदा मनुक्ख ताकि अछि लेने
एहि अनन्तक परिधि
परिधिकेँ नापि अछि लेने मनुक्ख

ई आकाश छद्मक तँ नहि अछि विस्तार

एहि अनन्तक सेहो तँ ने अछि कोनो अन्त?
तावत एकर असीमतापर तँ करहि पड़त विश्वास!

स्वरकेँ देखबाक
चित्रकेँ सुनबाक
सागरकेँ नाँघबाक
समय-काल-देशक गणनाक

सोहमे छोड़ि देल देखब
अन्हार खोहक चित्र
सोहमे छोड़ल सुनब
हहाइत सागरक ध्वनि

देखैत छी स्वर सुनैत छी चित्र
केहन ई साधक
बनि गेल छी शामिल बाजाक
दुन्दभी वादक

**राजस्थानमे गाजा-बाजावलाक संग किछु तँ एहेन रहैत छथि जे लए-तालमे बजबैत छथि मुदा बेशी एहन रहैत छथि जे बाजा मुँह लग आनि मात्र बजेबाक अभिनय करैत छथि । हुनका ई निर्देश रहैत छन्हि जे गलतीयोसँ बाजामे फूक नहि मारथि, यैह छथि शामिल बाजा ।*

## मोनक रंगक अदृश्य देबाल

ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल
प्रतीक बनि ठाढ़
घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि
ओसारापर राखल तुलसीक गाछ
प्रतीक सहृदयताक मात्र

मोन पाड़ैत अछि इनार-पोखरिक महार
स्विमिंगपूलक नील देबाल बनबैत पानिकेँ नील रंगक

मोनक रंगक अदृश्य देबाल
ढहैत

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़
बहैत

## मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
## देखल आइ पृथ्वीक ऊपर

बद्री विशाल केदारनाथ
अलकनन्दा मन्दाकिनीक मेल
हरहड़ाइत धार दुनू मिलैत
मेघसँ छाड़ल ई ककर निवास !

बदरी गेलाह जे
नहि घुरलन्हि ओदरी हुनक ताहि
आइ बाटे-बाट आएल
शीतल पवनक झोंक खसि रहल भूमि
स्खलन भेल जन्तु सबहिक
हिम छाड़ल ई ककर वास !

हृदय स्तंभित देखि धार
पर्वत श्रेणीक नहि अन्त एतए
कटि एकर तीव्र  नीचाँ अछि धार
दुहू कात छाड़ल पर्वतसँ ई
अलकनन्दे ई सौन्दर्य अहींक

मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
हरहड़ाइत ई केहन फेनिल
स्वच्छ निर्मल मनुक्ख निवसित

नव दृष्टि देलक देखबाक आइ
शीतल पवनक छाड़ल ई सृष्टि

## पक्काक जाति

तबैत पोखरिक महार दुपहरियाक भीत
पस्त गाछ-बृच्छ-केचली सुषुम पानि शिक्त

जाठि लकड़ीक तँ सभ दैछ
पक्काक जाठि ई पहिल
कजरी जे लागल से पुरातनताक प्रतीक

दोसर टोलक पोखरि नहि
अछि डबरा वैह
बिन जाठिक ओकर यज्ञोपवीत नहि भेल
कारण सएह

सुनैत छिऐक मालिक ओकर अद्विज छल
पोखरिक यज्ञोपवीतसँ पूर्वहि प्रयाण कएल

पाइ-भेने सख भेलन्हि पोखरि खुनाबी
डबरा चभच्चा खुनेने कतए यश पाबी !

देखू अपन टोलक पक्काक जाठि ई
कंक्रीट तँ सुनैत छी पानियेमे रहने होइछ कठोर
लकड़ीक जाठि नहि
जकर जीवन होइछ थोड़

## निन्नक जीवन विचित्र

डैनियाही दुपहरियाक घामक बीच
सपनाइत सहस्त्रबाढ़निक दानवाकार आकृति

प्रेयसीपर झपटैत ओकर कंठ मचोड़ैत
प्रेमी पकड़ैत अछि सहस्त्रबाढ़निक झोंट
पोखरिमे अछि खसबैत प्रेमीकेँ पएर बान्हि लेलक झोंटासँ
डैनियाही दुपहरियामे पोखरिक झोंटाबला पनिडुब्बी

तांत्रिक-सहस्त्रबाढ़निक झाँझसँ निकलि
अपन प्राणान्त करैत प्रेयसीकेँ बचबैत
प्रेमीक निन्न अछि खुजैत रौदसँ घमैत घामसँ नहाएल
घोर निद्राक तृप्ति रहैछ मुदा हेराएल

देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत
मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल
गुनधुनी बला स्वप्न
बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक
अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान
दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त

कारिख चित्रित रातिक निन्न
टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य
बनि राजनेता करैत देशक समस्याक अन्त

बड़ड थोपड़ी अछि बजैत न्यायक डंका गुंजैत
धर्म-जाति-आतंकवाद समस्या-समझौता करैत
प्राणघातक प्रहारकेँ छातीपर सहैत- जितइत
निन्न अछि टुटैत मुदा तकर अछैत

घोर-निद्रा तृप्तिक अनुभूति अछि छुटैत

निन्नकेँ आस्ते-आस्ते देलक माहुर् मिलि कए सभ
मित्र
कएलक निन्नक जीवन विचित्र

## बंशी पाथि पकड़बाक प्रयास !

बंशी पाथि पकड़बाक प्रयास !
आकांक्षाक पंखयुक्त अश्वकेँ
बोर देने सफलताक सूत्रक
अनन्त प्रतीक्षा निस्बद्ध चुप्पीक

पानिक तल स्थिर नियन्ताक रूप
छोट कीड़ीक गमन उठबैत अछि सूक्ष्म हिलकोर
आशाक विश्वासक प्रतिरूप

बंशी पथने ठाढ़ पाथि पकड़बाक प्रयास
अंधविश्वासक छोर विज्ञानक ओर
बोर देने ज्ञानक पिण्ड
प्रतीक्षाक अन्त ! प्रशान्त शान्ति
सोंस काछु हरकाछुसँ रिक्त पानि
निर्माताक निर्मितिक अंत कएल व्याधि

बीया-जीरा माछक रोपि
बंशी पाथि पकड़बाक कएल हियाउ
आकांक्षाक अश्व सफलताक सूत्र
ज्ञानक पिण्ड निर्माताक निर्मितिक साधांश
ठाढ बिच्चहि  अनन्त अकास
यंत्रवत बिच्चहि  अनन्त विस्तार
शान्त-प्रशान्त-वाकहीन मनुक्ख

सूक्ष्मतर भावनाक जखन आबए हिलकोर
विह्वल करैत मनुक्खकेँ छल जे छुच्छ-रुक्ख

## अगिलही

सुरसराइत ग्वालक झुण्ड

कमलाक धारमे पिछड़ि हेलबाक द्वंद
धारक विरुद्ध चलबाक क्रम
ढेकरैत माल-जालक अबैए शब्द
घुरि जाइछ गाम दिस झुण्डक-झुण्ड

घरक वातावरण गारि-मारिक
बकरीक नेड़ीक बीच जीवन साइत
पलायन नगर दिस भेल आब ई दैव
घृणा विरक्ति प्रदूषण आ ई एड्स

कैक संगी मृत एड्सक भेँट
नगरक चमक मोन पाड़ैछ गामक द्वैध
अगिलही पहिने आब सुन्न अछि घर-द्वार
कोठा-कोठामे भेल मुदा की सुखहाल?

गामक गाम सुड्डाह पलायनक अगिलहीमे
नहि जानि की षडयंत्र अछि ई महीमे?
गाममे बेचने तरकारी लोक की कहत
नगरमे के ई जाए देखत?

आह भेल नजरिक भेद लोकक एतहु
चारू कात ताकी अपन जे भेटत कतहु

अपन लोक सेहो अछि दैत अहम्
अहमक मारि मरैत पुस्तक-पुस्त आगाँक

आह ई खून-खुनाहनि असामक
ई हाल की निचुलका पीढ़ीक होएत भरि भारत

तखन कोन भयँ छोड़ल अपन देस
केकर षडयन्त्र किए नहि बुझि पाओल कियो ?
छोड़ल धरती जड़ि नहि ताकि पाओल किएक

तहिया मोन खराप भेने नहि डॉक्टर छल
बाढ़ि अकालमे के ककर आसरा बनत
जाति-पाति-धर्मक देबाल बिच्चहि
पिचाएल जाइत मनुक्खक पलायन बाट छल

देस-कोस घर-द्वार आब हमर ईएह
वेदना हमरामे अछि
अगुलका पीढ़ीक
तँ ई सम्बलो ने हएत

## अभिनव भातखण्डे

भातखण्डेक अमरत्वक
पाश्चात्य संगीतक जे रहए षडयन्त्र
भारतीयताक भारतक संगीतक स्वाधीनताक अपहरण
दृष्टिदोषक कारण जतए
राजनैतिक नेतृत्त्व भेल पराजित
स्वाधीनता भेल अपहृत
मुदा भातखण्डेक चरित्र
रोकि देलक संगीतक पराधीनता

हे रामरंग अहाँक अभिनव गीताञ्जलि
पढ़लहुँ हम सम्पूर्ण आ
ठीके छी अहाँ अभिनव भातखण्डे
मिथिलाक धरतीक रत्न

कोनो मातवरक नामवरक नहि अधीन
अहाँक पचासो बरखक साधना
कंठक शास्त्रसँ स्वाधीनताक परिभाषा
हनुमान-भक्त रामरंग अहाँक
सम्पूर्ण संगीत-रामायणक आस्वाद लेने
मोन पड़लथि तुलसीदास

हुनक स्त्री-शूद्रक प्रति दुर्भावपर
अहाँक संगीत रामायणक विजय
स्वाधीनताक नव-नव अर्थ दैछ

राग वैदेही भैरव राग
तीर भुक्ति
राग विद्यापति कल्याण मिथिलाकेँ देल

राग भूपाली आ राग बिलावलमे मैथिली भाषाक रचना कएल
राग विद्यापति कल्याणक द्रुत आ विलम्बित खयाल
अहाँक देल संगीत मिथिला ध्वज गीतकेँ देलक नव अर्थ
नव अनुभूति

ध्वजक फहरएबाक अर्थ अछि स्वाधीनता
स्वाधीनता मनसिक
नाम अछि खसि कए ठाढ़ होएबाक
आ बैशाखी छोड़ि दौगबाक

घृणाक आस्वाद कएनिहारक मस्तिष्कक
प्रक्षालन करैत संगीत लहरीसँ

हे सुखदेव झाक पुत्र
खजुरा गामक लोक भेटताह तँ कहबन्हि
रामरंगक मूर्ति गाममे लगबाए
नहि होमए जाएब उत्रृण हे बहिन-भाए
स्वाधीनताक शाखाक करए जाऊ विस्तार

रामरंग रहि वाराणसी-प्रयागक गंगा तटपर
कएल स्वाधीन संगीतकेँ  ओ ऋषि
स्व अधीन विचार-बात होएत
तखने होएत श्रद्धांजलि रामरंगक हे खजुरावासी

युगक अन्त भेल आइ माँगनक स्वरमे गाबए छी
माँगनक-रामरंगक नाम लिअ नहि लिअ
मुदा मोन राखू स्वाधीनताकेँ

पएर भने बैशाखीपर रहए माथ मुदा स्वाधीन रहए
विश्वाससँ निकलैत आत्मविश्वासकेँ राखू आगाँ
नहि बान्हि राखू मस्तिष्ककेँ सिक्कड़िमे

*(शास्त्रीय संगीतक शास्त्रकार आ गायक श्री रामाश्रय झा ''रामरंग'' जीक मृत्यु १ जनवरी २००९ कें भऽ गेलन्हि हमर रचित ''मिथिलाक ध्वज गीत''क संगीत हुनके देल छन्हि, हुनकर स्नेहमे ।)*

## शिल्पी

शिल्पी बलिराजगढ़क
हड़ाही पोखरिक
पस्टनक अकौरक आ नाहर-भगवतीपुरक बौद्ध खोह

अवलोकितेश्वर ताराक प्रतिरूप उच्चैठक मूर्ति
स्त्रीगणक गीत सहस्राब्दि भरि सुनि-सुनि बनलीह काली-भगवती

वैजयन्तीपुर-जनकपुर आ मिथिलानगरीक उत्थान
अरि मर्दनक भूमि
मथल जाइत छल जतए शत्रुकेँ
जन आ विश केर साम्राज्ञ जनक केर भूमि
दलित शिल्पीक सभटा ई कृति

मुदा आब के देत ओकर महत्व
चरण रज धोबि पीबू हिनक पएर
एतेक भेलोपर निष्कपट कएलन्हि मातुक सेवा
कमलाक भगता बनि जनकपुरक प्रदिक्षणा
मिथिलाक वृहत परिक्रमा

गहबर सभकेँ गोहारिकेँ
मुदा बनलाह अछूत
गामसँ बाहर के पठेलकन्हि हुजूर

तैयो संस्कृतिक ई शिल्पी
बनाओल बुद्धायन
अहांक बुद्ध अहींक शिव राम कृष्ण
मन्दिरमे प्रवेश निषेधक अछैत
नहि कएलन्हि पलायन

धर्म-जातिक बोझ माथपर लेने रहलाह
पूजन करू पएर रज पखारि कऽ
बौद्ध मूर्तिक शिल्पी ब्रह्मा विष्णुक मूर्तिक आधार
कलाकृति भाँसि गेल हेराएल
केलहुँ सभ मिलि गामक बाहर हिनका ठाढ़

तखन विनती
दीन भदरी छेछन महाराज गरीबन बाबा लालमइन बाबा
अमर बाबा मोती दाइ गांगो देवी कृष्णाराम सलहेसक मूर्ति बनाऊ
चरण रज पूजि मुदा

## मोनक तटपर

हँसीमे बिसरैत छी
फेकैत छी अपन सभटा दुःख
दुःखक संगे अपन सभटा महत्वाकांक्षा
प्रेरणा दैत अछि सम्भावना
आत्मविश्वास अबैत अछि फुर्तिक संग
अभिलाषाक पूर्तिक बढ़बैत आकांक्षा

आँखिक मिलन भेने
दूर ओहिना होइत अछि चिन्ता
सागर तटपर जेना लहरि लऽ जाइत अछि
सभटा पात-खाद्य वस्तुकेँ करैत स्वच्छ
सभटा फिकिर तहिना बहैछ
शान्त स्वच्छ बनैछ मोनक तट

बिसरैत अपनाकेँ आँखिमे
स्नेहसँ गप करब
मात्र एतबे
अनैत अछि कतेक सम्भावना आ परिणाम

मुदा एकर विपरीत...

## सूर्य-चन्द्र गबाह

आर्यभट्टक पाटलिपुत्रमे उद्घोष
आन विद्याक तँ होइत अछि भेद-विभेद-प्रतिवाद
मुदा विज्ञानक तँ अछि ई सूर्य-चन्द्र गबाह

चन्द्रायणक स्वप्न पूर्ण केलन्हि वाह
लीलावती पढ़ि सूर्य-चन्द्र-तरेगणक दूरी नापबाक कला

आइ पूर्ण सफल भेल परिश्रम जाए
अग्नि-ब्रह्मोस पूर्ण कएल ई अर्थ
ब्रह्मास्त्र-पाशुपतास्त्र केर अर्थ बुझलनि जाए आइ

## वस्सावस

जनक याज्ञवलक्य विदथ माथव
मल्ल जगत्प्रकाश-जगतज्योतिर्र
माँगन खबास रामरंग यात्री हरिमोहन
सुन्दर झा शास्त्रीक पएरमे सिकड़ि बान्हल जेलक चित्र
सीरध्वज वेदवती मैथिली मैत्रेयी

जयमंगला-असुर-अलौली-कीचक-वरिजन-बेनू नौला गढ़ सभ
आ गढ़ बलिराजपुरक

बुद्ध-महावीरक वस्सावसक भूमि
शिल्पी कृषकक क्षेत्र
खिखीर शाही नीलगाएक भ्रमण
आँखि लागल सभटामे !

हजारक-हजार साल जे भूमि कएलक निर्वहण
से अछि पलायनक भूमि आब
पचास सालमे की भेल जे
हजार सालमे नहि छल प्राप्त

लोचनक रागतरंगिणीक चर्च भातखण्डेमे
भातखण्डेक चर्च रामरंगमे
गंगेश वाचस्पतिक तर्कक बीच
कुतर्की कहियासँ भेलहुँ जाए

याज्ञवल्क्य द्वारा गुरुक शिक्षाक त्याग
शुक्ल यजुर्वेदक निर्माणक नव अध्याय
मुदा पछातिक जाति-मंडित शास्त्र
इतिहाससँ तैयो क्षमाक करैत आश !

तँ शुरु किएक नहि करैत छी
आबहु जाए
इतिहासक नव अध्याय !

## स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्यक प्रति

पिताक छल आश  असत्यक सर्वदा त्याग
सभ होअए समृद्ध उत्तम विचारक बीच
देशक लेल जे जाए प्राण अन्तिम इच्छा होअए सएह

करैत पालन देखल जे
नहि बुझैत अछि लोक
नहि बुझैत अछि सत्यक मोल आ समृद्धिक अर्थ
स्वतंत्रता आ देश नहि कोनो मोल छैक लेने स्वार्थक आगाँ
तँ की बदली ? अपन शिक्षाक अर्थ !

त्यागि रस्ता मुदा वैह लक्ष्य
आ रस्ता जिदियाहवला !

मुदा बजने की ?  मात्र करैत रहू
सोझाँवलाकेँ बुझए दियौक
जे अछि बुझैत
बुझए दियौक आ करए दियौक खलनायककेँ महिमामण्डित
महिमामण्डित आ शक्तिशाली बुझए दियौक दुराचारीकेँ
जावत बुझत भऽ जएतैक हारि !

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे
तहिये बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला

## पुरान भेल गप

सरोजिनी नगर मार्केटक बम विस्फोट

डस्टबिनमे राखल बमक विस्फोट
उड़ैत लोक कार वस्तु-जात
खूनक धार टटका निकलल लाल

पुरनाएल गप खून खरकटि गेल
कारी स्याह बनल

आ एम्हर ब्रेकिंग न्यूज - दिल्ली नगर फेर आबि गेल पटरीपर !

दिलवलाक छी ई नगर तँ !

मुदा जिनका घरमे रोटी कमाएवलाक मृत्यु अछि भेल
हुनक जीवनक रेल
एक दू दिन की
भरि जिनगीयो
की आबि सकत पटरीपर !

## यौ शतानन्द पुरहित

यौ शतानन्द पुरहित

अगहन शुक्ल विवाह पंचमी
विवाहक सभसँ नीक दिन
पुरहित शतानन्द
राम सीताक विवाह कएल सम्पन्न

खरड़ख वाली काकीक विवाह
सेहो विवाह पंचमीएकेँ भेल
पुरहित सेहो कोनो पैघे पण्डित रहथि

सीता दाइ कतेक कष्ट कटने रहथि !

मड़बापर चित्रकला लिखल रहए मिथिलाक
परिछन नैना-जोगिन सभटा भेल छल
ओहिना जेना भेल रहए सीता दाइक विवाहमे

बाल-विवाह तँ भेले रहन्हि खरड़ख वाली काकीक
विवाहोक दिन सभसँ नीक
नैना जोगिन जोगक गीत
किछुओ कहाँ बचा सकल
भऽ गेलीह विधवा

कहैत छथि हमर संगी
जहिया लऽ जाइत छथि ओ अपन भौजीकेँ
पेंशनक लेल दानापुर कैण्ट
विधवा भौजीकेँ देखि

भीतरे-भीतरे कनैत रहैत छथि

बाबूकँ कहलन्हि जे विधवा विवाह हेबाक चाही
तँ मारि-मारिकँ ओ उठलखिन्ह
नेऊराक राजपूत बाबूसाहेबक ई खानदान
बड़ काबिल भेलाह ई !

''मुदा अछि बुझल हमरो
कुहरैत रहैत छथि बापो

मुदा बोझ उठेने छथि कुरीति समाजक
उपाय कतए छनि कोन दोसर''?

यौ शतानन्द पुरहित
अगहन शुक्ल विवाह पंचमीक
दिनक महत्व दिअ ने बुझाए

## निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

चन्द्रयाणक पूर्वापर
आर्यभटक उद्घोष पड़ैत अछि मोन

एहि कुसुमपुरमे करैत छी ज्ञानक वर्णन
नापल पृथ्वी सूर्य आ चन्द्रक व्यास
पृथ्वी अचला नहि
अछि गतिमान ई भू

भं अछि तरेगण जे अछि अचल
ग्रहण नहि राहुक ग्रास  वरण अछि मात्र छाह

चलू चन्द्रयाणक लेल बधाई
इसरोक वैज्ञानिक लोकनिकेँ आ माधवन नायरकेँ
आएल आर्यभट्टक पंद्रह सए साल बादो तँ की !

ओहि देशवासी लए नहि विलम्बित
लीलावती पढ़ियो कए जे नहि गानि सकलाह तरेगण
कुसुमपुर नहि तँ श्रीहरिकोटामे सैह ई दिन

कुसुमपुरमे ज्ञानक वर्णन नहि तँ
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक बधाइ
चन्द्रमाकेँ छूबाक लेल थाड़ीमे पानि नहि राखब आब
आर्यभटस्त्विह निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक बधाइ

## *हमर बारह टा हैकू*

अ.वास मौसमी,

मोजर लुबधल

पल्लव लुप्ता

आ.घोड़न छत्ता,

रेतल खुरचन

मोँछक झक्का

इ. कोइली पिक्की,

गिदरक निरैठ

राकश थान

ई.दुपहरिया

भुतही गाछीक

सधने श्वास

उ.सरही फल

कलमी आम-गाछी,

ओगरबाही

ऊ.कोलपति आ

चोकरक टाल,

गछपक्कू टा

ऋ.लग्गा तोड़ल

गोरल उसरगि

बाबाक सारा

ऌ.तीतीक खेल

सतघरिया चालि

अशोक-बीया

ए.कनसुपती,

ओइधक गेन्द आ

जूड़िशीतल

ऐ.मारा अबाड़

डकहीक मछैड़

ओड़हा जारि

ओ.कबइ सन्ना

चाली बोकरि माटि,

कठफोड़बा

औ.शाहीक-मौस,

काँटो ओकर नहि

बिधक लेल

# पुरहित

अर्थशास्त्र बनबैत अछि कम्पनीकेँ मनुक्ख
आ मनुक्ख बनैछ कनमुँह

घृणाक आस्वाद आ घृणामे लेने आस्वाद
वेश्यावृत्तिक संसार-
आब नर्तकीक घर नहि
गेल अछि पैसि
राजनीति धननीति
एहि पर्यटननीतिमे !

आम्रपाली पहिरि चश्मा करैत छथि चालन वाहनक
नायक मृच्छकटिक भऽ गेल छथि होटल व्यवसायी
नव जाति व्यवस्थाक पुरोहित
आम्रपाली बनलि अनुलोम व्यवस्थाक शकुन्तला

संवादक अन्त मतवैभन्यक प्रारम्भ !
आ तेँ गाम एखनो वैह
विधवा दलित गरीबीक खेरहा सैह

पीयर आ लाल होइत
चौबटियाक बत्ती सभ
लुधकैत गाड़ीक शीसा पोछैत
अखबार पत्रिका बेचैत
नव जाति-व्यवस्थाक दलित
बचिया-बच्चा सभक पाँती

कोरामे बच्चा लेने युवा भिखमंगनी
निरीह आँखि पैर खझित

खञ्जित पएरे बढ़ैत आगाँ
मुदा भने ओहि चौबटियापर
शानसँ भीख मँगैत अछि बालगोविनक झुण्ड
भीख नहि आशिरवादी
पाइ देलहुँ तँ ठीक नहि तँ
गारिक प्रसादी

औद्योगिक क्षेत्रमे सेहो
कोयलाक भट्टीक धुँआसँ
कारी भूत भेल श्रमिक
ईहो छथि नव जाति व्यवस्थाक दलित

लघु उद्योगक पुरोहितक
घर जेना राजा सभक
दारू पीबि मँतल
मुदा सरकारक छन्हि जिद्द
लघु उद्योगकेँ करताह समृद्ध
लघु उद्योगकेँ वा लघु उद्योगक पुरोहितकेँ

बना कय कम्पनी लए सरकारी ऋण
बन्द करथि कम्पनी
कम्पनीक मालिक नहि निदेशक छी हम
कम्पनीकेँ होइछ घाटा तँ
श्रमिक छथि मरैत
नहि किछु होइछ निदेशकक
कम्पनी अछि मरैत

अर्थशास्त्र बनबैत अछि कम्पनीकेँ मनुक्ख
आ मनुक्ख बनैछ कनमुँह

दिल्ली-मुम्बइक हाट
तरकारी माँछक बजार
होटलक बनथि भनसिया
पुत्र-पुत्रीक विवाह दुनूमे जाति गौण
विधवा-विवाह क्षम्य
मुदा जखन यैह सभ घुरैत छथि गाम

नील-टीनोपाल दए नव व्यवस्थाक दलित
बनि जाइत छथि पुरातन व्यवस्थाक पथिक

तरकारी बेचनिहार बनथि जयबार
औद्योगिक क्षेत्रक कारी मुरुत
साबुनसँ रगड़ि चाम
भए जाथि गामक भलमानुष !

होटलक भनसिया भऽ जाइत छथि सोइत
सरदारजीक मोहर्रिर बनैत छथि कायस्थ
पासवानजी भऽ जाइत छथि दलित
घुरैत काल ट्रेनहिमे फेर सभ मिलि
नव व्यवस्थाक आ पुरातनक करथि मेल

ट्रेन अछि साक्षी एहि मनसि द्वैधक
अमूर्त व्यवस्थाक धँसल आँखिक
उजड़ा नूआक व्यथाक युवा विधवाक
आम्रपालीक आ
मृच्छकटिक नायक चारुदत्तक
आ बसन्तसेनाक
घृणाक आस्वाद आ घृणामे लेने आस्वाद
वेश्यावृत्तिक संसार-आब नर्तकीक घरमे
गेल अछि पैसि राजनीति धननीति
एहि पर्यटननीतिमे !

## इच्छा-मृत्यु

हे भीष्म अहाँक कष्टक बखान सुनल छल खाइत पान-मखान
मुदा बुझलहुँ नहि ई बात इच्छा-मृत्यु किए कै तात !

भीषणताक कथा नहि थोड़ , भूख अत्याचार गरीबपर जोड़
केलन्हि अहाँक क्षत्रिय भयावह शक्ति आ धनक द्वन्दक परिधि
घोषनि-ब्राह्मण सभ सएह , रटि रटन्ता विद्या फेर वएह !
तखन..एक युधिष्ठिरपर छोड़ि कए राज , भीष्म छोड़ल अहाँ निसास !

हमर युधिष्ठिर पाँच सए चालीस पहिरथि खादी-रेशमी खालिस
आ समस्या वैह द्वन्दक परिधि टा टूटल परिभाषा बदलि
ओहिना देशवासी दए इच्छा-मृत्यु अपन भावना आ इच्छाकेँ
छोड़ल अछि सभटा कर्तव्य अपन गणतांत्रिक युधिष्ठिर सभपर होइत कात
बुझल भीष्म हम आब ई बात , पेलहुँ इच्छा-मृत्युएँ अहाँ निजात

## वार्ड नं २९ बेड नं. ३२ सँ

सफदरजंग हॉस्पीटलसँ
आइ देखल हम मीत
डॉक्टर
पेशेंट फ्री इलाजक
दंभ भरइ छथि हा इष्ट

साबुन-तेल सभपर टैक्स
भरइ छथि सभ वासी
हॉस्पीटलक लैटरीन गंदा अछि पुछने
नर्स बिगड़ि देखबइ छथि
अपोलोक पगपाती

जाऊ अपोलो
गंदगी ज्याँ लागय
टैक्सक बात
फिनान्स मिनिस्टरेकेँ जाऊ बुझाबय

## ट्रेन छल लेट

जायब दिल्ली कोना
अस्पतालक भर्ती कक्षमे भरती होएबाक लेल
ट्रेन अछि लेट

पहुँचलहुँ दिल्ली कोनहुना
मुदा एतए डॉक्टर अछि व्यस्त
दिल्लीक सरकारी डॉक्टर
आउ आइ काल्हि परसू
भेलहुँ पस्त
दिल्ली दूर अस्त

युग बदलल गणतंत्र आयल
मुदा ट्रेन दिल्ली जायबला लेट
आ डॉक्टर फुर्र

दिल्ली अखनहुँ अछि दूर

## सूर्य-नमस्कारक बहन्ने

ॐ मित्राय नमः
आँखि करत ठीक हिनकर लाली
जे अछि सूर्य-ग्रहणक एकटा वर्ण उगैत-डुमैत कालक भ्रम
ग्रहण नहि अछि राहुक ग्रास
हनुमानक सूर्यक ग्रहण करब पड़ल मोन ओ दोसर ग्रहण
मुदा कोनो ग्रहणक लेल राहुक नहि काज
चन्द्रमा बीचमे किरणक करै छथि ग्रास
विज्ञानक छैक सभ बात
कहलन्हि कुलदीप काक

सभ गणना कय ठामे देल
बूड़ि पंडित केलक अपवित्रक खेल

गंगामे गोदावरी आ तीरथमे प्रयाग
धन्यभाग कौशल्यामायकेँ
राम लेल अवतार
स्नानक बादक मंत्रक ई भाग
की खोलत भरत प्रगति-एकताक द्वार ?
खेल-खेलमे देश गेल पाछू
आबहु तँ सभ आगू ताकू
शक्ति देहु हे भानु मामहः
ॐ रवये नमः

मेरुदण्ड-पग होयत सबल
सूर्य-नमस्कारक परञ्च पाठ प्रबल
सूर्यवंशीयोक अहह अभाग
कर्ण-तर्पणक नहि करू बात

जाति-कर्मक ज्ञानक ओर छल ओतय

नहि किएक पकड़ल राहू-ग्रासक बातक मर्म अहह
ॐ सूर्याय नमः

सात अश्व-रथक उमंग पनिसोखाक सात रंग प्रकाशक
रथमूसल अजातशत्रुक संग महाशिलाकंटकक जोड़
केलक मगध काज नहि थोड़
जर्मनी-इटलीक एकताक प्रयास
दुइ सहस्त्राब्दी पहिनहि काश
रश्मिक सात-अश्वक रहस्य बूझल मगध ताहिये पहर
छोड़ल भाव पकड़लहुँ अर्थ हा भरतपुत्र केलहुँ अनर्थ
भरु शक्ति हे सूर्य अहाँ
ॐ भानवे नमः

श्वासक-कुंभक केलहुँ अभ्यास मोन पड़ल कुन्तीक अनायास
सूर्यमेल सुफल भऽ गेल
कवच-कुण्डल भेटल सेहो इन्द्रहि संगे गेल
एकलव्यकेँ पहिनहि द्रोण केलन्हि फेल
अर्जुनक कर्णपर विजय ? क्षय प्रतिभाक रूप विकृत कैल
अखनहुँ धरि की तू ई सहबह
ॐ खगाय नमः

सूर्या आश्विन गमनमे फेर अछि परस्पर द्वंदक देरि
गुरु बृहस्पति ठाढ़े-ठाढ़ करतथि ई सभक उद्धार
अखनहुँ गुरु छथि गूड़
जोर दैत जोड़ पर हम ऋणी
बनओताह हमरा प्रबल रहि स्वयं अब्बल
गुरुक-गुरुत्व उष्ण-सुड्डाह हह
ॐ पूष्णे नमः

जकर अंकसँ निकलल विश्व
विश्वक प्राण आ तकर श्वासोच्छवास
गुरुत्वक खेलकेँ बनेलहुँ अहाँ
काछुक
सहस्त्रनागक फनि
जानि कि-की ?
रहस्य आर गहिंरायल भरत-पुत्र गेल हेरायल

तकर ध्यान हेयास्तदवृत्तयः;
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

सूर्यकिरण पसरि छल गेल
कतेक रहस्य बिलाएल
तिमिरक धुँध भेल अछि कातर
मुदा ई की अद्भुत ?
रात्रि-प्रहर देखलहुँ सप्त-ऋषिगण
दिनमे सभ-किछु स्वच्छ
मुदा नहि तरेगणक लेल
सत्यक तह तहियायल बनल खेल
हा विश्ववासी शब्दक ई मेल
अहाँक दर्शनक स्तंभ किए
ते व्यक्तसूक्ष्मा गुणात्मानः
ॐ मरीच्ये नमः

अहँक तेजमे हे पतंग प्रभाकर
सागराम्बरा अछि जे नहायल
सौर ऊर्जाक नव-सिद्धांत
नहि की देलक कनियोटा आस

मेघा-मास नहि अहाँक अछि जोड़
तखन मनुक्खक बात की छोड़
पढ़ल ग्रंथ ब्रह्मांडक बात
तरणि सहस्त्र एकरा पार
अंशुमाली तपनसँ पैघगर गाल
तकर ऊष्णता की हम सहब ?
ॐ आदित्याय नमः

पिताक बात अछि आयल मोन
बिना सावित्रीक गायत्रीक की मोल ?
दुइ वस्तुक मेल कखनहुँ नीक
कहुखन परिणाम भेल विपरीत
कटहर-कोआ खेलाह तात देलन्हि ऊपर पानक पात
पेट फूलल भेल भिसिण्ड परल मोन रसायन-शास्त्र

तीव्रसंवेगानामासन्नः;
ॐ सवित्रे नमः

पृथ्वी घुमैछ पश्चिम सँ पूर्व आ
सूर्य कैँ घूमबैत अछि पूर्व सँ पश्चिम
मुदा कहू जे गर्मीमे उत्तर-पूर्व आ
जाड़मे उत्तर-पश्चिम कियै छथि सूर्य?
की नहि चलैत छथि अपन अक्ष ?

सूर्य ग्रहणक छाह जयद्रथक खिस्सामे सेहो
दिनमे रातुक आहटि वएह सूर्य-ग्रहण छल होएत
राहू-केतु सभक दिन आबो गेल ?

पुनि-पुनि करि दण्ड हम देल
स्थिरचित्त नेत्र लेल
ध्यान धरह आ ई कहह
ॐ अर्काय नमः

पोथीक भाष्य आ भाष्यक भाष्य
अलंकारक जाल-जंजाल आ एहि बिच्चहि
सूर्यनमस्कारक सेहो ई बिध-बाध
करु स्वीकार हे हे सविता
दुःखमोचन दूर करू विकार संपूर्ण
केलहुँ सूर्य-नमस्कार हम पूर्ण

विज्ञानक पाखंड ऋतम्भरा बुद्धि कत्तऽ
योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः
ॐ भास्कराय नमः

## सन सत्तासीक बाढ़िक बहन्ने

कमलामहारानीकेँ पार कएल पैरे
बलानकेँ मुदा नाहसँ
मुदा आइ ई की भेल बात
दुनू छहरक बीच ई पानि
झझा देत किछु कालमे लिअ मानि

चरित्रक ई परिवर्तन देलक डराय
नव विज्ञानक बात सुनाय

बाँध-बान्हि सकत प्रकृति की ?
भीषण भेल आर अछि ई

हृदयमे देलक भयक अवतार
देखल छल हम गामक बात
बड़का कलम आ फुलवारीमे
बड़का बाहा देल छल गेल
पानिक निकासी होइत छल खेल

नव विज्ञानी केलथि
बाहा बन्न सभटा

फाटक लागल छहरक भीतर
बालु कएल बन्न मूँहकेँ
एक पेरिया पर छलहुँ चलल हम
आरिये-आरिये देखल रुक्ष
पहिने छल अरिया दुर्भिक्ष
आब दुर्भिक्ष अछि छुच्छ

सिल्ली नीलगाय सभटा सुन्न
विधमे शाही काँट अनुपलब्ध
जूड़िशीतलक भोगक छल राखल
गाछक नीचाँ सप्ताह बीतल
नहि क्यो वन्यप्राणी आयल खाय
चुट्टीक पाँत टा पसराएल

छहरपर ठाढ़ अभियन्ताक गप
छलहुँ सुनैत हम निर्लिप्त
मुदा जाहि धारकेँ कएल पएरे पार
तकर रूप अछि ई विस्तार !

नवविज्ञानक चरित्रानुवाद होयत एहन नहि छल हम जानल
मुदा देने छल ओकरा दुत्कार
कुसियारक किछु गाछ बाढ़िक पानिक बीचमे ठाढ़
माटिक रंगक पानि आ हरियर कचोड़ गाछ
छहरक ऊपरसँ झझायल पानि
लागल काटय छहरकेँ धारक धार

ठाम-ठाम क़टल छल छहर
ऊपरसँ बुन्नी पड़ि रहल
सभटा धान चाउर भीतक कोठी
टूटि खसल पानिक भेल ग्रास

हेलिकॉप्टरसँ खसल चूड़ा-गूड़
जतय नहि आयल छल बाढ़ि
किएक तँ पानिमे खसिकय होएत बर्बाद
हेलीकॉप्टरक नीचाँ दौगैत छल भीड़
भूखल पेट युवा आ वृद्ध

ओ बूढ़ खा रहल छथि गूड़-चूड़ा
बेटा-पुतोहुक शोक की करि सकत दूर पेटक क्षुधा?

एकटा बी.डी.ओ.क बेटा छल मित्र
कहलक ई सरकार अछि क्षुद्र
ओकरा पिताकेँ शंटिंग केलक पोस्टिंग

गिरीडीह सँ झंझारपुरक डिमोशन कर्निंग

मुदा भाग्यक प्रारब्ध अछि जोड़
आयल बाढ़ि पोस्टिंग भेल फिट

सोचलहुँ जे हमरेटा प्रारब्ध अछि नीच
शनियो नीच सरस्वती मँगैतथि की भीख?
पहुँचलहुँ गाम पप्पू भाइक मोन छोट
विकासक रूपरेखा जल-छाजन निकासी.....

बात पर बात फेर सरकारक घोषणा
बाढ़ि राहत एक-एक बोरा अनाज
सभ बोरामे पंद्रह किलो निकाललथि ब्लॉकक कर्मचारी
बूरि छी पप्पू भाई अहुँ
मँगनीक बड़दक गनैत छी दाँत
पिछला बेर ईहो नहि प्राप्त

हप्ता दस दिनक बादक बात

क्यो गेल बंबई क्यो धेलक दिल्लीक बाट
गाममे स्त्री वृद्ध आ बच्चा
बंबइमे तँ तरकारी बेचब बोझो उठायब
सभ क्यो केलक ई प्रण
मायक स्वप्न अछि कोठाक होअए घर
अगिलहीक बाद फूस आ खपड़ा
पुनः बनायल बखारी जखन भेल बखड़ा

भने भसल बाढ़िमे भीत
बनायब कोठाक घर हे मीत

खसए लागल ईंटा गाममे
कोठा-कोठामे भेल ठाम-ठाममे
पुरनका कोनटा सभ गेल हेराय
जतय हेरयबाक नुक्का-छिप्पी खेलायल हम भाए

आब सुनु सरकारक खटरास
आर्थिक स्थिति सुधारल हम मेहथमे कऽ खास
आदर्श ग्राम प्रखंडक एकरा बनाओल
कहैत छी जे हम बंबई-दिल्लीमे कमाओल !

सुनु तखन ई बात
ज्यों रहैत अस्थिर सरकार
तँ रहैत नहि दिल्ली नहि बम्मई
विजयनगरम् साम्राज्यक हाल
पुरातात्विककेँ अछि बूझल ई बात

धन्यभाग ई मनाऊ हमरा जितबिते रहू हे दाऊ
प्रगति-परिश्रम अहाँ करू
हमर समस्यासँ दूर रहू

बाढ़ि आएल सत्तासीमे
तबाही देखलहुँ मुदा कहैत छी हम
देखू आबाजाहीकेँ

धन्यभाग अहीसँ तँ मनोरंजन
मेला-ठेला खतम भेल
हुक्कालोली भेल दिवाली
आ जूड़िशीतलक थाल-कादो-गर्दा भेल होली
तखन अहुँक बात सुनने दोष नहि

कमाय लेल हमहुँ तँ दिल्ली-बंबईमे छी
कमसँ कम अहाँक ई बड़कपन
जे गामकेँ नहि छोड़ल
मनोरंजनो करैत छी कमाइतो छी खाइतो छी
आ दिल्ली बंबइ सेहो घुमैत छी

## महाबलीपुरम समुद्र तटपर

असीम समुद्रक कातक दृश्य
हृदय भेल उमंगसँ पूरित

सूर्य-मंदिर पांडव-रथ संग
आकाश-द्वीपक दर्शन कयल हम

नुनगर पानि जखन मुँह गेल
भेलहुँ आश्चर्यित गेलहुँ हम हेल

लहरिक दीवारिसँ हम टकराय
अंग-अंग सिहरि-सिहराय

देखल सुनल समुद्रक बात
बिसरल मन-तन लेलहुँ निसास

सुनेलक *मणि* गाइड ई बात
अएलथि विदेशी खोललथि ई सत्य
पल्लव वंशक ई छल देन
भारतवसी बिसरल तनि भेर

मोन पड़ल अंकोरवाटक मंदिर
राजा खतम भेल बिसरल जन  हरि-हरि

टूटल इतिहासक तार जखन
स्वाति भेल ह्रास अखन
कास्पियन सागरक पानिक भीतरक मंदिर
भारतीय व्यापारीक द्वारा निर्मित

आब एखन अछि हम्मर ई हाल
गामक बोरिंग पम्पसेट अमेरिकन इंजीनियरक खैरात
छोड़ू भसियेलहुँ कतय अहाँ फेर
प्रीति-पत्नी हँसि-हँसि भेलथि भेर

## स्मृति-भय

नगरक नागरिक कोलाहलमे
बिसरि गेलहुँ कतेक रास स्मृति
आ एकरा संग लागल भय
भयाक्रांत
शिष्यत्व-समाजीकरणक

समयाभाव आकि फूसियाहिंक व्यस्तता
स्मृति भय आकि हारि मानब समस्यासँ
आ भऽ जायब
स्मृतिसँ दूर भयसँ कात
सामाजिकरणसँ फराक
खाँटी पारिवारिक

मुदा फेर भेटल अछि समय युगक बाद
बच्चा नहि भऽ  गेलहुँ पैघ
फेरसँ उठेलहुँ करचीक कलम
लिखबाक हेतु लिखना मुदा
दवातमे सुखायल अछि रोशनाइ
युग बीतल स्मृति बिसरल
भेलहुँ एकाकी

सहस्त्रबाढ़नि जेकाँ दानवाकार
घटनाक्रमक जंजाल
फूलि गेल साँस
हड़बड़ाकऽ उठलहुँ हम
आबि गेल हँसी
स्वप्नानुशासन
लटपटाकेँ खसलहुँ नहि

धपाक
भऽ गेलहुँ अछि पैघ

बच्चामे कहाँ छल स्वप्नानुशासन
खसैत छलहुँ आ उठैत छलहुँ
शोनितसँ शोनितामे भेल
उठिकय
होइत घामे-पसीने
नहायल

स्मृति-भयक छोड़ नहि भेटल
ब्रह्मांडक कोलाहल
गुरुत्वसँ बान्हल
चक्कर कटैत
करोड़क-करोड़ मील दूर सूर्य
आ तकर पार कैकटा सूर्य

के छी सभक कर्ता-धर्ता
आ ज्यों अछि क्यो तँ ओकर
निर्माता अछि के ?
ओह ! नहि भेटल छोर

लेलहुँ निर्णय
पढ़िकेँ दर्शन
नहि करब चिन्तन
तोरल करची-कलम आ दवात

के छी ई सहस्त्रबाढ़नि
घूमि रहल अछि एकटा परिधिमे
शापित दानव आकि कोनो ऋषि
ताकैत छोर समस्याक
आ समस्या तँ वैह
के ककर निर्माता
आ तकर कतय अंतिम छोर
के ककर स्वामी

आ सभक स्वामी के ?
आ तकरो के अछि स्वामी !

भेटल स्वप्नानुशासन टूटल शब्दानुशासन
तकबाक अछि समाधान
फेर गेलहुँ स्वप्नमे लटपटाय
खसब नहि धपाक तकबाक अछि छोर

शंका-समाधान लग
डगमग होमय लागल
अपना पर विश्वास

जेना कोनो भय कोनो अनिष्ट
बढ़ा देलक छातीक धरधड़ी
आ कि नेनत्वक पुनरावृत्ति !

जन्म-जन्मांतरक रहस्य आत्माक डोरी ?
आ कि किण्वन
आ विज्ञान केलक
सृष्टिक निर्माण!

पीयूष आ विषक संकल्पना
स्वाद तीत कषाय क्षार अम्ल कटु की मधुर !
सुन्न बोनमे उठैत स्वर
षडज ऋषभ गान्धार मध्यम पंचम धैवत निषाद !
खोजमे निकलि गेलथि अत्रि अंगिरा मरीचि
संग लेने पुलऋतु पुलस्त्य आ वशिष्ठ
प्राप्त करबालेल अष्टसिद्धि अण्मिक
महिमाक गरिमाक लघिमाक प्राप्तिक प्राकाम्यक
ईशित्व आकि वशित्व
सप्तऋषिक अष्टसिद्धि

नौ निधिक खोज
पद्म महापद्म शंख मकर
कच्छप मुकुन्द कुन्द नील आ खर्व

बनल आधार दशावतारक

मत्स्यावतार बचेलन्हि वेद सप्तर्षिकेँ
आ संगे मनुक परिवार
कूर्मावतार संग मंदार-मेरु
आ वासुक व्याल आनल सुधा-भंडार
वाराहावतार आनल पृथ्वीकेँ बाहर
चारि अंबुनिधिक कठोर छल जे पाश
मारल हिरण्याक्ष

नरसिंह भगवान बचाओल प्रह्लाद
मारिकय हिरण्यकश्यप
वामन मारल बालि नापल
दू पगमे पृथ्वी
आ तेसरमे दैत्यराज

परशुराम राम आ कृष्ण
केलन्हि असुरक संहार
आ बुद्ध बदललन्हि तकर विचार

तैं की जे हुनक प्रतिमा
खसौलक देवदत्तक संतान
छिः क्यो रोकि नहि सकल बामियान

नहि कल्कि नहि मैत्रेय
जल्दीसँ आऊ श्वेत-सैंधव सवारि
चौदह भुवन आ तेरह विश्वक
अनबा लेल युग-कलधौत
अर्णवक कोलाहलमे जाय छल
नेनत्व डराय

मुदा अखन विज्ञान टोकलक मोन
ई तँ अछि किण्वनक सिद्धांत
दशावतारे तँ छथि
उत्पत्तिक आधुनिक सिद्धांत

मत्स्य कूर्म तखन वाराह
फेर नरसिंह तखन वामन
एकसँ दोसर कड़ी मनुष्यक रंग-रूपक
ताकय लेल छल निकलल

दऽ देलन्हि अवतारक नाम
भरत-तनय रोकलन्हि वैज्ञानिक सोच
कड़ी गेल टूटि ताकयमे कल्कि
ओ ताहि द्वारे तँ नहि एलाह मैत्रेय

लागि रहल अछि भेटल सूत्रक ओर
आर फूसिये छलहुँ डरायल करब षोडषोपचार

वेद पुराण महाभारत रामायण अर्थशास्त्र
ओ आर्यभट्टीय लीलावती भामती
राजनीति गणित भौतिकी केर समग्र चरित्र
कर्मक शिक्षा गेल ऊधियाय
बिहारिमे अंधविश्वासक

दर्शन भेल जतय अनुत्तरित
आ विज्ञान देलक किछु समाधान
तँ पकरब छोर एकर गुरुवर
जे केलक समस्या दूर
नहि दूरि
एकर परिधि भने अछि छोट मुदा परिधि करब पैघ
तँ फेर बदलताह दर्शनक कांट्रेक्टर
दर्शनकेँ धर्ममे आ धर्मकेँ
नरक-स्वर्गक प्रकार-प्रकारान्तरमे

भौतिकी आ एस्ट्रोनोमीकेँ बनेलथि एस्ट्रॉलोजी
विज्ञान बनल अंधविश्वास
जखन नेति-नेति बनत उत्तर
तखन भने रहय दियौक प्रश्ने अनुत्तरित

सभ गेलथि आगू मुदा भरत-तनय छथि पाछू
लीलावतीयोमे भानुमतीयोमे
कोना कए तकताह जातिगत भेद
एकलव्यक प्रशंसामे व्यासजीक लेख
मुदा कार्य नहि क्यो बढ़ेलक आगू

सहस्त्राब्दीक अंतराल देलक जातिगत करताल
विज्ञान आ कला
भूख आ अन्न
भेलाह जातिगत छोड़ताह की स्वाछन्न

मोन पड़ल गामक भोजक फराक पाँति
पहिल पाँतिमे खाजा-लड्डू परसन पर परसन
दोसर पाँतिमे एक्के बेर
रोकल कला-विज्ञानक भागीरथीक धार
भेटल राहूक ग्रास

मोन पड़ैछ पिताक श्राद्धकर्म
भरि दिन कंटाहा ब्राह्मणक अत्याचार
आ साँझमे गरुड़ पुराणक मारि

सौर-विज्ञानक रूपांतर
आ ग्रहणक कलन
दक्षिणाक हेतु भेल कलुषित

रक्षा-विज्ञानक रामायणक पाठ
कखन सिखेलक भीरुताक अध्यात्म?

ब्यासजीक कर्ण-एकलव्य-कृष्णक पाठ
सामाजिक समरसताक
अखनहु धरि अछि जीवंत
नहि भेल खतम
दू-सहस्त्राब्दी पहिनेक उदारवादी सोच
सुखायल किएक विद्या
सरस्वती-धार जेकाँ भेल अदिन

तखनहि जखन विद्या-देवी छोड़लन्हि
सुखा गेलीह बिन पानिक बिन बुद्धिक
फेर अओतीह कि घुरि कए बदलि भेष
एतय हम्मर भारत देश?

हजार बर्षक घोँघाउज कि होएत बंद ?
आकि एकलव्य-कर्ण-कृष्णक पाठ छोड़ि
युधिष्ठिर-शकुनिक एक्का-दुक्का-पंजा-छक्काक पढ़ब पाठ
कच्चा बारहकँ शकुनि बदलताह पक्का बारहमे
आ करताह अपन पौ-बारह

तीनटा पासा आ चारि रंगक सोरे-भरि गोटी
करत भाग्यक निर्माण?
चौपड़क चारि फड़ आ एक फड़मे चौबीस घर
की ई फोड़त भारतक घर?

युधिष्ठिर ज्योँ भेटताह तँ कहितियन्हि
जे चारि लोकक सोझ कला पासाक
खेलयतहुँ जकर नियम होइछ हल्लुक

दू व्यक्तिक रंगबाजी खेलकँ अहाँ ओझरेलहुँ
खेला खेलक संग नहि वरन् खेलेलहुँ देश आ स्त्रीक संग
तैं ई उपराग
शकुनियोसँ पैघ कैल अहँ अपराध

जकरे नाम लालछड़ी सैह
सतघरिया;
ती-ती ____
बच्चामे खेलाय छलहुँ आमक मासमे ई खेला
पासाक खेल सेहो खेलेलहुँ
द्विरागमनक बाद भरफोड़ी धरि कनियाक संग
वासर-रैन हे युधिष्ठिर-रूपी
भरत-तनय
नहि खेलाऊ ई खेल
सभकँ दिअ ई शिक्षा

आ संगीतक मेल
स्मृति भय तोड़ल सुर
दियह सुमति वर जे
गोसाञुनि
गाबि सकी

कज्जल रूप तुअ काली
मात्र ईएह नहि सत्य
उज्जल रूप तुअ वाणी;
सएह होएत परिणीत

झम्पि बादर दूर भेल भय
गगन गरजि उठेलक
हुतासन
हृदय मध्य बाउग कए
मौलि-मउल छाउर दए
शंख-फूकब वीर रस
भय-भंजन
स्मृति-स्वप्नक दंडसँ
तोड़ब खन-खन
करब मंथन

सगर-द्वारि पर भुजदंडसँ
गामक दूटा पाँतिक भोजनक आस्वादन

खोलब बंद बुद्धि-विवेक
रुण्डमालमसानी
तोड़ब पाँति नहि तँ
नगरकँ पलायन
गाम गाम रहत नहि तँ
डुमत भागीरथीक धारसँ
जे रोकलथि एकर धार प्रलय-सन
डूबताह-डूबेताह दू पाँतिबला गामकँ
अपन कुकर्मसँ

भूमि विलास कानन
निविल बोन विहसि
कण्टक मध्य कुसुम विकल
दर्शन घोषनि-ब्राह्मणमे ओझरल

धरणि विखिन
गंगा-तनु झामर
नहि कल-कल

विज्ञान गणितक कोमल-गल
अभाग्य तापिनिक छल

बुद्धक नगर बसत
देव स्वर्ग करि-केलि
गामक लोक ठाम
सोंपलि गाम पाँति
दर्शन-अद्वैत
गामेमे
नव-दर्शनक गीत

अपन दर्शनक लेल जे देलक
गामक वनवास
तकर बदला
देब अहाँकेँ निसास

अपन दर्शनक लेल
दुइ सहस्त्राब्दिक खेल खेलेलन्हि जे
तनिकर गामक स्वरूप कानन
बुद्धक नगर बनेलन्हि जे कण्टक
कुसुम ततय आओत

सयमे दू
दर्शन लेल
फाजिल पासा फेकब
सहस्त्राब्दीक चौपड़ चारि युग पर

जे अज्ञात तकरो ताकब हम तात
परञ्च जे ज्ञात
तकर तँ करए दिअ हिसाब-किताब

भगवानक सृष्टि बिना कोनो सीमा आ बन्धनक ?
तखन कोन आधार पर बनओलन्हि ओ घर
आ जे आधार चुनबाक नहि छल स्वातंत्र्य हुनका
तँ कोन निअम बनेलन्हि एहि ब्रह्माण्डक लेल ?
तखन जे सूर्य चन्द्र आ तरेगणक मृत्युक संगे
ओहि निर्माता भगवानक मृत्यु सेहो होएत ओहि निअमक अन्तर्गत

आ जे सेहो नहि तँ ब्रह्माण्ड निर्माणक लेल भगवानक कोन प्रयोजन
स्वयं निर्मित ई सृष्टि
विश्वदेवाः
आ ओकर भगवानक मस्तिष्क
की सोचनी पैसल अछि ओहि मस्तिष्कमे
नील-पद्म सूर्यसँ भरल ई ब्रह्माण्ड आ ओकर मध्य
ई एकटा साधारण तरेगण हमर सूर्य
ओकर सृष्टिमे हम एकटा क्षुद्र उपग्रहक प्राणी
सोचैत छी जे कए देब नष्ट अस्त्रसँ ई सृष्टि ?

## गाय

लाठी मारबामे कोनो देरी नहि
बाछी भेला पर शोको थोड़ नहि
परन्तु छी पूजनीया अहाँ
निबंध लिखैत छी अहाँपर
क्षमा !

## श्राद्ध ने मरा जाय

एक मृत्यु फेर दोसर मृत्यु
नेनाक पिताक आ काकाक

कक्काक लोकवेद छलन्हि दबंगर
से चिन्तित छल छोटका भाए

श्राद्धावधिमे दोसर मृत्यु भेने
एक्के श्राद्धसँ होइछ दोसराक श्राद्ध
एकक श्राद्ध जायत मराय
छल चिंतित दुनू भाय

कमजोरहाक संग पण्डितो देत नहि
शास्त्र धरि किछुओ कहय
मामागाम खबरि दियौक
पिताक श्राद्ध ने मरा जाय

## जाति

ऑफिसमे छल काज बाँझल
किरानी पर एकगोट तमसायल
कोन जातिक छी अहाँ धैर्य आब नहि बाँचल
दशो लोककेँ कैक दिनसँ छी झुट्ठो घुमाओल

छाती ठोकिकय जातिक नाम छल ओ बाजल
दसो लोकक दिशि निन्गाहारि ताकल
ताहिमेसँ एक सजाति उठल बाजल -

घोल-आसमर्द्दक बीच कहलक ''नहि बाजू
जातिक नाम धय कय ई यादि राखू

काज अछि हमरो बाँझल मुदा जातिक अछि बात ज्योँ
अछि कलेजावला जाति ई से काज कतबो लेट हो''

## पुत्रप्राप्ति

लुधियानाक मन्दिर पर रहैत छी
पूजा पाठ करैत छी करबैत छी
कहैत छी अहाँ ठकि कय हम खाइत छी
गाममे तँ एक साँझ भुखले रहैत जाइत छी
दस गोटेकेँ पुत्र प्राप्तिक आशीर्वाद देल
पाँचटा केँ फलीभूत भेल

पुत्री जकरा भेलैक से हमरा बिसरि गेल
मुदा पुत्रबला कएलक हमर प्रचार
मिथिलाबाबाकेँ ठक कहैत छह
गामक हमर औ दियादी डाह

## गुड-वेरी गुड

भारतीय वाङमय केर
व्याख्या एहि तरहेँ भेल
ज्योँ किछु नीक भेल तँ नीक
आ ज्योँ उलटा तँ सेहो ठीक

प्रारब्धक भेल मेल
आ लिखलहाक भेटबाक बात
नीक भेल तँ गुड आ
वेरी गुड ज्योँ भेल अधलाह

## हर आ बड़द

मोन गेल भोथियायल
जोति बड़द सोचिमे पड़लहुँ
एतय-ओतय केर बात
हर जोतने भेल साँझ
हरायल बड़द ताकी चारू कात

कहबय ककरा ई गप्प
सुनि हँसत हमरा पर आइ
मोने अछि भोथियायल
अप्पन सप्पत कहय छी भाय

## गंगा ब्रिज

मोन पड़ैत अछि मजूर सभक मृत्यु
चक्करि खाइत खसैत नीचाँ पानिमे
पचास टा मृत्युमे सँ दस टाक भेल रिपोर्ट
चालीस गोटेक कमपेनसेसन गेल खाय
नेता ठीकेदार आ अफसर

एहि खुनीमा ब्रिजक हम इंजीनियर
कहैत छी हमरा ईमानदार
घूस कोना लेल होएत
देखैत गुनैत ई सभ यौ सरकार

## मुँह चोकटल नाम हँसमुख भाइ

मुँह चोकटल नाम छन्हि हँसमुख भाइ
बहुत दिनसँ छी आयल करू कोनो उपाय
मारि तरहक डॉक्युमेंट देलन्हि देखाय
पुनः-प्रात भऽ जायत देल नीक जेकाँ बुझाय
शॉर्ट-कट रस्ता सुझाय देलन्हि मुस्काय
मुँह चोकटल नाम हँसमुख भाय

## सपना

सपना सुन्दर सुन्दर?

नञि नञि छल ओतेक सुन्दर
बच्चामे ई खूब डरओलक तोड़ैत
आँखिसँ छिनैत सुतबाक उत्सुकता
जखन मोन उखड़ैत छल घबड़ाइत

देश कालक सीमा बन्हलहुँ
पुरखाक भ्रमकँ अपनओने
मुदा प्रथम बीजी-पुरुषक छद्म
नहि छल जाइत मोनक भ्रम

बचहनक मोनक-छाती धक-धक
करैत छल खोज जगक जन्मक
नहि पओने कोनो प्रश्नोत्तर
छोड़ैत ईश्वर पर ई शाश्वत

मुदा ईश्वरक मोन आ शाश्वत स्वरूपक
नहि सोझ भेल ससरफानी पड़ल गिरह
छाती-मोनक करैछ बढ़ल जे धकधकी
सपना सेहो नञि ज्योँ अबैछ नित्र बेशी

संसारकँ सहबाक ईहो अछि प्रहेलिका
बिनु समस्या समाधानक करैत छी
हँसैत बिहुँसैत बनबैत सर्वोपरि भाग्यराजकँ
करैत छी सभटा अपने आ ई छी कहैत
कहैत जे हम छी भाग्यराजक कठपुतली

ईश्वरक ई लीला ? अछि मोनक छातीक संग
भौतिक छातीकेँ सेहो जे धकधकी ई बढ़बैत

सपना सुन्दर आकि डरओन नहि कोनो
अछि आब अबैत

## चित्रपतङ्ग

उड़ैत ई गुड्डी
हमर महत्वाकांक्षा जेकाँ
लागल मंझा बूकल शीसाक
जेना प्रतियोगीक कागज-कलम

कटल चित्रपतङ्ग
देखबैत अछि वास्तविकताक धरा
जतयसँ शुरू ओतहि खत्म

मुदा बीच उड़ानक स्मृति
उठैत काल स्वर्गक आ
खसैत काल ...

## बिसरलहुँ फेर
## कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप

खूब ठेकनेने जाइत
जे नहि बिसरब आइ
मुदा गप्प पर गप्प चलल
कृत्रिमता गेल ढ़हाइत

फेर काजक बेर मोन
नहि पड़ल पड़ैत-पड़ैत मोन
कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप
आ तकरा बाद मसोसि कय
रहि जाइत छी गुम्म

## शलातुर गाम

तक्षशिला अछि पाकिस्तानमे
इतिहासक उनटबैत पन्ना
चक्र घूमल टूटल हमर देश
अराड़ि ठाढ़ कएलक दियाद

युआन च्वांगक विवरण
व्याकरणक आचार्य सभ शलातुर गाममे
काबुल आ सिन्धु धारक मिलन पर स्थित
पाणिनीक जे छल गाम आ मामागाम आजुक लहुर गाम
आब तँ तोड़ि रहल छथि बामियानमे बुद्धक मूर्ति
पाणिनीक वंशज युसुफजाइ पठान
इतिहासक आ दक्ष देशक ई प्रयाण

इतिहासक घुमैतचक्रसँ आएल अछि ई विचार
मुदा सोचैत छी
चक्र घूमल टूटल हमर देश
अराड़ि ठाढ़ कएलक दियाद
जे भने दियाद अछि लग
आ कएने अछि अराड़ि
ताहि बहन्ने छी हम सजग
करैत रहैत छी तैयारी

१९६२ धरि हिमालयकँ बुझल बेढ़
जेना १४९८ धरि छल समुद्र
द्वार खोलैत छल खैबर दर्रा मात्र

पड़ोसीयो पर आक्रमण होइत छल
दूर-दूरसँ अबैत छल अत्याचारी

चक्र घूमल टूटल हमर देश
अराड़ि ठाढ़ कएलक दियाद
भने दियाद अछि कएने अराड़ि
जे करैत रहैत छी तैयारी

## काल्हि

भोरे उठि ऑफिस जाइत छी
आ साँझ घुरि खाय सुतैत छी
कतेक रास काज अछि छुटैत
अनठाबैत असकताइत मोन मसोसैत

जखन जाइत छी छुट्टीमे गाम
आत्ममंथनक भेटैत अछि विराम
पबैत छी ढ़ेर रास उपराग
तखन बनबैत छी एकटा प्रोग्राम

कागजक पन्ना पर नव राग
विलम्बक बादक हृदयक संग्राम
चलैत छल बिना तारतम्यक
बिना उद्देश्यक-विधेयक
कनेक सोचि लेल
छुट्टीमे जाय गाम

विलम्बक अछि नहि कोनो स्थान
फुर्तिगर साकांक्ष भेलहुँ आइ
जे सोचल कएल नित चलल
जीवनक सुर भेटल आब जाए

## मोन पाड़ैत

मोन अछि नहि पड़ि रहल
पाड़ि रहल छी मोन

लिखना करची कलमसँ लिखैत
फेर फाउन्टेन पेनक निबमे बान्हि ताग
छलहुँ लिखाइकेँ मोट करैत
मास्टर साहब भऽ जाइथ कनफ्यूज

केलहुँ अपने अपकार ठाढ़े-ठाढ़
अक्षर अखनो हमर नहि सुगढ़

फेर मोन पाड़ैत छी
दिनमे बौआइत रही
कलममे बाँझी तकैत
दोसर ठाढ़ि तोड़ने पड़ैत छल
बुरबक होयबाक संज्ञा
ईहो छी नहि बुझैत
मोजर होइत तँ खैतहुँ आम
अगिला साल

बाँझीमे नहि कोनो आस
घूरमे होइछ मात्र काज

फेर छी पाड़ैत
अंडीक बीया बीछब
पेराय अनैत छलहुँ तेल बनबाय
ओहिमे छानल तिलकोड़क स्वाद

राजधानीक शेफकेँ करैछ मात

तेलक कमीसँ भभकैत कबइक स्वाद
की नीक बनल ! केर मिथ्यावाद
महिनामे आध किलो करू तेलक खर्च
भऽ जाइत एक किलो माश्चर्ज
कंजूसी नहि ...

मोन पाड़ैत छी धानक खेत
झिल्ली कचौड़ी
लोढ़ैत काटल धानक झट्टा
ओहि बीछल शीसक पाइसँ कीनल लालछड़ी
'जकरे नाम लाल छड़ी' आ सतघरियाक खेल

आमक जाबी
बंशीसँ मारैत माछ
खुरचनसँ सोहैत आम काँच
चूनक संग काँच आमक मीठ स्वाद
बड़का दलान
दाउन
बाढ़िक पानि सँ डूबल शीस
होइत खखड़ी
धानमे मिला देला पर पकड़ैत छल कुझड़नी

भैरव स्थानक काँच बैरक स्वाद
बिदेसरक रवि दिनक बूझल ?
फूल-लोटकीसँ बिदेसर पूजल
चूड़ा लय जाइत रही गामसँ
दही-जिलेबी कीनि घुरैत भोजन कय

जमबोनीक बनसुपारीक
पुरनाहाक धातरीमक गाछ
साहर दातमनिक सोझ नीक छड़
जे अनैछ
छी बुधियारी तकर

तित्ती खेलाइत बाल
गुल्ली डंटा गोलीक खेल
अखराहाक झमेल
हुक्का लोलीक बाँसक कनसुपती
फेर कपड़ाक गेनी मटिया तेलमे डुबाय
छलहुँ रहल जराय

छठिक भोरमे फटक्का फोड़ल
जूड़िशीतलक धुरखेल खेलएल

आयल बाढ़ि दुर्भिक्ष
छोड़ल गाम यौ मित्र
मोन नहि पड़ैछ
छी पाड़ैत
बैसि बैसि बैसि

## पथक पथ

स्मृतिक बन्धनमे
तरेगणक पाछाँसँ
अन्हार गह्वरक सोझाँमे
पथ विकट आशासँ !

पथक पथ ताकब हम
प्रयाण दीर्घ भेल आब

विश्वक प्रहेलिकाक
तोड़ भेटि जायत ज्योँ
इतिहासक निर्माणक
कूट शब्द ताकब ठाँ

पथक पथ ताकब हम
प्रयाण दीर्घ भेल आब

विश्वक मंथनमे
होएत किछु बहार आब
समुद्रक मंथनमे
अनर्गल छल वस्तु-जात

पथक पथ ताकब हम
प्रयाण दीर्घ भेल आब

## मिथिलाक ध्वज गीत

मिथिलाक ध्वज फहरायत जगतमे
माँ रूषलि भूषलि दूषलि देखल हम
अकुलाइत छी भँसियाइत अछि मन

छी विद्याक उद्योगक कर्मभूमि सँ
पछाड़ि आयत सन्तति अहाँक पुनि
बुद्धि चातुर्यक आ शौर्यक करसँ
विजयक प्रति करू अहँ शंका जुनि

मैथिली छथि अल्पप्राण भेल ज्योँ
सन्ध्यक्षर बाजि करब हम न्योरा
वर्ण स्फोटक बनत स्पर्शसँ हमर
ध्वज खसत नहि हे मातु मिथिला

## बड़का सड़क छह लेन बला

माए !
माए धानक खेत लग
जे बड़का सड़क बनल अछि
छह लेनक
तीन टा आबएबला आ तीनटा जाइबला

ओतए आइ
कतेक नीक लाल रंगक कार
सीसा खुजल नहि रहए जकर
रहए बन्न
देखलहुँ आइ
जखन बेचैत रही हम चिड़ै

एकटा बच्चा जिदिया गेल
खोलबेलक कारक शीसा आ
कीनि लेलक हमर सभटा चिड़ै
पानि रहए ओहि बच्चाक मूहपर
सीसा खुजिते बहार भेल ठंढ़ा हबा
कार ए.सी. बलासँ
कार जे रहए लाल रंगक

माए !
माए ई जे धानक खेत लग
जे बड़का सड़क बनल अछि
छह लेनक रंग-बिरंगक गाड़ी सभक लेल
तीनटा आबएबला आ तीनटा जाइबला ओतहि

माए !
ई तँ अपने गामक सड़क भेल ने
मुदा अपन गामक तँ सभ गोटे गेलाह
जाइ गेलाह कमएबाक लेल दिल्ली आ पैंजाब

गाममे माटिक घर
फूस आ खपड़ाक चार
मुदा धानक खेत लग
जे बड़का सड़क बनल अछि
पक्काक
चिक्कन आ घरोसँ बेशी सुन्नर ई सड़क
ओतहि देखलहुँ ई आइ

माए !
सुनै छिऐ बनल अछि कोनो
वर्ल्ड बैंकक फंडसँ
पकिया चिक्कन-चुनमुन ई सड़क
छह टा लेनबला
सीसा सन अछि ई चमकैत !

माए !
जे परुकाँ साल काकाक
घर जे काकाक बनल रहए पक्काक
गिलेबा बला
जे कनिये दिनमे खसि गेल रहए
ओहो कोनो सरकारी फन्डसँ बनल रहए !

कहाँ छल चमकैत ओ शीसा सन
ओहिमे रहितो लोक छल डराइत
भने खसि पड़ल

मुदा होएत ओ कोनो नकली फन्डसँ बनल
आइ तँ ओहि कारक शान देखलहुँ
वर्ल्ड बैंकक फन्डसँ बनल
अप्पन गामक एहि छह लेनबला सड़कपर !

माए !
ई वर्ल्ड बैंक बला फन्ड कोनो नीक फन्ड अछि !
एहि निकहा फन्डसँ घर नहि बनैत छैक की ?
खेनाइ भोजन आ रोजगार जे दैतैक ई निकहा फन्ड तँ
तँ किएक लोक पड़ाइत दिल्ली आ पँजाब

किएक सुनितए राज ठाकरेक गारि
किएक जाइत गए खुनाहनि होइ लेल असाम
सुनै छिऐक पढ़ै जाइ छै बिहारी कहि गारि

माए !
एहि वर्ल्ड बैंक बला निकहा फन्डसँ
जे बनि जइतैक अपन गामक घर आँगन
तँ ओ थोड़बेक रहितैक गिलेबा बला पक्काक कोठा सन !
ओ तँ रहितैक ओहने सुन्नर सीसा सन चिक्कन आ ठोस
छह लेनक धानक खेतक कात बला एहि सड़क सन

आ जे रोजगारो ओहि फन्ड सँ भेटितैक
तँ लोको सभ रहितैक घरमे
गामक घर सभ एखन जेकाँ भकोभन्न थोड़बे रहितैक
चुहचुही रहितैक अपनो गाममे

आ तखन जे देखबा जोग रहितैक शान अपन गामक !
आ देखबा जोग रहितैक शान एहि छह लेन बला सड़कक सेहो !
हमरो सभक अंगपर रहितए जे वस्त्र
ओहने वस्त्र
जेहन ओहि लाल कारमे बैसल बच्चाक रहए !

माए!
हमरा तँ लगैत रहैए जे
अपन गामक ई सड़क
ओहि लाल परदेशीक ओहि लाल कारसँ बेशी अछि लग
दुनू टा लगैए बिदेशी सन

लागल आइ जे
जे ओहि लाल कारक हबा सेहो अपन हबा नहि

लागल जेना ओ हबा आ ओ कार हमरासँ छुता गेल होअए
छुता गेल होअए हमर स्पर्शसँ

अपन गाम अछि मयूर
आ ओ छह लेन बला सड़क अछि एकर पाँखि
आ हम सभ छी पएर ओहि मयूरक
ई सड़क अप्पन गामक रहितो लागैए फॉरेनर

माए !
सभ दिन बकड़ी चरबैत
देखैत रहैत छी हम शान अप्पन गामक ओहि सड़कक
जे अछि छह लेन बला !

## पता नहि घुरि कए जाएब आकि

“पता नहि घुरि कए जाएब
आकि एतहि मरि-खपि
बिलायब

घर आँगन बहारि
गाममे
आबी दुआरि
दए दूभि गाएकेँ
मालक घरमे घूर लगाय

फेर पैंजाबमे
चाहक स्वाद कतेक नीक
दिन भरि खटनीक बादो
नहि थाकए छलहुँ मीत
आब सुनैत छियैक जे चाहमे हफीम रहैत छल मिलाओल”

तखने ओहि बच्चाक सोझाँ
घोरनक छत्ता खसल
मोन पड़लए गाम

घुरि चलू देश बजाओल
मिथिलाक माटिक वास
आमक आएल अछि मास

गाछक पात खसि रहल
लजबिज्जी सभ पसरल होएत
गाछक जड़िक चारूकात

नहिए गाछक जड़ि बनेलहुँ
नहिए पोखरिक घाट
एक पेरियोपर जनमल होएत
अक्खज दूभि आ काँट

तरेगणक तँ दर्शनो नहि होइए
प्रदूषण किदनि एतए
रोकलक चन्दमामाकेँ
थारीयोमे आबएसँ

हमरा ई सभ किदन बिहारी कहैए
क्यो लए चलू देश घुरा कए
मोन नहि एतए लगैए

माएक बरतन टिनही जहिया किनाएल
कतेक हँसल रही प्रसन्न भए सभ भाए
बेरा-बेरी खाइत ओहि थारीमे

एहि दिल्ली नगरियामे
स्टीलक बरतन बासन
मुदा स्वाद ओहि टिनही थारीक
जे स्वादि-स्वादि खयने रही
पता नहि घुरि कए जाएब
आकि एतहि मरि-खपि
बिलायब

बकड़ीक भेराड़ी
खरड़इत सुखाएल पात
पोखरिक महारपर
बबूरक काँट
उज्जर सपेत बिखाह

मुदा एहि दिल्ली नगरियाक
उज्जर सपेत लोकसँ बेशी बिखाह नहि
जतेक बिखाह बोल

ओहूसँ बेशी मारूख घृणायुक्त दृष्टि

बिहारी ! बिहारी ! स्वरक बीच !
बेचैत छी ककबा पापड़ मसाजर

जाड़क राति
ठिठुरैत ई गाछ
बसात सेहो ओहने चण्डाल

सोझाँमे एकटा गाछमे अछि छह मारल
निकलैत अछि ओकरासँ खून
उज्जर-ललौन
मुदा फेर बनैए थलथल ठोस लस्सा

जाड़मे सुखाएल सन
गरमीमे झरकल सन
ई गाछ-पात
सिखबैए रहनाइ असगर आ एकेठाम
बिनु भेने अकच्छ
सालक साल

ददिया जे दैत रहए अर्घ्य दिवाकरकेँ
पाछूमे खसबैत रहथि पानि तड़ाक
बौआ माने हम
पएर पटकि कूदए छलहुँ छपाक छपाक

पता नहि घुरि कए जाएब
आकि एतहि मरि-खपि
बिलायब

खण्ड-४

कथा-गल्प संग्रह

# *गल्प गुच्छ*

## खण्ड-४: *गल्प गुच्छ*

१. सर-समाज
२. हम नहि जायब विदेश
३. राग वैदेही भैरवी
४. काल-स्थान विस्थापन
५. बैसाखीपर जिनगी
६. सर्वशिक्षा अभियान
७. जातिवादी मराठी
८. थेथर मनुक्ख
९. बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा
१०. स्त्री-बेटी
११. बिआह आ गोरलगाइ
१२. प्रतिभा
१३. जाति-पाति
१४. अनुकम्पाक नोकरी
१५. नूतन मीडिआ
१६. मिथिलाक उद्योग
१७. मिथिलाक उद्योग-२
१८. बाढ़ि, भूख आ प्रवास
१९. नव-सामन्त
२०. रकटल छलहुँ कोहबर लय
२१. मृत्युदण्ड
२२. बाणवीर
२३. प्रवास

# सर-समाज

“एकटा प्लम्बर, एकटा पेन्टर आ तीन टा जोन लागत। सात दिनमे घर चमका देब। अहाँक काजमे कमाइ नहि करबाक अछि हमरा। अहाँक अहिठाम एतेक रास लोक अबैत छथि, लोक देखत तँ पूछत जे ई काज के कएने अछि। तहीसँ हमरा चारि ठाम काज भेटि जाएत तैं। अपन एरियाक लोक दिल्लीमे कतए पाबी”- नबी बकस नाम रहए ओकर।

“अपन एरियाक लोक छी, कतए घर अछि”?

“कटिहार। हम तँ कहब जे बाथरूम आ किचनक काज सेहो करबाइए लिअ”।

“अहाँ तँ पोचारा आ पेन्ट करैत छी, संगमे राजमिस्त्रीक काज सेहो करैत छी की”?

“हम नहि करैत छी मुदा हमर गौआँ ई काज करैत अछि। ओ कहैत रहए जे साहबसँ पुछू काजक लेल। ओना ओकर काज बड्ड ठोस होइत छैक। हम बजबैत छी, मात्र भेँट कऽ लियौक। नहि तँ हमरा कहत जे तूँ साहबसँ पुछनहिये नहि हेबहुन्ह”।

ओ मोबाइलपर फोन मिलेलक आ कोनो सर्फुद्दीनकेँ बजेलक।

सर्फुद्दीन किचेन बाथरूम सभक मुआएना केलक आ करणीसँ देबालपर मारलक तँ प्लास्टर झहरि कऽ खसि पड़लैक। नलक टोटीकेँ घुमेलक तँ ओ टूटि कऽ खसि पड़लैक। फेर ओ बाजल-

“सरकारी काज छियैक। नीव तँ मजगूत होइत छैक मुदा फिनिसिंग नहि होइत छैक। आ भइयो गेलए २० साल पुरान ई सभ। देखू एहि देबाल सभक हाल। सभटा अन्डरग्राउन्ड पाइप सभ सरि-गलि गेल अछि। तकरे लीकेजसँ देबाल सभक ई हाल अछि। सभटा पाइप बदलए पड़त से सीमेन्ट तँ झाड़इये पड़त। ओना सीमेन्टमे कोनो जान बाँचलो नहि छैक। तखन देबालमे पाथर सेहो लगबाइये लिअ। ई बम्बइया-मिस्त्री गणेशीसँ जे अहाँ बरन्डा रिपेयर करेने छलहुँ तकर बालु देखियौक कोना झड़ि रहल अछि। टेस्ट करए लेल एहि सीमेन्टकेँ हम झाड़ि कऽ नव सीमेन्ट लगबैत छी, पाथर नहि बनि जाए तँ कहब। तखन मोन हुअए तँ काज देब आ नहि तँ नहि देब”- से कहि ओ बरन्डाक किछु हिस्साक सीमेन्ट झाड़ि कऽ करिया सीमेन्ट लगा देलक आ चलि गेल।

“ई नबी बकसक छोट भाए छियैक। बड्ड काजुल। दिन भरि लागले रहैत अछि, नाम छियैक ओकील। नबी बकस तँ आब ठिकेदार भऽ गेल अछि,

करणीकेँ हाथो कहाँ लगबैए। ओकील बुझु मजदूरी करैए अपन भाए लग। आ ठीकेदारक भाएक ओहदासँ आन मजदूर सभपर नजरि सेहो रखैए''- फेर कनेक काल धरि, ई जे प्लम्बर मिस्त्री रहए, खलील जकर नाम रहैक, से चुप रहल।

खलील हरियाणाक रहए आ बुझू जे नबी बकसकेँ हमरासँ भेँट करेनिहार ईएह रहए। एकटा छोट भङ्गठी करेबाक रहए ताहि द्वारे एकरा बजेने रही। बरंडाक एकटा कोनक मरम्मतिक काज रहए। खलीलकेँ कहलियैक तँ ओ एकटा गणेशी मिस्त्री, जकरा सभ बम्बइया कहैत रहए, केँ बजा कए काज करा देलक। फेर पोचारा बला आकि पेंटबला नबी बकसकेँ ई बजेलक। आब ई पोचारा-पेन्टबला नबी बकस ओहि सर्फुद्दीन राज-मिस्त्रीकेँ बजा लेने अछि। सर्फुद्दीन पाइप सभक काज खलील प्लम्बरकेँ दिआ देलक से खलीलकेँ बिन मँगने काज भेटि गेलैक। आ एक दोसराकेँ परिचय करबैत आब तँ लकड़ी बला आ बिजली मिस्त्री सेहो घरमे पैसि गेल छल।

''दुनू गोटे -नबी बकस आ सर्फुद्दीन- संगे राज-मिस्त्री रहए। मुदा नबी-बकस लाइन बदलि लेलक। आ आब एक-दोसराकेँ काज दिअबैत रहैत अछि''।

फेर खलील हमरा दिस ताकि बाजल-

''अहाँ दिसका लोक सभमे बड्ड एकता होइत छैक''।

ओकील आ खलीलमे काजक बिचमे गप-शप होइत रहैत छलैक।

''हमरा सभक पुरखा मुसलमान बनबासँ पूर्व राजपूत रहथि मुदा ई सभ राजमिस्त्री रहए-धीमान, एखनो हरियाणामे होइत अछि''- खलील इशारासँ ओकील दिस देखैत हमरा सुना कए कहलक।

''हम सभ तँ धीमान छलहुँ मुदा तोरा सभ के छलँह से तोरा एतेक फरिछा कए कोना बुझल छौक''- बहुत कालसँ ओकील बिन बजने काज कए रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकरा उत्तर दैत सुनलियैक। ओकर सभक बीच गप आ हँसी ठट्ठा चलैत रहैत छलए।

एक दिन सर्फुद्दीन मुँह लटकेने आएल। कहलक जे गणेशीसँ झगड़ा भए गेल।

''से कोना''?

''कहैए जे तोँ साहेबक घरक काज हमरासँ छीनि लेलँह, इलाकाक लोकक नाम पर। बुझू, अहाँ हमर काज देखि कऽ ने हमरा काज देने छलहुँ। आ ई तँ छोड़ू, ईहो कहैत रहए जे...''।

''की? कहू ने''।

''कहैत रहए जे मुसलमानपर कहियो विश्वास नहि करबाक चाही''।

हमर तँ तामसे देह लहरि गेल। कहलियैक जे तुरत ओकरा बजा कए आनू गऽ। मुदा ओ थोम्ह-थाम्ह लगा देलक। फेर बादमे एक दिन गणेशीकेँ बजा कए हम बुझा देलियैक- ''एहि महानगरमे हम आ सर्फुद्दीन एके भाषा बजैत छी, ई मात्र

एकटा संजोग अछि। एकर काज देखियौक आ अपन काज देखू, फेर अहाँकेँ बुझा पड़त जे सर्फुद्दीनसँ अहाँ किएक पाछाँ रहि जाइत छी''।

ओम्हर एक गोटे वूडेन फ्लोरिंग केर विचार देलक ताहिपर सर्फुद्दीन ओकरासँ लड़ि गेल जे नीचाँ मे पाथरे नीक होएत । बाथरूम आ किचनमे पाथर अछि तँ सभ ठाम ईएह रहबाक चाही। रूममे किएक वूडेन फ्लोरिंग होएत? मुदा वूडेन फ्लोरिंग बला कहलक जे एक दिनमे लगा देब आ पाइयो सस्त कहलक से हम ओकरे हँ कहि देलियैक।

भरि दिन अनघोल होइत रहैत छल। नीचाँक फ्लोर बलाक बेटाक बारहम कक्षाक परीक्षा रहए से ओ जे राजमिस्त्री सभक आबाजाही देखलक तँ कहए लागल, जे रूम सभमे तँ पाथर नहि लागत ? हम कहलियन्हि जे नहि वूडेन फ्लोरिंग काल्हि कए जाएत, तँ हुनका साँसमे साँस अएलन्हि।

''पाथर लगाबएमे तँ माससँ ऊपर ई सभ लगबितए, हमर बेटाक परीक्षा अछि, से हम तँ पाथर सभ पसरल देखि कए चिन्तित भए गेल रही''।

''नहि मात्र बाथरूम आ किचेन लेल ई पाथर सभ अछि''।

सर्फुद्दीन, खलील आ नबी बकससँ अबैत जाइत काजक अतिरिक्त घर-द्वारक गप सेहो होमए लागल। नबी बकस कटिहारसँ दिल्ली आएल, छह भैयारीमे सभसँ पैघ, एकटा बहिन सेहो रहैक। अपन हमशीरा(बहिन)क वर आ ओकर सासुरक विषयमे नबी बकस प्रेमपूर्वक सुनबैत रहैत छल। सर्फुद्दीनक शागिर्दीमे ओ राज मिस्त्रीक काज सिखलक। आस्ते-आस्ते चारि भाँएकेँ दिल्ली बजा लेलक। ओकील तँ ओकरे संग रहैत छैक, आन भाए सभ बियाह करैत गेल आ अलग होइत गेल। मुदा ओहो सभ आसे-पासमे रहए जाइए। बियाह तँ ओकीलोक भेल छैक, मुदा अछि ओ सुधंग। से आन भाए सभ कहैत-कहैत रहि गेलैक जे नबी बकस मँगनीमे खटबैत रहैत छौक, अलग भए जो गऽ, मुदा ओ तँ भाएक भक्त अछि। भाएक सोझाँमे एको शब्द की बाजल होइत छैक?

एक दिन ओकीलकेँ बोखार भेल रहए आ दोसर भाए सभ ओकरा काजपर अएबासँ मना कएने रहैक। मुदा ओ नहि मानल। ओकर सुधंगपना देखि हमर माँ, पत्नी, बच्चा सभ ओकरा खूब मानए लागल रहथि। ओहि दिन काजक बीचमे ओ खएबा लेल माँगलक आ बालकोनीमे सूति रहल। फेर बेरिया पहरसँ काज शुरू कएलक। साँझमे घर जएबाक बेरमे जखन हम कहलियैक जे डेरा जएबाक बेर भए गेल तँ कहलक जे नहि, आइ काज लेटसँ शुरू कएने रही से खतम कइये कऽ जाएब। आ आस्तेसँ बड़बड़ाइत बाजल जे देखैत छियैक जे आइ क्यो बजबए लेल आबैए आकि नहि।

आठ बजे करीब मोटरसाइकिलपर दू गोटे आएल। ओकील कहलक जे ई दुनू ओकर छोटका भाए सभ छैक। दुनू गोटे तेसर तल्ला स्थित हमर फ्लैटपर आएल आ ओकीलकें गप करबा लेल बजेलक। ओकर सभक गपमे आपकता मिश्रित क्रोध रहैक। ओकील ओकरा सभकेँ कहैत रहए जे ओहेन कोनो गप नहि छैक, आइ आधा दिन सुतल रहए तँ सोचलक जे काज पूरा कइए कए जाए। तावत नबी बकस सेहो ओतए पहुँचि गेल आ ओकीलकेँ लए गेल।

दोसर दिन नबी बकस भोरे-भोर आएल।

"देखियौक ई भाए सभ।...

-"बेटा जेकाँ बुझलियैक एकरा सभकेँ आ हमरापर कलंक लगबैत अछि जे तूँ दू रंग करैत छह। तीनू भाँए काल्हि हमरासँ खूब झगड़ा करए गेल जे तूँ ओकीलकेँ नोकर जेकाँ रखैत छहक। बुझू ! ई ओकील अछि सुधंग। कतबो कहैत छियैक जे नीकसँ कपड़ा लत्ता पहिर, तँ ओहो झोलंगे जेकाँ रहैत अछि।

-"काल्हि हमरा तँ ओकीलसँ भेँटो नहि अछि। सर्फुक काज दोसर साइटपर चलि रहल छैक, ओतहि गेल छलहुँ जे कोनो स्कीमसँ काज भेटि जइतए तँ अहाँक एहिठाम काज खतम भेलापर ओतहि लागि जइतहुँ। बिल्डर अंसल बलाक ऑफर आएल रहए जे हमरा एहिठाम आबि जाऊ मुदा भाए सभक द्वारे हम मना कए देलियैक। आ ई सभ.. ओना ई सभटा हमर पटना बला भाए मंडलबाक करतूत छी"।

"मंडल!!", हमरा किछु पुरान गप मोन पड़ल, -"अहाँक गाममे एकटा जयशंकर सेहो छथि की"?

"हँ! हँ! अहाँ कोना चिन्हैत छियन्हि हिनका सभकेँ। ओना असली नाम तँ हमर भाएक सलीम छियैक। ऑफिसक नाम मंडल। घरक सलीम। सरकारी ड्राइवर अछि। घरमे सलीम कहने ओकर अहलिया (कनियाँ) बड़ घबड़ाइ छैक"।

"सभटा बुझल अछि हमरा"।

अपन विद्यार्थी जीवनक एकटा घटना मोन पड़ि गेल हमरा।

पटनामे पढ़ैत रही। पड़ोसमे एक गोटे जयशंकर रहैत छलाह। भाइ-भाइ कहैत छलियन्हि। दू बियाह। पहिल बियाहक हुनकर बेटा भागि गेल छलन्हि। ओना दोसर बियाह पहिल पत्नीक मुइलाक अनंतर भेल छलन्हि। किछु दिन दिल्ली-बम्बइ घुमि पहिल बियाहक ओ बेटा आपस अएलन्हि। सभ ओकरा पुछलकै जे की करमे? ओ कहलक जे सभ काज हमरासँ होएत मुदा पढ़ाइ छोड़ि कए।

फेर सभ मिलि कए ओकरा ड्राइवरीक लाइनमे जएबाक लेल कहलक। ओकरो मोन रहैक ड्राइवरी सिखबाक। भोरे-भोर एक दिन जयशंकर कहलन्हि जे आइ एक ठाम चलबाक अछि।

''बेटा कहैत अछि जे ड्राइवरी सीखब। ड्राइविंग स्कूल बड़ड महग। एक गोटे गौआँ सलीम अछि ड्राइवर, सरकारी ऑफिसमे। गाममे एहि बेर छुट्टीमे भेटल रहए। ओकरो सभक ईद पाबनि छलए, से आएल रहए गाम। कहलक जे रवि दिन कऽ ओकरा छुट्टी होइत छैक ऑफिसमे आ आन दिन पाँच बजे भोरेसँ सिखा सकैत अछि। दू सए टाकामे एकटा सेकेंड हैंड साइकिल बेटाकेँ कीनि देने छियैक।

-''ओकर डेरा ऑफिसे लग छैक। ऑफिस बजेने अछि, ओतहिसँ घर देखाओत''।

''ऑफिस देखल अछि?''

''हँ, कताक बेर गेल छी''।

ऑफिसक बेरमे हम सभ गाँधी मैदानक बगलक कचहरी सन ऑफिस पहुँचैत गेलहुँ।

''मंडलजी ड्राइवर साहेब छथि?'' - जयशंकर एक गोट हाकिमक ऑफिसक बाहर ठाढ़ चपरासीसँ पुछलन्हि।

''हँ, ओम्हर छथि''।

हम जयशंकरकेँ पुछलियन्हि जे हमरा सभ तँ सलीमसँ भेँट करबा लेल आएल छी, ई मंडल के छथि?

ओ इशारामे हमरा चुप रहए लेल कहलन्हि आ ईहो मुखर रूपमे कहलन्हि जे एहिमे कोनो बात छैक, बादमे कहताह।

आब जे मंडलजीसँ हुनका गप होमए लगलन्हि तँ बीच-बीचमे ओ सलीम भाइ, सलीम भाइ कहि हुनका सम्बोधन करैत रहलाह। फेर हुनका संगे हम सभ हुनकर डेरा पहुँचलहुँ। फेर बिदा होइत काल सलीम भाइ जयशंकरकेँ हमरा दिश इशारा करैत कहलन्हि जे हिनका कहि देलियन्हि ने। जयशंकर कहलखिन्ह जे कहि देबन्हि।

ओतए सँ निकललाक बाद जयशंकर कहलन्हि जे कटिहार लग जयशंकरक गाम छन्हि। मारते रास भाइ बहिन छैक सलीमक। सलीम हुनकर लंगोटिया यार, संगे पढ़लन्हि। फेर रोजगारक क्रममे दुनू गोटे दूर चलि गेलाह। सलीम कोनो हाकिमक घरपर काज करए लागल। ड्राइवरी कहिया कतए सँ ओ सीखि लेने छल, से हुनरबलाकेँ नोकरीक तँ ओहुना दिक्कत नहि होइत छैक। बादमे एकर स्वभाव देखि कए ओ हाकिम एकरा कोनो दोसर आदमी जकर नाम मंडल रहए, आ कतहु मरि-खपि गेल रहए, केर नामपर टेम्परोरी राखि लेलकैक। फेर किछु दिनमे ओ पर्मानेन्ट भए गेल।

जयशंकर हमरासँ कहलन्हि - ‘‘एकर ऑफिसमे वा एकर संगी साथी लग-ओना अहाँसँ फेर कहिया एकर भेँट हेतए- एहि गपक धोखोसँ चरचा नहि करब। ओना पर्मानेन्ट भए गेल छैक मुदा लोक सभ केहन होइ छैक से नहि देखइ छियैक। क्यो किछु लिखि पढ़ि देतैक तँ मंगनीमे बेचारकेँ फेरा लागि जएतैक’’।

मोनमे घुमरल एहि गपकेँ नबी बकसकेँ हम कहलियैक। ताहिपर ओ बाजल-

‘‘ओहो स्कीम धरेनिहार हमहीं छी। एकटा कम्प्लेन कऽ देबैक तँ जाहि नोकरीपर एतेक फुरफुरी छैक से घोसरि जएतैक। मुदा सोचैत छी जे ओकर नोकरी जएतैक तँ हमरे माथपर आबि खसत। तेँ अल्ला पर सभटा छोड़ि देने छियैक’’।

नबी बकस ओना तँ बड्ड व्यस्त रहैत छल मुदा ओहि दिन लागैए हमरे सँ गप करबा लेल समय निकालि कए आएल रहए। जखन लोक मानसिक फिरेशानीमे रहैत अछि तँ अपन दुखनामा दोसराकेँ सुनबए चाहैत अछि। मुदा तकर श्रोता भेटब मोश्किल। मुदा हम अपन मानवविज्ञानक कॉलेजिया पढ़ाइक प्रभावक कारण सभ काज छोड़ि अनायास श्रोता बनि जाइत छी से नबीकेँ बुझल रहैक। भदबरिया लधने छल से हमहूँ कतहु बाहर जएबाक हरबड़ीमे नहि छलहुँ। से ओ अपन खिस्सा शुरु कएलक।

‘‘कतेक कष्ट कटने छी से की बयान करू। आ मदति के सभ कएलक ? एकटा खालू-खाला (मौसा-मौसी) आ खलेरा भाए आ खलेरी बहिन मोन पड़ैए आर क्यो नहि। अब्बूक मरलाक बाद बड़ा अब्बू (बड़का काका), छोटा अब्बू (छोटका काका) सभ पराया भए गेल। शौहरक मरलाक बाद अम्मीक हालत की रहैक से ई भाए सभ की बुझत-गमत?

-‘‘खाला दिल्लीमे रहैत रहथि। अम्मीक मृत्युक बाद हमर पढ़ाइ छुटि गेल। कटिहारमे पढ़ैत रहितहुँ, फूफीजाद भाए (पिसियौत) कहनहियो रहए जे तोरा जतेक पढ़बाक छौक पढ़, मुदा ई सभ तखन गाममे ईँटा उठबितए से हमरा देखल होइतए? आ ई गप एकरा सभकेँ हम बुझैयो नहि देने छियैक।

-‘‘आ ई सभ की कहैये जे हम अपन अहलिया (स्त्री) आ सारि-हमजुल्फ(सारि-साढ़ू)क पाछाँ एकरा सभपर ध्यान नहि दऽ रहल छियैक? दू रंग करैत छियैक?

-‘‘दिल्लीमे आएल रही गाम छोड़ि कए तँ पहिने नोएडामे पितरिया बर्त्तनक दोकानमे ब्रासोसँ बर्तन साफ करैत रही। अल्लाहक करमसँ सर्फू भेटि गेल। खालाजाद भाए (मौसेरा भाए) केर संगी रहए सर्फू। ओकरेसँ सभ ईलम सिखलहुँ। मुदा ई कहि दिअए जे हम कहियो ओकरा दगा देने होइयैक। सर्फूक स्वभाव तँ अहाँकेँ बुझले अछि। कनियो अन्याय आ बेइमानी ओकरा पसन्द नहि छैक, सभसँ बतकही भेल छैक, मुदा हमरासँ आइ धरि कोनो मोन मुटव्वल नहि

भेल छैक। हमर से नीयत रहितए तँ ओकरो संग ने हमर संबंध टुटितए। आ एहि शहरमे ओ आन भए हमरा अप्पन बुझलक आ ई सभ ? ओ तँ गौआँ छी, मुदा खलील? ओकरोसँ पुछियौक।

-"माएक मोन पड़ि जाइए जहिया ई भदवरिया लाधैए। मोन नहि पाड़ए चाहैत छी, आ ताहि लेल व्यस्त रहैत छी। मुदा आइ माएक ओ मृत्यु रहि-रहि कोढ़ तोड़ि रहल अछि।

नबी बकसक कंठ कहैत-कहैत भरिया गेलैक। मुदा कनेक पानि पीबि फेर ओ माएक स्मरण करए लागल।

-"नबी साहेबजादे, कनेक ओहि कठौतकेँ खुट्टाक लग कए दिऔक। बड्ड पानि चूबि रहल छैक ओतए। ई बादरकाल सभ साल दुःख दैत अछि। सोचिते रहि गेलहुँ जे घर छड़ायब। मुदा नहि भए सकल। घरोक कनी मरोमति कराएब आवश्यक छल, मुदा सेहो नहि भए सकल। ठाम-ठाम सोंगर लागल अछि। फूसोक घर कोनो घर होइत छैक? ठाम-ठाम चुबि रहल अछि, ओतेक कठौतो नहि अछि घरमे। खेनाइ कोना बनत से नहि जानि। ओसारापरक चूल्हिपर तँ पानिक मोट टघार खसि रहल अछि। एकटा आर अखड़ा चूल्हि अछि, मुदा जे ओ टूटि जाएत, तखन तँ चूड़ा-गुड़ फाँकि कए काज चलबए पड़त। समय-साल एहेन छैक जे चूल्हि बनाएब तँ सुखेबे नहि करत। जाड़नि सेहो सभटा भीजि गेल अछि। भुस्सीपर खेनाइ बनाबए पड़त"।

-"पइढ़िया उजरा नुआक आँचर ओढ़ने, थरथराइत करीमा बेगम माने हमर माए, चौदह बरखक अपन बेटाक माने हमर संग, कखनो सोंगरकेँ सोझ करथि तँ कखनो कठौतकेँ एतएसँ ओतए घुसकाबथि। जतए टघार कम लागन्हि ओतएसँ घुसकाकए, जतए बेशी लागन्हि ओतए दए दैत छलीह। सौँसे घर-पिच्छर भए गेल छल। कोनटा लग एक ठाम पानि नञि चूबि रहल छल, ततए जाए ठाढ़ भए गेलीह।

-"कतेक रास खढ़ चरमे अनेर पड़ल छल। पढ़ुआ काकाकेँ कहलियन्हि नहि। घर छड़बा लेने रहितहुँ"।

-"यौ बाबू। घर छड़एबाक लेल पुआर तँ भेटनिहार नहि। आ गरीब-मसोमातक घर खढ़सँ के छड़ाबए देत"।

-"हमरा खढ़सँ आ पुआरसँ घर छड़बयबामे होमयबला खरचाक अन्तर तहिया नहि बुझल छल।

-"से तँ अम्मी, खढ़सँ छड़ाएल घरक शान तँ देखबा जोग होइत छैक। पढ़ुआ काकाक घर देखैत छियन्हि। देखएमे कतेक सुन्दर लगैत अछि आ केहनो बरखा होअए, एको ठोप पानि नहि चुबैत अछि"।

-"से तँ सभसँ नीक घर होइत अछि कोठाबला"।

-“एह, की कहैत छी? गिलेबासँ आ सुरखीसँ ईँटा जोड़ेने कोठाक घर भए जाइत अछि? आ नेङराक घर तँ सीमेन्टसँ जोड़ल छैक, मुदा परुकाँ ततेक चुबैत छल से पूछू नहि”।

-“से?”

-“हँ यै अम्मी। सभ बरख ज्योँ छड़बा दी, तँ ओहिसँ नीक कोनो घर होइत छैक?”

-“चारिम बरख जे छड़बेने छलहुँ तकर बादो पहिल बरखामे खूब चुअल छल”।

-“पहिलुके बरखामे चुअल छल ने आ फेर सभ तह अपन जगह धऽ लेने होएत। तखन नहि चुअल ने बादमे”।

-“हँ, से तँ तकरा बाद तीन बरख नहि चुअल”।

-“तखने काकी बजैत अएलीह-

-“जनमि कए ठाढ़ भेल अछि आ की सभ अहाँकेँ सिखा रहल अछि। कनेक उबेड़ जेकाँ भेलैक तँ सोचलहुँ जे बहिन-दाइक खोज पुछारि कए आबी”।

-“बुन्नी रुकि गेल छल। हम काकाक घर दिस गेलहुँ आ दुनू दियादनीमे गप-शप शुरू भए गेलन्हि।

-“साँझक झलफली शुरू भेल, भदबरिया अन्हारक, तँ काकी बहराइत कहैत गेलीह-

-“बहिन दाइ, आगिक जरूरी पड़य तँ हमर घरसँ लए जाएब”।

-“नञि बहिनदाइ। सलाइमे दू-तीन टा काठी छैक। मुदा मसुआ गेल छैक। हे, ई डिब्बी दैत छियन्हि, कनेककाल अपन चुल्हा लग राखि देथिन्ह तँ काजक जोगर भए जाएत। नबी दिआ पठा दिहथि”।

-“देखिहथि। उपास नञि कऽ लिहथि से कहि दैत छियन्हि, बच्चा सभ तँ हमरा एहिठाम खा लेत”-दियादिनी कहैत बिदा भेलीह।

-“करीमा बेगम माने हमर माए ओसारापर खुट्टा भरे पीठ सटा बैसि गेलीह।

-“की सोचि रहल छी अम्मी। कहू ने ?”

-“यैह फुसियाही गप सभ, अहाँक अब्बूक पहलमानीक। काका हुनका जे कहैत रहथिन्ह सैह।

-“खुट्टा पहलमान छथि ई”।

-“से नहि कहू काका। जबरदस्तीक मारि-पीटि हम नहि करैत छी, ताहि द्वारे ने अहाँ ई गप कहि रहल छी”।

-“रहमान काका आ हुमायूँ भातिज। पित्ती-भातिजमे ओहिना गप होइत छलन्हि, जेना दोस्तियारीमे गप होइत छैक। अखराहामे जखन हुमायूँ सभकेँ बजाड़ि देथि तखन अन्तिममे रहमान हुनकासँ लड़य आबथि। काका कहियो हुनका नहि जीतए देलखिन्ह।

-“हुमायूँक कनियाँ माने हम नवे-नव घरमे आएल छलहुँ। कोहबर लहठी सभ होइत छलैक ओहि समयमे। आब ने जानि मुल्ला सभ किएक एकर विरोधी भए गेल अछि, तैयो लोक करिते अछि की ? मुल्ला सभक गप जे मानए लागी सभ ठाम तखन तँ भेल !

-“आ एहि तरहक वातावरण घरमे देखलहुँ तँ मोन प्रसन्न भऽ गेल। घरक दुलारि छलहुँ आ सासुरो तेहने भेटि गेल। समय बीतए लागल। मुदा हुमायूँक विधवा एतेक जल्दी कहाय लागब से नहि बुझल छल तहिया। आब तँ सभ प्रकारक विशेषणक अभ्यास भऽ गेल अछि। झगड़ा-झाँटिक बीच क्यो ईहो कहि दैत अछि- वरखौकी, वरकेँ मारि डाइन सिखने अछि !

-“हुमायूँक जिवैत जे सभक दुलारि छलहुँ तकर बाद सभक आँखिक काँट भए गेलहुँ। इद्दतक बाद नैहरसँ दोसर बियाह करएबा लेल सेहो भाए सभ आएल मुदा अहाँ सभक मुँह देखैत रहबाक इच्छा मात्र रहल”।

नबी बकस बाजल-“उजरा नूआ, बिन चूड़ी-सिन्दूरक माएक वैधव्य बला चेहरा एखनो हमरा मोने अछि। फेर ओहि भदबरिया रातिमे माए आगाँ कहए लगलीह।

-“रहमान काका हमर पक्ष लए किछु बाजि देलखिन्ह एक बेर, तँ हमर सासु-ससुर कहए लगलखिन्ह जे हमर पुतोहुकेँ दूरि कए रहल छी। आ ईहो जे मुद्दीबा सभक अपना घरमे घटना हेतैक, तखन ने बुझए जाएत।

-“आब तँ ने रहमाने चाचू छथि आ ने सासु ससुर से मरल आदमीक की खिधांश करू। मुदा एकोटा झूठ गप ई सभ नहि अछि।

-“लोक कहैत छैक जे सुखक दिन जल्दी बीति जाइत अछि, मुदा हमर दुखक दिन जल्दी बीतैत गेल, सुखक दिन तँ एखनो एक-संझू उपासमे खुजल आँखिसँ हम देखैत रहैत छी, खतमे नहि होइत अछि।

-“विधवा भेलाक अतिरिक्त आन घटनाक्रम अपन नियत समयसँ होइत रहल। हमर अब्बू-अम्मीक मृत्यु भेल, सास-ससुर आ पितिया ससुर रहमान कका तँ पहिनहिये गुजरि गेल छलाह।

-“घरमे जखन बँटबारा होमय लागल तखन सम्पत्तिक आ खेत-पथारक बखरा, चारि भैयारीमे मात्र तीन ठाम होमय लागल। हुमायूँक हिस्सा तीनू गोटे (जिबैत भैयारी सभ) बाँटि लेलन्हि। हम किछु कहलियन्हि जे हमर गुजर कोना होएत, छह टा बेटा आ एक टा बेटी अछि तँ हुमायूँक मृत्युक दोष हमरा माथपर दए हमर मुँह बन्न कए देल गेल।

-“तीनू भाँएक मुँह हुमायूँक समक्ष खुजैत नहि छलन्हि मुदा हुनकर मृत्युक बाद हुनकर विधवाकेँ हिस्सा नहि देबऽ लेल तीनू भाँय सभ तरहक उपाय केलन्हि। हम नैहर जा कए अपन भायकेँ बजा कए अनलहुँ। पंचैती भेल आ फेर अँगनाक कातमे एकटा खोपड़ी अलगसँ तीनू भाँय बान्हि देलन्हि, हमरा आ

हमर बच्चा सभक लेल। धान, फसिल सभ सेहो जीवन निर्वाहक लेल देबाक निर्णय भेल। हम चरखा काटए लगलहुँ। से कपड़ा-लत्ता ओतएसँ तेना निकलि जाए।

-“लिअ सलाइ”। दियादिनी आबि कहलन्हि।

“हँ”- भक टुटलन्हि करीमा बेगमक माने हमर माएक। दियादिनी सलाइ पकड़ाए चलि गेलीह।

-“एहि बेर बाढिक समाचार रहि रहि कए आबि रहल अछि। बाट घाट सभ जतए ततए डूमि रहल छलए, खेत सभ तँ पहिनहि डूमि गेल छलए। अहाँक पढ़ुआ काकी पहिनहिये सुना देने छथि जे एहि बेर वार्षिक खर्चामे कटौती होएत। काल्हि कहैत रहथि जे कनियाँ सभटा फसिल डूमि गेल, एहि बेर वार्षिक खरचामे कटौती हेतन्हि। हम कहलियन्हि जे एँ यै । जहिया फसिल नीक होइए तँ हमर खरचामे कहाँ कहियो बेशी धान दैत छी ? ई गप अहाँक पढ़ुआ काका सुनि रहल छलाह। बजलाह-राँड़ तँ साँढ़ भए गेल। अहाँक पढ़ुआ काकीक इशारा केलापर ओ ससरि कए दलान दिशि बहरा गेलाह आ हम नोर सोंखि गेलहुँ। आइ गप निकलल तँ.......”।

माएक खिस्सा कहैत-कहैत नबी फेर रुकि गेल। आँखि आ कंठ दुनू संग छोड़ि रहल छलैक ओकर। किछु काल चुप रहि बाजल।

“ई खिस्सा भाए सभकेँ हम कहबो नहि कएने छियैक। सोचलहुँ जे कहबैक तँ मँगनीमे प्रतिशोध जगतैक। जे काज करबाक से नहि कएल होएतैक। आ सुनलियैक अछि जे हमर ओ मंडलबा भाए ओहि पढ़ुआ काकाक कहलमे आबि गेल अछि”।

नबी बकस फेर चुप रहल। भाए सभक प्रति ओकर प्रेम ओकरा सभक विषयमे बेशी बजबासँ ओकरा रोकैत छलैक। फेर ओ माएक खिस्सा शुरू कएलक।

-“माए आगाँ बजैत रहलीह।

-“धुत्त दिनमे तँ खेनहिये छलहुँ, एहि अकल-बेरमे केना खेनाइ बनाएब। कनियाँ-मनियाँ छलहुँ तखने विधवा भऽ गेलहुँ आ अहू वयसमे तँ सभ कनियाँ-काकी कहैत अछि। हुमायूँ कतेक मानैत छल अपन भाए सभकेँ। अपन पेट काटि भागलपुरमे राखि पढ़ओलन्हि छोटका भाइकेँ आ आब ओ पढ़ुआ बौआ एहेन गप कहैत छथि।

-“ सोचिते-सोचिते नोर भरि गेलन्हि माएक आँखिमे।

-“हमरा संग एकबेर हज करए लेल गेल रहथि माए। धन्य भारत सरकार जे हमरा सनक गरीब-गुरबाक माए सेहो हज कए आएल। आ अपन बड़की दियादिनीकेँ सुनबैत रहथि खिस्सा जे बहिनदाइ, ततेक भीड़ छलए ट्रेनमे, गुमार ततबे। गाड़ीमे बेशी मसोमाते सभ छलीह। एक गोटे कहैत छलीह जे जतेक

कष्ट आइ भेल ततेक तँ जहिया राँड़ भेल छलहुँ तहियो नञि भेल छलए। हवाइ जहाजकँ अम्मी गाड़ी कहैत छलीह।

-"फेर ओहि भदबरियाक रातिमे हमर अम्मी करीमा बेगमक मुँहपर बाड़ीक हहाइत पानि आ चारसँ टपटप चुबैत पानिक ठोपक आ घटाटोप अन्हारक बीच कनेक मुस्की आबि गेलन्हि। हमरा काकाक दलानपर जाए लेल कहलन्हि जतए आर भाए बहिन सभ छल।

-"फेर सोचिते-सोचिते खाटपर टघरि गेलीह करीमा बेगम, माने हमर माए । भोर होइत-होइत बाड़ीक पानि बान्हपरसँ अँगना दिस आबि गेल।तीनू भैयारी अपन-अपन हिस्साक आंगन भरा लेने छलाह से सभटा पानि सहटि कऽ हमर सभक धसल आँगनसँ खोपड़ी दिस बढ़ि गेल। घरमे चारि आँगुर पानि भरि गेल। भोरमे किछु अबाज भेल आ जे उठैत छी तँ खाटक नीचाँ पानि भरल छल, एक-कोठी दोसर कोठीपर अपन अन्न-पानिक संग टूटि कऽ खसल छल। आब की हो, बड़की दियादनीक बेटा सभसँ पहिने आबि कऽ खोज पुछाड़ि केलकन्हि, अबाज दूर धरि गेल छलए। सभटा अन्न-पानि नाश भऽ गेलन्हि। अन्न पानि छलैन्हे कोन? दू-टा छोट-छोट कोठी, ओकरे खखरी-माटि मिला कऽ दढ़ करैत रहैत छलीह हमर आम्मी।

-"मुदा भोर धरि ओ हहा कऽ खसल आ मसोमातक जे बरख भरिक बाँचल मासक खोरिस छल तकरा राइ-छित्ती कऽ देलक। करीमा बेगम माने हमर अम्मी सूप लऽ कऽ अन्नकँ समटए लेल बढ़लीह, हमर आँखिक देखल अछि।

-"मुदा बाढ़िक पानिक संग पाँकक एक तह आबि गेल छल घरमे। सौँसे टोल हल्ला भऽ गेल जे देखिऔ केहन भैंसुर दिअर सभ छैक, अपना-अपनीकँ अपन-अपन अँगना भरि लए गेल अछि। मसोमातक अँगना तँ अदहासँ बेशी धकिआ लऽ गेल छलैहे, जे बेचारीक बचल अँगना अछि से खधाइ बनि गेल अछि। बड़की दियादिनी सहटि कऽ अएलीह कारण दिआद टोलक लोक सभ आबए लागल रहथि। करीमा बेगमक सोंगरपर ठाढ़ घरक दुर्दशा देखि सभ काना-फूसी करए लागल रहए। अँगनाक एक कोनसँ दोसर कोन, अपन घरसँ दोसराक घर !

-"पानि पैसबाक देरी रहैक आ आस्ते-आस्ते हमर घरक एक कातक भीतक देबाल ढहि गेल। टोलबैया सभ हल्ला करए लागल जे करीमा बेगम भितरे तँ नञि रहि गेलथि। बड़की दिआदिनी खसल घर देखि हदसि गेलीह। बजलीह जे अल्ला रक्ष रखलन्हि जे सुरता भेल आ नबीक भाइ-बहिनकँ घर लए अनलियैक नहि तँ दियादी डाह नहि बुझल अछि। सभ कलंक लगबितए अखने।

-"मुदा दियादिनी"!

-"दियाद सभ सभ गप बूझि अपन-अपन घर जाए गेलाह। हम अम्मी लग अएलहुँ। मार्क्सवादी विचारक रही, कटिहारमे पढ़ैत छलहुँ। विधवा-विवाह, जाति-

प्रथा सभ बिन्दुपर पढ़ुआ काकासँ भिन्न विचार रखैत छलहुँ। घरक नाम नबी छल मुदा स्कूल कॉलेजक नाम नबी बकस।गाममे भोजमे खढ़िहानक पाँति आ बान्हपरक पाँति देखि विचलित होइत छलहुँ। जोन-बोनिहारकेँ बान्हपर बैसा कऽ खुआबैत देखैत छलहुँ आ बाबू-भैयाकेँ खढ़िहानमे। खढ़िहानमे बारिक लोकनि द्वारा खाजा-लड्डू कैक बेर आनल जाइत छल । बान्हपरक पाँतीमे एक बेर आ नहियो। मुदा घरमे कोनो मोजर नहि छल, कहल जाइत रहए जे पहिने पढ़ि-लिखि कऽ किछु करू।

-"अम्मीसँ कतेक गमछा-झोड़ा भेटैत छल, चरखाक सूतक कमाइक। जय गाँधी बाबा, विधवा लोकनि लेल ई काज धरि कऽ गेलाह।

-"मुदा हमर अम्मी। की भेलन्हि हुनका। भाए बहिन सभ तँ ओम्हर अछि!"

-"अम्मी!!!!!!!!!!!!!!

-"हमर चित्कारसँ सौँसे टोलमे थरथड़ी पैसि गेल रहए। नबी कहियो कनैत नहि अछि, कानल अछि तँ कोनो गप छैक।

-"नञि अम्मी। ई कोनो गप नहि भेल। किएक हमरापर अहाँ भरोस छोड़ि देलहुँ। नबी बकस नाम छी हमर। पाँचो भाए आ छोटकी बहिनक भाए नहि बाप छियैक हम। मुदा अहाँ हमरापर भरोस छोड़ि चलि गेलहुँ। या अल्ला!!!!!!!!!!!"

-"टोल जुटि गेल मैयतक चारू दिश। के की सभ कएलक से नहि बुझलहुँ। अम्मीकेँ गुसुल (नहाओल) कराओल गेल। कफन पहिराओल गेल। जनाजाक खाट आएल। ताहिपरसँ माएक गाँधी चरखासँ बनाओल चादरि ओढ़ाओल गेल। तीनू काका आ हम जनाजाक खाटकेँ कान्ह देलहुँ। कब्रिस्तान लग ठाढ़ भए जनाजाक नमाज पढ़लहुँ आ अम्मीकेँ दफन कएलहुँ।

नबी बकस फेर चुप भए गेल। हम ओकरा टोकए नहि चाहैत छलहुँ। दस मिनट धरि ओ चुप्पे रहल आ हम बैसल रहलहुँ। फेर ओ बाजल।

-"अम्मीक मृत्युक चालीस दिन धरि शोक मनओलहुँ। आ वैह चालीस दिनक आराम हमरा एहि जोग बनेलक जे फेर पएरमे घिरणी लागि गेल। अम्मीक मृत्युक बाद पढ़ाइकेँ नमस्कार कए खाला लग आबि गेलहुँ, दिल्ली नगरियामे ।

नबी बकस अपन आँखि पोछि रहल छल। फेर दस मिनट ओ चुप रहल।

"नबी बकसकेँ अम्मीक इन्तकालक दिन लोक पहिल आ अन्तिम बेर कनैत देखने रहए। मुदा ई सभ आइ फेर हमरा आँखिसँ नोर चुआ देलक। ओकीलक तँ बियाहो नहि होइत रहए। सभ कहैत छल जे बुरबक छैक। मुदा जेना भीष्म पितामह धृतराष्ट्रक बियाह करेलन्हि तहिना हम एकर बियाह करबओलहुँ आ ई सभ कहैत अछि जे हम ओकरा नोकर जेकाँ रखैत छियैक"।

तावत कॉलबेलक घंटी बाजल रहए। ओकील नबी बकसक सोझाँमे आबि ठाढ़ भऽ गेल।

''भैया, सभ कहैत अछि जे हम बुरबक छी। काल्हि अहलिया (कनियाँ) केँ ई सभ यैह गप कहि देलकैक। ओ कहलक जे तोहर चिन्ता ककरो नहि रहए छैक, मुदा हम नहि मानलहुँ। से काल्हि हम कनेक लेट भए गेलहुँ। सरकेँ कहबो केलियन्हि जे देखैत छी जे ओ सभ आबैए आकि नहि। कनियो तँ सुधंगे ने अछि। आइ ओहो दियादिनीक गरा पकड़ि कऽ खूब कानल अछि। बुधियार सभ ने अहाँकेँ छोड़ि चलि गेल, मुदा ई बुरबकहा अहाँकेँ छोड़ि कहियो नहि जाएत, भाए''।

# हम नहि जायब विदेश

‘‘यौ भैय्या। कनेक काकासँ भेँट नहि करा देब’’।

‘‘काका छथि अहाँक। आ भेँट करा दिअ हम?’’

‘‘यौ। ओ तँ हमरा सभकेँ चिन्हितो नहि छथि। बच्चेमे गामसँ बहरा गेलथि, से घुरि कए कहाँ अएलाह’’।

‘‘बेश। तखन चलू भेँट करबा दैत छी। मुदा कोनो पैरवी आकि काज होअए तँ पहिने कहि दैत छी, से ओ नहि करताह’’।

‘‘नहि। कोनो काज नहि अछि। मात्र भेँट करबाक इच्छा अछि। भारत वर्षमे एतेक नाम छन्हि, सभ चिन्हैत छन्हि मुदा नहिये हमरा सभ चिन्हैत छियन्हि आ नहि वैह चिन्हैत छथि’’।

लाल गेल छलाह दस दिन पहिने द्विजेन्द्र जीक घर पर। जाइते देरी लालक कटाक्ष शुरू भऽ जाइत छन्हि।

-गामकेँ बिसरि गेलियैक। घुरि कऽ देखबो नहि कएलहुँ। खोपड़ीकेँ घर तऽ बना लैतहुँ।

आ जबाबो भेटन्हि ओहिना बनल बनाओल।

-की हएत ? जा कए की करब। एक कट्ठाक घरारी आ ताहि पर बाबूक कतेक भाँए। आ फेर वामपंथी विचारधाराक चिन्तन शुरू भऽ जाइत छलन्हि।

-गाम अछि धनिकक लेल। यावत गामक जनसंख्या कम नहि होएत तावत धरि तँ अवश्ये। गरीबीमे लोककेँ लोक नहि बुझैत अछि क्यो। मुदा नगर मात्र दिल्ली, कलकत्ता नहि अछि। यावत मधेपुर, मधेपुरा, महोत्तरी, जनकपुर, बनैली आ झंझारपुरक विकास नहि होएत, शोषित वर्ग रहबे करत।

तावत द्विजेन्द्र जीक कनियाँ चाह राखि गेलखिन्ह।

द्विजेन्द्रजी गामेमे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कएलन्हि। झंझारपुरमे मिड़ल स्कूल आ हाइ स्कूल पएरे जाथि। पिताजी राँचीमे ठिकेदारी करैत छलखिन्ह। माए पढ़ल-लिखल छलखिन्ह।

लोक कहैत छल जे उपन्यास सेहो पढ़ैत छलीह।

दरभंगासँ सोझे प्रयाग पहुँचि गेलाह द्विजेन्द्र। पिता छलाह नबका बसातक लोक। खूब कमाथि आ खूब खर्च करथि। गामसँ कोनो सरोकार नहि। कनियाँक खोजो-खबरि नहि लैत छलाह। लोक कहैत छल जे दोसर बिआह कऽ लेने छलाह राँचीमे। लोक ईहो कहैत अछि जे यावत ओ गाममे छलाह तहियो वैह हाल छलन्हि। बेरू पहर तीन बजेसँ कनियाँ हुनका लेल भाङ पीसब प्रारम्भ कऽ

दैत छलखिन्ह। मुदा बड़का बेटाकेँ खूब मानैत छलाह। कारण छोटका बेटा बापेपर गेल छल, जकर नाम रहए हरेन्द्र।

आ लोक कहैत अछि जे हरेन्द्र पटनाक कोनो गैराजमे काज करैत रहथि। द्विजेन्द्र गुरु-गम्भीर, पढ़बामे तेज, सभ विषयमे पितासँ विपरीत आ तेँ पिता मानबो करैत छलखिन्ह। आ ताहि द्वारे पिता हुनकर खर्च पठेबामे कोनो विलम्ब नहि करैत छलाह। एहि पठाओल पाइसँ द्विजेन्द्र छोट भाइकेँ सेहो नुकाकेँ पाइ पठा दैत छलाह। आ लोक कहैत अछि जे माएक सुधि मुदा हुनको नहि रहैत छलन्हि आकि भऽ सकैत अछि जे ओतेक पाइ आ समय नहि रहैत होएतन्हि।

माए बेचारीकेँ क्यो कहि दैन्हि जे बेटाकेँ फेर फर्स्ट डिवीजन भेल अछि आकि पतिकेँ हाइवे केर ठेका भेटि गेल छन्हि, तँ ओ तिरपित भऽ जाइत छलीह। गाममे बटाइदार सभ जे किछु दऽ दैन्हि ताहिसँ कोनो तरहेँ गुजर चलि जाइत छलन्हि। नील रंगक नूआ, रुबिया वाइल कहैत छल कोटाक दोकान बला सभ ओहि नूआकेँ, सेहो सस्तमे भेटि जाइत छलन्हि, ओहि कोटा बला दोकानसँ। रने-बने गाछीमे घुमए पड़ैत छलन्हि जारनिक लेल। गाममे सभक गुजर कोहुनाकेँ भऽ जाइत छैक ।

आ एम्हर ठेकेदार साहेब पैघ बेटाकेँ समय पर पाइ पठेबाक अतिरिक्त अपन सभ कर्त्तव्य बिसरि गेल छलाह। कमाउ आ खाउ छल मात्र हुनकर मंत्र। गाम-घरसँ कोनो मतलबे नहि।

द्विजेन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे सभक आदर्श बनि गेल छलाह। इतिहास विषयक तिथि सभ हुनकर संगी बनि गेल छल। विश्वविद्यालयमे प्रथम तँ अबिते रहथि, संगहि हुनकर चालि-चलन, गुरु-गम्भीर स्वभाव, परिपक्व मानसिकता एहि सभसँ सभ क्यो प्रभावित रहैत छल। संगी-साथी सेहो कम्मे छलन्हि। एकटा संगी छलन्हि उपेन्द्र आ एकटा आलोक। महिला संगी कोनोटा नहि।

आ से ओ सभ कहितो छलीह जे द्विजेन्द्र तँ घुरि तकितो नहि छथि। ओहिमे एकटा छलीह अरुन्धती।पढ़बामे तेज, राजनीति विज्ञानक विद्यार्थी। प्रतियोगी स्वभावक छलीह। बापक दुलारू आ पिताकेँ हुनका पर सेहो असीम विश्वास छलन्हि।एडवान्स कहि सकैत छी। द्विजेन्द्रसँ बहुत बिन्दु पर सुझावक आकांक्षी छलीह। मुदा द्विजेन्द्र तँ दोसरे लोक छलाह। हुनकर घरक कोनो गप तँ ककरो बुझल नहि रहैक। मुदा से कारण छल जे द्विजेन्द्र सभक प्रति निरपेक्ष रहैत छलाह।

''यौ उपेन्द्र। राजनीति विज्ञानमे तँ हमरा कोनो दिक्कत नहि अछि मुदा इतिहासमे तिथि आ दृष्टिकोणसँ बड़ड दिक्कतिमे पड़ि गेल छी''।अरुन्धती उपेन्द्रसँ पुछलन्हि।

आ दुनू गोटे इतिहास पर अपन-अपन दृष्टिकोण एक दोसरकेँ देबए लगलथि।रासबिहारी बोस आजाद हिन्द फौजक स्थापना कएलन्हि सुभाष चन्द्र बोस नहि आ नीलक खेतीक हेतु सरखेज जे गुजरातमे छल बड़ड प्रसिद्ध छल,

धोलावीर सभसँ पैघ सिन्धु घाटी आकि सरस्वती नदी सभ्यताक स्थल छल आ दारा शिकोहकेँ सभसँ पैघ मनसब देल गेल छल । उपेन्द्र ई सभ गप द्विजेन्द्रसँ पूछि कए आबथि आ फेर अरुन्धतीसँ वार्त्तालाप करथि। एहिमे समयक हानि होइत छलन्हि, से उपेन्द्र कहलन्हि जे किएक नहि द्विजेन्द्रकेँ सेहो अपन समूहमे शामिल कए लेल जाय।

“मात्र द्विजेन्द्रकेँ शामिल करू। बेशी गोटेकेँ आनब तँ पढ़ाइ कम आ गप सरक्का बेशी होएत”। अरुन्धतीक ई विचार बनल।

उपेन्द्रक कहलासँ द्विजेन्द्र आबए लगलाह, ओहि सामूहिक अध्ययनमे।

तावत एक दिन समाचार आएल जे पिताक मोन बड़ड खराब छन्हि। पहुँचलाह तँ लीवर खराब होएबाक समाचार भेटलन्हि। सतमाएसँ सेहो भेँट भेलन्हि।गाम-घर पर कोनो खबरि नहि। फेर १५ दिनमे मृत्यु भऽ गेलन्हि पिताक। गाम पर तखन जा कए खबरि भेल। नहि तँ कोनो पता, नहियेे कोनो फोन। माए बेचारी कनैत रहि गेलीह। बेटा दाह-संस्कारक बाद सोझे प्रयाग चलि गेलाह। गाम घुरियो कऽ नहि गेलाह।

माएक खिस्सा यैह अछि जे फेर ओ गुम-शुम रहए लगलीह। कोनो चीजक ठेकान नहि रहन्हि। एक बेर तँ डिबिया सँ चारक घरमे तेहन आगि लागि गेल जे सौँसे टोल जरि गेल। ओहि समयमे सभकेँ चारक घर रहैक। सभ घर एक दोसरसँ सटल। से सौंसे टोल जरि गेल। सभ कहए आकि बनती बनाबए जे द्विजेन्द्रक माए उपन्यास पढ़ैत-पढ़ैत सुति गेलीह आ डिबियामे हाथ लागि गेलन्हि।सौँसे टोल जरैत रहए आ ओ भेर धरि सूतल रहलीह। ककरो फुरेलइ तँ हुनका उठा-पुठा कऽ बाहर कएलक। बादमे हुनकर आरो अवहेलना होमए लगलन्हि। लोक गारि सेहो पढ़ि देने छलन्हि कताक बेर।

ओहिनामे एक बेर जाड़क झपसीमे गुजरि गेलीह। द्विजेन्द्रक पता सेहो नहि छलन्हि ककरो लग। घरारीक लोभमे एक गोट समाङ आगि देलकन्हि।

द्विजेन्द्रक निकटता अरुन्धतीसँ बढ़ए लगलन्हि। उपेन्द्रकेँ अरुन्धती एक बेर कहियो देलखिन्ह जे अहाँ सीढ़ी छलहुँ हमर आ द्विजेन्द्रक बीचमे।

अरुन्धतीक माए सेहो बच्चेमे गुजरि गेल छलीह। पिताक दुलरी छलीहे ओ। अरुन्धतीक कहला पर द्विजेन्द्र आबि गेलाह हुनका घर पर रहबाक लेल। संगे पढ़लन्हि आ फेर दुनू गोटे प्रयाग विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर बनि गेलाह।विवाह सेहो भऽ गेलन्हि। मात्र मधुबनीक एक गोट पीसाकेँ बुझल छलन्हि हिनकर विवाहक विषयमे।पीसा छलाह पत्रकार आ मधुबनीक कोनो हॉस्पीटलमे काज केनहारि केरलक नर्स सँ ताहि जमानामे विवाह कएने छलाह।घर परिवार हुनका सेहो बारि जेकाँ देने छलन्हि। मुदा छलाह बड़ड नीक लोक।

द्विजेन्द्रकेँ वैह बेर-बखत पर कहियो काल मदति करैत छलाह।मुदा विवाहमे ओहो नहि अएलाह।अपन सलाह देने छलाह एहि विवाहक विरुद्ध। अपन उदाहरण देलन्हि जे कतेक दिक्कत भेलन्हि। मुदा संगमे ईहो कहलन्हि जे अहाँकेँ तँ बाहर रहबाक अछि, से ओतेक दिक्कत नहि होएत। हम तँ मधुबनीमे रहैत छलहुँ, कहियो कनियाकेँ गामो नहि लऽ जा सकलहुँ।

द्विजेंन्द्रक रिसर्च पर रिसर्च प्रकाशित होइत गेलन्हि। देश-विदेशमे सेमीनार पर जाथि। अरुन्धती जेना बेर पर मदति कएने छलीह तकरा बाद द्विजेन्द्र अपना पर भरोस कएनाइ छोड़ि देने छलाह। वामपंथी इतिहासकारक रूपमे छवि बना कए मात्र इतिहास आ पुरातत्त्व सँ सम्पर्क बनओने छलाह। सालक-साल बितैत गेल। गामक लोकमे मात्र लाल छलाह जे ओहि नगरमे रहैत छलाह आ कहियो काल ओ भेँट कऽ अबैत छलखिन्ह।

लालक गप पर अनुत्तरित भऽ जाइत छलाह द्विजेन्द्र। माएक कोनो चर्चा पर नोर पीबि जाइत छलाह। सोचने रहथि जे किछु बनि जएताह तँ माएकेँ संग आनि रखितथि आ सभ पापक पश्चाताप कऽ लितथि। मुदा यावत अपन खर्चा नहि जुमन्हि तावत तँ ओ जीवित रहलीह आ जखन किछु बनलाह तँ तकर पहिनहि छोड़ि गेलीह। कोन मुँह ककरा देखेतथि।

आ जखन लाल पहुँचलाह हुनका लगमे ई बजैत जे लियह, भातिज आएल छथि भेँट करबाक हेतु, अहाँ तँ कोनो सरोकार ककरोसँ रखबे नहि कएलहुँ, तँ पहिल बेर बजलाह द्विजेन्द्र-

''कोन सरोकार माएसँ पैघ छल यौ लाल । जे अहाँ कहैत छी जे हम ककरोसँ सरोकार नहि रखने छी''।

# राग वैदेही भैरवी

''**गबैया** परिबार छैक। तान जँ चढ़ैत छैक तँ उतरिते नञि छैक''।

''एकसँ एक कबिकाठी सभटा, परिबारमे क्यो गप छोड़बामे ककरोसँ कम नहि''।

''से की कहैत छियैक। परिबारक कोन कथा, सौँसे टोल मे सभटा कबिकाठिये भेटत''।

उदितक हारमोनियमक तानक विवेचन सौँसे गाम कए रहल छल।

उदितक बाबू आ काका दुनू गोटे बड्ड पैघ गबैय्या। खानदानी गायन आ वादन प्रतिभा हुनका लोकनिक रक्तमे छलन्हि। उदित पाँचे वर्षसँ संगीत सीखए लागल छलाह, हुनकर स्वरक स्वाभाविक उदात्त आ अनुदात्त स्वरूपसँ पिता मुग्ध भए जाइत छलाह। मुदा गामक लोकक संगीतक ज्ञान अष्टजाममे मृदंग, झाइल आ हारमोनियम बजेबा धरि आ निर्दिष्ट वाक्यकेँ गएबा धरि सीमित छल । आ से प्रायः सभ गोटे सहज रूपेँ कए लैत छलाह।

''आङ्ल लोकनिक राज्य छल, मैकाले महोदय संस्कृत शिक्षाक स्थान पर आङ्ल भाषा अनबा पर उतारू छलाह।

उदितक पिताजी एहिसँ संबंधित एकटा कथा कहैत छलाह।

''मैकाले महोदय जखन भारत अएलाह तँ एकटा गेस्ट हाउसमे ठहरल छलाह। खिड़कीसँ बाहर देखि रहल छलाह तँ देखलन्हि जे गेस्ट हाउसक मैनेजर परिसरमे प्रवेश कए रहल छलाह। आ ओ प्रवेश कएला उत्तर गेस्ट हाउसक दरबानकेँ पएर छुबि कए प्रणाम कएलन्हि। बादमे जखन मैकाले हुनकासँ पुछलन्हि, जे अहाँ मैनेजर छी आ तखन सामान्य दरबानकेँ पएर छुबि किएक प्रणाम कए रहल छलहुँ ? एहि पर हुनका प्रत्युत्तर भेटलन्हि जे ओ सामान्य दरबान नञि छल वरन् संस्कृतज्ञ सेहो छल। ताहि दिन मैकाले सोचि लेलन्हि जे भारतकेँ पराजित करबाक लेल भारतक संस्कृतिकेँ नष्ट करए पड़त। आ एहि लेल संस्कृतकेँ नष्ट करबाक प्रण लेलन्हि, जकर अछैत भारतीय कला संगीत आ संस्कृतिसँ पराङमुख भए जएताह''। उदित पिताक मुँहे ई खिस्सा कताक बेर सुनने छलाह। अस्तु तावत, उदित एहि तरहक वातावरणमे आगाँ बढ़ए लगलाह।

अङरेज लोकनि द्वारा पाश्चात्य सङ्गीतकेँ अनबाक प्रयासक पलुस्कर, भातखण्डे आ रामामात्य द्वारा देल गेल समीचीन उत्तर, ई शिक्षाक क्षेत्रमे किएक नञि भए

सकल, उदितक बाल मोन अकुलाइत छल। अस्तु तावत उदित संगीतोद्धारक भातखण्डेकेँ आदर्श बनाए आगाँ बढ़ए लगलाह।

लोक गबैय्या कहए तँ कोनो बात नहि, एक दिन आएत जखन एहि गबैय्याक सोझाँ समस्त अखण्ड भारतक मनसि श्रद्धासँ देखत, अस्तु तावत।

काका आ पिताक संरक्षणमे गामक रामलीला मंडली द्वारा प्रस्तुत कएल जाएबला नाटकमे सेहो उदित भाग लैत छलाह, हुनकर गाओल गीत गाममे सभक ठोर पर आबि गेल छल। मुदा खेती बारी तेहन सन नहि छलन्हि। एक बीघा बटाइ करैत जाइत छलाह, सेहो सुनए पड़न्हि जे गबैय्याजी बुते की खेती कएल होएतन्हि, मुँहसँ गओनाइ आ हाथसँ काज करबामे बड़ड अंतर छैक।

जीवनक रथ आगाँ बढ़ैत रहैत मुदा विदेशीक शासनमे सेहो धरि संभव नहि होइत छल। कखनो हैजा तँ कखनो प्लेग तँ कखनो मलेरिआ। अहिना एक बेर गाममे प्लेग पसरल। लोक एक गोटाकेँ डाहि कए आबय तँ गाम पर दोसर व्यक्ति मृत पड़ल रहैत छल। उदितक माएकेँ सेहो पेट आ नाक चलए लगलन्हि, देह आगि जेकाँ जरैत रहन्हि मुदा बेटाकेँ लग नहि आबए देथिन्ह जे कतहु हुनको प्लेग नहि भए जाइन्ह। दू दिनुका बाद बेचारी दुनियाँ छोड़ि गेलीह। दुनू बाप-बेटा दाह संस्कार कए अएलाह। दुनू गोटेक आँखिमे नोर जेना सुखा गेल छलन्हि। पिता गुम-सुम रहए लगलाह। कण्ठसँ स्वर नहि निकलन्हि मुदा हस्त परिचालनसँ बेटाकेँ अभ्यास कराबथि। दू-तीन बर्ष बीतल उदितक बयस वैह १०-११ साल होएतन्हि आकि पिताकेँ मलेरिआ पकड़ि लेलकन्हि।

रातिमे निन्द नहि होइन्ह। सिरमामे भातखण्डे स्वरलिपि रहैत छलन्हि ताहि आधार पर बेटाकेँ किछु गाबि सुनाबए कहैत छलखिन्ह। उदितकेँ आभास भए गेलन्हि जे माताक संग पिता सेहो दूर भए जएताह। ई सोचि कोढ़ फाटि जाइन्ह। कुनैनक प्रभाव सेहो आब पिता पर नहि होइत छलन्हि। रातिमे थरथरी पैसि जाइत छलन्हि। उदित सभटा केथरी-ओढ़ना सभ ओढ़ा दैत छलखिन्ह, मुदा तैयो थरथरी नहि जाइत छलन्हि। लोक सभ दिनमे आबि खोज-पुछाड़ी कए जाइत छलन्हि। गामक नाटक मण्डली सेहो बन्दे छल कारण मुख्य कार्यकर्त्ता हर्षित नारायण छलाह आ ओ बनारस चलि गेल छलाह कोनो नाटक मण्डलीमे। ओ गाम आएल छलाह आ जखन सुनलन्हि जे उदितक पिताक मोन खराप छन्हि तँ पुछाड़ी करए अएलाह।

"हर्षित। हम तँ आब जा रहल छी। उदित नेना छथि। काका पर बोझ बनताह ताहिसँ नीक जे अपन पएर पर ठाढ़ भए जाथि, संगीत साधना करथि। ई देवक लीला अछि जे एहि समय पर अहाँ गाम आबि गेलहुँ। गामक हबामे जेना रोगक कीटाणु आबि गेल छैक। एतए मत्यु टा निश्चित छैक आर किछु नहि। एहना स्थितिमे संगीतक मृत्यु भए जाए ताहिसँ नीक जे उदित अहाँक संग बनारस नाटक मण्डलीमे चलि जाथि। अहाँ बुते ई होएत हर्षित"?

''की कहैत छी गुलाब भाइ। उदित अहाँक पुत्र छी आ हमर क्यो नहि? मुदा संगीतक पारखीक प्रतिभा नाटक मण्डलीमे कुण्ठित नहि भए जएतैक? नाटक मण्डली तँ हमरा सनक अल्प ज्ञानीक लेल छैक''।

''नहि हर्षित। ओतए उदितकेँ हनुमानक आ रामक आशीर्वाद भेटतन्हि। संगीतक कतेक रास पक्ष छैक। नव-नव बाधा पार करताह आ अल्प समयमे संगीत फुरेतन्हि। ओतएसँ हिनकर साधना आगाँ बढ़तन्हि''।

गुलाब जेना हर्षितक बाट जोहि रहल छलाह। बजिते-बजिते प्राण जेना उखड़ए लगलन्हि। बेटाक माथ पर थरथड़ाइत हाथ रखलन्हि तँ दौगि कए हर्षित गंगा जल आनि मुँहमे एक दिशिसँ देलन्हि मुदा जल मुँहक दोसर दिशिसँ टघरि कए बाहर आबि गेल।

काशीक तट पर विद्यापतिक बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे सँ लऽ कए भिन्न-भिन्न धार्मिक आ लौकिक गीत गाबथि ओकर सुर बनाबथि आ ताहि लेल उदितकेँ प्रशंसा सेहो भेटन्हि। आयुक न्यूनता सेहो कहियो काल उपलब्धिक मार्गकेँ रोकि दैत छैक। उदित मात्र ११ वर्षमे काशी गेलाह आ ताहि द्वारे हुनकर स्वरक आ सुरक बहुत गोटे ग्राहक बनि गेलन्हि, ग्राहक नञि शोषक कहू। सभटा परिश्रम हिनकासँ करबाए लैत छलन्हि आ नाम अपन दऽ दए जाइत छलाह। मुदा उदित समय, आयु आ गुरुक आसमे दिन काटि रहल छलाह। दिन बड़ मुशकिलसँ कटैत छैक मुदा ज्योँ एकहि ढर्रा पर चलैत जाइत छैक तँ लागए लगैत छैक जे सालक साल कोना बीति गेल। उदित ११ वर्षसँ २६ वर्षक उमरि धरि नाटक कम्पनीमे काज करैत रहलाह।

''शास्त्री जी। ई सुर तँ हमही बनओने छी मुदा मोन कनेक विचलित अछि ताहि द्वारे दोसर सुर नञि बनि पाबि रहल अछि। उदितकेँ बजा लैत छी। ओहो हमरासँ किछु सिखने अछि, किछु समाधान निकालि लेत''। महान संगीत उपासक भट्ट जीक सोझाँ हर्षित बाजि रहल छलाह।

''हँ हँ। अवश्य बजा लिऔक''। भट्ट जी बजलाह।

मुदा उदित जखन आबि कए संगीतकेँ सरलतासँ सिद्ध कए सुर गाबि देलन्हि, ताहिसँ भट्टजीकेँ बुझबामे भाँगठ नहि रहलन्हि, जे वास्तविक कलाकार हर्षित नहि उदित छथि। भट्ट जी एकटा एहन शिष्यक ताकिमे छलाह जे प्रतिभावान आ साधक होथि, जिनका भट्टजी अपन सभटा कला निश्चिन्त भए दए सकथि। आइ से शिष्य भेटि गेलन्हि हुनका।

उदितकेँ अपना आश्रममे चलबाक जखन ओ गुरु नोत देलन्हि तँ उदित दौगि कए अपन प्रकोष्ठ चलि गेलाह आ पिताक फोटो निकालि कए जे कननाइ शुरू कएलन्हि तँ १५ सालसँ रोकल धार छहर तोड़ि बहराए लागल। अस्तु तावत।

नाटक कम्पनीमे जेहन एकरूपता छल, तकर विपरीत गुरुआश्रममे वैविध्यता छल। सभ दिन उदित सूर्योदयसँ पूर्व उठैत छलाह आ संगीत साधनामे लीन भए जाइत छलाह। शिष्य गुरुकेँ पाबि धन्य छल आ गुरु शिष्यकेँ पाबि कए। दिन बीतए लागल मुदा भातखण्डे आ पलुस्कर महाराज द्वारा संस्कृत साहित्यक आधार पर संगीतक कएल गेल पुनुरोद्धार तँ गङ्गाक धार जेकाँ निर्मल आ चिर छल। जतेक गहींर उदित ओहि धारमे उतरथि, मोन करन्हि जे आर गहींर जाइ। २५ साल धरि गुरुक आश्रममे उदित रहलाह। ५१ वर्षक जखन भेलाह तँ गुरु ई कहि बिदा कएलन्हि जे उदित आब अहाँ शिष्य नहि गुरुक भूमिका करू। संगीतशास्त्रक पुनरोद्धार भए चुकल छैक, आङ्ल लोकनिक पाश्चात्य संगीत पद्धति अनबाक प्रयास विफल भए चुकल अछि, आ आब भारत स्वतंत्र सेहो भए चुकल अछि। जाऊ आ शास्त्र द्वारा प्रदत्त संगीतक दोसर पुनर्जागरणक योद्धा बनू।

५१ वर्षक आयुमे स्वतंत्र भारतमे उदित नोकरी तकनाइ शुरू कएलन्हि। काशीक एकटा संगीत विद्यालय सहर्ष हुनका स्वीकार कए लेलकन्हि। मुदा ३६ वर्षक संगीत साधनाक साधल स्वर काशी विश्वविद्यालय धरि पहुँचि गेलैक। शिष्यक पंक्ति लागए लगलन्हि। भारतक नव स्वरूपमे श्रद्धाक प्रतीक रूपम् कतेको गोटे शास्त्रीय संगीतक व्यापार सेहो शुरु कएलन्हि। मुदा प्रचारसँ दूर मात्र गुरु शिष्य परम्पराकेँ आधार बना कए आगू बढ़बैत रहलाह उदित। हुनकर शिष्य सभ देश विदेसमे नाम करए लागल। तखन काशी विश्वविद्यालय शिक्षक रूपमे हिनका नियुक्त कए लेलकन्हि। मुदा ओतए नियम छल जे बिना पी.एच.डी. कएने ककरो विभागक अध्यक्ष नहि बनाओल जा सकैत अछि। मुदा विभागमे उदितसँ बेशी श्रेष्ठ तँ क्यो छल नहि। जेना आङ्ल जन कए गेल छलाह, गुरुकुलसँ पढ़निहारकेँ कोनो डिग्री नहि भेटैत छल आ ओ सरकारी नोकरीक योग्य नहि होइत छल। उदितक लगमे सेहो ताहि प्रकारक कोनो औपचारिक डिग्री नहि छलन्हि। विश्वविद्यालयक सीनेटक बैसकी भेल आ ताहिमे विश्वविद्यालय अपन नियमकेँ शिथिल कएलक आ उदितकेँ संगीतक विभागाध्यक्ष बनाओल गेल। ओतए सेवानिवृत्ति धरि उदित अपन प्रशासनिक क्षमताक परिचय देलन्हि। भातखण्डेक अनुरूप कतेक खण्डमे संगीतक शास्त्रक परिचय देलन्हि उदित। उदितक शिष्य सभक दृश्य-श्रव्य रेकार्ड बहरा गेल छलन्हि मुदा उदित स्टुडियो आ जनताक समक्ष अपन कार्यक्रमसँ अपन साधना भंग नहि करैत छलाह। भोरक साधनासँ साँझक सुर भेटन्हि आ साँझक साधनासँ भोरक। अस्तु तावत।

हुनकर शिष्य सभ उदितकेँ बिना कहने एकटा अभिनन्दन कार्यक्रम रखलन्हि। ओतए रेकार्डिङ्ग केर व्यवस्था छल। उदित अभिनन्दन कार्यक्रममे अएलाह। आयु ७५ वर्षक छलन्हि हुनकर। श्रोता रहथि देशक सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय संगीतकार लोकनि आ उदितक शिष्य-मण्डली।

जखन उदित शुरू भेलाह तखन हुनकर शिष्य लोकनि चारू दिशि ताकि रहल छलाह। हुनकर लोकनिक गुरुक स्वर राग वैदेही भैरवी हुनका सभकेँ छोड़ि

सद्यः आर क्यो नहि सुनने छल। मुदा शिष्य लोकनिकेँ सुनला उत्तर सभकेँ अभिलाषा छलैक जे जखन शिष्य लोकनि एहन छथि तखन गुरु केहन होएताह। ७५ वर्षक एहि योद्धाकेँ सुनैत सुनैत सगीतक महारथी नव रसक संग हँसथि आ प्रसन्न भए रहल छलाह मुदा शिष्य लोकनि विभोर भए मात्र कानि रहल छलाह।

# काल-स्थान विस्थापन

''सुनू। प्रयोगशालाक स्विच ऑफ कए दियौक''।

चारि डाइमेन्शनक वातावरणमे अपन सभटा द्वि आ त्रि डाइमेन्शनक वस्तुक प्रयोग करबाक लेल धौम्य प्रयोगशालामे प्रयोग शुरू करए बला छथि। हुनकर संगी-साथी सभ उत्सुकतासँ सभटा देखि रहल छथि।

''दू डाइमेन्शनमे जीबए बला जीव तीन डाइमेन्शनमे जीबए बला मनुक्खक सभ कार्यकँ देखि तऽ नहि सकैत छथि मुदा ओकर सभटा परिणामक अनुभव करैत छथि। अपन एकटा जीवन-शैलीक ओ निर्माण कएने छथि। ओहि परिणामसँ लड़बाक व्यवस्था कएने छथि। तहिना हमरा लोकनि सेहो चारि डाइमेन्शनमे रहए बला कोनो सम्भावित जीवक वा ई कहू जे तीनसँ बेशी डाइमेन्शनमे जिनहार जीवक हस्तक्षेपकँ चिन्हबाक प्रयास करब''। धौम्य कहैत रहलाह।

एक आ दू डाइमेन्शनमे रहनिहारक दू गोट प्रयोगशालाक सफलताक बाद धौम्यक ई तेसर प्रयोग छल।

एक विमीय जीव जेना एकटा बिन्दु। बच्चामे ओ पढ़ैत छलाह जे रेखा दू टा बिन्दुकँ जोड़ैत छैक। नञि तऽ बिन्दुमे कोनो चौड़ाइ देखना जाइत अछि आ नहियै रेखामे। रेखा नमगर रहैत अछि मुदा बिन्दुमे तँ चौड़ाइक संग लम्बाइ सेहो नहि रहैत छैक। एक विमीय विश्वमे मात्र आगाँ आ पाछाँ रहैत अछि। नञि अछि वाम दहिनक बोध नहियै ऊपर नीचाँक। मात्र सरल रेखा, वक्रता कनियो नहि। आब ई ने बुझि लिअ जे अहाँ जतए बैसल छी, ओतए एकटा रेखा विचरण करए लागत। वरण ई बुझू जे ओ रेखा मात्र अछि, नहि कोनो आन बहिः।

''द्वि बीमीय ब्रह्माण्ड भेल जतए आगू पाछूक विहाय वाम दहिन सेहो अछि मुदा ऊपर आ नीछाँ एतए नहि अछि। बुझू जे अहाँक सोझाँ राखल सितलपाटीक सदृश ई होएत, जाहिमे चौड़ाइ विद्यमान नहि अछि।''

''मुदा श्रीमान् ई चलैत अछि कोना। गप कोना करत, एक दोसरकँ संदेश कोना देत''।

''आऊ। पहिने एक विमीय ब्रह्माण्डक अवलोकन करैत छी''।

धौम्य एक विमीय प्रयोगशालाक लग जाइत छथि। ओतए बिन्दु आ बिन्दुक सम्मिलन स्वरूप बनल रेखा सभ देखबामे अबैत अछि। ई जीव सभ अछि। एक विमीय ब्रह्माण्डक जीव जे एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ अछि जे तीन विमीय कोनो जीव ओकरा सभकँ देखि रहल छैक।

''देखू। ई सभ जीव एक दोसराकँ पार नहि कए सकैत अछि। आगू बढ़त तँ तावत धरि जा धरि कोनो बिन्दु वा रेखासँ टक्कर नहि भए जएतैक। आ पाछाँ हटत तावत धरि यावत फेर कोनो जीवसँ भेँट नहि होएतैक। एक दोसराकँ संदेश

सेहो मात्र एकहि पँक्तिमे दए सकत कारण पंक्तिक बाहर किछु नहि छैक। ओकर ब्रह्माण्ड एकहि पंक्तिमे समाप्त भए जाइत अछि।

''आब चलू द्वि बीमीय प्रयोगशालामे''।

सभ क्यो पाछाँ-पाछाँ जाइत छथि।

''एतय किछु रमण चमन अछि। पहिल प्रयोगशाला तँ दू तहसँ जाँतल छल, दुनू दिशिसँ आ ऊपरसँ सेहो। मात्र लम्बाइ अनन्त धरि जाइत छल। मुदा एतय ऊपर आ नीचाँक सतह जाँतल अछि। ई आगाँ पाछाँ आ वाम दहिन दुनू दिशि अनन्त धरि जा रहल अछि। ताहि हेतु हम दुनू प्रयोशालाकेँ पृथ्वीक ऊपर स्वतंत्र नभमे बनओने छी। एतुक्का जीवकेँ देखू। सीतलपाटी पर किछुओ बना दियौक। जेना छोट बच्चा जे आधुनिक चित्र बनबैत छथि। एतए ओ सभ प्रकार भेटि जाएत। मुदा ऊँचाइक ज्ञान एतए नहि अछि। एक दोसरकेँ एक बेरमे मात्र रेखाक रूपमे देखैत अछि ई सभ। दोसर कोणसँ दोसर रेखा आ तखन स्वरूपक ज्ञान करैत जाइत अछि। लम्बाइ आ चौड़ाइ सभ कोणसँ बदलत। मुदा वृत्ताकार जीव सेहो होइत अछि। जेना देखू ओ जीव वाम कातमे। एक दोसराकेँ संदेश ओकरा लग जा कए देल जाइत अछि। पैघ समूहमे संदेश प्रसारित होयबामे ढ़ेर समय लागि जाइत अछि''।

''श्रीमान, की ई संभव अछि, जेना हमरा सभक सोझाँ रहलो उत्तर ओ सभ हमरा लोकनिक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ अछि तहिना हमरा सभ सेहो कोनो चारि आ बेशी विमीय जीवक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ होइ''।

''हँ तकरे चर्चा आ प्रयोग करबाक हेतु हमरा सभ एतए एकत्र भेल छी। अहाँमे सँ चारि गोटे हमरा संग एहि नव कार्यक हेतु आबि सकैत छी। ई योजना कनेक कठिनाह अछि। कतेक साल धरि ई योजना चलत आ परिणाम कहिया जा कए भेटत, तकर कोनो सीमा निर्धारण नहि अछि''।

पाँच टा विद्यार्थी श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा एहि कार्यक हेतु सहर्ष तैयार भेलाह। धौम्य पाँचू गोटेकेँ अपन योजनामे सम्मिलित कए लेलन्हि।

''चारि बीमीय विश्वमे तीन बीमीय विश्वसँ किछु अन्तर अछि। तीन बीमीय विश्व भेल तीन टा लम्बाइ, चौड़ाइ आ गहराइ मुदा एहिमे समयक एकटा बीम सेहो सम्मिलित अछि। तँ चारि बीमीय विश्वमे आकि पाँच बीमीय विश्वमे समयक एकसँ बेशी बीमक सम्भावना पर सेहो विचार कएल जाएत। मुदा पहिने चारि बीमीय विश्व पर हमरा सभ शोध आगाँ बढ़ाएब। एहिमे मूलतः समयक एकटा बीम सेहो रहत आ ताहिसँ बीमक संख्या पाँच भए जायत। समयकेँ मिलाकए चारि बीमक विश्वमे हमरा सभ जीबि रहल छी। जेना वर्ण अन्धतासँ ग्रसित लोककेँ लाल आ

हरिअरक अन्तर नहि बुझि पड़ैत छैक ताहि प्रकारसँ हमरा सभ एकटा बेशी बीमक विश्वक कल्पना कए सकैत छी, अप्रत्यक्ष अनुभव सेहो कए सकैत छी''। धौम्य बजलाह।

व्याख्यान समाप्त भेल आ सभ क्यो अपन-अपन प्रकोष्ठमे चलि गेलाह। सैद्धांतिक शोध आ तकर बाद ओकर प्रायोगिक प्रयोगमे सभ गोटे लागि गेलाह।

धरातल पर त्रिभुज खेंचि कए एक सय अस्सी अंशक कोण जोड़ि कए बनएबाक अतिरिक्त पृथ्वीकार आकृतिमे खेंचल गेल त्रिभुज जाहि मे प्रत्येक रेखा एक दोसरासँ नब्बे अंशक कोण पर रहैत अछि ।

मुदा एतए रेखा सोझ नहि टेढ़ रहैत अछि। ओहिना समय आ स्थानकेँ टेढ भेला पर एहन संभव भए सकैत अछि जे हमरा सभ प्रकाशक गतिसँ ओहि मार्गे जाइ आ पुनः घुरि आबी। प्रकाश सूर्यक लगसँ जाइत अछि तँ ओकर रस्ता कनेक बदलि जाइत छैक।

श्वेतकेतु आ रैक्व एकटा सिद्धान्त देलन्हि । जेना कठफोरबा काठमे, वृक्षमे खोह बनबैत अछि, तहिना एकटा समय आ स्थानकेँ जोड़एबला खोहक निर्माण शुरू भए गेल। अपाला एकटा ब्रह्माण्डक डोरीक निर्माण कएलन्हि, जकरा बान्हि कए प्रकाश वा ओहूसँ बेशी गतिसँ उड़बाक सम्भावना छल। सत्यकाम एकटा एहन सिद्धान्तक सम्भावना पर कार्य शुरू कएने छलाह, जकर माध्यमसँ तीन टा स्थानिक आ एकटा समयक बीमक अतिरिक्त कताक आर बीम छल जे बड़ लघु छल, टेढ छल आ एहि तरहेँ वर्त्तमान विश्व लगभग दस बीमीय छल।

घोषा स्थान समयक माध्यमसँ भूतकालमे पहुँचबासँ पूर्व देशक कानून-विधिमे ई परिवर्त्तन करबाक हेतु कहलन्हि जाहिसँ कोनो वैज्ञानिक भूतकालमे पहुँचि कए अपन वा अपन शत्रुकेँ जन्मसँ पूर्व नहि मारि दए। घोषा विश्वक निर्माणमे भगवानक योगदानक चरचा करैत रहैत छलीह। ज्योँ विश्वक निर्माण भगवान कएलन्हि, एकटा विस्फोट द्वारा आ एकरा सापेक्षता आ अनिश्चितताक सिद्धांतक अन्तर्गत छोड़ि देलन्हि बढ़बाक लेल तँ फेर समयक चाभी तँ हुनके हाथमे छन्हि। जखन ओ चाहताह फेरसँ सभटा शुरू भए जायत। ज्योँ से नहि अछि, तखन समय स्थानक कोनो सीमा, कोनो तट-किनार नहि अछि, तखन तँ ई ब्रह्माण्ड अपने सभ किछु अछि, विश्वदेव । तखन भगवानक कोन स्थान? घोषा सोचैत रहलीह।

आब धौम्यक लेल समय आबि गेल छल। अपन पाँचू विद्यार्थीक सभ सिद्धांतकेँ ओ प्रयोगमे बदलि देलन्हि। आ आब समय आबि गेल। पहरराति।

पुष्पक विमान तैयार भेल स्थान-समयक खोहसँ चलबाक लेल। ब्रह्माण्डीय डोरी बान्हि देल गेल पुष्पक पर। धौम्य सभसँ विदा लेलन्हि। प्रकाशक गतिसँ चलल विमान आ खोहमे स्थान आ समयकेँ टेढ़ करैत आगाँ बढ़ि गेल। ब्रह्माण्डक

केन्द्रमे पहुँचि गेलाह धौम्य। पहरराति बीतल छल। आगाँ कारी गह्वर सभ एहि समय आ स्थानकेँ टेढ़ कएल खोहमे चलए बला पुष्पकक सोझाँ अपन सभटा भेद राखि देलक।

भोरुका पहरक पहिने धौम्यक विमान पुनः पृथ्वी पर आबि गेल।

मुदा एतए आबि हुनका ई विश्व किछु बदलल सन लगलन्हि। श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा क्यो नहि छलाह ओतए। विमानपट्टी सेहो बदलल सन। विश्वमे समय-स्थानक पट्टी सभ भरल पड़ल छल।

“यौ। समय बताऊ कतेक भेल अछि”।

“कोन समय। सोझ बला वा स्थान-समय विस्थापन बला। सोझ बला समय अछि, सन् ३१०० मास...”।

ओ बजिते रहि गेल छल मुदा धौम्य सोचि रहल छलाह जे स्थान-समय विस्थापनक पहररातिमे हजार साल व्यतीत भए गेल। ककरा बतओताह ओ अपन ताकल रहस्य। आकि एतुक्का लोक ओ रहस्य ताकि कए निश्चिन्त तँ नहि भए गेल अछि?

# बैसाखीपर जिनगी

''**गरमी** तातिलक छुट्टीक बाद कॉलेज कहिया खुजतैक''। एकटा विद्यार्थी कॉलेजक एकटा कर्मचारीकेँ पुछने छलाह।

''हमरा कपार पर लिखल छैक आकि नोटिस बोर्ड पर जा कए देखबैक''। ओल सनक बोल बाजल ओ कर्मचारी जकर नाम गुणदेव छल।

''ओहो गुणदेबा भयङ्करे छल। एडमिशन क्लर्क छल, ताहि द्वारे चलतीमे छल''।

''नञि यौ। चपरासी छल। एडमिशन क्लर्क तँ मुँहदुब्बर रहए आ ताहि द्वारे सभ ओकरे एडमिशन क्लर्क बुझैत छलाह''।

रतीश आ फूलक बीचमे ई वार्त्तालाप चलि रहल छल। बहुत दिनका बाद दुनू गोटेकेँ एक दोसरासँ भेँट भेल छलन्हि। स्कूल आ कॉलेजमे संगे-संग दुनू गोटे पढ़ने छलाह। मुदा तकरा बाद सालक साल बीति गेल छल, आ आइ एहि कॉलेजमे अपन-अपन बेटाकेँ अभियान्त्रिकीक प्रवेश परीक्षा दिअएबाक लेल दुनू गोटे आएल छलाह आकि अनायासहि एक-दोसरासँ भेँट भए गेलन्हि। दुनू गोटेक बालक परीक्षा हॉलमे रहथि से दुनू गोटेक लग गप करबाक लेल तीन घण्टाक समय छलन्हि।

करची कलमसँ लिखना लिखैत-लिखैत रतीश आ फूल दुनू गोटेक अक्षर सुन्दर भए गेल छलन्हि। रोशनाइक गोटीकेँ गरम पानिमे दए आ तखन दवातमे दए ओहिमे करची कलम डुबा कए लिखना लिखैत छलाह दुनू गोटे। अपन-अपन गामसँ हाइ स्कूल पहुँचैत जाइ छलाह । विज्ञानक प्रायोगिक कक्षाक कॉपी ओना तँ रतीशक सेहो साफ आ स्पष्ट होइत छलन्हि मुदा फूलक अक्षर फूल सन सुन्दर होइत छलन्हि। मैट्रिकमे रतीशकेँ प्रथम श्रेणी आएल छलन्हि मुदा फूलकेँ द्वितीय श्रेणी अएलन्हि। आइ.एस.सी. केर बाद रतीश तँ इंजीनियरिङमे नाम लिखा लेलन्हि मुदा रतीश पोस्टऑफिसमे किरानीक नोकरी पकड़ि लेने छलाह। आ तकर बाद १८ साल धरि दुनू गोटेकेँ एक दोसरासँ भेँट नहि भेल छलन्हि। नोकरी लगलाक बाद फूलक विवाह भए गेलन्हि।

''विवाहक बाद की भेल। हम तँ विवाहोमे नहि जा सकल छलहुँ। पहिने ओतेक फोन-फानक सेहो प्रचलन नहि छल। ताहि द्वारे सम्पर्क सेहो नहि रहल''।

''नोकरीक बाद छोट भाए आ कनियाँकेँ लए नोकरी पर कोहिमा चल गेलहुँ। छोट भाए एकटा हाथसँ लुल्ह रहथि। दोसर हाथे प्रयाससँ लिखैत छलाह। किछु दिनुका बाद विकलांगक लेल आरक्षणक अंतर्गत हुनका सेहो किरानीमे केन्द्र सरकारक अंतर्गत नोकरी लागि गेलन्हि आ ओ पटना चलि गेलाह। हमर माएकेँ

हुनकर विवाहक बड़ सौख छलन्हि। मुदा घटको आबए तखन ने ? से कतेक दिनुका बाद जखन माए हमरा ओहिठाम आएल छलीह तँ एक गोट मैथिल परिवार हमरा ओहिठाम घुमए लेल आएल रहथि। हमर माएक वयसक एक गोट महिला छलीह जे अपन पुतोहुक संग आएल छलीह। गपे-शपमे हुनका पता चलि गेलन्हि जे एहि घरमे एकटा विकलांग सरकारी नोकरी बला विवाहयोग्य बालक छैक। से ओ हठात् अपन पुत्रीक विवाहक प्रस्ताव सोझाँ आनि रखलन्हि।

-हमर माय बजलीह, ''बहिनदाइ। अछि तँ हमर बेटा सरकारी नोकरी करैत मुदा ई पहिनहिये कहि देनाइ ठीक बुझैत छी जे बादमे अहाँ से नहि कही। शील-स्वभाव सभमे कोनो कमी नहि छैक मुदा नहि जानि किएक भगवान एक हाथसँ लुल्ह कए देलखिन्ह। गाममे लोक सभ लुल्हा-लुल्हा कहि कए सोर करैत छैक। शुरूमे तँ हमरा बरदास्त नहि होइत छल, एहि गप पर झगड़ा भए जाइत छल। मुदा बादमे हमहू ई सोचि धैर्य धए लेलहुँ जे जखन भगवाने नजरि घुमा लेलन्हि तँ ककरा की कहबैक''।

''से तँ हमरा गप-शपमे बुझबामे आबि गेल छल। आ ताहि द्वारे ई कथा करबाक साहसो भेल। अहाँ सँ की कहू। हमर बेटी पेदार अछि। पैर छोट-पैघ छैक। से सौँसे तेहल्लाकेँ बुझल छैक। इलाकामे ककरो लग कथाक लेल जाएब सेहो हियाउ नहि होइत अछि। भगवान छथिन्ह, नञि नैहरे आ नहिये सासुरमे क्यो पेदार भेल छल। भगवान भल करथिन्ह, देखबैक हमर बुचियाक बच्चा-सभ सर्वगुण सम्पन्न होएत''।

-ई गप सुनिते हमर माए तँ सन्न दए रहि गेलीह। कनेक काल धरि गुम-सुम रहलाक बाद कहलन्हि जे सोचि कए खबरि पठाएब। घरमे किछु दिन धरि एहि गप पर चरचा भेल आ आगाँ जा कए माएक विचार भेलन्हि जे विवाह भए जएबाक चाही।

-विवाहक उपरान्त कताक बेर बच्चा खराप भए जाइत छल। तीन चारि बेर एहिना भेल। हमर भाए तँ मोनकेँ बुझा लेलन्हि मुदा भाबहु विक्षिप्त जेकाँ भए गेलीह। राति-दिन घरमे उठा-पटकक अबाज पड़ोसी सभ सुनैत छल। मुदा आस्ते-आस्ते ओहो मोनकेँ बहटारि लेलन्हि। मुदा दस बरखक बाद भगवानक कृपा जे एकटा बच्चा भेलन्हि, सभ अंग दुरुस्त। मुदा एक दिन बच्चाकेँ तेल-कूड़ लगा कए बाहर हबामे देलखिन्ह भाबहु। भाए कहबो कएलन्हि जे बच्चाकेँ भीतर कए लिअ मुदा होनी जे कहैत छैक। साँझसँ बच्चाकेँ हुकहुक्की लागि गेलैक। अगिला दिन भोर धरि ओ एहि जगकेँ छोड़ि चलि गेल। हमरो पदस्थापन ताधरि पटने भए गेल छल आ सभ गोटे संगे रहैत छलहुँ।

-मुदा भगवानोक लीला। जखन सभ आस छोड़ि देने छल, तखन फेर एकटा बालक भेलन्हि छोट भाँयकेँ। एहि बेर हुनकर सासु सेहो बच्चाक टहल-टिकोर करबाक लेल आबि गेलखिन्ह। आब तँ बेश टल्हगर भए गेल अछि, हृष्ट-पुष्ट कोनो पैअ नहि छैक''। फूल बजिते रहलाह।

रतीश कहलन्हि-''अहाँ एतेक परेशानीमे रहलहुँ एतेक दिन धरि। मुदा अहाँकेँ कैकटा बच्चा अछि, की करए जाइत छथि से नहि कहलहुँ''।

''एकेटा छथि से परीक्षा हॉलमे छथि, कनेक कालमे देखिए लेबन्हि। मुदा अहाँ अपन बच्चाकेँ परीक्षा दिआबए किएक आयल छी। आइ.एस.सी. पास कएने छथि, बेश चेतनगर भए गेल होएताह''। फूल भाए कहलन्हि।

''मुदा अहूँ तँ आएल छी...''।

रतीश बजैत चुप भए गेलाह। कारण एक गोट बालक वैशाखी पर चलि फूलक लग आबि ठाढ़ भए गेल छल। परीक्षा खतम भए गेल छल आ रतीशकेँ ई बुझबामे बाङठ नहि रहलन्हि जे ई बालक फूलक छथिन्ह। कालक विचित्र गति, भाए-भाबहु विकलांग छन्हि मुदा तत्ता-सिहर देखेलाक बादो भगवान हृष्ट-पुष्ट नेना देलखिन्ह, आ फूल सन लिखनहार फूल भाइक लेल विधनाक कलम नहि चललन्हि। मुदा फूल भाए शांत, धैर्य धए बेटासँ परीक्षाक विषयमे पूछि रहल छलाह।

# सर्वशिक्षा अभियान

''हे हम डोमाकेँ पढ़ा लिखा कए किछु बनबए चाहैत छी'' । बुधन पासवान बाजल । चण्डीगढ़मे ओ रिक्शा चलबैत छथि । आब गाममे खेती बारीमे किछु नहि बचलैक ।

छोटका भाए सभ जनमिते मरि जाइत रहए।

से बुधनक एकटा छोटका भाएकेँ माए-बाप जनमलाक बाद डोमक हाथसँ बेचलन्हि आ फेर पाइ दऽ कए किनलन्हि । ई सभटा काज ओना तँ सांकेतिक रूपेँ भेल मुदा एहिसँ ग्रह कटित भऽ गेलैक। आ छोटका भाए जे बुधन पासवानसँ १२ बरिख छोट रहन्हि बचि गेलाह ।

आ ताहि द्वारे ओकरा सभ डोमा कहि सोर करए लागल ।

बुधन अपन बाप-माएक संग हरवाही करथि मुदा भाएकेँ पढ़ेबाक बड़ड लालसा रहन्हि ।

''सुनैत छिअए जे हमरा सभमे कनिओ पढ़ि-लिखि लेलासँ नोकरी भेटि जाइत छैक। एकरा जरूर पढ़ाएब, चाहे ताहि लेल पेट काटए पड़ए आकि भीख माँगय पड़ए''।

भीख तँ नहि माँगलन्हि मुदा चण्डीगढ़क रस्ता धेलन्हि बुधन।

भरि दिन रिक्सा चलाबथि आ साँझमे जखन दोसर संगी-साथी सभ देसी ठेकामे अपन ठेही दूर करबाक लेल जाथि तखन दस तरहक गप सुना कए बहन्ना बना कए बुधन अपन घर दिस घुमि जाथि।

''की रे मीता। बामा-दहिना करै छेँ, निन्द नहि होइ छौ''।

''नञि रौ भाइ। भरि दिन तँ बाइ मे रिक्सा घिचैत रहैत छी मुदा साँझ होइते अंगक पोर-पोर दुखाए लगै-ए''।

''रौ भाइ। कहैत छियौक जे ठेकापर चल तँ दस बहन्ना बना कए घुरि जाइ छिहीँ। देख हमरा आउर केँ, पीबि कए फोँफ कटैत रहैत छी। एक्के निन्नमे भोर आ सभ ठेही खतम''।

कोरइलाक सभ गप सुनि कऽ गुमकी लाधि दैत छथि बुधन। मोनमे ईहो होइत छन्हि जे किंसाइत डोमा पढ़ए आकि नहि पढ़ए।

तखन जे आइ सभ गप पेटसँ निकालि देतथि तँ यैह सभ संगी-साथी सभ काल्हि भेने अही गपकेँ लऽ कऽ हँसी करतन्हि। दू चारि-टा पाइ जे बचत तकरा गामपर पठाएब। आ ताहिसँ डोमा पढ़त।

मुदा गाममे जे स्कूल रहए ओतय किओ टा दलित आकि गरीबक बच्चा नहि पढ़ैत रहथि।

सरकार एकटा योजना चलेलक, दलितक बच्चा सभकेँ बिना पाइ लेने किताब बाँटबाक । किताब लेबाक लेल घर-घर जा कए यादव जी मास्टर साहेब बच्चा सभकेँ स्कूल बजेलन्हि। नाम लिखलन्हि, बिना फीसक, मासूलक । सभ हफता-दस दिन अएबो कएल स्कूल। दुसधटोलीसँ, चमरटोलीसँ, धोबिया टोलीसँ सभ। डोमा सेहो। सभकेँ किताब भेटलैक आ सभ सप्ताह-दस दिनक बाद निपत्ता भऽ जाइ गेल । देखा देखी कमरटोली आ हजामटोलीक बच्चा सभ सेहो अएलाह पढ़ए, किताब मँगनीमे भेटबाक लोभे । मुदा ओतए ई कहल गेल जे अहाँ सभ पैघ जातिक छी, मुफ्त किताब योजना अहाँ सन धनिकक लेल नहि छैक ।

''बाबू ई काटए बला गप छैक की, छोट-छोटे होइत छैक आ पैघ-पैघे । स्टेटक आइ धरिक सभसँ नीक चीफ-मिनिस्टर कर्पूरी ठाकुर भेल छैक, की नञि छै हौ असीन झा'' । जयराम ठाकुर अपन खोपड़ीक टूटल चारसँ हुलकैत सूर्यक प्रकाशक आसनीपर असीन जीक केश कटैत बजलाह।

''से तँ बाबू ठीके''। असीन बजलाह ।

से गाममे फेर ब्राह्मण आ भूमिहारके छोड़ि आर क्यो स्कूलमे पढ़एवला नहि बचल । अदहरमे सभटा किताब ई लोकनि किनैत गेलाह ।

''हे अदहरसँ बेसीमे नहि देब, मानलहुँ किताब नव अछि, मुदा अहाँ सभकेँ तँ मँगनीयेमे ने भेटल अछि''।

आ दुसध टोली, चमरटोली आ धोबिया टोलीसँ सभटा किताब सहटि कऽ निकलि गेल ।

आ पता नहि डोमा पढ़लक आकि नहि।

# जातिवादी मराठी

“ऐँ यौ ई की देखैत छी, ऑफिसमे अफसर सेहो मिथिलाक आ बिहारक
आ रिक्शाबला, खेनाइ बनबए बला सेहो सभ मिथिलाक आ बिहारक । से कोन गप भेल”।

पुणे मे सिंहजी केँ एक गोट मराठी सज्जन पुछलखिन्ह।

बात सेहो ठीक रहए मुदा बाहरी लोककेँ बुझबामे नहि आबए ।

सिंह साहेब भारतीय पुलिस सेवा मे रहथि आ हुनकर सहोदर भिखना-पहाड़ीमे प्रिंटिंग प्रेसमे क-ट सभ जोड़ैत छलाह, से हुनका कनेको अनसोहाँत नहि लागलन्हि। मैथिली साहित्यमे देखैत आएल छथि मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनीकेँ चमकैत।

रिक्शाबला तँ दरभंगाक होए आकि कटिहारक,

खेनाइ बनबएबला झौआ रहबे टा ने करैत अछि।

ई मराठी सभकेँ पता नहि किएक अनसोहाँत लगैत छैक।

बड्ड जातिवादी सभ अछि ई मराठी सभ।

# थेथर मनुक्ख

दू दिनसँ परबा असगरे बैसल रहए । ओकर कनियाँ उढ़रि कए कतहु चलि गैलैक । बच्चा सभ कतेको बेर ओकर खोपड़ीमे पानि आ दाना दऽ आएल रहए। मुदा आइ भोरे ओ खोपड़ी उजारि कतहु चलि गेल''।

''किए यै नानी । ओहो किएक नहि दोसर बियाह कऽ लेलक । बेशी प्रेम करैत रहए कनियाँसँ''।

''अहाँ नेना छी । ई कोनो थेथर मनुक्ख थोड़े छी जे कनियाँ मरए, माय-बाप मरए, बेटा-पुतोहु मरए, सर-समाज मरए, चारि दिन मुँह लटकाएत आ पाँचम दिनसँ फेर थेथर मऽ जाएत ''।

# बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

“मरि गेलि बेचारी “। गौआँ सभ फलना बाबूक तेसर कनिआँक मुइलापर कहलन्हि ।

“फलना बाबू तेसर कनियाँक गरदनि काटि लेलन्हि”। एक गोटे कहलान्हि।

“से ठीके कहैत छी । पहिल कनियाँमे बच्चा नहि भेलैक तँ दोसर बियाह कएलक । मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नहि भेलैक तँ बुझबाक चाही छलए ने”।-दोसर गोटे कहलन्हि ।

“हँ आ उनटे तेसर कनियाँकेँ कहैत रहथि जे भातिज सभकेँ नहि मानैत छिऐक तँ भगवान बच्चा नहि देलन्हि । बुझू”?-तेसर गोटे कहलन्हि ।

“हिजड़ा सार”।- चारिम गोटे सभा समाप्त करैत बाजल ।

मुदा चारि गोटेक ई महा-सम्मेलन एहि गपपर सहमति मे छल जे पहिल दू टा बियाह करब उचित रहए।

# स्त्री-बेटी

''बाबूक संगे खाएब''।-बुचिया बाजलि ।

''हे आब तूँ छोट नहि छैं, एम्हर बैस''। माए कहलन्हि ।

फेर भाए सभ खेनाइ खेलक आ आब बुचिया आ बुचिया माएक बेर आएल ।

तरकारी सठि जेकाँ गेल रहए, दूध तँ बाबू आ भाएकेँ मात्र भेटलैक ।

माए बुचियाकेँ सठल जेकाँ तरकारी लोहियामे सँ छोलनीसँ जेना तेना निकालि कए देलन्हि आ अपने भात आ नून तेल लए बैसलीह। दूधक बर्तनसँ दाढ़ी खखोड़ि कए बादमे बुचिया खेलक।

- ई खिस्सा सुनबैत मनोहर बजलाह जे हमरा सभ आब ई कऽ सकैत छी की ?

पहिने खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ पढ़नाइ-लिखनाइ धरि बेटीक संग अन्याय होइत रहए। अपाला-गार्गी-मैत्रेयीक समय तँ आब जा कऽ फेरसँ आएल अछि ।

# बिआह आ गोरलगाइ

**जमाय** पएर छूबि कए प्रणाम कएलन्हि तँ ससुर सए टका निकालि एक टाकाक नोटक सिक्काक लेल कनियाँकेँ सोर केलन्हि।

खूब खर्च-बर्च कएने छलाह बेटीक बियाहमे पाइ अलग गनने छलाह आ नगरक चारि कठ्ठा जमीन सेहो बेटीक नामे लिखि देने छलाह।

"नञि बाबूजी। ई गोर-लगाइक कोन जरूरी छैक"?

तावत कनियाँ आबि गेल रहथिन्ह, एक टकाक सिक्का लऽ कए।

एक सए एक टाका जमायक हाथमे रखैत ससुर महराज बजलाह-

"राखू-राखू । ई तँ पहिनहियो ने सोचितियैक"।

# प्रतिभा

मसूरीमे आइ.ए.एस. आ आइ. पी. एस. प्रोबेशनर सभक दारु पार्टी चलि रहल छल ।

"हम सभ एतेक तेज छी एक सय प्रश्नक सेट बना कऽ तैयारी कएलहुँ तखन जा कए सफल भेलहुँ । के अछि हमरासँ बेशी तेज?"।

"रौ दिनेसबा । सतमामे तूँ पास नहि भेलँह, अठमामे सेहो एक बेरे पास नहि भेलँह । दसमामे द्वितीय श्रेणी भेलापर तोरा स्कूलसँ निकालि देलकऊ। प्रश्नक पैटर्नक हम आ तूँ प्रैक्टिस केलहुँ आ सफल भेलहुँ तँ एहिमे तेजी केर कोन बात आएल"।

# जाति-पाति

**हैदराबाद** पुलिस एकेडमीमे दारूक पार्टी चलि रहल छल ।

“क्यो किछु नहि बाजत, बस हमही टा बाजब”।

छाती पिटैत- “राजपूतक छाती छी ई, क्यो किछु नहि बाज “।

“:भाइ यैह तँ अंतर छैक, दुनू गोटे आइ.पी.एस. छी, दुनू गोटे पीने छी। मुदा की हम ई कहि सकैत छी छाती पीटि कए- जे हम डोम छी, क्यो किछु नहि बाज”!:

# अनुकम्पाक नोकरी

‘‘**बड़ड** दर्द भऽ रहल अछि बाबू, आब बर्दास्त नहि भऽ रहल अछि’’ ।

पता नहि कोन घाव रहैक । पुकार कुहरि रहल छथि । पिता स्वतंत्रता सेनानी रहथि, जखन डाक्टर आ कम्पाउन्डर मना कऽ देलक घाव छुबएसँ तँ अपने हाथे सेवा कऽ रहल छथि । उजरा पाउडरकेँ नारिकेरक तेलमे मिला कऽ घावक खपलौइया हटा कऽ ओहिमे लगाबथि। पीजकेँ पोछथि। बाप आ छोट भाए दुनू सेवामे लागल रहथि ।

परूकाँ प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेल छलखिन्ह पैघ बेटा, सत्यनारायण भगवानक पूजा भेल रहए।

बूढ़ बापक पैघ आश रहथि बड़का बेटा।

छोटका बेटा कोनो तेहन तेजगर नहि रहथिन।

मुदा रोग एहन रहए जे एक दिन बड़का बेटाक प्राण लए लेलक।

अंग्रेजसँ लड़ैत खुशी-खुशी जेल गेल रहथि मुदा तखन युवा रहथि। बुढ़ारीमे ई शोक हुनका तोड़ि देलकन्हि । गुमशुम आ अपनेमे मगन रहए लगलाह । स्वतत्रता सेनानी पेंशनसँ घर चलाबथि । हँ छोटका बेटा पैघ भाएक सटिर्फिकेट लऽ कलकता गेलाह आ ओहि सटिर्फिकेटक आधारपर हुनका एकटा प्राइवेट कम्पनीमे नीक नोकरी भेटि गेलन्हि। माने मात्र नाम बदलि गेलन्हि।

लोककेँ बाप मरलापर नोकरी भेटैत छैक, हुनका भाएक मरलापर भेटलन्हि ।

# नूतन मीडिआ

**नगरमे** डकैतीक घटना भेल ।

नूतन मीडिया अपन-अपन चैनलमे -सर्वप्रथम ओकरे चैनलपर एकर सूचना देल जा रहल अछि- ई ब्यौरा दैत, दू-दिनमे एकोटा गिरफतारी नहि होएबाक आ ताहि द्वारे पुलिसक अक्षमताक चर्च करैत गेल।

पुलिस हेडक्वार्टरमे बैठकी भेल । सभ टी.वी. चैनल कहि रहल छल जे चारि गोटे मिलि कए डकैती केलन्हि मुदा एखन धरि एको गोटेक गिरफतारी नहि भेल अछि। एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट बजाओल गेलाह। जेना सभ बेर होइत रहए एहि बेर सेहो ओ एक गोटेँ पकड़ि कए अनलन्हि। चारि डाँग पड़बाक देरी छल आकि ओ अपन डकैत होएबाक गप स्वीकार कए लेलक। फेर एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक संग ऑफिसर लोकनि कैमराक सोझाँ फोटो खिचबेलन्हि। ओ डकैत अपन डकैत होएबाक गप सेहो स्वीकार कएलक।

चारि दिन आर बीतल। सभ दिन तरह-तरह सँ ओहि कथित डकैतकेँ पीटल जाइत रहल,

-“बता अपन तीन संगीक नाम जकरा संगे डकैती कएने छलह”।

-“सरकार चारिए डाँगमे अपन डकैत होएबाक गप स्वीकार कए लेलहुँ, हम डकैत रहितहुँ तँ ई करितहुँ ? मुदा आर तीनटा संगीक नाम कतए सँ आनू आ ककरा फुसियाहींकेँ फँसाबी”।

सप्ताह भरिक बाद मीडिया एकटा बम विस्फोटक अन्वेषणमे बाँझि गेल । मुख्य डकैत तँ पकड़ाइये ने गेल से आब डकैतीक कॉवरेज दर्शक नहि ने देखए चाहैत छथि!

पब्लिक डिमान्ड नहि छैक से ओहि डकैतकेँ बेल भेटलैक आकि नहि से कोनो समाचार नहि आएल।

# मिथिलाक उद्योग

**गाममे** चौधरीजीक बड़ड रूतबा, डरे सभ सर्द रहैत छल । ककर दीन अछि जे हुनकर गम्हरायल धान काटि लेत आकि ... ।

ओ एकटा बस खोललन्हि-

“दरभंगासँ गाम धरि चलत । सेकेंड हैंडमे भेटल अछि । पुरनका मालिकक लाइसेंस काज देत। संगमे बसक पुरनका मालिक तीन मासक लेल अपन ड्राइवर आ खलासी सेहो देलक अछि, तकर बाद अपन ताकि लेब”।

चौधरीजी मन्दिरपर बसक पूजा करैत काल गौआँ सभ़सँ बजलाह ।

“सुनैत छिऐक बस-स्टैण्डमे बड़ बदमस्ती करैत जाइत छैक”- एक गोटे गौआँ बजलाह

“धुर, चौधरीजीक बस आ आदमीकेँ के छुबाक साहस करत”? दोसर गोटे प्रसाद लैत बजलाह।

बसक रूट आकि रस्ता यात्रीगणक लेल सुभितगर रहैक से ओहि गाड़ीमे पैसेन्जर भरि जाइत रहए। दोसर बसबला सभ दबंग सभ।

शाहीजी आ मिश्राजीक स्टाफ सभ बड़ सङ्गत! से चौधरीजीक स्टाफकेँ गरगोटिया दऽ बस स्टैण्ड सँ बाहर निकालि देलकन्हि।

पोखरिक महारपरसँ चौधरीजीक बस खुजए लागल तँ ओतहु यात्री पहुँचए लगलाह।

आब तँ बस-स्टैण्डक दादा सभकेँ बड़ड तामस उठलन्हि ।

दुनु ड्राइवर आ खलासीकेँ पुष्ट पीटल गेल आ ईहो कहल गेल जे फेर एहि रूटपर चलताह तँ बसक एक्सीडेन्ट करबा देल जएतन्हि। शाही आ मिश्रा जीक तँ पचासो टा गाड़ी छन्हि एकटा थानामे एक्सीडेन्टक बाद पड़ले रहत तँ की ?

गामक रोआब <u>दाब</u> बला कौधरीजी बस-स्टेण्डक दादा सभक सोझाँ जेना बकड़ी बनि गेलाह।

गाममे मन्दिरपर गाड़ी ठाढ़ छन्हि, ओहि पर कदीमाक लत्ती चढ़ि गेल अछि पैघ-पैघ कदीमासँ बस झपा गेल अछि। खूब फड़ल छैक।

गौआँसभ हँसीमे कहि रहल छथि-

''चौधरीजीक बसक पाइ तँ एहि बेर कदीमा बेचिये कऽ उप्पर भऽ जएतन्हि''।

''दरभंगाक इन्डस्ट्रीयल स्टेटमे सेहो फैक्ट्री सभ एहिना बन्द अछि आ ओकर देबाल सभपर एहिना तर-तीमनक लत्ती सभ भरल छैक''- दोसर गौआँ बाजल।

# मिथिलाक उद्योग-२

मिथिलाक बोनमे रहनिहार जीव-जन्तु सभ आपसमे विचार कएलक-

''अपन क्षेत्रक दादा सभ उद्योगक विनाश कएने अछि, ओतुक्का भीरू लोक सभ उद्योग लगेबासँ परहेज करैत अछि''- गीदड़ बाजल।

''तखन अपनहि सभ किएक नहि फैक्टरी खोलैत छी, कोन दादाक मजाल जे हमरा सभ लग आओत''।-बाघ कड़कल।

प्रस्ताव पास भेल जे आब जंगलमे फैक्ट्री खुजत आ नगर जा कए उद्योग विभागसँ एकर पंजीकरण करबाओल जाएत। ओतए भीरू मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ सभक राज अछि, ओ सभ बड्ड ओस्ताज होइत अछि।

गीदड़, बानर, लोमड़ि, नीलगाय सभक संग गदहा सेहो पंजीकरण लेल अपन सेवा देबाक लेल अगू बढ़लाह। सभसँ पहिने लोमड़िकँ मौका भेटल कारण ओ सेहो जंगलक ओस्ताज अछि।

किछु दुनुका बाद दौग-बरहा केलाक बाद ओ हारि मानि लेलक।

''यौ बाघ महाराज। बड्ड कोन-कोन तरहक दस्तावेज मँगैत अछि नहि भऽ सकत हमरा बुते''।

फेर एक एक कए सभ जाइत गेलाह आ घुरि कए अबैत गेलाह ।

गदहा कहैत रहल जे एक मौका हमरो देल जाए ।

मुदा सभ सोचथि जे बुझू, एहेन पेंचीला सभ विफल भऽ आबि गेलाह मुदा फैक्टरीक पंजीकरण नहि करबाए सकलाह आ ई गदहा जे मूर्खताक लेल आ बोझ बहबाक लेल प्रसिद्ध अछि, की कऽ सकत ?

''ठीक छैक''- अन्तमे हारि कए बाघ कहलन्हि-

''जाउ अहूँ देखि आउ एक बेर''।

मुदा ई की ? साँझ होइत देरी गदहा महाराज जे छलाह से फैक्ट्रीक पंजीकरण प्रमाणपत्र लऽ सोझाँ हाजिर भऽ गेलाह।

बाघ पुछलन्हि- ''औ जी गदहा महाराज ! एतेक कलामी जन्तु सभ जतए विफल भऽ गेलथि ओतए अहाँक सफलताक मंत्र की''?

गदहा महाराज उत्तर देलन्हि-

‘‘महाराज एकर मंत्र अछि जातिवाद आ भाइ-भतीजावाद। उद्योग विभागमे हमर सभ सरे-सम्बन्धी लोकनि छथि ने’’!

# बाढ़ि, भूख आ प्रवास

एहि बेरक बाढ़ि पछिला जेकाँ सन नहि । सभटा सुड्डाह कऽ देलक आगियोसँ जल्दी। खेत पथारमे रेत आ बालुमे खाली अल्हुआक खेती। दुनू साँझ पप्पू भाइ अल्हुआ खाइत अकच्छ भऽ गेल छथि। वैदिक थिकाह, मुदा एहि कोसिकन्हामे ...

मुदा देखू भाग्य!

हरिद्वार सँ भातिजक चिठ्टी अबैत अछि- ''आबि जाऊ काका, एतए वैदिक लोकनिक बड्ड पूछि अछि। भरि दिन हस्त-सन्चालन आ उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित स्वरक मेलसँ वेदक पाठ करू आ साँझमे नीक निकुइत मिष्टान्न, खीर-पूरी खाऊ''।

वैदिक जी ट्रेन धेलन्हि आ पहुँचि गेलाह हरिद्वार । ओतए पहुँचि स्नान-ध्यान कऽ भरि दिन कंठ फाड़ि आ हाथ घुमाए वैदिक मंत्रक पाठ केलन्हि । साँझमे मनसूबा बान्हि खेनाइपर बैसलाह जे आब बड्ड दिनुका बाद खीर-पूड़ी खएबाक अवसर भेटत।

मुदा एम्हर हिनका हरिद्वार पहुँचबासँ पहिनहि दोसर पंडित लोकनिमे विचार-विमर्श भेल कारण ओ लोकनि खीर- पूड़ी खाइत-खाइत अकच्छ भऽ गेल छलाह। से सर्वसम्मतिसँ विचार कएल गेल जे आइसँ किछु दिनक लेल खेनाइक मेन्यू बदलल जाए। विचार भेल जे आइसँ वेदपाठक बाद अल्हुआ आ दूध किछु दिन धरि देल जाए।

वैदिक जी खाइ लेल मनसूबा बन्हने बैसल छलाह जे आइ जे खेनाइ आएत तँ ओहि खेनाइकेँ हिस्सक छोड़ा देबैक।

मुदा तखने वज्रपात भेल, सोझाँ अल्हुआ महाराज विद्यमान ।

वैदिक जी हाथ जोड़ैत अल्हुआ महाराजसँ बजलाह-

''सरकार हम तँ ट्रेनसँ आएल छी मुदा अहाँ कोन सवारीसँ अएलहुँ जे हमरासँ पहिनहिसँ विराजमान छी ।''

# नव-सामन्त

**संगीक** छोट भाए गाममे रहथि। गाममे मारि-पीट करैत छलाह से हुनका दिल्ली बजाओल गेल । एतहु गप-गप पर झगड़ा करए लागथि।

हमरा सोझेंमे एक गोटेकेँ धमकी दऽ रहल छलाह-

''दस मिनटमे पहुँचि जाह नहि तँ गोली मारि देबह। बीस किलोमीटर दूरमे छह आकि चालीस किलोमीटर दूर हमरा ओहिसँ कोनो मतलब नहि अछि''।

हम हुनका विषयमे सुनिते रही मुदा आइ देखलहुँ ।

हमर संगी बुझबए लगलखिन्ह- ''ठीक छैक, हम नहि कहैत छी जे नहि मारियौक। मुदा एकटा गप कहू जे दिल्लीमे बीस किलोमीटर दूरसँ आबएमे तीन मिनट प्रति किलोमीटरक हिसाबसँ साठि मिनट लगतैक से ओ दस मिनटमे कोना आओत''?

विद्यार्थी भीतर चलि गेलाह। हम संगीकेँ पुछलियन्हि-

''विद्यार्थी तँ कतहु गुड़गाँवमे नोकरी ने करैत रहथि'' ?

''हँ एक ठाम दस हजारक नोकरी धरेने रहियन्हि मुदा छोड़ि देलन्हि। कहलन्हि जे हमर लेबलक पुरान सामन्त जोकर ई नोकरी नहि। आब हिनकर लेबल कहैत छी- कताक प्रयास कएलहुँ जे मैट्रिक पास भए जाथि मुदा मध्यमोसँ पास नहि कए सकलाह''।

# रकटल छलहुँ कोहबर लय

“**हम** यादवजीक पत्नी बाजि रहल छी, ओ छथि की?” —फोनपर एकटा गम्भीर स्वर आएल।

यादव जी एखने अपन प्रेमिकाक संग बाहर निकलल रहथि ।

अरिन्दम बाजल- “कोनो काजसँ बाहर गेल छथि, एखने दू मिनट पहिने। हुनकर मोबाइलपर फोन कऽ लिअ”।

“मोबाइल नॉन-रीचेबल छन्हि, कोनो ऑफिसक काजसँ गेल छथि की?”

अरिन्दमकेँ आब किछु नहि फुरएलैक-

“नहि, से तँ लागैए जे कोनो व्यक्तिगते काज छन्हि, कारण ऑफिसक काज रहितए तँ हमरा बुझल रहितए”।

ओम्हरसँ फोन राखि देल गेल। अरिन्दमकेँ मोन पड़लैक जे यादवजी जाइसँ पहिने मोबाइल बिना ऑफ कएने बैटरी निकालि आ लगा कऽ मोबाइल बन्द कएने छलाह। स्वाइत नॉन-रीचेबल आबि रहल अछि।

अरिन्दम लैपटापपर एक्सेल डॉक्युमेन्टमे ओझराएल हिसाब-किताब ठीक-ठाक करए लगलाह।

किछु दिन पहिने एहिना एकटा स्वर फोनपर आएल रहैक- “यादवजी छथि की?”

“अहाँ के”?

“हम हुनकर पत्नी”। अरिन्दम फोन यादवजीकेँ देने रहए आ यादवजी खूब आह्लादसँ पत्नीसँ गप कएने छलाह। ओहि दिन बॉसक पत्नीक अबाज ओतेक गम्भीर नहि लागल रहैक अरिन्दमकेँ। चुलबुलिया सन अबाज रहैक। होइत छैक। लोकक मोन क्षणे-क्षणे तँ बदलैत रहैत छैक।

अरिन्दम अपन घरक शान्त-प्रशान्त जीवन मे रहैत अछि।

कारसँ नित्य अबैत काल रेडलाइटपर हिजड़ा-सभ सभ दिने भेँट होइत छैक। पुरनका कारमे ए.सी. नहि रहैक, से शीसा खसेने रहैत छल। ढेर गप-शप बजैत ओ सभ हाथ-मुँह चमका कऽ की-की सभ सुना दैत रहए।

मुदा आब ओ एहिसँ बचबाक लेल शीसा खसबिते नहि अछि। ओ सभ शीसाक बाहरसँ मुँह पटपटबैत किछु कालमे दोसर गाड़ी दिस बढ़ि जाइत अछि। परसू एकटा बालगोविना तमसा कऽ हाथक झुटकासँ ओकर कारमे स्क्रैच लगा देलकैक। पाँच टकाक लेबाक बदलामे ढेर नुकसान कऽ देलकैक। धुर। के

करबैत गऽ डेंटिंग-पेंटिंग, स्क्रैच भने रहत किछु दिन। दिल्लीमे जे एहन चेंछमे डेंटिग-पेंटिंग कराबए लागी तँ सभ दिने करबए पड़त।

मुदा ई नवका बॉस जे आएल छैक से अरिन्दमक मस्तिष्कमे एकटा भूकम्प आनि देने छैक। रस्तोमे की सभ ने सोचाइत रहैत छैक।

"काल्हि अहाँक पत्नीक फोन आएल रहन्हि"।

"अच्छा, कखन?"- यादवजी बजलाह।

"अहाँक गेलाक किछुए कालक बाद"।

कोनो जवाब बिनु देने यादवजी फोन मिलेलन्हि-

"ऑफिसमे किएक फोन केलहुँ......मोबाइल बेसमेन्टमे नॉन-रीचेबल रहैत छैक तँ किछु काल प्रतीक्षा कएल नहि भेल..."। खटाकसँ फोन रिसीवरपर बजड़ल।

अरिन्दम लैपटॉपसँ मुँह उठा कऽ देखलक। केहन परिवार छैक? साँझमे गामपर पहुँचल होएत तँ पत्नीसँ गपो नहि भेलैक की ? गपक फरिछाहटि ऑफिसेसँ फोन कए कऽ रहल अछि।

अरिन्दम डेस्कटॉप आ वाशिंग मशीन दुनुक हेल्पलाइनक नम्बरपर फोन मिलेलक, गामपर फुरसति कहाँ भेटैत छैक। गामपर दुनू चीज एके बेर खराप भऽ गेलैक। घरसँ ऑफिस निकलैत काल कनियाँ वाशिंग मशीनक खराब हेबाक तँ बेटा अपन कम्प्युटरपर गेम कैक दिनसँ खरापीक चलते बन्द रहबाक विषयमे कहने रहैक।

जखने दुनू ठाम कम्प्लेन कऽ कए फोन राखलक आकि फोनक घंटी बजलैक-

"कतेक कालसँ फोन इनगेज रखने छी। गप सुनू। ककरो फोन आबए तँ कहबैक जे यादवजीक स्थानान्तरण भऽ गेलन्हि"। बॉस बाहर कतहुसँ फोन कएने रहथिन्ह आ एके सुरमे सभटा बाजि गेल छलाह।

काल्हि साँझमे पत्नीकेँ छोड़ए लेल यादवजी गेल रहथि आ एम्हर हुनकर प्रेमिकाक फोन आएल रहन्हि ऑफिसमे। ओ कोनो होटलक नाम बाजल रहए आ कहने रहए जे यादवजीकेँ होटलक नाम बता देबन्हि ओ बुझि जएताह। अरिन्दम ई मैसेज यादवजीकेँ तखने दऽ देने रहथि। आब आइ यादवजी नहि जानि कोन कारणसँ एखन धरि ऑफिस नहि आएल अछि। कनियाँ तँ गेलैक नैहर आ तखन आब ककर फोन अएतैक जकरा कहबैक जे एकर स्थानान्तरण भऽ गेलैक।

फोन तँ नहि आएल मुदा ओ आयलि रहए, बॉसक प्रेमिका। आइ ओ अपन नामो बतेलक, बड़ड नीक नाम रहैक ओकर- पारुल।

“यादवजी कतए गेलथि”।

“हुनकर स्थानान्तरण भऽ गेलन्हि”। अरिन्दम बाजल।

“अच्छा”। ई कहि ओ चलि गेलि।

“अहाँकेँ फोनपर आएल प्रश्नक उत्तरमे ई कहबाक रहए, सोझाँ आएल लोककेँ नहि”। अरिन्दमक सहकर्मी रोहिणी हँसैत बाजलि।

“हम कनेक भाँसि गेल छी। आब आइसँ ऑफिसक फोन रिसीव करबाक भार अहाँपर”। अरिन्दमक एकटा भार रोहिणीपर दैत बाजल।

रोहिणी एहि गपकेँ हँसीमे लेने रहए मुदा अरिन्दम तखनेसँ सभटा फोन रिसीव केनाइ छोड़ि देलक।

एहन नहि रहए जे बॉस कार्यालय नहि अबैत छल। जखन धरि ओ कार्यालयमे रहैत छल बेशी काल अपने फोन रिसीव करैत रहए, काजमे सेहो फुर्तिगर रहए।

“एकटा गप बुझलिऐ। अजय गणेशन आइ भोरसँ मुँह लटकौने अछि”।

“किएक”। रोहिणीक प्रश्नक उत्तर दैत अरिन्दम बाजल।

“इन्टरनेटपर कोनो प्रेमिका संगे कतेक महिनासँ चैटिंग द्वारा प्रेमालाप करैत रहए। आइ पता लगलैक जे ओकरा संगे क्यो दोसर लड़का हँसी कऽ रहल छलैक। प्रेम वियोगमे अदहा बताह बनल अछि”- रोहिणी फरिछेलक।

यादव जी कोनो चीज बिसरि गेल छलाह से लिफ्टसँ तखने कक्षमे आएल रहथि, रोहिणीक गप सुनि लेने छलाह।

“हमरा तँ इन्टरनेटक ई माध्यमे आकाशीय लगैत अछि”- कहैत ओ अपन चश्मा लेलन्हि आ चलि गेलाह।

रोहिणीकेँ फोन रिसीव करबाक ड्युटी लगलन्हि तँ अरिन्दम निश्चिन्त भऽ गेलाह।

“सुनैत छी। एक बेर फोनपर जे अबाज अबैत छैक जे हम यादवजीक पत्नी छी तँ ओहिमे कचबचियाक अबाज गुँजैत छैक। दोसर बेर जे फोन अबैत अछि जे हम यादव जीक पत्नी छी तँ ओहिमे गंभीरता रहैत छैक। की रहस्य अछि, किछु ने बुझाइए”।

“लोकक मूड होइत छैक”।

“एहन कोन मूड होइत छैक जे घण्टे-घण्टामे बदलैत रहैत छैक। आ देखू एहि बॉसकेँ। जखन चुलबुलिया मूडमे फोन अबैत छैक तँ ई हँ-हँ हमर सरकार

कहि कऽ गप करैत अछि आ जखन गम्भीर स्वरमे पत्नीक फोन अबैत छैक तँ झिरकिकँ बजैत अछि जे ऑफिसक फोनपर फोन किएक केलहुँ ? बुझू''।

''ई अपना रहलापर फोन अपने उठबैक प्रयास करैत अछि''।

''कोनो डर छैक ताहि द्वारे''।

''अहाँकँ तँ ओहिना लगैत रहैए, कथीक डर रहतैक एकरा''। अरिन्दम बाजल ।

आब अरिन्दमकँ लगलैक जे रोहिणी कोनो चीजक अन्वेषणमे लागि गेल अछि।

''दू दिनसँ देवगन तंग कएने अछि दुर्घटना बीमा करेबाक लेल''- रोहिणी बजलीह।

''एजेन्सी लऽ लेलक अछि की?''- अरिन्दम उत्तरमे प्रश्न पुछलन्हि।

देवगन ओहि ऑफिसमे चपरासी छल।

''हँ, एहि नगरमे जतेक पाइ भेटैत छैक ताहिसँ की होएतैक ? से पत्नीक नामसँ एजेन्सी लेने अछि। हमरो कहैत रहए पन्द्रह सालक दुर्घटना बीमा लेबाक लेल''।

''ओ, तखन ई एल.आइ.सी. नहि जी.आइ.सी.क एजेन्सी लेने अछि''।

''कम्मे प्रीमियम छैक लऽ लियौक, हमहू लऽ रहल छी''।

देवगन खुशी खुशी दुनू गोटेकँ फॉर्म भरबाक लेल देलक आ चाह बनेबाक लेल चलि गेल। तखने यादवजी धरधराइत अएलाह।

''कोन फॉर्म सभ गोटे भरि रहल छी?''

''देवगन कनियाँक नामसँ इन्स्योरेन्सक एजेन्सी लेने अछि, वैह दुर्घटना बीमा करबा रहल अछि सभक''। रोहिणी आ अरिन्दम जेना संगे बाजि उठलाह।

तखने देवगन चाहक ट्रे लेने आएल। यादवजीकँ फॉर्मक तहकीकात करैत देखि ओकर देह सर्द भऽ गेलैक।

''दू टा फॉर्म हमरोसँ भरबा लिअ''- यादवजी देवगनकँ कहलखिन्ह।

देवगनकँ तँ कानपर विश्वासे नहि भेलैक। दौगि कऽ दू टा फॉर्म अनलक।

''एकटा हमरा नामसँ भरू आ एकटा सबीना यादवक नामसँ''।

''मेम साहबक नाम सबीना यादव छन्हि?''

''हँ''।

फॉर्म जखन भराए लागल तँ नॉमिनेशनक कॉलम मे देवगन यादवजी बला फॉर्ममे सबीना यादव आ सबीना यादव बला फॉर्ममे यादव जीक नाम भरि देलक।

“ई की केलहुँ, दुनू फॉर्म चेन्ज करू। नॉमिनेशनक की जरूरति अछि। हमरा पत्नीक पाइक कोनो खगता नहि अछि”।

देवगन दुनू फॉर्म फाड़ि दू टा नव फॉर्म भरलक। अपन फॉर्मंमे यादवजी हस्ताक्षर कएलन्हि आ दोसर फॉर्म साइन करेबाक लेल देवगनकेँ पता लिखि कऽ देबऽ लगलाह।

“हमरा अहाँक डेरा देखल अछि साहब”।

“ई दोसर पता छी, राखू”।

रोहिणीक कान ठाढ़ भऽ गेलन्हि। ओ यादवजीक बाहर गेलाक बाद देवगनक कानमे किछु कहलन्हि। अरिन्दम अपन काजमे लागल रहल।

“यादवजी छथि?” फोनपर पारुल रहथि।

“यादवजीक ट्रान्सफर भऽ गेलन्हि”।

“झूठ नहि बाजू, हुनका फोन दियन्हु”।

“हे, नहि तँ हम अहाँक नोकर छी आ नहिये अहाँक यादव जीक” -ई कहैत अरिन्दम फोन पटकि देलक। बीचमे कतेक दिनसँ रोहिणी फोन उठबैत छलीह। आइ ओ कतहु एम्हर-ओम्हर छलीह से अरिन्दमकेँ फोन उठाबए पड़ल रहैक।

रोहिणी तखने पहुँचि गेल छलीह- “अभ्यास खतम भऽ गेने तामस उठि गेल अहाँकेँ”। अरिन्दम स्वीकृतिमे मूड़ी डोलेलक।

आइ ऑफिस अबैत काल कारक एफ.एम.पर रेडियो मिर्ची पर चलि रहल अण्ट-शण्ट गप नीक लागि रहल छलैक अरिन्दमकेँ।

“हमर बड़का बेटा सुमन्त तेलुगु खूब नीक जकाँ बजैत अछि मुदा छोटका हिन्दी बाजए लागल अछि। हैदराबादसँ दादाक फोन अबैत छैक तँ हुनको हिन्दीयेमे जवाब दैत अछि। हुनका हिन्दी अबिते नहि छन्हि। घरमे पति तेलुगु बजबाक अभियान शुरु कएने छथि”- रोहिणी बाजि रहल छलीह।

“अच्छा”।

“बुझलहुँ, पारुलक फोन आएल रहए। कहैत रहए जे अरिन्दम जीक हम कोनो बकड़ी तँ नहि खोलि लेने छलियन्हि जे ओना कऽ फोनपर झझकारि उठल रहथि”।

“हूँ”।

“आ ई सेहो बाजि रहल छलि जे ओ यादवजी पर विश्वास कए धोखा खएलक”।

“ओ”।

“आ देवगन गेल रहए यादवजीक नवका घर”।

“नवका घर? पुरनका घर बेचि देलन्हि की?”

“नहि। देवगनेक कहल कहैत छी। पुरनका घरमे यादव जीक पहिल पत्नी रहैत छथिन्ह, वैह अहाँक गम्भीर स्वरवाली। आ नवका घरमे नवकी चुलबुली कनियाँ रहैत छन्हि। एकटा कोढ़चिल्को देखलक देवगन। यादवजीक बेटा रहन्हि प्रायः”।

# मृत्युदण्ड

विवाहक उपरान्त ढ़ेरी-ढ़ाकी लोक हमरासँ भेँट करबाक हेतु सासुरमे आबि रहल छलाह। ताहिमे छलि एकटा नवम् कक्षाक छात्रा आर्या आ ओकर पितामही आ माए।

ओ माएक संग नहि आबि असगरे आएल छलीह। खूब कारी, दुबर-पातर, आवश्यकतासँ बेशी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कए बजनिहारि। हमरासँ सभ गपमे उलटा।

हमर कनियाँ हुनकासँ हमर परिचय करओलन्हि आ ओकर प्रशंसा सेहो कएलन्हि। किछु कालक बाद ओकर पितामही आ माए हमरासँ भेँट करबाक हेतु अएलीह ।

हमरा अनुभव भेल जे हुनकर पितामहीक तँ लेहाज राखल गेल छल मुदा हुनकर माएक अवहेलना सन हमर कनियाँ आ सासु केने छलखिन्ह। गप्प करबामे ओ नीक छलीह आ जाइत-जाइत कहि गेलीह जे हमरा सभ अहाँक ससुरक किरायादार छी आ उपरका महला पर रहैत छी। से भीड़-भाड़ कम भेला पर अवश्य आऊ।

ई गप्प जाइत-जाइत हमर सासु प्रायः सुनि लेलन्हि से हमर पत्नीकेँ स्थिरेसँ मुदा आज्ञार्थक रूपेँ कहलन्हि जे ऊपर जएबाक कोनो जरूरी नहि छैक। हम पत्नीसँ पुछलियन्हि जे बेचारी एतेक आग्रहसँ बजओलन्हि अछि। पत्नी कहलथि जे सुनलियैक नहि, माँ मना कएलन्हि अछि। कारण पुछला पर गप अन्ठा देलन्हि।

किछु दिनुका बादक घटना छी, अन्हरोखेमे गेटक झमाड़ि कए खुजबाक अबाज भेल। लागल जे क्यो पीबि कए बड़बड़ा रहल अछि। हमर अतिरिक्त क्यो ओहि अबाज पर ध्यान नहि देलन्हि आ अन्ठयबाक स्वांग कएलन्हि। हम बाहर अएलहुँ तँ एकटा अधवयसु झुमैत अबैत दृष्टिगोचर भेलाह। हमरा देखि डोलैत हाथसँ जमायबाबू कहि नमस्कार कएलन्हि। ओ अखन धरि हमरासँ भेँट नहि होएबाक कारण हमर पत्नीकेँ फड़िछओलन्हि आ डोलैत ऊपर सीढ़ीक दिशसँ चलि गेलाह। हमर पत्नी हाथ पकड़ि कए हमरा भीतर आनि लेलन्हि आ ईहो सूचना देलन्हि जे ईएह आर्याक पिता थीक। अनायासहि हमरा माथमे आएल जे रंग जे आर्याक छैक से बापे पर गेल छैक।

बादमे हमर सासु ऊपर जा कए भाषण दए अएलीह आ एक महिनाक भीतर घर छोड़बाक अल्टीमेटम सेहो आर्याक परिवारकेँ दए देलन्हि। हमर सार कहलथि जे ई दसम अल्टीमेटम छैक मुदा हमर सासु अडिग छलीह जे किछु भए जाए एहि बेर ओ नहि मानतीह। जमाय की बुझताह जे केहन भाड़ादार रखने छी हम सभ। पहिने ठकिया-फुसिया कए बहटारि लैत छल।

पुछला पर पता चलल जे आर्याक पिता डॉक्टर छैक आ सेहो होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक किंवा भेटनरी नहि वरन् एम.बी.बी.एस.। मुदा लक्षण देखियौक। ओना सासु ईहो गप कहलन्हि जे ई पीने रहबाक उपरान्तो गप्प एकोटा अभद्र नहि बजैत अछि, जेना आन पीनहार सभक संग होइत छैक। मनुक्खो ठीके अछि मुदा यैह जे एकटा गड़बड़ी छैक से बड्ड भारी।

अगला दिन नशा उतरलाक बाद पति-पत्नी दुनू गोटे नीचाँ अएलाह आ सासुकेँ कहलन्हि जे आर्याक बोर्डक बाद ओ सभ पटना चलि जएतीह से हुनका सभक खातिर नहि मुदा आर्याक खातिर तावत धरि रहए दिअ। घोँघाउजक बाद से मोहलति भेटि जाए गेलन्हि। तकरा बाद हुनकर पत्नीक नजरि हमरासँ मिलल तँ ओ कहलन्हि जे अहाँ तँ ऊपर नहिये आएब। आ एहि बेर ऊपर अएबाक आग्रहो नहि कएलथि।

किछु दिन बीतल आ फेर सासुर जयबाक अवसर भेटल। किछु दिनमे पता चलल जे किरायादार बदलि गेल छथि। घरक लोक मात्र एतबे कहलथि जे आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ अनुकम्पाक आधार पर ओकर माएकेँ नौकरी भेटि गेलैक। आब ओ सभ क्यो पटनामे रहैत छथि।

घरक लोक आगाँ किछु नहि कहलन्हि मुदा कनियाँक एकटा पितयौत भाए आएल रहथि, से कहलथि जे डॉक्टरी रिपोर्टमे विष खा कए आत्महत्याक वर्णन रहए। फेर आगाँ पति-पत्नीक मध्य मचल तुमुलक चर्च भेल। डाक्टरक कनियाँ कहैत रहथिन्ह जे ई डॉक्टर बड्ड पिबैत छथि ताहि लेल झगड़ा होइत अछि तँ डॉक्टर साहब कहथि जे झगड़ाक द्वारे पिबैत छी। अस्तु मृत्युक बाद हुनकर कनियाँक भाव एहन सन छल जेना मुक्ति भेटि गेल होइन्हि आ एहि बातमे सभ क्यो एक मत रहथि।

एकटा सारि रहथि, हुनकर गप सेहो मोन पड़ल। एक गोट युवकक विषयमे आर्या कहैत छलि । ओकरा संगीकेँ होइत छैक जे ओ युवक ओकरासँ प्रेम करैत अछि। मुदा आर्याक मत छल जे ओ युवक ओकर संगीसँ नहि वरन् आर्यासँ प्रेम करैत छल। हम सारिकेँ कहने रहियन्हि जे आर्या बच्चा अछि, ओहिना हँसी कएने होएत। मुदा ओ कहलन्हि, जे नहि यौ। बड्ड भावुक अछि आर्या। कहैत अछि जे ओहि युवकके प्राप्त करबाक हेतु किछुओ करत। पता लागल जे ओ युवक कोनो पुरान महारानीक बेटीक बेटा छी। ओकर माता शिक्षिका अछि आ बाप मेरीनमे काज करैत अछि। साल-छह मास पर अबैत छल आ जखन अबैत छल तँ जे मास-पंद्रह दिन रहैत छल से मारि-पीटमे बिता दैत छल। पूरा मोहल्लामे बदनामी छैक। माएक शील-स्वभाव बड्ड नीक, बोलीसँ फूल-झड़ैत छैक। बापकेँ तँ लोक चिन्हितो नहि छैक। खाली झगड़ाक अबाजे सुनैत अछि लोक। एक बेर आर्याक संगीकेँ स्कूल बससँ उतरबा काल क्यो तंग कएने छल तँ ओ युवक सभकेँ मारि-पीटि कए भगा देने छल । एहि बात पर हम तखन कोनो बेशी ध्यान नहि देने रहियैक।

आ तकर किछु दिनुका बाद आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलैक आ ओ एहि शहरसँ दूर चलि गेलि। ओ माएकँ कहैत रहलि जे परीक्षा धरि रहए दिअ, मुदा माए विमुक्त भेलाक बाद एको पल पुरान कटु-स्मृतिकँ देखए नहि चाहैत छलीह।

फेर दिन बितैत रहल।

आ बादमे फोन पर समाचार भेटल जे आर्या आत्म हत्या कए लेलक।

बहुत रास बात मोनमे घूमि गेल। आर्या भावुक छलि, किछु बेशी तनावमे रहिते छलि। गपकँ गंभीरतासँ लैत छलि। सारिक ओहि युवकक सम्बन्धमे कहल गप सेहो मोन पड़ल ।

हम फोन दोबारा लगेलहुँ।

हम फोन पर अटकारी मारैत पुछलहुँ जे ओहि युवकक विवाह आर्याक मृत्युसँ पहिने भऽ गेल छल से कतए भेल छल ? तँ सासुरक लोक अचंभित भऽ पुछलन्हि, जे के ओ? अच्छा ओ!

-ओकर विवाह तँ भेल मुदा अहाँ कोना बुझलहुँ।

पता लागल जे सिलीगुड़ी-दिशक कोनो कन्यागत रहथि ।

आ ओ युवक अपन बाप जेकाँ घर-जमाए बनि रहबाक नियार कएने अछि। एहि शहरक लोककँ तँ विवाहक हकारो नहि भेटल।

आ ओकर आत्महत्याक दोष ककरा पर अछि। ओ जे दारू पिबैत रहए से बाप। आकि ओ माए जे बापक संग तंग आबि गेल रहए। आकि ओ प्रेमी ?

हमरा जनैत एकर सभक कारण अछि आर्याक परिवारक सम्बन्धी आ परिवारिक दोस-महीम सभ जे एक तरहेँ आर्या सभकँ बारि देने रहए। ओ समाज जे ओकर परिवारक घटनाक चटखारा लऽ कए चर्च करैत छल ।

ओ घटना सभ जे ओकर पिताक मृत्युक रहए ।

ओकर पिता द्वारा गेट पिटबाक घटनाक चरचा आकि आर कोनो गप।बालिका भावुक रहए कोना सहि सकैत छलीह। आत्महत्याक नाम दए ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज।

हम आर्याकँ एकटा दृढ़ बालिका बुझैत रही। मुदा ओकर 'किछुओ करय पड़त से करब' केर अर्थ आब जा कए बुझलहुँ। ओहि युवकक बिआह भऽ गेल होएतैक से हमर अन्दाज मात्र रहए आ से आर्याक आत्महत्याक घटनाक जानकारी भेलाक बाद ।

# बाणवीर

साढ़े तीनसँ चारि फीटक बीच लेटराक लम्बाइ छल। सभ कहैत छैक जे ओकर माए-बाप दोसराक बच्चाकेँ देखि कए भुट्टा-भुट्टा कहैत रहैत छलथि।से पता नहि की भेलैक लेटरा तकरा बादसँ बढ़िते ने अछि, ओकर लम्बाइ एकदम्मेसँ बढ़ब रुकि गेलैक।

''धुर! माए-बापक कतहु नजरि लगैत छैक बच्चाकेँ''।

''नञि यौ, माएक तँ लगिते छैक, देखियौ ने लेटराकेँ''।

गौआँ सभ आपसमे गप करथि। जे से, सभ बच्चा पैघ भेल। बढ़ए लागल । मुदा लेटरा घुटमुटाएले रहल। सभ क्यो ओकरा परोक्षमे लेटरा आ मुँहपर लेटरबम कहए लगलाह।

लेटरबमक माए-बापकेँ जमीन-जाल ततेक नहि। से महीसेपर निर्भर छलन्हि हुनकर सभक जीवन। लेटरा महीसक सेवामे भोरेसँ लागल रहैत छल। भोरमे भोरहा कातमे रगड़ि-रगड़ि कऽ चिक्कन बना दैत छल महीसकेँ। पुआरक नूरीसँ साफ करैत काल गोट-गोट अठौरी निकालि दैत छल। बेरू पहर बौआ-चौड़ीमे महीस चरबैत काल निसभेर भऽ सूति रहैत छल महीसक पीठपर।

लोक सभ हँसीमे कहितो रहए जे लेटरबम बौआ-चौड़ी हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास कएने अछि। महीसो लक्ष्मी रहए ओकर। आन माल-जाल सिंह लड़ाबए तँ लेटरबमक महीस घास चरबामे लागल रहए। से साँझमे घर-घुरैत काल जखन आन सभ गोटेक महीसक पेट पाँजरमे धसल रहैत छल, लेटराक महीसक दुनू पेट दुनू दिसन फूलि कए लटकि जाइत छल। बिना परिश्रम पन्हाइत छलैक महीस।

लेटरा अपन माए-बापकेँ तैयो प्रसन्न कए सकल की? ओ दुनू गोटे लेटराक गुजर कोना चलतैक, ओकरासँ बियाह के करतैक- एहि बात सभकेँ लऽ सोचिते रहैत छलाह।

गाममे बैतरणी नाटक आएल रहैक। कठपुतली सभ, मनुक्खक मरलाक बाद बैतरणी धार पार करबाक दृश्य, जे भयावहे-भयावह छल, खूब नीज जेकाँ प्रदर्शित करैत छलाह।

लेटरबम सेहो माए-बापक संग नाटक देखि अएलाह। आ एतहिसँ लेटराक जीवन एकटा दिशा लए लेलक। लेटराक बाबूक पाछाँ बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक लागि गेल। धरोहि दऽ देलक, साँझ-भोर ओकर घरपर पहुँचए लागल।

लेटरा अपन महिसबारीमे मगन रहैत छल। मुदा ओ अनुभव करए लागल जे आइ-काल्हि माए-बाप ओकरापर किछु बेशीए ममता राखए लागल छथि। सभ कहैत रहओ जे लेटराक जीवन कोना के चलतए, से की ओकर माए-बाबूपर आब कोनो असरि थोड़बेक पड़तए।

मुदा बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक लेटराक बापक पाछाँ पड़ि गेल। कहए लागल जे ओ तँ लेटराकेँ नीक नोकरी दियबा रहल अछि। लेटरबमक बाबू सभसँ पुछथि जे की करी? सभ यैह कहैत रहन्हि जे ओ लेटराकेँ कीनि रहल अछि, नोकरी नहि दऽ रहल अछि। ई नाटक कम्पनी सभ बणवीर सभकेँ गामे-गाम तकने फिरैत अछि आ शहरी सर्कस कम्पनी सभकेँ बेचि दैत अछि। फेर एक बेर जे बेटा जाएत तँ की घुरिकऽ आएत? बेटा धन छी, बाणवीरे सही!

अकश-तिकश करैत एक दिन माए-बाप लेटरसँ पुछलन्हि- ''भगवानक इच्छा सर्वोपरि। भगवान पेट दइ छथिन्ह तँ ओकरा पोसबाक जोगार सेहो करैत छथिन्ह। लोक सभ कहैत रहल जे लेटराक गुजर कोना चलतए तँ ककरो गपक हम मोजर नहि दैत छलियैक। मुदा ई बैतरणी नाटक कम्पनी बला तँ पाछूए पड़ि गेल अछि। लोकसभ कहए-ए जे ई सभ शहरी सर्कस कम्पनीक लेल बाणवीर सभक ताकिमे गामे-गाम फिरैत अछि आ ओहि कम्पनी सभमे ओकरा सभकेँ बेचि दैत अछि। मुदा ई कहए-ए जे से नहि छैक। सभ दिनुका दिनचर्जा छैक। शहरे-शहरे घुमैत अछि ई सभ। जखन कतहु सर्कस नहि लगैत छैक तँ छुट्टिओ भेटिते छैक। आर के नोकरी देत एतेक कम लम्बाइ बलाकेँ? से हम अहींसँ पुछैत छी जे की कएल जाए''।

लेटराक तँ आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैक। गौआँ सभ ठीके कहैत रहए। माए-बाप तँ लागैए निर्णय कऽ लेने छथि।

''माए-बाबू। हमरा बुझल अछि जे हमर बियाह-दान नहि होएत। मुदा अपन पेट तँ कोहुना हम गाममे भरिये लैत छी। गुजर तँ कइए लैत छी। लोक सभ कहैत रहए जे तोहर माए-बाप तोरा बेचि देलकउ, से ठीके अछि की''?

आब तँ कन्नारोहट उठि गेल। माए-बापक संग लेटराक कानबसँ अँगनामे अनघोल मचि गेल।

जेना सुति कऽ उठलाक बाद ढेर-रास गप महत्त्वपूर्ण कोटिसँ उतरि कऽ अमहत्वपूर्ण वा ततेक महत्वपूर्ण नहि रहि जाइत अछि, तहिना दिन बितैत लेटरा सेहो अपन मोन मना लेलक। कनी देखियैक बाहरक दुनियाँ केहन होइत छैक। माए-बाप तँ बेचिए लेने छथि, ओतेक सिनेह रहितन्हि तँ बेचबे करितथि? तँ हमहीं किएक अधभगिया सिनेह राखी?

बैतरणी कम्पनीबला लेटराकेँ एकटा सर्कस बला लग लऽ गेल।

ओतए ई लगैत रहए जे जेना सभ बाणवीरक नोकरीक ओतए जोगार होअए। दुनियाँक सभ बाणवीरक नोकरी ओकरा लग पक्का रहए। लेटरा जेना बाणवीरक देशमे पहुँचि गेल छल। मोँछबला, निमोछी, पातर-मोट, नव-बूढ़- मुदा सभ धरि बाणवीर।

लेटरा ओकरा सभक बीच रहए लागल। किछु दिन धरि तँ ओकरा लगैत रहए जे ओ कोनो विशिष्ट व्यक्ति अछि आ तँ बेशी दुखी अछि आ दोसर बाणवीर सभ तँ अही योग्य अछि। मुदा आस्ते-आस्ते जखन संगी-साथी सभसँ ओकरा गप होमए लगलैक, तखन ओकरा बुझबामे अएलैक जे सभक एक्के खेरहा छैक।

फेर ओहि जेलरूपी घरमे हँसी-खुशीसँ, छोट-छीन झगड़ा-झाँटी आ मान-मनौअलक संग ओ आगाँ बढ़ए लागल। अपन जिनगीक ई रूप ओकरा एहन सन लगैत छलैक जेना ओ नोकरिहारा होअए। ओहो घुरि जाएत गाम आ फेर आपस आएत नोकरीपर। गामक दोसर नोकरिहारा सभकेँ ओ देखैत छल। गाम अबैत काल जतबे उल्लसित रहैत छलाह, नोकरीपर घुरैत काल सभक घुघना लटकि जाइत छलन्हि।

धुर, माए-बाप हमरा बेचलक थोड़बेक अछि। हमरा सन बाणवीरकेँ एहिसँ नीक आर कोन नोकरी भेटतैक। सर्कसमे जखन हम कला देखबैत छी तँ बच्चा सभ कोना पेट पकड़ि हँसैत अछि, कतेक थोपड़ी पड़ैत अछि। थोपड़ीक अबाज तँ निसाँ आनि दैत अछि। काल्हि ओ दु जुट्टी बला बचिया, केहन लगैत रहए जेना अपने लोक रहए। गाममे बड़का कक्काक बेटीक बियाह नौगछिया भेलन्हि तँ हुनको दिआ तँ लोक सभ उरन्ती उड़ेने छल जे बेटी बेचि लेलन्हि। कतेक दुरगर बियाह करा देलन्हि!

ई लोको सभ, बुझु इनारक बेङ सभ छी। दिल्ली-मुम्बइ घुमत गऽ तखन ने बुझबामे अओतैक जे भागलपुर-नौगछिया कोनो ततेक दुरगर नहि छैक। माए-बाप हमरा बेचि लेत?....आ ई सोचिते लेटराक कंठ सुखा गेलैक आ आँखि पनिया गेलैक।

“रे भाइ, चल । तैयारी करबा लेल घण्टी बाजए बला छैक। ओहिसँ पहिने किछु खा-पीबि ली”।

# प्रवास

''**हल्दिया** भोरे-भोरे पहुँचलहुँ । नहा-धोआ कऽ ऑफिस गेलहुँ। सभ पुछलक जे कतएसँ आएल छी, से हमरा ओकरा सभक हाव-भावसँ पता लागल, कारण हमरा बंगला पूरा-पूरी नहि अबैत अछि। हम सभ गोटेकैँ कहलियैक जे हमरासँ अहाँ सभ हिन्दीमे गप करए जाऊ, कारण हमरा बंगला नहि अबैए। सभ गोटे हमरा दिस कनछियाकैँ तकलक।

''ऑफिसमे काज बेशी रहैत छल से सभ गोटे अपन-अपन प्राइवेट ऑफिस, कियो अपना घरेमे तँ कियो आन ठाम, बनेने रहथि। से हमहूँ दू-चारि दिन होटलमे रहबाक बाद एकटा घर ताकलहुँ आ ओकर एकटा कोठलीकेँ अपन प्राइवेट ऑफिस बनेलहुँ।

''किछु दिन धरि तँ होइत छल जे कोना कऽ एतए काज करब। भैया मैनेजिंग डाइरेक्टर छथि। हुनका फोन केलियन्हि जे खड़गपुर ट्रांसफर करबा दिअ। उनटे ओ रेजनल मैनेजरकेँ फोन कऽ देलखिन्ह जे एकरा कोनो हालतमे हल्दियासँ खड़गपुर ट्रांसफर नहि करू। ट्रेनक रूटपर खड़गपुर छैक, बेर-बेर पटना घुरि-फिरि कऽ चलि जाएत, मोन लगा कए काज नहि करत। हुनका डर छलन्हि जे हुनकर नाम धऽ कऽ हम रेजनल मैनेजरसँ ट्रांसफर ने करबा ली।

''किछु दिन धरि तँ मोने नहि लागए। ऑफिसमे सभ बिहारी बंगालीक अराड़ि ठाढ़ कऽ देलक। ने हमरासँ कियो गप करए आ नहियेे टोकए।

''तहिना दिन बीतए लागल। एक दिन तापस कऽ कए एकटा युवक आएल रहए ऑफिस। ओ एकटा विकास अधिकारी देवदत्त बोससँ भेँट करबाक लेल आएल रहए, जे एखन धरि ऑफिस नहि पहुँचल रहए। हमरा लग कियो नहि रहए, से ओ सोझाँ आबि बैसि गेल।

''हम ओकरासँ पुछलियैक जे ओ कोन काजसँ आएल अछि ? ओ कहलक जे देवदत्त बोस लेल ओ काज करैत अछि। लोक सभक बीमा ओ करबैत छल आ देवदत्तकेँ दैत छल । देवदत्त ओकरा तकर बदलामे प्रीमियमक राशिक हिसाबसँ कमीशन दैत छलखिन्ह।

''तखन हम ओकरा पुछलियैक जे अहाँकेँ ओ एजेन्सी देने छथि ? तँ पता लागल जे ओ तीन सालसँ आश्वासनपर एहिना खटि रहल अछि।

''तापस हमरा सोझ लोक बुझाएल । से ओकरा हम कहलियैक जे हमर प्राइवेट ऑफिसमे काज करए। ओकरा हम एजेन्सी दिअएबाक लेल तखने फॉर्म भरबा लेलियैक। ओकरा हम पाँच-सात आर गोटेकेँ सेहो अनबाक लेल कहिलियैक, जकरा हम एजेन्सी दए सकी। ओ कहलक जे बंगाली सभ नोकरी

करबामे बेशी रुचि रखैत अछि, से हम कहलियैक जे हमर प्राइवेट ऑफिसमे नोकरीयेपर किछु गोटेकेँ तखन राखि लिअ।

''तापसकेँ एजेन्सी भेटि गेलैक आ ओकरा जखन चेकसँ पचास-पचास हजार कमीशन भेटए लगलैक तखन ओकरा एहि गपक अनुभव भेलैक जे देवदत्त कोना ओकरासँ मजदूरी करबा रहल छलए आ शोषण कऽ रहल छलए।

''देवदत्त जहाँ-तहाँ ई गप बाजए लागल छल जे हम ओकर एजेन्टकेँ तोड़ि लेलियैक। जिनकासँ हम ई गप-शप सुनैत रही तिनका हम उत्तर दैत छलियन्हि जे देवदत्त तँ तापसकेँ एजेन्सी देनहिये नहि रहए, तखन एजेन्ट तोड़बाक गप कतएसँ आएल ?

''एक दिन देवदत्त कोनो गुप्त मीटिंग कए, जकर जानकारी हमरा बादमे भेटल, आन विकास अधिकारी सभक संगे हमर टेबुल लग आएल आ अण्ट-शण्ट बाजए लागल। ओ सभ बंगलामे प्रलाप कए रहल छल, से हम किछु नहि बुझलियैक। मुदा तखने ओ एकटा गलती कएलक जे हमर टेबुलपर मुक्का मारलक।

''हुण्ड तँ हम छीहे। नोकरी जे ई एल.आइ.सी.बला भेटल अछि, से धरि अछि सज्जनबला। से हम एतेक काल धरि बरदास्त कएने रहियन्हि। मुदा ई तँ अतत्तहे कए देने रहए। एहि नोकरीमे सभ दिन हमरा जे छद्म भेषमे ऑफिस जाए पड़ैत रहए, से ओहि दिन ई भेष हमरा उतारबाक मोन भेल। सोझे हम देवदत्तक कॉलर पकड़लहुँ आ कहलहुँ, जे ई सम्पूर्ण भारत एक अछि। एतए भारतेक नहि वरन् नेपाल आ भूटानक लोककेँ सेहो कोनो स्थानपर जा कए काज करबाक स्वतंत्रता संविधान द्वारा देल गेल अछि।

''हमर ई रूप देखि ओकर सभ सहकर्मी अपन-अपन केबिन चलि गेल आ ब्रांच मैनेजर आबि कए हमरा दुनू गोटेकेँ शान्त कएलन्हि।

''तकर बाद एकटा आर झमेला भेल। किछु दिनुका बाद तापस जाहि दू-तीन गोटेकेँ एजेन्सीक लेल अनने छल, से पहिने तँ नोकरी करबाक लेल बेशी उत्सुक छलाह। मुदा जखन हमर प्राइवेट ऑफिसमे तापसक आबाजाही आ कमीशनक चेक सभक चरचा सुनलन्हि, तखन ओ हमर ऑफिसमे काज करितथि आकि मार्केटमे बीमाक लेल भागा-भागी करितथि ? अपन प्राइवेट ऑफिसमे हम ओकरा सभकेँ तीन-तीन हजार टाका दैत रहियैक । आ तापसकेँ तीस-तीस हजार टाका मास प्रीमियमक कमीशन भेटैत रहैक। ई देखि ओहो सभ भागि-भागि काज करए लागल। से जे सभ नोकरी लेल आएल, सभ हमर एजेन्ट बनि गेल। हमरा प्रोबेशन पीरिएडमे देल टारगेट पूरा करबामे कोनो दिक नहि भेल। मीटिंगमे जखन आन विकास अधिकारी सभ कहथि जे मार्केट डाउन चलि रहल अछि, तँ अधिकारी हमर उदाहरण दैत रहथिन्ह जे ओ कोना अपन टारगेट पूर्ण कए रहल छथि ?

''मुदा हमर ई प्रगति देवदत्तकें देखल नहि गेलैक। ओ हमर एजेन्ट सभसँ एकटा गुप्त मीटिंग कएलक, जकर जानकारी हमरा बादमे भेल।

''एक दिन तापस सभटा एजेन्टकेँ लेने हमरा लग आएल आ कहलक जे ओ सभ हमरा संग आब काज नहि करत । कारण, देवदत्त एकटा मीटिंग कए बिहारीक नीचाँ काज केलापर एकरा सभकेँ समाजसँ बहिष्कृत करबाक गप कहने रहए।

''तावत हमर भेँट स्थानीय एम.एल.ए. सुमित पालसँ भऽ गेल रहए आ हम हुनकर बेटीकेँ सेहो एजेन्सी दऽ देने छलियन्हि। देवदत्तकेँ साहस नहि रहए जे एम.एल.ए. लग जइतए, से ओ तापस सभपर अपन रोब-दाब देखा रहल छल।

''हमरासँ गप करैत-करैत एजेन्ट सभ हिन्दी सीखि गेल रहथि। हम हुनका सभकेँ कहलियन्हि जे देखू । एक तँ ई गप, जे अहाँ सभक जन-प्रतिनिधिक बेटी हमरासँ एजेन्सी लेने छथि। तँ देवदत्त की हुनका बारि देत ?

''हम आ अहाँ दुनू गोटे भारतक निवासी छी। एतए हल्दियामे बारह टा विकास अधिकारी छथि, जाहिमे एगारह टा बंगाली छथि आ मात्र हम एकटा बिहारी छी। हल्दियामे जे फैक्ट्री अछि, ताहि सभमे बिहार आ आन प्रदेशक जतेक लोक छथि, तकर बीमा हम अहाँ सभकेँ देब, दऽ सकत ई बीमा देवदत्त आकि क्यो आनो ? बंगाली सभक बीमा तँ एगारह टा विकास अधिकारीमे बँटत मुदा बिहारी आ आन सभक बीमा तँ मात्र अहाँ सभकेँ भेटत। बंगाली सभक बीमा तँ सेहो अहाँ सभ अपन सामर्थ्यक अनुसारेँ कइये रहल छी।

''हमर भाषण वातावरणकेँ परिवर्तित कए देलकैक। सभ एजेन्टक भाए-बाप सभ हमरा लग आएल आ कहलक जे अहाँ तँ देवता बनि आएल छी । हमर सभक भाए-बच्चा बौआइत रहैत छल आ बदमस्ती करैत रहैत छल। अहाँक अएलासँ ई सभ रोजगारमे लागि गेल अछि आ जतेक पाइ कमा रहल अछि, से तँ हमरा सभ सपनोमे नहि सोचने रही।

''फैक्टरीमे मजूर सभक मेट रहए एकटा झाजी। हल्दियाक फैक्टरी सभमे ओकरा माध्यमसँ ढेर रास बीमा भेटल, सभ एजेन्टमे बराबरि कऽ बाँटि देलियैक। मुदा पता नहि ई देवदत्त ओकरा की कान भरि देलकैक, जे बादमे ओ हमर एजेन्ट सभकेँ भड़काबए लागल।

''ई झाजी एक दिन दारू पीबि कए हमरा संगे झगड़ा करए लागल तँ ओकरो हम नीक जेकाँ डपटि देलियैक, जे बाबू नीक जेकाँ काज कर नहि तँ घर जो ।

''घरमे एकटा दाइ माँ खेनाइ बना जाइत रहथि। ततेक लोकसँ झगड़ा शुरू भऽ गेल रहए जे हमरा लागल जे ओ सभ दाइ माँक माध्यमसँ हमर खेनाइमे माहुर ने मिलबा दए। से हम दाइमाँ सँ खूब हिलि-मिलि गेलहुँ आ हुनकर घर-द्वारक समाचार पुछए लगलियन्हि। हुनका बीमा करबा देलियन्हि आ तकर प्रीमियम हमहीं दऽ देलियैक। हुनकर बेटाकेँ सेहो बीमा-एजेन्ट बनबा देलियैक आ जे बीमा

कराबए बला सभ हमर प्राइवेट ऑफिसमे आबि जाइत छल, ओकर बीमा दाइ माँक बेटाक एजेन्ट कोडमे करबा दैत छलियैक। बेचारी दाइ-माँक स्थितिमे सुधार भऽ गेलैक आ ओ बुझू तँ हमरा अपन बेटा जेकाँ मानए लागलि।

"एजेन्ट सभक लेल दू सए प्रश्नक प्रश्नावली बना कए सभकँ तकर उत्तर कंठस्थ करबा देलियैक। सभ विकास अधिकारीक अदहा एजेन्ट परीक्षामे पास नहि केलकैक मुदा हमर सभ एजेन्ट पास कए गेल।

"फेर हमरा दिमागमे आएल जे आब देवदत्त ओहि एम.एल.ए.कँ भड़काओत। तखने सुमित पाल अपन बेटीक जन्म-दिवसमे हमरा बजेलक। हम खूब नीक साड़ी आ आन-आन चीज पैक करबा कए पहुँचलहुँ। ओ प्रेमसँ हमरापर तमसाएल आ कहलक जे ई सभ आपस लए जाऊ। हम कहलियैक जे अहाँ भाए-बहिनक बीच नहि पड़ू।

"आब देवदत्त तकरा बाद एक दिन सुमित पाल लग गेल आ कहलक जे कोन लफन्दरक संग बेटीकँ एजेन्सी दिएबा कए काज करबा रहल छी? ताहिपर सुमित दा ओकरापर मारि-मारि कए छूटल जे भाए-बहिनक पवित्र संबंधपर आंगुर उठा रहल छी ?

"आऊ ने कहियो। ओतए सभ आब अपन अछि। समुद्र देखब। मोन हएत तँ पुरी सेहो घूमि आएब"।

"आ देवदत्त"?

"ओह, नहि पुछू ओकर। आब तँ ओ हमर भक्त भऽ गेल अछि। एक दिन आबि कए हाथ मिलेलक आ तकर बाद जखन भेटैत अछि हाथ नहि मिलबैत अछि वरन गरा लगैत अछि। आ कहैत अछि जे हम सभ भाए-भाए छी"!

खण्ड-५

नाटक

# *संकर्षण*

***संकर्षण***

(एक-एक अंकक दू कल्लोल आ दू-दू अंकक तीनटा कल्लोल- माने पाँच कल्लोलक अन्तर्गत आठ अंकक मैथिली नाटक)

*पात्र परिचय*

*संकर्षण- अभिनेता आ खलनायक दुनू-* लिकलिक करैत भूत सन कारी रंग, कतेक कारी से ओहि खापड़िकेँ देखि लिअ ततेक।

*संकर्षणक बाबू*

*संकर्षणक कनियाँ*

*भाष्कर*

*भाष्करक बाबूजीक संगी*

*बंगाली बाबू*

*कलक्टर*

*कलक्टरक स्टेनो*

*तीन टा कारी कुकूर- एकर अभिनय तीन गोटे कारी कपड़ा पहिड़ि कऽ सकैत छथि*

*एकटा हलवाई-* मधुरक *दोकानक* मालिक *हिनका लग मिठाई छनबाक कराह, बड़का मोटगर बड़दामी, एकटा मोटगर लाठी आ एक गोटे कर्मचारी रहतन्हि तँ हिनका अभिनयमे सुविधा हेतन्हि।*

*हलवाई जीक कर्मचारी* लुत्ती झा *तखन अबस्से*

*एकटा शिवलिंग-मन्दिर, फेर कनेक उजरा दूध- चूनकेँ घोरि बना सकैत छी।*

*एकटा पुजेगरी आ बड़ रास भक्त- किछु गोटे दर्शककेँ बजा कए सम्मिलित सेहो कए सकैत छी।*

*गोनर भाइ*

*नित्या काका*

*जयराम*

*लाल काका*

*लाल काकी*

*घटक*

*दू टा पुलिस आ एकटा ओकर अफसर*

*एकटा बूढ़ी- ट्रेनक पसिन्जर*

*चोर बजारक दोकानदार, बजारमे आन दोकानदार आ भीड़-भरक्का*

## *पहिल कल्लोल- पहिल अंक*

*(गाम।लगक जिला कार्यालय जतए गामक लोकक आँखिमे दुनियाँक सभसँ पैघ हाकिम कलक्टर बैसैत छथि। जकरा अभिनेता-अभिनेत्री कालिदासक "इति शरसंधानं नाटयति" जेकाँ सांकेतिक रूपमे देखा सकैत छथि। बादमे ट्रेनक यात्राक आ दिल्ली नगरक वर्णन सेहो अहिना कऽ सकैत छथि।)*

(भाष्कर अपन दलानपर बैसल छथि आकि ओम्हरसँ संकर्षण अबैत छथि।)

**संकर्षण:** भाष्कर भाइ, सुनलहुँ कोनो काज अटकल अछि।

**भाष्कर:** हँ भाइ। कलक्टर ऑफिसमे एकटा काज ओझरायल अछि।

**संकर्षण:** कोनो काज पड़लापर हमरासँ कहब। कलक्टरक ओहिठाम भोर-साँझक बैसारी होइत अछि हमर। घंटाक-घंटा बैसल रहैत छी, आबए लगैत छी तँ रोकि कऽ फेर बैसा लैत अछि, दोसर-दोसर गप सभ शुरू कए दैत अछि।

**भाष्कर:** ठीक छैक भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ कहब। नाम की छन्हि हुनकर सेहो नहि बुझल अछि हमरा।

**संकर्षण:** बड्ड नमगर नाम छन्हि, भा.प्र.से. प्रशांत। आब भा.प्र.से. केर पूर्ण रूप हुनकासँ के पुछतन्हि, से प्रशांते कहैत छन्हि।

**भाष्कर:** भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षिप्त रूप छैक भा.प्र.से., ई हुनकर नामक अंग नहि हेतन्हि।

**संकर्षण:** अच्छा तँ फेर सैह होयतैक। ताहि द्वारे नेम-प्लेट पर नामक नीचाँमे ई लिखल रहैत छैक, भा.प्र.से.।

**भाष्कर:** ठीक छैक भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ अहाँकेँ कहब।

(संकर्षण चलि जाइत छथि आ भाष्कर सोचए लगैत छथि जे परुकाँ जखन एकटा आन काज संकर्षणसँ पड़ल रहए तँ ओ की कहने रहथि, भाष्कर सोचिते छथि आकि कनेक दूरमे पछुलका गपक वर्णनक लेल नाटकक निर्देशक संकर्षणकेँ मंचपर कनेक दोसर कात बजा लैत छथि।)

**भाष्कर:** (मोनहि मोन) ईहो कमाल छथि परुकाँ जे काज पड़ल रहए तँ बजैत रहथि जे...

**संकर्षण:** परुकाँ साल किएक नहि कहलहुँ, ककर-ककर काज नहि करएलहुँ। मुदा एहि बेर तँ कोनो जोगारे नहि अछि। कहियो कोनो काज नहि कहने छलहुँ आ आइ कहलहुँ तँ हमरासँ नहि भऽ पाबि रहल अछि। आ से जानि कचोट भऽ रहल अछि।

(संकर्षण फेर चलि जाइत छथि, भाष्कर सेहो जाइत छथि मुदा तखने संकर्षण फेर अबैत छथि।)

**संकर्षण:** सत्यार्थीक बाल-बच्चा सभ बड़ टेढ़। कहियो घुरि कए नहि आयल छल भेँट करए। आ आइ काज पड़ल छैक तखन आयल अछि।
(संकर्षण फेर चलि जाइत छथि, भाष्कर तखने अबैत छथि।)

**भाष्कर:** (एकटा पुरान गप सोचैत- बाबूजीक संगी एक दिन वात्सल्यसँ एक बेर कोनो बङ्गाली बाबूकेँ, भाष्करक सोँझामे एक गोट बड़ नीक गप कहने छलाह।)

**भाष्करक बाबूजीक संगी:** (मंचक दोसर कात कोनो बंगाली बाबूकेँ भाष्करकेँ देखबैत आ कहैत) देखू दादा। ई छथि भाष्कर। हमर अत्यंत प्रिय मित्र सत्यार्थीक बेटा।

**बंगाली बाबू:** हुनकर बेटा तँ बड़ड छोट छल।

**भाष्करक बाबूजीक संगी:** यैह छथि। अहाँ बड़ड दिन पहिने देखने छलियन्हि तखन छोट छलाह, आब पैघ भए गेल छथि। कहैत छलहुँ जे हिनकर पिता हिनका लेल किछु नहि छोड़ि गेलाह। मुदा हमर पिताक मृत्यु १९६० ई. मे भेल छल आ हमरा लेल ओ नगरमे १२ कट्ठा जमीन, एकटा घर आ एकटा स्कूटर ओहि जमानामे छोड़ि गेल छलाह। आ आब ज्योँ ई बच्चा ककरो लग कोनो काजक लेल जायत, तँ एकरा उत्तर भेटतैक जे परुकाँ किएक नञि अएलहुँ आ परोछमे कहतन्हि, जे काज पड़लन्हि तखन आयल छथि।

**बंगाली बाबू:** ई तँ गलत बात।

**भाष्करक बाबूजीक संगी:** मुदा एकरा जखन समस्या पड़लैक तखने अहाँकेँ पुछबाक चाही छल, मुदा से तँ अहाँ नहि पुछलियन्हि। आ अहाँक लग आयल अछि, तखन अहाँ उल्टा गप करैत छी। आ ज्योँ ई बच्चा सहायताक लेल नहि जायत आ अपन काज स्वयं कए लेत आ ओहि श्रीमानकेँ से सुनबामे आबि जएतन्हि, तँ उपकरि कए अओताह आ पुछथिन्ह जे काज भऽ गेल आकि नहि। कहलहुँ किएक नहि। आ तखन ई बच्चा कहत जे काज भऽ गेल, भगवानक दया रहल। से दादा क्यो कोनो काजक लेल आबए तँ बुझू जे कुमोनसँ आयल अछि आ समस्या भेले उत्तर आयल अछि आ तँ ओकर सहायता करू।
(भाष्करक बाबूजीक संगी आ बंगाली बाबू चलि जाइत छथि। भाष्कर सेहो चलि जाइत छथि।)

## पहिल कल्लोलक दोसर अंक

*(कलक्टरक ऑफिस। कलक्टरक चेम्बर। बाहर स्टेनो बैसल, मंचपर दोसर कातमे स्थान दऽ दियन्हु। भाष्कर कलक्टरसँ किछु गप कऽ रहल छथि। दू टा कुरसी तेना कऽ राखि दियौक जे भाष्कर जी आबथि तँ कलक्टरक मुँह सोझाँ पड़न्हि मुदा भाष्करक पीठ देखा पड़न्हि, मुँह नहि। भाष्कर कोनो काजे कलक्टरक ऑफिस गेल छथि। गपशप भइए रहल छन्हि आकि संकर्षण धरधड़ाइत चैम्बरमे अबैत छथि।)*

**कलक्टर:** (तमसा कए) बाहर जाऊ देखैत नहि छी गप भऽ रहल अछि।

(संकर्षण बाहर रूमसँ निकलि स्टेनोक कक्षमे बैसि रहलाह। १०-१५ मिनटक बाद- जरूरी नहि एतेक काल भाष्कर आ कलक्टर गप करथि, घड़ी देखि १०-१५ मिनट १५ सेकेन्डमे खतम कएल जा सकैत अछि। जखन भाष्कर बाहर निकललाह तँ स्टेनोक रूमसँ संकर्षण बहराइत छलाह। एहि बेर संकर्षणक पीठ भाष्करक सोझाँ छलन्हि आ ताहि द्वारे एहि बेर सेहो दुनू गोटेमे सोझाँ-सोँझी नहि भऽ सकल। तखने पटाक्षेप करबाऊ । पटाक्षेपक बाद गामपर दुनू गोटे पहुँचैत देखल जाइत छथि)

**भाष्कर:** कहू संकर्षण। कतएसँ आबि रहल छी।

**संकर्षण:** ओह। की कहू कलक्टर साहेब रोकि लेलन्हि। ओतहि देरी भऽ गेल।

**भाष्कर:** हुनकर स्टेनोसँ सेहो भेँट भेल रहय?

**संकर्षण:** नहि। ओना बहरएबाक रस्ता स्टेनोक प्रकोष्ठेसँ छैक। मुदा ओ सभ तँ डरे सर्द रहैत अछि।

(तखन भाष्करकेँ नहि रहल गेलन्हि आ एकटा खिस्सा सुनबए लगलाह ओ संकर्षणकेँ। आब एतए कारी वस्त्र पहिरने तीन टा अभिनेता भोँ-भोँ करैत जेना कुकुर होथि, मंचक दोसर कात आबि जाइत छथि।)

**भाष्कर:** संकर्षण। सुनू, एकटा खिस्सा सुनबैत छी। तीन टा कारी कुकुर छल। एके रङ-रूपक। ओकरा सभकेँ मोन भेलैक जे गरमा-गरम जिलेबी मधुरक दोकान जा कए खाइ। से बेरा-बेरी ओतए जएबाक प्रक्रम शुरू भऽ गेल।

(खिस्सा शुरू होइते भाष्कर आ संकर्षण मंच सँ हटि जाइत छथि। बीच-बीचमे भाष्करक अबाज मंचक पाछाँसँ अबैत अछि।)

**भाष्कर:** (मंचक पाछाँसँ) पहिने पहिल कुकुर पहुँचल ओहि दोकान पर।

(मधुरक दोकान। मालिक अपन कर्मचारी संगे झाँझसँ जिलेबी छानि रहल छथि। तखने मालिक देखलनि जे कुकुर दोकानमे पैसि रहल अछि, से बटखरा फेंकि कए ओकरा मारलक। पहिल कुकुर- बेचाराकेँ बड़ चोट लगलैक। मुदा जखन घुरि कए गाम पर- माने मंचक दोसर कात अपन दोसर दुनू संगी लग पहुँचल तँ पुछला पर सुनू की कहलक।)

**दोसर कुकुर:** की भाइ केहन रहल।

**तेसर कुकुर:** बड़ड अगराइत चलैत आबि रहल छी।

**पहिल कुकुर:** (पीठपर बटखराक चोटपर हाथ दैत) एह की कहू। बड़ सत्कार भेल। बटखरासँ जोखि कए जिलेबी खएबाक लेल भेटल। बटखरासँ जोखैत गेल, दैत गेल, पैघ बटखरा, छोट बटखरा, सभसँ जोखि-जोखि दैत गेल।

**दोसर कुकुर:** तखन हमहीं किएक पाछाँ रहब सत्कार कराबएमे।

(आब दोसर कुकुर अपनाकेँ रोकि नहि सकल आ अपन सतकार करएबाक हेतु पहुँचि गेल मधुरक दोकान पर। रूप-रङ तँ एके रङ रहए ओकरा सभक, से मधुरक दोकानक मालिककेँ भेलैक जे वैह कुकुर फेरसँ आबि गेल अछि। ओ पानि गरम कए रहल छल।)

**मधुरक दोकानक मालिक:** (भरि टोकना धीपल पानि ओहि कुकुरक देह पर फेकैत) देखू ई फेर आबि गेल। पछिला बेर बटखारा फेंकि कए मारलियैक तकर बाद जे आएल तँ यैह टा ने उपाए बाँचल रहए।

(बेचारा कुकुर जान बचा कए भागल। आब गाम पर- माने मंचक दोसर कात पहुँचला पर ओकरा तेसर कुकुर पुछलकैक-)

**तेसर कुकुर:** केहन सत्कार भेल।

**दोसर कुकुर:** की कहू। (पीठपर गरम पानिसँ जरल स्थानकेँ छुबैत) गरमा-गरम जिलेबी छानि कए खुएलक। बड़ नीक लोक अछि मधुरक दोकानक मालिक। छनैत गेल आ गरमागरम खुआबैत गेल।

(तेसर कुकुरक मोन लसफसा जाइत छैक। ओ निकलैत अछि अपन सत्कार कराबए लेल।)

**तेसर कुकुर:** तखन हमहूँ चलैत छी अपन सत्कार कराबए।

(दोकानपर हल्ला भऽ रहल छैक जे शिवलिंग दूध पीबि रहल छथि, सोर भऽ रहल अछि।)

**मधुरक दोकानक मालिकक कर्मचारी लुत्ती झा:** महादेव भगवान दूध पीबि रहल छथि, चलू ने कनेक अपनो सभ दूध पिया आबी।

**मधुरक दोकानक मालिक:** सत्ते लुत्ती झा। चलह देखी।

(तेसर कुकुर दोकानमे पैसैत अछि आकि मालिक आ लुत्ती झा सटर खसा दैत छैक। बेचारा बन्न भऽ जाइत अछि। मालिक आ लुत्ती झा मन्दिर पहुँचैत छथि, एकटा लोटामे दूध लऽ कए।)

**मधुरक दोकानक मालिक:** (मन्दिर लग भीड़ देखैत) एक्के लोटा दूध अछि, तोँ जेबह आकि हम जाइ।

**लुत्ती झा:** अहीं जाऊ ने। एक्के गप ने छैक।

(मालिक दूध चढ़ा कए देखैत छथि, सभटा दूध नाली बाटे बाहर निकलि जाइत छन्हि।)

**मधुरक दोकानक मालिक:** (स्वतः सोचैत बाहर निकलैत) भगवान सभक हाथे दूध पीलन्हि मुदा हम जे सभकेँ कहबैक जे हमरा हाथे नहि पीलन्हि तँ सभ कहत जे हम पापी छी तेँ भगवान हमरा हाथे दूध नहि पीलन्हि।

**लुत्ती झा:** की मालिक। महादेव दूध पीलन्हि।

**मधुरक दोकानक मालिक:** हँ हौ लुत्ती झा। एतेक प्रतिष्ठित जीवन बिता रहल छी से महादेव सभक हाथे दूध पीलन्हि तँ हमरो हाथे पीलन्हि।

(दुनू गोटे दोकान खोलैत छथि तँ फेरसँ कारी कुकुर देखैत छथि। मालिकक साँसे देह पित्त लहरि गेलन्हि।)

**मधुरक दोकानक मालिक:** लुत्ती झा। भागए नहि पाबए ई। दू बेरमे मोन नहि भरलैक। रस्सा ला, लाठी लाबह।

(दुनू गोटे रस्सामे बान्हि कऽ कुकुरकेँ लाठीसँ पुष्ट पिटान पिटैत छथि। फेर बेचारा कोहुना बन्हन छोड़ा कऽ लँगड़ाइत गाम दिस पड़ाइत अछि। ओतए पहिल आ दोसर कुकुर छथि।)

**पहिल कुकुर:** अहाँकेँ तँ बड़ड काल लागि गेल, की की सत्कार भेल।

**दोसर कुकुर:** हँ ठीके। बड़ी काल लागल, दोकान तँ बन्न नहि रहए।

**तेसर कुकुर:** बड़ड सत्कार भेल। आबैये नहि दैत रहथि। कहैत रहथि जे आर खाऊ, आर खाऊ। कोहुना कऽ जान बचा कऽ आएल छी जे आब नहि खाएल जाएत, पेट फाटि जाएत। (लङराइत) देखैत नहि छी जे चलियो नहि भऽ रहल अछि।

(तीनू कुकुर जाइत छथि आ भाष्कर आ संकर्षण मंचपर अबैत छथि।)

**भाष्कर:** सुनलियैक संकर्षण ई खिस्सा। से जखन कलक्टर अहांकेँ दबाड़ि रहल छल तखन ओकरा सोझाँ हमही बैसल छलहुँ। हमर पीठ अहाँक सोझाँ छल तँ अहाँ हमरा नहि देखि सकलहुँ। फेर अहाँ स्टेनोक प्रकोष्ठमे किछु काल बैसलहुँ आ जखन ओतएसँ बाहर निकललहुँ तँ लोक सभकेँ भेल होएतैक, जे अहाँ कलक्टरसँ ओतेक काल धरि गप कए रहल छलहुँ। मुदा कोनो बात नहि।

हम ई गप ककरो नहि कहबैक। मुदा आजुक बाद मिथ्या कथनसँ अहाँ अपनाकेँ दूर राखू।
(संकर्षण मुँह गोतने बैसल रहलाह।)

**भाष्कर:** आउ, मुरहीक भुज्जा बनबैत छी।
(दुनू गोटे भुज्जा फाँकय लगैत छथि।)

## *दोसर कल्लोल पहिल अंक*

*(पुरनका गामक दृश्य। जयराम दौगल-दौगल अबैत छथि। संकर्षण सोझाँ छथि।)*

**जयराम:** संकर्षण। नीक भेल भेटि गेलहुँ। नित्या काका लग जाइत रही मुदा ओतए जाइत-जाइत देरी भऽ जाएत। ननकिड़बाक मोन बड़ड खराप छैक। बोखार, रद्द-दस्त सभ एक्के-बेर शुरू भऽ गेल छैक।

**संकर्षण:** धुर बताह, पसीझक काँटक रस पिआ ने दहीं। हम जाइत छी महींस चरेबाक लेल डीह दिशि। कोनो चिन्ता जुनि करब। जुल्मी दबाइ छैक। एक्के चोटमे सभ बेमारी खतम।

(संकर्षण एक दिस आ जयराम दोसर दिस जाइत छथि। फेर नित्या काका एक दिससँ आ जयराम दोसर दिससँ अबैत छथि।)

**नित्या काका:** की जयराम? कलम दिससँ की आनि रहल छी।

**जयराम:** की कहू काका। ननकिड़बाकेँ बोखार, रद्द-दस्त सभ एक्के-बेर शुरू भऽ गेल छैक। संकर्षण कहलन्हि जे पसीझक काँटक रस पिआ देबा लेल सभ बेमारी खतम भऽ जएतैक। सैह आनए लेल गेल रही।

**नित्या कक्का:** ई संकर्षण बड़ बुरि अछि। परुकाँ पसीझक काँटक रस पोखरिमे दऽ कए सभटा माँछ मारि देने रहए ई। ई जहर बच्चाकेँ पिएबन्हि तँ मोन ठीक नहि होएतन्हि, सोझे प्राण निकलि जयतन्हि। चलह दबाइ-दोकान दिस, दबाइ दिअबैत छिअह।

(दुनू गोटे जाइत छथि आ ओम्हर डीहपर महींसक पीठपर संकर्षण बैसल देखबामे अबैत छथि। दोसर दिससँ एकटा दोसर महिसबार गामपरसँ आबिये रहल छथि।)

**संकर्षण:** की भाइ, गामेपरसँ आबि रहल छी।

**महिसबार:** हँ भाइ।

**संकर्षण:** जयरामक टोलसँ कन्नारोहटो सुनबामे आएल रहए।

**महिसबार:** कन्नारोहट तँ नहि, मुदा डिहबारक स्थानपर पंचैती बैसल अछि, अहाँकेँ बजाबए लेल हम आएल छी।

(महिसबार संकर्षणकेँ लेने मंचसँ जाइत छथि। फेर पंच सभक लग सभ फेरसँ अबैत छथि आ संकर्षणपर सभ थू-थू करैत छथि। घोँघाउज होइत अछि आ संकर्षणपर दण्ड सेहो लगैत छन्हि।)

**संकर्षण:** हम अपन घट्टी मानैत छी आ आइ दिनसँ कंठी लऽ रहल छी। दण्ड सेहो काल्हि साँझ धरि दऽ देब।

(पटाक्षेप होइत अछि।)

## दोसर कल्लोल दोसर अंक

(संकर्षण भोरे- भोर खेत दिशि कोदारि आ छिट्टा लए बिदा भेल छथि। बुन्ना-बान्नी होइत छल। तखने आरिकेँ तरपैत एकटा पैघ रोहुकेँ देखि कए संकर्षण कोदारि चला देलन्हि। आ रोहु दू कुट्टी भऽ गेल।)

**संकर्षण:** आरौ तोरी के। आब दोसर काज छोड़ी आ गामपर चली।
(दुनू ट्कड़ीकेँ छिट्टामे राखि माथ पर उठा कए विदा भेलाह संकर्षण गाम दिशि। तकरा देखि हुनकर समवयस्क गोनर भाए गाम पर जाइत काल गामक बाबा दोगही लग ठमकि कए ठाढ़ भए गेलाह।)

**गोनर भाइ:** (मोनमे सोचैत छथि ) वैष्णव जीसँ रोहु कोना कए लए ली। (प्रत्यक्ष भऽ) यौ संकर्षण भाइ। ई की कएलहुँ। वैष्णव भऽ कए माछ उघैत छी।

**संकर्षण:** रौ गोनर। हमर बतारी छह मुदा तैयो हम तोहर भाइ कोना भेलियह। तोरा बुझल नहि छह जे जतए तोँ ठाढ़ छह से कहबैत छैक बाबा दोगही। एतए जनमलो बच्चा गामक लोकसँ सम्बन्धमे बाबा होइत अछि।

**गोनर भाइ:** ठीके कहलहुँ संकर्षण। मुदा हम कहैत रही जे......

**संकर्षण:** (गप काटैत) रौ माछ खायब ने छोड़ने छियैक। मारनाइ तँ नञि ने।
(अपन सनक मुँह लए गोनर भाइ विदा भए गेलाह। फेर दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि। गोनर झा टेलीफोन डायरी देखि रहल छथि।)

**संकर्षण:** की देखि रहल छी।

**गोनर झा:** टेलीफोन नंबर सभ लिखि कए रखने छी, ताहिमे सँ एकटा नंबर ताकि रहल छी।

**संकर्षण:** आ ज्योँ बाहरमे रस्तामे कतहु पुलिस पूछि देत जे ई की रखने छी तखन।

**गोनर झा:** ऐँ यौ से की कहैत छी। टेलीफोन नंबर सभ सेहो लोक नहि राखय।

**संकर्षण:** से तँ ठीक। मुदा एतेक नंबर किएक रखने छी, ई पुछला पर ज्योँ जबाब नहि देब तँ आतंकी बुझि पुलिस जेलमे नहि धए देत?

**गोनर झा:** से कोना धए देत। एखने हम एहि डायरीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ कए फेंकि दैत छियैक।

(गोनर भाइ ओहि डायरीकेँ फाड़ि-फूड़ि कए फेंकि दैत छथि।)

## *तेसर कल्लोल*

*(संकर्षणक बाबू दलानपर बैसल छथि। एक गोट घटक चूड़ा-दही-मधुर सरपेटने जा रहल छथि।)*

**घटक:** मीतक चेहरापर जे पानि छन्हि से लोक नञि देखैत अछि। कारी टुहटुह छथि संकर्षण कारी-खटखट नहि। चन्सगर छथि।

**संकर्षणक बाबू:** हे एकटा आर मधुर लियौक ने।

**घटक:** दियौक। यौ लाइन लागि जाएत लड़की बलाक। धरफराऊ धरि जुनि।

(ओ घटक जाइत छथि आकि दोसर घटक अबैत छथि आ ओहो इशारामे गप करैत चलि जाइत छथि।)

**संकर्षणक माए:** हे एकटा कन्यागत अओताह आइ। लाल काकीक फोन आएल छन्हि दिल्लीसँ।

**संकर्षणक बाबू:** शरबत घोरि कए राखू तखन। कागजी नेबो तँ घटक सभकेँ शरबत पियाबैत-पियाबैत खतम भऽ गेल देखैत छी गाछमे जमीरी नेबो सेहो बाँचल अछि आकि नहि।

(मंचसँ सभ जाइत छथि आ बुझना जाइत अछि जे संकर्षण सासुरसँ आएले छथि, कनेक मोट भऽ गेल छथि। गोनर भाइ रस्तामे भेटि जाइत छथिन्ह।)

**गोनर भाइ:** मीत यौ, कनिया केहन छथि, पसिन्न पड़लथि ने।

**संकर्षण:** हँ, हँ जगन्नाथ भाइ। बड़ सुन्दर छथि। हेमामालिनीकेँ देखने छियन्हि? एन-मेन ओहने।

**गोनर भाइ:** अच्छा।

**संकर्षण:** मुदा रंग कनेक हमरासँ डीप छन्हि।

(गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि। संकर्षण हाथमे लोटा लेने पोखरि दिशि जा रहल छथि तँ गोनर गोबर काढ़ि छथि। बगलमे गोनर भाइक कनियाँ ठाढ़ि रहथिन्ह।)

**गोनर भाइ:** यौ मीत, हमरे जेकाँ अहूँ सभकेँ भोरे-भोर गोबर काढ़य पड़ैत अछि?

(संकर्षण देखलन्हि जे गोनरक कनिञा सेहो बगलमे ठाढ़ि छलखिन्ह। से एखन किछु कहबन्हि तँ लाज होएतन्हि। से बिनु किछु कहने आगू बढ़ि गेलाह। जखन घुरलाह तँ.........)

**संकर्षण:** भाइ, पहिने बियाहमे पाइ देबय पड़ैत छलैक, से अहाँकैँ सेहो लागल होएत। ताहि द्वारे ने उमरिगरमे बियाह भेल।

**गोनर भाइ:** हँ से तँ पाइ लागले छल।

**संकर्षण:** मुदा हमरा सभकैँ पाइ नहि देबय पड़ल छल आ ताहि द्वारे गोबरो नहि काढ़य पड़ैत अछि, कारण कनियाँ ओतेक दुलारू नहि छथि ने।

(गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि।)

**गोनर भाइ:** सर्दमे गुरसँ खूब लाभ होइत छैक, ई ठेही हँटबैत अछि। गूरक चाह पीब मीत।

**मीत भाए:** (स्वगत) किछु दिन पहिने गोनर एहि गपक चर्च कएने छलाह जे ओ जोमनी छोड़ने छलाह तीर्थस्थानमे आ तैँ जोम खाइत छलाह। हरजे की एहिमे। अधिक फलम् डूबाडूबी। (प्रत्यक्ष) परुकाँ जे पुरी जगन्नाथजी गेल छलहुँ, से कोनो एकटा फल छोड़बाक छल से कुसियार छोड़ि देलहुँ। आ कुसियारेसँ तँ गुर बनैत छैक। चुकन्दरक पातर रसियन चीनी बला चाहे ने पिआ दिअ।

(गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। दुनू गोटे मंचसँ जाइत छथि आ फेर अबैत छथि। लगैत अछि जे पन्द्रह बरिखक बादक गप अछि। दुनू गोटे उमरिगर भऽ गेल छथि।)

**संकर्षण:** यौ,लोक सभ यौ लोक सभ। लाल काका बियाह तँ करा देलन्हि मुदा तखन ई कहाँ कहलन्हि जे बियाहक बाद बेटो होइत छैक। जबान बेटा घर छोड़ि भागि गेल। आब की करब ?

**गोनर भाइ:** हो नहि हो दिल्लीये गेल होएत। सभ ओतहि जाइत अछि भागि कऽ।

**संकर्षण:** आब बेटाकैँ ताकए लेल आ बेटाक नहि भेटला उत्तर अपना लेल नोकरी तकबाक हेतु हमरो दिल्लीक रस्ता धरए पड़त।

(निर्देशक पाछाँ सँ बजैत छथि- दिल्लीक रस्तामे संकर्षणक संग की भेलन्हि हुनकर बुधियारी आकि कबिलपनी काज अएलन्हि वा नहि, एहि लेल कनेक धैर्य राखए पड़त। कारण ट्रेनक सवारी अछि आ मंच कलाकार उत्साहित छथि मुदा देखिनहार थाकल बुझि पड़ैत छथि। पटाक्षेप होइत अछि।)

## *चारिम कल्लोल*

*(ट्रेनक दृश्य। संकर्षण जनकपुरसँ जयनगर अबैत छथि से जनकपुर आ जयनगरक बोर्ड लगा कए मंचित कएल जा सकैत अछि। जयनगर मे ट्रेनपर संकर्षण चढ़ैत छथि । ट्रेन खुजैत अछि आ संकर्षण ट्रेनमे कोन्हुना बैसैत छथि।)*

**एकटा बूढ़ी:** (संकर्षणसँ) बौआ कनेक सीट नञि छोड़ि देब।

**संकर्षण:** माँ। ई बौआ नहि। बौआक तीन टा बौआ।

(बूढ़ी मुँह बाबि लैत छथि। ट्रेन आगाँ बढ़ैत अछि अलीगढ़मे पुलिस आयल बोगीमे। संकर्षणक झोड़ा-झपटा सभ देखए लगलन्हि। चेकिंग किदनि होइत छैक से। ताहिमे किछु नहि भेटलैक ओकरा सभकेँ। हँ खेसारी सागक बिड़िया बना कए संकर्षणक कनियाँ सनेसक हेतु देने रहथिन्ह, लाल काकीक हेतु। मुदा पुलिसबा सभ एहिपर हुनका लोकि लेलकन्हि।)

**सिपाही एक:** ई की छी।

**संकर्षण:** ई तँ सरकार, छी खेसारीक बिड़िया।

**सिपाहीक अफसर:** अच्छा, बेकूफ बुझैत छी हमरा। मोहन सिंह बताऊ तँ ई की छी।

**सिपाही दू:** गाजा छैक सरकार। गजेरी बुझाइत अछि ई।

**सिपाहीक अफसर:** आब कहू यौ सवारी। हम तँ मोहन सिंहकेँ नहि कहलियैक, जे ई गाजा छी। मुदा जेँ तँ ई छी गाजा, तँ मोहन सिंह से कहलक।

**संकर्षण:** सरकार छियैक तँ ई बिड़िया, हमर कनियाँ सनेस बन्हलक अछि लाल काकीक..........

**सिपाही एक:** लऽ चलू एकरा जेलमे सभटा कहि देत।

(संकर्षणक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहय लगैत छन्हि। मुदा सिपाही छल बुझनुक।)

**सिपाही दू:** कतेक पाइ अछि सँगमे।

(दिल्लीमे स्टेशनसँ लालकाकाक घर धरि दू बस बदलि कए जाए पड़ैत छैक। से सभ हिसाब लगा कए बीस टाका छोड़ि कए पुलिसबा सभटा लऽ लेलकन्हि। हँ खेसारीक बिड़िया धरि छोड़ि देलकन्हि। पाइक आदान प्रदान भेल। पुलिसबा सभ उतरि गेल। संकर्षण सेहो कनेक कालक बाद दिल्ली स्टेशनपर उतरि गेलाह। फेर मंचपर लाल काका, लाल काकी आ संकर्षण ड्राइंग रूममे बैसल छथि।)

**लाल काका:** (फोनपर) अच्छा। ई तँ नीक खबरि सुनेलहुँ। मीत तँ रहैत छथि, रहैत छथि की सभटा गप सोचा जाइत छलन्हि आ कोढ़ फाटि जाइत छन्हि। (फोन राखैत) सुनलियै यै। मीतक बेटा गाम पहुँचि गेलन्हि।

**लाल काकी:** बाह। रच्छ भगवान। मुदा बौआ ई सप्पत खाऊ जे आब पसीझक काँट जेहन हँसी नहि करब। (लाल काका दिस मुँह कए) हिनकर नोकरीक की भेलन्हि।

**संकर्षण:** नोकरी-तोकरी नहि होयत काकी हमरासँ। सप्पत खाइत छी जे पसीझक काँट बला हँसी आब नहि करब। आब तँ गाम घुरबाक तैयारी करए दिअ।

**लाल काकी:** दिल्ली तँ घुमि लिअ। लाल किला देखि लिअ।

# पाँचम कल्लोल पहिल अंक

*(दिल्लीक लाल किलाक पाछूमे रवि दिन भोरमे जे चोर बजार लगैत रहए ताहिमे संकर्षण अपन भाग्यक परीक्षणक हेतु पहुँचैत छथि। संकर्षणकेँ एहि बजारसँ, सस्त आ नीक चीज किनबाक लूरि नहि छन्हि से सभ कहैत छलन्हि। से गामक बुधियार संकर्षण पहुँचलाह एतए।ओहि परीक्षणक दिन, संकर्षणक ओतय पहुँचबाक देरी छलन्हि आकि एक गोटे संकर्षणक आँखिसँ नुका कय किछु वस्तु राखय लागल आ देखिते-देखिते ओतएसँ निपत्ता भय गेल। संकर्षणक मोन ओम्हर गेलन्हि आ ओ ओकर पाछाँ धय लेलन्हि। बड़ड मुश्किलसँ संकर्षण ओकरा ताकि लेलन्हि।)*

**संकर्षण:** की नुका रहल छी ?

**चोर बजारक दोकानदार:** ई अहाँक बुत्ताक बाहर अछि।

**संकर्षण:** अहाँ कहू तँ ठीक, जे की एहन अलभ्य अहाँक कोरमे अछि।

**चोर बजारक दोकानदार:** (झाड़ि-पोछि कय एक जोड़ जुत्ता निकाललन्हि) कोनो पैघ गाड़ी बलाक बाटमे छी जे गाड़ीसँ उतरि एहि जुत्ताक सही परीक्षण करबामे समर्थ होएत आ सही दाम देत।

**संकर्षण:** दाम तँ कहू।

**चोर बजारक दोकानदार:** अहाँ कहैत छी तँ सुनू। चारि सए टाका दाम अछि एकर। हँ।

**संकर्षण:** हमरा लग तँ मात्र तीन सए साठि टाका अछि।

**चोर बजारक दोकानदार:** हम पहिनहिये ने कहने छलहुँ। कतए घर भेल अहाँक।

**संकर्षण:** जनकपुर।

**चोर बजारक दोकानदार:** पड़ोसिया छी तखन तँ। अहाँसँ की लाभ कमाएब। दस टाका तँ डी.टी.सी. बसक किरेजा सेहो लागत। चलू साढ़े तीन सय दिअ।

**संकर्षण:** चलू आइ काल्हिक युगमे अहाँ सन लोक अछि जे पड़ोसीक कदर करैत अछि।

**चोर बजारक दोकानदार:** दिल्लीमे सभ अपने लोक अछि। एतए तँ थूको फेकैत छी तँ अपने लोकपर पड़ैत अछि।

## पाँचम कल्लोल दोसर अंक

*(संकर्षण गाम घुरलाह। जाहि दिनसँ ई जुत्ता आयल, एकरामे पानि नहि लागय देलन्हि। गोनर भाइ आ संकर्षणक मंचपर पदार्पण।)*

**गोनर भाइ:** यौ मीत जुत्ता किएह हाथमे उठेने छी।

**संकर्षण:** हौ गोनर। पानि कोना लागए देबैक एकरा। पैरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखन कतए सँ आएत।

(दुनू गोटे जाइत छथि आ फेर आबि जाइत छथि। संकर्षण जुत्ता सिअबा रहल छथि।)

**गोनर भाइ:** ई की कऽ रहल छी मीत। एतेक नीक रंग रूपक जुत्ताकेँ सिअबा रहल छी।

**संकर्षण:** हौ गोनर। बड्ड ठकान ठकेलहुँ। कतओ पानि देखी तँ पैरके सड़ा दैत रही आ एहि जुत्ताकेँ हाथमे उठा लैत छलहुँ। चारिये दिनतँ पहिरने होएब। आइ जुत्ताक पूरा सोल, करेज जेकाँ, अपन एहि आँखिक सोझाँ जुत्तासँ बाहर आबि गेल।

**गोनर भाइ:** अहाँकेँ के ठकि लेलक। अहाँक नाम तँ बुझनुक लोकमे अबैत अछि।

**संकर्षण:** मित्र की कहू? क्यो बुझनुक कहैत अछि आकि एहि जुत्ताक बड़ाइ करैत अछि, तँ कोढ़ फाटय लगैत अछि। कोनहुना सिया-फड़ा कय पाइ ऊप्पर करब। बड्ड दाबी छल, जे मैथिल छी आ बुधियारीमे कोनो सानी नहि अछि। मुदा ई ठकान जे दिल्लीमे ठकेलहुँ तँ आब तँ ओतुक्का लोककेँ दण्डवते करैत रहबाक मोन करैत अछि। एहि लालकिलाक चोर-बजारक लोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बुद्धिकेँ गरदामे मिला देतन्हि। अउ जी, भारत-रत्न बँटैत छी, आ तखन एहि पर कंट्रोवर्सी करैत छी। असल भारत-रत्न सभ तँ लालकिलाक पाँछाँमे अछि, से एक दू टा नहि वरन् मात्रा मे।

**गोनर भाइ:** भारत रत्न सभ!

**संकर्षण:** आन सभतँ एहि घटनाकेँ लऽ कय किचकिचबैते रहैत अछि, कम सँ कम यौ भजार, अहाँ तँ एहि घटनाक मोन नहि पारू।

(पटाक्षेप)

खण्ड-६

महाकाव्य

# *त्वञ्चाहञ्च* आ *असञ्जाति मन*

*त्वञ्चाहञ्च*

*असज्ञाति मन*

## त्वञ्चाहञ्च

ई भारत ग्रंथ
जयक जाहिमे गान
तखन कहियासँ भेलाह एतुक्का लोक,
कर्महीन, संकीर्ण,
कोना हारैत गेलाह सैन्यबलसँ आ दर्शनहुसँ,
के घोसियाबैत गेल असमानताक पाठ एकर बिच।
के केलन्हि शुरू ई त्वञ्चाहञ्च।

गांधर्व, एकलव्यक वीरतासँ भरल,
घृणा-प्रेम, सत्य-असत्यक धरातल,

आह पाराशर पुत्र भगवान व्यास,
नमन-नमन शत नमन।

प्रसन्नवदनकेँ लिखबाक कहि बात,
वाणी नहि रुकत अहाँक गणेशक शर्त,
कविक कल्पनाक ई उत्कर्ष,
मुदा बनाओल किएक अहाँ होअए जेना धर्मग्रंथ।

व्यास लेखक होइतहुँ छथि एहिमे एकटा पात्र,
केहन नव रस, नव छल वाद !

गणेशक गति अति तीव्र, देखि व्यास कएल श्लोक जटिल।
श्लोकक भाष्य बूझि शीघ्र, विघ्नकर्ता लिखताह ई।
श्लोकक जटिलताक लेल ई तर्क !

पुत्र शुकदेव नारदमुनि देवगण गंधर्व राक्षस यक्ष
व्यास शिष्य वैशंपायन आ परीक्षित पुत्र जनमेजयक निस्तार।

पौराणिक सूतजी रहथि, तत मध्य।
करि ऋषिसभा नैमिषारण्यमे,महर्षि शौनक अध्यक्ष।

सूतजी कएल शुरु,संहिता सतसहस्त्र।

आइ ई मन कहए अछि, ई सत्य देखी,
कविक कल्पना मध्य छल की सीखि परखी।
अर्थ केर अनर्थ क्षेपक सभ केलक जे,
हर्ष आ श्रमसँ कनेक देखाबी देखी ।

हस्तिनापुर सम्राट शांतुनु, गंग तट भ्रमण करि रहल।
युवती बनि देवि गंगा,तट जकर छलि ठाढ़ निश्चल !
तैँ पड़ल होअए नाम हुनकर,
धार गंगाजीक नामपर
भए अभिभूत कहल हे सुन्दरि,
करु प्रेम स्वीकार हमर।
पत्नी बनि करु राज,
राज्य-धन-प्राण पर।

अछि समर्पण सभ अहाँ पर,
किंतु अछि किछु बंधन हमर।
क्यो पूछय नहि परिचय हमर,
नहि करय रोक-टोक हमर कार्य पर।

प्रेम-विह्वल शांतुनु,
करि स्वीकार बंधन सकल।
आनल महल मानव-गंगाकेँ,
समय बितल बितिते रहल।
भेल बात विचित्र ई जे,
सात पुत्र शांतुनुकेँ भेल।
युवती फेकल सभकेँ गंगधारमे,

राजाने किछु पुछि सकल।

कविक छल ई कल्पना ई युवती के अछि,
बुझि परैछ क्षण कोमल, क्षण क्रूर-क्रूरतम जे,
अबोध बालक केर प्राणक हेतु विकल !

पूछल राजा शांतनु,
आठम बेर अपनाकँ नहि रोकि सकल।
देलक युवती परिचय सकल,
हम गंग आ ई आठ वसु छल।
देलन्हि महर्षि वशिष्ठ शाप तनिका,
मर्त्यलोकक जन्म लेबाक।
आठम पुत्रकँ राखब हम किछु दिन,
देवव्रत देब स्वरूप सेवक।

महर्षि वशिष्ठक नन्दिनीकँ,
देखि पत्नी वसु प्रभासक,
मर्त्यलोकक सखी हेतु,
प्रयास नन्दिनीक हरणक ।

ऋषि ताकल गौ-देविकँ,
ज्ञान-चक्षुसँ।
देलक शाप वसुगणकँ भय-क्रोधित,
कएल प्रार्थना वसु सभ शापित।
हमर शाप नहि घूरि सकत परञ्च,
सात वसु भय जायत मुक्त तुरत।

प्रभासकँ रहय परत ततय,
किछु दिन धरि मर्त्यलोकक शरण

होयत यशस्वी ई बहुत,
घुरि आयल वसुगण गंग लग।
हे देवि बनू माता हमरा सभक,
दिअ' मुक्ति तखन आस अहींक।

कवि-कल्नाक डोरी देखल,

मानव-गंग केर औचित्य लेल!

शांतुनु भए गेल विरक्त,
छूटि गेल गंगक सानिध्य।
समय बीतल तँ गेल ओ एक दिन,
तट, धारक समक्ष।

दिव्य बालककेँ ओतए देखल,
करि रहल केलि ओतए।
रोकि रहल वाणक धारसँ,
गंगधारकेँ जतए।

प्रस्तुत भेलीह गंग तखन,
सौंपि देल देवव्रतकेँ कहल।
महर्षि वशिष्ठ सँ लए शिक्षा,
वेद-वेदांगक निखिल।
शास्त्र-ज्ञान शुक्राचार्य जेकाँ,
शस्त्रमे परशुराम सन।

भेटि गेलन्हि पुत्र तेजस्वी घुरि अएलाह शान्तनु,
देवव्रतकेँ बनाएल राजकुमार,
आइ अछि ई सम्भव,
अपन दोसर ठाम पोसलाहा पुत्रकेँ,
करत ई संकीर्ण समाज!
किएक नहि होए देवव्रत सन यशस्वी तखनहु?

कैक वर्ष बीतल एना,
पुनि एक दिन आएल,
शान्तनु देखलन्हि यमुना तट तर अद्भुत सुवास,
आबि रहल तरुणी सत्यवती मलाहक बेटी,
आइ जखन गोत्र-मूल, पाइ-कौड़ीक बान्ह,
तहिया राजासँ विवाहक लेल सेहो,
राखल शर्त्त मल्लाहक सरदार।

बनत हमर नातियेटा,
हस्तिनापुरक राजा,
तखने होएत ई विवाह।

शान्तनु ई वचन दितथि कोना,
से घुरि अयलाह नगर अपन ।
चिन्ता घून बनि काटए लागल शरीरक कान्तिकेँ।

देवव्रत पूछलन्हि पितासँ,
की भेल पिताश्री,
हे पुत्र की कहू,
अछि एकटा चिन्ता,
की होएत राज्यक
जे होएत होएत युद्धमे किछु अहाँकेँ,
ककर आश,
के बढ़ाओत,
वंश हस्तिनापुरक ।

कुशाग्र बुद्धिक देवव्रत
बुझलन्हि जे बात किछु आर अछि,
पूछलन्हि सारथीसँ सभ गप,
गेलथि केवटराज लग,
आ राजपाट त्यागि अएलाह।

केवटराज परञ्च राखल एकटा शंका,
की होएत जे अहाँक,
पुत्र अहाँक जे छीनि लए,
हमर नातिसँ राज्य।

अप्रत्याशित प्रश्नक उत्तर,
सेहो अप्रत्याशित ।

इतिहास बनत,
ई प्रतिज्ञा।

नहि करब हम विवाह आजन्म,
गार्हस्थ्य आश्रम छोड़ब,
रहब आजन्म ब्रह्मचारी,
छोड़ब वानप्रस्थ आश्रम,
हस्तिनापुर सिंहासनक मात्र रक्षा,
करब हम आजन्म।

संन्यास आश्रम सेहो छोड़ब,
संतान बूझब हस्तिनापुर सिंहासनकेँ।
क्यो नहि छूबि सकत तकरा,
हमरा जिबैत-जीबैत।

धन्य-धन्य दिगान्त बाजल,
पुष्प वर्षा कएलन्हि देवतागण,
मंचसज्जाक लेल उपयुक्त कवि ब्यासक कथन बुझु एतए।

भीष्म-भीष्म धन्य-धन्य,
बाजि उठल लोक सभ।

केवटराज केलन्हि विदा,
सत्यवतीकेँ सानन्द।
कालांतरमे पुत्र दू,
पाओल विचित्रवीर्य आ चित्रांगद ।

बालक दुनू छोटे छल, शांतनुक प्रयाण भेल।
चित्रांगदक भीष्म, तखन राज्याभिषेक कएल।

घमंडी से छल एहन की देव की दानव बुझय,
की गंधर्व की मानव ककरो नहि टेर करय।
आ देह छोड़ल, युद्ध संग गंधर्वक कए|

विचित्रवीर्यक आएल राज्य,

भीष्मकेँ पड़ल सम्हारए,
सभटा भार कारण विचित्रवीर्य रहथि छोट।

फेर जखन ओ भेलाह विवाह योग्य,
काशीराजक कन्या सभक स्वयंबरमे,
भीष्म विदा भेलाह काशी,
जतए पहुँचल छलाह राजा शल्व,
काशीराजक ज्येष्ठ पुत्री,
अम्बा छलीह हुनकापर अनुरक्त ।
अम्बा,अम्बिका,अम्बालिका,
दृष्टि फेरल भीष्म दिशि।
बढि गेलीह आगू तखन,
भीष्म क्रोधित भए दहोदिश,
ललकारिकेँ कहलन्हि तखन ओ
समस्त राजा सुनि लिअह ई,
जे पराजित कए सकी तँ,
स्वयंबरक भागी बनू फेर।

सभकेँ हराकए भीष्म जखन,
चललाह काशीराजक कन्या समेत।
शल्व रथक पाछू पड़ल आ,
ललकारल युद्धक लेल।

धनुष-विद्या धनी भीष्मसँ,
काशीराजक कन्यासभ कएल प्रार्थना,
भीष्म छोड़ल प्राण शल्वक,
मुदा अम्बा कहलन्हि भीष्मसँ एकांतीमे,
हे गंगेय धर्मज्ञ,
हमरा मोनमे अछि एक गोट शंका,
मानि लेल सौभ देश राजाकेँ,
पति हम अपना हृदय-बिच,
धर्मात्मा, महात्मा,भीष्मक निर्णय,
जाथु अम्बा शल्व लग।

कराओल विवाह विचित्रवीर्यक,
अम्बा-अम्बालिकाक संग।

शाल्व छलाह वीर,

भीष्म हराओल लोक सभक बिच,
जीति लए गेल अहाँकेँ,
एहि अपमानक बाद की ई,
बात हमरा स्वीकार हो?

विचित्रवीर्य कहल सेहो अम्बासँ विवाह अक्षत्रियोचित,
अम्बा कहलन्हि भीष्मकेँ
विवाह करू अहाँ हमरासँ।

हरि अनलहुँ,
बीतल छह वर्ष हस्तिनापुर-सौभक बीच,
भीष्मक प्रतिज्ञा
मुदा बीचमे ठाढ़,
गेलीह युद्धदेव कार्तिकेय लग।
अम्बा भरि उठलीह प्रतिशोधसँ ।

देलन्हि ओ नहि मौलायबला कमलक माला,
हे अम्बे! लिअ ई शस्त्र,
जकर गार पहिरायब सैह करत भीष्मकेँ नष्ट।
भीष्मक भय परञ्च छल ततेक,
नहि तैयार भेल पहिरय ई माला क्यो एक।
सुनलन्हि छथि द्रुपद वीर पांचाल,
सेहो तैयार नहि भेलाह पहिरए ई माल।
घुरलीह अम्बा अंतमे हारि,
निराश हताश लटकेलन्हि द्रुपदक महलक द्वारि।

गेलीह ओ तपस्वीक शरण।
सभ तपस्वी कए विचार कहलन्हि,
जाऊ अहाँ परुशरामक आश्रम।

क्षत्रिय-दमन छथि ओ देथिन्ह दण्ड भीष्मकेँ,
जे कष्ट देलन्हि अकारण।

परशुराम लग पहुँचि केलन्हि प्रार्थना,

सुना कए अपन अभ्यर्थना।
परशुराम कहल शल्व अछि प्रिय हमर,
बात नहि काटत विवाह शल्वसँ करक लेल छी तैयार अहाँ ?
अम्बा कहल हम आब विवाह नहि करए चाहैत छी।

अछि हमर आब ई इच्छा मात्र,
करू भीष्मसँ युद्ध अहाँ।

परशुराम कए स्वीकार ई प्रार्थना,
देलन्हि भीष्मकेँ ललकारा,
जितेन्द्रीय,ब्रह्मचारी छलाह दुनू,
धनुर्धारी-योद्धा मध्य युद्धघोष बरु।

हारि-जीतक प्रश्न नहि छल ज्योँ,
अनिर्णायक युद्ध बनल,
अम्बा हारि कैलाशक दिशि प्रयाण कएल,
गेलीह शम्भूक शरणमे।

पाबि वर पुनर्जन्मक बाद,
भीष्मक मृत्यु मे होएत अहींक हाथ।

अम्बाक संयमक सेहो छल सीमा,
कूदि चितामे पुनर्जन्मक लौलसामे।
मृत्यु पाबि जन्म लेल तखन,
कन्या बनि द्रुपदक महलमे।

खेल-खेलमे माला पहिरल अपन टाँगल,
द्रुपद सोचल होएत एकटा फेर,
वैर भीष्मक आएत गऽ झमेल।

निकालि राजमहलसँ कन्याकेँ,
जंगल दिशि ओ गेलि तपस्या कएल,
पाओल पुरुष रूप धरल शिखण्डी नाम,
ओकरा छल सभटा मोन।

विचित्रवीर्यक राज सेहो चलल बड़ड थोड़ दिन।
क्षयक बीमारी छल अल्पायु मे मृत्युक अदिन।
धृतराष्ट्रक आ पांडुक जन्मो नहि भेल।
अंबिकाक पुत्र धृतराष्ट्र,अंबालिका पुत्र पाण्डु छल।

विधिक विधान छल, ज्येष्ठ पुत्र अंध भेल,
अम्बिका सँ पुत्र धृतराष्ट्र,
काल छिनलक आँखि,
आ काल बनओलक कहबीक पाँति
अम्बालिका पुत्र पाण्डु,
पौण्ड्र रोग ग्रसित तैँ ब्यास देल नाम ई,
आकि हुनकैँ सँ रोगक पड़ल नाम ई।
पौण्ड्र ग्रस्त पाण्डुकैँ राज्य-काज गेल देल ।

अंबिकाक दासीसँ विदुरक भेल जन्म छल।
शिक्षा होमय लागल सभक भीष्मक संरक्षणमे,
भीष्मकैँ चिंता भेल विवाह कोना होयत गए,
धृतराष्ट्रक हेतु ताकल एक कन्याकैँ।
शिवक वरदान छल गांधारीके सए पुत्रक,
बढ़त वंश शोचल ई प्रयत्न से प्रारम्भ कएल।

गांधार नरेश सुबल भेलाह कथा लेल तैयार जखन,
विवाह धृतराष्ट्रक भेल छलीह ओ शकुनिक बहिन।

सुनि पतिक अंधताक गप्प पट्टी बान्हल,
आँखि रहितहु नेत्रहीनक जिनगी गुजारल।

सय पुत्रक माता छल दुःशला एक पुत्री,
सिंधु नरेश जयद्रथ भेल जिनकर पति।

कृष्णक पिता वासुदेवक बहिन छलि पृथा,
शूरसेनक पुत्री छलीह रहलीह जाए मुदा,
पिताक पिसियौत कुंतीभोज छल संतानहीन,

हुनके स्नेह भेटल पृथा भेलि कुंती पुनि।

कृष्ण-सुदर्शन, बलरामक दीदी भेलीह,
सत्कार विप्रवरक करैत छलीह।
एहिना एक बेर दुर्वासा देल मंत्र एकटा,
पढ़ब मोनसँ देव आएत बजेबनि जिनका।

ब्यासक ई कवित्व मोनक बात कहलक,
वर-मंत्र-पुनर्जन्म सबहक तत्त्व तकलक।

नेनमति बुद्धि छल कुन्तीक, सूर्यकेँ बजाओल,
पुत्र-प्राप्ति भेल से बाधक छल लोकलाज,
बहा देल बच्चाकेँ बिच गंगधार।

कौरवक सारथी अधीरथकेँ भेटल ओ,
कर्ण राधेय माए राधा पोषित सूतपुत्र पराक्रमी,
शरीर कवचयुक्त कान कुंडलसँ शोभित।

पाण्डुक फेर कुंतीसँ विवाह भेल,
मद्रनरेशक पुत्री माद्री दोसर पत्नी भेलि।

पाण्डु युद्ध-कार्य मात्र कएल जीति राज,
दूर रहि राज-काज भोगल सुख मात्र !

कुंती-माद्रीक संग वन-विचरण मे रत।
शिकार खेलाइत वनमे,
एक मुनि श्राप देल संतानविहीनताक।

पाण्डुक संतान प्राप्तिक इच्छा देखि कुंती,
खोललन्हि दुर्वासाक देल मंत्रक भेद।
यमसँ धर्मराज,भीमसेन वायुसँ,
इंद्रसँ अर्जुन कुंतीक पुत्र तीन भेल।

कुंतीक मंत्रसँ माद्रीकेँ भेल पुत्रक आश।
अश्विनद्वय सँ भेल नकुल-सहदेव प्राप्त।

पाण्डुक मृत्यु पंचपाण्डव जन्मक बाद,
भेलीह सती पतिक संग माद्री वनहिमे।

पाण्डव ओ कुंतीकँ बोनसँ हस्तिनापुर,
अनलन्हि नगरमे सभ वनक मुनिवर सभ।
पंच पाण्डवक संग आयलि कुंती नगर।

जुमि गेल सभ नर नारी ठाम-ठामे।
ऋषि-मुनि वन प्राणीक संगतिमे शील।
मुग्धित सुशील पाण्डवकँ मोन भरि देखि-गुणि।

कृपाचार्यक आचार्यत्वमे शिक्षा,
पाबि रहल दुर्योधन कौरव,
पाबि सकए छथि हुनके लग रहि,
पाण्डव जन सभ शिक्षा ई सभ ।

धृतराष्ट्र सोचि ई तखन कएल,
ताहि तरहक व्यवस्था,
दुर्योधन-कौरवक संग रहताह
पंच पाण्डव भ्राता।

भीम छलाह बलशाली सभमे,
दुर्योधनमे छल इरखा बड़।
करए लागल दुर्योधन भीमक,
मृत्यु योजना गंगे तट !

जल क्रीड़ाक हेतु गेल लए,
तट दुर्योधन पाण्डवकँ।
खाद्य मध्य मिलाओल विष,
खोआओल भोजन भीमहिकँ।

सभ गेल नहाबए गंगमध्य,
नशा भीमकेँ आयल,
कात अबैत खसलाह
ओतए भीम अड़रा कय ।

दुर्योधन बान्हल लताकुञ्ज सँ ।
फेकल धारमे ओकरा निश्चिंत,
त्रास मुक्त कौरवघुरि आयल।
गंग मध्य डँसलक एक नाग,
विष कटलक विषकेँ !
से देखू
काटत के पाण्डवक भाग।

विषक प्रभाव भेल दूर,
भीम चललाह घरकेँ,
उठलाह झुमैत होइत मदमस्त,
कथा सुनाबए भ्राताकेँ।

युधिष्ठिर घरमे सोचथि,
भीम पहुँचि गेल होएताह।
नहि देखल घर भीम,
माथ पर बल अएलन्हि कनेटा।

तावत भीम झूमि अएलाह,
षडयंत्रक कथा सुनाओल ।
कुंती चिंतित भेलि विदुरसँ,
पूछल भेल ई उचित !

विदुर बुझाओल पाण्डव छथि बलशाली किञ्चित।
हुनकर दुर्योधन करि पाओत,
नहि कोनो अहित।

भीमकेँ जिबैत देखि दुर्योधन-भ्राता,
मोन मसोसि रहि गेल ओ दुष्ट दुरात्मा।

कौरव पाण्डव लीन कंदुक खेलि रहल।
कंदुक खसल इनारमे नहि निकलि रहल।
सोझहि छल एक शिअक बाटे आबि रहल,
तेज जकर ओकर महिमा छल गाबि रहल।

बाणक वार पुनि पुनि कएल फेर ऊपरसँ,
खेंचि कय निकालल गेंद धनुर्विद्याकौशलसँ।

भीष्मकँ सुनाएल बालवृन्द कलाकारी ओकर,
द्रोण नाम्ना कृपाचार्यक छल जे बहिनि वर।

अश्वत्थामा पुत्र जनिक सहपाठी द्रुपद छल।
द्रुपद देल एकवचन राज देब आध हम।
देल वचन बिसरलसे राजा बनला उत्तर।
अपमानित कएल से फूटि, राजा ओ दंभी।
प्रतिशोधक बाट ताकि रहल द्रोण बनि प्रतिद्वन्दी।

निर्धनताक जिनगी जिबैत छलाह घूमि रहल।
अश्वत्थामाक संग आजीविकाक ताकिमे पड़ल।
हस्तिनापुरक आग्रह छलाह नहि टारि सकल।
कृतज्ञताक भारसँ अश्वत्थामा-द्रोण हस्तिनापुरक।

धनुर्विद्याक पाठ शुरु कएल कौरवक आ पाण्डवक।
पाठक उपरांत समय आएल छल लक्ष्य भेदक।

परीक्षाक चातुर्यक संगहि कुशलताक रण-कौशलक।
लक्ष्य बनल एकटा गोट-बेश ऊँच वृक्ष पर,
राखल काठक चिड़ै आँखि जकर लक्ष्य छल।

सभकँ पूछल द्रोण बाजू की छी देखि रहल?
सभ क्यो गाछ वृक्ष पक्षिक संग देखि रहल।

पार्थकँ पूछल अहाँ छी कथी देखि रहल सकल।
माथ पक्षिक अतिरिक्त नहि किछु छी देखल।
अर्जुनक बाण पक्षिक शिरोच्छेदन कएलक।

अर्जुन भेलाह प्रिय-स्नेहिल द्रोणक हृदयक।

बीतल समय शस्त्र-प्रदर्शनक छल आएल।
समय बीतल प्रदर्शन-शस्त्रक छल आयल।

भीष्म पूछल द्रोणसँ की-की सिखाओल,
युद्ध-कौशल,व्यूह रचना आ शस्त्रकौशल।

प्रदर्शनक व्यवस्था भेल जनक बीचहि,
एकाएकी सभ भेलाह परीक्षित संगहि।

भेल भीम-दुर्योधनक गदा-युद्धक प्रदर्शन।
भीष्म-धृतराष्ट्रक हृदय-बिच वातसल्यक,
जखन छल द्वंदकबीच अर्जुक बेर आयल।
एकानेक बाण-विद्यासँ रंगस्थली गुंजित,
घोष अर्जुनक भेल बीचहि कर्ण आएल।

परशुराम शिष्य कर्ण कएलक विनय,
कए छी सकैत हम प्रदर्शन सभक जे,
विद्या जनैत छथि अर्जुन सकल सभ,
पाबि सह दुर्योधनक, ललकारा देलक,
अर्जुन द्वंद हमरासँ लड़ू से प्रथमतः।

कृपाचार्य कहल सारथीपुत्र छी अहाँ,
राजकुमारसँ द्वंदक अधिकारी कहाँ?

द्वंदता नहि अहाँसँ फेर बात द्वंदक,
द्वंद-युद्धक गप आएल ओना-कोना?

हा ! हा! हा! चित्कार हृदयक,
कर्णक हृदयक चित्कार दुर्योधनेटा सुनलक।

ई सुनि दुर्योधन केलक ई घोषणा,
बात ई अछि तँ सभ सुनैत जाऊ,
अंग-देशक नृप कर्णकेँ बनबैत छी,
योद्धाक परीक्षण करैत अछि बाहु,

ई बाहु ! पकड़ि कर्णक बाहु कहलक ।

अंग देशक नृप कर्णकेँ बनबैत छी।
कहि ई अभिषेक कएल सभागारेमे,
अंकमे लेल कर्ण भेल कृतज्ञ ओकर।

उठि अर्जुन तखन ई बात बाजल,
हे कर्ण अहाँ जे क्यो छी, सुनू ई,
हम द्रोण शिष्य अर्जुन ई कहए छी,
बुझू नहि जे ई वीरताक वरदान टा,
नहि भेटल अछि से अहीँक सभटा।

गुरु नहि सिखओलन्हि हारि मानब,
प्रतिद्वंदीसँ द्वंद करब जखन चाहब।

करतल ध्वनिसँ सभागार भेल फेर गुंजित,
भीष्म उठि कएल संध्याक आगमन सूचित।

अर्जुनक गर्वोक्ति सुनि कर्णक हृदय छल,
मोन मसोसि नृप अंगक गामपर पहुँचल।

शिष्टताक हेतु पाण्डव भेलाह प्रशंसित।
भेल एहिसँ दुर्योधनक मोन शंकित।
शकुनि दुःशासन छल ओकर भक्त,
कर्णसँ भेँट उत्तर ओ भेल आश्वस्त,
धृतराष्ट्रकेँ सभक कनफुसकीसँ कए त्रस्त।

पिता छलहुँ अहाँ सिंहासनक अधिकारी,
जन्म-अंधताक रोकल राजसँ अहाँकेँ,
हमरा तँ नहि अछि एहन लाचारी।

युधिष्ठिरकेँ सभ मानय लागल,
सिंहासनक अधिकारी किएक ?
अहँक सेहंता की भए पाएल,
फलाभूत कोना अहुना ईएह।

युधिष्ठिर ज्येष्ठ हमरासँ अछि,
परंतु अछि अहाँक अनुजक पुत्र सएह।

कएल आग्रह जएबाक मेला वारणावतक,
पाण्डवसँक करू।
ता सुधारब व्यवस्था सभ,
कल्याणकारी कार्य सभसँ,
बिसरि जाएत पुत्र कुंतीक,
जन सकल हस्तिनापुरक।

धृतराष्ट्र मानल सभटा बात,
आदेश देल वारणावत जाथु,
कुंति देखि मेला-ठेला आउ।

विदुर भेल साकंक्ष भेद ई की,
सचर रहब युधिष्ठिर, कहल ई।

विदुरक नीति कएल साकंक्ष,
दुर्योधनक काटल सदि प्रपंच।

मंत्री पुरोचनसँ मिलि दुर्योधन,
लाखक महल बनबओने छल,
विदुर लगेलन्हि एकर पता,
संवाद सेहो पठओने छल।

वाहक संदेशक छल कारीगर,
निर्माण सुरँगक कएल।
लाखक महलक भीतर छल,
निर्माण से क्षणहिमे भएल।

पाण्डवकेँ निर्देश भेल छल,
खोह सुरँगहिमे सूतइ जाउ,
आगिक पूर्ण शंका से छल,
लगिते भीतरसँ बाहर अबै जाउ।

कृष्ण चतुर्दशीक छल ओ दिन,
पुरोचन भेल से अतिशय चंचल,
आगि लगाएत आइ ओ छल सँ,
युधिष्ठिर छल ई सभ बूझि रहल।

कए सचेत अपन माता-भ्राताकेँ,
यज्ञ कएलन्हि ओहि दिन से,
भात-भोज देलन्हि नगरवासीकेँ,
पंचपुत्र छलि भीलनी सेहो एक।

आह बेचारी ! कालक मारल वा मारल,
दू गोट द्वन्दतामे तेसर?

कालक सोझाँ ककर चलल जे,
सूतलि राति ओतहि सभ तेँ।

पुरोचन सेहो सुतल ओतहि,
बाहर दिश छल कोठली एक,
आगि लगाओल भीम तखन,
बीच रातिमे मौका केँ देखि।

लाक्षागृह छल बन से ओतए,
अग्नि देवता अहि केर लेल।

घरक सुड्डाह होइमे लागत,
से एकहु क्षण किएक?

नहि बिलमि माता- भ्राता,
प्रणामअग्निदेवकेँकए।
निकलि कुंति कालक गालसँ,
बचलि दुर्योधनक कुचालिसँ।

पुरोचन अग्नि मध्य से उचिते भेल,
किन्तु भीलनि जरलि बेचारी,

पुत्र सहित से सूतल,
ककरो बुझना छल नहि गेल ई छल।

नगरवासी बुझलन्हि जे जरलि,
कुंती पाँचो पुत्र सभहिक संगे।

नगर शोकसँ भेल शोकाकुल,
खबरि हस्तिनापुर ज्यौँ गेलैँ।

दुर्योधन छल अति प्रसन्ना आ,
धृतराष्ट्र प्रसन्न छल मोने-मोने।

परंतु विदुर सभसँ बेशी प्रसन्न,
किएक तँ सत्य बूझि छल गेले।

से ओ कहल भीष्मकेँ सभटा,
बात रहस्यक जा कए ओतए।
भीष्मक चिंता दूर कएलन्हि,
ई सभ गप जाय बुझा कए ।

अकाबोन पहुँचैत गेलाह गए,
पाण्डव-जन कष्ट उठा कए।
नाविक नावक संग प्रतीक्षा,
करि छल रहय विकल भए।

कहलन्हि विदुर पठेलन्हि हमरा,
आज्ञा दी गंगतट सेवा करबाक।
गंगा पार भेलथि पाण्डव जन,
पाछू छूटल कतेक भभटपन।

धृत्राष्ट्रक,दुर्योधन आ शकुनीक,
आ दुःशासन कर्ण सबहीक।
संग मुदा लागल प्रतिशोध,
हस्तिनापुरक छल ई दुर्योग।

नहि जानि जाएत कई पथ ई,
पथ न जतए छल ओहि वनमे,
डेग दक्षिण दिशा दिश दी,
गंतव्यक छल नहि ज्ञान कोनो जे !

दैत डेग बढ़ैत आगू,
भूखल-पियासल थाकल ठेहिआयल,
आह दुर्दशा देखू !

कुंतीक ई दशा देखि, भीमसँ नहि छल गेल रहल,
वट-वृक्षक नीचाँ बैसा कए, चढल देखल सजग भऽ।

पक्षी किछु दूर छल ओतए, भीम जाए पहुँचल जलाशय,
पानि पीब आनि पियाओल, सुतल सभ कुम्हलाय ओतए।

भीमकेँ नहि गेल देखल, करथि की हूसि मोन होअय,
पोखरिक गाछक ऊपर छल राक्षस नाम हिडिंब जेकर।

हिडिंबा बहिनक संग छल, ताकि रहल अपन भोजन।
मनुक्ख-गंध सूंघि कए, चलल नर-मांस ताकिमे ओ,
हिडिंबे जो मौस-मनुक्खक, आन जल्दी ओतए जाकए।
देखि कुंती-पुत्र संग सूतल, दुःखित हिडिंबा छल ताकैत,
भीमक हृष्ट-पुष्ट शरीर देखि, ठाढ नेत्रे रहलि ताकए।

धरि धारण रूप सुन्दरीक, कहल भीम जाऊ उठाऊ,
अपन माता बन्धुकेँ, दूर सुरक्षित हिनका पहुँचाएब।

मोहित छी हम अहाँ पर, चाह हमरा अछि विवाहक,
मायासँ हम बचाएब, बलवान क्रूर हिडिम्बक मारिक।

भीम कहल हम किए उठाएब, बंधु केँ सुतल अपन,
बलवान अछि हिडिंब एहन, बल देखए हमरो तखन।

हिडिम्ब पहुँचल ओतए, हिडिम्बा छलि सुन्दरीक रूप बनओने,
भीमसँ करि रहलि छलि गप, क्रोधसँ क्रोधित हिडिम्बकेँ कएने।

ओ दौड़ल हिडिम्बा पर मारक हेतु, भीम पकड़ल बिच्चहिमे,
मल्लयुद्ध पसरल ओतए से, विकट द्वंदक हुँकार छल गूँजैत।

वन्यप्राणी भागए लागल आ उठलि कुंती-पांडव ओतए,
पहुँचैत गेल दौगैत ओतए, रणभूमि साजल छल जतए।
मारि देलक भीम तावत, भेल हिडिम्ब शवरूप यावत।

भीमक वीरतासँ हिडिम्बा भेलि छलि आनंदित,
वाकचातुर्यसँ कएने छलि कुंतिकेँ प्रसन्न किंचित्।

युधिष्ठिर सेहो देल स्वीकृति माता कुंतीक विचार जानि,
विवाह करि कए रहए लागल, भीम हिडिम्बाकेँ आनि।
घटोत्कच उत्पन्न भेल, पिता तुल्य पराक्रम जकर छल।

दिन बीतल पाण्डव वन छोड़ि कए आगाँ जाए लागल,
जाएब हिमालय दिशि पुत्रक संग ई हिडिम्बा बाजलि।

घटोत्कच कहल पितु माताक हम सदिकाल संगे रहब,
होएत कोनो कार्य अहाँक, बजाबएमे नहि संकोच करब।

जाइत काल ब्यास भेटलाह कुंती कानलि हाक्रोस भए,
भारतक लेखक आएल बनि काव्यक पात्र भए !!

ब्यास कहल नहि कानू दिन छोट पैघ होएबे करय।
दुःख आकि सुखमे अपना पर नहि छोड़ए अछि नियंत्रण,
धर्मपथ पर जे चलए,तकरे कहए छी मनुष्य तखन।
गर्वित सुखे नहि होए, दुःखमे धैर्यक न अवलंब छोड़ए,
कुंती आ अहँक पुत्र छथि, तेहन जेहन ई मनुष्य होमए।

ब्यास काव्यक पात्रकेँ देखाए रस्ता सोझ किन्तु,
पात्रक चरित्रमे नहि अड़ाओल अपन आकांक्षा एको रति ।
धन्य तैँ ओ कवि आ ओकर कृति !!

पाण्डवजन पाबि ई संबल, पहिरल मृगचर्म वल्कल,
ब्रह्मचारी केर भेष बनाओल, एकचक्री नगर पहुँचल।

रहल बनि अतिथि ओतए, आतिथ्य ब्राह्मणक पाओल,
भाइ सभ जाथि आनथि सभ राखथि माताक समक्ष।

कुंती देथि आध-भीमकेँ आधमे शेष सभ मिलि खाथि,
भीमक तैयो भूख मेटाइन्हि नहि भुखले ओ रहि जाथि।

भुखले छलाह भीम एक दिन गेलाह नहि भिक्षाटनमे,
सुनल घोर कन्नारोहट घरमे, पूछल कारण जानल से।

बकासुर राक्षस ओतए छल नगर बाहर निवास जकर,
राजा असमर्थ छल, राक्षस करए अत्याचार बड़-बड़।

छल निकालल समाधान जे सभ परिवारसँ प्रतिदिन एक,
कटही गाड़ी भरि अन्न मदिरा मौस, जाथि बहलमान।
बक खाइत छल सभटा भोजन संग बहलमानहुकेँ से,
कन्नारोहट मचल छल घर ब्राह्मण परिवारक मध्ये।

पार छल परिवारक आइ सभ परिवार दुःखित छल,
कुंती कहल पाँच पुत्र अछि, भीमक बल सुनाएल।
भीमक बलक चर्च सुनि-सुनि कए ब्राह्मण मानल,
कृतज्ञ भेल भीमकेँ ओ गाड़ीक संग खोह पठाओल।

खोह राक्षसक ताकि भीम खेलक, छल ओ भुखाएल,
तृप्त स्वयं भीम छल देरी सँ अतृप्त बकासुर आएल।

तामसे आक्रमण कएलक किंतु लात-मुक्का मारि कए,
भीम प्राण लेलक ओकरा खीँचि नगर द्वार आनि कए।

भेल प्रसन्न सभ जन मनओलक पूजा-पर्व ओतए,
कुंती चललीह आर किछु दिन ओहि नगर रहि कए।

सुनल पांचालक स्वयंबरक, कथा पांचालीक द्रुपदक,
एकचक्रा नगरीसँ ढेरक-ढेर ब्राह्मण पहुँचैत ओतए।

पाण्डवजन लए रहल आज्ञा मातृ कुंतीसँ रहथि,
ब्यास पहुँचि कहल जाउ स्वयंबर ओतए देखए !

मार्गमे ऋषि धौम्य भेटलाह छलाह पंडित ज्ञानी,
बढ़ल आगू तखन मिलि संकल्पित भऽ सभ प्राणी।

सुनि कथा प्रशंसा यज्ञसँ निकललि याज्ञसेनीक,
मत्स्यभेद करताह जे क्यो द्रौपदी वरण करतीह।

स्वयंबरक स्थानक रस्ता तकलन्हि पांचालमे जा कए,
कुम्भकारक घर डेरा देलन्हि विचार कुंतीक मानि कए।

कर्ण आएल छल दुःशासन, दुर्योधनक संग सज्जित,
देश-देशक राजा आएल छल रंगभूमि वीरसँ खचित।

तखन आयलि द्रौपदी भाइ धृष्टद्युम्नक संग सुसज्जित,
पुष्पमाल लेने आयलि केलनि सभक नजरि आकृष्ट।

बीच स्वयंबरक भूमिक ऊपर मत्स्य एकटा लटकल,
ओकर नीचाँ चक्र एकटा तीव्र गतिये छल घूमि रहल।

नीचाँ पानिमे छाह देखि जे चक्रमध्य पातर भुरकी तर,
दागि सकत मत्स्य आँखिकेँ पुष्पमाल पड़त तकरे गर।

सभटा राजा हारि थाकि कए भेल विखिन्न थाकल छल,
कर्ण देखि जन बाजि उठल सूत पुत्र किए आएल छल?

द्रौपदी बाजलि गाँथियो देत ज्योँ कर्ण मत्स्य-लोचनकेँ,
नहि पहिराएब वरमाला नहि करब वरण ओकराकेँ।

विवश कर्णकेँ बैसल देखि ऋषिवेश अर्जुन आएल छल,
एकहि शर-संधानसँ बेधल मत्स्य सुयश पाओल छल।

ब्राह्मण-मंडली कएने छल बुझि ओकरा ब्राह्मण जय-जयकार ओतए,
क्षत्रिय राजा सभ कएल विरोध, तैयार अर्जुन पुनि संधान कए।

बिद्ध मत्स्य भू खसल भूमि बलराम कृष्ण आगाँ आओल,
सभ राजाकेँ बुझाए सुझाए छल सहटाय ओतएसँ हटाओल।

कृष्ण एकांती कहल दाऊ सुनू ई, सुनल छल एक उरन्ती,
वारणावत आगि बिच बचल पांडव, बचल छलि कुंती दीदी।

भीम तखने उखाड़ि वृक्ष छल भेल ठाढ़ सहटि अर्जुन कए,
कृष्ण कहल हे दाऊ कालचक्र अनलक एतए भीम अर्जुनकेँ।

देखि पराक्रम हतोत्साहित भेल राजा सभ प्रयाण कएने छल,
पांडव लए चललाह द्रौपदीकेँ व्यग्र एहि सभसँ ओ भेलि छलि।

अर्जुन खोलि अपन रहस्य, खिस्सासँ द्रौपदीकेँ कएल विह्वल,
धृष्टद्युम्न चुपचाप सुनए छल, घुरि पिताकेँ कथा ई कहलक।

कुम्भकारक घर पहुँचि पांडव कहल देखू की हम सभ आनल,
कुंती कहल आनल अछि जे सभ तकरा बाँटू पाँचू पाण्डव !!

कहल अर्जुन हे माता होएत नहि व्यर्थ अहाँक ई बात,
संग द्रौपदीक होएत विवाह पाँचू-पाण्डवक संग- साथ।

द्रुपद पठेलन्हि पुरहितकेँ धृष्टद्युम्नक संग ओतए,
कुंतीकेँ नोतल आ सभकेँ लए गेल संग अपन ।
द्रुपद सुनल जे पाँचू-पाण्डव करताह विवाह द्रौपदीसँ,
तखनहि ई कथा अछि पूर्वजन्महिक ब्यास आबि सुनाओल!!

भेटल छलन्हि वरदान शिवसँ जे पाँच पति अहाँ पाएब,
सुनि सभ द्रौपदी विवाह द्रुपद रीति वैदिक सँ कराओल।

सभ किछु दिन रहल ओतए कुशलसँ द्रुपद केर महलमे,
पसरल ई चर्चा सगरो धरि गेल गप हस्तिनापुर महलमे।

लोकलाजसँ बाह्य प्रसन्नता धृतराष्ट्र छल ओतए देखओने,
मानि भीष्म-द्रोणक विचार पठाओल समाद अगुतओने।

आनी अनुज पत्नी पुतोहु ओ अनुज पुत्र सभकेँ आदरसँ,
दुर्योधनक कर्णक विरोध पर कएल विचार विदुरकेँ बजाकय,
शास्त्रानुसार विचार देलन्हि आधा राज्य देबाक ओ जाकए।

विदुरहिकेँ पठाओल धृतराष्ट्र आनए राजमहलसँ द्रुपदक,
सभकेँ लए आनल पहुँचल ओ जन ठाढ़ करए स्वागत।
धृतराष्ट्र कहल हे युधिष्ठिर गृह कलहसँ ई नीक होयत,
जाए खाण्डवप्रस्थ बसाउ नव नगर आध राज लऽ कए।

खाण्डवप्रस्थ अछि बोन एखन पहिने छल राजाक नगरी,
मानि युधिष्ठिर गेल ओतए बनाय नव घर द्वार सज्जित।

इन्द्रप्रस्थ छल पड़ल नाम आ तेरह वर्ष धरि केलन्हि राज,
यश छल सुशासनसँ आ छल जन-जीवन अति संपन्न।

छल अहिना दिन बीति रहल अएलाह नारद एकदिन जखन,
स्वागत भेलन्हि खूब हुनकर ओहो रहथि आनंदित तखन।

देखल शील-गुण पांडवक मुदा कहल द्रौपदीसँ सुनू बात ई,
छी पत्नी पांडवक मुदा निवासक निअम किए नहि बनेने छी ?

नारदक बात समीचीन छल से निअम बनेलथि पाँचो गोटे,
एक-एक मास रहथु सभ लग द्रौपदी निअम नहि भंग हो !

बारह वर्ष पर्यंत छोड़ए पड़त गृह त्रुटि भेल ज्योँ,
पालन निअमक होमए लागल किछु काल धरि ई ।
कनैत अएलाह विप्र एक अर्जुन पुछलन्हि बात की ?

चोर छल चोरेने गौकेँ हाक्रोस विप्र छल करि रहल,
शस्त्र छल गृहमे द्रौपदी संग युधिष्ठिर जे रहि रहल।

विप्रक शापसँ नीक सोचि मूरी झुकेने गेल अर्जुन,
शस्त्र आनि छोड़ायल गौकेँ घुरि आएल गृह तखन।

माँगल आज्ञा युधिष्ठिरसँ दिअ गृहत्यागक आज्ञा,
निअम भंगक कएल हम अपराध, की बाजल अहाँ ?

अर्जुन ई अपराध लागत जखन पैघक द्वारा होएत,
छोट भाए कखनो अछि आबि सकैत बड़ भाय घर।

मुदा निकलि गेलाह अर्जुन आज्ञा लए माता भाएसँ,
भ्रमण देश-कोसक करैत पहुँचल हरिद्वार गंग तट,
स्नान करैत काल, नजरि छल नाग कान्याक ज्योँ,
कोना बचि सकैत पहुँचि गेलाह पातालक निकट।

विवाह प्रार्थना स्वीकारल अर्जुन ई छल वरदान भेटल,
जलमे रस्ता बनत चलि सकब अहाँ व्यवधान बिन।

मणिपुर पहुँचि जतए चित्रांगदा राजकन्या छलि रूपवती,
विवाहक प्रस्ताव अर्जुनक स्वीकारल मानल राजा सशर्त,
दौहित्र होएत हमर वंशज भेल ई विवाह तखन जा कए।

चित्रांगदाक पुत्र भेल बभ्रुवाहन नाम राखल गेल जकर ई,
परम प्रतापी पराक्रमी योद्धा बनल बालक पाछू सुनए छी।

फेर ओतएसँ निकलि अर्जुन पहुँचल प्रभास तीर्थ द्वारका निकट,
शस्त्र-प्रदर्शनक आयोजन केलन्हि कृष्ण निकट पर्वत रैवतक।

प्रेम देखि सुभद्रासँ कृष्ण छलाह सुझओने नव उपाय ई,
अपहरण करब जीतब युद्ध यादवसँ बनत तखने बात ई।

बनलि सारथी वीर सुभद्रा संग्राम छल बजरल जखन,
बुझा-सुझा मेल छल करओने कृष्ण जा कए तखन।

विवाह भेल तदंतर अर्जुन संग सुभद्रा गएलाह पुष्कर,
पुरल जखन ई वनवास कृष्णक संग पहुँचल इंद्रप्रस्थ।

देखि नववधू प्रसन्न कुंती आनंद नहि समटा रहल,
द्रौपदीसँ पाँच पुत्र, आ अभिमन्यु सुभद्रासँ भेल छल।

बीति छल रहल दिन जखन अएलाह जीर्ण शरीर अग्नि,
रोगक निदान छल खांडव वन रहए छल ओ सर्प तक्षक।

इंद्रक अछि मित्र ओ जखन करैत छी जरेबाक हम सूरसार,
नहि जरबए दैत छथि इंद्र, करू कृपा अहाँ हे इंद्र अवतार ।

छी प्रस्तुत मुदा अस्त्र अछि नहि हमरा लग ओतेक,
इंद्र युद्धक हेतु चाही योग्य शस्त्रक मात्रा जरूरी जतेक।

देल गांडीव धनुष तूणीर अक्षय वरुणक रथ नंदिघोष,
चलल डाहबाक हेतु अग्नि पेलाक बाद अर्जुनक तोष।

इंद्र मेघकेँ पठओलन्हि कृष्ण कएल सचेत जे,
वायव्यक प्रयोग कएल अर्जुन मेघ बिलाएल से।

तक्षकक मृत्योपरान्त इंद्र भेलाह प्रकट ओतए,
माँगल अर्जुन दिव्यास्त्र हुनकासँ मौका देखि कए।

जाऊ शिवक उपासना करू दए सकैत छथि वरदान ओ,
छल मय आयल अग्निक कोपसँ बचि लग अर्जुनक ओ।

सेवा करबाक बात छल मोनमे लेने कृतज्ञ छल ओ,
बनाऊ सभा भवन अनुपम नहि बनल जे कतहु होऽ।

मय दानव छल कए रहल नव निर्माण,
सभा भवनक दिन-राति लागि उत्थान।
स्फटिकसँ युक्त शीसमहल सन कौशल,
युधिष्ठिर ओतहि तखन सिंहासन बैसल।
ऋषि नारदक आगमन भेल ओतए जाए,
देलन्हि करबाक यज्ञ जे राजसूय कहाय।
बजाओल द्वारकासँ कृष्णकेँ समाद पठाय,
कृष्ण कहलन्हि सभा भवनमे आबि कए,
जरासंध मगधक नरेश रहत गए यावत,
राजसूय सफल नहि होमय देत तावत।

बंदी बनेलक राजा लोकनिकेँ ओ हराय,
आक्रमण ओकर भेल मथुरा पर बड़ड,
हारि द्वारका राजधानी बनाओल हम जाए ।

युधिष्ठिर बात सुनैत भेलथि हतास सन,
भीम अर्जुन आशा बन्हेलन्हि भ्राता सुन।
क्षत्रिय-धर्म अछि शत्रुकेँ वशमे करए,
कृष्ण,अर्जुन-भीम संग राजगृह चलल।

ऋषि वेशधारी राजगीरक प्राचीर लाँघि,
पहुँचल सभ सोझे सभा-भवन जी-जाँति।

सत्कार करए चाहलक जरासंध बुझि विप्र,
ललकारा देलक किंतु भीम द्वंद-युद्धक शीघ।

दिन बीतल खत्मक नाम नहि लैछ ई युद्ध,
कृष्णक संकेत पाबि चीरल ओ शरीर संधिसँ,

भीम तोड़ल शरीर जरासंधक उनटि फूर्त्तिसँ,
शरीर फेंकल दुहू दिशि उनटि एम्हर-ओम्हर,
मुक्त कएल कारागारसँ बंदी गण राजा सभकेँ।

जरासंध-पुत्र सहदेवकेँ दए मगध राजक गद्दी,
आपस भेलाह इंद्रप्रस्थ घुरलाह तीनू व्यक्ति।

पूर्व दिशि भीम उत्तर अर्जुन नकुल दक्षिण,
सहदेव पश्चिम दिशा दिशि दिग्विजय खातिर।

विजय रथ नहि क्यो रोकि सकल हुनकर,
धन-धान्यसँ परिपूर्ण सभ आबि कएल तैयारी,
राजसूय यज्ञक भेल राजा सभक इन्द्रप्रस्थमे बजाही।

राजा लोकनि केँ दय समुचित कार्यक भार,
भीष्म-द्रोणकेँ यज्ञ-निरीक्षणक देल प्रभार।
कृष्ण विप्र चरण-धोबाक लेलन्हि काज ।
हस्तिनापुरसँ भीष्म, द्रोणक संग भेल आगमन,
धृतराष्ट्र विदुर कृप अश्वत्थामा दुर्योधन दुःशासन।

बीच यज्ञमे उठल छल प्रश्न अग्र-पूजाक,
भीष्मक सम्मति युधिष्ठिर पुछलन्हि जाए,
भीष्म कहल छथि श्रेष्ठ कृष्ण नृप बीच,
सहदेव सुनि वचन चरण पखारय लाग।

चेदिराज शिशुपालसँ सहल नहि भेल,
अपशब्द कृष्ण-भीष्मकेँ देबए लागल,
दुर्योधन-भ्राता प्रसन्न छल भेल,
भीमक क्रोध बढ़ल छल ओ झपटल,
भीष्म रोकि शांत छल ओकरा कएल।

शिशुपालक गारि सुनियो छल कृष्ण प्रशांत,
छलाह किएक तँ ओ पिसियौत कृष्णक,
दिन बीतल कृष्ण देलथि वचन दीदीकेँ एक,
सए अपराध क्षमा हम करब ओकर।

सए गारि सुनलाक उपरांत चलल सुदर्शन,
चक्र कएलक चेदिराजक शिरोच्छेद तखन,
सभा मध्य शांति पसरल छल जाए,
शिशुपाल पुत्रकेँ चेदिक गद्दी पर बैसाय।

यज्ञक क्रिया निर्विघ्न संपन्न छल भेल,
सभ राजाकेँ ससम्मान विदा कएल गेल।

सभा भवनक चामत्कृत्य भेल चर्चित,
दुर्योधन-शकुनि भवनकेँ देखल चकित।
नीचाँ देखि मृग-मरीचिका बान्हल फाँढ़,
पानि नहि छल हसलि द्रौपदी ई जानि,
अएना साँझा पारदरर्शी नहि ई देखल,
ओ चोटिल भीमक अट्टहाससँ विकल।

आँगा स्फटिक फर्श छल जकरा बुझल,
पानि भरल भीजल छल सभ हँसल।

अपमानित छल लए युधिष्ठिरसँ आज्ञा,
चलल हस्तिनापुर शीघ्रहि सभ भ्राता।
क्रोधित हृदय ईर्ष्याक वशमे छल दुर्योधन,
शकुनि संग मंत्रणा कए कऽएकटा विचारल,
सोझे युद्धमे पांडवकेँ हरेनाइ अछि मोश्किल,
सोचि ई दोसर व्यूह रचलन्हि दुष्ट शकुनि।

भव्य सभा भवन एकटा हम सभ बनाएब,
पाण्डव-जनकेँ देखबा लेल सेहो बजाएब,
द्यूत खेलक छी महारथी हम गांधारवासी,
धृतराष्ट्रकेँ कहि आमंत्रित कराऊ बजाऊ।
भवन बनि कए तैयार भेल एके निसासी।

द्यूत खेलक आमंत्रणक हेतु धृतराष्ट्र विचारल।
विदुर कहल राजन् खेल करत विनाश सभकेँ,
दुर्योधनक अंधप्रेममे धृतराष्ट्र मुदा नहि मानल।

स्वयं विदुर गेलाह देबए निमंत्रण इंद्रप्रस्थ,
पाण्डव जनकेँ अएला पर भेल प्रेम-मिलन।
मुदा हृदयक विष बहराइत जल्दी कोना कए,
दुर्योधन लए गेलाह युधिष्ठिरकेँ सभा भवनमे।

द्यूतक चर्च सगरय होमए लगल छल ओतए,
शकुनि माटि फेंकि कहल युधिष्ठिर भऽ जाए,
सकुचाइत छी क्षत्रिय भऽ करए छी अनुचित।
युधिष्ठिर तैयार जखने भेलाह, दुःशासन कहल,
ई खेल होएत यधिष्ठिर आ दुर्योधनक बिच,
मामा शकुनि पास फेंकताह दुर्योधनक दिशिसँ,
हुनक हारि जीत मानल जईत दुर्योधनक से,
दोसर दिन खेल भेल सभा भवनमे भारतक हे!!
सभा भवन दर्शकसँ छल भरल,छल ओतए,
भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र उपस्थित।

पहिने रत्नक बाजी फेर चानी-सोनक लागल,
फेर छल सभक अश्व-रथ लागल जुआ पर ।

मुदा जखन तीनू टा बाजी युधिष्ठिर हारल,
सँसे सेना लगाओल दाँव पर ओ अभागल।
फेर बेर आएल राज्यक फेर चारू भाँय केर,
युधिष्ठिर बाजल नहि बचल लग हमरा लेल।

शकुनि कहल छथि द्रौपदी अहाँक बिचमे।
एहि बेर ज्योँ जीतब अहाँ, दए देब हम सभ,
भाइ,राज्यसेना,अश्व-रथ,रत्न चानी सोन सभ।

युधिष्ठिर सुनि ई भऽ गेल छल तैयार जखने,
हा। धिक्। पापकर्म की भए रहल अछि ई।
सभा बिच उठि पड़ल सभक नाद ई सभ।
युधिष्ठिर सेहो कहल हम कएलहुँ की ई ?

आनन्द मग्न कौरव छल, मुदा संतप्त एकेटा,
दुर्योधन-भ्राता युयुत्सु छल शोकाकुल सएह टा,

शकुनि आब एहि सभक बीच, फेकलक पासा,
ई बाजी हमर, हुंकारलक शकुनि हारल युधिष्ठिर !!

द्रौपदीकेँ हारि ठकाएल ठाढ़ छल सभा बिच।

भय मदान्ध दुर्योधन कहल हे विदुर,
जाऊ समाचार ई द्रौपदीकेँ जाए सुनाऊ।
छथि ओ हमर दासी झाड़ू-बहारू करथि,
महलमे आबि हमर ई आदेश सुनाऊ।

विदुर कहल औ दुर्योधन घमण्ड छोड़ू,
स्त्रीक जुआरी अहाँ हमरा नहि बुझु।

देखि विदुरक ई रूप पठाओल विकर्णकेँ,
जाऊ दासी द्रौपदीकेँ जाए आनू गए,
विकर्ण ई द्रौपदी लग कहि सुनाओल।

चकित द्रौपदी कहल स्वयंकेँ जे हारल,
युधिष्ठिर कोनाकेँ अधिकार ई पाओल,
अपन हारिक बाद होएत क्यो सक्षम,
दोसरकेँ हेतु जुआमे लगाबए केहन।

ई प्रश्न जखन राखल विकर्ण सभा बीच आबि,
दुर्योधन कहल दुःशासन जाऊ पकड़िकेँ लाऊ।
बुझाओल द्रौपदी दुःशासनकेँ, जखन ने मानल,
भागलि गांधारीक भवन दिशि, दौगल दुःशासन,
खूजल केशकेँ पकड़ि घिसिअओने छल आनल।

हा! भारत ! ब्यास मुदा नहि अहाँ कोनो तथ्य नुकाओल ।
सम्बल उदार भावनाक देल, तुष्टि पाओल!!

सभा भवन महापुरुष नहि थोड़ जतए छल।
भीष्म, विदुर, द्रोण, कृपा लाजक लेल गोँतने,
गारि माथ देखि रहल द्रौपदीक अश्रुपात।

सिंहनादमे भीम तखन ई बाजल,
सूर्य देवतागण रहब साक्षी अहाँ सभ,
हाथसँ दुःशासन केश द्रौपदीकेँ धएने,
उखाड़ि फेंकब हाथ ओकर ओ दूनू।

कौरव भए सँ भीत भेलाह नादसँ भीमक,
दुर्योधन देखल मुदा देखि ई छल बाजल,
जाँघ पर दैत थोपड़ी करैत घृणित इशारा,
द्रौपदीकेँ बैसबा लए ओतए कहैत छल।

गरजि कहल भीम अधम दुर्योधनसँ,
तोहर जाँघकेँ तोडब प्रचण्ड गदासँ।

खिसियाकेँ दुर्योधन देलक ई आज्ञा पुनः ई,
चीर-हरण करू दुःशासन द्रौपदी दासी छी।

द्रौपदी कएलन्हि नेहोरा श्रेष्ठ लोकनिसँ
विनय ई अछि लाज बचाऊ करैत छी विनती।

सभ क्यो झुका माथ अपन ओहि सभामे,
कृष्णा छोड़ल सभ आश सभ दिशासँ,
भक्त वत्सल अहाँसँ टा अछि ई आशा,
कोहुना राखू हमर ई लाज अछि प्रत्याशा।

आर्द्र-स्वरसँ छलि रहलि पुकारि द्रौपदी,
गोहाड़ि खसलि सभा-बिच, मूर्च्छित ।

लागल खीचय द्रौपदीक वस्त्र दुःशासन,
सभासद देखल चमत्कार ई प्रतिपल,
यावत रहल खिंचैत वस्त्रकेँ दुःशासन,
बढ़ैत रहल वस्त्र द्रौपदीक तावत तखन।

थाकि-हाँफि बैसल जखन दुःशासन,
कहल भीम सुनू सभ एहि भवनमे,
यावत फाड़ि छाती दुःशासनक ऊष्म रुधिरकेँ,

पीयब, नहि पियास मेटत मृत्यु भेटत नहि।

सुनि प्रतिज्ञा ई सभ भयसँ थड़थड़ाए लागल छल।
धृतराष्ट्र देखि दुर्घटना द्रौपदीकँ लगमे बजाओल,
सांत्वना दए शांत कएल युधिष्ठिरसँ छल बाजल,
बिसरि जाऊ इन्द्रप्रस्थ सुख-शांतिसँ रहए जाउ,
जे हाड़लहुँ, से बुझू देल हम ठामहि लौटाएल ।

संतोष भेलन्हि पाण्डव-जनकँ ई सुनि,
कथा धृतराष्ट्रक घुरलाह इन्द्रप्रस्थ पुनि।

दुर्योधन दुःखित मंत्रणा कएल शकुनिसँ,
संग दुःशासन कर्णक मंत्रणा फेर जुआक,
विनाशक हस्तिनापुरक छल बेर खराप।

एहि बेरक निअम राखल हारत जे से करत,
बारह वर्षक वनवास आ एक वर्ष अज्ञातवास।

धृतराष्ट्र दूत पठाओल हस्तिनापुर फेर।
युधिष्ठिर घुरलाह भाएक संग बेर-अबेर,
सुनाओल गेल शर्त्त सभ रोकल एक बेर।

मुदा भाग्यराजक आगाँ ककर अछि चलल,
नहि मानल कएल युधिष्ठिर भाग्यक खेल!

चलि फेर पासा दुर्योधनक, वैह खेरहा,
फेंकि गोटी जिताओल शकुनि ओकरा।

हारि हारल राज्य, पाओल छल बनबास,
युधिष्ठिरक भाग्य चालि कुचालिक जीत,
राज्यक निर्णय जुआक गोटीक संगीत,
की होएत से नञि जानि सुन्न अकास।

धर्मराज सभ हारि,
चलल फेर वैह पथ,
धर्मक आ शान्तिक,
छोड़ि सभ बिसारि।

माता कुन्ती छलि वृद्धा भेलि कहल,
कहल धर्मराज नञि जा सकब अहाँ,
विदुर काक केर घर जा रहब,
जाएब कर्म भोगए हम सभ।

द्रौपदीक पाँचू पुत्र आ पुत्र अभिमन्युक,
सुभद्रा जएतीह अपन नैहर द्वारकापुर।

धौम्य पुरहित संग द्रौपदी आ चारू भाए,
काटब हम संग तेरह वर्षक वनवास जाए।

नगरवासी सुनि गमनक ई समाचार,
कएलन्हि दुर्-दुर दुर्योधनक अत्याचार।

जाएब हमहुँ सभ संग, धर्मराज आइ,
धर्मराज घुराओल सभकेँ बुझाए जाए।

सभ घुरि गेल मुदा, नहि घुरल विप्र जन,
पुरहित कएलन्हि उपासना सूर्यक एहि क्षण।
वैह दैत छथि अन्न-फल समग्र आर्य,
उपासनाक उपरान्त प्रगट भेलाह सूर्य।

देलन्हि अक्षय पात्र नहि कम होएत अन्न,
द्रौपदी सभ विप्रकेँ आ पाण्डवकेँ खोआबथि,
फेर खाथि, सभ अघाथि, नञि होए खतम,
जखन नञि होए खतम पात्रसँ खाद्यान्न।

युधिष्ठिर पहुँचि सरस्वती धारक कात,
काम्यक वनमे कएलन्हि निवास।

एहि बीच सुनैत पाण्डव-प्रशंसा मुँहसँ विदुरक,
धृतराष्ट्र निकालि हटाओल विदुरकेँ दरबार-मध्य।

ओहो आबि लगलाह रहए काम्यकवनमे,
पुनि पठाओल धृतराष्ट्र ओतए संजयकेँ।

पाण्डव-जनक बुझओला उत्तर विदुर,
धृतराष्ट्र सँग गेलाह पुनि दरबार घुरि।

ऋषि-मुनिक सत्संगसँ लैत शिक्षा आ दीक्षा,
अगस्त्यक, ऋषि श्रृंग, अष्टावक्रक, लोपामुद्राक,
सुनैत छलाह कथा सरिता नल दमयन्तीक ।

कृष्ण आबि बुझाओल ब्यास अएलाह !!

ब्यास कहल युद्धक हेतु करू तैय्यारी,
बिनु इन्द्रक अमोघ शिवक पाशुपत्याह,
कोना लड़ब संग भीष्म द्रोण महारथी ?

पाबि युधिष्ठिरक आज्ञा चललाह अर्जुन,
पर्वत कैलास पर पार कए कऽ गंधमदन।
तूणीर आ धनुष हुनकर संगमे छल,
साधु जटाधारी तपस्वी अर्जुनसँ पुछल।

ई छी तपोभूमि शस्त्रक काज नहि कोनो,
अर्जुन कहल हम क्षात्र धर्म कहाँ छोड़ल।

तावत शस्त्र सेहो ताहि द्वारे राखल अछि,
प्रसन्न भए इन्द्र अपन असल रूप धरल।

माँगू वत्स वर हमरासँ प्रसन्न छी हम,
शिक्षाक संग दिव्यास्त्र भेटए एहि क्षण।

अर्जुन अहाँक ई लालसा पूर्ण होएत मुदा,
जाऊ शिवकेँ प्रसन्न कए पाशुपत पाऊ।

फेर देवगण देताह दिव्यास्त्र अहाँकेँ,
ई शस्त्र सभ मानव पर चलाएब अछि वर्जित,
कहू अहाँ पाबि करब की दिव्यास्त्र सभ ई।

शक्त्ति-संचय अछि हमर उद्देश्य मात्र देव,
कौरव छीनल अछि राज्य छलसँ परञ्च,
नहि करब एकर कोनो कुप्रयोग नहि हम।

इन्द्रक अन्तर्धान भेलाक उत्तर अर्जुनक,
शिव तपस्या कठोर छल होमए लागल।

तखन पार्वती संग शिव चललाह तपोभूमि,
अर्जुन पुष्प बीछि रहल छलाह अबैत क्षण,
वाराह वनसँ निकलि कए सम्मुख आएल।

जखनहिँ तूणीर धनुष राखि संधान कएलक,
किरात वराहकेँ लक्ष्य कएने दृष्टि आएल।
दुनू गोटे चलाओल वाण वाराह मारल,
एहि बात पर दुहू गोटे झगड़ा बजारल।

अर्जुनक गप पर जखन ठठाइत किरात,
अर्जुन ओकरा पर तखन वाण चलाओल,
परञ्च देखि नहि घाव कोनो प्रकारक,
अर्जुन किरात पर छल तलवार भाँजल।

मुदा किरातक देहसँ टकाराइत देरी,
भेल अर्जुनक खड्गक टुकड़ी छुबैत देरी।

मल्ल युद्ध शुरू भेल भेल अचेत अर्जुन,
उठल जखन शुरू कएल पूजन कुलदेवक ओ,
पुष्प पहिराए शिवकेँ उठल गर छल ओ माला,
किरातक गरदनि मध्य, देखि साष्टांग कएल तहिखन।

किरात वेशधारी शिव कहल वर माँग अर्जुन,
पाशुपत अस्त्र माँगल, छोड़ब रोकब एकरा सीखल पुनि।

शिव कहल बुझू मुदा ई तथ्य अछि जे,
मनुष्यक ऊपर एकर प्रयोग कखनहु करब नञि।

तखन अर्जुन निकलि गेल इन्द्रलोक दिशामे,
पाबि दिव्य अस्त्रक शिक्षा मारल असुर ओहिसँ।

एक दिनुक गप उर्वशा आयलि करैत याचना प्रेमक,
अर्जुन कहल अहाँ तँ छी अप्सरा गुरु इन्द्रक।

माता तुल्य भेलहुँ ओहि संबंधसँ अहाँ हमर,
आएल छी हम एतए शिक्षा प्राप्तिक लेल शस्त्रक,
तपस्या नृत्यक आ संगीतक करए भोग नहि,
ताहि दृष्टिये अहाँ भेलहुँ हमर माता गुरु दुनु।

उर्वशी तखन देलक ओकरा शाप ई टा,
कामिनीक अहाँ शाप सुनू निर्वीर्य रहब अहाँ ।

वर्ष भरि मुदा किएक तँ कहल माता,
शाप ई पुनि बनत वरदान नुकाए सकब अहाँ।

पाण्डव जन सेहो पाबि रहल ऋषि मुनिसँ शिक्षा,
समाचार देलन्हि नारद अर्जुनक कहल आएत,
लोमश ऋषि आबि समाचार अर्जुनक सुनाएत।

किछु दिनमे लोमश ऋषि अएलाह ओतए,
कहल प्राप्त कए पाशुपत शिवसँ कैलासमे,
अर्जुन देवलोकमे प्राप्त दिव्याशस्त्र कएल,
नृत्य संगीतक शिक्षा अप्सरा गंधर्वगणसँ

लए रहल शिक्षा अर्जुन देवलोकमे सनजम सँ।

तखन ऋषि तीर्थाटन कराऊ हमरा लोकनिकैं,
लोमश तखन गेलाह नैमिषारण्य पाण्डव संग।
प्रयाग गया गंगासागर पुनि टपि कलिंग पहुँचल,
पच्छिम दिशि प्रभासतीर्थ यादवगण जतए छल।

स्वागत भेल ओतए सुभद्रा मिलिल द्रौपदीसँ,
बलराम कृष्णक सांत्वना पाबि बढ़ल आगाँ,
सरस्वती पार कए कश्मीर आ गंधमादन पर्वत,
पार कए चढ़ल पर्वत वर्षा आ शिलापतन बिच।

पहुँचि गेलाह बदरिकाश्रम विश्राम कएल ठहरि।
ओतहि दुःशला पति जयद्रथ काम्यक वनसँ,
छल जा रहल देखल द्रौपदीकैं असगर ओतए,
पाण्डवगण गेल छल शिकारक लेल तखन।

बैसल कुटीमे विवाह प्रस्ताव देल द्रौपदीकैं,
नीचता देखि द्रौपदी कठोर वचन जखन कहल,
रथमे लए भागल अपहरण कए दुष्ट जयद्रथ।

आश्रम आबि पाबि समाचार भीम ओकरा पर छुटल,
तखनहि अर्जुन सेहो आएल पाछू जयद्रथक गेल,
युधिष्ठिर कहल प्राणदान देब पति दुःशलाक छी ओ,
जयद्रथ देखल अबैत दुनू भाएकैं द्रौपदीकैं छोड़ि भागल,
भीम पटकि बान्हि आनल ओकरा द्रौपदीक सोझाँ,
द्रौपदी अपमानित कए छोड़बाओल ओकरा।

शिवक तपस्या कएल जयद्रथ वरदान माँगल,
जितबाक पाँचू पाण्डवसँ कहल शिव ई,
नहि हारब अहाँ कोनो भाएसँ अर्जुनकैं छोड़ि।

ब्यास परिश्रमकैं तपस्याक नाम देल,
आँखि मूनि मुदा ई पश्चात् मञ्चित भेल !!

कर्ण छल तपस्या कए रहल अर्जुनकैं हरएबा लेल,

इन्द्र सोचल शरीरक कवच कुण्डल अछैत ओ,
हारत नहि ककरहुसँ दानवीर पराक्रमी ओ छल।

सोचि ओकरासँ हम माँगब कवच कुण्डल,
देखि ई सूर्य कएलन्हि होऊ सचेत कर्ण,
आबि रहल इन्द्र छद्म वेषमे याचना करत ई,
कवच कुण्डल छोड़ि किछु माँगत नहि ओ।

कहल कर्ण याचककेँ हम नहि नञि कहब प्रण,
प्रण हमर नहि टूटत चाहे जे परिणाम होमए।

तखनहि विप्र वेशमे इन्द्र आबि दुहु वस्तु माँगल,
ठोढ़ पर मर्मक मुस्की कर्णक हाथ शस्त्र आएल,
काटि देहसँ कवच कुण्डल समर्पित कएल तखनहि,
इन्द्र देल वर माँगू छोड़ि ई वज्र हमर आर किछुओ,
अमोघ शक्ति माँगल कर्ण इन्द्र देलन्हि कहि कए,
मारत जकरा पर चलत पुनि घुरत लग हमर अएत।

शनैः-शनैः छल बीति रहल बारह वर्ष एहिना,
एक वर्षक अज्ञातवासक विषयमे विचारि रहल,
विचारि युधिष्ठिर रहल भाए आ द्रौपदीक संग,
तखने कनैत खिजैत एकटा विप्र आएल ।

कहल अरणीक लकुड़ी छल कुटीक बाहर टाँगल,
हरिण एक आबि कुरयाबए लागल ओहिसँ,
जाए काल सिंहमे ओझरायल अरिणी ओकर,
विस्मित भागल ओ लए हमर लकुड़ी,
कोना कए होमक अग्नि आनब चिन्तित छी।

विप्रक संग पाँचो भाँए हरिणकेँ खेहारल,
मुदा छल ओ चपल भए गेल ओझल।

वरक गाछक नीचाँ ओ सभ लज्जित पिआसल,
ठेहिआएल बैसल नकुल गेल सरोवर पानि आनए।

एकटा ध्वनि आएल ई चभच्चा हमर छी,
उत्तर हमर प्रश्नक बिनु देने पानि नञि भेटत ई।

नहि कान देल ओहि गप पर हकासल पिआसल,
पानि जखने पिएल अरड़ा कए मृत ओ खसल।

सहदेवक संग सेहो एहने घटना घटल छल,
अर्जुन जखन आएल फेर वैह ध्वनि सुनल ।

शब्दभेदी बाण छोड़ल मुदा नहि कोनो प्रतिफल,
पानि पीबैत देरी ओहो मृत भए खसल छल।

युधिष्ठिर भए चिन्तित भीमकेँ पठाओल ताकए,
पानि पीबि मृत भए नहि घुरल ओतए।

युधिष्ठिर जखन वन बीच सरोवर पहुँचल,
मृत भाए सभकेँ देखि व्याकुल पानिमे उतरल।

वैह ध्वनि आएल उत्तरक बिना प्यासल रहब,
होएत एहि तरहक परिणाम ज्योँ धृष्टता करब।

ई अछि कोनो यक्ष सोचि युधिष्ठिर बाजल,
पुछू प्रश्न उत्तर सम्यक देब शुरू भेल यक्ष।

मनुष्यक संग के अछि दैत? प्रथमतः ई बाजू,
धैर्य टा दैछ संग मनुक्खक सदिखन सोकाजू।

यशलाभक अछि कोन उपाय एकटा?
दान बिनु यश नहि भेटैछ कोनोटा।

वायुसँ त्वरित अछि कोन वस्तु?
मनक आगाँ वायुक गति नहि कतहु ।

प्रवासीक संगी अछि के एकेटा ?
विद्याक इतर नहि संगी एकोटा।

ककरा त्यजि कए मनुक्खकेँ भेटैछ मुक्ति?
अहं छोड़ल तखन भेटत विमुक्ति।

कोन वस्तुक हराएलासँ नहि होइछ मन दुःखित?
क्रोधक हरएलासँ किए होअय क्यो शोकित।

कोन वस्तुक चोरिसँ होइछ मनुक्ख धनिक?
लोभक क्षति बनबैछ पुष्ट सबहिँ।

ब्राह्मण जन्म, विद्या, शील कोन गप पर अवलम्बित?
शील स्वभाव बिनु ब्राह्मण रहत नहि किछु।

धर्मसँ बढ़ि अछि की जगतमे?
उदार मनसि उच्च पदस्थ सभसँ।

कोन मित्र नहि होइत अछि पुरान?
सज्जनसँ कएल गेल मित्राताक कोना अवसान।

सभसँ पैघ अद्भुत की अछि एहि जगमे?
मृत्यु सभ दिनु देखनहु अछैतो जीवन लालसा,
एहिसँ बढ़ि अद्भुत आश्चर्य अछि की?

प्रसन्नचित्त भए यक्ष कहल युधिष्ठिर कहू,
कोनो एक भाएकेँ हम जीवित कए सकब।

तखन नकुलकेँ कए दिअ जीवित,
सुनि यक्ष पूछल कहब तँ भीम अर्जुन कोनोकेँ,
जीवित करब जकर रण कौशल करत रक्षा।

धर्मराज कहल धर्मक बिना नहि होइछ रक्षा,
कुन्ती पुत्र हम युधिष्ठिर जिबैत छी,
माद्री मातुक पुत्र जिबथु नकुल सैह उचित।

सुनि कहल हिरण वेशधारी यमराज हे पुत्र,
पक्षपात रहित छी अहाँ तँ सभ भाए जीबथु।

पुत्रकेँ देखि मोन तृप्त भेलन्हि यमक,
पाण्डव गण तखन घुरि द्रौपदीक लग गेलाह।

पूर्ण भेल वनवासक वर्ष बारह अतीत,
एक वर्षक छल अज्ञातवास बड़ कठिन,
दुर्योधनकेँ यदि हुनक संकेतक चलए पता,
पुनि द्वादश वर्षक वनवासक छल प्रथा।

प्रातःकाल सभ विदा भेलाह विराट नगर दिशि,
धर्मराज कंक नाम्ना ब्राह्मण वेश धारित मिलि।
कौड़ी आ चतुरंग गोटीसँ विराटराजक मोन लगाएब,
भीम बनि पाचक नाम वल्लभक पाकशाला सम्हारथि।

विराटक पुत्रीकेँ संगीत नृत्य अर्जुन,
नारी वृहन्नला बनि सिखाबथु,
ग्रंथिक नामसँ नकुल अश्वक करए रखबारि,
सहदेवक नाम तंत्रपाल भेल करथि चरबाहि।

रानीकेँ सजाबथि द्रौपदी नाम धरि सैरन्ध्रीक।
सभ ई सोचि नुकाओल अस्त्र-शस्त्र,
शाखा बिच शमी-वृक्ष एकटा विशाल मध्य।
जखन वेश धरि पहुँचलाह विराट राजा लग,
स्वीकारलन्हि ओ सभटा प्रार्थना स्वतः।

दिन छल बीति रहल मुदा रानी सुदेष्णाक,
भाए छल कीचक दुष्ट देखि सैरन्ध्रीक भेल मुग्ध।
बहिनसँ पूछल कोन देशक राजकुमारी छथि,
कहल बहिन नहि छी निकृष्ट दासी ई।

मुदा कीचक पहुँचि द्रौपदी लग बाजल,
सुन्दरी दास बनाऊ हम मुग्ध पागल।

सैरन्ध्री कहलन्हि, हम विवाहिता एक दासी,
अहाँक पालिता छी नहि पुनि गप ई बाजी।

मुदा कीचक बहिनिसँ पुनि अनुरोध कएलक।
पर्व दिन सुदेष्णा किछु वस्तु अनबा हेतु कहलक,
सैरन्ध्रीकेँ कीचक लग जाए तकरा आनए पठेलक।

मुदा ओतए देखि वासनाक आँखि भागलि,
भीमसँ जाए बाजलि धिक कहलि पाण्डवकेँ ।
भीम बाजल आब जे ओ भेँट होअए,
नाट्यशालामे बजाऊ आध राति सोचब फेर ई,
हमरा की करबाक अछि ओहि दुष्टकेँ ओतए।

कीचक विराटक सेनाक प्रमुख सेहो छल,
सैरन्ध्रीक आमंत्रणकेँ नहि बूझि पहुँचल अभागल।
स्त्री वेष धरने भीम ओतए प्रतीक्षित,
केश पकड़ि पटकल, लात-हाथ मारल कीचककेँ ओतहि।

भोर होइत ई गप पसरि गेल चारू दिशि,
कीचककेँ मारल गंधर्वपति सैरंध्रीक।

सैरन्ध्रीक प्रति भय-श्रद्धा दुनू पसरल,
दुर्योधन छल बुझल अज्ञातवासक कथा,
छल ताकिमे तकबाक पाण्डवक पता,
छी ई द्रौपदी सैरन्ध्रीक भेषमे अभरल।

पाण्डव छद्म-भेष बनओने छथि गांधर्वक,
कीचकसँ अपमानित राजा त्रिगर्त देशक,
मिलि दुर्योधनसँ कए गौ-हरणक विचार
विराट राजसँ ओ लेत बदला आब।

दुर्योधन लए संग भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण,
आक्रमण विराट पर लए अश्वत्थामा संग।
त्रिगर्त राज सुशर्मा घेरि गौ-विराटराजक,
बान्हि विराटकेँ जखन ओ सोझाँ आएल।

ललकारि कएल भीमकेँ सोर युधिष्ठिर-कंक,
वल्लभ-भीम ग्रंथिक-नकुल तंत्रिपाल-सहदेव।
खोलि बन्धन विराटक बान्हि देल सुशर्मन्,
वृहन्नला बनि सारथी पुत्र विराटराज उत्तमक।

रथ आनल रणक्षेत्र उत्तमकुमार भेल घबराएल,
गेल अर्जुन शमी गाछ लग उतारि शस्त्र आएल,
गाण्डीव अक्षय तुणीर आनि परिचय सुनाओल।

उत्तमकुमार बनल सारथी वृहन्नला-अर्जुनक संग,
वेगशाली रथ देखि दुर्योधन पुछल हे भीष्म।

अज्ञातवासक काल भेल पूर्ण वा न वा कहू,
भीष्म कहल पूर्ण तेरह वर्षक अवधि भेल औ।

अर्जुन उतारल अपन रोष कर्ण पुत्र विकर्ण पर,
मारि ओकरा बढ़ल आगाँ कर्णकेँ बेधल सेहो।

द्रोण-भीष्मक धनुष काटल मूर्च्छित कएल सेना सकल,
द्रोण-कृप-कर्ण-अश्वत्थामा-दुर्योधनक मुकुट वस्त्र सभ,
उत्तमकुमार उतारल सभटा गौ लए नगर तखन घुरल।

मूर्च्छा टूटल सभक जखन कहल करब युद्ध पुनः,
भीष्म नहि मनलाह दुर्योधन घुरु बहु भेल आब अः।

उत्तमकुमार नहि करब प्रगट भेद हमर अर्जुन कहल,
विराट भेल प्रसन्न वीरता सुनि उत्तमक आबि घर।

पञ्च पाण्डव द्रौपदीक तखन परिचय हुनका भेटल,
प्रस्ताव कएल पुत्री उत्तराक विवाह अर्जुनसँ करब।

अर्जुन कहल पढ़ेने छी हमर शिष्या अछि ओ रहलि,
पुत्र अभिमन्युसँ होएत विवाहित उत्तरा ई प्रस्ताव छल।

वाह ब्यास वाह, बाल-अमेल विवाह विरोध,
की चतुरता कौशल कवित्वक कएल औ।

कृष्ण-बलराम द्वारकासँ बरियाती अभिमन्युक लए अएलाह,
उत्तराक विवाह अभिमन्युक संग भेल बड़ टोप-टहंकारसँ।

छलाह आएल राजा वृन्द अभिमन्युक विवाह पर,
भेल राजाक सभा जतए कृष्ण कएल विनती ओतए।

द्यूत खेल शकुनीक, अपमान द्रौपदीक कएल जे,
दुर्योधन छीनल राज्य युधिष्ठिरक अधर्मसँ से।

बाजू प्रयत्न राज्य-प्राप्तिक कोना होएत वा,
दुर्योधनक अत्याचार सहैत रहथु पाण्डव सतत।

द्रुपद उठि कहल दुराचारी कौरवकेँ सभ जनए छथि,
कर्तव्य हमरा सभक थिक सहाय बनी पाण्डव जनक।

करए लगलाह पांडव युद्धक तैयारी विराट द्रुपदक संग पाबि
लगाए कुरुक्षेत्र लग पांडव रुकलाह शिविर पसारि।

दुर्योधनकेँ जखन लागल खबरि ओहो कएलक तैयारी,
संदेश पठाओल राजा सभकेँ कौरव पांडव तखन,
अपन पक्षमे करबा लेल युद्ध शुरु होएत जखन।

कुरुक्षेत्रक स्थलीमे सभटा जुटान लागल होए शुरू,
यादव गणकेँ पक्ष करबा लए दुर्योधन द्वारका गेल स्वयं।

पहुँचि दुर्योधन गेल देखल कृष्ण छलाह सुतल ओतए,
अर्जुन सेहो पहुँचल पैर दिशि बैसि गेल ओ ओतए।

कृष्ण जखन उठि देखल अर्जुन छल ओतए,
कहू वत्स की चाही अहाँ आएल छी एतए।

युद्धमे संग अहाँक हमरा चाही हे नारायण,
अर्जुनकेँ बजिते दुर्योधन टोकल अएलहुँ पहिने एतए।

कृष्ण कहल हम शस्त्र नहि उठाएब युद्धमे,
नारायणी सेना चाही वा हमरा करब अहँ पक्षमे।

दुर्योधन नारायणी सेना चुनि भेल संतुष्ट आ,
अर्जुनकेँ नारायण भेटल छल प्रफुल्लित सेहो।

पांडव मामा छलाह शल्य माद्रीक भाए जे,
आबि रहल युद्धक लेल दुर्योधन सुनि गेल ओतए।

रस्तामे व्यवस्था-बात कएल तेहन छल,
शल्य कहल अछि मोन पुरस्कृत करी काज जकर।

दुर्योधन भेख बना जाए रहल छल ओतए,
प्रकट भए माँगल युद्धमे होऊ साहाय्य हमर,
एहि सभ व्यवस्थाक छी हमही निर्माण कएल।

शल्य दए स्वस्ति पहुँचलाह जखन कुरुक्षेत्र,
युधिष्ठिर सुनू छल भेल हमरा संग अतए।
कौरवक पक्षमे युद्ध करबा लए वचन बद्ध,
कहू कोन विध होए साहाय्य अहाँक वत्स।

युधिष्ठिर कहल बनू सारथी कर्णक आ करू,
हतोत्साहित कर्णकेँ गुणगान गाबि पांडवक।

शल्य कौरवक शिविर दिशि चललाह तखन,
युद्ध सन्निकट अछि कृष्ण अएलाह जानि सेहो,
एतए सुनल द्रुपदक पुरहित गेल छल धृतराष्ट्र लग।

संधिक प्रस्ताव पर देलक क्यो नहि टेर ओतए,
दुर्योधन कहल राज्य छोड़ू सुइयाक नोक देखने छी?
नहि भेटत पृथ्वी ओतबो राज्यक तँ छोड़ू बात ई।

ई सुइयाक नोँक भरि पृथ्वीक नहि देबाक बिम्ब छल,
दुर्योधनक हठक ई आ धृतराष्ट्रक आकांक्षाक प्रतीक छल।

युधिष्ठिर कहल श्रीकृष्णकेँ आध राज्य छोड़ैत छी,
जाऊ कृष्ण पाँच गाम दुर्योधन देत ज्योँ राखू प्रस्ताव ई,
ओतबहिमे करब हम सभ भाँए माएक संग निर्वाह।

सात्यकीक संग कृष्ण हस्तिनापुरक लेल चलला जखन,
द्रौपदी कहलन्हि देखू केश फुजले अछि ओहिना धरि एखन,
कानि कहल संधि होएत युद्ध बिन खुजले रहत वेणी तखन।

कविक बिम्ब सुइया बराबड़ि जे नहि छोड़त हठ अपन,
पाँच गामकेँ तँ बुझत ब्रह्माण्ड ओ हठी सदिखन।

कृष्ण कहल मानत नहि संधिक गप कखनहुँ दुर्योधन,
युद्ध अछि अनिवार्य मनोरथ पूर्ण होएत द्रौपदी अहँक।

कृष्ण जखन गेलाह हस्तिनापुर सभ प्रसन्न छल,
धृतराष्ट्र, दुःशासन-दुर्योधनक संग स्वागत कएल।

मुदा कृष्ण ओतए नहि ठहरि दीदी कुन्तीक लग गेलाह,
विदुरक गृहमे छलीह ओतए गप विस्तृत भेल आब।

कहल कुन्ती दीदी अहाँ जा कए कर्णकेँ परिचए दिअ,
आबि जाएत भ्रातृ-पाण्डव लग सत्य ओ जानि कए।

दोसर दिन सभामे पहुँचलाह कृष्ण, छल छल ओतए मुदा,
दुर्योधन विचारल बान्हि राखब कृष्णकेँ अएताह ज्योँ।

भीष्म धृतराष्ट द्रोण कृप कर्ण शकुनि दुःशासन ओतए,
कृष्ण कहल शकुनिक चौपड़ दुर्योधनक दिशिसँ फेकब,
अन्यायपूर्ण छल ओहिना द्रौपदीक अपमान छल करब।

विराट पर आक्रमण पाण्डवकैं सतेबाक उपक्रम बनल,
आध राज्य ज्यौं दए दी तखनो शान्तिसँ रहि सकैछ सभ।

सभ कएल स्वागत एकर दुर्योधन मुदा क्रोधित बनल,
कृष्णकैं बन्हबाक आज्ञा देलक भीष्म तमसयलाह बड़।

तेज कृष्णक मुखक देखि कौरव भयसँ छल सिहरल।
दुर्योधन कहल पिता ज्येष्ठ हमर अंध छलाह से राज्य नहि भेटलन्हि,
हुनक पुत्र ज्येष्ठ हम से अधिकार हस्तिनापुर पर अछि सुनलहुँ।

पाण्डव अन्यायसँ लए राज्य करए छथि करैत तैय्यारी युद्धक,
कृष्ण अछि पाछाँ ओकर हम तँ रक्षा राज्यक करए छी।

कृष्ण कहलन्हि तखन पाँच गाम दिअ करबा लए निर्वाह,
मुदा दुर्योधन कहल राज्यक भाग नहि होएत गए आब।

कृष्ण बाजि जे हे दुर्योधन मदान्ध छी बनल अहाँ,
पाण्डवक शक्तिक सोझाँ नाश होएत निश्चित बुझू अहाँक।

कुन्ती बादमे गेलीह कर्णकैं कहल दुर्वासाक मंत्र भेटल,
पढ़ल सूर्यकैं स्मरण कए पुत्र हमर भेलहुँ अहाँ तखन।

प्रणाम कएल माताकैं कर्ण तखन बजलीह सुनू ई,
ज्येष्ठ पाण्डव छी अहाँ, राज्य युधिष्ठिर देत अहीकैं।

जखन नहि मानल कर्ण कुन्ती पुछल मातृऋणसँ,
उबरब कोना, कर्ण बाजल हे माता तखन सुनू ई।

अर्जुनकैं छोड़ि चारू पाण्डवसँ नहि लड़ब पूर्ण शक्तियेँ,
अर्जुनकैं मारब तखन बनब पुत्र अहीकैं।

वा मरब हम पुत्र तैयो पाँच टा रहबे करत,
ई प्रतिज्ञा हम करए छी माता कुन्ती अएलीह घुरि।

कृष्ण आबि घुरि पहुँचि शिविर पाण्डवक जखन,
पाण्डव युद्धक कएल प्रक्रिया शुरू ओतए तखन।

सात अक्षौहिणी सेना घोड़ा, रथ, हाथी, सैनिकक,
अर्जुन भीम सात्यिकि धृष्टद्युम्न द्रुपद विराट लग।

कौरव सेहो एगारह अक्षौहिणी सेना कृपाचार्य शल्य भूरिश्रवा,
भीष्म द्रोण कर्ण अश्वत्थामा जयद्रथ कृतवर्मा भगदत्त छल।

धृष्टद्युम्न सेनापति पाण्डवक भीष्म कौरवक बनल,
कर्ण शस्त्र नहि उठेबाक कएल प्रतिज्ञा
भीष्म यावत युद्धक्षेत्रमे रहताह गए।

भीष्म कहल मारब नहि पाण्डवकेँ एकोटा,
सेनाक संहार करब यथा संभव होएत।

ब्यास धृतराष्ट्रक लग गेलाह कहल ब्यासजी सुनू,
अंधत्व भेल वर हमर कुल संहार देखब नहि किएक।

मुदा वीरक गाथा सुनबाक अछि इच्छा बहुत,
ब्यास देल योगसँ दिव्यदृष्टि संजयकेँ कहल,
बैसले-बैसल देखि संजय वर्णन करताह युद्धक,
बाजि ई ब्यास बिदा भए गेलाह ओतएसँ।

भेल भोर रणभूमिमे कौरव-पाण्डव जुटल सेना सहित
आगाँ भीष्म कौरवक आ पाण्डवक अर्जुन-कृष्ण रहथि।

भीष्मक रथक दुहुओर दुःशासन दुर्योधन छलाह,
पार्श्वमे अश्वत्थामा गुरु द्रोणक संग भाग्य आह।

युद्ध कए राज्य पाएब मारि भ्राता प्रियजनकेँ,
सोचि विह्वल भेल अर्जुन गांडीव खसत कृष्ण हमर।

कर्मयोग उपदेश देल कृष्ण दूर करू मोह-भ्रम,
स्वजन प्रति मोह करि क्षात्रधर्मसँ विमुख न होऊ।

अधर्मसँ कौरवक अछि नाश भेल देखू ई दृश्य।
विराटरूप देखि अर्जुन विशाल अग्नि ज्वालमे,
जीव-जन्तु आबि खसथि भस्म होथि क्षणहि,
कौरवगण सेहो भस्म भए रहल छलाह,
चेतना जागल अर्जुनक स्तुति कएल सद्यः।

फलक चिन्ता छोड़ि कर्म करबाक ज्ञानसँ,
आत्मा अमर अछि शोक एकर लेल करब नहि उचित।

युधिष्ठिर उतरि रथसँ भीष्मक रथक दिस गेल,
गुरुजनक आशीर्वाद लए धर्मपालन मोन राखल।

भीष्म द्रोण कृपाचार्य पुलकित विजयक आशीष देल,
धृतराष्ट्र पुत्र युयुत्सु देखि रहल छल धर्मनीति
छोड़ि कौरव मिलल पाण्डव पक्षमे तत्काल,
युषिष्ठिर मिलाओल गर ओकरसँ भेल शंखनाद।

अर्जुन शंख देवदत्त फूकि कएल युद्धक घोषणा,
आक्रमण कौरवपर कए रथ हस्ति घोटक पैदल,
युद्धमे पहिल दिन मुइल उत्तर विराटक पुत्र छल।

भीष्म कएल भीषण क्षति साँझमे अर्जुनक शंख,
बाजि कएल युद्धक समाप्ति भीष्म सेहो बजाओल अपन।

पहिल दिनक युद्धसँ पाण्डव शोकित दुर्योधन हर्षित।
दोसर दिनक युद्ध जखन शुरू भीष्म आनल प्रलय।
कृष्ण एना भए हमर सेना मरत चलू भीष्म लग,
हँ धनञ्जय रथ लए जाइत छी भीष्मक समक्ष।

दुहुक बीच जे युद्ध भेल विकराल छल थरथराएल सकल।
भीम सेहो संहारक बनल भीष्म छोड़ि अर्जुनकँ ओम्हर दौगल,
सात्यिकीक वाणसँ भीष्मक सहीसक अपघात भेल,
खसल भूमि तखन ओ भीष्मक घोड़ा भागल वेगमान भए,
साँझ भेल शंख बाजल युद्ध दू दिनक समाप्त भेल।

तेसर दिन सात्यिकी अभिमन्यु कौरवपर छूटल,
द्रोणपर सहदेव-नकुल युधिष्ठिर आक्रमण कएल,
दुर्योधनपर टूटल भीम वाण मारि अचेत कएल,
ओकर सहीस दुर्योधनकँ लए चलल रणक्षेत्रसँ,
कौरव सेना बुझल भागल छल ओ युद्ध छोड़ि कए।

भागि रहल सेनापर भीम कएलन्हि आक्रमण,
साँझ बनि रक्षक आएल दुर्योधन कुपित भएल।

भीष्मकँ रात्रिमे कहल अहाँक हृदय अछि पक्षमे पांडवक,
भीष्म कहल छथि ओ अजेय परञ्च युद्ध भरि सक करब।

सक भरि युद्ध करबाक बात कहल भीष्म दुर्योधनकँ,
चारिम दिन कएल आक्रमण प्रबल वेगेँ,
अर्जुन कएल प्रयत्न रोकबाक हुनका व्यर्थ,
पाँचम छठम आ सातम दिन एहिना सेहो बीतल।

आठम दिनक युद्ध भेल घनघोर,

अर्जुनक दोसर पत्नी उलूपीक पुत्र इरावान,
युध्य मध्य मरल अर्जुन भेल अधैर्य।

कएल युद्ध भयंकर भीष्मकेँ नहि टेरल,
दुर्योधन छल चिन्तित कर्णक ठाम गेल,
घुरि भीष्मकेँ कहल अहाँ छी अन्हेर कएल।

एहन रहत तखन बनाएब कर्णकेँ सेनाध्यक्ष,
भीष्म कहल बताह छी अहाँ भेल,
कर्णक वीरता विराटयुद्धमे नहि देखल?

नवम दिनक युद्ध छल भयङ्कर,
अर्जुनक रथकेँ भीष्म वाणसँ तोपल,
कृष्ण-अर्जुन अपघात रथ क्षतिग्रस्त,
घोटक रुकल अर्जुन शिथिल पस्त।

कौरवक उत्साह छल देखबा जोगर,
कृष्ण क्रोधित रथक पहिया लए छूटल,
मारब भीष्म खतम करब ई युद्ध।

अर्जुन पैर पकड़ि कए कहल हे कृष्ण
शस्त्र नहि उठएबाक कएने प्रतिज्ञा छी
लज्जित रथसँ कूदि छी हम आएल,
भीष्म सेहो देखल भए भाव-विह्वल।

रूप तेजमय शस्त्र लेने कृष्ण।
कृष्णक क्रोध भेल जा कए शान्त,
साँझक शंख कएल दिनक युद्धांत।

रातिमे युधिष्ठिर पुछलन्हि हे नन्दक नन्द,
भीष्मक पराजयक अछि की रहस्य,
भीम कहल अर्जुन नहि जानि किएक,
नहि प्रयोग कए रहल दिव्यास्त्र भीष्मपर।

कृष्ण कहलन्हि चलू पाँचू भाँए,
पूछि आबी हुनकहिसँ हुनक उपाय।

सभ पहुँचि पूछल बताऊ हे भीष्म,
अहाँक रहैत नहि हारत कौरव कथमपि।

सत्य धर्म दुहु भए जाएत अलोपित,
भीष्म कहल छी देखि रहल भए त्रस्त,
अर्जुन नहि करि रहल प्रयोग दिव्यास्त्र,
मुदा हस्तिनापुरक सिंहासनसँ कटिबद्ध,
हा दुर्भाग्य! असत्यक मर्यादाक रक्षार्थ !

अछि शिखण्डी द्रुपदक पुत्र अहाँक पक्ष,
पूर्वजन्मक स्त्री अछि शिवक कएल व्रत,
हमर वधक लेल अछि सतत प्रतिपल।

द्रुपदक घरमे स्त्रीक रूप जन्म छल लेल,
दानवक वरसँ पुरुष रूप बनि गेल।

गुण स्त्रीत्वक अछि ओकरामे पार्थ,
स्त्रीगण हमर वाणक नहि छथि पात्र।

शिखण्डीकेँ सोझाँ कए जे वाण अहाँ चलाएब,
पूर्ण विवश तखने हम पार्थ भए जाएब।

भए आस्वस्त प्रणाम कए भीष्म पांडवगण,
घुरल दसम दिनुका युद्धक छल आयोजन।

आइ सेहो भीष्मक वाणक भेल बरखा,
मुदा शिखण्डी आएल सोझाँ हुनकर।

राखल अस्त्र भीष्म चलाओल वाण शिखण्डी,
मुदा कोनो नहि जोड़ ओकर वाणक छल किन्तु,
कृष्ण कहल लए अढ़ शिखण्डीक अर्जुन,
भीष्मक देहकेँ गाँथू करू नहि चिन्तन।

अर्जुनक शंका सुनि कहल तखन कृष्ण,
अस्त्र-शस्त्र संग जीतत क्यो नहि भीष्म,
अपनहि छथि ओ उपाय एहन बताओल,

बिनु विलम्ब कए वाण अहाँ चलाऊ।

अर्जुनक वाणक शुरू भेल बरखा,
खसल भीष्म पृथ्वी शय्या छल वाणक,
शरशय्यापर खसैत भीष्मक देरी छल,
युद्ध खतम भेल ओहि दिनक तत्काल।

कौरव पाण्डव जुमि अएलाह समक्ष,
भीष्म कहल दिअ गेरुआ माथतर। अह।

महग गेरुआ लए प्रस्तुत दुर्योधन छल,
ताकल भीष्म अर्जुन दिस अर्जुन भए साकांक्ष,
तीन वाण चलाओल आधार माथक भेल ।

प्यासल भीष्म जलक लेल कहल पुनः ई,
दुर्योधन स्वर्ण-पात्रमे जल अनबाओल,
ताकल भीष्म अर्जुन दिस फेर पार्थ चलाओल,
वाणसँ सोत निकलल जलक ऊपर दिस,
पानि खसल मुख भीष्म भेलाह फेर तिरपित।

सूर्य छथि अखन दक्षिणायणमे जाऊ सभ क्यो,
प्राण त्यागब हम उत्तरायणमे पहुँचल कर्ण सेहो।

करबद्ध प्रणाम कए लए आशीर्वाद ठाढ़ ओतए,
भीष्म कहल हे कर्ण युद्धकेँ रोकू कुन्तीपुत्र अहाँ छी,
अर्जुनकेँ नहि हरा सकब अहँक तुच्छ इच्छा ई।

कोन युद्धमे अर्जुनसँ छी बलशाली देलहुँ प्रमाण?
अहाँ बुझाएब दुर्योधन मानत छी हम जानि।

कर्ण कहल हम सारथीपुत्र दुर्योधनक पाओल सम्मान,
राजा भेलहुँ दुर्योधनक ऊँच उठाओल हमरा,
पाण्डव पौत्र अहाँक रहथि शस्त्र उठाओल किएक?

कौरवगणकेँ अहाँ किएक नहि बुझाओल,
युद्ध बढ़ल अछि आगाँ,
कोना हम छोड़ब दुर्योधन मजधार।

दस दिनक युद्ध भेल बाद,
द्रोण बनलाह सेनापति आब।

दुर्योधन कहल करू एक काज,
युधिष्ठिरकँ पकड़ि करू युद्ध समाप्त।

मुदा अर्जुन अछि ओतए सतत,
दूर हटएबाक करू कोनो अर्थ,
दुर्योधन बजाओल राजा देश त्रिगर्त,
राज सुशर्मा संस्पतक संग चलत,
लए अर्जुनकँ दूर युधिष्ठिरक।

ओम्हर पाण्डव कएल युधिष्ठिरक रक्ष उपाय,
रक्षक रहत अर्जुन-भीम दुहु ओर दुहु भाए।

होएत किं कारणसँ कनिको दूर ज्यौँ क्यो,
नकुल सहदेव सात्यिकी लेत स्थान रिक्त ओ।

द्रोणक संग छल कर्ण अशवत्थामा,
जयद्रथ कृप,कृतवर्मा, कलिंग नरेश।
त्रिगर्तराज सुशर्मा देलक ललकारा,
अर्जुन देखि सतर्क कएल सात्यिकी कँ।

गुरुशिष्य बिच आब शुरु होएत युद्ध,
तीर दुइ टा छोड़ि अर्जुन कएल आरम्भ,
खसल पदपर द्रोणक अर्जुनक ई दुहु वाण।

आह ब्यास प्रणाम !!

कए प्रणाम लए आशीष गुरुक आइ अर्जुन,
भिन्न रीतिक प्रेम नहि छल नुकाएल कहाँ।

कएल आक्रमण पाण्डवपर सोझाँसँ द्रोण पार्श्वसँ कर्ण,
सुशर्माक पाछाँ अर्जुन शल्य आबि गेल लड़बा लए भीमसँ,
कर्ण कएल आक्रमण सात्यिकी छल त्वरित ओतए।

सहदेवसँ भिड़ल शकुनि नकुल टा बाँचल ओतए,
द्रोण बढ़ल सोर भेल पकड़ल द्रोण युधिष्ठिरकैँ,
अर्जुन छोड़ि त्रिगर्त नरेश घुरि आएल जे,
द्रोण छोड़ल आशा पकड़बाक युधिष्ठिर,
साँझ भेल युद्ध बन्दीक शंखनादक बिच।

बारहम दिन सेहो त्रिगर्त सभ देल ललकारा,
मुदा वेगसँ आक्रमण कए अर्जुन कएल संहार,
घुरि बढ़ल देखल भगदत्त छल हाथीपर सवार,
हाथीक-अंकुश फेंकि कएल ओ अर्जुनपर प्रहार,
कृष्ण रोकल अंकुश,
अर्जुन लेलक ओकर प्राण,
अर्धचन्द्र वाणसँ।

द्रोण बढ़ल युधिष्ठिर दिस सत्यजित रक्षक छल आइ,
मारि अश्वकैँ द्रोणक सत्यजित रथक पहिआ देल काटि।

द्रोणक अर्धचन्द्रवाणसँ सत्यजितक गरदनि खसल अरड़ाए।
युधिष्ठिर मरितहि देखि सत्यजितकैँ घुरल रणसँ अविलम्ब,
अर्जुन नहि पाबि युधिष्ठिर भेल बताह मारल जन अथाह,
द्रोण देखि अर्जुनक ई रूप भेलाह हताश संध्याक शंखक आश।

दिन बितल दुर्योधन कहल हे गुरु द्रोण,
स्नेह अछि अहाँक पाण्डवक प्रति तेँ ई दोष,
द्रोण भेल क्षोभित कहल बनाएब चक्रव्यूह जकर तोड़,
अर्जुनक अतिरिक्त युधिष्ठिरक लग अछि नहि व्योँत।

फेर तेरहम दिनक युद्ध भेल शुरु जखन,
संसप्तक आ त्रिगर्तकेँ पछुआबैत गेल अर्जुन।

तखनहि युधिष्ठिरकेँ पता चल चक्रव्यूहक,
अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकेँ कहल,
गर्भमे सुनल पिता माताकेँ वर्णन सुनबैत छल,
च्क्रव्यूहक छह द्वारकेँ तोड़बाक सभटा,
स्मरण युद्धक वर्णनक विधि बचल नहि कोनोटा।

मुदा सातम द्वारक युद्धक वर्णन सुनल नहि,
माता सुतलि तखने बचल एकेटा द्वार सैह।

कवि ब्यासक पेटमे सीखि अएबाक बिम्ब,
शब्दार्थ नहि वीरक अछि ई प्रतीक ।

सोझाँ तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नहि बुझाएल,
कतए अछि द्वार कतए प्रवेश जयद्रथ रक्षक जतए,
आउ भीम काक ई अछि प्रवेश द्वार पैसब एतहि।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल भीतर,
भीम दोसर सेनानीकेँ रोकि जयद्रथ ठाढ़ ओतहि।

दोसर द्वारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,
काटल धनुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।

तेसर द्वारपर चकित कर्णपर कए वाण बरखा,
बढ़ल चारिम द्वारपर अश्वत्थामा जतए छल,
युद्ध भेल घनघोर एतए मुदा रोकि सकल नहि,
अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल चिन्तित,
कर्ण आब करब की बाजू पराजय बुजाइछ निश्चित।

कर्ण बाजल सभ मिलि सातो महारथी हम सभ,
रोकि सकब एहि बालककेँ नहि क्यो सकत असगर।
सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,
पहुँचि गेल सातम द्वार पहुँचल अभिमन्यु तावत।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतए कहल,
ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराएब,
अर्जुन पुत्र हम नहि छोड़ब युद्ध हम एना देखू,
पार्थ-पुत्रक शौर्य रथ घुमाऊ चक्राकार कए अहँ।

तखन लक्ष्मण आएल सोझाँ अभिमन्युक ओतए,
वाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक, द्रोण कहल,
अजेय ई अछि अभेद्य एकर कवच करू प्रहार सिरसि आ
तखनहि सारथि अभिमन्युक खसल टूटि गेल रथ ।

नीचाँ आबि तरुआरि चक्र गदा लए ओतए ओ चलल,
दुःशासनक पुत्रसँ गदा युद्ध भेल दुनू ओतहि खसल ।

पहिने उठि दुःशासनक पुत्र प्रहार कएलक मस्तकपर,
सप्तरथीक बीच खसि पड़ल सुभद्रापुत्र पति उत्तराक।

सुभद्रा उत्तरा पहुँचि गेलीह सातम द्वार विलखैत,
उत्तरा कहलन्हि माता मृत्युक आज्ञा दिअ एतहि।

मुदा गर्भ छल उत्तराक पेटमे सुभद्रा बुझओलन्हि,
ओम्हर त्रिगर्त संसप्तककँ करि पूर्णरूपेँ संहार,
अर्जुन घुरल सोचैत युधिष्ठिर होथि सुरक्षित ।

सुनि मृत्युक समचार विचल कृष्ण कहल अर्जुन,
कारण मृत्युक अछि मात्र बहनोइ-जयद्रथ,
कए शिवक तपस्या भेटल वर ओकरा ई,
अर्जुन छोड़ि आन पाण्डव नहि जीतताह ओकरा।

प्रथम द्वारपर ठाढ़ ओ रोकल चारू भाँएके ओतहि।
सुनतहि ई अर्जुन कएल वध करब काल्हि सूर्यास्तक पहिने,
जयद्रथक वध करब नहि तँ करब अग्निकँ समर्पित ठामहि।

चौदहम दिनक युद्ध भेल प्रारम्भ,
शकट-व्यूह द्रोणक झाँपल जयद्रथ ।

द्वारपर व्यूहक प्रहरी द्रोण छलाह ठाढ़,

विकट युद्ध कृष्ण लेल रथ कनछियाह ।

द्रोण ललकारि कहल अर्जुन युद्धसँ रहल छी भागि,
मुदा अर्जुनकँ आइ छल दोसर धुनि सबारि ।

कृष्ण रथ लए भीतर व्यूहमे पैसलाह,
बेरू पहर चिन्तित युधिष्ठिर पठाओल सात्यिकी भीम,
जाऊ अर्जुनक सहायार्थ कहि दुनू बढल आगाँ ।

भूरिश्रवा कएलक आक्रमण सात्यिकीपर तखन,
वाण अर्जुनक बढ़ल ओकर दिस दुहु हाथ कटल ओकर ।

की कएल अर्जुन अहाँ हम लड़ि रहल छलहुँ सात्यिकीसँ,
हमर हाथ काटल अहाँ अछि कोन न्याय बताऊ फरिछाकँ।

अर्जुन कहलन्हि अभिमन्युक वध कएल अहाँ सभ कोना,
न्यायक बात करए छी, रक्षा कएल हम सत्यिकीक जेहाँ।

भूरिश्रवा खसल अचेत सात्यिकी काटल मूड़ी भूरिश्रवाक ।
अर्जुन देखि भीम सात्यिकीकँ भेल चिन्तित घुरल,
युधिष्ठिरक मोन छलन्हि हुनका पड़ल ।

तखने सूर्यास्त भेल अर्जुन उतारि देल गाण्डीव,
चिता छल सोझाँ आगि धहधह,
करैत पाण्डवक आँखि झिलमिल।

बढ़ल अर्जुन बिना शस्त्र-अस्त्र चिता दिस,
बाजल कृष्ण क्षत्रिय अर्जुन लए अस्त्र जाऊ चितामे,
अक्षय तूणीर गाण्डीव नहि त्यागी मृत्यु संग जाएत।

मुदा जखने अस्त्र लेलन्हि अर्जुन सूर्य निकलल घटासँ,
सोझाँ छल जयद्रथ अपटी खेतमे मरल ओतहि अर्जुनक हाथेँ।

मुदा कृष्ण कहलन्हि आब दुर्योधन करबाओत कर्णक अमोघ अस्त्रक प्रयोग,
भीमपुत्र घटोत्कचकँ बजाऊ राक्षसी युद्ध रातिक करत ओ भयङ्कर,

आएल रातिमे घटोत्कच कए बरखा पानि आँकड़-पाथरक तत्क्षण ।

दुर्योधन देखि रूप ई विकराल भागैत कौरव सेनाकेँ देखल,
कर्ण मारू एकरा नहि तँ युद्ध निकलल जाइत अछि सकल।

विवश भए कर्ण छोड़ल अमोघ मरल घटोत्कच तखन,
पाण्डव दुखित भएल छल कर्ण सेहो चिन्तित।

रातिक भेल आक्रमणसँ क्षुब्ध क्रुद्ध कौरव आ द्रोण अएलाह,
युधिष्ठिरक रक्षार्थ एक दिस द्रुपद छल दोसर दिस विराट तकरा।

देखितहि द्रुपदकेँ द्रोणक खून छल खौलि गेल दिव्यास्त्रसँ लेल प्राण,
द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न पांचाल सेनाक संग आएल बिच बरखाक वाण।

प्रचंड रूप देखि द्रोणक कृष्ण कहल हे युधिष्ठिर अवन्तिराजक हस्ति,
नाम अछि अश्वत्थामा ओकरा मारल अछि भीम सद्यः।

पूछथि द्रोण जे अश्वत्थामा अछि मरि गेल तखन अहँ,
कहू हँ, मरि गेल अछि भीम मारल एखन तुरत।

तखनहि सोर भेल मरबाक अश्वत्थामाक साँसे,
द्रोण अधीर रथ अगुआए पूछल युधिष्ठिर,
की अछि बात सत्य मरल अश्वत्थामा रणक बिच?

कहल युधिष्ठिर हँ मरल अछि ओ नर नहि, छल ओ कुञ्जर,
मुदा नर युधिष्ठरक कहितहि बजल छल शंख कृष्णक।

शोक-विह्वल द्रोण फेकि शस्त्रार्थ ध्यानमग्न बैसलाह रथपर,
धृष्टद्युम्न काटल हुनक मस्तक खड्गसँ अश्वत्थामा भेल व्याकुल।

छोड़ए लागल दिव्यास्त्र पाण्डवपर अर्जुनकेँ छोड़ि नहि छल क्यो सक्षम,
साँझ धरि अर्जुन-अश्वत्थामा दुहु मध्य होइत रहल ई युद्ध निरन्तर।

रात्रिमे दुर्योधन कएलक प्रण
अर्जुनक मृत्युक भेल आवाहन,
कर्णकेँ सेनापति बनाए कएलन्हि
कौरवक गण सोलहम दिनक युद्धक प्रारम्भ।

कर्णक शंखध्वनिसँ भेल युद्ध शुरू,
कर्णक तापसँ युद्धभूमि स्तब्ध,
नकुल सोझाँ पाबि अपघात कए छोड़ल प्राण
कुन्तीक देल कर्णक वर प्राणदान।

कृष्णक आवाहन अर्जुन अहाँकेँ छोड़ि,
क्यो नञि कए सकत विजय कर्णक ऊपरि,
वेगसँ जे बढ़ल अर्जुन आगाँ भेल शुरु बरखा,
बरखा वाणक कौरवगणक अर्जुनक समक्ष,
मुदा अर्जुनक सोझाँ सभ भेलाह पस्त,
मुदा तखने भेल सोलहम दिनक सूर्यास्त।

रात्रिमे कर्ण कहलन्हि हे मित्र दुर्योधन,
अर्जुनक रथमे होइछ ढेर-रास शस्त्रक अटावेश,
गाण्डीव आ अक्षय तूणीरक नहि कोनो जोड़,
हुनकर अश्वक गति नहि कोनो थोड़,
कृष्ण सन सारथी।

शल्य बनथि हमर सारथी यदि, होएताह ओ कृष्णक तोड़,
मुदा शल्य कहलन्हि अछि हमर मुँहपर नहि जोड़,
कर्णकेँ से होए स्वीकार तँ हमरा कोनो हर्ज नहि।

सत्रहम दिनुका युद्ध भेल शुरू कर्णक आक्रमण शुरू,
अर्जुन बढ़ल आगू शल्य कहल भिरू महाप्राक्रमी अर्जुनसँ,
कर्ण देखलन्हि भीमकँ करैत संहार चलू शल्य ओहि पार,
भीमक रूप आइ प्रचण्ड छोड़ल वाण चीड़ि कवच कर्णक गाँथल देह,
अचेत कर्णकँ लए भगलाह शल्य रणभूमिक कात-करोट।

देखि ई दृश्य भीम भेलाह आर तीव्र,
दुर्योधन हुनकर सोझाँ पठाओल दुःशासन वीर।

गदा युद्ध दुहुक मध्य छल भेल भयङ्कर,
भीमक मस्तक प्रहार खसल मूर्छित दुःशासन।

भीम हाथ उखाड़ि पीबए लागल छातीक रक्त,
भागल कौरवसेना देखि दृश्य एहि तरहक।

आब सोझाँ-सोझी अर्जुन कर्णक युद्ध आइ शुरू,
कर्ण काटल गांडीवक प्रत्यंचा यावत दोसर चढ़ाबथि,
कएल वाणसँ आक्रमण अर्जुन कोहुना कए प्रत्यंचा चढ़ाए,
वाण-वर्षा अर्जुनका जखन भेल शुरू, कर्ण शल्य भेलाह चोटिल,
कर्णक सहायक सेना भेल नष्ट कर्ण अति व्याकुल।

छोड़ल कर्ण वाण दिव्य अर्जुनपर कृष्ण कएलन्हि अश्वकँ ठेहुनपर ठाढ़,
अर्जुनक मुकुटकँ छुबैत ओ अर्जुनक प्राणक संकट भेल पार।

तखनहि कर्णक रथक पहिया धँसल युद्ध मध्य,
कर्णक पुकार कनेक काल वाण नहि चलएबाक धर्मक ई युद्ध,
विराटक गौअक चोरि अर्जुन कहलन्हि आ अभिमन्युकँ मारैत काल,
धर्म आ धर्मयुद्धक बिसरल छलहुँ अहाँ पाठ ।

प्राणक भिक्षा मँगैत लगितहुँ अछि नहि लाज।
कर्ण उतरि लगलाह रथक पहिया निकालए,
अर्जुनक वाण काटल मस्तक कौरवमे हाहाकार भारी।

दुर्योधनक सभ भाँयकँ मारने छालाह भीम तावत,
एगारह अक्षौहिणीमे सँ बड़ थोड़ कौरव छल बाँचल,
कृपाचार्य बुझओलन्हि दुर्योधन आबो करू सन्धि,

मुदा ओ कहल हम अहाँ कृतवर्मा अश्वत्थाम आ शल्य अछैत,
सन्धिक गप छी अहाँ करैत।

शल्य बनथि सेनापति युद्ध अठारहम दिन रहत जारी।

शल्यक भेल उद्घोष ओकर बढ़ल पग युधिष्ठिर छल रोकल।
शल्य जखनहि काटल हुनकर एक धनुष,
युधिष्ठिर उठाए दोसर धनुष मारल शल्यक अश्व आ सहीस ।

भेल तखन घमासान युधिष्ठिर लेलन्हि शल्यक प्राण,
सहदेव छुटलाह शकुनि आ ओकर पुत्र उलूकपर,
लेलन्हि बाप-बेटाक प्राण जुआरीक प्राणान्त।

गदा लए दुर्योधन निकलि गेलाह छोड़ि रण,
एकटा सरोवर मध्य छल स्तंभ, नुकाएल ओतए दुर्योधन,
देखलन्हि जाइत हुनका किछु ग्रामीण।

ग्रामीणक चर्च ब्यास केलहुँ कृतार्थ ।

पाण्डवक संग कृष्ण पहुँचलाह ओतए,
किछु ग्रामीण जे देलन्हि पता ओतएक।

भीम देलक ललकारा दुर्योधन निकलि आएल,
तीर्थसँ घुरैत बलराम सेहो पहुँचलाह ओतए।

शिष्य दुर्योधनकेँ दए आशीर्वाद कएल गदा युद्धक शुरुआत,
भीम दुर्योधनक बीच बाझल युद्ध घनघोर,
कृष्ण देल जाँघपर थपकी मोन पाड़ल भीमकेँ ओकर प्रतिज्ञाक,
तोडि जाँघक हड्डी कए मस्तकपर दुर्योधनक गदा-पएरसँ प्रहार ।

भीमक ई कृत्य छुटलाह बलराम ओकरा पर मार-मार,
कृष्ण रोकि दाऊकेँ मोन पाड़ल द्रौपदीक अपमान,
भीमक प्रण।

छोड़ि दुर्योधनकँ असहाय,
गेलाह सभ पाण्डव भाए।

संध्या समय कृतवर्मा कृपाचार्य आ अश्वत्थामा
पहुँचि देखल दुर्योधनक दुर्दशा आ प्रलाप ।

भीमक पादसँ दुर्योधनक मस्तकपर प्रहार,
सुनि ई कथ्य अश्वत्थामा लेल पाण्डवक वधक व्रत ।
दुर्योधन कएल अश्वत्थामाक सेनापति रूपमे अभिषेक,
कृतवर्मा कृपाचार्य आ अश्वत्थामा बढ़लाह पाण्डव-शिविर समक्ष।

कृष्ण लए पांचो पांडवकेँ गेलाह कतहु अन्यत्र।
पाण्डव-शिविरक समक्ष एकटा वृक्ष, नीचाँ सुतलाह कृपा आ कृत ।

अश्वत्थामाक आँखिमे निन्नक नञि लेष, देखल एकटा पक्षी अबैत,
ओहि वृक्षपर कौआसभ सुतल मारि रास, केलक ओ पक्षी सभक ग्रास।

देखि ई दृश्य अश्वत्थामा उठाओल कृपाचार्य ओ कृत,
भोरक बाट ताकब नहि सुबुद्धि, ई अधर्म कहल कृप ।

मुदा अश्वत्थाम चलि पड़ल शिविर दिश,
हारि पहुंचल पाछाँ-पाछाँ कृत-कृप,
हम पैसैत छी भीतर शिविर ।

बाहर होइत सभकेँ प्राण लिअ अहाँ दुनू गोटे,
एतए ठाढ़ लग द्वार।
सभ पांचाल धृष्टद्युम्न शिखण्डी समेत,
द्रौपदीक पाँचू पुत्रकेँ बुझि पाण्डव देल मारि,
अश्वत्थामा देल शिविरकेँ आगिसँ जराए।

फेर पहुँचि लए द्रौपदीक पाँचू पुत्रक माथ,
दुर्योधन देखि माँगल भीमक मस्तक,
ओकर मुष्टिकाक प्रहारसँ मस्तक भेल फाँक,
नहि ई नहि भीमक माथ ।

भोरमे देखल द्रौपदीक पाँचू पुत्रक माथ,
कानैत हाक्रोश करैत भेल दुर्योधनक प्राणान्त।

भोरमे कृष्ण पहुँचलाह पाण्डव-द्रौपदीक संग,
देखि विनाश भीम चलल अश्वत्थामाक ताकिमे,
छल ओ गंग तटपर ब्यासक समक्ष ।

युधिष्ठिर-अर्जुन संग कृष्ण पहुँचल जाए,
पाण्डवक नाशक संकल्प संग अश्वत्थामा छोड़ल ब्रह्मशिरा अस्त्र,
अर्जुनक छोड़ल पाशुपत महास्त्र अग्नि वृष्टि सँ सृष्टिक विनाश,
बीचमे अस्त्र केर अएलाह नारद आ ब्यास ।

वाह ब्यास । महाभारतक लिखनिहार ।

आग्रह करैत जे दुनू गोटे लिअ अपन-अपन अस्त्र सम्हारि,
अर्जुन लेलन्हि अपन अस्त्र सम्हारि मुदा,
अश्वत्थामा कहल नहि घुरि सकत हमर अस्त्र आइ ।

ऋषिक प्रतिकार ब्रह्मशिरासँ होएत उत्तराक गर्भक नाश,
मुदा अश्वत्थामकेँ देमए पड़त मस्तकक मणि,
भेल ओ निर्बल तपस्वी,
ब्यासक आश्रममे बिताओल जीवन सकल।

दुर्योधनक पत्नी भानुमति छलि अचेत, गांधारी करथि विलाप,
धृतराष्ट्र मूर्छित विदुरक हाक्रोश, पाण्डव घुरल अश्वत्थामाक मणि संग ।

कृष्ण लेलन्हि लौहक भीमक स्वांग धृतराष्ट्र पहुँचल कुरुक्षेत्र वधू सभक संग।
भीमकेँ गर लगाए कएल ओकरा चूर्ण फेर भीम-भीम कहैत प्रलाप,
कृष्ण कहल नहि कानू हे धृतराष्ट्र, छल ई लौहक भीम मात्र ।

गांधारी देल कृष्णकेँ शाप,
जेना कएल अहाँ हमर वंशक नाश,
होएत अहूँक कुल नष्ट।
मृतकक दाह संस्कारक संग एक पक्ष समाप्त।

युधिष्ठिरक मोन विखिन्न, छोड़ल राज-पाटक विचार,
ब्यास आबि देलन्हि उपदेश, पलायन नहि अहाँक मार्ग।

धौम्य कए वेद मंत्रक गाण राजतिलक युधिष्ठिरकेँ लगाओल।
फेर पहुँचि भीष्मक समक्ष लेल अनुशासनक शिक्षा,
राजधर्म,लोकधर्म मोक्षधर्मक ज्ञान, प्रजापालन,
उठि प्रदेश जातिक विचारसँ ऊपर, राजाक व्रतक करू परिपालन।

आएल ओ काल जखन सूर्य भेलाह उत्तरायण,
पहुँचलाह युधिष्ठिर संग माता-गांधारी-कुन्ती, धृतराष्ट्र भ्राता मिलि,
अट्ठावन दिनक शर-शय्याक अन्तिम उपदेश आ महाप्रयाण,
चाननक चितापर भीष्मकेँ युधिष्ठिर देल आगि सभ आक्रान्त।

हस्तिनापुरक राज्यमे आएल सुख समृद्धि,
युधिष्ठिरक कौशल कएल आशाक वृद्धि,
उत्तराकेँ तखने भेल मृत-पुत्रक प्राप्ति,
सुभद्रा खसलि कृष्ण लग जाए।

कृष्ण उठाए बालकेँ कहल हम नहि कएल पलायन,
सत्यसँ सम्बन्ध रहल बनल, पराजित शत्रु कए नहि भेलहुँ हिंसक,
यदि ई सत्य तँ बालक जीबि उठथि।
ई सुनितहि शिशु भेल जीवित नाम पड़ल परीक्षित।

फेर कएल युधिष्ठिर यज्ञ अश्वमेध,
सिलेबी अश्वक गरमे स्वर्णपत्र,
जिनका युधिष्ठिरक राज्यसँ परहेज,
से पकड़ि घोटक करथि एकर विरोध।
मुदा घुरि आएल अश्व निष्कंटक,
यज्ञ भेल समाप्त निर्विघ्न।

बरख पन्द्रह बीतल तखन अएलाह ब्यास,
देल उपदेश धृतराष्ट्र लेल वानप्रस्थ धर्मक ज्ञान,
गांधारी, कुन्ती, विदुर, संजयक संग हिमालय प्रयाण,
विदुर लेलनि वनहिमे समाधि,
दावाग्नि लेलक शेष सभक प्राण।

कृष्ण युद्धक बाद गेलाह द्वारका,
छलथि प्राप्त कएने सम्मान,
मुदा यादव राजकुमार,
करथि विद्वानक अपमान ।

मारि-काटि करथि आपसमे खत्म,
देखि दुखित बलराम प्रभासतीर्थ जाए,
ओतहि लेल दाऊ समाधि,
कृष्ण पहुँचि देखि हुनकर प्राणान्त,
गाछ पकड़ि रहथि ठेहिआए ।

ब्याध जकर छल जरा नाम,
हरिण बुझि पैरक तलवामे मारल वाण,
भेल कृष्णक प्राणान्त ।

सुनि ई समाचार मृत्युक वसुदेवक,
पिता वासुदेव सेहो कएल जीवनक अन्त।

कृष्णक मृत्युक समाचार,
पाण्डवराज युधिष्ठिर देल परीक्षितकेँ राज,
सुभद्रा केँ दए उपदेश,
संग द्रौपदी पहुँचल द्वारका पाँचू भाए।

ओतए डूबल समुद्रमे छल ओ नगरी,
घुमैत फिरैत चललाह हिमालय सभ गोटे।
एक कुकुड़ छल संग चलैत ओतए,
हिमालय वृहदाकार हिमपातक मारि,
द्रौपदी खसलि मरलि, फेर सहदेव,
नकुल अर्जुन भीम खसि मरल फेर-फेर।

आगाँ देवलोकक रथ छल ठाढ़,
इन्द्र कहल चलू असगर सशरीर युधिष्ठिर,
ई कुकुड़ नहि रहए साथ।

युधिष्ठिर नहि मानल घुरि जाऊ इन्द्र,
बिन एकर नहि जाएब ओतए होए स्वर्ग अहि।
छल ओ कुकुड यमराज स्वयं,
प्रकट भए देल ओ आशीर्वाद ओतए।

पहुँचि स्वर्ग देखल कौरव गण सभ ओतए,
इन्द्र हमर भ्राता छथि कतए।
तखन एकटा दूत लए गेल हुनका नर्कक द्वारिपर,
द्रौपदी संग पाँचू भाए छलाह ओतए।

कहल युधिष्ठिर हम रहब एतहि हे दूत,
छोड़ि हिनका जाएब नहि कतहु।

इन्द्र यम पहुँचि गेलाह ओतए।
यम कहल यक्ष कुकुड़ बनि हम अहाँ परीक्षा लेल,
आइ एहि तेसर परीक्षामे सेहो अहाँकेँ उत्तीर्ण कएल।

ई अछि देवलोक मुदा सदेह राजाकेँ,
एतुक्का कष्ट देखक लेबाक चाही शिक्षा तेँ,
किछु कालक कष्ट हम अहाँकेँ देल।

छोड़ू ई शरीर लिअ दैवी रूप आब,
कहैत यमक भेल ई परिवर्तन,
कर्ण सेहो ओतए बारह आदित्यक संग,
रत्नजटित सिंहासनपर छल विराजमान,
भारतक युद्धक काव्यक समापन।

त्वञ्चाहञ्च सभ आपसक लड़ाई,
अछि एखनो पसरल ई महामारि।
जाति-धर्म परिवार पुत्र केर मोह,
यावत रहत प्रतिभा पिचाएत आह।
त्वञ्चाहञ्च मचत धृतराष्ट्र जतए करत अराड़ि,
दुर्योधन करत प्रारम्भ युधिष्ठिरक दोष की थोड़?

# असञ्जाति मन

ई पुरातन देश नाम भरत,
राज करथि जतए इक्ष्वाकु वंशज।
एहि वंशक शाक्य कुल राजा शुद्धोधन,
पत्नी माया छलि, कपिलवस्तुमे राज करथि तखन।
अश्वघोषक वर्णन ई सकल,
दैत अछि सम्बल असञ्जाति मनक।

माया देखलन्हि स्वप्न आबि रहल,
एकटा श्वेत हाथी आबि मायाक शरीरमे,
पैसि छल रहल हाथी मुदा,
मायाकेँ भए रहल छलन्हि ने कोनो कष्ट,
वरन् लगलन्हि जे आएल अछि मध्य क्यो गर्भ।

गर्भक बात मुदा छल सत्ते,
भेल मोन वनगमनक,
लुम्बिनी जाए रहब, कहल शुद्धोधनकेँ।

दिन बीतल ओतहि लुम्बनीमे दिन एक,
बिना प्रसव-पीड़ाक जन्म देलन्हि पुत्रक,
आकाशसँ शीतल आ गर्म पानिक दू टा धार,
कएल अभिषेक बालकक लाल-नील पुष्प कमल,
बरसि आकाश।

यक्षक राजा आ दिव्य लोकनिक भेल समागम,
पशु छोड़ल हिंसा पक्षी बाजल मधुरवाणी।

धारक अहंकारक शब्द बनल कलकल,
छोड़ि ‘‘मार’’ आनन्दित छल विश्व सकल,
‘‘मार’’ रुष्ट आगमसँ बुद्धत्वप्राप्ति करत ई?

माया-शुद्धोधनक विह्वलताक प्रसन्नताक,
ब्राह्मण सभसँ सुनि अपूर्व लक्षण बच्चाक,
भय दूर भेल माता-पिताक तखन जा कऽ,
मनुष्यश्रेष्ठ पुत्र आश्वस्त दुनू गोटे पाबि कऽ।

महर्षि असितकेँ भेल भान शाक्य मुनि लेल जन्म,
चली कपिलवस्तु सुनि भविष्यवाणी बुद्धत्व करत प्राप्त,
वायु मार्गे अएलाह राज्य वन कपिलवस्तुक,
बैसाएल सिंहासन शुद्धोधन तुरत ।

राजन् आएल छी देखए बुद्धत्व प्राप्त करत जे बालक।
बच्चाकेँ आनल गेल चक्र पैरमे छल जकर,
देखि असित कहल हा मृत्यु समीप अछि हमर,
बालकक शिक्षा प्राप्त करितहुँ मुदा वृद्ध हम अथबल,
उपदेश सुनए लेल शाक्य मुनिक जीवित कहाँ रहब।

वायुमार्गे घुरलाह असित कए दर्शन शाक्य मुनिक,
भागिनकेँ बुझाओल पैघ भए बौद्धक अनुसरण करथि।

दस दिन धरि कएलन्हि जात-संस्कार,
फेर ढ़ेर रास होम जाप,
करि गायक दान सिंघ स्वर्णसँ छारि,
घुरि नगर प्रवेश कएलन्हि माया,
हाथी-दाँतक महफा चढ़ि।

धन-धान्यसँ पूर्ण भेल राज्य,
अरि छोड़ल शत्रुताक मार्ग,
सिद्धि साधल नाम पड़ल सिद्धार्थ।

मुदा माया नहि सहि सकलीह प्रसन्नता,
मृत्यु आएल मौसी गौतमी कएल शुश्रुषा।

उपनयन संस्कार भेल बालकक,
शिक्षामे छल चतुर,
अंतःपुरमे कए ढेर रास व्यवस्था विलासक,
शुद्धोधनकेँ छल मोन असितक बात,

बालकक योगी बनबाक।

सुन्दरी यशोधरासँ फेर करबाओल सिद्धार्थक विवाह,
समय बीतल सिद्धार्थक पुत्र राहुलक भेल जन्म।

उत्सवक संग बितैत रहल दिन पल,
सुनलन्हि चर्च उद्यानक कमल सरोवरक,
सिद्धार्थ इच्छा देखेलन्हि घुमक ।

सँसे रस्तामे आदेश भेल राजाक,
क्यो वृद्ध दुखी रोगी रहथि बाट ने घाट।

सुनि नगरवासी देखबा लेल व्यग्र,
निकलि आएल पथपर दर्शनक सिद्धार्थक ।

चारू कात छल मनोरम दृश्य,
मुदा तखने आएल पथ एक वृद्ध।

हे सारथी, सूतजी के अछि ई,
आँखि झाँपल भौँहसँ,
श्वेत केश,
हाथ लाठी,
झुकल की अछि भेल?

कुमार अछि ई वृद्ध,
भोगि बाल युवा अवस्था जाए
अछि भेल वृद्ध आइ ।

की ई होएत सभक संग,
हमहू भए जाएब वृद्ध एक दिन?

सभकेँ अछि बुझल ई खेल,
फेर चहुदिस ई सभ करए किलोल ?
हर्षित मुदित बताह तँ नहि ई भीड़ ?

घुरि चलू सूत जी आब,

उद्यानमे मोन कतए लाग !

महलमे घुरि-फिरि भऽ चिन्तामग्न,
पुनि लऽ आज्ञा राजासँ निकलल अग्र ।

मुदा एहि बेर भेटल एकटा लोक,
पेट बढ़ल, झुकल लैत निसास,
रोगग्रस्त छल ओ पूछल सिद्धार्थ,
सूत जी छथि ई के, की भेल?

रोगग्रस्त ई कुमार अछि ई तँ खेल,
कखनो ककरो लैत अछि अपन अधीन ।
सूत जी घुरू भयभीत भेलहुँ हम आइ फेर।

घुरि घर विचरि-विचरि कय चिन्तन,
शुद्धोधन चिन्तित जानि ई घटनाक्रम।

आमोद प्रमोदक कए आर प्रबन्ध,
रथ सारथी दुनू नव कएल शुद्धोधन।

फेर एक दिन पठाओल राजकुमार,
युवक-युवती संग पठाओल करए विहार ।

मुदा तखने एकटा यात्रा मृत्युक,
हे सूतजी की अछि ई दृश्य,
सजा-धजा कए चारि गोटे धए कान्ह,
मुदा तैयो सभ कानि रहल किए नहि जान ?

हे कुमार आब ई सजाओल मनुक्ख,
नहि बाजि सकत, अछि ई काठ समान।

कानि-खीजि जाथि समस्त ई लोक,
छोड़ए ओकरा मृत्यु केलन्हि जे प्राप्त।

घुरू सारथी नहि होएत ई बर्दाश्त,
भय नहि अछि एहि बेर,
मुदा बुझितो आमोद प्रमोदमे भेर,
अज्ञानी सन कोना घुमब उद्यान।

मुदा नव सारथी घुरल नहि द्वार,
पहुँचल उद्यान पद्म खण्ड जकर नाम।
युवतीगणकेँ देलक आदेश उदायी, पुरोहित पुत्र,
करू सिद्धार्थकेँ आमोद-प्रमोदमे लीन ।

मुदा देखि इन्द्रजीत सिद्धार्थक अनासक्ति,
पुछल उदायी भेल अहाँकेँ ई की?

हे मित्र क्षणिक ई आयु,
बुझितो हम कोना गमाऊ ?

साँझ भेल घुरि युवतीसभ गेल,
सूर्यक अस्तक संग संसारक अनित्यताक बोध,
पाबि सिद्धार्थ घुरल घर चिन्ता मग्न,
शुद्धोधन विचलित मंत्रणामे लीन।

किछु दिनक उपरान्त,
माँगि आज्ञा बोन जएबाक,
संग किछु संगी निकलि बिच खेत-पथार,
देखि चास देल खेत मरल कीट-पतंग ।

दुखित बैसि उतड़ल घोड़ासँ अधः सिद्धार्थ,
बैसि जोमक गाछक नीचाँ धए ध्यान,
पाओल शान्ति तखने भेटल एक साधु।

छल ओ मोक्षक ताकिमे मग्न,
सुनि ओकर गप देखल होइत अन्तर्धान।
गृह त्यागक आएल मोनमे भाव,
बोन जएबाक आब एखन नहि काज।

घुरि सभ चलल गृहक लेल,

रस्तामे भेटलि कन्या एक,
कहल अहाँ छी जनिक पति,
से छथि निश्चयेन निवृत्त।

निवृत्त शब्दसँ निर्वाणक प्रसंग,
सोचि मुदित सिद्धार्थ घुरल राज सभा,
रहथि ओतए शुद्धोधन मंत्रीगणक बिच।

कहल - लए संन्यास मोक्षक ज्ञानक लेल,
करू आज्ञा प्रदान हे भूदेव।

हे पुत्र कएल की गप,
जाऊ पहिने पालन करू भए गृहस्थ ।

संन्यासक नहि अछि आएल बेर,
तखन सिद्धार्थ कहल अछि ठीक,
तखन दूर करू चारि टा हमर भय,
नहि मृत्यु, रोग, वृद्धावस्था आबि सकय,
धन सेहो नहि क्षीण होए।

शुद्धोधन कहल अछि ई असंभव बात,
तखन हमर वियोगक करू नहि पश्चाताप।

कहि सिद्धार्थ गेलाह महल बिच,
चिन्तित एम्हर-ओम्हर घुमि निकललि बाह्य ।

सूतल छंदककेँ कहल श्वेत वेगमान,
कंथक घोड़ा अश्वशालासँ लाऊ ।

सभ भेल निन्नमे भेर कंथक आएल,
चढा सिद्धार्थकेँ लए गेल नगरसँ दूर ।

नमस्कार कपिलवस्तु !

घुरब जखन पाएब जन्म-मृत्युक भेद !

सोझाँ आएल भार्गव ऋषिक कुटी उतरि सिद्धार्थ,
लेलन्हि रत्नजटित कृपाण काटल केश ।

मुकुट मणि आभूषण देल छंदककेँ।
अश्रुधार बहल छंदकक आँखि,
जाऊ छंदक घुरु नगर जाऊ ।

नहि सिद्धार्थ हम नहि छी सुमन्त,
छोड़ि राम घुरल अयोध्या नगर।

घोटक कंथकक आँखिमे सेहो नोर,
तखने एक व्याध छल आएल,
कषाय वस्त्र पहिरने रहए, कहल सिद्धार्थ,
हमर शुभ्र वस्त्र लिअ दिअ ई वस्त्र,
अदलि-बदलि दुनु गोटे वस्त्र पहिरि,
छंदक देखि केलक प्रणाम गेल घुरि।

सिद्धार्थ अएलाह आश्रम सभ भेल चकित,
देखि नानाविध तपस्या कठोर,
नहि संतुष्ट कष्ट भोगथि पाबय लेल स्वर्ग,
अग्निहोत्रक यज्ञ तपक विधि देखि ।

निकलि चलल किछु दिनमे सिद्धार्थ आश्रम छोड़ि,
स्वर्ग नहि मोक्षक अछि हमरा खोज ।

जाऊ तखन अराड मुनि लग विंध्यकोष्ठ,
नमस्कार मुनि प्रणाम घुरू सभ जाऊ,
सिद्धार्थ निकलि बढ़ि पहुँचलाह आगु।

एम्हर कंथकक संग छंदक खसैत-पड़ैत,
एक दिनमे आएल मार्ग आठ दिनमे चलैत,
घरमुँहा रस्ता आइ कम नहि, अछि भेल अनन्त ।

घुरि सुनेलक खबरि कषाय वस्त्र पहिरबाक सिद्धार्थक,
गौतमी मूर्छित, यशोधरा कानथि बाजि-बाजि,
एहन कठोर हृदय सिद्धार्थक मुखेटा कोमल रहए,

ओकरो सँ कठोर अछि हृदय हमर जे फाटए अछि नञि ।

शुद्धोधन कहथि दशरथक छल भाग्य,
पुत्र वियोगमे प्राण हमर निकलए नञि अछि।

पुरहित आ मंत्रीजी निकलि ताकू जाय,
भार्गव मुनिक आश्रममे देखू पूछू ओतए।

जाय जखन सभ ओतए पूछल भार्गव कहल,
गेलथि अराड मुनिक आश्रम दिस मोक्षक लेल बेकल।

दुनू गोटे बढ़ि आगाँ देखैत छथि की,
कुमार गाछक नीचाँ बैसल ओतए।

पुरोहित कहल हे कुमार पिताक ई गप सुनू,
गृहस्थ राजा विदेह, बलि, राम आ बज्रबाहु,
केलन्हि प्राप्त मोक्ष करू अहाँ सेहो।

मुदा सिद्धार्थ बोनसँ घुरताह नहि,
मोक्षक लेलन्हि अछि प्रण तोड़ताह नहि।

हे सिद्धार्थ पहिनहु घुरल छथि बोनसँ,
अयोध्याक राम, शाल्व देशक द्रुम आ राजा अंबरीष ।

हे पुरहित जी घुरू व्यर्थ समय नष्ट छी कए रहल,
राम आ कि आन नहि उदाहरण समक्ष ।

नहि बिना तप कोनो क्यो बहटारि सकत,
ज्ञान स्वयं पाएब नव रस्ता तकैत।

घुरल दुहु गोटे गुप्त-दूत नियुक्त कए।

सिद्धार्थ बढ़ि आगाँ कएल गंगाकेँ पार,
राजगृह नगरी पहुँचि कए भिक्षा ग्रहण,
पहुँचि पाण्डव-पर्वत जखन बैसलथि,
राजा बिम्बसार आबि बुझाओल बहुत ।

सूर्यवंशी कुमार जाऊ घुरि,
मुदा सिद्धार्थ कहल हर्यंक वंशज,
मोहकेँ छोड़ल घुरि जाएब कतए ?

राजा सेहो होइछ कखनहुँ काल दुखित,
दास वर्गकेँ सेहो कखनहुँ भेटए छै खुशी ?

करू रक्षाक प्रजाक संग अपन सेहो,
सिद्धार्थ वैश्वंतर आश्रम दिश बढ़लाह,
मगधराज चकित !

अराडक आश्रममे ज्ञान लेल,
गेलाह शाक्य,
कहल मुनि अविद्या अछि पाँचटा,
अकर्मण्यता आलस्यक अछि अन्हार,
अन्हारक अंग अछि क्रोध आ विषाद,
मोह अछि ई वासना जीवनक आ संगक मृत्यु,
कल्याणक मार्ग अछि मार्ग मोक्षक ।

मुदा सिद्धार्थ कहल हे मुनिवर !
आत्माक मानब तँ अछि मानब अहंकारकेँ,
अहाँ गप नहि रुचल बढ़ल आश्रम उद्रकक से।

नगरी गेलाह राजर्षिक जे आश्रम छल,
मुदा नहि उत्तर भेटल ओतहु सिद्धार्थक।

गेलाह तखन नैरंजना तट पाँचटा भिक्षुक भेटल,
छह बरख तप कएल मुदा प्रश्न अनुत्तरित छल।

स्वस्थ तनमे भेटत मनसक प्रश्नक उत्तर,
प्रण कएल ई निरंजनामे कएल स्नान ओ,
बाहर बहराए अएलाह तखने कन्या गोपराजक,
श्वेत रंग नील वस्त्रमे नन्द बाला जकर नाम छल ।

आयलि पायस पात्र लेने तृप्त भए सिद्धार्थ भोजन कएल।

पाँचू संगी देखि ई सिद्धार्थक संग छोड़ल ।

मुदा ओ भेलाह सबल बोधिसत्वक प्राप्तिक लेल,
दृढ़ प्रण लए पीपरक तर ओ आसन देलन्हि ।

काल सर्प कहल देखू ई नीलकंठक झुण्डकेँ,
घुमि रहल चारू दिस अहाँक,
प्रमाण अछि जे बोधिसत्व प्राप्त करब अहाँ।

सुनि ई तृण उठाए कएल प्रतिज्ञा तखन,
सिद्धार्थ पाओत ज्ञान आ तखने उठत छोड़ि आसन।

ब्रह्मांड छल प्रसन्न मुदा दुष्ट मार डरायल,
कामदेव, चित्रायुध पुष्पसर नाम मारक,
सिद्धार्थ प्राप्त कए ज्ञान जगकेँ बताओत।

हमर साम्राज्यक होएत की तखन,
पुत्र विभ्रम,हर्ष, दर्प छल ओकर,
पुत्री अरति, प्रीति, तृषा के सेहो कए संग।

चलू ई लेने ढाल प्रतिज्ञाक,
सत् धनुषपर बुद्धिक वाण चढ़ाए,
जीतत से की जीतए देबए हमरा सभ आइ ?

हे सिद्धार्थ यज्ञ कए पढ़ि कए शास्त्र,
करू इन्द्रपद प्राप्त भोगू भोग,
छोड़ू आसन देब वाण चलाए।

नहि देलन्हि सिद्धार्थ एहिपर ध्यान,
मार तखन देलक वाण चलाए,
मुदा भेल कोनो नहि परिणाम।

शिवपर सेहो चलल रहए ई वाण,
विचलित भेल रहथि ओ सेहो,
के अछि ई से नहि जान !!

हे सैनिक हमर विकराल-विचित्र,
त्रिशूल घुमाए, गदा उठाए,
साँढ़क सन दए हुंकार,
आऊ करू विजित अछि शत्रु विकराल।

राति घनघोर अन्हरियामे कतए छथि चन्द्र ?
तरेगणक सेहो कोनो नहि दर्श !
मुदा सभ गेल व्यर्थ पदार्पण भेल अदृश्य,
मार जाऊ होएत नहि ई विचलित।

देखू एकर क्षमा प्रतीक जटाक,
धैर्य अछि एकर जेना गाछक मूल,
चरित्र पुष्प बुद्धि शाखा धर्म फलक प्रतीक।

स्थान जतए अछि आसन पृथ्वीक थिक नाभि,
प्राप्त करत ई ज्ञान सहजहि आइ ।

पराजित मार गेल ओतएसँ भागि।

रातिक पहिल पहरिमे शाक्य मुनि,
पाओल वर्णन स्मरण पूर्व जन्मक सहजहि ।

दोसर पहरमे दिव्य चक्षु पाबि,
देखल कर्मक फल वेदनाक अनुभूति ।

गर्भ सरोवर नरक आ स्वर्ग दुहुक,
पाओल अनुभव देखल खसैत स्वर्गहुसँ,
अतृप्त भोगी जन्म, जरा, मृत्यु।

बीतल तेसर पहरि चारिममे जाए,
पाओल ज्ञान बुद्ध भए पाओल शान्ति।

शान्त मन शान्त छल पूर्ण जगत !!!

धर्म चारू दिस बिन मेघ अछार !!

सूचना देल दुन्दभि बाजि अकाश !

सकल दिशा सिद्धगणसँ दीप्तमय छल,
स्वर्गसँ वृष्टि पुष्पक इक्षवाकु वंशक ई मुनि छल।

बैसल एहि अवस्थामे सात दिन धरि मुनि शाक्य,
विमान चढ़ि अएलाह तखन देवता दू टा,
करू उद्धार जगतक दए मोक्षक शिक्षा।

आ भिक्षुपात्र लए अएलाह फेर एक देव,
कएल स्मरण अराड आ उद्रकक बुद्ध,
मुदा दुहु छल छोड़ल जगत ई तुच्छ।

आब जाएब वाराणसी भिक्षु पाँचो संगी जतए,
कहल देखि बोधिक गाछ दिस स्नेहसँ।

बुद्ध चललाह असगरे रस्तामे भिक्षु एक भेटल,
तेजमय अहाँ के गुरु के छथि अहाँक ?

हे वत्स गुरु नहि क्यो हमर
प्राप्त कएल निर्वाण हम,
सभ किछु जानल जे अछि जनबा योग्य
लोक कहए छथि हमरा बुद्ध !

जा रहल छी काशी दुखित कल्याण लेल
दूर सँ देखल वरुणा आ गंगाक मिलन
आ गेलाह बुद्ध लगहिमे मृगदाव वन।

पाँचू संगि हुनक रहथि ओतहि
देखैत अबैत विचारल क्यो नहि करत अभिवादन हुनक
मुदा पहुँचिते ई की गप भेल ?
सभ हुनक सत्कारमे छल लागि गेल?

आसन दए जखन बैसेलन्हि हुनका सभ क्यो,
उपदेश देब शुरु करितथि मुदा तखने बाजल कियो,
अहाँ तँ तत्वकेँ नहि छी बुझैत,
तप छोड़ि बीचहि उठल छलहुँ किएक ?

बुद्ध कहल घोर तप आ आसक्ति दुनुक हम त्याग कएल
मध्य मार्गकेँ पकड़ि बोधत्व प्राप्त कएल ।

एकर सूर्य अछि सम्यक दृष्टि आ
एकर सुन्दर रस्तापर चलैए सम्यक संकल्प ।

ई करैए विहार सम्यक आचरणक उपवनमे
सम्यक् आजीविका अछि भोजन एकर।

सेवक अछि सम्यक व्यायाम,
शान्ति भेटैए एकरा सम्यक स्मृति रूपी नगरीमे
आ सुतैए सम्यक समाधिक बिछाओनपर ई।

एहि अष्टांग योगसँ अछि सम्भव ई
जन्म, जरा, व्याधि आ मृत्युसँ मुक्ति।

मध्य मार्ग चारिटा अछि ध्रुव सत्य
दुख, अछि तकर कारण, दुखक निरोध
आ अछि उपाय निरोधक ।

कौंडिन्य आ ओकर चारू संगी सुनल ई,
प्राप्त कएल सभ दिव्यज्ञान ।

हे नरमे उत्तम पाँचू गोटे
भेल ज्ञान अहाँ लोकनि के?

कौण्डिन्य कहलन्हि हँ, भेल भंते,
कौंडिन्य भेलाह तखन प्रमुख धर्मवेत्ता
तखनहि यक्षसभ पर्वतपरसँ कएलक सिंहनाद,
शाक्यमुनि अछि कएलक धर्मचक्र प्रवर्तित !!!!

शील कील अछि क्षमा-विनय अछि धूरी,
बुद्धि-स्मृतिक पहिया अछि सत्य अहिंसासँ युक्त,
एहिमे बैसि भेटत शान्ति ई बाजल सभ यक्ष,
मृगदावमे भेल धर्मचक्र प्रवर्तित।

फेर अश्वजित आ ओकर चारि टा आन भिक्षु
कएल निर्वाण धर्ममे बुद्ध दीक्षित,
फेर कुलपुत्र यश प्राप्त कएल अर्हत पद
यश आ चौवन गृहस्थकेँ
कएल बुद्ध सद्धर्ममे प्रशीक्षित ।

घरमे रहि कऽ भऽ सकै छी अनाशक्त
आ वनमे रहियो प्राप्त कऽ सकए छी आशक्ति ।

एहिमेसँ आठ गोट अर्हत प्राप्त शिष्यकँ
बिदा कए आठो दिशामे चललाह बुद्ध ।

पहुँचि गया जितबाक रहन्हि इच्छा
सिद्धि सभसँ युक्त काश्यप मुनिकँ।

गयामे काश्यप मुनि कएलन्हि स्वागत बुद्धक,
मुदा रहबाक लेल देल अग्निशाला रहए छल महासर्प जतए ।

रातिमे मुदा ओ सर्प प्रणाम कएल बुद्धकँ
भोरमे काश्यप देखल सर्पकँ बुद्धक भिक्षापात्रमे ।

कए प्रणाम ओ आ हुनकर पाँच सए शिष्य
संग अएलाह काश्यक भाए गय आ नदी ।

कएल स्वीकार धर्म बुद्धक
प्राप्त कएल गय उत्तुंगपर निर्वाणधर्मक शिक्षा
लए सभ काश्यपकँ संग बुद्ध पहुँचल राजगृहक वेणुवण ।

बिम्बसार सुनि आएल ओतए देखल काश्यपकँ बुद्धक शिष्य बनल
पूछल बुद्ध तखन काश्यपसँ,
छोड़ल अहाँ अग्निक उपासना किएक भंते ?

काश्यप कहल मोह जन्म रहि जाइछ देने
आहुति अग्निमे कएने पूजा पाठ ओकर तँहि ।

बुद्धक आज्ञा पाबि कएल काश्यप दिव्य शक्तिक प्रदर्शन
आकाशमध्य उड़ि अग्निक समान जरि कए ।

तखन बिम्बसारकँ देल बुद्ध अनात्मवादक शिक्षा
विषय, बुद्धि आ इन्द्रिक संयोगसँ अबैछ चेतनता
शरीर इन्द्रिय आ चेतना अछि भिन्न
आ अभिन्न सेहो।

बिम्बसार भऽ प्रसन्न दान बुद्धकेँ वेणुवन देल
तथागतक शिष्य अश्वजित नगर गेल भिक्षाक लेल ।

कपिल संप्रदायक लोक देखि तेज पूछल अहाँक गुरु के?
कहल अश्वजित सुगत बुद्ध छथि जे इक्षवाकुवंशक।

सएह हमर गुरु कहए छथि बिन कारणक नहि होइछ किछुओ
उपतिष्य ब्राह्मणकेँ प्राप्त भेल ज्ञान कहलक ओ मौद्गल्यायनकेँ
मौद्गल्यायनकेँ सेहो प्राप्त भेलैक सम्यक दृष्टि सुनिकेँ।

सुनि वेणुवनमे उपदेश त्यागल जटा दंड
पहिरि काषाय कएल साधना प्राप्त कएल परम पद
काश्यप वंशक एकटा धनिक ब्राह्मण छोड़ल पत्नी परिजन
प्रसिद्धि भेटल हिनका महाकाश्यप नामसँ।

कोसलक श्रावस्तीक धनिक सुदत्त आएल वेणुवन
गृहस्थ रहितो प्राप्त भेल तत्वज्ञान ओकरा ।

उपतिष्य संगे सुदत्त गेल श्रावस्ती नगर
जेत केर वनमे विहार बनएबाक कएल निश्चित् ।

जेत रहए लोभी ढेर पाइ लेलक जेतवनक
मुदा देखि दैत पाइ हृदय परिवर्तित भेल ओकर
सभटा वन देलक ओ विहारक लेल
विहार शीघ्रे बनि गेल उपतिष्यक संरक्षकत्वमे।

बुद्ध फेर राजगृहसँ चलि देलन्हि कपिलवस्तु दिस
ओतए पिता शुद्धोधनकेँ देल बौद्ध रूपी अमृत
कोनो पुत्र पिताकेँ नहि देने रहए ई।

कर्म धरए अछि मृत्युक बादो पछोड़
कर्मक स्वभाव, कारण, फल, आश्रयक रहस्य बुझू,
जन्म, मृत्यु, श्रम, दुखसँ फराक पथ ताकू ।

आनन्द, नन्द, कृमिल, अनुरुद्ध, कुन्डधान्य, देवदत्त, उदायि
कए ग्रहण दीक्षा छोड़ल गृह सभ ।

अत्रिनन्दन उपालि सेहो कएल ग्रहण दीक्षा
शुद्धोधन देल राजकाज भाए केँ
रहए लगलाह राजर्षि जेकाँ ओ ।

फेर बुद्ध कएल प्रवेश नगरमे
न्यग्रोध वनमे बुद्ध पहुँचि
चिन्तन कल्याणक जीवक करए लगलाह।

फेर ओ ओतए सँ निकलि गेलाह प्रसेनजितक देस कोसल
श्रावस्तीक जेतवन छल श्वेत भवन आ अशोकक गाछसँ सज्जित
सुदत्त कएल स्वर्णमालासँ स्वागत बुद्धक
कएल जेतवन बुद्धक चरणमे समर्पित।

प्रसेनजित भेल धर्ममे दीक्षित
तीर्थक साधु सभक कए शंकाक समाधान
कएल बुद्ध हुनका सभकेँ दीक्षित।

ओतएसँ अएलाह बुद्ध फेर राजगृह
ज्योतिष्क, जीवक, शूर, श्रोण,अंगदकेँ उपदेश दए,
कएल सभकेँ संघमे दीक्षित।

ओतएसँ गंधार जाए राजा पुष्करकेँ कएल दीक्षित
विपुल पर्वतपर हेमवत आ साताग्र दुनू यक्षकेँ उपदेश दए
अएलाह जीवकक आम्रवन।

ओतए कए विश्राम घुमैत-फिरैत
पहुँचल आपण नगर,
ओतए अंगुलीमाल तस्करकेँ
कएल दीक्षित प्रेमक धर्ममे।

वाराणसीमे असितक भागिन कात्यायनकेँ कएल दीक्षित
देवदत्त मुदा भए ईर्ष्यालु संघमे चाहलक पसारए अरारि।

गृध्रकूट पर्वतपर खसाओल शिलाखंड बुद्धपर
राजगृह मार्गमे छोड़ल हुनकापर बताह हाथी
सभ भागल मुदा आनन्द संग रहल बुद्धक
लग आबि गजराज भए गेल स्वस्थ कएल प्रणाम झुकि कए
उपदेश देल गजराजकेँ बुद्ध।

देखल ई लीला राजमहलसँ अजातशत्रु
भए गेल ओहो शिष्य तखन बुद्धक।

राजगृहसँ बुद्ध अएलाह पाटलिपुत्र
मगधक मंत्री वर्षाकार बना रहल छल दुर्ग,
बुद्ध कएल भविष्यवाणी होएत ई नगर प्रसिद्ध
तखन तथागत गेलाह गौतम द्वारसँ गंगा दिस।

गंगापार कुटी गाममे
देल उपदेश धर्मक
फेर गेलाह नन्दिग्राम जतए भेल छल बहुत रास मृत्यु।

दए सान्त्वना गेलाह वैशाली नगरी
निवास कएल आम्रपालीक उद्यानमे।

श्वेत वस्त्र धरि अएलीह ओ
बुद्ध चेताओल शिष्य सभकेँ,
धरू संयम रहब स्थिरज्ञानमे लऽ बोधक ओखध
प्रज्ञाक वाणसँ शक्तिक धनुषसँ करू अपन रक्षा।

आम्रपाली आबि पओलक उपदेश
भेलैक ओकरा घृणा अपन वृत्तिसँ
माँगलक धर्मलाभक भिक्षा,
बुद्ध कएलन्हि प्रार्थना ओकर स्वीकार,
संगहि आएब भिक्षाक लेल अहाँक द्वार ।

सुनि ई गप जे आएल छथि बुद्ध आम्रपालीक उद्यान
लिच्छवीगण अएलाह बुद्धक समीप
बुद्ध देलन्हि शीलवान रहबाक सन्देश।

लिच्छवीगण देलन्हि भिक्षाक लेल अपन-अपन घर अएबाक आमन्त्रण,
पाबि आमन्त्रण कहलन्हि बुद्ध
मुदा जाएब हम आम्रपालीक द्वार
कारण हुनका हम देलियन्हि अछि वचन।

लिच्छवीगणकेँ लगलन्हि ई कनेक अनसोहाँत,
मुदा पाबि उपदेश बुद्धक,
घुरलाह अपन-अपन घर-द्वार।

पराते आम्रपालीसँ ग्रहण कए भिक्षा
बुद्ध गेलाह वेणुमती करए चारि मासक बस्सावास।

चारि मास बितओला उत्तर,
रहए लगलाह मर्कट सरोवरक तट।

ओतहि आएल मार,
कहलक हे बुद्ध नैरंजना तटपर अहाँक संकल्प
जे निर्वाणसँ पूर्व करब उद्धार देखाएब रस्ता दोसरोकेँ,
आब तँ कतेक छथि मुक्त, कतेक छथि मुक्ति पथक अनुगामी,
आब कोनो टा नहि बाँचल अछि कारण
करू निर्वाण प्राप्त।

कहलन्हि बुद्ध, हे मार
नहि करू चिन्ता,
आइसँ तीन मासक बाद,
प्राप्त करब हम निर्वाण,
मार होइत प्रसन्न तृप्त
गेल घुरि।

बुद्ध धऽ आसन प्राणवायुकेँ लेलन्हि चित्तमे
आ चित्तकेँ प्राणसँ जोड़ि योग द्वारा समाधि कएल प्राप्त।

प्राणक जखने भेल निरोध,
भूमि विचलित, विचलित भेल अकास !!

आनन्द पूछल करू अनुग्रह लिच्छवी सभपर,
किएक ई धरा आ आकास,
दलमलित मर्त्य आ दिव्यलोक !!!

बुद्ध कहलन्हि आबि गेल छी हम बाहर,
छोड़ि अपन प्रकोष्ठ,
मात्र तीन मास अनन्तर
छोड़ब ई देह,
निर्वाण मे रहबा लेल सतत !!!!

आनन्द सुनि ई करए लागल हाक्रोस,
सुनि विलाप लिच्छवी गण जुटि सेहो,
विलापमे भऽ गेलाह संग जोड़ ।

बुद्ध सभकेँ बुझा-सुझा,
चललाह वैशालीक उत्तर दिशा।

पहुँचि भोगवती नगरी,
देल शिक्षा जे विनय अछि हमर वचन,
जे बोल अछि विनयविहीन,
से अछि नहि धर्म।

तखन मल्लक नगरी पापुर जाए,
अपन भक्त चुंदक घरमे कएल भोजन बुद्ध,
दए ओकरा उपदेश बिदा भेलाह कुशीनगरक दिस।

संगे चुन्दक पार कएल इरावती धार
सरोवर तटपर कए विश्राम,
कए हिरण्यवती धारमे स्नान,
कहल हे आनन्द,
दुनू शालक गाछक बीच करब हम शयन।

आजुक रातिक उत्तर पहर,
करब प्राप्त निर्वाण।

हाथक बनाए गेरुआ,

दए टाँगपर टाँग,
लऽ दहिना करोट कहल हे आनन्द,
बजा आनू मल्ल लोकनिकेँ,
भेँट करबा लेल निर्वाण पूर्व।

शान्त दिशा, शान्त व्याघ्र-भालु,
शान्त चिड़इ शान्त सभटा जन्तु।

आबि मल्ल लोकनि कएल विलाप,
मुदा बुद्ध दए सांत्वना घुरेलन्हि सभकेँ।

आएल सुभद्र त्रिदंडी संन्यासी तकर बाद,
पाबि अष्टांग मार्गक शिक्षा,
कहल सुभद्र हे करुणावतार
अहाँक मृत्युक दर्शनसँ पहिने हम करए
चाहैत छी निर्वाण प्राप्त ।

बैसल ओ पर्वत जेकाँ
आ जेना मिझा जाइत अछि दीप
हवाक झोँकसँ,
तहिना क्षणेमे कएलक निर्वाण प्राप्त।

छल ई हमर अन्तिम शिष्य !

सुभद्रक करू अन्तिम संस्कार !

बीतल आध राति,
बुद्ध बजाए सभ शिष्यकेँ,
देल प्रातिमोक्षक उपदेश,
कोनो शंका होए तँ पूछू आइ ।

अनिरुद्ध कहल नहि अछि शंका आर्य सत्यमे ककरो।
बुद्ध तखन ध्यान कऽ एकसँ चारिम तहमे पहुँचि,
प्राप्त कएल शान्ति।

भेल ई महापरिनिर्वाण !

मल्ल सभ आबि उठेलक बुद्धकेँ स्वर्णक शव-शिविकामे,
नागद्वारसँ बाहर भए कएलन्हि पार हिरण्यवती धार,
मुदा शवकेँ चन्दनसँ सजाए,
जखन लगाओल आगि, नहि उठल चिन्गारि ।

शिष्य काश्यप छल बिच मार्ग,
ओकरा अबिते लागल चितामे आगि !

मल्ल लोकनि बीछि अस्थि धऽ स्वर्णकलशमे,
आनल नगर मध्य,
बादमे कए भवन पूजाक निर्माण,
कएल अस्थिकलश ओतए विराजमान।

फेर सात देशक दूत,
आबि मँगलक बुद्धक अस्थि,
मुदा मल्लगण कएल अस्वीकार,
तँ बजड़ल युद्ध-युद्ध ।

सभ आबि घेरल कुशीनगर,
मुदा द्रोण ब्राह्मण बुझाओल दुनू पक्ष।

बाँटि अस्थिकेँ आठ भाग,
द्रोण लेलक ओ घट आ गण पिसल छाउर बुद्धक ।

सभ घुरलाह अपन देश आब।

अस्थि कलश छाउर पर बनाए स्तूप,
करए गेलाह पूजा अर्चना जाए,
दसटा स्तूप बनि भेल ठाढ़,
जतए अखण्ड ज्योति आ घण्टाक होए निनाद।

फेर राजगृहसँ आएल पाँच सए भिक्षु,
आनन्दकेँ देल गेल ई काज,
बुद्धक सभ शिक्षाकेँ कहि सुनाऊ,
होएत ई सभ समग्र आब।

हम ई छलहुँ सुनने एहि तरहेँ,
कएल सम्पूर्ण वर्णन नीके।

कालान्तरमे अशोक स्तूपसँ लए धातु कए कए कऽ सए विभाग,
बनाओल कएक सए स्तूप,
श्रद्धाक प्रतीक।

जहिया धरि अछि जन्म, अछि दुख,
पुनर्जन्मसँ मुक्ति अछि मात्र सुख,
तकर मार्ग देखाओल जे महामुनि,
शाक्यमुनि सन दोसर के अछि शुद्ध।

असञ्ज्ञाति मनक ई सम्बल,
देलहुँ अहाँ हे बुद्ध
हे बुद्ध
हे बुद्ध ।

खण्ड-७

# बालमंडली किशोर-जगत

(नाटक - कथा - पद्य)

## खण्ड-७ : **बालमंडली किशोर-जगत**

(नाटक - कथा - पद्य)

**बाल-नाटक**

१. अपाला आत्रेयी
२. दानवीर दधीची

**बालकथा**

१. ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा
२. राजा अनसारी
३. राजा ढोलन
४. बगियाक गाछ
५. ज्योति पँजियार
६. राजा सलहेस
७. बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल
८. महुआ घटवारिन
९. डाकूरौहिणेय
१०. मूर्खाधिराज
११. कौवा आ फुद्दी
१२. नैका बनिजारा
१३. डोकी डोका
१४. रघुनी मरर
१५. जट-जटिन
१६. बत्तू
१७. भाट-भाटिन
१८. गांगोदेवीक भगता
१९. बड़ सख सार पाओल तुअ तीरे
२०. छेछन
२१. गरीबन बाबा
२२. लालमैन बाबा
२३. गोनू झा आ दस ठोप बाबा

**वर्णमाला शिक्षा: अंकिता**

**बाल-कविता**

१. ट्रेनक गाड़ी
२. के छथि
३. राजा श्री अनुरन्वज सिंह
४. सूतल
५. अखण्ड भारत
६. मोनक जड़िमे
७. पुनः स्मृति
८. कलम गाछी
९. हाथीक मुँहमे लागल पाइप
१०. बानर राजा
११. चिड़ियाखाना
१२. जमबोनी
१३. बौआ ठेहुनिया मारि
१४. ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग
१५. भोरक बसात
१६. छाहक करतब
१७. सपना
१८. कोइरीक कूकू
१९. शितलपाटी
२०. मकड़ीक जाल
२१. वायुगोलक
३०. हाथीक सूप सन कान
३१. छुट्टी
३२. बौआ गेल सुनि
३३. मिथिला
३४. बादुर सोंस
३५. की? किए? कोना? के?
३६. फेर आएल जाड़
३७. आगाँ
३८. अंध विश्वास

१०८. नव-घरारी
१०९. रिक्त
११०. प्रवासी
१११. वेद
११२. चोरि
११३. होली
११४. बुद्ध
११५. कोठिया पछबाइ टोल
११६. बुच्ची-बाउ
११७. आकक दूध
११८. केसर श्वेत हरित
त्रिवार्णिक

# अपाला आत्रेयी

*पात्र: अपाला: ऋगवैदिक ऋचाक लेखिका*

*अत्रि: अपालाक पिता*

*वैद्य 1,2,3*

*कृशाश्व: अपालाक पति।*

*वेषभूषा:-*

*उत्तरीय वस्त्र (पुरुष), वल्कल, जूहीक माला (अपालाक केशमे), दण्ड।*

*मंच सज्जा :-*

*सहकार-कुञ्ज (आमक गाछी), वेदी, हविर्गन्ध, रथक छिद्र, युगक छिद्र, सोझाँमे साही, गोहि आ गिरगिट।*

## दृश्य एक

*(आमक गाछीक मध्य एक गोट बालिका आ बालक)।*

**बालिका:** हमर नाम अपाला अछि। हम ऋषि अत्रिक पुत्री छी।अहाँ के छी ऋषि बालक।

**बालक:** हम शिक्षाक हेतु आयल छी। ऋषि अत्रि कतए छथि।

**अपाला:** ऋषि जलाशय दिशि नहयबाक हेतु गेल छथि, अबिते होयताह। (तखनहि दहिन हाथमे कमंडल आ वाम हाथमे वल्कल लेने महर्षि अत्रिक प्रवेश।)

**अत्रि:** पुत्री ई कोन बालक आयल छथि।

**अपाला:** ऋषिवर। आश्रमवासीक संख्यामे एक गोट वृद्धि होयत। ई बालक शिक्षाक हेतु...

**बालक:** नहि। हमर अखन उपनयन नहि भेल अछि। हम अखन माणवक बनि उपाध्यायक लग शिक्षाक हेतु आयल छी। ई देखू हमर हाथक दण्ड। हम दण्ड- माणवक बनि सभ दिन अपन गामसँ आयब आ साँझमे चलि जायब। हम वेद मंत्रसँ अपरिचित अनृच छी।

**अत्रि:** बेश तखन अहाँ हमर शिष्यक रूपमे प्रसिद्ध होयब। दिनक पूर्व भाग प्रहरण विद्याक ग्रहणक हेतु राखल गेल अछि। हम जे मंत्र कहब तकरा अहाँ स्मरण राखब। पुनः हम अहाँक विधिपूर्वक उपनयन करबाय संग लऽ आनब।

**बालक:** विपश्चित गुरुक चरणमे प्रणाम।
(पटाक्षेप)

## दृश्य दू

*(उपनयन संस्कारक अंतिम दृश्य। अपाला आ किछु आन ऋषि बालक बालिकाक उपनयन संस्कार कराओल गेल अछि।)*

**अत्रि:** अपाला। आब अहाँक असल शिक्षा आ विद्या शुरू होयत।(पुनः आन विद्यार्थी सभक दिशि घूमि।) अहाँ सभकेँ सावित्री मंत्रक नियमित पाठ करबाक चाही। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। सविता- जे सभक प्रेरक छथि- केर वरेण्य- सभकेँ नीक लागय बला तेज- पृथ्वी, अंतरिक्ष आ स्वर्गलोक-सर्वोच्च अकाश-मे पसरल अछि। हम ओकर स्मरण करैत छी। ओ हमर बुद्धि आ मेधाकेँ प्रेरित करथु।

**अपाला:** पितृवर। ''ॐ नमः सिद्धम'' केर संग विद्यारम्भक पूर्व शिक्षाक अंतर्गत की सभ पढ़ाओल जायत। अत्रि: वर्ण, अक्षर-स्वर, मात्रा-

ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत, बलाघात- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, शुद्ध उच्चारण, अक्षरक क्रमिक विन्यास- वर्त्तनी, पढ़बाक आ बजबाक शैली, एकहि वर्णकेँ बजबाक कैकटा प्रकार, ई सभ शिक्षाक अंतर्गत सिखाओल जायत। साम संतान- जेकि सामान्य गान अछि- केर माध्यमसँ शिक्षा देल जायत। अपाला: गुरुवर। आश्रमक नियमसँ सेहो अवगत करा देल जाय।

**अत्रि:** वनक प्राणी अवध्य छथि। आहारार्थ फल पूर्व-संध्यामे वन-वृक्षसँ एकत्र कएल जायत। प्रातः आ सायं अग्निहोत्र होयत, ताहि हेतु समिधा, कुश, घृत-आज्य, एवम् दुग्धक व्यवस्था प्रतिदिन मिलि-जुलि कय कएल जायत। हरिणकेँ निर्विघ्न आश्रममे टहलबाक अनुमति अछि। कदम्ब, अशोक, केतकी, मधूक, वकुल आ सूदकारक गाछक मध्य एहि आश्रममे यद्यपि कृषिक अनुमति नहि अछि, परञ्च अकृष्य भूमि पर स्वतः आ बीयाक द्वारा उत्पन्न अकृष्टपच्य अन्नक प्रयोग भऽ सकैछ।

**बालक:** हम सभ एकहि विद्यापीठक रहबाक कारण सतीर्थ्य छी। गुरुवर। दण्ड आ कमण्डलक अतिरिक्त किछु रखबाक अनुमति अछि?

**अत्रि:** कटि मेखला आ मृगचर्म धारण करू आ अपनाकेँ एहि योग्य बनाऊ जाहिसँ द्वादशवर्षीय यज्ञ सत्रक हेतु अहाँ तैयार भऽ सकी आ महायज्ञक समाप्तिक पश्चात् ब्रह्मोदय, विदथ परिषद आ उपनिषद ओ अरण्य संसदमे गंभीर विषय पर चर्चा कऽ सकी।
(पटाक्षेप)

## दृश्य तीन

*(कुटीरमे ऋषि अत्रि कैक गोट वैद्यक संग विचार-विमर्श कए रहल छथि।)*

**अत्रि:** वैद्यगण। बालिका अपालाक शरीरमे त्वक् रोगक लक्षण आबि रहल अछि। शरीर पर श्वेत कुष्ठक लक्षण देखबामे आबि रहल अछि।

**वैद्य 1:** कतबा महिनासँ कतेको औषधिक निर्माण कए बालिकाकेँ खोआओल आ लेपनक हेतु सेहो देल।

**अत्रि:** अपाला आब विवाहयोग्य भऽ रहल छथि। हुनका हेतु योग्य वर सेहो ताकि रहल छी।

**वैद्य 2:** कृशाश्वक विषयमे सुनल अछि, जे ओ सर्वगुणसंपन्न छथि आ वृद्ध माता-पिताक सेवामे लागल छथि। ओ अपन अपालाक हेतु सर्वथा उपयुक्त वर होयताह।

**अत्रि:** तखन देरी कथीक। अपने सभ उचित दिन हुनकर माता-पितासँ संपर्क करू।

## दृश्य चारि

*(आश्रमक सहकार-कुञ्जमे वैवाहिक विधिक अनुष्ठान अछि। वेदी बनाओल गेल अछि आ ओतय ऋत्विज लोकनि जव-तील केर हवन कऽ रहल छथि।)*

**अपाला (मोने मोन):** माथ पर त्रिपुंडक भव्य-रेखा आ शरीर-सौष्ठवक संग विनयक मूर्त्ति, ईएह कृशाश्व हमर जीवनक संगी छथि। (तखने कृशाश्वक नजरि अपालासँ मिलैत छन्हि आ अपाला नजरि नीचाँ कए लैत छथि। मुदा स्त्रीत्वक मर्यादाकेँ रखैत ललाट ऊँचे बनल रहैत छन्हि।)

**अत्रि:** उपस्थित ऋषि-मण्डली आ अग्निकेँ साक्षी मानैत, हम अपाला आ कृशाश्वक पाणिग्रहण करबैत छी। (अग्निक प्रदक्षिणा करैत काल कृशाश्वक उत्तरीय वस्त्र कनेक नीचाँ खसि पड़ल आ अपालाक केशक जूही-माला सेहो पृथ्वी पर खसि पड़ल।)

## दृश्य पाँच

*(अपालाक पतिगृह। वृद्ध माता-पिता बैसल छथिन्ह आ अपाला घरक काजमे लागल छथि।)*

**अपाला:** प्रिय कृशाश्व। एतेक दिन बीति गेल। पतिगृहमे हम कोनो नियंत्रणक अनुभव नहि कएलहुँ। हमरा प्रति अहाँक कोमल प्रेम सतत् विद्यमान रहल। मुदा श्वेत त्वकक जे दाग हमरा पर ज्वलन्त सत्ताक रूपमे अछि, कदाचित् वैह किछु दिनसँ अहाँक हृदयमे हमरा प्रति उदासीनताक रूपमे परिणत भेल अछि।

**कृशाश्व:** हमर उदासीनता अपाला?

**अपाला:** हँ कृशाश्व। हम देखि रहल छी ई परिवर्त्तन। की एकर कारण हमर त्वगदोषमे अंतर्निहित अछि? कृशाश्व: हे अपाला। हमरा भीतर एकटा संघर्ष चलि रहल अछि। ई संघर्ष अछि प्रेम आ वासनाक। प्रेम कहैत अछि, जे अपाला ब्रह्मवादिनी छथि, दिव्य नारी छथि। मुदा वासना कहैत अछि, जे अपालाक शरीरक त्वगदोष नेत्रमे रूपसँ वैराग्यक कारण बनि गेल अछि।

**अपाला:** पुरुषक हाथसँ स्त्रीक ई भर्त्सना। कामनासँ कलुषित पुरुष द्वारा नारीक हृदय-पुष्पकेँ थकूचब छी ई। हम वेदक अध्ययन कएने छी। चन्द्रमाक प्रकाशक बीचमे ओकर दाग नुका जाइत अछि मुदा हमर ई श्वेत त्वक् दाग हमर विशाल गुणराशिक बीचमे नहि मेटायल। (कृशाश्व स्तब्ध भय जाइत छथि मुदा किछु बजैत नहि छथि।)

**अपाला:** सबल पुरुषक सोँझा हम अपन हारि मानैत, अपन पिताक तपोवन जा रहल छी, कृशाश्व।

## दृश्य छः

(अपाला प्रातः कालमे समिधासँ अग्निकुण्डमे होम करैत इन्द्रक पूजा आ जपमे लागि गेल छथि। कुशासन पर बैसलि छथि।)

**अपाला:** धारक लग सोम भेटल, ओकरा घर आनल आ कहल जे हम एकरा थकुचब इंद्रक हेतु, शक्रक हेतु।गृह-गृह घुमैत आ सभटा देखैत, छोट खुट्टीक ई सोम पीबू, दाँतसँ थकुचल, अन्न आ दहीक संग खेनाइ काल प्रशंसा गीत सुनैत। हम सभ अहाँकेँ नीक जेकाँ जनबाक हेतु अवैकल्पिक रूपसँ लागल छी मुदा क्यो गोटे अहाँकेँ प्राप्त नहि कऽ सकल छी। हे चन्द्र, अहाँ आस्ते-आस्ते आ निरन्तर ठोपे-ठोपे इन्द्रमे प्रवाहित होऊ। की ओ हमरा लोकनिक सहायता नहि करताह, हमरा लोकनिक हेतु कार्य नहि करताह। की ओ हमरा लोकनिकेँ धनीक नहि बनओताह? की हम अपन राजासँ शत्रुताक बाद आब अपना सभकेँ इन्द्रसँ मिला लिअ'। हे इन्द्र अहाँ तीन ठाम उत्पन्न करू- हमरा पिताक मस्तक पर, हुनकर खेतमे आ हमर उदर लग। एहि सभ फसिलकेँ ऊगय दियौक। अहाँ हमरा सभक खेतकेँ जोतलहुँ, हमर शरीरकेँ आ हमर पिताक मस्तककेँ सेहो। अपालाकेँ पवित्र कएल। इन्द्र ! तीन बेर, एक बेर पहिया लागल गाड़ी, एक बेर चारि पहिया युक्त गाड़ीमे आ एक बेर दुनू बरदक कान्ह पर राखल युगक बीच। हे शतक्रतु ! आ अपालाकेँ स्वच्छ कएल आ सूर्यसमान त्वचा देल। हे इन्द्र !

## दृश्य सात

(महायज्ञक समाप्तिक पश्चात ब्रह्मोदयक दृश्य।)

**अत्रि:** एहि विशाल ऋत्विजगणक मध्य ऋकक मंत्रमे अपालाक ऋचाकेँ हम सम्मिलित कए सकैत छी, कारण ई स्वतः स्फुटित आ अभिमंत्रित अछि। अपालाक चर्मरोग एहिसँ छूटि गेल, एकर ई सद्यः प्रमाण अछि। अपाला एहि मंत्रक दृष्टा छथि।

**ऋषिगण:** अत्रि, हमरा सभ सेहो एहि मंत्रक दर्शन कएल। अहो। सम्मिलित करबाक आ नहि करबाक तँ प्रश्ने नहि अछि। ई तँ आइसँ ऋकक भाग भेल।

(एहि स्वीकृतिक बाद ब्रह्मोदय सभामे दोसर काज सभ प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। कृशाश्व विचलित मोने अपालाक सोझाँ अबैत छथि।)

**कृशाश्व:** अपाला। हम दु:खित छी। अहाँक वियोगमे।

**अपाला:** हे कृशाश्व। इन्द्रक देल ई त्वचा योगक परिणाम अछि। अहाँक उपेक्षा हमरा एहि योग्य बनेलक मुदा आब एहि पर अहाँक कोनो अधिकार नहि।

(दुनू गोटे शनैः-शनैः मंचक दू दिशि सँ बहराए जाइत छथि।)

(पटाक्षेप)

# दानवीर दधीची

*मंच सज्जा:*
*आम्र वन, पोखरि आ युद्ध स्थल*

*वेष-भूषा:*
*अधो वस्त्र- आश्रमवासीक हेतु*
*आश्विनक हेतु वैद्यक श्वेत वस्त्र*
*आ इन्द्रक हेतु योद्धाक वस्त्र*
*रथ आ अस्त्र शस्त्रक चित्र पर्दा पर छायांकित कएल जा सकैत अछि।*

## प्रथम दृश्य

*(महर्षि दध्यङ आथर्वन दधीचीक तपोवनक दृश्य। सूर्योदयक स्वर्णिम आभा, फूलक गाछक फूलक संग पवनक प्रभावसँ सूर्य दिशि झुकब। यज्ञक धूँआसँ मलिन भेल गाछक पात। महर्षि सूर्योदयक दृश्यक आनन्द लए रहल छथि। मुदा दृष्टिमे अतृप्त भाव छन्हि। ओहि आश्रमक कुलपति थिकाह महर्षि, दस सहस्त्र छात्रकेँ विद्यादान करैत छथि, सभक नाम, गाम आ कार्यसँ परिचित छथि। से ओ तखने प्रवेश करैत एकटा अपरिचित आगंतुकक आगमन सँ साकांक्ष भऽ जाइत छथि।)*

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** अहाँ के छी आगंतुक?

**अपरिचित:** हम एकटा अतिथि छी महर्षि आ कोनो प्रयोजनसँ आयल छी। कृपा कए अतिथिक मनोरथ पूर्ण करबाक आश्वासन देल जाय।

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** एहि आश्रमसँ क्यो बिना मनोरथ पूर्ण कएने नहि गेल अछि आगंतुक। हम अहाँक सभ मनोरथ पूर्ण होएबाक आश्वासन दैत छी।

**अपरिचित:** हम देवता लोकनिक राजा इन्द्र छी। अहाँसँ परमतत्त्वक उपदेशक हेतु आयल छी।एहिसँ अहाँक कीर्त्ति स्वर्गलोक धरि पहुँचत।
(दध्यङ आथर्वन दधीची सोचमे पड़ल मंच पर एम्हरसँ ओम्हर विचलित होइत घुमय लगैत छथि। ओ मंच पर घुमैत मोने-मोन, बिनु इन्द्रकेँ देखने, बजैत छथि जे दर्शकगणकेँ तँ सुनबामे अबैत अछि मुदा इन्द्र एहन सन आकृति बनओने रहैत छथि जे ओ किछु सुनिये नहि रहल छथि आ मंचक एक दोगमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि।)

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** (मोने-मोन) हम शिक्षा देब तँ गछि लेने छी मुदा की इन्द्र एकर अधिकारी छथि। बज्र लए घुमए बला, कामवासनामे लिप्त अनधिकारी व्यक्तिकेँ परमतत्त्वक शिक्षा? मुदा गछने छी तँ अपन प्रतिज्ञाक रक्षणार्थ मधु-विद्याक शिक्षा इन्द्रकेँ दैत छियन्हि।

**इन्द्र:** कोन सोचिमे पड़ि गेलहुँ महर्षि।

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** इन्द्र हम अहाँकेँ मधुविद्याक शिक्षा दए रहल छी। भोगसँ दूर रहू। नाना प्रकारक भोगक आ भोज्यक पदार्थ सभसँ। ई सभ ओहने अछि जेना फूल सभक बीचमे साँप। भोगक अछैत स्वर्ग अधिपति इन्द्र आ भूतलक निकृष्ट कुकुरमे कोन अंतर रहत तखन?

(इन्द्र अपन तुलना कुकुरसँ कएल गेल देखि कए तामसे विख-सबिख भऽ गेल। मुदा अपना पर नियंत्रण रखैत मात्र एक गोट वाक्य बजैत मंच परसँ जाइत देखल जाइत अछि।)

**इन्द्र:** महर्षि अहाँक ई अपमान तँ आइ हम सहि लेलहुँ। मुदा आजुक बाद ज्योँ अहाँ ई मधु-विद्या ककरो अनका देलहुँ तँ अहाँक गरदनि परसँ ई मस्तिष्क, जकर अहाँकेँ घमण्ड अछि, एहि भूमि पर खसत।

## दृश्य दू

*(ऋषिक आश्रम। आश्विन बन्धुक आगमन। महर्षिसँ अभिवादनक उपरान्त वार्त्तालाप।)*

**आश्विन बन्धु:** महर्षि। आब हम सभ अहाँक मधु विद्याक हेतु सर्वथा सुयोग्य भ'ऽ गेल छी। हिंसा आ भोगक रस्ता हम सभ छोड़ि देलहुँ। इन्द्र सोमयागमे हमरा लोकनिकेँ सोमपानक हेतु सर्वथा अयोग्य मानलन्हि मुदा हमरा सभ प्रतिशोध नहि लेलहुँ। कतेक पंगुकेँ पएर, कतेक आन्हरकेँ आँखि हमरा सभ देलहुँ। च्यवन मुनिक बुढ़ापाकेँ दूर कएलहुँ। आ तकरे उपकारमे च्यवन हमरा लोकनिकेँ सोमपीथी बना देलन्हि।

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** आश्विनौ। ब्रह्मज्ञानककेँ देब एकटा उपकारमयी कार्य अछि आ अहाँ लोकनि एहि विद्याक सर्वथा योग्य शिक्षार्थी छी। इन्द्र कहने अछि, जे जाहि दिन ई विद्या हम कहियो ककरो देब तँ तहिये ओ हमर माथ शरीरसँ काटि खसा देत। मुदा ई शरीरतँ अछि क्षणभंगुर। आइ नहि तँ काल्हि एकरा नष्ट होयबाक छै। ताहि डरसँ हम ब्रह्म विद्याक लोप नहि होए देबैक।

**आश्विनौ:** महर्षि अहाँक ई उदारचरित ! मुद हमरो सभ शल्यक्रिया जनैत छी आ पहिने हमरा सभ घोड़ाक मस्तक अहाँक गरदनि पर लगाए देब। जखन इन्द्र अपन घृणित कार्य करत आ अहाँक मस्तककेँ काटत तखन अहाँक असली मस्तक हमरा सभ पुनः अहाँक शरीरमे लगा देब।

(मंच पर आबाजाही शुरू भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चक्कू धिपा रहल अछि जेना कोनो शल्य चिकित्साक कार्य शुरू भऽ रहल होअय। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आकि फेर उठब प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर घोड़ाक गरदनि लगओने महर्षि आश्विन बन्धुकेँ शिक्षा दैत दृष्टिगोचर होइत छथि।)

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** एहि जगतक सभ पदार्थ एक दोसराक उपकारी अछि। ई जे धरा अछि से सभ पदार्थक हेतु मधु अछि आ सभ पदार्थ ओकरा हेतु मधु। समस्त जन मधुरूपक अछि। तेजोमय आ अमृतमय। सत्येक आधार पर सूर्य ज्योति पसारैत अछि एहि विश्वमे।चन्द्रक धवल प्रकाश दूर भगाबैत अछि रातिक गुमार आ आनैत अछि शीतलता। ज्ञानक उदयसँ अन्हारमे बुझाइत साँप देखा पड़ैत अछि रस्सा। विश्वक सूत्रात्माकेँ ओहि परमात्माकेँ अपन बुद्धिसँ पकडू। जाहि प्रकारेँ रथक नेमिमे अर रहैत अछि ताहि प्रकारेँ परमात्मामे ई संपूर्ण विश्व।

(तखने मंचक पाछाँसँ बड़ड बेशी कोलाहल शुरू भऽ जाइत अछि। तखने बज्र लए इन्द्रक आगमन होइत अछि। एक्के प्रहारमे ओ महर्षिक गरदनि काटि दैत छथि। फेर इन्द्र चलि जाइत छथि। मंच पर आबाजाही शुरू भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चक्कू धिपा रहल अछि, जेना कोनो शल्य चिकित्साक कार्य शुरू भऽ रहल होअय। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आकि फेर उठब प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर महर्षि पुनः अपन स्व-शरीरमे देखल जाइत छथि। ओ बैसले छथि आकि इन्द्र अपन मुँह लटकओने अबैत अछि।)

**इन्द्र:** क्षमा करब महर्षि हमर अपराध। आइ आश्विन-बन्धु हमरा नव-रस्ता देखओलन्हि। गुरूसँ एको अक्षर सिखनिहार ओकर आदर करैत छथि मुदा हम की कएलहुँ? असल शिष्य तँ छथि आश्विन बन्धु।

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** इन्द्र। अहाँकेँ ताहि द्वारे हम शिक्षा देबामे पराङमुख भए रहल छलहुँ। मुदा अहाँक दृढ़निश्चय आ सत्यक प्रति निष्ठाक द्वारे हम अहाँकेँ शिक्षा देल। हमरा मोनमे अहाँक प्रति कोनो मलिनता नहि अछि।

**इन्द्र:** धन्य छी अहाँ आ धन्य छथि आश्विनौ। आब हम ओ इन्द्र नहि रहलहुँ। हमर अभिमानकेँ आश्विनौ खतम कए देलन्हि।
(इन्द्र मंचसँ जाइत अछि। परदा खसैत अछि।)

## दृश्य तीन

*(स्वर्गलोकक दृश्य। चारू दिशि वृत्र आ शम्बरक नामक चर्चा करैत लोक आबाजाही कए रहल छथि। ओ दुनू गोटे आक्रमण कए देने अछि भारतक स्वर्गभूमि पर। इन्द्र सहायताक हेतु महर्षिक आश्रम अबैत छथि।)*

**इन्द्र:** वृत्र आ शम्बरक आक्रमण तँ एहि बेर बड़ड प्रचंड अछि। अहाँक विचार आ मार्गदर्शनक हेतु आयल छी महर्षि।

**दध्यङ आथर्वन दधीची:** इन्द्र। कुरुक्षेत्र लग एकटा जलाशय अछि, जकर नाम अछि, शर्यणा। अहाँ ओतए जाऊ, ओतय घोड़ाक मूड़ी राखल अछि, जाहिसँ हम आश्विनौकेँ उपदेश देने छलहुँ। ब्रह्मविद्या ओहि मुँहसँ बहरायल आ ताहि द्वारे ओ अत्यंत कठोर आ दृढ़ भऽ गेल अछि। ओहिसँ नाना-प्रकारक शस्त्र बनाऊ, अग्नि आश्रित विध्वंसकक प्रयोग करू, त्रिसंधि वृज, धनुष, इषु-बाण-अयोमुख-लोहाक सूचीमुख सुइयाबला आ विकंकतीमुख- कठोर, एहि तरहक शस्त्रक प्रयोग करू, कवच आ शिरस्त्राणक प्रयोग करू, अंधकार पसारयबला आ जड़ैत रस्सी द्वारा दुर्गंधयुक्त धुँआ निकलएबला शस्त्रक सेहो प्रयोग करू आ युद्ध कए विजयी बनू।

**इन्द्र:** जे आज्ञा महर्षि।
(परदा खसैत अछि आ जखन उठैत अछि तँ पोखरिक कातमे घोड़ाक मूड़ीसँ इन्द्र द्वारा वज्र आ विभिन्न हथियार बनाओल जा रहल अछि। फेर परदा खसि कऽ जखन उठैत अछि तँ अग्नियुक्त शस्त्र, जे फटक्का द्वारा मंचपर उत्पन्न कएल जा सकैत अछि, देखबामे अबैत अछि। मंच धुआँसँ भरि जाइत अछि। फेर परदा खसैत अछि आ मंचक पाछाँसँ सूत्रधारक स्वर सुनबामे अबैत अछि।)

**सूत्रधार:** इन्द्रक विजय भेलन्हि आ दुष्ट सभ खोहमे भागि गेल। ईएह छल वैदिक नाटक बादमे एहि अर्थकेँ अनर्थ कए देलन्हि पौराणिक लोकनि, जाहिमे दधीचीक हड्डीसँ इन्द्रक वज्र बनएबाक चर्च कएल गेल अछि।
(ओ ई असल बात अछि- केर फुसफुसाहटिक संग पर्दा खसले रहैत अछि आ लाइट क्षणिक ऑफ भेलाक बाद ऑन भए जाइत अछि।)

## बालकथा

## ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

देबीगंज एकटा नगर छल आ ओहि नगरमे एकटा ब्राह्मण रहैत छल। हुनका भगवान श्री सत्यनारायणक पूजाक निमंत्रण दूरसँ आएल रहए। ब्राह्मण असगर रहए आ जएबाक ओकरा दुरगर छल, से ओ अपन नगरक एकटा ठाकुरक बच्चाकेँ संग कएलक। ठाकुरक बच्चा बाजल, जे पंडीजी हम तँ अहाँक संग जाएब, मुदा एकटा गप अछि। जतए कतहु हमरा कोनो गप गलत बुझाएत, ओतए अहाँकेँ हमरा बुझा देमए पड़त, नहि तँ हम अहाँक संग नहि जाएब। पंडितजी कहलन्हि जे चलू बुझा देब।

ब्राह्मण आ ठाकुर चलल। चलैत-चलैत ओ दुनू गोटे एकटा धारक लग पहुँचल। ओकरा सभकेँ धार टपबाक रहए से ओतए ठाढ़ भए ओ सभ कपड़ा खोलि तैयार भेल तँ ठाकुरक बेटा धारमे देखलक जे एकटा लहास धारमे मरल-पड़ल छै आ भाँसि रहल छै। ओ स्त्री छलि, ओ भँसना बालु-रेतक छल आ ओ ओजनसँ भाँसि रहल छलि। ठाकुरक बेटा ई देखि कए बाजल - पंडित ओ देख, ओ लहास भाँसि रहल अछि, ओ तीन जान बहुत आश्चर्य अछि। पंडितजी अहाँ हमरा बुझा दिअ नहि तँ हम घुरि कए चलि जाएब। पंडितजी खिस्सा कहए लगलाह।

देख बच्चा। अपन गाम लग के.नगरक राजा छल । ओहि राजाक एकटा बेटा रहए। ओकर बियाह ओही स्थानपर भेल, जतए हम सभ चलि रहल छी।

बादमे अपन नगरक राजा मरि गेल । ओकर बेटा राजकेँ सम्हारि नहि सकल आ राजकेँ बन्हक लगा देलक। ओकर सासुरमे पता लगलैक, जे राजा राजपाट बन्हक लगा देने अछि आ आब द्विरागमन करेबा लेल ओकरा लग पाइ नहि छै, तँ बड़ड मोश्किल भए गेलैक।

एक दिन ओकर सासुरमे भगवानक पूजा भए रहल छलैक। ओहि दिन ई गरीब राजा साँझमे पहुँचल तँ पूजा भए रहल छल। ई ओतए गेल तँ कियो ओकर खोज-पुछारी नहि कएलक। ओतहि ओ कातमे बैसि गेल। पूजा समाप्त भेल आ सभ कियो प्रसाद खा कए अपन-अपन घर गेल आ घरबारी सभ सेहो खा-पीबि कए सूति गेल। एहि बेचारोकेँ क्यो नहि पुछलक आ ओ ओही स्थानपर सूति गेल। रातिक जखन बारह बाजल तँ ओकर स्त्री उठि गेल आ अपन घोड़सनीयाँ लग गेल। ओतए सुतबाक कोनो ब्यबस्था नहि छल। एकटा खाट रहए जाहिमे ती टा टाँग रहए। एकटा टाँग कतएसँ लगाओत। लड़की आएल आ

ओहि लड़कासँ पुछलक जे तूँ किछु खेने छह। लड़का कहलक नहि। बेचारा भूखक मारल बचल भोजन खएलक। ओहू समय लड़की अपन पतिकेँ नहि चिन्हलक। ओकरा कहलक जे चल आ जाहि खाटक एकटा टाँग टूटल छल ओही खाटमे एक दिस लगा देलक आ दुनू घोड़सनियाँ आ ओ लड़की सूति गेल। ओकर सुतलाक बाद लड़काकेँ कियो स्वप्न दैत अछि। ई राजाक बेटा, तूँ अपन घर जो, ओतए तोहर पिताक कोचक नीचाँ चरि घाड़ा द्रब छहु। ओहिमेसँ एक घाड़ा बेचि कए अपन राज छोड़ा लिअ। ई सपना सुनि राजाक बेटा स्थिरेसँ खाट राखि, अपन घर आपस आबि गेलि। ओ अपन राज बन्हकीसँ छोड़ा लेलक। पहिने जेकाँ भए गेल। जखन ओकर सासुरमे ई पता चलल, जे राजा पहिने सँ बेशी नीक भए गेल अछि तखन ओ सभ राजाकेँ खबरि कएलक जे अहाँ अपन द्विरागमन करबा लिअ। राजा दिन लए कए गेल आ ओही लड़कीकेँ गौना करा कए लए अनलक। राजा ओकरा एकटा खबासनीक संगे खेनाइक सभ समान दए एकटा कोठलीमे बन्न कए देलक। ओ खेनाइ खाइत छल आ ओही कोठलीमे रहैत छल, मुदा राजा ओतए नहि जाइत छल। जखन किछु दिन बीति गेल तँ एक दिन रानी खबासनीकेँ पठओलक, राजाकेँ बजेबाक लेल। राजा आएल तँ रानी कहलक जे अहाँ हमरा गौना करा कए अनलहुँ आ एहि कोठलीमे बन्न कए देने छी। अहाँ अबितो नहि छी। राजा कहलक जे ओ घोड़सनियाँ नहि छी, जे टूटल खाटक एक पएर वैह रहए। आ बाँचल भोजन हम खएने रही। आ फेर वैह ऐंठ खाए लेल हमरा कहलहुँ।

ई सुनि लड़की बहुत लज्जित भऽ गेलीह। भोर भेल आ ओ खबासनीसँ कहलक जे तूँ रह, हमर व्रतक दिन अछि आ हम धारसँ नहा कए अबैत छी। ओ सभटा कपड़ा खोलि धारमे फाँगि गेल। भसना भाठी जे भसैत अछि, जान ई ठाकुर, वैह लड़की अछि। चलू हमरा सभ आगाँ।

*दोसर*

ब्राह्मण आ ठाकुर ओइ धारक कातसँ बिदा भेल। धारकेँ पार करैत आ चलैत-चलैत ओ सभ एकटा पैघ गाममे पहुँचलाह। ओहि गाममे बड़ड भीड़ लागल रहए। ठाकुरक लड़का जा कए देखए लागल तँ ओ देखलक जे एकटा बकरीक बच्चा बान्हि कए राखल छल आ जे कियो अबैत रहए से ओहि बकड़ीक बच्चाकेँ दू लात मारैत छल। ठाकुरक बच्चा सोचलक जे ओ बकड़ीक बच्चा कोनो एक-दू गोटेक फसिल खा लेने होएत, मुदा तखन सभ मिलि कए किएक ओकरा मारि रहल अछि। ओ ब्राह्मणसँ पुछलक जे ई गप बुझा कए कह, तखन हम सभ आगू बढ़ब। ब्राह्मण पहिने ई गछने छल, जे जखन ओ कहत ओकरा बुझा कए कहत। ओही स्थानपर बैसि कए ब्राह्मण खिस्सा कहए लागल।

सुन ठाकुर हम आब खिस्सा कहैत छी। लोदीपुर एकटा नगर छल। ओहि नगरक राजा प्रताप सिंह रहए। हुनकर एकटा लड़का छल आ ओही गाममे एकटा

ठाकुरक लड़का सेहो रहए। दुनूमे खूब दोसतियारी चलैत रहए। किछु दिनुका बाद दुनू दोस्त बिचार कएलक जे दुनू दोस्त घोड़ा कसा कए जंगल शिकार लेल जाए। तकर बाद दुनू दोस्त घोड़ापर सवार भए बिदा भेल आ घनघोर जंगल पहुँचि गेल। शिकार खेलाइत साँझ भए गेल आ दुनू दोस्त विचार कएलक जे आब हम सभ घर नहि जा सकब, से अही बोनमे राति काटि भोरमे घर चलि जाइ। ओतए एकटा बड़ड पैघ गाछ रहए, तकरे नीचाँमे ओ सभ रुकि गेल आ घोड़ाकेँ ओतए बान्हि दुनू दोस्त सूति गेल। सुतलाक बाद राति बारह बजे एक जोड़ा बीध-बीधीन ओहि गाछक ऊपर बैसि गेल। बीधीन मूड़ी उठा कए जे नीचाँ देखलक तँ ओहि दुनू दोस्तपर ओकर नजरि पड़लैक। बीधीन कहलक जे देखू कतेक सुन्दर अछि राजाक बेटा। बीध कहलक जतेक सुन्दर ई राजाक बेटा अछि, ततबे सुन्दर लालपरी कन्या अछि, दुनूक जोड़ी बड़ड सुन्दर होएत। बीधीन कहलक जे अहाँ तँ स्वयं विधाता छी। दुनूक जोड़ी लगेनाइ अहाँक काज छी। बिधाता ओहि दुनूकेँ ओतएसँ सुतलेमे उठा कए ओहि लालपरी कन्या लग पहुँचा देलक। राजा आ कन्या एक पलंगपर आ ठाकुर दोसर पलंगपर। भोर भेलापर निन्द टुटल, तँ लालपरी बगलमे राजाक लड़काकेँ देखलक, तँ खूब प्रसन्न भेल। ओकरा पलंगपर एकटा सिन्दूरक पुड़िआ राखल छल। परी कहलक जे ऊपरबला हमर आ अहाँक जोड़ी मिला देने अछि। आब देरी कोनो बातक नहि। राजाक लड़का आ लालपरी कन्या दुनूक ओतए बियाह भए गेल। किछु दिन धरि ओ ओतए रहल आ तकर बाद राजाक बेटा अपन ससुरारिसँ बिदा भेल । किछुए दूर आगाँ गेलाक बाद कन्याकेँ एकटा गप मोन पड़लैक। ओ अपन पतिसँ कहलक- हमर पिताकेँ *चोला माने जीब बदल* क मंत्र अबैत छन्हि। अहाँ हुनकासँ जा कए सीखि लिअ। ओतए दुनू डोली रोकि कए दुनू दोस्त ओकर पिताजी लग गेल आ जा कए कहलक जे हमरा सभकेँ चोला बदलबाक मंत्र सिखा दिअ। ओहि मंत्रकेँ दुनू दोस्त सीखि लेलक मुदा मंत्र सिखलाक बाद ठाकुरक बेटाक मोनमे खोट आबि गेलैक। तकर बाद एक डोलीपर राजाक बेटा आ परी आ दोसर डोलीपर ठाकुरक बेटा बिदा भेलाह। लालपरी पतिसँ पुछलक जे अहाँ चोला बदलबाक मंत्र सीखि लेलहुँ। तँ राजाक बेटा कहलक-हँ। तँ परी कहलक जे एकर परीक्षा करू। राजाक बेटा कहलक जे आगाँ चलू। चलैत-चलैत ओ सभ कनी आगाँ बढ़लाह। आगाँ एकटा सुग्गा मरल पड़ल रहए। ई सभ गप ठाकुर सुनैत जा रहल छल। जहिना राजाक बेटा सुगाक भीतर पैसल, ओही समय ठाकुर मंत्र पढ़ि राजाक पिंजरामे पैसि गेल। ई सभ परी देखलक। एक डोलीपर मात्र ठाकुरक लहाश पड़ल छै आ एक पर परी आ ओ ठाकुर राजा बनि जा रहल अछि आ राजाक जीव सुग्गा बनि उड़ि गेल। ठाकुरक लहाश फेकि ओ ठाकुर राजा बनि गेल आ ओकर पिंजड़ामे जा कए ओहि लालपरीकेँ दखल कए लेलक। लालपरी कन्या ई बुझि गेल, जे ई हमर पति नहि अछि। ठाकुर राजा अपन महलमे जा कए रहए लागल आ एहि विषयमे ककरो बुझल

नहि रहैक। ठाकुर राजा कन्यासँ कहलक जे आब हम सभ सुखी निन्दक राति बिताएब। परी कहलक जे एखन नहि। एखन हमर एकटा कौल बाँकी अछि। ओ पूरा कए लेब तकर बाद। ठाकुर राजा कहलक जे की कौल अछि अहाँ पूर्ण कए लिअ। परी कहलक जे हमरा एकटा मन्दिर बनबा दिअ जबुनाक तटपर। हम बारह बरख सदाव्रत बाँटब। तकर बाद राजा सोचलक जे आब हमरा छोड़ि कए ककरो ई नहि होएत ताहि लेल हम एकटा उपाय करैत छी, कि एहि बोनमे जतेक सुगा अछि ओहि सभकेँ मारि दैत छी। ठाकुर राजा ई सोचि शिकारीकेँ मँगबेलक आ ओकरा कहलक जे एहि जंगलमे जतेक सुगा अछि, ओकरा पकड़ि कए आन हम तोरा एक सुगाक एक टाका देबहु। शिकारी सुग्गा बझबए लागल आ राजाकेँ देमए लागल। राजा सभ सुगाकेँ मारि कए फेंकि दैत छल। एक दिन शिकारी सुगा बझा कए ओही जबुनाक किनार धए आबि रहल छल, तँ परीक नजरि ओहि शिकारीपर पड़ल। ओकरा माथमे ओ गप मोन पड़लैक, तँ ओ शिकारीकेँ बजेलक आ पुछलक जे अहाँ ई सुग्गा ककरा दैत छी। ओ कहलक जे ई सभ सुग्गा हम अही राजाकेँ दैत छी। परी पुछलक जे राजा तखन एकर की करैत अछि। शिकारी कहलक जे ओ एकरा सभकेँ मारि कए फेकि दैत अछि। परीकेँ ई सुनि कए माथ दुखाए लगलैक। ओ शिकारीकेँ पुछलक जे राजा एक सुगाक कतेक कए पाइ दैत अछि। शिकारी कहलक जे एक सुगाक ओ पाँच टाका दैत अछि। परी कहलक जे आइसँ सभ सुगा हमरा देल कर, हम एक सुगाक दस टाका देल करब। ओहि दिनसँ सभ शिकारी परीकेँ सभ सुग्गा देमए लगलाह। परी सभ सुगासँ पूछथि जे अहाँ चोला बदलबाक मंत्र जनैत छी, एहि तरहेँ ओ बहुत रास सुगाकेँ पुछैत गेलीह आ छोड़ैत गेलीह। ओहिमे सँ एकटा सुग्गा बाजल- हँ, हम चोला बदलबाक मंत्र जनैत छी। ओहि सुगाकेँ परी अपना पिजरामे बन्न कए लेलन्हि आ एकटा छोट बकड़ीक बच्चा कीनि कए राखि लेलन्हि। कनेक दिनका बाद बारह बरखक समय पूर्ण भऽ गेल । ठाकुर राजा अपन डोली कहार पठेलक आ ओतएसँ परीकेँ अपन महलमे आपस अनलक। परी जतए रहैत छल, ओतए ओ बकरीक बच्चा राखि लेलक आ सुतबाक काल ओहि बकड़ीक बच्चाकेँ मारि देलक। खेनाइ धरि नहि खएलक आ कानए लागलि। राजाकेँ एहि गपक पता लागल जे रानी खेनाइ धरि नहि खएने छथि आ कानि रहल छथि। राजा आएल आ पुछलक जे अहाँ किएक कानि रहल छी। खेनाइ किएक नहि खएने छी। परी ठाकुर राजासँ कहलक- हम कोनाकेँ खाएब, ई जे बकरीक बच्चा मरि गेल, तँ हम आब जीवित नहि रहब। जाधरि ई बकरीक बच्चा नहि खाइत छल, ताधरि हम नहि खाइत छलहुँ। ई मरि गेल से आब हमहूँ मरि जाएब। ओम्हर सुगा देखि रहल छल, एम्हर ठाकुर राजा विचलित भऽ रहल छल। राजा सोचि कए कहलक जे अहाँ चुप रहू, बकरीक बच्चा जीवित भए जाएत। एतेक कहलापर परी चुप भए गेलि आ जहिना राजा अपन चोला बदलि

ओहि बकड़ीमे पैसल तखने सुगा अपना राजाक पिंजरामे चलि गेल। सुगा जेहेने-तेहने पड़ल रहि गेल आ ठाकुर राजा ओही बकड़ीक पिंजरामे चलि गेल।

सुनलहुँ, बकड़ीक बच्चा वएह ठाकुर राजा अछि आ जे क्यो अबैत अछि ओकारा दू लात मारैत अछि।

*तेसर*

ब्राह्मण आ ठाकुरक लड़का ओतएसँ चलल। चलैत-चलैत किछु दूर गेल तँ एकटा नगरमे पहुँचल। ओहि नगरक बीच चौबटियापर बड़ड भीड़ रहए। लोकक ई भीड़ देखि कए ठाकुरक लड़का दौगि कए गेल आ देखलक जे ओहि चौबटियापर एकटा अस्सी बरखक बुढ़ियाकेँ फाँसी देल जा रहल अछि। ठाकुरक लड़का सोचलक जे ओ बुढ़िया ककरो घरमे जा कए भूखमे कोनो अनाज वा भात रोटी खएने होएत, से ओकरा फाँसीक सजा भऽ रहल छै। ठाकुरक लड़का पुछलक- पंडितजी एहि गपकेँ हमरा कहि कए बुझा दिअ। पंडितजी कहलक जे चलू रस्तामे अहाँकेँ बुझा देब। बच्चा कहलक जे नहि, एतहिये हमरा कहि कए बुझा दिअ, नहि तँ अहाँक संग हम नहि जाएब। ब्राह्मण कहलक ठीक अछि। सुनू ठाकुरक बच्चा, बैसू, हम बुझबैत छी।

-बिराटनगरक बिराट राजा छलए। हुनका एकटा मन्त्री छलन्हि। राजाक लड़का आ मन्त्रीक लड़काकमे दोस्तियारी चलि रहल छल। एक दिन दुनू दोस्त विचार कएलक आ जंगलमे शिकार खेलाइ लेल तैयार भेल आ घोड़ा कसेलक। बोनमे शिकार खेलाइत-खेलाइत साँझ भए गेल आ ओही बोनमे एकटा बड़ड पैघ गाछ छल। दुनू गोटे ओहि गाछपर चढ़ि कए सूति गेल। मंत्रीक बेटा सोचलक जे ई राजाक बेटा अछि। कहियो गाछपर नहि सूतल अछि, से ओ कतहु खसि नहि पड़ए, से सोचि ओकरा ओ गमछासँ बान्हि देलक आ ओ दोसर ठाढ़िपर चलि गेल। बारह राति बाजल तँ बोनमे एकटा बड़ पैघ साँप निकलल आ ओहि गाछक लग आबि अपन मणी निकालि कऽ राखि देलक आ ताहिसँ इजोत होमए लागल। सर्प चरए लागल। ओहि इजोतकेँ मन्त्रीक बेटा देखलक आ तकर बाद ओ आस्ते सँ गाछक जड़िमे अपन तलवार ठाढ़ कए देलक आ फेर ऊपर चढ़ि गेल। जाहि ठाम मणी जरि रहल छल ओकर सोझाँ ठाढ़िपर जा कए गमछा दोबर कए ओहि मणीपर खसा देलक। मणी झँपा गेल आ अन्हार भऽ गेल। साँप व्याकुल भए गेल आ ओ गाछक जड़िमे अपन पुच्छी पटकि-पटकि कए टुकड़ा-टुकड़ा भए गेल। भोर भेल तँ ओ अपन दोस्त राजाक बेटाकेँ जगेलक आ कहलक जे दोस अहाँ तँ सूति गेल रही। नीचाँ देखू की भेल अछि। नीचाँमे गमछा उघारि मणी लए ओ दुनू दोस बिदा भेल। ओहि बोनमे एकटा पैघ पोखरि रहए। दुनू दोस्त विचारलक जे अही पोखरिमे एकरा धोबि कए साफ कए ली। राजाक बेटा नीचाँ हाथ राखलक आ मन्त्रीक बेटा ऊपरमे हाथ राखि कए ओकरा साफ करए

लागल। ओ मणी तखने दुनू दोसकेँ खेंचि लेलक आ ओतए लऽ गेल जतए नागवत्ती कन्या रहए। नागवत्ती कन्या ओकरा सभकेँ देखलक तँ कहलक जे अहाँ सभ हमर पिताकेँ मारि देलहुँ तँ हम कहिया धरि कुमारि रहब। कन्या कहलक जे अहाँ हमरासँ बियाह कए लिअ। मन्त्रीक बेटा राजाक बेटाक बियाह ओहि कन्यासँ करेबाक निर्णय कएलक तँ राजाक बेटा कहलक जे यावत ढोल बाजा पालकी नहि आनब, बियाह कोना होएत। मन्त्री-वजीरक बेटा ढोल-बाजा-पालकी अनबा लेल बिदा भेल। दोसर दिन १२ बजे दिनमे नागवती कन्याँ पोखरिमे नहा रहल छलीह, तखने ठगपुर नगरक राजाक लड़का शिकार खेलेबा लेल जंगलमे आएल रहए। गरमीक मास छल, ओकरा बड़ जोरसँ पियास लगलैक तँ ओ ओही पोखरिमे गेल। जखने ओ ओहि कन्याकेँ देखलक तँ मूर्च्छा खा कए खसि पड़ल आ कन्या पोखरिक भीतर चलि गेलि। जखन ओकरा होश अएलैक तँ ओहि कन्याकेँ ओ नहि देखलक। ओहि समयसँ राजाक बेटा अपन घर जा कए पागल भए गेल। ई समाचार ठगपुरक राजाकेँ पता चललैक तँ ओ बड़ड उपाय कएलक मुदा ओकर बिमारी नहि ठीक भेलैक।

राजाकेँ बड़ड चिन्ता भऽ गेलैक। राजा अपन राज्यमे ढोलहो पिटबा देलक जे, जे क्यो हमर बेटाकेँ ठीक कए देत ओकरा राज्यक एक हीस दऽ देल जाएत आ डाला भरि सोनाक संग अपन बेटीक संग ओकर बियाह सेहो ओ करा देत। ई सुनि मारते रास लोक आएल मुदा ओ ठीक नहि भेलि। ओही गाममे एकटा बुढ़िया रहैत छलि, महागरीब। ओ करीब-करीब अस्सी बरिखक रहए। ओहि बुढ़ियाक एकटा बताह बेटा रहए। ओ बुढ़िया ओहि राजाक बेटाकेँ ठीक करबा लेल तैयार भेलि। राजा ओकरा आदेश देलक जे जो, आ हमर बेटाकेँ ठीक कर गऽ। तखन तोरे इनाम सेहो भेटतौक आ अपन बेटीक संग हम तोहर बेटाक बियाह सेहो करबा देबौक। बुढ़िया गेल आ राजाक लड़काकेँ एकटा कोठामे बन्न कए देलक आ अपने सेहो ओहि कोठामे चलि गेल। बुढ़िया राजाक बेटासँ पुछलक, मुदा ओ कोनो उत्तर नहि देलक। तखन बुढ़िया ओकर दुनू गालमे दू चमेटा मारलक आ तकर बाद ओ बाजल, जे हम जंगलमे शिकार खेलाइ लेल गेल छलहुँ। ओतए एकटा पोखरिमे पानि पीबा लेल गेलहुँ, तँ एकटा बड़ड सुन्दरि स्त्रीकेँ देखलहुँ आ हम बेहोश भए गेलहुँ। होश अएलापर देखलहुँ जे ओ लड़की बिला गेलि। तखनेसँ हमर मोन बताह भऽ गेल, जे कहिया ओ लड़की हमरा भेटि जाए। ओ बुढ़िया कहलक जे ओहि लड़कीकेँ हम आनब। एखनसँ तूँ ठीक रह, ओकरा आनब हमर काज छी। बुढ़ियाक कहलापर ओ चुप भऽ गेल आ बुढ़िया राजाकेँ कहलक जे हमर संग पाँच टा सखी-सहेली चाही आ ओहि बिमारीकेँ हम ठीक करब। राजा पाँच टा सखी देलक आ बुढ़िया ओकरा सभकेँ लऽ कए बिदा भेल। ओ बोन दिस गेल, जतए ओ पोखरि रहए आ ओकर चारू दिसन ओ सभ नुका गेल। जखन दिनक बारह बाजल तँ ओ लड़की पोखरिसँ निकलल आ ओहि पोखरिक महारपर बैसि कए नहाय लागल। बुढ़िया जंगलसँ बहार भेल आ

कन्याक बगलमे नहाए लागल। बुढ़ियाकेँ देखि कए कन्या सोचलक जे ओ अस्सी बरखक बुढ़िया अछि, ओकर सेवा केनाइ जरूरी अछि। ओ ओहि बुढ़िया लग जा कए ओकर सौँसे देहकेँ साफ करए लागल। कहलक माँ आब फेर नहा लिअ। बुढ़िया कहलक लाऊ बेटी, अहूँक सौँसे देह साफ कऽ दैत छी। बुढ़िया कन्याक देह साफ करए लागल। साफ करैत बुढ़िया चुटकी बजेलक तँ ओकर सखी सभ चारू दिसनसँ ओकरा पकड़ि लेलक आ आपस ठगपुर गाम दिस बिदा भेल, जतए राजाक घर छल। ठग राजा इनाम देबा लेल तैयार भेल आ अपन लड़कीक बियाह ओकर बताह लड़का संग करएबा लेल तैयार भेल। राजा अपना गाममे जतेक बाजा आ पालकी रहए, अपना ओहिठाम अनबा लेल कहलक। ओहि गाम आ नगरक सभटा बाजा आ पालकी, सभटा राजा लग चल गेल।

आब मन्त्रीक बेटा गाम-गाममे पुछैत अछि तँ सभ कहलक जे सभटा बाजा आ पालकी राजा ओहिठाम चलि गेल। ओतएसँ अएलाक बादे बाजा भेटत। ई सुनि मन्त्रीक बेटा कहलक जे ठीक अछि हम कनेक दिन रुकि जाइत छी। ओतए एम्हर बुढ़ियाक बताह बेटाक बियाहक दिन पड़ि गेलैक। मन्त्रीक बेटा ओहि गामक बच्चासँ पुछलक जे ई बरियाती कतए जाएत। बच्चा बाजल जे बरियाती कतहु नहि जाएत। हमर गामक एकटा बुढ़िया एहि बोनक पोखरिसँ एकटा कन्याकेँ पकड़ि कऽ अनने अछि। मन्त्रीक बेटाकेँ चिन्ता पैसि गेलैक जे ई वएह लड़की तँ नहि अछि। मन्त्रीक बेटा अपन सभटा पोशाक खोलिकऽ राखि देलक आ एकटा भिखमंगाक रूप धऽ कए राजाक आँगनमे गेल आ ओहि लड़कीकेँ देखलक आ इशारा कऽ देलक जे साँझ धरि हम आएब। ओहि ठामसँ बजीरक बेटा निकलि कऽ बाहर आएल आ ओहि बुढ़िया आ ओकर बताह बेटाक पता लगओलक। तँ देखलक जे ओ बताह बच्चा सभक संग गाए-महीस चरेबाक लेल बोन गेल अछि। मन्त्रीक बेटा सेहो बोन चलि गेल आ जतए पागल रहए, ओकरे संग खेलाए लागल। बच्चा सभकेँ जखन भूख लगलैक तँ मन्त्री-पुत्र आ ओहि बताह बच्चाकेँ छोड़ि कए चलि गेल। मन्त्रीक बेटा ओहि बताह बच्चाकेँ बोनमे भीतर लए जाए छोड़ि देलक आ ओकर सभटा कपड़ा लए लेलक। कनेक झलफल भेल महिसबार सभ गाए-महीस लए घुरए लागल, तँ मन्त्रीक बेटा सेहो बताह जेकाँ करैत घुरि आएल आ घरमे जा कए ओही लड़कीक चारू दिस घुरिआए लागल, जकरा संग ओकर बियाह होमए बला छलैक। ओहिना ओ ओहि घरमे सेहो चलि गेल जतए ओ नागवती कन्या रहए आ ओतए जा कए कहलक कि अहाँ एहि कपड़ाकेँ बदलि लिअ आ पोटरी बान्हि कए बगलमे दबा लिअ आ राजाक लड़कीबला कपड़ा पहिरि लिअ। आगाँ निकलू आ पाछाँ हम जाइत छी। कन्या आगाँ निकललि, पाछाँ मन्त्रीक बेटा बताह जेकाँ करैत, दुनू बाहर निकलि गेल। दुनू ओतएसँ बिदा भेल आ जतए पोखरि छल ओतए पहुँचि गेल।

सुनलहुँ ठाकुरक बेटा। अही गपपर अस्सी बरखक बुढ़ियाकेँ फाँसी देल जा रहल अछि, राजा कहलक जे ई बुढ़िया हमर राज्यक हिस्सा लेबाक लेल ई षडयन्त्र रचने रहए आ तैँ ओकरा फाँसी दए रहल अछि।

*चारिम*

आब राजाका बेटा आ कन्या संग किछु समए बिता कए बजीरक बेटा फेर घुरि आएल पालकी आ बाजा लेल। ओहि दिन पालकी आ बाजा दुनू भेटि गेल आ बजीर ओकरा लए चलि आएल। बहुत नीक जेकाँ दुनुक बियाह भेल आ बरियातीक संग अपन घरक लेल बिदा भेल।

चलैत-चलैत किछु दूर गेल तँ साँझ भए गेल। एकटा बड़ड पैघ गाछक लग ओ ठाढ़ भए गेल। सभकेँ खेनाइ खुआ कए सभ कियो सूति गेल। रस्ताक थकान रहए सभ कियो निन्नमे सूति गेल। रातिक बारह बाजल तँ बिध-बिधाता आएल आ ओहि गाछपर बैसि गेल। बिध बाजल- बड़ड नीक जोड़ी लागल अछि तँ बिधाता कहलक जे जोड़ी तँ ठीके बड़ड नीक अछि मुदा राजाक बेटा मरि जाएत। बीध पुछलक किएक। तँ बिधाता बाजल हम तँ कहब मुदा एहि बरियातीमे सँ कियो सुनैत होएत, तँ ई बाँचि जाएत। ओहि समय नागवत्ती कन्या आ बजीर सुनि रहल छल। सभटा मिला कए पचीस टा संकट पड़त आ सभटा संकट ओ बतेलक। भोर भेल तँ नागवत्ती कन्या आ बजीर कहलक जे ई बरियाती सभकेँ एतएसँ आपस पठा दिअ आ हम तीनू गोटे एतएसँ चली। ओतएसँ तीनू गोटे बिदा भेल आ चलैत चलैत किछु दूर गेल तँ रस्ताक कातमे दू टा गाछ छल। मन्त्रीक बेटा आ कन्या कहलक जे हम तीनू गोटे हाथ पकड़ि कए चली। राजाक बेटाकेँ बीचमे लए दुनू गोटे दुनू दिससँ हाथ पकड़लक आ लग गेल आ कहलक जे हम तीनू गोटे एतएसँ दौगि कए चली। ई कहि कए ओ सभ दौगनाइ शुरू कएलक आ जहिना दौगि कए आगाँ गेल तँ दुनू दिसका गाछ खसि पड़ल। पाछाँ घुरि कए ओ सभ देखलक आ बाजल जे हम सभ दौगि कए जे आगाँ नहि अबितहुँ तँ ई हमरा सभक ऊपर खसि पड़ितए। ई कहि ओ सभ आगाँ बिदा भेल। ओतएसँ चलैत-चलैत किछु दूर आगाँ ओ सभ गेल तँ रस्तामे एकटा धार भेटि गेल तँ ओतहु ओहिना राजाक बेटाकेँ बीचमे लए दुनू दिससँ ओकर हाथ पकड़ि लेलक आ धारमे चलए लागल। बहुत तेजीसँ ओ सभ आगाँ बढ़ल आ जहिना ऊपर गेल तँ बीच पानिसँ निकलि गेल आ घुरि कए देखलक तँ बोचपर नजरि पड़लैक। ओ सभ बाजल जे हम सभ तेजीसँ नहि निकलितहुँ तँ बोच हमरा सभकेँ पकड़ि लैतए, आ तकर बाद ओ सभ ओतएसँ बिदा भेल। अपन कलम-गाछी होइत घर पहुँचैत गेल। मारते रास लोक ओतए जमा भए गेल आ राजाक बेटाकेँ देखए लागल आ कहए लागल जे बड़ड नीक जोड़ी मिलल अछि। ओ सभ महलक भीतर जेबाक पहिने अगुलका छत तोड़बा देलक।

राजाक बेटाकेँ बजीरक बेटा आ कन्यापर ओहिहाम शक भेलैक। राजा आ कन्या महल गेल। आब राजा पुछलक जे हमर दोस बजीरकेँ बजाऊ। पूछए लागल जे दोस अहाँ दुनू गोटे रस्तासँ घर धरि एतेक रास बात केलहुँ, से हमरा बुझल नहि भेल, से अहाँ ओ सभ गप हमरा कहू। बजीरक बेटा बाजल जे दोस ई सभ कोनो गप नहि अछि। ई सभ हम सभ हँसी कए रहल छलहुँ, जे देखी जे हमर सभ राजा दौगि सकैत छथि आकि नहि , आ चलि सकए छथि आकि नहि। ताहि द्वारे हम सभ हँसी कए रहल छलहुँ। एहि गपपर राजाकेँ बिस्बास नहि भेलैक आ ओ कहलक जे जे यदि ई गप अहाँ नहि कहब तँ अहाँकेँ फाँसीपर लटकबा देब। एहि गपकेँ कन्या सेहो सुनि रहल छलीह। हारि कए बजीरक बेटा कहलक जे जतएसँ बरियाती आपस भेल छल। बिधाता जे कहने छल ओ सभ गप कहलक आ रस्तामे जे बितल सेहो कहलक। ई सभ कहिते बजीरक बेटाक अदहा अंग पाथरक भए गेलैक। आ जखन सभ गप पूर्ण भेल तँ बजीरक बेटा ओही कोचक बगलमे पहाड़ बनि गेल। किछु दिनुका बाद राजाकेँ एकटा बेटा रातिमे जन्म लेलक। कहल गपकेँ ओही समय ओ पूर्ण करए लागल आ ओही पहाड़पर ओहि बालककेँ राखि पघरियासँ दू टुकड़ी कए देलक। ओकर टुकड़ा होइतहि बजीरक बेटा फेरसँ तैयार भऽ गेल आ कहलक जे हमरा आब ओ लड़का दिअ। बजीरक बेटा ओहि बालककेँ लए अपन सासुर गेल। ओ बारह बजे रातिमे पहुँचल। कोनो तरहेँ अपन स्त्रीक लग पहुँचल आ सभ गप कहि बालककेँ आमक गाछक ठाढ़िपर लटका देलक। रातिमे अपन स्त्रीकेँ कलममे अनलक आ बालककेँ ठाढ़िपरसँ उतारि कए नीचाँ कएलक आ कहलक जे ई चक्कू लिअ आ अपन हाथक कँगुरिआ आँगुर काटि कए एहि बच्चापर छीटि दिअ। जखने ओ छीटलक तखने ओ बच्चा कानए लागल आ तखने ओ ओकरा लए जा कए राजाकेँ देलक। बजीरक बेटा कहलक जे आब आइ दिनसँ अहाँक संग हमर दोसतियारी समाप्त भेल। ई कहि बजीरक बेटा अपन घर घुरए लागल, तँ ओही समय राजाकेँ ज्ञान प्राप्त भेल आ जा कए अपन दोस्तकेँ गरा लागि ओ क्षमा मँगलक आ कहलक जे आइसँ एहन गलती हमरासँ कहियो नहि होएत आ ई दोस्ती बनल रहत।

# राजा अनसारी

राजा अनसारी महान राजा छलाह। हुनकर राज्य १४ कोशमे पसरल रहए। ओ राजा अपन मनोकामनाक अनुसार राज्य करैत छलाह। जे हुनकर हृदयमे अबैत छलन्हि वैह करैत छलाह। हुनका तीन टा बेटा छलन्हि। एक दिनुका गप अछि। राजाकेँ कोनो वस्तुक कमी नहि छलन्हि। घर मकान, बंगला आ बाग-बगीचासँ भरल-पूरल छलन्हि। एक दिन राजा रातिमे सूतल छलाह कि अचानके ओ सपना देखलन्हि जे हमर घरमे हीरा-मोती झरि-झरि कए खसैत अछि आ मोजर चुनि-चुनि कए सभ खाइत अछि। भोर भेल तँ राजा अपन लड़काकेँ कहलक जे देखू हम रातिमे ई सपना देखलहुँ। लड़का उत्तर देलक जे पिताजी अहाँ एहि गपक चिन्ता नहि करू, हम ओकरा पूरा कए देब। तीनू भाए विचार कए भोरे घोड़ा कसेलक आ बिदा भेल। चलैत-चलैत एकटा भयंकर बोनमे ओ सभ पहुँचल। तीनू भाए ओहि बोनमे रस्ता बिसरि गेल आ तीन रस्तापर बिदा भऽ गेल। दू भाइ भटकैत रहल आ एहिना किछु दिन बीति गेल। छोट भाए बोनक रस्तामे भूख-पिआससँ थाकि गेल आ घोड़ाकेँ छोड़ि देलक आ पएरे चलए लागल। कनेक कालक बाद ओकरा रस्तामे एकटा इन्सान भेटल। ओकरासँ ओ पुछलक, हमर सोनारूपी गाछक ठाढ़िसँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कए खाइत अछि। हमरा ओतहि जएबाक अछि। ओ इनसान कहलक जे एहि रस्तासँ चलि जाऊ। आगाँ एकटा इनार अछि। ओही इनारक बाटे एकटा रस्ता अछि। छोटका भाए ओकरे कहल अनुसार चलैत रहल आ जखन ओहि इनारक लग गेल तँ देखलक जे रस्ता ओही बाटे रहए। ओ इनारमे जा कए खसि पड़ल। चलैत-चलैत ओ भैरवानन्द जोगी लग पहुँचल। ओ जोगी कहलक जे रे बच्चा तूँ एतए कतएसँ अएलँह, एतए तँ कोनो मनुख आइ धरि नहि पहुँचि सकल रहए। ओतए ओ बच्चा ओहि जोगीक सेवा करए लागल। सेवा करैत किछु दिन बीति गेल तँ जोगी ओहि बच्चापर बड़ड प्रसन्न भऽ गेल, बाजल-बच्चा माँग की मँगैत छँह। हम तोरा अवश्य देबौक। बच्चा बाजल-जोगी बाबा, हमरा सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़ि जाहिमेसँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कए खाइत अछि, से चाही। ओ योगी ई गप सुनि कए बड़ड आश्चर्य व्यक्त कएलक। तूँ ई चीज कोना पता लगेलह । ठीक अछि। हम जखन वरदान दए चुकल छी, तँ अवश्य देब। तोरा कष्ट उठाबए पड़तह। भोर भेल तँ बच्चाकेँ एकटा जंत्र देलक आ कहलक जे जाऊ आ सात समुद्र पार ओतए एकटा अमर फलक गाछ अछि, ओहिमेसँ एकटा फल तोड़ि कए लए आनू। ओ बच्चा ओतएसँ बिदा भेल। सुग्गाक रूप धारण कएलक, उड़ैत-उड़ैत सात समुद्र पार गेल, जतए अमरफलक गाछ रहए। ओ फल तोड़ि ओतएसँ बिदा भेल जखन ओकरा पाछाँ तीन टा परी लागि गेल आ ओ

सभ तखन अबाज देलक जे घुरि कए देख। एना कहैत, पाछाँ करैत, चलि आबि रहल छल ओ सभ। समुद्र टपलाक बाद सुग्गा घुरि कए देखलक आ ओतहि मरि गेल। जोगी ई सभ ध्यानमे देखि रहल छल। सुग्गा घुरि कए देखलक आ मरि गेल ! जोगी बिदा भेल अपन चुट्टा लए। चुट्टासँ मारि कए सुग्गाकेँ जिएलक आ कहलक जे आब जो। तूँ फल लए जे आब चलमे, तँ घुरि कए नहि देखिहँ। एना बुझा कए ओकरा जोगी पठेलक आ ओ चलि गेल। फल तोड़ि एहि बेर ओ उड़ैत रहि गेल, घुरि कए नहि देखलक आ जोगी लग पहुँचि गेल। जोगी लग ओ पहुँचि गेल आ ओ फल जोगीक हाथमे देलक। ओ अमर फलसँ किछु बच्चाकेँ खोआ देलक आ कहलक जे आब जाऊ अहाँ अमर भए गेलहुँ। फेर ओ कहलक जे ओही सात समुद्र पार एकटा कलम-गाछी अछि। ओही गाछीमे तीन बहिन रहैत छथि। ओकरे लग तोहर बात पूर्ण होएतौक। बच्चा बिदा भेल, फेर सात समुद्र पार गेल आ ओही गाछीमे पैघ बहिन लग जा कए कहलक तँ ओ ओकरा माँझिल लग पठा देलक। ओकरा लग गेल तँ ओ ओकरा छोटकी लग पठा देलक। जखन ओ छोटकी बहिन लग गेल तँ ओ हाथमे चक्कू लेने बड़की आ माँझिल बहिन लग आएल। तखन तीनू बहिन ओहि लड़कासँ पुछलक जे तोँ कतएसँ आएल छह। लड़का जवाब देलक जे जोगी बाबा हमरा पठेने छथि। अहाँ सभ हमरा संगे जोगीबाबा लग चलू। ओ चारू गोटे ओतएसँ जोगीबाबा लग अएलाह। जोगीबाबा कहलक-बेटी, आब अहाँ तीनू गोटेकेँ एकरा संग जेबाक अछि।

ओ तीनू परी चलबा लेल तैयार भऽ गेलीह। जोगी बाबासँ बच्चा कहलक-हमरा गाछ नहि देखाइ पड़ल। ओहि समय जोगी बाबा आदेश देलक आ खेला देखेलक। तीनू परी एक लाइनमे ठाढ़ भए गेलीह आ लड़काक हाथमे चक्कू देलक आ कहलक जे एक्के संग तीनू परीक गरदनिमे चक्कू मारू आ अपन गरदनिमे सेहो मारू। एना कएलासँ सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िपरसँ मोती झरए लागल आ मोजर चुनि कए खाए लागल। बच्चाकेँ आब बिसबास भेलैक आ तखन किछु दिनुका बाद ओ चारू गोटे ओतएसँ बिदा भेल आ घर पहुँचल।

ओ अब्बूकेँ कहलक पिताजी हम सोना-रूपाक गाछ अनने छी।

राजा अनसारी कहलक- बेवकूफ! तूँ तीनटा औरत अनने छँह आ कहैत छँह जे गाछ अनने छी।

बच्चा कहलक जे सौंसे नगरक लोककेँ बजाऊ आ तखन हम देखबैत छी।

राजा सभकेँ बजेलक एकत्र कएलक।

बच्चा तीनू परीक गरदनिमे चक्कू मारलक आ अपन गरदनिमे सेहो। सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़ि सँ मोती झरए लागल आ मोजर चुनि कए खाए लागल।

राजाक सपना पूरा भेल।

# राजा ढोलन

गढ़ नारियलक राजा दक्ष रहए। ओ राजा बड्ड प्रतापी छल। मुदा ओकरा राज्यमे कोनो हाट-बजार नहि रहए। राजा सोचलक जे हमर राज्यमे हाट कोना लगत? से राजा अपन राज्यमे ढोलहो पिटबा देलक जे हमरा राज्यमे हाट लागत आ जकर जे समान नहि बिकाओत से हम कीनि लेब। सम्पूर्ण राज्यक लोक आबए लागल आ हाट लगबए लागल। एहि प्रकारेँ सभ दिन हाटमे जे समान बचि जाइत छल, तकरा राजा कीनि लैत छल। एहिना कतेक दिन बीति गेल। एक बेर एकटा सूतबला सूत बेचए लेल ओतए आएल मुदा तावत हाट उठि गेल रहए आ ओकर सूता नहि बिकाएल। राजा ओकर सूत सेहो कीनि लेलक।

मुदा जहियासँ राजा सूता किनलक तहियेसँ ओकर अबस्था घटए लागल। किछु दिनुका बाद राजाक हालति गरीब जेकाँ भऽ गेल। राजा अपन स्त्रीसँ कहलक-अम्बिका सुनू। अपन राज्यमे गरीबी पसरि गेल अछि। आब अपन राज्य रहबा योग्य नहि रहल। ओतए सँ राजा बिदा भेल आ जाइत-जाइत कोनो देशमे पहुँचल। ओहि देशक नाम गढ़पिंगल रहए। ओतुक्का राजाक नाम सेहो देशक नामपर छल। गढ़पिंगल राजाक ओही नगरमे गढ़नारियल राजा घुमैत-घुमैत पहुँचि गेल आ कहए लागल जे हे भाइ हमरा कियो नोकरी राखत ? राजा कहलक-हँ। हमरा एकटा नोकरक जरूरी अछि। एकरा राखि लिअ। गढ़पिंगल राजाकेँ एक सए नोकर रहए आ ओकरा एकटा आर नोकरक आवश्यकता रहए कारण ओकरा लग १०१ टा घोड़ा रहए। ओ राजाक एहिठाम रहि गेल आ सभ दिन घोड़ाक घास लेल जाए लागल आ घास छीलि कए आनए लागल। गढ़नारियलक राजा दक्षक स्त्री गर्भवती रहए आ गढ़पिंगलक राजाक स्त्री सेहो गर्भवती रहए। आ संयोग एहन रहल जे दुनू राजाक स्त्री एक्के दिन जन्म दैत अछि। पिंगलक राजा ब्राह्मण बजा कए ज्योतिष देखेलक आ राजा अपन पुत्रीक नाम राखलक आ कहलक जे एकर नाम मडुवन किएक अछि। ब्राह्मण कहलक जे एकर बियाह छठी रातिकेँ होएत। राजा ओही दिनसँ अपन राज्यमे ताकैत-ताकैत थाकि गेलथि मुदा हुनका ओ नहि भेटल। राजाक खबासिनी कहलक जे अहाँ सभ चिन्ता किएक करैत छी। राजा साहब पछिला बेर जे नोकर रखने छथि हुनका एहिठाम एकटा लड़का जन्म लेने अछि। ओकरे संग बियाह करा देल जाए। ओहि बच्चाक नाम राशिक अनुसार राजा ढोलन राखल गेल छल। गढ़पिंगलक राजा सोचलक जे ई बड्ड नीक गप अछि, जखन ई लगेमे अछि तँ ओकरे संग बियाह करा देल जाए। दिन तँ ताकले रहए से ओही छठिक रातिमे बियाह भए गेल। किछु दिनुका बाद राजा दक्ष कहलक जे आब एतए रहबाक योग्य नहि अछि। आब अपन देश जएबाक चाही।

राजा जाहि साढ़ीनपर चढ़ि कए आएल रहथि ओहि साढ़ीनकँ कहलन्हि जे साढ़िन आब अपन देश चलू। आब साढ़ीपर चढ़ि कए राजा-रानी बिदा भेलाह। किछु दूर रस्तामे गेलाह तँ एकटा बोन भेटलन्हि। ओहि बोनमे रस्ताक कातमे एकटा पोखरि रहए। ओही पोखरिक महारपर दू टा बाघ-बाघिन रहैत छल। राजा सोचलक जे हमर सभक बच्चा जखन एहि रस्तासँ अपन सासुर जएताह, तखन ई बाघ हमर बच्चा सभकँ खा जाएत। ताहि द्वारे एकरा मारि देनाइ ठीक होएत। राजा बाघकँ मारि देलक आ आगाँ चलल तँ बाघिन कहलक जे राजा तूँ हमरा जेना राँड़ कए जा रहल छह, ओहिना तोहर बेटा जखन अपन सासुर जेतह तँ गढ़पीपली राजमे ओकर कनियाँकँ हमहू राँड़ कए देबैक।

बाघिनक ई अबाज मात्र राजा सुनलक। राजा अपन घर पहुँचि कए ई गप ककरो नहि कहलक। ओ अपन साढ़िनकँ एकटा पैघ खधाइ खूनि कए ओहिमे धऽ देलक कारण बाहर रहलासँ ओ ई गप ओकर बच्चाकँ सुना दैत। ओही समय छोट बालककँ अपन फुलवाड़ीक रेखा-पेखा मालिनक संग दए देलक। ओकर दुनू बहिन ओकरा बड़्ड नीक जेकाँ सेवा करए लगलीह। एहिना करैत किछु दिन बीति गेल तँ ई बच्चा समर्थ भऽ गेल आ तखनो ओकरा किछु बूझल नहि भेलैक। ओम्हर ओ मडुअन कन्याँ सेहो पैघ भऽ गेलि। कन्या युवा भऽ गेलि तँ ओहि सखी सभक घुमैत फिरैत हुनका कोनो संगी कहलक जे हे बहिन। आब अहाँ समर्थ भऽ गेलहुँ। अहाँक पिताजी अहाँक बियाहक विषयमे किछु नहि सोचि रहल छथि। ई बात सुनि कए कन्याँ बड़ चिन्तामे पड़ि गेलीह। अपन महलमे जा कए ओ पलंगपर पड़ि रहलीह आ खेनाइ त्यागि देलन्हि। एहिपर ओकर माए कन्या लग जाए कहलक, बेटी अहाँ खेनाइ किएक नहि खाइत छी ?

कन्याँ बाजलि-माए। सखी सभ बड़्ड किचकिचबैत अछि। ताहि द्वारे हमरा भूख नहि लगैत अछि। माए कहलक- अहाँकँ की कहि किचकिचबैत छथि?

कन्याँ बाजल-ओ सभ हमरा कहैत छथि जे अहाँक पिताजीकँ कोन चीजक कमी अछि, जे अहाँक पिताजी अहाँक बियाह नहि करा रहल छथि?

माए कहलक- बेटी अहाँक बियाह छठीक रातिमे भए गेल अछि। अहाँक सासुर गढ़नारियलमे अछि। नहि जानि ओ किएक नहि अबैत छथि?

ई सुनि कन्याँ कहलक जे हमरा जबुनाक कातमे एकटा मकान बना दिअ आ सभ वस्तुक व्यवस्था कए दिअ। हम बारह बरिख धरि सदाव्रत बाँटब। एतेक सुनि राजा ओहिना कएलक। मडुवन कन्याँ जबुनाक कातमे सदाव्रत बँटनाइ शुरू कए देलक।

बनिजारा सभ वाणिज्य करबाक लेल गढ़नारियलसँ गढ़-पिन्गल जा रहल छलाह। बनिजारा सभ जखन गढ़-पिन्गल पहुँचलाह तँ जबुना धारक कातसँ होइत आगाँ बढ़ि रहल छलाह। जाइत-जाइत ओ सभ ओहिठाम पहुँचलाह जतए मडुवन कन्या सदाव्रत बाँटि रहल छलीह। ओ कन्याँ पुछलक-अहाँ सभ कतए जा रहल छी आ कतएसँ आएल छी। बनिजारा बाजल-हम सभ गढ़नारियलसँ आएल छी आ

गढ़पिन्गलमे हीरा-मोतीक वाणिज्य करैत छी। कन्याँ बाजल-अहाँ वाणिज्य कए घुरब तँ हमर एकटा पत्र लए जाएब?

बनिजारा बाजल-अहाँ पत्र लिखि कए राखब, हम जरूर लए जाएब। बनिजारा जखन घुरल तँ ओ पत्र लए चलि गेल आ जखन गढ़ नारियल पहुँचल तँ हरेबा-परेबा जे दुनू बहिन छलि-आ बड़्ड पैघ जादूगरनी छलि- ओ जादूक जोरसँ पता लगा कए राजाकेँ खबरि कएलक आ बनिजारासँ ओ पत्र लऽ कऽ ओकरा आगिमे जरा देलक आ ओहि राजाक बेटाकेँ एकर पता नहि चलए देलक। कन्याँक ई पत्र मारल गेल। ओ बेचारी बाट तकैत रहल। किछु दिन बीतल। ओ कन्याँ एकटा सुग्गा पोसने छलीह। ओ सुग्गासँ पुछलक-की तूँ हमर पत्र लए जा सकैत छह। सुग्गा बाजल-हँ। हम पत्र राजाकेँ दए देब। कन्याँ पत्र लिखि कए सुग्गाक गरदनिमे लटका देलक आ कहलक- जाऊ।

सुग्गा ओतएसँ बिदा भेल। सुग्गा आकासमे उड़ि बिदा भेल आ पहुँचल गढ़नारियल राज्य जतए हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहथि। सुग्गा उड़ि कए ओकर कान्हपर बैसि गेल, ठोंठसँ सूता काटि कए खसेलक। ओहि समय हरेबा-परेबा राजा ढोलनक फुलवारीमे बैसल रहए। ठंढ़ीक मौसम छल। आगि पजारि कए बैसल छल। जखने ओ पत्र खसेलक तखने मालिन ओहि पत्रकेँ आगिमे धऽ देलक। राजा ढोलनकेँ बड़्ड तामस उठलैक। दुनूकेँ दू-दू चमेटा मारलक आ कहलक जे तूँ दुनू गोटे एतएसँ चलि जो। दुनू बहिन पकड़ि कए ओकरा मनाबए लागल। कन्याँक ओहो पत्र खतम भए गेल। कन्याँ बहुत चिन्तामे पड़ि गेल। बहुत समय आर बीति गेल।

एक दिन जबुनाक किनारसँ एकटा महात्मा जोगी रूपमे जा रहल छल। कन्याँक नजरि ओहि महात्मापर पड़ि गेल। कन्याँ बड़्ड चिन्तित भए कानि रहल छलीह। ओ साधु महात्मा कन्याँक कननाइ सुनि अएलीह आ कारण पुछलक।

कन्याँ सभटा हाल बतेलक ।

महात्मा कहलक जे तूँ एकटा पत्र लिखि कए हमरा दे आ हम ओ पत्र ओतए पहुँचाएब।

कन्याँ पत्र लिखि कए महात्माकेँ देलक। महात्मा ओतएसँ बिदा भेल।

कन्याँ महात्माकेँ गाँजा,भाँग आ हफीम देलक। महात्मा ओकरा खाइत-पिबैत ओतएसँ बिदा भेल। किछु दिनुका बाद महात्मा गढ़नारियल पहुँचल, जतए हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहए। ओ फुलबारीक बीचमे अपन डेरा खसेलक। रातुक मौसम छल। भोर होइ बला छल। ओही समय महात्मा एकटा मोहिनी बाँसुरी निकाललक आ बजबए लागल। ओहि बाँसुरीक अबाज सुनि राजा ढोलन उठल आ चलबा लए तैयार भेल तँ दुनू बहिन ओहि बाँसुरीपर बहुत रास जादू-गुण चलेलक। मुदा महात्माक किछु नहि बिगड़ल। राजा ढोलन उठल आ दुनूकेँ दू-दू लात मारि महात्मा लग गेल। साधुजी ओहि पत्रकेँ निकालि कऽ राजा ढोलनकेँ देलन्हि। आर से पढ़ि राजा ढोलन तामसे विख-सबिख भए गेल आ ओतएसँ घर

गेल आ एकटा तलबार लए पितासँ पूछए लागल जे बताऊ जे ई हमर बियाह कतए भेल अछि ? पिताकँ ओ बाघिन मोन पड़ि गेलैक से ओ झूठ बाजल आ कहलक जे हम तोहर बियाह नहि करबेने छियहु।

तामसे भेर भए ओ ओहि पत्रकँ राजाक सोझाँ राखलक। राजा ओ पढ़ि बड़ड चिन्तामे पड़ि गेल।

ओ अपन बेटाकँ कहलक। देखू बेटा। अहाँक बियाह हम छठीक राति कएने छी आ गौना एहि द्वारे नहि कएलहुँ कारण अबैत काल हम एकटा बाघकँ मारि देलहुँ। फेर ओ सभटा खिस्सा कहि सुनेलक आ कहलक, जे ओ डरे ओकर गौना नहि करेलक।

ढोलन बाजल-हमर सवारी कतए अछि। हमर सवारी दिअ।

राजा कहलक-साढ़नी तँ तरहाराक नीचाँ अछि। ओ जीवित अछि वा मरि गेल से नहि जानि।

राजा ढोलन तरहराक नीचाँ सँ साढ़िनकँ बहार कएलक तँ साढ़िनक देहमे पिल्लू लागि गेल छल। ओ ओकरा साफ कएलक आ ओकरा चना-चबेना खुअएलक। खुआबैत-खुआबैत ओ पहिने जेकाँ तन्दरुस्त भए गेल।

राजा ढोलन बाजल-साढ़िन, तोहर पैर बहुत दिनसँ बान्हल छह। तूँ चौदह कोसक रस्ताकँ एक दिनमे चारि चौखड़ लगा दिअ तँ हम बुझब। हम सभ फेरसँ गढ़पिंगल पहुँचब। साढ़िन अपन चालि एक दिनमे बना लेलक। राजा ढोलन अपन सासुर बिदा भेल। साढ़िनपर स्वार भए अपन कान्हपर बन्दूक लेलक आ बिदा भेल। चलैत-चलैत ओ ओही बोनमे पहुँचल। ओही रस्तासँ ओ सभ जा रहल छल, जतए ओ बाघिन रहैत छलीह। बाघिनकँ राजा ढोलन देखलक आ ओहि बाघिनकँ मारि देलक। फेर ओ अपन सासुर गढ़पीपली गेल आ फूल बगानमे डेरा खसेलक। साढ़नीकँ ओ ओतहि छोड़ि फूल-बगानकँ तोड़ि-तारि कए तहस-नहस कए देलक। मालिन कहलक जे तोरा राजासँ पिटान पिटबेबउ आ जतेक तोँ बरबादी कएने छँह तकर हरजाना लेबउ। राजा ढोलन बाजल- जो तोरा जे करबाक छौक कर।

मालिन तामसे बिदा भेलि आ राजा लग गेलि। राजासँ कहलक।

राजा पुछलक जे ओ कतुक्का अछि।

मालिन कहलक जे ओ अपन घर गढ़नारियलक बतेलक अछि।

राजा अपन सिपाही सभकँ पठेलक। ओ सभ ढोलनकँ पुछलक-अहाँ कतुक्का छी आ कतएसँ आएल छी।

ढोलन बाजल- हमर घर गढ़ नारियल अछि आ हम अपन सासुर गढ़पिंगल-ओतहिसँ आएल छी।

सिपाही सभ ई गप राजाकँ जा कए कहलक।

राजा प्रसन्नतासँ स्वागत कए डोलीमे बैसा कए ढोलनकँ अपना घर अनलक। किछु दिनुका बाद राजा अपन बेटी-जमाएकँ गढ़-पिंगलसँ गढ़ नारियलक लेल बिदा

केलक। ओतए सँ राजा ढोलन आ ओ मडुवन कन्याँ अपन घर गेल आ अपन राज्य करए लागल।

# बगियाक गाछ

एकटा मसोमात छलीह आ हुनका एकेटा बेटा छलन्हि। ओ छल बड्ड चुस्त-चलाक।

एक दिनुका गप अछि। ओ स्त्री जे छलीह, अपना बेटाकेँ बगिया बना कए देलखिन्ह। ओहि बालककेँ बगिया बड्ड नीक लगैत छलैक। से ओ एहि बेर एकटा बगिया बाड़ीमे रोपि देलक। ओतए गाछ जनमि गेल। बगियाक गाछ, नञि देखल ने सुनल।

माए-बेटा ओहि बगियाक गाछक खूब सेवा करए लगलाह। कनेक दिनमे ओहि गाछमे खूब बगिया फड़य लागल। ओ बच्चा गाछ पर चढ़ि कए बगिया तोड़ि कए खाइत रहैत छल।

एक दिनुका गप अछि। एकटा डाइन बुढ़िया रस्तासँ जा रहल छलि। ओकरा मनुक्खक मसुआइ बना कए खायमे बड्ड नीक लगैत रहैक। ओ जे ओहि बच्चाकेँ गाछ पर चढ़ल देखलक तँ ओकर मोन लुसफुस करए लगलैक। आब ओ बुढ़िया मोनसूबा बनबए लागल जे कोना कए ओहि बच्चाकेँ फुसियाबी आ एकरा घर लऽ जा कए ओकर मसुआइ बना कए खाइ।

बच्चाकेँ असगर देखि ओ लग गेलि आ बच्चाकेँ कहलक-

"बौआ एकटा बगिया हमरा नहि देब? बड्ड भूख लागल अछि।

बच्चा ओकर हाथ पर बगिया देबय लागल।

"बौआ हम हाथसँ कोना लेब बगिया हथाइन भऽ जाएत"।

बच्चा बगिया ओकर माथ पर राखए लागल।

"हँ हँ माथ पर नहि राखू। मथाइन भऽ जाएत"।

बच्चो छल दस बुधियारक एक बुधियार। खोइछमे बगिया देबए लागल।

"ई की करैत छी बौआ। बगिया खोँछाइन भऽ जाएत, अहाँ झुकि कए बोरामे दए दिअ"।

मुदा बच्चा तँ छल बुझू जे गोनू झाक मूल-गोत्रेक।

बाजल-

"नञि गए बुढ़िया। तोँ हमरा बोरामे बन्द कए भागि जेमह। माए हमरा ठग सभसँ सहचेत रहबाक हेतु कहने अछि"।

मुदा बुढ़ियो छल ठगिन बुढ़िया। ठकि फिसिया कए बोली-बानी दए कए ओकरा मना लेलक। जखने बच्चा झुकल ओ ओकरा बोरामे कसि कए बिदा भेलि। बुढ़िया रस्तामे थाकि कए एकटा गाछक छाहरिमे बैसि गेलि।

कनेक कालमे ओकरा आँखि लागि गेलैक। बच्चा मौका देखि कोनहुना कए ओहि बोरासँ बाहर बहरा गेल आ भीजल माटि, पाथर आ काँट-कूस बोरामे धऽ कए ओहिना बान्हि कए पड़ा गेल।

बुढ़िया जखन सूति कए उठल आ बोरा लऽ कए आगू बढ़ल तँ ओकरा बोरा भरिगर बुझएलैक। मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेलि ई सोचि जे हृष्ट-पुष्ट मसुआइ खएबाक मौका बहुत दिन पर भेटल छै ओकरा। रस्तामे भीजल माटिसँ पानि खसए लागल तँ ओकरा लगलैक जे बच्चा लगही कए रहल अछि।

ओ कहलक जे-

''माथ पर लघुशंका कए रहल छह बौआ। कोनो बात नहि। घर पर तोहर मसुआइ बना कए खायब हम''।

कनेक कालक बाद काँट गरए लगलैक बुढ़ियाकेँ। कहलक-

''बौआ। बिड्डू काटि रहल छी। कोनो बात नहि कतेक काल धरि काटब''।

बुढ़याक एकटा बेटी छलैक। गाम पर पहुँचि कए बुढ़िया ओकरा कहलक जे आइ एकटा मोट-सोट शिकार अछि बोरामे। माए बेटी जखन बोरा खोललक तँ निकलल माटि, काँट आ पाथर।

कोनो बात नहि।

बुढ़िया भेष बदलि पहुँचल फेरसँ बगियाक गाछ तर।

एहि बेर बच्चा ओकरा नञि चीन्हि सकल। मुदा जखन ओ झुकि कए बगिया बोरामे देबाक गप कहलक तँ बच्चाकेँ आशंका भेलैक।

''गए बुढ़िया। तोँही छँह ठगिन बुढ़िया''।

मुदा बुढ़िया जखन सप्पत खएलक तँ ओ बच्चा झुकि कए बगिया बोरामे देबए लागल। आ फेर वैह बात।

एहि बेर बुढ़िया कतहु ठाढ़ नहि भेलि। सोझे घर पहुँचल आ बेटी लग बोरा राखि नहाए-सोनाए लेल चलि गेलि।बेटी जे बोरा खोललक तँ एकटा झोँटा बला बच्चाकेँ देखलक। ओ पुछलक-

''हमर केश नमगर नहि अछि किएक?''।

''अहाँक माय अहाँक माथ ऊखड़िमे दए समाठसँ नहि कुटने होयतीह। तँ ''। बच्चा तँ छल दस होसियरक एक होसियार से ओ बाजल।

बुढ़ियाक बेटी अपन केश बढ़ेबाक हेतु अपन माथ ऊखड़िमे देलक आ ओ बच्चा ओकरा समाठसँ कूटए लागल।

ओकरा मारि ओकर मासु बनेलक। बुढ़िया जखन पोखरिसँ नहा कए आयल तँ बुढ़ियाक आगू ओ मासु परसि देलक।

जखने ओ खेनाइ पर बैसलि तँ लगमे एकटा बिलाड़ि छल से बाजि उठल-

''म्याँऊ। अपन धीया अपने खाँऊ। म्याँऊ''।

''बेटी एकरा मासु नहि देलहुँ की। तँ बाजि रहल अछि''।

ओ बच्चा बिलाड़िक आगाँ मासु राखि देलक मुदा बिलाड़ि मासु नहि खएलक।

आब बुढ़ियाक माथ घुमल। ओ बेटीकेँ सोर कएलक तँ ओ बच्चा समाठ लऽ कए आयल आ ओकरा मारि देलक।

फेरसँ बच्चा बगियाक गाछ पर चढ़ि बगिया खए लागल। बड्ड नीक लगैत छल ओकरा बगिया।

## ज्योति पँजियार

ज्योति पँजियार छलाह सिद्ध। पम्पीपुर गामक। तंत्र-मंत्र जानएबला। धर्मराज रहथि हुनकर कुलदेवता। ज्योति पँजियारक पत्नी छलीह लखिमा।

एक बेर साधुक वेष धऽ धर्मराज भिक्षाक हेतु अएलाह। ज्योति पँजियार लखिमाक संग गहबर बना रहल छलाह। माय सूपमे अन्न लए कऽ अयलीह। मुदा साधु कहलखिन्ह जे हम तँ भीख लेब ज्योति पँजियारक हाथेटा सँ। ज्योति पँजियार मना कए देलखिन्ह जे हम गहबर बनायब छोड़ि कए नहि आयब। साधु श्राप दए देलखिन्ह जे निर्धन भऽ जयताह ज्योति पँजियार, कुष्ठ फूटि जएतन्हि हुनका।

आस्ते-आस्ते ई घटित होमए लागल। ज्योति पँजियार बहिनिक ओहिठाम चलि गेलाह। मुदा ओतय अवहेलना भेटलन्हि। ज्योति ओतय सँ निकलि गेलाह। ओइटदल गाम पहुँचि गेलाह अपन संगी लगवारक लग। एकटा तांत्रिक अएलाह। कहल- बारह वर्ष धरि कदलीवनमे रहए पड़त। धर्मराजक आराधना करए पड़त, गहबड़ बनाए करची रोपी ओतए। बाँसक घर बनाऊ धर्मराजक हेतु। धर्मराज दर्शन देताह, अहाँ ठीक भऽ जाएब। पँजियार चललाह।

रस्तामे सैनी गाछ भेटलन्हि, ओकर छाहमे सुस्तेलाह पँजियार। मुदा ओ गाछ सुखा गेल, अरड़ा कए खसि पड़ल।

कोइलीकेँ कहलन्हि जे पानि आनि दिअ। ओ उड़ल तँ बिहाड़ आबि गेल। कोइली मरि गेल।

पँजियार उड़ि कए पहुँचि गेलाह कदली वनमे। एकटा महिसबार कहलकन्हि जे अछमितपुर गाम जाऊ। महिसबार छलाह धर्मराज, बनि गेलाह भेम-भौरा।

एकटा व्यक्ति भेटलन्हि। ओ कहलकन्हि जे आगू वरक गाछ भेटत, ओकर पात तोड़ू।ओहि पर अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर रहत। ई कहि ओ परबा बनि गेल।

वरक पात तोड़लन्हि ज्योति तँ ओहि पर लिखल छल, यैह छी अछमितपुर। ओतुक्का राजाकेँ बच्चा नहि छलन्हि। ज्योति आशीर्वाद देलन्हि। कहलन्हि, एकटा छागर ओहि दिन पोसब जाहि दिन गर्भ ठहरि जाए। हम कदली वनसँ आएब तँ ई छागर स्वयं खुट्टासँ खुजि जाएत। १२ बरखक बाद ज्योति कदली वनसँ चललाह। कोइलीकेँ जीवित कए देलन्हि। सुखाएल धारमे पानि आबि गेल। सैनीक गाछ हरियर कचोर भऽ जीबि उठल। अछमितपुर गाममे राजा कहलन्हि जे छागर आ पुत्र दुनू एकहि दिन मरि गेल। पँजियार पाठाकेँ जिआ देलन्हि, कहलन्हि जो तोँ कदलीवनक धारमे नाओ पर चढ़ि जो, मनुक्ख रूप भेटि जएतौक। तावत राजाक पुत्र सेहो कदलीवनसँ शिकार खेला कए घोड़ा पर चढ़ि कए आबि गेल। ज्योति पँजियार गाम पहुँचि गेलाह गमछामे गहबर लेने।

## राजा सलहेस

राजा सलहेस सुन्दर आ वीर छलाह। मोरंग, नेपालमे रहैत छलाह। ओ दुसाध जातिक छलाह आ दबना जे मोरंग राजाक मालिन छलि, सलहेससँ प्रेम करैत छलि। राजक वैद्य दबनासँ प्रेम करैत छलाह आ दबनाक अस्वीकृतिसँ ओ आत्महत्या कए लेलन्हि।

सलहेस छलाह मोरंगक तालुकदार नौरंगी बहादुर थापाक सिपाही। सलेहस छलाह मोनक राजा। सभकेँ विपत्तिमे सहायता दैत रहथि। ताहि द्वारे दबना दिशि हुनकर कोनो ध्यान नहि छलन्हि। सभ हुनका राजा कहैत छलन्हि, से ई तालुकदारकेँ पसिन्न नहि पड़ल।

एक दिन दरबारमे ओ सलहेसकेँ पुछलक-

अहाँक नाम की?

सलहेस कहलन्हि- हमर नाम छी राजा सलहेस।

तखन थापा कहलकन्हि, जे अहाँ अपन नाममे राजा नहि लगाऊ।

सलहेस कहलन्हि जे ई पदवी छी, जन द्वारा देल पदवी। कोना छोड़ब एकरा। हम छोड़ियो देब, लोक तँ कहबे करत।

तखन थापा कहलखिन्ह जे लोककेँ मना कऽ दियौक।

सलहेस कहलन्हि जे लोककेँ कोना मना करबैक। लोकक मोन जे ओ ककरा की बजाओत।

निकलि गेलाह सलहेस ओतएसँ। आब नहि निमहत ई नोकरी। आइ कहैत अछि नाम छोड़ए लेल, काल्हि किछु आर कहत।

पितियौत बहिन रहैत छलन्हि मुंगेरमे। बहिनोइ राज दरभंगाक नोकरीमे छलाह।

एम्हर कुसमी दबनाकेँ कहि देलक जे सलहेस जा रहल अछि मोरंग छोड़ि कए। दबना छलि कमरू-कमख्यासँ तंत्र-मंत्र सिखने।

ओ सलहेसकेँ कहलक जे हम राजाक दरबारमे सात सए सिपाहीक सरदार चूहड़मलकेँ हटबा कऽ अहाँकेँ सरदार बना देब। सैह भेल। बड़का जलसा देलक दबना, गेलक गीत-

रौ सुरहा,

बारह बरस तोरा लेल आँचर बन्हलौँ।

मुदा, केलक चोरि चूहड़मल, चोरेलक नौ लाखक रानीक हार आ नुका देलक सलहेसक ओछैनमे।

उनटे चूहड़मल राजाकेँ कहलक जे सलहेसक घरक तलासी लेल जाए।सलहेसक गेरुआक खोलसँ खसल हार।

दबना काली मन्दिरमे तंत्र साधना शुरू कएलक। भूत-प्रेतकेँ नोतलक। खून बोकरबेलक चूहड़मलसँ।

चूहड़मल सभटा बकि देलक।

सलहेसकेँ जेलसँ छोड़ि देल गेल आ ओकर ओहदा बढ़ा देल गेल। चूहड़मलकेँ भेलैक जेल।

दबना आ सलहेस विवाह कए खुशीसँ रहए लगलाह।

## बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

एकटा छलि बहुरा गोढ़िन आ एकटा छलाह नटुआ दयाल।

बहुरा गोढ़िन नर्त्तकी छलि आ ओकरा जादू अबैत छलैक।

नटुआ दयाल बहुरा गोढ़िनक प्रशंसक छल, किएक तँ ओ छल प्रेमी, बहुरा गोढ़िनक पुत्रीक।

छल मुदा ओहो तांत्रिक।

कमला-बलानक कातक केवटी छलि बहुरा, बखरी, बेगूसरायक रहनिहारि।

हकलि छलि, कमरू सँ सीखने छलि जादू।

दुलरा दयाल छल मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार, ओकरे नाम छल नटुआ दयाल।

नृत्य जे ओ बहुरासँ सिखलक तँ सभ नामे राखि देलकैक ओकर नटुआ।

नटुआ दयालक गुरू छलाह मंगल।

सिद्ध पुरुष।

अकाशमे बिन खुट्टीक धोती टँगैत छलाह, सुखला पर उतारैत छलाह।

बहुरा गाछ हँकैत छलि, जकरासँ झगड़ा भेल ओकरा सुग्गा बना पोसि लैत छलीह।

कमला कातमे रहैत छलाह आ भजैत छलाह-

कमलेक आसन, ओहीमे बास हे कमला मैय्या।

बहुरा वरकँ मारि सीखने छल जादू। राजकुमारक विवाहक प्रस्तावकँ नहि ठुकरा सकलि मुदा। बरियाती दरबज्जा लागल तँ भऽ गेलैक कहा सुनी आ सभकँ बना देलक ओ बत्तु।

मंत्री मल्लक एक आँखिक रोश्नी खतम।

आहि रे बा।

व्यापारी जयसिंह छल मोहित महुराक बेटी पर, ओकरे खड्यंत्र।

आहि रे बा।

गुरू लग गेल राजकुमार आ आदेश भेलैक, जो कामाख्या, सीखय लेल षट् नृत्य आ जादू।

चण्डिका मंदिरमे योगिनीसँ षट्नृत्य सिखलक आ आदेश भेलैक सरैया ग्रामक भुवन मोहिनीसँ षट् नृत्यक एक अंग सीखबाक।

ओहि गामक सिद्ध देवी रहथि वागेश्वरी।

नरबलि चढैत छल ओतए। दैत्य अबैत छल ओतए।

सिखलक राजकुमार सिद्ध नृत्य अनहद आ आज्ञा चक्र।

करिया जादूकँ काटय बला मंत्र फुकलक राजकुमारक कानमे।

कमला बलान लग आएल राजकुमार।

बहुरा सुखेलक धारक पानि।

राजा पता लगेलक जूकियासँ, अनलक बहुराकेँ। मुदा ओ तँ लगा देलक दोष राजकुमार पर। यज्ञ भेल तैयो कमलामे पानि नहि आएल, नटुआ पठेलक सभटा पानिकेँ पताल?

नटुआकेँ पकड़ि कय आनल गेल। ओ अपन नृत्यसँ जलाजल केलक कमलाकेँ।मुदा कहलक बहुराकेँ माफी दियौक।

बहुरा कहलक आब तोँ भेलह हमर बेटीक योग्य।

आबह बरियाती लऽ कए।

नटुआ बरियाती लऽ कऽ पहुँचल।

तीन टा पान अएलैक, एक कमलाक पानिक हेतु, दोसर बहुराकेँ माफ करबाक

हेतु।

आ तेसर ओकर बेटीसँ व्याह करबाक हेतु।

तीनूटा पान उठेलक नटुआ आ शुरू भेल गीत-नाद।

पियास लगलैक नटुआकेँ शिष्य झिलमिलकेँ पठेलक इनार पर।

डोरी छोट भए गेलैक। अपने गेल नटुआ आ डोरी पैघ भऽ गेलैक।

फूलमती छलि ओतए, पतिक प्रतिभासँ प्रसन्न छलि ओ।

मल्लक आँखि ठीक कएलक बहुरा।

कमला पहुँचल कनियाँक संग नटुआ।

मुदा आहि रेबा।

नटुआकेँ चक्कू मारलक बहुरासँ दूर भेल ओकर शिष्य।

मुदा नटुआ चढ़ेने छल पटोर कमला मैय्याकेँ।

कमलाक धार खूने-खूनामे।

मुदा कामाख्याक जदूगरनी अएलीह आ जीवीत कएलन्हि नटुआकेँ।

दुश्मनक बलि चढ़ेलक ओ कमलाकेँ।

## महुआ घटवारिन

महुआ घटवारिन परी जेकाँ सुन्दरि छलीह जेना गूथल आँटामे एक चुटकी केसर, मुदा सतवंती छलीह।

बाप गँजेरी शराबी आ माए सतमाय, नजरि चोर। घरमे सतमाएक राज छल।

सोलह बरखक भए गेल रहथि मुदा हुनकर बियाहक चिंता ककरो नहि रहैक। परमान नदीक पुरनका घाटक मलाह प्र्र्थना करैत छथि जे महुआक नावकेँ किनार लगा दियौक।

साओन-भादवक, भरल धार,
कम वयसक महुआ नहि जाऊ,
एहि राति खेबय लेल नाह।

एहने साओन-भादवक रातिमे सतमाए, घाट पर उतरल वणिक् केँ तेल लगेबाक हेतु महुआकेँ पठबए चाहैत अछि आ ओ जाए नहि चाहैत अछि। अपन माएकेँ मोन पाड़ैत अछि।

नोन चटा केँ किए नहि मारलँह,
पोसलँह एहि दिन खातिर।

मुदा सतमाए साओन-भादवक रातिमे पथिककेँ घाट पार करबाबए लेल महुआकेँ पठा देलक। महुआ बिदा भेलि आ बीच रस्तामे अपन सखी-बहिनपा फूलमतीसँ भरि राति गप करैत रहलि।

केहन माए अछि जे रातिमे घाट पार करेबाक लेल कहैत अछि। माय ईहो कहलक जे पथिक पाइबला होए आ बूढ़ होए तँ ओकरा तेल-मालिस करबामे कोनो हर्ज नहि। ओकर मोनमे जे होअए, भेल तँ ओ पिते समान।ओकरा जेबीसँ चारि पाइ निकालि लेल जाएय, अहीमे बुधियारी अछि।

फूलमती कहलक- घबरायब नहि। जरेने रहू प्रेमक आगि, ओकरा लेल जे मोरंगमे आँगुर पर दिन गानि रहल अछि।

मोरंगक नाम सुनि महुआ उदास भए गेलि। ओ फागुनमे आयत गऽ।

भोरहरबामे ओ गामपर पहुँचल आ माए दस बात कहलकैक। बाप नशामे आएल तँ माए ओकरो लात मारि भगा देलकैक।

तखने हरकारा आएल आ माएक कानमे संदेश देलक। महुआ माएकेँ कहलक जे अहाँ जे कहब से हम करब। वणिकक आदमी आयल छल, ओकरा संग महुआ घाट पर पहुँचलि। वणिक दू सिपाहीक संग नावमे बैसल। महुआ नाव खेबय लागलि। मुदा ओकरा नहि बूझल रहए जे ओकरा बेचि देल गेल छै।

सिपाही ओकरासँ पतवारि छीनि लेलक। सौदागर ओकरा कोरामे बैसाबय चाहलक तँ ओ छरपटाय लागलि। सिपाही कहलक जे सभटा पाइ चुका देल गेल अछि, अहाँकेँ कोनो मँगनीमे नहि लए जा रहल छथि।

महुआ स्थिर भए गेलीह। ओ सभ बुझलक जे महुआ मानि गेल अछि। तखने महुआ धारमे कूदि पड़लि। उल्टा धारमे मोरंग दिशि निकलि जाए चाहलक महुआ, जतय ओकर प्रेमी अछि। ओकरा लेल सात पालक नाव लेने।

सौदागरक छोटका सिपाही महुआकेँ प्रेम करए लागल छल, ओहो कूदि गेल कोशिकीक धारमे, दूनू डूबि गेल।

अखनो साओन-भादवक धारमे कोनो घटवारकेँ कखनो देखा पड़ैत छै महुआ। कोनो खिस्सा वचनहारकेँ देखा जाइत अछि ओ आ शुरू भए जाइत अछि-

एकटा छलीह महुआ घटवारिन..............................।

## डाकूरौहिणेय

मगध देशमे अशोकक पिता बिम्बिसारक राज्य छल। संपूर्ण शांति व्याप्त छल मुदा एकटा डाकू रौहिणेयक आतंक छल।

रौहिणेयक पिता रहए डाकू लौहखुर। मरैत-मरैत ओ कहि गेल जे महावीर स्वामीक प्रवचन नहि सुनए आ ज्योँ कतओ प्रवचन होअय तँ अप्पन कान बन्द कऽ लए, अन्यथा बर्बादी निश्चित होएत।

रौहिणेय मात्र पाइ बला केँ लुटैत छल आ गरीबकेँ बँटैत छल। ताहि द्वारे गामक लोक ओकरा मदति करैत रहए आ' ओ पकड़ल नहि जा सकल छल।

एक बेर तँ ओ अप्पन संगीक संग वाटिकामे पाटलिपुत्रक सभसँ पैघ सेठक पुतोहु मदनवतीक अपहरण कए लेलक, जखन ओकर पति फूल लेबाक हेतु गेल रहए। जखन ओकर पति आएल तँ रौहिणेयक संगी ओकरा गलत जानकारी दऽ भ्रमित कएलक।

ओकरा बाद सुभद्र सेठक पुत्रक विवाह रहए। बराती जखन घुरि रहल छल तखन रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष बनेलक आ ओकर संगी नर्त्तक बनि गेल। नकली नर्त्तक जखन नाचए लागल तखन रौहिणेय भीड़मे कपड़ाक साँप छोड़ि देलक। रौहिणेय गहनासँ लादल वरकेँ उठा निपत्ता भए गेल।

राजा शहरक कोतवालकेँ बजेलक। ओ तँ रौहिणेयकेँ पकड़बामे असमर्थता व्यक्त कएलक आ कोतवाली छोड़बाक बातो कएलक। मंत्री अभयकुमार पाँच दिनमे डाकू रौहिणेयकेँ पकड़ि कए अनबाक गप कहलक। राजा ततेक तामसमे छलाह जे पाँच दिनका बाद डाकू रौहिणेयकेँ नहि अनला उत्तर अभयकुमारकेँ गरदनि काटि लेबाक बात कहलन्हि।

डाकू रौहिणेयकेँ सभ बातक पता चलि गेल छलैक। अभयकुमार जासूस सभ लगेलक। रौहिणेयकेँ मोनमे अएलैक जे सेठ साहूकार बहुत भेल आब किए नहि राजमहलमे डकैती कएल जाय। ओ राजमहलक रस्ता पर चलि पड़ल। रस्तामे वाटिकामे महावीरस्वामीक प्रवचन चलि रहल छल।

रौहिणेय तुरत अपन कान बन्द कए लेलक। मुदा तखने ओकरा पैरमे काँट गरि गेलैक। महावीर स्वामी कहि रहल छलाह-

''देवता लोकनिकेँ कहियो घाम नहि छुटैत छन्हि। हुनकर मालाक फूल मौलाइत नहि अछि, हुनकर पएर धरती पर नहि पड़ैत छन्हि आ हुनकर पिपनी नहि खसैत छन्हि।''

तावत रौहिणेय काँट निकालि कानकेँ फेर बन्न कए लेलक आ राजमहलक दिशि बिदा भेल।राजमहलमे सभ पहरेदार सुतल बुझाइत छल। मुदा ई अभयकुमारक चालि रहए। ओकर जासूस बता रहल रहए जे डाकू नगर आ महल दिशि आबि रहल अछि।

जखने ओ महलमे घुसैत रहए तँ पहरेदार ललकारा देलक। ओ छड़पिकय काली मंदिर मे चलि गेल। सिपाही सभ मंदिरकेँ घेरि लेलक। ओ जखन देखलक जे बाहरसँ सभ घेरने अछि तँ सिपाहीक मध्यसँ मंदिरक चहारदिवारी छड़पि गेल। मुदा ओतहु सिपाही सभ छल आ ओ पकड़ल गेल। राजा ओकरा सूली पर चढ़ेबाक आदेश देलकैक। मुदा मंत्री कहलन्हि जे बिना चोरीक माल बरामद केने आ बिना चिन्हासीक एकरा कोना फाँसी देल जाए। रौहिणेय मौका देखि कए गोहारि लगेलक जे ओ शालि गामक दुर्गा किसान छी। ओकर घर परिवार ओहि गाममे छै। ओ तँ नगर मंदिर दर्शनक हेतु आएल छल। ततबेमे सिपाही घेरि लेलकैक। राजा ओहि गाममे हरकारा पठेलक मुदा ग्रामीण सभ रौहिणेयसँ मिलल छल। सभ कहलकैक जे दुर्गा ओहि गाममे रहैत अछि मुदा तखन कतहु बाहर गेल छल। अभयकुमार सोचलक जे एकरासँ गलती कोना स्वीकार करबाबी। से ओ डाकूकेँ नीक महलमे कैदी बना कए रखलक। डाकू महाराज ऐश-आराममे डूबि गेलाह।

अभयकुमार एक दिन डाकूकेँ खूब मदिरा पिया देलन्हि। ओ जखन होशमे आएल तँ चारू कात गंधर्व-अप्सरा नाचि रहल छल।

ओ सभ कहलकैक जे ई स्वर्गपुरी थीक आ इन्द्र रौहिणेयसँ भेँट करबाक हेतु आबए बला रहथि। रौहिणेय सोचलक जे राजा हमरा सूली पर चढ़ा देलक। मुदा ओ सभतँ मंत्रीक पठाओल गबैया सभ छल।

तखने इंद्रक दूत आएल आ कहलक जे रौहिणेयकेँ देवताक रूप मे अभिषेक होएतैक मुदा ताहिसँ पहिने ओकरा अपन पृथ्वीलोक पर कएल नीक-अधलाह कार्यक विवरण देबए पड़तैक।

तखन रौहिणेयकेँ भेलैक जे सभटा पाप स्वीकार कए लिअए। मुदा तखने ओ देखलक जे दैव लोकक जीव सभ घामे-पसीने अछि, माला मौलायल छै, पएर धरती पर छै आ पिपनी उठि-खसि रहल छै।

ओ अपन पुण्यक गुणगाण शुरू कए देलक। अभयकुमार राजाकेँ कहलक जे अहाँ ज्योँ ओकरा अभयदान दए देबैक तँ ओ सभटा गप्प बता देत। सैह भेलैक।

रौहिणेय नगरक बाहरक अपन जंगलक गुफाक पता बता देलक। जतए सभटा खजाना आ अपहृत व्यक्ति सभ छल। राजा कहलन्हि जे किएक तँ ओकरा अभयदान भेटि गेल छै ताहि हेतु ओ सभ संपदा राखि सकैत अछि। मुदा रौहिणेय कोनोटा वस्तु नहि लेलक। ओ कहलक जे जाहि महावीरस्वामीक एकटा वचन सुनलासँ ओकर जान बचि गेलैक, तकर दीक्षा लेत आ ओकर सभटा वचन सुनि जीवन धन्य करत।

## मूर्खाधिराज

एकटा गोपालक छल। तकर एकटा बेटा छल। ओकर कनियाँ पुत्रक जन्मक समय मरि गेलीह। बा बच्चाक पालन कएलन्हि। मुदा ओ बच्चा छल महामूर्ख। जखन ओ बारह वर्षक भेल तखन ओकर विवाह भए गेल। मुदा ओ विवाहो बिसरि गेल।

बुढ़िया बाकेँ काज करएमे दिक्कत होइत छलन्हि। से ओ बुझा-सुझाकेँ ओकरा, कनियाकेँ द्विरागमन करा कए अनबाक हेतु कहलन्हि। बा ओकरा गमछामे रस्ता लेल मुरही बान्हि देलन्हि। रस्तामे बच्चाकेँ भूख लगलैक। ओ गमछासँ मुरही निकालि कए जखने मुँहमे देबए चाहैत छल आकि मुरही उड़ि जाइत छल। बच्चा बाजए लागल- आऊ, आऊ उड़ि जाऊ।

लगमे बोनमे एकटा चिड़ीमार जाल पसारने छल। बच्चाक गप सुनि कए ओकरा बड़ड तामस उठलैक। ओकरा लगलैक जेना ई बच्चा ओकर चिड़ैकेँ उड़ाबए चाहैत अछि। चिड़ीमार बच्चाकेँ पकड़ि कए पुष्ट पिटान पिटलक।

बच्चा पुछलक- हमर दोख तँ कहू?

चिड़ीमार कहलक- एना नहि। एना बाजू। आबि जो। फँसि जो।

आब बच्चा सैह बजैत आगू जाए लागल। आब साँझ भए रहल छल। बोन खतम होएबला छल। ओतए चोर सभ चोरिक योजना बनाए रहल छलाह। ओ सभ सुनलन्हि जे ई बच्चा हमरा सभकेँ पकड़ाबए चाहैत अछि। से ओ लोकनि सेहो ओकरा पुष्ट पिटान पिटलन्हि।

बच्चा फेर पुछलक- हम बाजी तँ की बाजी?

चोरक सरदार कहलक- बाज जे एहन सभ घरमे होए।

आब बच्चा यैह कहैत आगाँ बढ़ए लागल। आब श्मसानभूमि आबि गेल। एकटा जमीन्दारक एकेटा बेटा छलैक। से मरि गेल छल आ सभ ओकरा डाहबाक लेल आबि रहल छलाह। ओ लोकनि बच्चाक गप पर बड़ कुपित भेलाह आ ओकरा पुष्ट पिटलन्हि।

फेर जखन बच्चा पुछलक जे की बाजब उचित होएत तँ सभ गोटे कहलखिन्ह जे एना बाजू- एहन कोनो घरमे नहि होए।

बच्चा यैह गप बाजए लागल। आब नगर आबि गेल छल आ राजाक बेटाक विवाहक बाजा-बत्ती सभ भए रहल छल। बरियाती लोकनि बच्चाकेँ कहैत सुनलन्हि जे एहन कोनो घरमे नहि होए तँ ओ लोकनि क्रोधित भए फेर ओहि बच्चाकेँ पिटपिटा देलखिन्ह।

जखन बच्चा पुछलक जे की बजबाक चाही तँ सभ कहलक जे किछु नहि बाजू। मुँह बन्न राखू।

बच्चा सासुर आबि गेल। ओतए नहिये किछु बाजल नहिये किछु खएलक। कारण खएबामे मुँह खोलए पड़ितैक।

भोरे-सकाले सासुर बला सभ अपन बेटीकेँ ओहि बच्चाक संग बिदा कए देलन्हि। रस्तामे बड़ड प्रखर रौद छलैक। ओ सुस्ताए लागल। मुदा कलममे सेहो बड़ड गुमार छलैक। कनियाकेँ बड़ड घाम खसए लगलैक आ ताहिसँ ओकर सिन्दूर धोखरि गेलैक। बच्चाकेँ भेलैक जे सासुर बला ओकरासँ छल कएलक आ ओकरा भँगलाहा कपार बाली कनियाँ दए जाइ गेल अछि। एहन कनियाँकेँ गाम पर लए जाए ओ की करत।

ओ तखने एकटा हजामकेँ बकरी चरबैत देखलक। ओकरासँ अपन पेटक बात कहबाक लेल अपन मुँह खोललक आ सभटा कहि गेल। हजाम बुझि गेल जे ई बच्चा मूर्खाधिराज अछि। ओ ओकरा अपन दूध देमए बाली बकड़ीक संग कनियाँक बदलेन करबाक हेतु कहलक। बच्चा सहर्ष तैयार भए गेल।

आगू ओ बच्चा सुस्ताए लागल आ खुट्टीसँ बकड़ीकेँ बान्हि देलक। बकड़ी पाउज करए लागल तँ बच्चाकेँ भेलैक जे बकड़ी ओकर मुँह दूसि रहल अछि। ओ ओकरा हाट लए गेल आ कदीमाक संग ओकरो बदलेन कए लेलक। गाम पर जखन ओ पहुँचल तँ ओकर बा बड़ड प्रसन्न भेलीह। हुनका भेलन्हि जे कनियाँक नैहरसँ सनेसमे कदीमा आएल अछि। मुदा कनियाँकेँ नहि देखि तकर जिगेसा कएलन्हि तँ बच्चा सभटा खिस्सा सुना देलकन्हि। ओ माथ पीटि लेलन्हि। मुदा बच्चा ई कहैत खेलाए चलि गेल जे कदीमाक तरकारी बना कए राखू।

## कौवा आ फुद्दी

एकटा छलि कौआ आ एकटा छल फुद्दी। दुनूक बीच भजार-सखी केर संबंध। एक बेर दुर्भिक्ष पड़ल। खेनाइक अभाव एहन भेल जे दुनू गोटे अपन-अपन बच्चाकेँ खएबाक निर्णय कएलन्हि। पहिने कौआक बेर आएल। फुद्दी आ कौआ दुनू मिलि कए कौआ-बच्चाकेँ खा गेल। आब फुद्दीक बेर आएल। मुदा फुद्दी सभ तँ होइते अछि धूर्त्त।

"अहाँ तँ अखाद्य पदार्थ खाइत छी। हमर बच्चा अशुद्ध भए जायत। से अहाँ गंगाजीमे मुँह धोबि कए आबि जाऊ"।

कौआ उड़ैत-उड़ैत गंगाजी लग गेल-

"हे गंगा माय, दिए पानि, धोबि कए ठोढ़, खाइ फुद्दीक बच्चा"।

गंगा माय पानिक लेल चुक्का अनबाक लेल कहलखिन्ह।

आब चुक्का अनबाक लेल कौआ गेल तँ ओतएसँ माटि अनबाक लेल कुम्हार महाराज पठा देलखिन्ह्। खेत पर माटिक लेल कौआ गेल तँ खेत ओकरा माटि खोदबाक लेल हिरणिक सिंघ अनबाक लेल विदा कए देलकन्हि। हिरण कहलकन्हि जे सिंहकेँ बजा कए आनू जाहिसँ ओ हमरा मारि कए अहाँकेँ हमर सिंघ दऽ देमए।

आब जे कौआ गेल सिंह लग तँ ओ सिंह कहलक- "हम भेलहुँ शक्तिहीन, बूढ़। गाएक दूध आनू, ओकरा पीबि कए हमरामे ताकति आयत आ हम शिकार कए सकब"।

गाएक लग गेल कौआ तँ गाए ओकरा घास अनबाक लेल पठा देलखिन्ह। घास कौआकेँ कहलक जे हाँसू आनि हमरा काटि लिअ।

कौआ गेल लोहार लग, बाजल-

"हे लोहार भाए,
दिअ हाँसू, काटब घास, खुआयब गाय, पाबि दूध,
पिआयब सिंहकेँ, ओ मारत हरिण,
भेटत हरिणक सिंघ, ताहिसँ कोरब माटि,
माटिसँ कुम्हार बनओताह चुक्का, भरब गङ्गाजल,
धोब ठोर, आ खायब फुद्दीक बच्चा"।

लोहार कहलन्हि, "हमरा लग दू टा हाँसू अछि, एकटा कारी आ एकटा लाल। जे पसिन्न परए लए लिअ"।

कौआकेँ ललका हाँसू पसिन्न पड़लैक। ओ हाँसू धीपल छल, जहाँने कौआ ओकरा अपन लोलमे दबओलक, छरपटा कए मरि गेल।

## नैका बनिजारा

शोभनायका छलाह एकटा वणिकपुत्र। हुनकर विवाह तिरहुतक कोनो स्थानमे बारी नाम्रा स्त्रीसँ भेल छलन्हि। शोभा द्विरागमन करबा कए कनियाँकेँ अनलन्हि आ बिदा भए गेलाह मोरंगक हेतु व्यापार करबाक लेल। पत्नीक संग एको दिन नहि बिता सकल छलाह। रातिमे एकटा गाछक नीचाँमे जखन ओ राति बितेबाक लेल सुस्ता रहल छलाह तखन हुनका एकटा ध्वनि सुनबामे अएलन्हि। एकटा डकहर अपन भार्याक संग ओहि गाछ पर रहैत छल। दुनू गोटे गप कए रहल छलाह, जे ओ राति बड़ शुभ छल आ ओहि दिन पत्नीक संग जे रहत तकरा बड़ड प्रतिभावान पुत्रक प्राप्ति होएतैक।

ई सुनतहि शोभा घर पहुँचि गेल भार्या लग। लोकोपवादसँ बचबाक लेल पत्नीकेँ अभिज्ञानस्वरूप एकटा औँठी दए देलन्हि आ चलि गेलाह मोरंग। ओतए १२ बर्ख धरि व्यापार कएलन्हि आ तेरहम बरख बिदा भेलाह घरक लेल।

एम्हर ओकर कनियाक बड़ दुर्गति भेलैक। ओ जखन गर्भवती भए गेलीह, सासु-ससुर घरसँ निकालि देलकन्हि हुनका। मुदा ओकर दिअर जकर नाम छल चतुरगन, ओकरा सभटा कथा बुझल छलैक। ओतए रहय लगलीह ओ। जखन शोभा घुरल तखन सभ रहस्य बुझलक आ सभ हँसी खुशी रहए लागल।

तब बारी रे कानय जार बेजारो कानै रे ना।
दुर्गा गे स्वामी के लैके कोहबर घर लेवा ने
केलही रे ना।
कोहबर घर से हमरो निकालियो देलकइ रे ना
दुर्गा गे केना बचबै अन्न-पानी बिन केना
रहबइ रे ना।

## डोकी डोका

एक टा छल डोका आ एकटा छल डोकी।

दुनूमे बड्ड प्रेम। डोकी कहए तरेगण लए आऊ तँ डोका तरेगण आनएमे सेकेण्डक देरी भए जाए तँ ठीक मुदा मिनटक देरी नञि होमए दैत छल।

सियारकेँ रहए ईर्ष्या दुनूसँ। से ओ कनही सियारिनसँ मिलि गेल आ एक दिन जख़न डोका आ डोकी एक्के थारीमे भोजन कए रहल छल, तखन डोकाकेँ बजेलक। एम्हर-ओम्हरक गप कए ओकरा बिदा कए देलक। फेर डोकीकेँ बजेलक ओ सियरबा। पुछलक जे अहाँ दुनू गोटेमे बड़ प्रेम अछि मुदा डोका जे कहलक ताहिसँ तँ हमरा बड़ दुःख भेल। लागय-ए जे ओकर मोन ककरो आन पर छै। आर किछु पूछए लागल डोकी तावत ओ सियरबा पड़ा गेल।

आब डोकी घरमे हनहन-पटपट मचा देलक। डोका लकड़ी काटय बोन दिशि गेल। घुरल नहि। भोरमे एकटा जोगी आएल तँ ओकरासँ डोकी पुछलक जे ई की भेल ? जोगिया कहलक जे ई अछि पूर्व जन्मक सराप। जखने अहाँ डोकी पर विश्वास छोड़ब डोका छोड़ि कए चलि जाएत मुदा सातम दिन भेटि जाएत।

मुदा डोकी निकलि गेलि डोकाकेँ ताकए। बगुला भेटलैक डोकीकेँ कहलकैक-रुकि जाऊ एहि राति। फेर सियरबा, वटवृक्ष, मानसरोवरक रस्तामे बोनमे हाथी सभ कहलकैक जे एक एक राति रुकि कए जाऊ मुदा डोकी नहि रुकलि।

फेर भेटल मूस। ओ कहलक जे हमरा संग चलू, हम महल लए जायब, खिस्सा सुनाएब छह रातिक बाद सातम राति बीतत आ डोका भेटत। खिस्सा सुनैत-सुनबैत महल दिशि विदा भेल दुनू गोटे। मूस कहलक जे अहाँ हँ-हँ कहैत रहब खिस्साक बीचमे। मूसक खिस्सा कनेक नमगर रहए। डोकी बीचमे हँ कहब बिसरि गेलि। आ तकर बाद मूस सेहो खिस्सा बिसरि गेल। कतबो मोन पाड़य चाहलक मुदा मोन नहि पड़लैक। फेर आगू बढ़ल दुनू गोटे। एकटा दीबारिमे भूर कए दुनू गोटे सुरंगमे पहुँचल तँ दू राति धरि चलैत रहल तखन महल आएल। ओतए डोकी हलुआ बनबए लेल लोहियामे समान देलक आ कनेक पानि आनए लेल बाहर गेल तँ मूसकेँ रहल नञि गेलैक आ ओ लोहियामे मुँह दए देलक आ मरि गेल। डोकी घुरि कए ई देखलक तँ कुहड़ि उठल।

बगुला छोड़ल सियरबा छोड़ल
छोड़ल वटक वृक्ष
हाथी सन बलगर
पकड़ल ई मूस।

मूस भैयाक संग लेल बीतल छह राति,
सातम रातिमे ओ प्राण गमेलन्हि

आ ओकर साँस टुटए लगलैक, मुदा तखने दरबज्जा खुजल आ कुरहड़ि लेने डोका हाजिर।

# रघुनी मरर

देवदत्त, काशीराम आ रघुनी मरर तीन भाँए। गाए चराबए जाथि। एक बेर अकाल आएल तँ रघुनी भागि कए सहरसाक बनमां प्रखण्डक बिदिया बरहमपुर गाममे अपन डेरा खसेलन्हि।एतए जमीन्दार रहथि जुगल आ कमला प्रसाद। जुगल प्रसाद एक बेर दंगल करेने छलाह ओहि दंगलकँ जितने छलाह रघुनी। रघुनी हुनके लग गेलाह। एक सय बीघा जमीन देलन्हि जुगल प्रसाद हुनका। सुगमां गाममे बथान बनओलन्हि रघुनी। खेती करथि आ परिवारसँ दूर सुगमा गाममे रहथि।

एम्हर जुगल प्रसादक घरमे कलह भेल आ अपन जमीन-जत्था ओ गागोरी राजकँ बेचि देलन्हि। रघुनीकँ जखन ई पता चललन्हि तँ हुनका बड़ड दुख भेलन्हि।

एक दिन संगीक संग रघुनी नाच देखबाक लेल सिमरी गामक चौधरीक दलान पर गेल। चौधरी नाचक बाद नटुआकँ औँठी आ दुशाला देलखिन्ह। रघुनी नटुआकँ कहलखिन्ह जे बथान परसँ अपन पसिन्नक एक जोड़ी गाए हाँकि लिअ। नटुआ खुशीसँ दू टा निकगर गाय हाँकि अनलक आ खुशीसँ चौधरीकँ देखेलक। मुदा चौधरीकँ बुझेलए जे रघुनी हुनका नीचाँ देखबए चाहैत छथि। मुदा सोझाँ-सौँझी भिरबाक हिम्मत तँ छलए नहि।

से चौधरी देवी उपासक जादूक कलाकार मकदूम जोगीसँ भेँट कएलक। ओ जोगीकँ कहलक जे रघुनीकँ हमर नोकर बना दिअ। जोगी सरिसओ फूकि छिटलक मुदा रघुनी छल देवी भक्त से जोगीक जादू नहि चललैक।

चण्डिकाक सिद्धि कएलक जोगी आ रघुनी पर जादू सँ सए टा बाघसँ घेरबा कए मारि देलक। मुदा भक्त छल रघुनी से चण्डिकाक बहिन कामाख्या आबि रघुनीकँ जिया देलन्हि। दोसर जादू लेल जोगी सरिसओ मन्त्राबए लेल जे सरिसओ मुट्ठीमे लेलक तँ मुट्ठी बन्दक-बन्दे रहि गेलैक।

फेर चौधरीकँ पता चललैक जे रघुनी गागोरी राजाक लगान नहि देने अछि। से ओ राजा लग गेल आ कहलक जे रघुनी ने तँ अपने लगान देने अछि आ उनटले लोक सभकँ लगान देबासँ मना कए रहल अछि।

गाम पर रघुनी नहि रहए आ सिपाही सभ ओकर भाए देवदत्त मरड़कँ लए विदा भए गेलाह। रस्तामे केजरीडीह लग देवदत्त रघुनीकँ देखलन्हि, रघुनी सेहो देवदत्तकँ देखलन्हि। मुदा सिपाही सभ रघुनीकँ नहि देखि सकलाह। मुदा जखन राजा देवदत्तकँ काल कोठरीमे दए सिपाही सभकँ ओकरा मारबाक लेल कहलक तँ जे कोड़ा चलबय उनटे तकरे चोट लागए।

राजा देवदत्तसँ कहलक जे गलती भेल आब अहाँ जे कहब सैह हम करब। देवदत्तक कहला अनुसार जे रैयत लगान नहि भरलाक कारणसँ जहलमे रहथि से छोड़ि देल गेलाह आ राजा रघुनी मररसँ सेहो घट्टी मँगलन्हि।

## जट-जटिन

महाराज सिव सिंह (१४१२-१४४६) मिथिलाक राजा छलाह। विद्यापति हुनके शासनकालमे भेल छलाह आ राजा शिव सिंह आ हुनकर रानी लखिमारानी हुनकासँ बड़ प्रेम करैत रहथि। एक टा जयट वा जट नाम्ना बड़ पैघ संगीतकार सेहो छलाह ओहि समयमे। राजा शिव सिंह हुनकासँ विद्यापतिक गीतकेँ राग-रागिनीमे बन्हबाक लेल कहने रहथि। वैह जयट जट-जटिन नाटकक रचना कएलन्हि आ जटक भूमिका सेहो कएने छलाह। साओन-भादवक शुक्ल-पक्षक रातिमे ई नाटक स्त्रीगण द्वारा होइत अछि।

जट छथि पहिरने पुरुष-परिधान आ जटिन पहिरने छथि छिटगर नूआ। आ देखू दुनू गोटे अपना संग अपन-अपन संगीकेँ लए आबि गेल छथि।

बियाहक पहिल सालक साओन। जटिन जाए चाहैत छथि नैहर मुदा धारमे बाढ़ि छै, हे माय कोनो नौआ-ठाकुर-ब्राह्मण आकि पैघ भाए केर बदलामे छोटका भायकेँ पठबिहँ बिदागरीक लेल नञि तँ सासुर बला सभ बिदागरी आपिस कए देत।

जाहि नवकनियाँकेँ नैहर नहि जाय देल गेल ओ अपन पतिकेँ कहैत छथि जे जट-जटिनक नृत्यमे तँ भाग लेबए दिअ। मुदा वर झूमर खेलएबासँ मना कए दैत छथि तखन ओ घामक बहन्ना बनाए दूर भए जाइत छथि।

जट-जटिन बीचमे छथि आ दुनूक संगीमे बहस चलि रहल अछि।

-चलू झूमर खेलाए।

-कोन पातपर चढ़ि कए।

-पुरैनीक।

जट-जटिनमे विआह होए बला अछि मुदा जट किछु बातपर अड़ि गेल, जेना धानक शीस जेकाँ लीबि कए चलए जटिन, किछु देखावटी विरोधक बाद जटिन सभटा मानि जाइत छथि।

फेर दुनू गोटे विआह कए लैत छथि। फेर भोर होइत अछि, जटिन कहैत छथि जे जाए दिअ। अँगना बहारबाक अछि मुदा जटा कहैत छथि जे अँगना माए-बहिन बहारि लेत।

फेर दिन बितैत अछि तँ जटिन कहैत छथि जे गहना किएक नहि बनबाए रहल छी हमरा लेल आर बहन्ना करब तँ हम सोनारक घर चलि जाएब।

जटिन ततेक खरचा करबैत छन्हि जे जटाक हाथी तक बिका जाइत छन्हि आ हाथीक सिकड़ि मात्र बचल रहि जाइत छन्हि।

जटिन कहैत छथि जे हमरा नैहर जएबाक अछि तँ जटा कहैत छथि जे धानक फसिल तैयार अछि, तकरा काटि कए जाऊ। जटिन नहि मानैत छथि कहैत छथि जे एहि बेर जे हम जाएब तँ घुरि कए नहि आएब। मुदा सौतिनक

गप सुनि कए डेराए जाइत छथि। बीचमे स्वांग जेना कोनो रोगीक इलाज आदि सेहो होइत रहैत अछि।

जट मोरंग बिदा भए जाइत छथि कमाएबा लेल। जटिनकेँ सोनार प्रलोभन दैत छन्हि गहनाक मुदा जटिन जटाक सुन्दरताक वर्णन करैत छथि।

फेर जटा घुरि अबैत अछि। एक दिन दुनू गोटेमे कोनो गप लऽ कए झगड़ा भए जाइत छन्हि। जट छौँकीसँ जटिनकेँ छूबि दैत छथि। जटिन रूसि कए घर छोड़ि दैत छथि। जटा गोपी, मनिहारिन आ आन-आन रूप धरि ताकैत छथि हुनका। जटाक घरमे झोल-मकड़ा भरि जाइत छन्हि आ अंगनामे दूभि जनमि जाइत छन्हि। तखन जटिन हुनका लग आबि जाइत छथि। फेर स्त्रीगण लोकनि बेंग सभकेँ एकटा खद्धा खुनि कए ओहिमे दए दैत छथि आ ऊपरसँ ओकरा कूटैत छथि आ मरल बेंगकेँ झगराहि स्त्रीक दरबज्जापर फेकि अबैत छथि। ओ स्त्री भोरमे मरल बेंगकेँ देखला उत्तर जतेक गारि पढ़ैत छथि, ततेक बेशी बरखा होइत अछि।

## बत्तू

एकटा बकड़ी छलि। ओकरा एकटा बच्चा भेलैक। मुदा ओ छागर मात्र ४ मासक छल आकि दुर्गापूजा आबि गेल। दुर्गापूजामे छागरक बलि देबाक कियो कबुला केने छलाह। से बकड़ीक मालिकक लग आबि छागरक दाम-दीगर केलन्हि। संगमे पाइ नहि अनने छलाह से अगिला दिन पाइ अनबाक आ छागर लए जएबाक गप कए चलि गेलाह।

बकड़ी ई सभ सुनैत छलि ओ अपन बच्चाकेँ कहलन्हि जे भागि जाऊ जंगल दिस नहि तँ ई मलिकबा काल्हि अहाँकेँ बेचि देत आ किननहार दुर्गापूजामे अहाँक बलि दए देत।

छागर राता-राती जंगल भागि गेल। २-३ साल ओ जंगलमे बितेलक, मोट-सोट बत्तू भए गेल, पैघ दाढ़ी आ सिंघ भए गेलैक ओकरा। एक दिन घुमैत-घुमैत ओ दोसर जंगलमे चलि गेल। ओतए एकटा बाघ छल, बत्तू बाघकेँ देखि कए घबड़ा गेल। बाघ सेहो एहन जानवर नहि देखने छल, से ओ अपने डरायल छल। ओ पुछलक-

नामी नामी दाढ़ी- मोंछ भकुला,
कहू कतएसँ अबैत छी, नञि तँ देव ठकुरा।
बत्तू कहलक-
अर्चुन्नी खेलहुँ गरचुन्नी खेलहुँ, सिंह खेलहुँ सात।
आ जहिया दस बाघ नञि होए, तहिया परहुँ ठक दए उपास।

ई सुनि बाघ पड़ाएल। मुदा रस्तामे नढिया सियार ओकरा भेटलैक आ कहलकैक जे अहाँ अनेरे डराइत छी। चलू आइ तँ नीक मसुआइ होएत। ओ तँ बकड़ीक बच्चा अछि। बाघ डराएल छल से ओ सियारक पएरमे पएर बान्हि ओतए जएबा लेल तैयार भए गेल। आब बत्तू जे दुनूकेँ अबैत देखलक तँ बुझि गेल जे ई सियरबाक काज अछि। मुदा ओ बुद्धिसँ काज लेलक। कहलक-

"ऐँ हौ, तोरा दू टा बाघ आनए ले कहलियहु आ तोँ एकेटा अनलह"।

ई सुनैत देरी बाघ भागल आ सियरबा घिसिआइत मरि गेल।

## भाट-भाटिन

एकटा छल भाट आ एकटा छलि भाटिन।

भाटिन एकटा मणिधारी गहुमनसँ प्रेम करैत छलि। ओ साँप लेल नीक निकुत बनबैत छलि आ भाटकेँ बसिया-खोसिया दैत छलि। भाट दुबर-पातर होइत गेल। मुदा भाटिन ओकरा जिबए नहि दए चाहैत छलि से ओ साँपकेँ कहलक भाटकेँ काटि लेबाक लेल।

आब साँप भाटकेँ काटए लेल ताकिमे रहए लागल। एक दिन जखन भाट धारमे पएर धोबए लेल पनही खोलि कए रखलक तखने साँप ओकर पनहीमे नुका गेल। भाट आएल आ पहिरबाक पहिने पनही झारलक तँ ओ साँप खसि पड़ल। भाट पनहीसँ मारि-मारि कए साँपक जान लऽ लेलक आ ओकरा मारि कए वरक गाछपर लटका देलक।

भाट जखन गामपर पहुँचल तखन ओ अपन कनियाँकेँ सभटा खिस्सा सुनेलक। आब भाटिनक तँ प्राण सुखा गेलैक। ओ भाटक संग वरक गाछ लग गेल आ अपन प्रेमी साँपकेँ मरल देखि कए बेहोश भऽ गेल। भाट ओकरा गामपर अनलक। भाटिन दुखी भऽ असगरे वरक गाछपरसँ साँप उतारि ओकरा नौ टुकड़ा कए घर आनि लेलक। भाटिन साँपक चारि टा टुकड़ी चारू खाटक पाइसक नीचाँ, एकटा मचियाक नीचाँ, एकटा तेलमे, एकटा नूनमे, एकटा डाँरमे आ एकटा खोपामे राखि लेलक। फेर भाटकेँ कहलक जे खाट, मचिया, नून-तेल, डाँर आ खोपामे की अछि से बता नहि तँ भकसी झोका कए मारबौक। भाट नहि बता सकल आ ओ कहलक जे मरएसँ पहिने ओ बहिनसँ भेँट करए चाहैत अछि आ ताहि लेल दू दिनुका मोहलति ओकरा चाही।

भाट अपन बहिन लग गेल तँ ओ अपन भाइक औरदा जोड़ि रहल छलि। सभ गप जखन ओकरा पता चललैक तखन ओ कहलक जे ओहो संग चलत ओकर। रस्तामे एकटा धर्मशालामे रातिमे दुनू भाइ-बहिन रुकल मुदा बहिन चिन्ते सुति नहि सकल। तखने धर्मशालाक सभटा दीआ एक ठाम आबि कए गप करए लागल। भाटक बहिनक कोठलीक दीआ कहलक जे भाटिन अपन वर भाटकेँ मारए चाहैत अछि आ ओ जे फुसियाहीक प्रहेलिका बनेने अछि, से ओकर प्रेमी जे मरल गहुमन छल तकरा ओ टुकड़ी कए ठाम-ठाम राखि देने अछि आ तकरे प्रहेलिका बना देने अछि। आब भोरमे जखन दुनू भाइ बहिन गामपर पहुँचए जाइ गेल तँ बहिन अपन भौजीकेँ कहलक जे ओ सेहो प्रहेलिका सुनए चाहैत अछि।

भाटिन कहलक जे ज्योँ ओ प्रहेलिका नञि बुझि सकल तखन ओकरो भकसी झोँका कऽ ओ मारि देत। तखन ननदि कहलक जे यदि ओ प्रहेलिकाक उत्तर दए देत तखन भौजीकेँ भकसी झोका कए मारि देत। आब जखने भाटिन प्रहेलिका कहलक तखने बहिन सभटा टुकड़ी निकालि-निकालि कऽ सोझाँ राखि देलक आ भौजीकेँ भकसी झोका कऽ मारि देलक।

## गांगोदेवीक भगता

गांगोदेवी मलाहिन छलीह। एक दिन हुनकर साँए, अपन भाय आ पिताक संग माछ मारए लेल गेलाह। साओनक मेला चलि रहल छलैक आ मिथिलामे साओनमे माँछ खएबा आकि बेचएपर तँ कोनो मनाही छै नहि। गांगोदेवीक वर सोचलन्हि जे आइ माछ मारि हाटमे बेचब आ साओनक मेलासँ गांगो लेल चूड़ी-लहठी आनब।

धारमे तीनू गोटे जाल फेकलन्हि सरैया पाथलन्हि मुदा बेरू पहर धरि डोका, हराशंख आ सतुआ मात्र हाथ अएलन्हि। आब गांगोक वर अपन कनियाँक नाम लए जाल फेकि कहलन्हि जे ई अन्तिम बेर छी गांगो। एहि बेर जे माँछ नहि आएल तँ हमरा क्षमा करब। आब भेल ई जे एहि बेर जाल माँछसँ भरि गेल। जाल घिंचने नहि घिंचाए। सभटा माँछ बेचि कए गांगो लेल लहठी-चूड़ीक संग नूआ सेहो कीनल गेल।

अगिला दिन गांगोक वर गांगोक नाम लए जाल फेंकलन्हि तँ फेर हुनकर जाल माँछसँ भरि गेलन्हि मुदा हुनकर भाइ आ बाबूक हिस्सा वैह डोका-काँकड़ु अएलन्हि। ओ लोकनि खोधिया कए एकर रहस्य बूझि गेलाह फेर ई रहस्य सौँसे मिथिलाक मलाह लोकनिक बीच पसरि गेल। गांगोदेवीक भगता एखनो मिथिलाक मलाह भैया लोकनिमे प्रचलित अछि। सभ जाल फेंकबासँ पहिने गांगोक स्मरण करैत छथि।

## बड़ सख सार पाओल तुअ तीरे

मिथिलाक राजाक दरबारमे रहथि बोधि कायस्थ। राजा दरमाहा देथिन्ह ताहिसँ गुजर बसर होइत छलन्हि बोधि कायस्थक। दोसाराक प्रति हिंसा, दोसरक स्त्री वा धनक लालसा एहि सभसँ भरि जन्म दूर रहलाह बोधि कायस्थ। आजीविकासँ अतिरिक्त जे राशि भेटन्हि से दान-पुण्यमे खरचा भऽ जाइत छलन्हि। भोलाबाबाक भक्त छलाह।

जेना सभकेँ बुढ़ापा अबैत छै तहिना बोधि कायस्थक मृत्यु सेहो हुनकर निकट अएलन्हि आ ओ घर-द्वार छोड़ि गंगा-लाभ करबाक लेल घरसँ निकलि गेलाह। जखन गंगा धार अदहा कोसपर छलीह तखन परीक्षाक लेल बोधि कायस्थ गंगाकेँ सम्बोधित कए अपनाकेँ पवित्र करबाक अनुरोध कएलन्हि। गंगा माय तट तोड़ि आबि बोधि कायस्थकेँ अपनामे समाहित कएलन्हि। बोधि कायस्थकेँ सोझे स्वर्ग भेटलन्हि।

बोधि कायस्थ विद्यापतिसँ पूर्व भेल छलाह कारण ई घटना विद्यापति रचित संस्कृत ग्रंथ पुरुष-परीक्षामे वर्णित अछि। फेर विद्यापति अपन मैथिली पद बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे लिखलन्हि- आ बोधि-कायस्थ जेकाँ गंगा लाभ कएलन्हि।

## छेछन

डोम जातिक लोकदेवता छेछन महराज बड़ड बलगर छलाह। मुदा हुनकर संगी साथी सभ कहलकन्हि जे जखन ओ सभ सहिदापुर गेल छलाह, बाँसक टोकरी आ पटिया सभ बेचबाक लेल, तखन ओतुक्का डोम सरदार मानिक चन्दक वीरता देखलन्हि। ओ एकटा अखराहा बनेने रहथि आ ओतए एकटा पैघ सन डंका राखल रहए। जे ओहि डंकापर छोट करैत छल ओकरा मानिकचन्दक पोसुआ सुग्गर, जकर नाम चटिया छल, तकरासँ लड़ए पड़ैत छलैक। मानिकचन्द प्रण कएने रहथि कि जे क्यो चटियासँ जीति जाएत से मानिकचन्दसँ लड़बाक योग्य होएत आ जे मानिकचन्दकेँ हराएत से मानिकचन्दक बहिन पनमासँ विवाहक अधिकारी होएत। मुदा ई मौका आइ धरि नहि आएल रहए जे क्यो चटियाकेँ हरा कए मानिकचन्दसँ लड़ि सकितए।

दिन बितैत गेल आ एक दिन अपन पाँच पसेरीक कत्ता लए छेछन महराज सहिदापुर दिश विदा भेलाह। डंकापर चोट करबासँ पहिने छेछन महराज एकटा बुढ़ीसँ आगि माँगलन्हि आ अपन चिलममे आगि आ मेदनीफूल भरि सभटा पीबि गेलाह आ झुमैत डंकापर चोट कए देलन्हि। मानिकचन्द छेछनकेँ देखलन्हि आ चटियाकेँ शोर केलन्हि। चटिया दौगि कए आएल मुदा छेछनकेँ देखि पड़ा गेल। तखन पनमा आ मानिकचन्द ओकरा ललकारा देलन्हि तँ चटिया दौगि कय छेछनपर झपटल मुदा छेछन ओकर दुनू पएर पकड़ि चीरि देलन्हि। फेर मनिकचन्द आ छेछनमे दंगल भेल आ छेछन मानिकचन्दकेँ बजारि देलन्हि। तखन खुशी-खुशी मानिकचन्द पनमाक बियाह छेछनक संग करेलन्हि।

दिन बितैत गेल आ आब छेछन दोसराक बसबिट्टीसँ बाँस काटए लगलाह। एहिना एक बेर यादवक लोकदेवता कृष्णारामक बसबिट्टीसँ ओ बहुत रास बाँस काटि लेलन्हि। कृष्णाराम अपन सुबरन हाथीपर चढ़ि अएलाह आ आमक कलममे छेछनकेँ पनमा संग सुतल देखलन्हि। सुबरन पाँच पसेरीक कत्ताकेँ सूढ़सँ उठेलक आ छेछनक गरदनिपर राखि देलक आ अपन भरिगर पएर कत्तापर राखि देलक।

## गरीबन बाबा

कमला कातक उधरा गाममे तीनटा संगी रहथि। पहिने गामे-गामे अखराहा रहए, ओतए ई तीनू संगी कुश्ती लड़थि आ पहलमानी करथि। बरहम ठाकुर रहथि ब्राह्मण, घासी रहथि यादव आ गरीबन रहथि धोबि। अखराहा लग कमला माइक पीड़ी छल। एक बेर गरीबनक पएर ओहि पीड़ीमे लागि गेलन्हि, जाहिसँ कमला मैय्या तमसा गेलीह आ इन्द्रक दरबारसँ एकटा बाघिन अनलन्हि आ ओकरासँ अखराहामे गरीबनक युद्ध भेल। गरीबन मारल गेलाह। गरीबनकेँ कमला धारमे फेंकि देल गेलन्हि आ हुनकर लहाश एकटा धोबिया घाटपर कपड़ा साफ करैत एकटा धोबि लग पहुँचल। हुनका कपड़ा साफ करएमे दिक्कत भेलन्हि से ओ लहाशकेँ सहटारि कए दोसर दिस बहा देलन्हि।

एम्हर गरीबनक कनियाँ गरीबनक मुइलाक समाचार सुनि दुखित मोने आर्तनाद कए भगवानकेँ सुमिरलन्हि। आब भगवानक कृपासँ गरीबनक आत्मा एक गोटेक शरीरमे पैसि गेल आ ओ भगता खेलाए लागल। भगता कहलन्हि जे एक गोटे धोबि हुनकर अपमान केलन्हि से ओ शाप दैत छथिन्ह जे सभ धोबि मिलि हुनकर लहाशकेँ कमला धारसँ निकालि कए दाह-संस्कार करथि नहि तँ धोबि सभक भट्ठीमे कपड़ा जरि जाएत। सभ गोटे ई सुनि धारमे कूदि लहाशकेँ निकालि दाह संस्कार केलन्हि। तकर बादसँ गरीबन बाबा भट्ठीक कपड़ाक रक्षा करैत आएल छथि।

## लालमैन बाबा

नौहट्टामे दू टा संगी रहथि मनसाराम आ लालमैन बाबा। दुनू गोटे चमार जातिक रहथि आ संगे-संगे महीस चराबथि। ओहि समयमे नौहट्टामे बड्ड पैघ जंगल रहए, ओतहि एक दिन लालमैनक महीसकेँ बाघिनिया घेरि लेलकन्हि। लालमैन महीसकेँ बचबएमे बाघिनसँ लड़ए तँ लगलाह मुदा स्त्रीजातिक बाघिनपर अपन सम्पूर्ण शक्तिक प्रयोग नहि केलन्हि आ मारल गेलाह। मनसारामकेँ ओ मरैत-मरैत कहलन्हि जे मुइलाक बाद हुनकर दाह संस्कार नीकसँ कएल जाइन्हि। मुदा मनसाराम गामपर ककरो ई गप नहि कहलन्हि। एहिसँ लालमैन बाबाकेँ बड्ड तामस चढ़लन्हि आ ओ मनसारामकेँ बका कऽ मारि देलन्हि। फेर सभ गोटे मिलि कए लालमैन बबाक दाह संस्कार कएलन्हि आ हुनकर भगता मानल गेल। एखनो ओ भगताक देहमे पैसि मनता पूरा करैत छथि।

## गोनू झा आ दस ठोप बाबा

मिथिला राज्यमे भयंकर सुखाड़ पड़ल। राजा ढ़ोलहो पिटबा देलन्हि, जे जे क्यो एकर तोड़ बताओत ओकरा पुरस्कार भेटत।

एकटा विशालकाय बाबा दस टा ठोप कएने राजाक दरबारमे ई कहैत अएलाह जे ओ सय वर्ष हिमालयमे तपस्या कएने छथि आ यज्ञसँ वर्षा करा सकैत छथि। साँझमे हुनका स्थान आ सामग्री भेटि गेलन्हि। गोनू झा कतहु पहुनाइ करबाक लेल गेल रहथि। जखन साँझमे घुरलाह तखन कनिञाक मुँहसँ सभटा गप सुनि आश्चर्यचकित हुनका दर्शनार्थ विदा भेलाह।

एम्हर भोर भेलासँ पहिनहि सौँसे सोर भए गेल जे एकटा बीस ठोप बाबा सेहो पधारि चुकल छथि।

आब दस ठोप बाबाक भेँट हुनकासँ भेलन्हि तँ ओ कहलन्हि-

''अहाँ बीस ठोप बाबा छी तँ हम श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा छी। कहू अहाँ कोन विधिये वर्षा कराएब''।

''हम एकटा बाँस रखने छी जकरासँ मेघकेँ खोँचारब आ वर्षा होएत''।

''ओतेक टाक बाँस रखैत छी कतए''।

''अहाँ एहन ढोंगी साधुक मुँहमे''।

आब ओ दस ठोप बाबा शौचक बहन्ना कए विदा भेला।

''औ। अपन खराम आ कमण्डल तँ लए जाऊ''। मुदा ओ तँ भागल आ लोक सभ पछोड़ कए ओकर दाढ़ी पकड़ि घीचए चाहलक। मुदा ओ दाढ़ी छल नकली आ ताहि लेल ई नोचा गेल। आ ओ ढ़ोंगी मौका पाबि भागि गेल। तखन गोनू झा सेहो अपन मोछ दाढ़ी हटा कए अपन रूपमे आबि गेलाह। राजा हुनकर चतुरताक सम्मान कएलन्हि।

# वर्णमाला शिक्षा: अंकिता

अकादारुण समय छल । अंकिता अडैठीमोड़ कएलक। ओकर पिता कहलन्हि-

“अतत्तह करए छी। जल्दीसँ झटकारि कऽ चलू।

अंकिता अकच्छ भऽ गेलि। चलैत-चलैत ओकर पएर दुखा गेलैक।

रस्तामे ओ एकटा लालछड़ी बलाकेँ देखलक।

“हमरा लालछड़ी कीनि दिअ”।

“अंकिता अकर-धकर नहि खाऊ”।

“नहि। हमरा ई चाहबे करी”।

“अहूँ अधक्की छी। एखने तँ कतेक रास चीज खएने रही”।

पिता तैयो ओकरा लालछड़ी कीनि देलन्हि।

रस्तामे अगिनवान देखि अंकिता बाजलि-

“ई आगि किएक लागल अछि”?

“बोन-झाँकुर खतम करबाक लेल”।

“अक्खज गाछ सभ तैयो नहि जरल अछि”।

**प्रश्न:** बचियाक नाम की छी?

*उत्तर:* अंकिता।

**प्रश्न:** समय केहन छल?

*उत्तर:* अकादारुण।

**प्रश्न:** अंकिता चलैत-चलैत.......भऽ गेल छलि।

*उत्तर:* अकच्छ।

**प्रश्न:** पिता ......खाए लेल मना केलन्हि।

*उत्तर:* अकर-धकर।

**प्रश्न:** रस्तामे बोन-झाकुँड़केँ आगिसँ जराओल जाइत रहए। ओहि आगिक लेल प्रयुक्त शब्द रहए...।

*उत्तर:* अगिनवान।

**प्रश्न:** अगिनवानमे केहन बोन-झाँकुड़ नहि जरल?

*उत्तर:* अक्खज।

आगाँ:-

कनी काल दुनू बाप बेटी गाछक छाहमे बैसि जाइ गेलाह। अंकिता उकडू भए बैसि गेलि आ उकसपाकस करए लागलि।

''अहाँकेँ उखी-बिखी किएक लागल अछि अंकिता? साँझ भऽ गेल अछि। कनेक काल आर चलब तँ घर आबि जाएत''।

तखने अकासमे अंकिता उकापतङ्ग देखलक।

''एक उखराहा चललाक बादो गामपर नहि पहुँचलहुँ''|

''चलू। चली। रस्ता धऽ कऽ चलू नहि तँ उड़कुस्सी देहमे लागि जाएत''।

''दिन रहितए तँ खेतमे ओड़हा खएतहुँ''।

''कलममे ओगरबाह सभ आबि गेल। कड़ेकमान अछि, अपन-अपन मचानपर''।

''इजोरियामे देखू। दिनमे बरखा भेल रहए से लोक सभ खेतमे कदबा केने अछि''।

''कमरसारि आबि गेल आ अपन सभक घर सेहो''।

टिप्पणी: *पहिल भागमे अ उत्तरबला प्रश्न पूछल गेल छल। एहि भाग लेल ''ओ'' आ ''क'' वर्णसँ शुरू होअएबला उत्तर सभक लेल प्रश्न बनाऊ।*

*एहिना कचटतप वर्णमालासँ शुरु होअएबला शब्द बहुल खिस्सा बनाऊ आ बच्चाकेँ सुनाऊ आ फेर ओकरासँ प्रश्न पूछू। खिस्सा कताक बेर बच्चाकेँ सुनाओल जाए, से बच्चाक क्षमता आ कथामे प्रयुक्त शब्दावलीक संख्याक हिसाबसँ निर्धारित करू।*

# बाल-कविता

## ट्रेनक गाड़ी

छुक छुक छुक
भरल सवारी
ट्रेनक गाड़ी

पोखरि गाछी
दौगल जाइ छी

ट्रेन गाड़ी
ठाढ़ सवारी
पोखरि गाछी
दौगल जाइ छी!!

ट्रेन गाड़ी धारक कातमे
आएल स्टेशन छुटल बातमे
ट्रेन चलल दौगल भरि राति
सुतल गाछ बृच्छ भेल परात

## के छथि

के छथि जिनकर हस्त-रेखमे
अछि परिश्रमसँ बढ़ब लिखल
के छथि जिनका ललाट मध्य
परिश्रमक गाथा रहैछ सकल

जे छथि सुस्त तकरे चमकैत
अछि हाथक रेखा बुझू सखा
जिनका घाम नहि खसन्हि
छन्हि ललाट चमकैत नहि बेजाए

## राजा श्री अनुरन्वज सिंह

एक सुरमे बाजि देखाऊ
नहि अरुनन्वन नहि सिंह
पूरा एकहि बेर सुनाऊ
राजा श्री अनुरन्वज सिंह

## सूतल

सूतल धरती
सूतल आकाश
सूति गेल चिड़ै
सूतल गाछ-पात
सूतल बौआ
सूतल बुच्ची
सूतल बाबा
सूतल बाबी
सूतल चन्द मामा आब
सूतू-सूतू बौआ
उठबाक अछि
भोरे-सकाल

## अखण्ड भारत

धीर वीर छी मातु बेर की
अबेर होइत सङ्कल्पक क्षण ई
बुद्धि वर्चसि पर्जन्य बरिसथि
सभा बिच वाक् निकसथि
औषधीक बूटी पाकए यथेष्ठा
अलभ्य लभ्यक योग रक्षा

आगाँ निश्चयेण कार्यक क्रमक
पराभव होए सभ शत्रु सभक
वृद्धि बुद्धिक होअए नाश शत्रुत्वक
मित्रक उदय होअए भरि जगत

नगर चालन करथि स्त्रीगण
कृषि सुफल होअए करू प्रयत्न
वृक्ष-जन्तुक संग बढि आब
ठाढ होऊ नहि भारत भेल साँझ
दोमू वर्चसिक गाछ झहराऊ पाकल फलानि
नञि सोचबाक अनुकरणक अछि बेर प्राणी

वर्चस्व अखण्ड भरतक मनसिक जगतमे
पूर्ण होएत मनोरथ सभक क्यो छुटत नञि

## मोनक जड़िमे

पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च नञि जानि किए सेजल
मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल

पर्वत शिखर सोझाँ अबैत हियाऊ गमाबथि
बल घटल जेकर पार दुःखक सागर करैत
करबाक सिद्धि सोझाँ छथि जे क्यो विकल
भोथलाइत प्यासल अरण्यपथ मे हँ बेकल

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल
पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च नञि जानि किए सेजल

हाथ दए तीर आनि दए करौंट तखन तत
मनसिक अन्हारक मध्य विचरणहि सतत
प्रकाशक ओतए कए उत्पत्ति ठामहि तखन
विपत्तिक पड़ल क्यो आब नञि होएत अबल

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल
पंक्तिबद्ध कए पुनः किञ्च जानि किए सेजल

करबाक अछि लोक कल्याणक मन वचन कर्महि
नञि अछि अपन अभिमान छोड़ब अधः पथ ई
घुरत अभिमान देशक तखन अभिमानी हमहुँ छी
नञि तँ फुसियेक अभिमान लए करब पुनः की

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रमक ई
पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च जानि कए सेजल छी

## पुनः स्मृति

बितल बर्ख बितल युग
बितल सहस्त्राब्दि आब
मोन पाड़ि थाकल की
होयत स्मृतिक शाप

वैह पुनः पुनः घटित
हारि हमर विजय ओकर
नहि लेलहुँ पाठ कोनो
स्मृतिसँ पुनः पुनः

सभक योग यावत नहि
होएत गए सम्मिलन
हारि हमर विजय ओकर
होएत कखनहु नहि बन्द

## कलम गाछी

सौँसे गमकैत
फूल निकलैत पात
सभ जाइ गेल इसकूल
तखने बहल बसात

आमक गाछक पात
कीड़ा छल लागल
घोरनक छल ई प्रताप
घोरन छत्ता बला पात
चुट्टी लाल लाल
जखन बहल बसात

## हाथीक मुँहमे लागल पाइप

बानर सोचलक की ?
जीतए-ए ई हाथी
एहि होलीमे हमहूँ
मुँह लगाएब पाइप

पाइप लगओने हाफी
भरि रंग ओ बानर
रहए करैत इन्तजारी

आँखि लागलए ओकर
नाकमे भेलए सुरसरी
आऽऽऽछी
खसल रंग भरल पाइप सद्यहि

## बानर राजा

सिँह राजसँ भेल पीड़ित वन-जन
एलेक्शन करायल मिलि सभ क्यो
संख्या वानरक हरिण मिला कय
छल बेशी से राजा भेल बानर जो !

सिंहराजकेँ तामस अयलन्हि
खा गेल हरिणराजक बच्चा एकदिन

दाबीसँ हरिण गेल सम्मुख
वानर राजा कहलन्हि-
बदमाशी अछि सिंहक
कहि निकलि गेल जंगल बिच्चहि

गाछक डारि पकड़ि छिप्पी धरि
खूब मचेलक धूम

तामसे विख भय सिंहराज खएलक
बच्चा सभटा मृगराजक चुनि
जखन सुनाओल जाय वनराजकेँ
फेर वैह धूम ओ फेर मचाओल

मृगराज कहल हे नृप
एहि हरकंपसँ की होयत ?
जीवित होएत की हमर संतान?

कहल नृप कहू भाय
हम्मर मेहनतिमे अछि की कमजोरी
करल प्रयास हम भरिसक मुदा
बुझू हमरो मजबूरी !

## चिड़ियाखाना

चिड़ियाखाना
भालू मामा
बन्दर मामा
लुक्खी
खिखीर
कौआ कुचरए
आएत क्यो घर

मुरगाक कुकडू-कू
अंडा मुरगामे पैसल
मुरगा अंडासँ निकलल !

टिकली रंग-बिरंगक
खूब घुमए उड़ै अछि
टिकली पाँखि पसारल
फूलक रंग बुझाइए

## जमबोनी

जमबोनीक जोम
पसरल
जोम रंग चारूकात
पीचल पिसीमाल
एत्तेक ऊँच गाछ
दोमब मुदा अछि बड़ड ऊँच
बोन सुपारी तोड़ि चली घुरि

## बौआ ठेहुनिया मारि

बौआ ठेहुनिया मारि
भेल सोझ भए ठाढ़
लकड़ीक तिनपहिया
देलक बाबू आनि
पहिनहि भए गेल ठाढ़
पकड़ि की होएत आब!

## ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग
कैरियर बला साइकिल
बाबू आनल कीनि

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग
बिन कैरियरक साइकिल
नहि कोनो काजक ईह !

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग
बैस बैस बैस
कैरियरपर आबि

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग
पैडल पर पएर
सभ रस्ता दैह !

## भोरक बसात

भोरक बसात
उठू-उठू बुच्ची
भेल प्रात
रातिमे सभटा सुन्न
भोरमे चिड़ै-चुनमुन

फूलक गाछ
भोरक बसात
भरल नव फूलसँ
भेल प्रात

## छाहक करतब

छाहक करतब
दुपहरियामे छोट
रौदक तीव्रतामे मरैत
साँझक रौद शीतल
छाह हँसैए
होइए पैघ

कर जोरि करैए प्रणाम
‘‘छाह भाए
छह तौँ पैघ’’

## सपना

आइ देखल सपना
घर आएल बौआ
असगर छी ढहनाइत
बौआ संगे खेलाएब

माएक भेलैक बहन्ना !
हम्मर झोरा-झपटा
बिनु सरियेने जाथि

हम कहलियै देरी
तैयार करबएमे
किऐ करैछी अहाँ

माए कहैए
उठलहुँ देरीसँ अहाँ
उनटे हमरा कहए छी ?
स्कूलमे होमए दियौ ने देरी !

## कोइरीक कूकू

कोइरीक कूकू
कौआक करड़ब काऊँ
रातिमे गाछीक कीड़ीक स्वर
एहन सन-
''नानी तसला ला- भात पका!''
रातिक रतिचरक जीवन आहा

रातिमे इजोत भगजोगनीक
रातिमे अबैए दिनमे बिलाइए
दिनमे ओकर काजे की?
दोसर रतिचरक स्वर-
''क्वैटीक्विक''
रातिक रतिचरक जीवन ई

## शितलपाटी

शितलपाटी हम्मर
पोथी हम्मर मनोहर पोथी
सभटा पढ़ी
साँझक प्रकाश झलफल
नहि एहि बेरमे पढ़ू
बाप रौ बाप
आँखि होएत खराप

## मकड़ीक जाल

मकड़ीक जाल
माँछक लेल महाजाल

कीड़ीक फँसब
माछक कूदब
महाजाल खसब
माछक करतब-खेल

मुदा आइ बुझलहुँ
रहए ई जीबाक संघर्ष
जे आइ कए रहल छी हम
एहि दिल्ली नगरियामे

## वायुगोलक

वायुगोल बैलून
हरियर पीअर
एहिमे भरि रंग फेकी भाएक मूह
भरि एहिमे आब हाइड्रोजन
बेचै छी बच्चा सभकँ
उड़बै छथि ओ ऊपर गगनमे

## हाथीक सूप सन कान

हाथीक सूपसन कान
पाइप बला मूहसँ भरैए पानि

मुँह नीचाँमे आर
दू टा पैघ दाँत
चकाचक ठाढ़

मोट-मोट एकर पएर
पुच्छी अछि लटकैत
चीन्हि जाइ छियैक एकरा हम
मोट हाथीक धम्मक-धम

## छुट्टी

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब-फिरब जाएब गाम
नाना-नानी मामा-मामी
चिड़ै-चुनमुनी सभसँ मिलान

बरखा बुन्नी आएल
मेघ दहोदिस भागल
कारी मेघ उज्जर मेघ
घटा पसरल
चिड़ै-चुनमुनी आएल
आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब-फिरब जाएब गाम
नाना-नानी मामा-मामी
चिड़ै-चुनमुनी सभसँ मिलान

## बौआ गेल सुनि

एक दू तीन
बौआ गेल सुनि
चारि पाँच छह
सुनि भेल भयावह
सात आठ नौ
गेल भदबरिया भाए
दस एगारह बारह
हमरा आबि उबारह
तेरह चौदह पन्द्रह
होएत आब सलहन्ना
सोलह सतरह आर
भेल भेर इयार
अठारह उन्नैस बीस
आब थाकल ईह
ईह सय हजार
हँ आब आएल तेजी इयार

## मिथिला

मथल जतए शत्रुकँ
मिथिला छल ओ धरती
सभ धकियेलक अपना-अपनी
सभ ठोंठियेलक यौ

जनक जन-विश सभ अप्पन
गुरु-माता-पिता ई तीनू
नहि झुकब छोड़ि ककरो सोझाँ
मुदा अभिमानक धरती छोड़ल
छोड़ल अभिमान ईह
सभ धकियेलक अपना-अपनी
सभ ठोंठियेलक यौ

## बादुर सोंस

बादुर बादुर
राडार युक्त ई
बादुर बादुर
पबै-ए भोजन

प्रतिध्वनिक कारण
बचइ-ए कोनो
दुर्घटनासँ
बादुर बादुर
राडार युक्त ई

सोंस-डोलफिन अछि नाम
सोंस-डोलफिन
अबाज निकालए
प्रतिध्वनि आनए
माछक जाल फेकल
बचइ-ए ई बदलि रस्ता
दुर्घटनासँ

बादुर बादुर
राडार युक्त ई
बादुर बादुर
सोंस-डोलफिन
अबाज निकालए
प्रतिध्वनि आनए

## की? किए? कोना? के?

की? किए? कोना? के?
गर्मी सँ बरखा
बरखासँ पनिसोखा
बरखामे चाली
चालीसँ माटि
चाली बिन पएरक

माटिसँ घास
घास खाए गाए
गाएसँ दूध
बौआ पीबू
गाएक बाछा
पीबि बहए हर
हरसँ खेत
खेतसँ धान
धानसँ भात
बौआ खाथि

बौआक देह
दूध भात

पानिक भाप
उड़ए अकास
अकाससँ बरखा
बरखासँ चाली
चालीसँ माटि
माटिसँ धान
की? किए? कोना? के?

## फेर आएल जाड़

फेर आएल जाड़
कड़कराइत अछि हार
बिहारी!!
लागए-ये भेल भोर
गारिसँ फेर शुरू भेल प्रात
बिनु तैय्यारी

## आगाँ

सूर्यसँ पूब आ अकाससँ ऊँच
पृथ्वीसँ नीचाँ चिन्तन करू अछि की?

अपन घर-गामक अपन देशक
माता-पिता-गुरुक कर्ज मोन राखि

तामसमे तोड़ब वस्तु नहि कठिन अछि
कोना तोड़लकेँ जोड़ब तकर बाट ताकि

सूर्यसँ पूब आ अकाससँ ऊँच
पृथ्वीसँ नीचाँ चिन्तन करू अछि की?

## अंध विश्वास

सुमेरु पर्वतक चारू-कात
चेन्ह देखाय कहलक गाइड
सर्प केर चेन्ह अछि ई
भेल समुद्र-मंथन एहि पर्वतसँ
सर्पक रस्सा अछि चेन्ह छोड़ि गेल
चारू-कात तहीसँ

संगी हमर हँसल कहलक
कोनो पहाड़ पर जाऊ
पहाड़ ऊपर चढ़य लेल
गोलाकार रस्ता बनबाऊ

नहि तँ सोझे ऊपर चढ़ब
सोझे खसब नीचाँ मुहेँ
हओ गाइड तोहूँ विश्वासक
छह अंध-काण्ड सुनेबा लए

## अभ्यास

पूछल गुरूसँ मृदंगपर हाथक गति
भय रहल अछि किएक मंद
गुरु कहलन्हि से करू
अभ्यास तखन प्रतिदिन

प्रतिदिन तँ करितहि छी
हम एकर सदिखन अभ्यास
तहुखन हमर घटय अछि गति
आ टूटय अछि लय तात

करू भोर साँझ अहाँ
अभ्यास बिना करि नागा
भोर करब अभ्यास जखन
साँझमे टूटत नहि लय
साँझमे करब पुनराभ्यास
होयत भोरमे हाथ गतिमय

गुरुसँ पूछल कोना कए
एहि चट्टान काटि घोड़ा बनाएब
घोटक गतिमय बनबएमे
एक मास बेकार लगाओल

कहल गुरू तखन करू कल्पना
एहि जड़-पाथरमे घोटक
घोड़ा देखि करू प्रहार
जतए लागए घोटक नहि अछि

जतए पाथर बेशी अछि
तोड़ि अहाँ हटाऊ
बनत घोड़ा क्षणहि
घोड़ा चट्टानक बनाऊ

कहल ओ गुरूजी
काज वैह अछि
सोचबाक अछि ई फेर
पहिने बेशी काज लगैत छल
आब थोड़ अछि भेल

## आँखिक चश्मा

दादा पहुँचलाह डॉक्टर लग
पुछल होइए की बाबा
मर्र डॉक्टर अहाँ छी
हमहीं बताऊ भेल की हमरा?

आँठासँ कय शुरू
बताऊ पहुँचा धरिक समाचार
कहल पहिने करू ठीक
आँखिकेँ औ सरकार

कोनो चश्मा नहि फिट पड़ल
दूरबीनक शीशा जखन लगाओल
कहल हँ अछि आब कोनहुना
भाखए अक्षर चराचर

सड़ही आम देखि बजलाह
बूढ़ भेलहुँ हम अहाँ बुझय छी बच्चा
बैलूनसँ खेलायब हम से वयस नहि अछि
अच्छा अच्छा !

यौ दादा ई सड़ही छी
हम पड़ि गेल छी सोँचहि
सड़ही आम अहाँ कोना देखब
चश्माक नंबरे गलत पड़ल अछि

## तीने टा अछि ऋतु

पुछल स्कूल किएक नहि अएलहुँ

मास्टर साहेब होइत छल बरखा
जाइतहुँ हम छल भीजि

बरखामे जाएब अहाँ भीजि
गर्मीमे लागत लू-गर्मी
आ जाड़क शीतलहरीमे
हार-हाड़ होइत जाएब

सालमे पढ़ाइ-पढए कहिया आएब
बौआ होइत अछि ई तीनियेटा ऋतु

## दरिद्र

आठ सय बीघा खेत
कतेक पोखरि चास-बास

मुदा कालक गति बेचि बिकनि
सभटा केलन्हि समाप्त

झंझारपुरसँ धोती कीनि
घुरैत काल देखल माँछ बिकाइत
धोती घुरा कए आनल
आ कीनल माँछ सुआइद

पूछल कहल हौ माछ ई
काल्हि कतएसँ भेटत
धोती तँ जखने पाइ होएत
जाएब कीनि लाएब तुरत

दरिद्रताक कारण हुनकर हम आब बूझि गेल छी
एक दिनुका गप नहि ई सभ दिनुका चरित्र छी

## रौह नहि नैन

हँ यौ नैन अछि ई
मुदा शहरक लोक की बुझए
सभ ताकैत अछि रौह
नैन कहबय तँ क्यो नहि कीनय

छागर खस्सी आ बकरीक
अंतर ज्यौँ जायब फरिछाबय
बिकायत किछु नहि एहि नगरमे
एहि नगरमे बिनु टाका किछु नहि आबय

## जूताक आविष्कार

जखन गड़ल एक काँट
राजा कहलक ओछाउ चर्म
आ चर्मसँ माटिकेँ छाड़ि कए
राजधानी निष्कंटक बनाऊ

जखन सभटा चर्म आनि कए
नहि पूर्ण भए सकल ओछाओन
एक चर्मकार आओल आ
राजाकेँ फरिछाय बुझाओल

पैर बान्हि ली चर्मसँ आकि
पृथ्वीकेँ ओहिसँ लए झाँपी
निष्कंटक धरती नहि मुदा
मार्ग निष्कंटक होएत गए

जूताक भएल पदार्पण तहिना
राजा प्रसन्न कहल होअए एहिना

## बूढ़ वर

कतय छी आयल आइ ?

ताकि रहल छी वर
१५-१५ वरखक दूटा
अछि कतहु अभड़ल ?

रंग सिलेबी सिंघ मुठिया
अदंत तकैत छी आइ
से भेटत कहिया ?

१५-१५ केर दू गोटक बदलेन
३० केर भेटत एकटा
बाल-विवाहक दिन गेल

## रिपेयर

स्कूलक तालाक रिपेयर केलक
बिल मोटगर जखन देलक कारीगर
पूछल एहि अलमीराक तँ
ताला नहि महग छल ?

रिपेयरसँ सस्तमे तँ
नव ताला आयत गय
औ बाबू तखन कमीशन
अहीं जाय आऊ दऽ

## नोकर

फोन कऽ कय घरमे पूछल
पूछलन्हि बेटाक अफसर
छथि बेटा घरमे की ?
आकि..

आकि आगू पुछितथि ओ बजलाह
दय कय एक धुतकारी

एहि फोनक हम बिल भरैत छी
नहि करू अहाँ पुनि बात
मैसेज अहाँक देब हम पुत्रकेँ
से छी के अहाँ लाट?

नौकर नहि अहाँक
ने छी हम अपन पुत्रक
कनिया केर टा छी हम नौकर
बुझू ई यौ अफसर

## क्लासमे अबाज

दुनू दिशक बेंचकेँ उठाकय पुछलन्हि
आयल कोन कातसँ अबाज

पकड़ल एक कातकेँ छोड़ल
फेर कएल दू फाड़ि

आधक-आध करैत पहुँचलाह
फेर लग लक्ष्य
दुइ गोट मध्य जानि नहि सकलाह
अबाज केलक कोन वत्स

## एस.एम.एस.

कहू एहिमे अहाँ छी
सहमत आ की छी अहाँ असहमत
दुनू रूपमे दिअ अहाँ
अपन विचार कय एस.एम.एस.

आहि कमाऊ अहाँ रुपैय्या
हम बूड़ि छी भाइ
न्यु टेक्नोलोजी छी ई सभ
बुरबक क्यो नहि आइ

# टी.टी.

मजिस्ट्रेट चेकिङ भेल
बिन टिकट बला वीर सभ भागल
बाधे-बाधे

खेहारलक पुलिस जखन
चप्पल छोड़ल ओतय बेसुध तन

मुदा बुरबक लाल एकटा
एक चप्पल लेलक उठाय
दोसर चप्पल छोड़ि पड़ायल
आयल गाम हँफाइत

सभ हँसि पुछलक हौ बाबू
एकटा चट्टी लय कय
कोन पैरमे पहिरब एकरा
दोसर खाली रहत गए

ई बुरबकहा बुरबके रहल
हँसि भेर भेल सभ

दोसर दिन बाध सभ गेल
देखल सबहक दुनू चट्टी भेल छल निपत्ता
बुरबकहाक एक चट्टिये छल बाँचल
नहि लेलक क्यो सोचि करब की एकटा?

मुँह लटकओने सभ घूरल आ
नाम बदललक बुरबकहाक
टी.टी. बाबूकेँ ई ठकलक
नाम होयत सैह एकर आब

## खगता

गोर लागि मौसीकेँ निकलल
पूछतीह अछि किछु खगता
आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

फेर उठल मौसी फेर नहि पुछलखिन्ह
ई सोचि जे रहैत नहि छन्हि पाइक काज

जाएब कोना पाइक बड़ड अभाव !

आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

लोक कहैछ आयल छथि खगते
ओना दर्शनहुँ दुर्लभ
अहीँ कहू
खगतामे क्यो अछि पुछैत
आगूसँ ?

आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

## क-ख सँ दर्शन

ट्युशन पढ़बय जाइत छँह
इज्जत तँ करैत छौक?
जलखै तँ नहिये परञ्च
चाहो-पानिक हेतु पुछैत छौह ?

ट्युशन कय खाइत छी
की कहलहुँ  हे से नहि बाजू
द्रोणक नव अवतार छी हम

से छियन्हि कहि देने
जाइत देरी करह जलखैक व्यवस्था
नहि तँ छी नहि हम द्रोण
औठाँक नहि कोनो लालसा

मात्र पढ़ेबन्हि छओ महिना
दर्शन नहि होयतन्हि क-ख केर
नहि से नहि बाजू
खुआ पिया कए केने अछि ढेर

## चोरकँ सिखाबह

यौ काका छी अहाँ खाटकँ
धोकड़ी किएक बनओने
खोलि नेवाड़ फेर घोरिकँ
बनाऊ खाट एखन नवीने

कहलन्हि काका हे हौ
देखह आयत रातिमे जे चोर
पटकत लाठी खाट पर आ
धोकड़ीमे रहने
चोट नहि लागत मोर

परञ्च काका ज्योँ ओ चलबए
लाठी नीचाँ बाटे
वाह बेटा कहि दिहह चोरकँ
ई गप तोहीँ जा कय

## नरक निवारण चतुर्दशी

भुखले भरि दिन दिन बिति गेल
नरक निवारण लय हम रहलहुँ
साँझमे मंदिर विदा सभ भेल

दुर्गापूजा लगमे आयल
सिंगरहार केर चलती भेल
माटि काटि गोबरसँ नीपि कय
भोरे-भोर फूल लोढ़ि लेल

सरस्वती पूजाक समयमे बैर
अशोकक-गाछ-पात गोलीक लेल

बोने-बोन महुआक फरक लेल
घूमि-घामि अयलहुँ भेल-भेर

अण्डीक बीया तेलहानीमे दए
तरुआ ओकर तेलक खएल
कुण्डली मिरचाइक फरमे अंतर
बुझैत-बुझैत दिन कतेक गेल

सुग्गोकेँ ई खोआय रामायण
सुनला कत्तेक दिन भए गेल

## नौकरी

नौकरी नहि करी तखन
भेटय तनखा तन खायत
वेतन भेटत बिना तनहि
आब कते बुझायब

गाम घूरि ज्यौँ जायब
खायब की कमलाक बालू
औ गुलाब काका पहिने
हमरा ईएह बुझाऊ

भरि दिनका ठेही अछि जाइत
जखन जाइत छी सूइत
भोर उठला संता अखनहुँ
समस्यासँ अछि नहि छूटि

## मरकरी डिलाइट

सोझाँसँ त्रिपुण्ड-चानन
देने आयल रहथि उदना

देखल गामक प्रवासी जहिना
कहल रौ छँ तोँ भाइ उदना

संग कटलहुँ बाँस
आवाजकेँ दबेबा लेल
जड़िमे बान्ही गमछा
आ टेंगारीसँ दू छहमे
काटय छलह तोँ

पुरनाहाक डबरामे
लीढ़क नीचाँ नुका कय
करी संपन्न
काज बिन विघ्न

पश्चात् भेलहुँ प्रवासी
मरकरी-डिलाइट दयकेँ तोँ
भेलह गामक वासी

पंडितक अकाल छल नहि
छलह कोनो कंपीटीशन

भेलहुँ अहाँ औ भजार
गामक नव उदयनाचार्य

## दीयाबाती

अन्हरिया भगेलक
इजोरिया बजेलक
दीयाबाती हम्मर
तरेगण बजेलक

अकाससँ उतारि
रखलहुँ अप्पन द्वारि

## फ्रैक्चर

हॉस्पीटलमे आबाजाही
गामक प्रवासीक
बुझैत छलाह जखन समाचार
पिताक भर्त्तीक
ठामहि दरभङ्गा बस-स्टैंडहिसँ
गाम जयबाक बदला आबथि हॉस्पीटल

की केलहुँ शरीरकँ
नहिये बनेलहुँ जमीन-जत्था
बच्चा सभक लेल नहि
राखल दृष्टि यैह व्यथा

की सभ करैत कतय नहि पढ़ैत
चण्डाल किए भेलहुँ हे कक्का

ओतहि बैसल छलाह टुटियाँ
पिताक समक्ष
पहिनहिँ बुझने छलाह जे
ककाकेँ छलन्हि भेल फ्रैक्चर

कहल पहिने समाचार तँ पुछिअन्हु
चाहो आब अबैत होयत
पैर हाथ धोआय अनिहन्हु !

कहल पैर टुटि गेल की कका
पिता किछु बजितथि
बजलाह टुटियाँ

होइछ टूटब आ फ्रैक्चर एक्के
नहि छलन्हि बूझल से
कहल नहि चिंता करैत जाउ
भगवान रक्ष रखलन्हि
फ्रैक्चरे भेलन्हि
पैर टूटलन्हि नहि बाउ

## बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि

यौ बुझलहुँ बुच्चुनक गप्प
नहि करैत छी खिधांश
सुनू हम्मर साँच

समयक छलए नहि हमरो अभाव
कहल हँ सुनाउ किछु भाषण-भाख

देखि पुछलियैक बुच्चुनकेँ हौ
ई की उजरा नाँकसँ सुँघने जाइत छह
कहलक काका खोखीँ होइत छल
खोखीँक ई दवाइ अछि

औ बाबू बाप मरि गेलैक मोशकिल रहय नौँसि भेटब
मुदा देखू बेटा सोँटैत अछि विक्स वेपोरब

नहि करैत छथि खिधांशसुनियन्हु हुनकर साँच

## दहेज

ट्रेनमे भेटलन्हि घटक
यौ फलना बाबू
मुँह देखाबक जोग नहि छोड़ल
आगाँ की-की बाजू

शांत बैसू भेल की?
अहाँक अछैत होइत की ?
एहि गरीबक पुत्रीक
कन्यादान संभव रहए की भाइजी?

औ अहाँ गछि लेलियन्हि
भेल कोजगरा द्विरागमनो
भेटलन्हि किछुओटा नहि वरागतकँ
कोनोटा इज्जत नहि राखलन्हि ओ

यौ अहूँ हद्द कएलहुँ
मोन नहि की-की गछलियन्हि

ओहि सुरमे छलुहुँ बेसुध
हँ मे हँ टा मिलेलियन्हि
कहैत गेलाह ओ एक पर एक
नहि कहि कऽ बुरबकी करितहुँ ?
लक्ष्मीपात्र छथि से लक्ष्मी देलियन्हि
आबो तँ जान बकसथु

मोटरसायकिल लय की करतथि
देहो-दशा ताहि लेले चाही
चेनक लेल बेचैन किए छथि

निचेन रहथु अछि बात ई

ताकि रहल छी पुत्रक हेतु
तकैत रही अहींक आस
औ छलहुँ कतय भाँसल
अहाँ यौ घटकराज

कोनो मोटगर असामी
आनि करू उद्धार
तीनू बेटीक कर्जसँ उबारथि
चाही एहन गुणानुरागी

## बेचैन नहि निचैन रहू

दौगि-दौगि कय पोस्ट-ऑफिस
भेलहुँ जखन अपस्याँत किएक तँ
मनीऑर्डरक छल आस
पुछल एखन धरि अछि नहि आयल
मनीऑर्डर यौ प्रभास

चिट्ठीयेक संग पठेने छलथि पाइ
चिट्ठी तँ समयेसँ पहुँचल
टाका किए नहि बाउ ?

पोस्ट बाबू कए नेने रहथि
हुनकर पाइसँ कोनो उद्यम

कहल चिट्ठी अबैत अछि
बेटा अछि छट्ठू अहाँक
पाइ पठबैत समयसँ तँ पहुँचैत
मुदा पठबैत अछि छुच्छे संदेश

बेचैन किए छी
की अप्पन उद्यम करब
हम अहाँक टाकासँ
से बुझैत छी ?

दोसर गामक पोस्टबाबू
फेकैत अछि चिट्ठी कमलाक धारमे
हम छी बँटैत तँ कहैत छी
जे भेटल अछि मात्र संदेश अहाँकेँ

## होइ अछि जे हुम लुक्खी नहि छी

देखि हुनका (गारिपढ़ुआकेँ)
देबय लागलथि गारि
लुक्खीक नाम लय कय
सात पुरखाकेँ देलन्हि तारि

ओ अनठेने ठाढ़
बूझल
दैत अछि ई लुक्खीकेँ गारि

कहल अन्तमे (गारि पढ़निहार)
हौ की छह होइत ?
मूँह तँ देखू केहन अछि अप्पन
लुक्खी नहि अपनाकेँ छी बुझैत?

## थल-थल

कतबो दिन बीतल
गद्दा जेकाँ थलथल
पट्टी टोलक ओ रस्ता
भेल आइ निपत्ता

माटि खसा कय लगा खरंजा
पजेबाक दय पंक्ति
नव-बच्चा सभ कोना झूलत
ओहि गद्दा पर आइ ?

थल-थल करैत ओ रस्ता
लोकक शोक कहाँ भेल बंद ?
माँ सीते की अहाँ बिलेलहुँ
ओहि दरारिमे करैत अंत

## क्रिकेट-फील्डिंग

हम बाबा करू की पहिने
बॉलिंग आ कि बैटिंग

बॉलिंग कय हम जायब थाकि
बैटिंग करि खायब की मारि ?

पहिले दिन तूँ भाँसि गेलह
से सुनह ई बात बौआ
बैटिंग बॉलिंग छोड़ि-छाड़ि
पहिने करह गऽ फील्डिंग हथौआ

## मैट्रिक प्लक

हौ सभकेँ सुनलहुँ केने
बी.ए.
एम.ए.
मुदा बुझल नहि छल डिग्री
दोसरो होइछ आनो-आनो

आइ एक पकठोस बटुक
अछि आयल दलान पर पूछल
कोन अंग्रेजिया डिग्री छी लेने
मैट्रिक प्लक एहने किछु बाजल

हौ काका अछि की ओ गेल
ओकर गेलाक बाद हम बाजब
कारण अछि भेल ओ फेल

## काँकड़ु

काँकड़ुगणकेँ छोड़ल एकटा ड्रममे
नहि बन्न कएलक ऊपरसँ ढाकनसँ
पुछल हम छी निःशंक अपने ?

यौ हमर टोलक ई अछि काँकड़ु सभ
एक दोसराक टाँग खींचत
बक्शा बन्द करबाक करू नहि चिन्ता
खुजलो सभटा सभ ठामे रहत !

## कैप्टन

वॉलीवॉलमे खेलाइत काल
पप्पू भाइक होइछ हुरदंग
खेलायब हम फॉरवार्डसँ
नहि नीक खेलाइत छी
तँ आगू खेलनाइ देखाएब हम !

सभ सोचि विचार कय
बनाओल कैप्टन पप्पू भायकँ
टीमक हारि देखि कय
खेलाइथ पछाति पाछुएसँ

फारवॉर्ड बनू अहीं सभ
नहि तँ मैच हारए जाएब आगुएसँ

## दूध

महीस लागल छल लागय
बहिन दाइक ठाम

पहुँचलहुँ आस लेने
ठाँऊ भेल बैसलहुँ

दूध छल जाइत औँटल
मुदा बहिन दाइ कें गप्पमे
होसे नहि रहल

भोजन समाप्ते प्राय छल
दूध राखल औँटाइते रहल

कहल हम हे बहिन दाइ
अबैत रही रस्तामे देखल
साँप एक बड़-पैघ
एतयसँ ओहि लोहिया धरि नमगर
दूध जतय अछि औँटाइत

ओह भैया बिसरलहुँ हम
दूध रहल औँटाइत
मोनमे बात ततेक छल घुमरल
होश कहाँ छल आइ

## अटेंडेंस

लेट किए अएलहुँ अहाँ
अटेंडेंस लगाऊ

लाल बहादुर अयलाह जखन
देखल छल क्रॉस लगाएल
नहि देल ध्यान साइन कएल

पूछल मास्टर “लेट छी आयल?
ऊपरसँ कए हस्ताक्षर
क्रॉस नुकयबा लेल
मुदा नहि अछि ई मेटायल” !

लाल बहादुर कहल सुनू ई
के करत निर्णय तखन
हम कएल हस्ताक्षर पहिने
क्रॉस लगाओल अहाँ कखन?

## शो-फटक्का

की यौ बाबू शो-फटक्का
बड्ड देने छी आइ
पहिने कोनो दिन आबि बुझायब
नहि जायब पड़ताय

दहो-दिशा दस दिन देत काज
देत चालि संग चालिस साल
बड़ा देने छी शो-फतक्का
करू पहिने किछु काज

## भारमे माटि

काबिल ठाकुर कहल जोनकेँ
भारमे माटि उघि आनू
दुहु दिशि भार रहत तँ
बोझ दुनू दिशि जायत
कम थाकब अहाँ आ
माटि सेहो बेशी आओत

दियाद कलामी ठाकुर देखि ई
सोचल ओकर नोकसानक भाँज
भरिया तोरा जान मारतह
एके बोनिमे दोबर काज !

पटकि भार भरिया पड़ायल
काबिल ठाकुर रहल मसोँसि
लंघी मारि पएर खेंचि कय
अप्पन कोन भल भेल हे भाइ ?

## कंजूस

तीमन माँगल भनसियासँ
सूँघा रहल छल गमक
कहियो तँ अयबह हमरा लग
देबह तखन उत्तर

शहर भगेलग पाइ कमेलहुँ
माँगल पाइ किछु दैह
बदला पाइक झनक सुनएबह
गमकसँ नहि छल मोन भरैत

## पाइ

देखू पाइ नहि लिअ अहाँ
बेटा विवाहमे
कारण जे
पुतोहु करत उछन्नड़
पाइ बाली आयत ज्यों

पूछल
अहाँ सभ जे छलियैक लेने
बेटा विवाहमे पाइ
कहलन्हि अहूमे गप्प अछि दूटा

पहिल जे पाइ दबबैत अछि लोककेँ
मुदा दोसर
जे दबा दैत छियैक
हमरा सभ पाइकेँ

जे कहलहुँ गुनू तकरे
हमरा सभपर नहि आउ दाइ गे !

## असत्य

हम कक्कर काज नहि कएलहुँ
बेर पर मुदा काज क्यो आयल?
असत्य नहि कहियो छी बाजल
सत्यक आस नहि छोड़लहुँ आ
असत्यक बाट सेहो नहि ताकल

यौ अहाँ एहनो क्यो बजैत अछि
असत्य नहि छी कहियो बाजल
एहिसँ पैघ कोनो असत्य अछि ?

क्यो दुःखी कहलक तँ काज केलहुँ
अपने जा कय तँ नहि पुछलहुँ
ओक्कर काज अपने भय जाइत छै
तँ उपकरि कय पुछैत छी
आ ज्योँ काजमे भाँगठ होइत छै तँ
निपत्ता भय जाइत छी
बेर पर एहने काज अहाँ अबैत छी !

हम आलांकारिक प्रयोग केलहुँ तँ
टाँग पकड़ैत जाइत छी ?

## समुद्री

संस्कृतक पाठ नहि पढ़ल
कोन पाठ अहाँ पढ़ने छी
पंडित कहि बजबैत अछि सभ क्यो
त्रिपुण्ड धारण कएने छी !

रहथि हमर पुरखा पंडित
छोड़ू हमरा हमर इतिहास देखू
मिथिलाक गौरव याज्ञवलक्य
कपिल कणादक देश छी ई
जैमिनीक गौतमक अछैतहुँ
पुछै छी पण्डित केहन छी

सामुद्रिक विद्या ज्योतिषिक जनय छी
नहि सुनल फेर बहस किए केने छी ?
फेर छी हँसी करैत अहाँ भने
भविष्यक छी हम हाल किए लेने !

## गाम

तीस वर्ष नौकरी कइयो कय
नहि बनल एकोटा मित्र

आस-पड़ोसी चिन्हैतो नहि अछि
ऑफिसक पूछू नहि गति

गाम छोड़ि शहर छी आयल
मुदा अछि मोन
सात जनम घूरि नहि जायब
गाम छोड़ि नगरक कोनो कोन

## लोली

एहि शब्द पर भेल धमगिज्जर
लोल हम्मर अछि नहि बढ़ल
एतेक सुन्दर ठोढ़कँ छी अहाँ
लोली कहि रहल ?

हँसल हम नहि स्मृतिकँ
छोड़ि छी सकलहुँ अहाँ
फैशन-लिपिस्टिक युगोमे
लोलीकँ खराब बुझलहुँ अहाँ !

## तकलाहा दिन

विवाह दिन तकेबाक बात
युवक बाजल पंडितजी अहूँ
नहि बुझलहुँ अमेरिकाक प्रगति
ओतय के दिन तकबैत अछि कहू ?

अहाँ अधखिज्जू विद्वान सुनू

हमर तकलाहा दिनमे विवाह कय
झगड़ा-झाँटि करितहु बुझु
जिनगी भरि पड़ै अछि निमाहय

ओतय बिनु दिनुक विवाह बात
भोरसँ साँझेमे भय जाइछ समाप्त

## बिकौआ

बड़ पैघ भोज उपनयनक
पछबारि पारक छथि नव-धनिक
बी.के.नाम नहि सुनल
ओतय ठाढ़ ओ धनिक

आरौ बिकौआ छँ तूहीँ

दूटा पाइ भेल ओ भाइ
कलकत्ता नगरीक प्रतापे
नहि तँ मरितहुँ बिकौए बनि
बी.के. नाम भेल आब जाए

## गद्दरिक भात

गत्र- गत्र अछि पाँजर सन
हड्डी निकलल बाहर भेल
भात धानक नहि भेटय तँ
गद्दरियोक किए नहि देल

औ बाबू गहूमक नहि पूछू
अछि ओकर दाम बेशी भेल
गेल ओ जमाना बड़का
बात-गप्पक नहि खेलत खेल

## एकटा आर कोपर

गप्प पर गप्प
प्रकाण्डताक विद्वताक

हम्मर पुरखा ई
हाथीक चर्चा
सिक्कड़ि-जंजीर टा जकर बाँचल

आँगनमे लालटेन नहि वरन् डिबिया टिमटिमाइत
लालटेन गाममे समृद्धिक प्रतीक !

फेर दलान पर गप्पक छोड़
एकटा कोपर दियौक आउर

## महीस पर वी.आइ.पी.

छलहुँ हम सभ जाइत
आर मारि लोकसभ पएरे-पएरे
दुर्गास्थानमे छल कोनो मेला
देखि हमरा सभकेँ बाट देल

मारि लोक छल ओतय छलहुँ
महीस पर हम चारिटा वी.आइ.पी.ये !
ओकर सभक बात छल लौकिक ज्योँ
हमरा लोकनिक आध्यात्मिक तेँ
मूल-गोत्रक प्रभावे !!

## गप्प-सरक्का

नहि गेलथि घूमय बूरि
बुझैत अछि बड्ड छन्हि काज
आइ-काल्हि तँ हिनकर चलती अछि
हमरा सभतँ करैत छी बेकाजक काज !

## फलनाक बेटा

भोज देलन्हि रेंजरक बाप
आह कमेने अछि तँ
फलनाक बेटा !

भोज समाप्ति पर
पान सुपारी लय देखल
रेंजरकेँ लोक

अओ कहू कोन बोनकेँ
साफ कएल एहि भोजक लेल !

## ट्रांसफर

नॉर्म्सक हिसाबे ट्रांसफर
कएल हम अहाँक
कहलन्हि ओ छल एकर कोन
महाशय जरूरति

कएल सेवा हम अहाँक
राति-दिन भोर धरि

अप्पन घरक काज छोड़ल
अहाँक काजकेँ आगू राखल
ताहिमे नहि हम लगायल नॉर्म्स
नॉर्म्स केर नहि गप्प छल आयल

ट्रांसफरमे ई कतयसँ
आबि गेल श्रीमान !

तखनहि रोकल हुनक
ट्रांसफर औफिसर तत्काल

## मजूरी नहि माँगह

भरि दिन खटि हम गेलहुँ
माँगय अपन मजूरी
कहलन्हि ज्यों मजूरी मँगबह
मारि देबह हम छूरी

कहल नहि बरू दिअ मजूरी
मारू नहि परञ्च ई छूरी

जियब जखन हम करब काज
कय आनो ठाम जी-हजूरी

## दोषी

दोषी छह तोँ
नहि छी मालिक
देलक दू सटक्का

हम छी दोषी बाजल
तखन बता संगीक पता

साँझ धरि पड़ल मारि
परञ्च नहि बता सकल ओ
नाम सङ्गीक

कारण
छल नहि ओ दोषी
नाम बतायत तखन कथीक

## लंदनक खिस्सा

लन्दनक साउथ हॉलमे शहीद भिंडरा
लेस्टरमे शहीद सतवंत-बेअंत

लेस्टरमे सभ अपने लोक
नहि भेटैछ अंग्रेज एकोटा
भेटने हमही मँगैत जाइत छी
वीसापासपोर्ट
सेहो अंग्रेज सभसँ सभटा

होयत खिधांश सुनू तखनो
नहि मानब हम गुरुकुलकेँ
इतिहाससँ नहि लेब सबक
तँ आएत पुनः ओ घुरि
अंग्रेजक नाम कतेक दिन धरि लेब
सभ अछि गेल बुझि

## प्रथम जनवरी

प्रथम जनवरी देखल एक
भोरे-भोर दूधक लेल
लागि लाइन जखन आयल बेर
खुशी-प्रफुल्लित पाओल फेर

मुदा रस्ताक बीचहि खसल दूध
ओह भेल अपशकुन बहुत

सुनि खौँजाइ कहल नहि से
पता नहि शकुने होअय जे

कहल हँ-हँ शकुने थीक
माँ पृथ्वीकँ लागल अर्घ्य
प्रथमे पायल प्रथमक भोग
हरतीह सभटा दुःख आ रोग

## ऑफिसमे भरि राति बन्द

साँझ परल सभ उठल
गेल अप्पन-अप्पन घर
बाबूजी रहथि फाइलमे
करैत अपनाकेँ व्यस्त

चौकीदार नहि देलक ध्यान
केलक बन्द ओहि राति
हमरा सभ चिंतित भेलहुँ
कएलहुँ चिंतित कछमछ धरि प्राति

भोरमे जखन दरबान खोलि
देखलक हुनका ऑफिसमे
माफी माँगि औँघायल
पहुँचेलक घर जल्दीसँ

एक बूढ़ी हमर पड़ोसी
कहलन्हि कोना रहल भेल
हमरा सभ तँ नहि तकितहुँ बाट
राति भरिमे भय जयतहुँ अपस्याँत
बेटा सभ लजकोटर मुँहचूरू
छन्हि हिनक हे दाइ (हमर माइ)

हॉलीक्रॉस स्कूल दरभंगामे
भेल छल घटित एक बात
गर्मी तातिलमे बच्चाकेँ
बन्द कएल दरबान

महिना भरि खोजबीन भेल
नहि चलल पता कथूक
स्कूल खूजल देखल बच्चाक
लहाश सभ हुजूम

बाप ओकर मुँहचुरू छल
स्कूलसँ ज्योँ बच्चा नहि आयल
सुतले छोड़ि गएल तखन
गेल रहय पछतायल

बच्चा देबाल पर लिखने रहय
अपन कष्टक बखान
पानि भोजन बिना
भेलय ओकर प्राणांत

## नानीक पत्र

पत्र आयल मोन ठीक नहि
लक्ष्मी अहाँ देखि जाउ
एहि बेर नहि बाँचब
नहि ई गप बुझु बाउ

पेटक अलसर अछि खयने
चटकार सँ खाओल जेना मसल्ला
अंतिम क्षण देखबाक बड़ड अछि मोन
चिट्ठी लिखबाले अयलाह तेहल्ला

क्यो नहि पहुँचेलकन्हि लक्ष्मीकेँ
कहल चिट्ठीमे अछि भाड़भीस कएल
एक टा आर चिट्ठी आएल जे
माय गेलीह देह छोड़ि

लक्ष्मीक बेटा बोकारि पारि कानय
कहलक छी हम सभ असहाय

नहि अयतीह हमर लक्ष्मी
मायक मुँह देखय अंतिम बेर
नाम रटैत अहाँक ई बूढ़ि
गुजरि गेलि जग छोड़ि

अपन घरक हाल की कहू
भगवाने छथि सहाय
घरघुस्सू सभ घरमे अछि
दैव कृपा हे दाय

## केवाड़ बन्द

बाहरसँ आबयमे भेल लेट
छोट भाय कएल केवाड़ बन्द
किछु कालक बाद जखन खुजल
भैय्या कहल हे अनुज
दुःखी छी हम पाड़ि ई मोन
अहिना जखन छलहुँ हम सभ बच्चा
पिता कएलन्हि घर बन्द

कनेक देरी होयबाक कारण
पुछलन्हि नहि ओ तुरंत

तुरंत काका सेहो बुझाओल
बाल विज्ञानक द्वंद
जे भेल से बिसरि शुरू
करू नव जीवन स्वाच्छंद

## जेठांश

छोट भायकँ देल परती
आ राखल सेहो जेठांश
मरल जखन कनियाँ तखन
भोजक कएल वृत्तांत

कहल नमहर भोज करू
पाइ नहि तकर ने बहन्ना
जकरे कहबय से दय देत
चीनी चाउर सलहाना

खेत बेचि कय हम कएलहुँ
श्राद्ध पिताक ओहि बेर
अपना बेरमे नहि चलत बहन्ना
फेर बुझू एक बेर

## सादा आकि रंगीन

ब्लैक एण्ड ह्वाइटक गेल जमाना
सादा आकि रंगीन

दरिभंगा काली मंदिर लगक
लस्सी बलाक ई मेख-मीन

जखन बूझि नहि सकलहुँ
तखन कहल एकगोट मीत
सादा भेल सादा आ
भांगक संग भेल रंगीन

## जोंकही पोखरिमे भरि राति

सुनैत छलहुँ जे बड़बड़ियाबाबू साहेबक
लगान देलामे ज्योँ होइत छल लेट
भरि राति ठाढ़ कएल जोंकही पोखरिमे

बीतल युग अयलाह फेर जखन हाथी पर
लेबाक हेतु लगान-लहना जहिना
गारि-गूड़ि दैत हाथी पर छूटल
टोलक-टोल मुँह दुसना

जमीनदारी खतम भेलो पर सोचल
किछु ली असूलि
मुदा लोक सभ बुधियारी कएल
नहि अएलाह ओ घूरि

## गैस सिलिण्डरक चोरि

गेलहुँ रपट लिखाबय
भेल छल सिलिण्डरक चोरि
मोंछ बला थानेदार बजलाह
बूड़ि बुझैत छी हमरा सभकेँ
डबल सिलिनडर चाही
एफ. आइ. आर. सस्ता नहि
नहि सस्ता अछि एतेक हे भाइ

हम कहल डबल सिलेण्डर
तँ अछिये हमरा
अच्छा तँ
तेसर सिलेण्डर लेबाक अछि देरी ?

ताकल कतय चोरकेँ अहाँ
अहाँक तकनाइ अछि जेना
चलैत अछि कोल्हूक बरद

भरि दिन घुमैछ नहि बढ़ैछ
एको डेग अहँ नहि करू सैह
प्रगतिक नाम पर एहि बेर

स्कूटरक चोरिक बेर कहलक
इंस्योरेंसक पाइ चाही
कहू अहाँसँ कोर्टमे भऽ पाएत
देल अहाँसँ गबाही

फेरी पड़ि जायत अहाँकेँ
पुनःप्रात होएत कोर्टमे जायब
उलटा निर्णयो भऽ जायत
बूझि फेर से आयब

संग गेल ड्राइवर कहलक नोकरी
छै एकरे ठीक
पाइयो अछि कमाइत करैत रंगदारी
फेकैत पानक पीक

## फैक्स

फैक्टरी पहुँचि कहल
करू सर्च वारंट पर साइन
मालिक कहल रुकू किछु काल धरि
फोन करय छी आइ

ट्रांसफरक ऑर्डर आयल
रिलीविङ्गक संगहि
अफसर निकलल ओतयसँ
वारंट बिना एक्सीक्यूट केनहि

## दीया-बाती

आयल दीया बाती
कतेक अमावस्या अछि बीतल
जकर अन्हारमे लागल चोट
कतेक जीव थकुचायल पएरहि
अन्हारक छल छाती

दीया बाती अनलक प्रकाश
ज्ञान-ज्योतिक अकाश
नमन करय छी हम एहि बातक
अंधकार-तिमिर केर होबय नाश

## इटालियन सैलून

घर भेल समस्तीपुर दिल्लीमे छी आयल
खोलि सैलून इटालियन अयलहुँ कमाय लेल

पुलिसक रोक देखि कय गेलहुँ गाम घुरि
पुनः छी आयल सैलून कतय बानाओल?

ईटा पर जे छी अहाँ बैसल सैह कहबैछ
इटालियन
अहू पर अछि पुलिसक मौखिक-रोक
सेहो धरि नहि बूझल अहाँ ?

## शव नहि उठत

गामक कनियाँ मूइलि शव अँगनामे राखल
सभ युवा कएने अछि नगर दिशि पलायन
जे क्यो रहथि से घुमैत रहथि ब्लॉक दिशि
साँझमे अयलाह देखल कहल भेलीह मुइल

गामपर क्यो नहि उठेलक शवकेँ किएक ?
हम कोना छुबितहुँ भाबहु ओ होयतीह
मुइल पर भाबहु की भैसुर केलहुँ अतत्तह
समय बदलल नहि बदलल ई गाम हमर

## अतिचार

तीन साल छल अतिचार नहि होयत एहि कारण बियाह
पंडितबे सभ बुझथुन्ह छन्हि पतरा सभ जे बिकाइत
पकड़त सभ बनारसी पतराकँ सेहो नहि बिकाओत
समय अभावँ होयत ई ज्योँ अतिशय भऽ जायत

## रबड़ खाऊ

रबड़ खाऊ आ वमन करू चट्टी
अपचनीय तथ्य सभ देखल भ्रात
बड़ छल बुधियार केलक घटकैती
शुरू जखन भेल सिद्धांत विवाद
विवाह ठीक भेलाक बादक दोसर सिद्धांत
लड़का विवाह कालमे बिसरलाह भाषण
नव सिद्धांतक सृजन कय केलन्हि सम्मार्जन

## बाजा अहाँ बजाऊ

मेहनति अहाँ करू
फल हमरा दिअ

चित्र अहाँ बनाऊ
आवरण सजाऊ
हमर किताबक

नृत्य हम करू
बाजा अहाँ बजाऊ

कृति हमर रहत
मेहनति करब अहाँ
आइसँ नहि ई बात
अछि तहियासँ जहियासँ शाहजहाँ

## पिण्डश्याम

दहेज विरोधी प्रोफेसर
केर सुनू ई बात
पुत्री विवाहमे कएल
एकर ढेर प्रचार

पुत्रक विवाहमे बदलि सिद्धांत
वधू रहय श्याम मुदा
मारुति भेटय श्वेत
सिद्धांतक मूलमे
छोड़ू विवेक !

## पाँच पाइक लालछड़ी

परिवार छल चला रहल
बेचि भरि दिन
पाँच पाइक लालछड़ी
दस पाइमे कनेक मोट लपेटन

नहाइत साँझमे
ठेला चला कय आयल
बेटाकेँ पढ़ायल
आइ.आइ.टी.मे पढ़ि
निकलल कएलक विवाह
जजक छलि ओ बेटी

पिता कोन कष्टसँ पढाओल
गेल बिसरि पिताक स्मृतिसँ दूर
नशा-मदिरामे लीन कनियाँ परेशान
लगेलन्हि आगि झड़कलि
ओकरा बचेबामे ओहो गेला झड़कि

कनियाँ तँ गुजिरि गेलीह ठामे
मुदा ओ तीन मास धरि
कष्ट काटि पश्चात्ताप कए
मुइलाह बेचारे

## चोरुक्का विवाह

सिखायब
हिस्सक छूटत
नहि आनब कनियाँकेँ
भायक माथ टूटत !

भेल धमगिज्जर सालक साल बीतल
युवक-युवती दुनू भेल चोर विवाहक कैदी
नहि छल कोनो हाथ परंच
छल सजा पबैत

भागल घरसँ युवक आब पछतायल घरबारी
मुदा की होयत आब
ओ समाजक व्यभिचारी

एलेक्शनक झगड़ामे भाय-भायकेँ मारल
चोरुक्का विवाहक घटनामे ओकरा दोहरायल !

## भ्रातृद्वितीया

कय ठाँऊ बैसलि
आसमे छलि
भाय आओत

आँखिक नोर छल सुखायल
सालमे एक बेर छल अबैत
चण्डाल
कनियाँक गप पर
सेहो क्रम ई टूटल

कय ठाँऊ बैसलि
धोखरि अरिपन विसर्जित
दिन बीतल
छल साँझ आयल

## नव-घरारी

साँप काटल नन्दिनीकेँ
नव घरारी लेलक खून
टोलक घरारी छोड़ू जुनि !

ई विशाल जनसंख्या एतय
छल बनल एकटा काल
ई नव-घरारी लेलक प्राण
टोलक घरारी साबिकक डीह
परञ्च अछि छोट आब की ?

खून लेलक आब ई बनि गेल अख्खज
नव घरारी होयत छोट किछु काल अनन्तर

## रिक्त

पाँचम वर्गसँ सातम वर्गमे
तड़पि गेल छलहुँ हम

छट्ठा वर्गक अनुभव अछि रिक्त
बा आ बाबा जन्मक पहिनहि
प्राप्त कएलन्हि मृत्यु
वात्स्ल्यक अनुभव भेल रिक्त
माँ एके बहिनि छलि तैँ
मौसी-मौसाक अनुभवो नहि
ईहो रहल रिक्त

क्यो कहैत अछि जे छठामे पढ़ैत छी
बा आ बाबाक संग घुमैत छी
मौसी-मौसाक काज उद्यममे जाइत छी तैँ
हम कहैत छी जे ई कोन संबंध
कोन वर्ग अछि ई छोड़ि सकैत छी

उत्तर भेटैछ अहाँ नहि बुझब

मुदा नव संबंध नब नगर
नव भाषा नवीन पीढ़ीकँ
कोना बुझायब ओ कोना बुझत ?
ओ तँ नहि बूझि सकत काका-काकी
नहि बूझत दीया-बाती
खटैत दौड़ैत आ नहि घुरि आओत
ककरा बुझायब आ के बूझत ?

## प्रवासी

संगहि काटल घास
महीस संगे चरेलहुँ
पुछैत छी गहूम ई
पाकत कहिया?

दू दिन दिल्ली गेलहुँ
सभटा बिसरलहुँ
ईहो बिसरि गेलहुँ
जे धान कटाइछ कहिया ?

## वेद

वेद वाक्य परम सत्य
संस्कृत साहित्य अति उत्तम
करैत छी अहाँ वक्तव्य
मुदा अहाँ की अहाँक पुरखा
मरि गेलाह बिन सुनने वेद वाक्य
बिन पढ़ने संस्कृत

यौ अहाँ नहि पढ़लहुँ अहाँ
अनका अनधिकार बनेबाक चेष्टा
कएलहुँ अहाँ

छी वेदक अप्रेमी नहि अछि क्षमता
वेदक पक्ष आकि विपक्षमे बजबाक
वेद वाक्य सत्य
एकरा बनेने छी
अहाँ फकड़ा

## चोरि

गेलहुँ गाम आ एम्हर
आयल फोन समाचार चोरिक
छुट्टी होयबला छल समाप्त
मुदा चोरक गणना छल ठीक

आबयसँ एक्के दिन पहिने
लगेलन्हि घात
तोड़ि कय केबाड़
उधेसल घर-बार
नहि पाबि कोनोटा चीज
घुरल माथ पीटि

भोरमे पड़ोसी कएलन्हि डायल सय
पुलिस आयल हारि थाकि कय
पड़ोसीसँ किनबाय दू टा अतिरिक्त ताल
(पुलिस महराज अपन घरक हेतु एकटा बेशीये कऽ)
चाभी लेलन्हि अपन काबिजमे

चोर हरबड़ीमे छल चलि गेल
मुदा पुलिस महाशयक हाथ चाभी आएल
आ शो-केशक चानीक नर्त्तकी गुम भेल

चोरकैँ छल डर गेटक दरबानक
से छलाह ओ गहनाक आ नकदीक ताकिमे
मुदा पुलिस महाराज दय राब दौब दरबानहुँकैँ
निकललाह चोरि कय बरजोड़ीसँ

## होली

धुरखेलक कादो-माटिसँ रहथि अकच्छ
रंग अबीर भने आयल मुदा लगैछ टका
साफ-सुथड़ा बुझैत छलहुँ एकरा मुदा
निबंध निकलैत अछि रंगक केमिकलक विषयमे
विषय अछि पुरनके
वएह छल ठीक यौ कका

दारू पिनहार सोमरसक चर्चा करैत नहि अघाइत छथि
देवतो पिबैत रहथि ओकरा पुरनका नामसँ
अछि होली
मित्रता बढ़ेबासँ बेशी घटा रहल अछि आइ काल्हि ई

## बुद्ध

हृदय लग अछि जेबी
से जखन रहय खाली
मोन कोना रहत प्रसन्न
बुद्ध सेहो कहि गेल छलाह ई

मुम्बइमे सूप मँगलहुँ
पुछलक अहाँ सभमे जैनी कैकटा छी
देत लहसुन की नहि रहय तात्पर्य
आपद्काले रहि गेल अछि आइ काल्हि
सदिखन

मुम्बइ सेल टैक्समे करैत छथि भरि दिन काज
तैँ प्रोननशियेशन भेल छन्हि मराठी
"छी हमहुँ इलाकेक लोक
उत्पाद विभाग अछि केन्द्रीय सरकार
संपर्क बाहरीसँ बेशी
कनियाँ करइ छथि ओतहि काज
हुनकर बोली छन्हि देशी"

छत्तीसगढ़क छत्तीस घंटाक यात्रा
उत्तर-मध्य क्षेत्रक स्तूपक
बंगाल - पंजाब घूमल
बंगाली कहलन्हि सुनु जे ज्योँ
बंगाली जायत संग करत कानूनी बात
सरदारजी कहलन्हि रोड पर
रेड लाइट रहलो करू पार
सोझाँसँ अबैत छल एकटा सरदार
कहल करत आब ई अराड़ि

सक्सेना कहलक एक मैथिलकेँ-
मैथिल अछि मैथिलक परम शत्रु
हम कहल सक्सेनाकेँ हे
जुनि करू हुनका दूरि
काज सभटा झट कराऊ जुनि भड़काऊ

बुद्धक भूमिसँ घुरि आयल छथि
दिल्लीक सड़क पर एहि बेर
पाटलिपुत्र भारतक रहय राजधानी
दिल्ली बनल राजधानी आब
छलहुँ ततय पुनि फेर
कोन जुलुम हम कएल आबि एतए ?

कणाद कपिल गौतम जेमिनी
देतथि ज्योँ नहि काज
कहलन्हि ई ठीके हृदय लग
जेबी देने अछि सीबि
सँसे देश घुमलहुँ
एहि पेटक लेल

जेबीमे पाइ नहि रहत
उपासे करब हम भाइ
जेबीक लग अछि हृदय
तखन से कोना रहत प्रसन्न
जे रहत ई खाली ?
बुद्ध सेहो कहि गेलाह ई !

## कोठिया पछबाइ टोल

बूढ़ छलाह मरैक मान
पुत्र पुछल अछि कोनो इच्छा
जेना मधुर खयबाक मोन
नीक कपड़ा पहिरबाक मोन
फल-फूल खयबाक मोन

कोठाक घर बनयबाक इच्छा
पूर्ण भय पायत किछु सालक बादे
कहू कोनो छोट-मोट इच्छा
पूर करब हम ठामे

हौ कहितो लाजे होइत अछि
पछिबारि टोल कोठियाक रस्ता
दुरिगरो रहला उत्तर ओकरे धेलहुँ
जाइत दुर्गास्थान कारण
टोल छल ओ अडवांस्ड

मोनमे लेने ई इच्छा जाइत छी
जे ओहि टोलमे होइत विवाह

कहैत तावत हालत बिगड़ि गेलन्हि
आ ओ बूढ़ स्वर्गवासी भेलाह

मरलोपर मोह संग जाइत अछि
इच्छाक नियंत्रण अछैत

## बुच्ची-बाउ

बुच्ची-बाउ
किताब बेचि कए
कमाइत अहाँकेँ देखि
सड़कक चौबटियापर
अपन मैथिली भाषा बजैत
भरि जाइत अछि मोन गर्वसँ सेहो
चोरि तँ नहि कऽ रहल छी
मेहनतिसँ कमा रहल छी
ई मजूरक टोली
राज करत दिल्लीपर

मारीशस आ वेस्ट इन्डीजमे
एहिना हेंजक-हेंज चलैत रहए मजूरक टोली

सभ ठाम अहाँक खिधांश
कारण अहाँ मँगैत छी मात्र काज
नहि मँगैत छी दरमाहा
ई बिहारी सभ रेट कम कए देलक अछि !

एहि खिधांशमे हम देखि रहल छी भय
खेत बेचि बनल सेठ सभमे
बड़का गाड़ीमे शीसा खोलि बाजा बजबैत छथि
जे सभ !

गामक गाम उपटि
माइलक माइल पएरे चलैत
मुदा ओहू कनी सन दरमाहासँ बचा कए
गाम पठेबा लेल मनीऑर्डरक लाइनमे लागल
बेर-बेर फॉर्म अछि भरबैत ओ किरानी

मूरख कहैत
खौंझाइत

ओहि किरानीक खौँझाइत स्वर
छै ओकर हारिक प्रतीक
मात्र एक पीढ़ीक अछि गप
करत अहाँ बाद राज
अगिला पीढ़ी
एहि दिल्लीपर

## आकक दूध

मोन पड़ल चोरि केर बात
चोरक आँखिमे आकक पात
पातक दूध पड़ला संता चोर
सोचलक आब आँखि गेल छोड़ि

कहलक मोने बुद-बुदाय
करु तेल नहि देब मोर भाय
अर्कक दूधक संग करु तेल
बना देत सूरदासक चेल

गौवाँ केलन्हि बुरबकी एहि बेर
चोरक बुनल जालक छल फेर
तेल ढ़ारि पठौलन्हि चोरकेँ गाम

मुदा रसायन भेल विपरीत
चोरक आँखि बचि गेल हे मीत
गौआँक काजक हम लेब नहि पक्ष
मात्र सुनायल रटन्त विद्याक विपक्ष

## केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक

केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक
मध्य नील चक्र अछि शोभित
चौबीस कीलक चक्र खचित अछि
अछि हाथ हमर पताका ई,
वन्दन, भारतभूमिक पूजन,
करय छी हम, लए अरिमर्दनक हम प्रण।

अहर्निश जागि करब हम रक्षा
प्राणक बलिदान दए देब अपन
सुख पसरत दुख दूर होएत गए
छी हम देशक ई देश हमर

अपन अपन पथमे लागल सभ
करत धन्य-धान्यक पूर्ति जखन
हाथ त्रिवार्णिक चक्र खचित बिच
बढ़त कीर्तिक संग देश तखन।

करि वन्दन मातृभूमिक पूजन,
छी हम, बढ़ि अरिमर्दनक लए प्रण।

समतल पर्वत तट सगरक
गङ्गा गोदावरी कावेरी ताप्ती,
नर्मदाक पावन धार,सरस्वती,
सिन्धु यमुनाक कातक हम
छी प्रगतिक आकांक्षी

देशक निर्माणक कार्मिक अविचल,
स्वच्छ धारक कातक बासी,

कीर्ति त्रिवार्णिक हाथ लेने छी,
वन्दन करैत माँ भारतीक,
कीर्तिक अभिलाषी,
आन्हीक बिहारिक आकांक्षी।

*ई पद्य समर्पित अछि १६ बलिदानीक नाम जे मुम्बईमे देशक सम्मानक रक्षार्थ अपन प्राणक बलिदान देलन्हि।१. एन.एस.जी. मेजर सन्दीप उन्नीकृष्णन्, २. ए.टी.एस.चीफ हेमंत कड़कड़े, ३. अशोक कामटे, ४. इंस्पेक्टर विजय सालस्कर, ५. एन.एस.जी हवलदार गजेन्द्र सिंह "बिष्ट", ६. इंस्पेक्टर शशांक शिन्दे, ७. इंस्पेक्टर ए.आर.चिटले, ८. सब इंस्पेक्टर प्रकाश मोरे, ९. कांस्टेबल विजय खांडेकर, १०. ए.एस.आइ. वी.अबाले, ११. बाउ साब दुर्गुरे, १२. नानासाहब भोसले,१३. कांसटेबल जयवंत पाटिल, १४. कांसटेबल शेघोष पाटिल, १५. अम्बादास रामचन्द्र पवार आ १६. एस.सी.चौधरी

गजेन्द्र ठाकुर अद्भुत व्यक्ति छथि। प्रखर मेधा आ प्रचण्ड ऊर्जा सँ सम्पन्न।हुनक प्रतिभाक पसार बहुत व्यापक छनि। ओ भाषा, साहित्य आ समाजक उत्थानमे जी-जान सँ लागल छथि। गजेन्द्र ठाकुर बहुभाषाविद् छथि। हुनक ई गुण शब्दकोश-निर्माण, अनेक भाषा मे पारस्परिक अनुवाद आ विभिन्न प्रकारक अनुसंधान मे प्रतिफलित भऽ रहल अछि। ओ मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका ''विदेह''क जनक छथि। ''विदेह'' मैथिली कें वैश्विक मंच प्रदान कयलक अछि। मैथिल संस्कृतिक संरक्षण आ विकासक लेल ओ एकटा विलक्षण आर्काइवक निर्माण कयने छथि जे निरन्तर संवर्धनशील अछि।सात खंड मे प्रकाशित ''कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'' गजेन्द्र ठाकुरक सृजन आ विमर्शक फुलबाड़ी थिक। साहित्यक कोनो विधा गजेन्द्र बाबू सँ छूटल नहि छनि। हुनक साहित्यिक बहुरंगी दुनिया बहुत प्रांजल आ लोकहितकारी अछि।बाल-साहित्य मे तऽ हुनक कलाक उत्कर्ष आ निखार अनुपम अछि।

- सुभाषचन्द्र यादव

गजेन्द्र ठाकुर, पिता-स्वर्गीय कृपानन्द ठाकुर, माता-श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर,जन्म-स्थान-भागलपुर ३० मार्च १९७१ ई.,गाम-मेंहथ, भाया-झंझारपुर,जिला-मधुबनी,“विदेह” ई-पत्रिका http://www.videha.co.in/ क सम्पादक जे आब प्रिंटमे (देवनागरी आ तिरहुतामे) सेहो मैथिली साहित्य आन्दोलनक प्रारम्भ कएने अछि।१.छिड़िआयल निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, २.उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) ,३. पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर),४.कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ),५.नाटक(संकर्षण), ६.महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ ७.बाल-किशोर साहित्य (बाल मंडली/ किशोर जगत ) कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक (खण्ड १ सँ ७ ) नामसँ।हिनकर कथा-संग्रह(गल्प-गुच्छ) क अनुवाद संस्कृतमे आ उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) क अनुवाद अंग्रेजी ( द कॉमेट नामसँ) आ संस्कृतमे कएल गेल अछि।मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश आ पञ्जी-प्रबन्धक सम्मिलित रूपेँ लेखन-शोध-सम्पादन आ मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यांतरण। अंतर्जाल लेल तिरहुता यूनीकोडक विकासमे योगदान आ मैथिलीभाषामे अंतर्जाल आ संगणकक शब्दावलीक विकास। मैथिलीसँ अंग्रेजीमे कएकटा कथा-कविताक अनुवाद आ कन्नड़, तेलुगु, गुजराती आ ओड़ियासँ अंग्रेजीक माध्यमसँ कएकटा कथा-कविताक मैथिलीमे अनुवाद। ई-पत्र संकेत-ggajendra@gmail.com मोबाइल नं-९९११३८२०७८

# कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

**श्रुति प्रकाशन**

**कार्यालयः** ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली–११०००८.
**दूरभाषः** (०११) २५८८६६५६–५७ **फैक्सः** (०११) २५८८६६५८
Website: http://www.shruti-publication.com
E-mail: shruti.publication@shruti-publication.com